लेव तोलस्तोय

युद्ध और शान्ति

लेव तोलस्तोय

युद्ध और शान्ति

उपन्यास
चार खण्डों में

खण्ड १

रादुगा प्रकाशन · मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड
५ ई, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५

राजस्थान पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लि.
चमेलीवाला मार्केट, एम. आई. रोड, जयपुर-302001

अनुवादक: डॉ० मदनलाल 'मधु'

चित्रकार: देमेन्ती श्मारिनोव

ЛЕВ ТОЛСТОЙ

ВОЙНА И МИР

Том I

На языке хинди

LEO TOLSTOY

WAR AND PEACE

Vol. I

In Hindi

सोवियत संघ में प्रकाशित

ISBN 5-05-00-1494-8
ISBN 5-05-00-1495-6

अनुक्रम

महानतम उपन्यास के महान रचनाकार 7

भाग १ 19

भाग २ 201

भाग ३ 351

महानतम उपन्यास के महान रचनाकार

आत्मकथात्मक त्रयी 'बचपन', 'किशोरावस्था', 'युवावस्था', 'कज़्ज़ाकी', 'युद्ध और शान्ति', 'आन्ना कारेनिना', 'पुनरुत्थान' जैसे अनुपम-अद्भुत उपन्यासों, 'इवान इल्यीच की मृत्यु', 'फ़ादर सेर्गेई', 'बॉल-नृत्य के बाद' मर्मस्पर्शी कहानियों और 'अन्धकार की सत्ता' तथा 'जीवित शव' जैसे नाटकों के जन्मदाता, महान चिन्तक और दार्शनिक लेव निकोलायेविच तोलस्तोय का मास्को से कोई दो सौ किलोमीटर और तूला नगर से चौदह किलोमीटर दूर यास्नाया पोल्याना नाम की जागीर में एक समृद्ध तथा उच्च कुलीन परिवार में २८ अगस्त (नये कैलेंडर के मुताबिक़ ६ सितम्बर) १८२८ को जन्म हुआ। लेव तोलस्तोय के पूर्वज उन इने-गिने लोगों में से थे जिन्हें रूस में सबसे पहले "काउंट" की उपाधि मिली थी। उनकी मां भी बहुत ऊंचे नामवाले वोल्कोन्स्की परिवार की थीं और महाकवि पुश्किन की दूर की रिश्तेदार थीं। लेव तोलस्तोय, उनके तीन भाइयों और बहन के सिर से बहुत जल्द ही माता-पिता का साया उठ गया। लेव तोलस्तोय तो अभी दो साल के ही थे, जब उनकी मां मरीया निकोलायेव्ना का देहान्त हो गया और वह नौ बरस के भी नहीं हुए थे, जब सन् १८३७ में पिता भी नहीं रहे। इसलिये पहले तो एक भूआ ने यास्नाया पोल्याना में और १८४१ में उसकी मृत्यु हो जाने पर कज़ान नगर में रहनेवाली दूसरी भूआ ने इनका लालन-पालन किया।

स्कूल और बाद में कज़ान विश्वविद्यालय में पढ़ाई की दृष्टि से लेव तोलस्तोय ने कोई बहुत अच्छा छात्र होने का परिचय नहीं दिया। लेव तोलस्तोय की पत्नी ने अपने संस्मरणों में लिखा है—"वह अच्छे विद्यार्थी नहीं थे और गणित सीखने में उन्हें बड़ी कठिनाई होती थी जो दूसरों के कथनानुसार उन्हें अवश्य सीखना चाहिये..." राजनयिक या कूटनीतिज्ञ बनने के विचार से उन्होंने कज़ान विश्वविद्यालय के प्राच्यविद्या विभाग में दाख़िला लिया, किन्तु एक साल के बाद यह अनुभव करते हुए कि राजनयिक बनने में उनकी रुचि नहीं है, यह पढ़ाई छोड़कर

विधिशास्त्र विभाग के विद्यार्थी हो गये, मगर चूंकि इस विभाग में शिक्षा की परिस्थितियां इतनी कठिन थीं कि विद्यार्थियों का पढ़ाई में मन नहीं लगता था, इसलिये इस विभाग की पढ़ाई भी पूरी नहीं हुई। अतः उनकी पत्नी का यह कथन सर्वथा न्यायसंगत है कि "उन्होंने जीवन में जो कुछ सीखा, अपने आप ही सीखा और सो भी बड़ी चाह से, जल्दी-जल्दी तथा बड़ी लगन से।" अपनी इच्छा से सीखी जानेवाली इन चीज़ों में दर्शनशास्त्र का विशेष स्थान रहा और विद्यार्थी जीवन में ही सममिती पर लिखे गये दार्शनिक लेख ने उनके बड़े भाइयों तथा उनके मित्रों को चकित कर दिया था और उनमें से एक ने विश्वास न करते हुए यह कहा था कि "इतनी छोटी उम्र में इतना बुद्धिमत्तापूर्ण और गहन" लेख नहीं लिखा जा सकता। दर्शनशास्त्र में इतनी रुचि ने आगे चलकर महान लेखक और चिन्तक लेव तोलस्तोय के जीवन में बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की।

भावी लेखक लेव तोलस्तोय के व्यक्तित्व-निर्माण को जिस एक अन्य चीज़ ने प्रभावित किया, वह थी तोलस्तोय परिवार की सैन्य-सेवा की परम्परा। उनके दादा, परदादा और लकड़दादा सेना में रहे थे, उनके पिता ने नेपोलियन के विरुद्ध १८१२ के महान देश-भक्तिपूर्ण युद्ध में भाग लिया था, बड़े भाई भी स्वेच्छा से सेना में गये थे। इस परम्परा का अनुकरण करते हुए तथा अपनी शक्ति को परखने और युद्ध का वास्तविक रूप देखने के लिये लेव तोलस्तोय भी बाईस वर्ष की आयु में, सन् १८५१ में सेना में चले गये, छः वर्ष तक सेना से सम्बन्धित रहे और उन्होंने काकेशिया, डेन्यूब और क्रीमिया की लड़ाइयों में हिस्सा लिया। इस प्रकार उन्हें ज़ारशाही की सरकारी और फ़ौजी मशीन की सारी गति-विधियों की व्यक्तिगत रूप से बहुत अच्छी जानकारी हो गयी और इस अनुभव ने उन्हें काकेशिया तथा सेवस्तोपोल की लड़ाइयों से सम्बन्धित कहानियां, 'कज़्ज़ाकी' उपन्या-सिका तथा 'युद्ध और शान्ति' उपन्यास के सृजन में बड़ी मदद दी। यह अवधि लेव तोलस्तोय के जीवन में इसलिये भी उल्लेखनीय है कि लेखक के रूप में उनका जन्म हुआ। उनकी पत्नी ने अपने संस्मरणों में लिखा है – "वह अक्सर मुझसे यह कहते थे कि उनकी सबसे सुखद स्मृतियां काकेशिया से जुड़ी हुई हैं। उन दिनों उन्होंने बहुत कुछ पढ़ा, स्टेर्न की रचनाओं का अनुवाद किया... किन्तु सबसे बड़ी बात तो यह

थी कि उन्होंने साहित्य-सृजन के प्रारम्भिक प्रयास भी काकेशिया में ही किये। यहीं उन्होंने 'बचपन' और 'किशोरावस्था' की रचना की।" 'बचपन' उस समय की एक प्रमुख साहित्यिक पत्रिका 'सोव्रेमेन्निक' ('समकालीन') में प्रकाशित हुआ, जिसके सम्पादक विख्यात कवि और लेखक नेक्रासोव थे। तोलस्तोय ने लेखक के रूप में अपना नाम नहीं दिया था और जब कुछ समय बाद एक आलोचनात्मक लेख में इस रचना की प्रशंसा हुई तो तोलस्तोय की ख़ुशी का कोई ठिकाना न रहा। उन्होंने इस घटना को याद करते हुए लिखा: "मैं उसे पढ़ रहा था, प्रशंसा के कारण अभिभूत हुआ जा रहा था और मेरी छाती गर्व से फटी जा रही थी।" पहली रचना के ऐसे अच्छे स्वागत से किस लेखक को ऐसी अनुभूति नहीं होगी! बाद में जब युद्ध सम्बन्धी कहानियां उनके नाम से उक्त पत्रिका में छपीं तो सम्पादक नेक्रासोव ने अपनी टिप्पणी में लिखा कि लेखक "हमें हमारे लिये सर्वथा नयी दुनिया में ले जाता है", कि "उनमें पात्रों को समझने और उनके स्वरूप के मामले में गहरी सचाई व्यक्त की गयी है..." काकेशिया और क्रीमिया में सैन्य-सेवा के इन पांच-छः वर्षों के दौरान लेखक के रूप में लेव तोलस्तोय ने इतनी ख्याति अर्जित कर ली थी कि जब वह नवम्बर १८५५ में पीटर्सबर्ग आये तो उस समय के जाने-माने रूसी लेखकों – तुर्गेनेव, गोंचारोव, ओस्त्रोव्स्की और चेर्नीशेव्स्की ने बराबरी के नाते उनका स्वागत-सत्कार किया। उस समय के प्रसिद्ध लेखक तुर्गेनेव ने तोलस्तोय की बहन को यह तक लिखा – "हम सब की राय में लेव निकोलायेविच हमारे सर्वश्रेष्ठ लेखकों की पांत में आ गये हैं और अब तो उन्हें कोई ऐसी चीज़ लिखनी चाहिये कि वह प्रथम स्थान प्राप्त कर लें जिसके योग्य हैं और जो उनकी प्रतीक्षा कर रहा है।" किन्तु प्रारम्भिक साहित्यिक रचनाकाल में तोलस्तोय को जो बड़ी सफलतायें मिलीं, वे ऐसी ही तीव्र गति से आगे नहीं बढ़ीं। बाद की कुछ कहानियों, विशेषकर १८५९ में रचित 'पारिवारिक सुख' उपन्यास का साहित्यिक जगत में इतना ज़ोरदार स्वागत नहीं हुआ, लेव तोलस्तोय को निराशा ही नहीं, हताशा भी हुई और वह कुछ समय के लिये लेखन-कार्य छोड़कर यास्नाया पोल्याना की अपनी जागीर के किसानों तथा उनके बच्चों की शिक्षा-दीक्षा की ओर ध्यान देने लगे। किसानों के जीवन का इतना घनिष्ठ परिचय, उनमें गहरी रुचि और उनके प्रति सहानुभूतिपूर्ण

तथा प्रगतिशील दृष्टिकोण उनके कृतित्व में बहुत यथार्थवादी, गहन और कलात्मक रूप से प्रतिबिम्बित हुआ है। तोलस्तोय के जीवन और कृतित्व का यह पहला चरण था।

लेव निकोलायेविच तोलस्तोय लगभग चौंतीस साल के हो चुके थे, मगर अभी तक अविवाहित थे। कभी-कभी उन्हें ऐसा लगता था कि वह कभी शादी नहीं करेंगे। पारिवारिक जीवन को छोड़कर वह लगभग हर अन्य क्षेत्र का अनुभव प्राप्त कर चुके थे और आखिर सन् १८६२ के सितम्बर महीने में उन्होंने अपने से सोलह वर्ष छोटी एक कुलीन युवती सोफ़िया अन्द्रेयेव्ना से शादी कर ली। इस तरह से उनके व्यक्तिगत और साहित्यिक जीवन का एक नया अध्याय आरम्भ हुआ। शादी के चार महीने बाद उन्होंने अपनी दैनिकी में लिखा–"मैं बहुत खुश हूं, बहुत खुश हूं, उसे बहुत प्यार करता हूं।" उनकी पत्नी उनकी बहुत अच्छी सहायिका और संगिनी, बरसों तक उनकी निजी सेक्रेटरी रहीं और घण्टों बड़े धैर्य से उनकी रचनाओं की नक़ल तैयार करती थीं। स्पष्ट है कि दाम्पत्य जीवन और घर-गिरस्ती की समस्याओं ने कुछ समय तक साहित्य सृजन की सम्भावना से तोलस्तोय को वंचित रखा जिससे उन्हें खीझ भी अनुभव हुई और आखिर १८६३ में उन्होंने अपनी दैनिकी में लिखा–"बहुत अरसे से मैंने अपने भीतर इतनी उत्कट इच्छा, लिखने की इतनी आत्मविश्वासपूर्ण इच्छा अनुभव नहीं की," और वह एक बहुत बड़ा, बहुत ही महत्त्वपूर्ण उपन्यास लिखने लगे। यह उपन्यास 'युद्ध और शान्ति' था। चार खण्डों तथा लगभग डेढ़ हज़ार पृष्ठवाले इस बृहदाकार उपन्यास के सृजन में उन्हें छः से अधिक वर्ष लगे, लगभग पन्द्रह भिन्न रूपों में इसकी कल्पना की गयी, अनेकों अध्याय कई-कई बार बदले और नये सिरे से लिखे गये। उपन्यास में सैकड़ों पात्र हैं और इसमें इतनी घटनायें तथा मुख्य कथानक के साथ खूब कसे-जुड़े इतने गौण कथानक हैं कि पाठक यह सोचकर ही हैरान रह जाता है कि लेखक ने इन सबको इतनी कलात्मक कुशलता से समेटा कैसे। यद्यपि इस विराट उपन्यास का ताना-बाना बोल्कोन्स्की, रोस्तोव और बेज़ूखोव कुलनामोंवाले कुलीन-परिवारों तथा नेपोलियन बोनापार्ट और सम्राट अलेक्सान्द्र प्रथम के समय की घटनाओं के इर्द-गिर्द बुना गया है, तथापि यह १९वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध, भूदासों की मुक्ति के पहले के रूस का एक जीता-जागता चित्र प्रस्तुत करता है।

राजनीतिक, कूटनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, दार्शनिक, सामरिक, मानसिक-भावनात्मक तथा मनोवैज्ञानिक – कहना चाहिये कि जीवन का कोई भी पक्ष या अंग इससे अछूता नहीं रहा। इस उपन्यास में तोलस्तोय ने रूसी इतिहास के उस काल को केन्द्र-बिन्दु बनाते हुए यह दिखाने का प्रयत्न किया है कि साधारण रूसी लोगों की देशभक्ति, साहस, वीरता और दृढ़ता ने कैसे नेपोलियन और उसकी सभी जगह जीत का डंका बजानेवाली सेना के छक्के छुड़ा दिये। यह इतिहास के प्रति तोलस्तोय का कहीं अधिक व्यापक दृष्टिकोण था। उन्होंने यह स्पष्ट करना चाहा है कि युद्ध का सारे समाज, जीवन के सभी पक्षों, सभी वर्गों और श्रेणियों में लोगों पर क्या प्रभाव पड़ता है। इसीलिये तोलस्तोय के कुछ अध्येताओं का यह मत है कि "शान्ति" के पर्यायवाची रूसी शब्द "मीर" से तोलस्तोय का अभिप्राय "शान्ति" नहीं, बल्कि लोग, जनता या पूरा समाज है। इसी मत को ध्यान में रखते हुए इस उपन्यास का नाम 'युद्ध और शान्ति' नहीं, बल्कि 'युद्ध और समाज' होना चाहिये। यही इस उपन्यास की व्यापकता का आधार, इसकी कसौटी और प्रमाण है। इसमें जहां वीरता, आत्म-रक्षा, देश-रक्षा के लिये न्योछावर किये जानेवाले वीरों का कीर्ति-गान है, वहां युद्ध के भयानक परिणामों, व्यक्तियों और पूरे समाज के जीवन की नींव हिला देनेवाले टकरावों के विरुद्ध शान्ति का प्रबल आह्वान भी है। इस उपन्यास ने एक महान लेखक के रूप में तोलस्तोय की धाक जमा दी और केवल रूसी साहित्य में ही नहीं, विश्व-साहित्य के मूर्धन्य उपन्यासकारों में उनकी गणना होने लगी। समरसैट माम ने लिखा है कि संसार का सबसे बड़ा उपन्यासकार बालज़ाक था, किन्तु 'युद्ध और शान्ति' संसार का सबसे महान उपन्यास है। पहली बात के बारे में विवाद की गुंजाइश हो सकती है, किन्तु ऐसे बहुत ही कम लोग होंगे जो इस दूसरी बात से अपना मतभेद प्रकट करेंगे। मनुष्य का जितना सर्वांगीण और गहन-गम्भीर चित्रण इस उपन्यास में हुआ है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। इस मत से पूरी तरह सहमत हुआ जा सकता है।

इस उपन्यास ने तोलस्तोय की शक्ति को निचोड़ डाला और इसी कारण लगभग एक साल तक वह खेतों और बाग़ में काम करके अपने मस्तिष्क को आराम देते रहे। नये उपन्यास की विषय-वस्तु भी उनके दिमाग़ में नहीं आ रही थी। आखिर उन्होंने पीटर प्रथम के

बारे में एक विराट उपन्यास लिखने का विचार बनाया, किन्तु पीटर प्रथम के समय के बहुत गहरे अध्ययन के बाद उनका इरादा बदल गया और यह उपन्यास रचा नहीं गया। इसी समय एक अन्य उपन्यास का कथानक भी उनके मस्तिष्क में घूमने लगा था। उन्होंने उसी के सृजन में अपने को जुटा दिया। यह उपन्यास 'आन्ना कारेनिना' था जिसे उन्होंने १८७३–१८७७ की अवधि में रचा। इस उपन्यास का कथानक 'युद्ध और शान्ति' से भिन्न है, किन्तु इसमें भी जीवन के बारे में महान लेखक के चिन्तन और दृष्टिकोण की गहरी अनुभूति होती है। उपन्यास की नायिका आन्ना है, एक सुन्दर, जवान महिला जिसका पति, कुलीन कारेनिन उससे उम्र में कहीं बड़ा है, सीमित जीवन दृष्टिकोण रखनेवाला कूप-मंडूक है। जवान काउंट व्रोन्स्की आन्ना को देखते ही उसपर मुग्ध हो जाता है, आन्ना को भी अपने जीवन में प्यार की अनुभूति होती है, किन्तु वह विवाहिता और एक बच्चे की मां है तथा समाज की दृष्टि में उसका व्रोन्स्की को प्यार करना उचित नहीं माना जाता। यहीं से उसके जीवन का संघर्ष शुरू होता है, प्यार और सामाजिक बन्धनों के टकराव का ड्रामा सामने आता है और उपन्यास आन्ना की आत्महत्या से समाप्त होता है। इस मुख्य कथानक के साथ लेविन और कीटी के प्यार की कहानी भी जुड़ी हुई है और लेविन के विचार सम्भवतः बहुत हद तक उस समय के रूस की अनेक समस्याओं पर लेव तोलस्तोय के विचारों को अभिव्यक्त करते हैं। कुछ समालोचकों को यह उपन्यास 'युद्ध और शान्ति' की भांति अद्भुत, अनुपम नहीं लगा, किन्तु कुछ समय बाद उनके मन में परिवर्तन हुआ और उन्होंने इसे भी विश्व-साहित्य की एक उपलब्धि माना। रोमां रोलां ने ठीक ही कहा है कि "'आन्ना कारेनिना' तो पूरा एक संसार है जिसकी निधि अकूत है। 'युद्ध और शान्ति' की भांति इसके पात्रों की भी बहुत बड़ी संख्या है और उन सभी का असाधारण रूप से सजीव और सच्चा चित्रण हुआ है।"

अगले कुछ वर्षों में तोलस्तोय ने 'घोड़े की कहानी' (१८८५), 'इवान इल्यीच की मृत्यु' (१८८६) जैसी अनूठी कहानियों और किसानों के जीवन से सम्बन्धित 'अन्धकार की सत्ता' नाटक (१८८६) और 'फ़ादर सेर्गेई' (१८९०) का सृजन किया। इन रचनाओं के उच्च कलात्मक स्तर, विचारों की गहराई और लोगों के अन्तरतम में झांकने

की तोलस्तोय की क्षमता ने पाठकों और समालोचकों को मुग्ध कर दिया। इन तथा कई अन्य रचनाओं के बाद उनका एक अन्य बड़ा उपन्यास 'पुनरुत्थान' सामने आया। यह उपन्यास १८८९ से १८९९ तक की लम्बी अवधि में लिखा गया, किन्तु इस कारण कि बीच-बीच में तोलस्तोय ने कई अन्य कृतियां रचीं। इस उपन्यास में भूदास प्रथा के उन्मूलन के बाद की तथा रूसी जीवन की उग्रतम सामाजिक असंगतियां बहुत ही स्पष्ट रूप से उभरी हैं। यों तो उपन्यास का केन्द्र-बिन्दु उसका नायक नेख़ल्युदोव है, किन्तु वास्तविक नायक साधारण लोग हैं जो नेख़ल्युदोव के माध्यम से अपने वास्तविक रूप में पाठकों के सामने उभरते हैं। नेख़ल्युदोव का रूसी समाज की सभी श्रेणियों के लोगों से वास्ता पड़ता है और पाठक यह अनुभव किये बिना नहीं रह सकते कि मंत्रियों और ऊंचे सरकारी अफ़सरों से लेकर छोटे कर्मचारियों तक सभी अपने को क़ानून के सेवक मानते हुए आम जनता का शोषण करते हैं, उसे निचोड़ते हैं। नेख़ल्युदोव आम लोगों के दुर्भाग्य का एक उदासीन दर्शक नहीं रहता, वह उसके कारणों की गहराई में पैठने की कोशिश करता है और एक साधारण किसान युवती के प्रति किये गये अपने अपराध के लिये ख़ुद को भी क्षमा नहीं करता। कहा जा सकता है कि कुलीन, धनी नेख़ल्युदोव अपनी आत्मा की धिक्कार से सजग होकर साधारण लोगों के जीवन में गहरी रुचि लेता है और ऐसा करते समय उसके सामने किसानों, छोटे-मोटे कारीगरों, बढ़इयों, इमारतसाज़ों, धोबी-धोबिनों के दुखद जीवन के जो दृश्य उभरते हैं, वही पाठकों को तत्कालीन रूस की असंगतियों का परिचय देते हैं। इन असंगतियों, विरोधाभासों को हम स्वयं नेख़ल्युदोव में भी देखते हैं और वास्तव में वे तोलस्तोय के मन के विरोधाभास भी हैं। लेनिन ने अपने लेख 'लेव तोलस्तोय रूसी क्रान्ति के दर्पण के रूप में' ठीक ही कहा है कि "तोल-स्तोय के विचारों में विरोधाभास वस्तुतः उन विरोधाभासपूर्ण परिस्थि-तियों का दर्पण है जिनमें किसान समुदाय को हमारी क्रान्ति में अपनी ऐतिहासिक भूमिका अदा करनी पड़ी थी।" साथ ही लेनिन ने इस बात पर भी उचित ही बल दिया कि "रूस के ऐतिहासिक जीवन में इस काल का चित्रण करते हुए तोलस्तोय ने अनेक बड़े महत्त्वपूर्ण प्रश्न उठाये और कला के ऐसे उच्चतम शिखर तक पहुंच गये कि उनकी कृतियों नें विश्व-साहित्य की प्रथम श्रेणी में स्थान प्राप्त कर लिया।"

सन् १८२८ से १९१० तक बयासी वर्ष की लम्बी आयु बितानेवाले महान तोलस्तोय जीवन भर लेखन को एक वीरोचित कार्य मानते रहे, निरन्तर आगे बढ़ते, कठिन तपस्या और साधना करते रहे। गोर्की ने उन्हें बिल्कुल ठीक ही "रूसी साहित्य का बबर" कहा था। लेव तोलस्तोय की पचासवीं पुण्य-तिथि पर अपने विचार प्रकट करते हुए प्रसिद्ध सोवियत लेखक लेओनीद लेओनोव इस निष्कर्ष पर पहुंचे थे – "तोलस्तोय का स्थान ख़ाली है। विश्व-साहित्य और हमारे आधुनिक सोवियत साहित्य में भी कोई ऐसा नहीं है जिसकी उनसे तुलना की जा सके।" इसी पुण्य-तिथि के अवसर पर कलाकार और विचारक-चिन्तक तोलस्तोय को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए पं० नेहरू ने दिल्ली में आयोजित एक सभा में कहा था – "वह संसार के उन इने-गिने लेखकों में से हैं जिनकी स्मृति कभी धुंधली नहीं पड़ेगी।" इसी भाषण में पंडित जी ने तोलस्तोय को "सत्य और सौन्दर्य के खोज-मार्ग का चिर पथिक" तथा ऐसा "साहसी चिन्तक" कहा "जिसने कभी किसी के सामने सिर नहीं झुकाया।" पंडित जी ने इस बात पर भी ज़ोर दिया कि "जीवन का सुख इसी में है कि लेव तोलस्तोय की भांति पृथ्वी पर लोगों की स्वतन्त्रता तथा सौभाग्य के लिये संघर्ष किया जाये।" भारत में लेव तोलस्तोय की लोकप्रियता का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा था – "लेव तोलस्तोय यूरोप के उन लेखकों में से एक हैं जिनका नाम और जिनकी रचनायें भारत में सम्भवतः सर्वाधिक विख्यात हैं। इसका कारण तोलस्तोय की रचनाओं के उच्च कलात्मक गुण ही नहीं, बल्कि उनके तथा हमारे नेता महात्मा गांधी के बीच आत्मिक समानता भी है जो तोलस्तोय के बहुत बड़े प्रशंसक थे और अपने व्यक्तित्व-निर्माण के काल में उनसे बहुत प्रभावित हुए थे।" इसी अवसर पर डॉ० राजेन्द्र प्रसाद ने यह आशा प्रकट की थी कि "भारतीय भाषाओं में तोलस्तोय की रचनाओं के नये अनुवादों की बदौलत तोलस्तोय की प्यार और शान्ति की शिक्षा का हमारे देश में अधिक विस्तृत प्रचार हो सकेगा।"

प्रस्तुत पुस्तक को इसी आशा की पूर्ति की दिशा में एक क़दम मानना चाहिये। मूल रूसी पाठ से यह हिन्दी में पहला और तोलस्तोय के इस विराट उपन्यास का पूर्ण तथा प्रामाणिक अनुवाद है जिसे सम्पन्न करने में हर दिन ६-८ घण्टों का कड़ा श्रम करते हुए लगभग तीन

वर्ष लगे हैं। इस बात का उल्लेख करना भी उपयुक्त होगा कि यथा-सम्भव तोलस्तोय की शैली को भी अक्षुण्ण बनाये रखने का प्रयास किया गया है। हां, फ़्रांसीसी भाषा के वाक्यों, वार्तालापों और वर्णन को मूल पाठ की तरह सुरक्षित न रखकर केवल हिन्दी अनुवाद दे दिया गया है, क्योंकि इससे हिन्दी पाठक को कोई लाभ न होकर केवल असुविधा होती।

यदि तोलस्तोय की महान प्रतिभा और उनकी महानतम रचना 'युद्ध और शान्ति' का रसपान करने में यह पुस्तक सहायक होगी, तो अनुवादक और प्रकाशक अपने को धन्य मानेंगे।

डॉ० 'मधु'

ИЗДАТЕЛЬСТВО • МИР •

श्री विक्रम पन्नू जी सैक्टर-14
रोहतक द्वारा इस किताब की
मुल प्रति उपलब्ध करवाई
गई ताकि सत्यनारायण हुड्डा
इसकी पीडीएफ बना कर
मुफ्त में सर्वसुलभ करवा
सके

मुख्य पात्र-सूची

काउंट किरील्ल व्लादीमिरोविच बेज़ूख़ोव।
प्येर (प्योत्र किरील्लोविच) – उनका बेटा।
कतीश (कतेरीना सेम्योनोव्ना)
ओल्गा } उनकी भतीजियां।
सोफ़िया

प्रिंस निकोलाई अन्द्रेयेविच बोल्कोन्स्की।
प्रिंस अन्द्रेई – उनका बेटा।
प्रिंसेस मरीया – उनकी बेटी।
लीज़ा – प्रिंस अन्द्रेई की पत्नी।

काउंट इल्या अन्द्रेयेविच रोस्तोव।
काउंटेस नताल्या – उनकी पत्नी।
निकोलाई
पेत्या (पेत्रूशा) } उनके बेटे।
वेरा
नताशा } उनकी बेटियां।
सोन्या – उनकी भानजी।

प्रिंस वसीली कुरागिन।
अनातोल
इप्पोलीत } उसके बेटे।
एलेन – उसकी बेटी, प्येर की पत्नी।

प्रिंसेस अन्ना मिख़ाइलोव्ना द्रुबेत्स्काया।
बोरीस – उसका बेटा।

आन्ना पाव्लोव्ना शेरेर (अन्नेत) – सम्राज्ञी की सेविका-संगिनी।

मरीया ल्वोव्ना करागिना।
यूलिया – उसकी बेटी।

मरीया द्मीत्रियेव्ना अख्रोसिमोवा।

दोलोख़ोव।

वसीली देनीसोव (वास्का)।

भाग १

१

"तो प्रिंस, गेनुआ और लुक्का अब बोनापार्ट की जागीर बन गये हैं।* नहीं, मैं आपको पहले से ही कहे देती हूं कि अगर आप मुझसे यह नहीं कहेंगे कि हमारे यहां युद्ध शुरू हो गया है, अगर आप अभी भी ईसाई धर्म के इस शत्रु (मैं सचमुच यह विश्वास करती हूं कि वह ईसाई धर्म का शत्रु है) के सभी नीचतापूर्ण और भयानक कुकर्मों की सफ़ाई पेश करेंगे तो हमारे बीच सब कुछ ख़त्म समझिये। आप मेरे दोस्त, मेरे वफ़ादार ग़ुलाम, जैसा कि आप अपने बारे में कहा करते हैं, नहीं रहेंगे। ख़ैर, पधारिये, पधारिये। लगता है कि मैं आपको डरा रही हूं। बैठिये और हाल-चाल सुनाइये।"

१८०५ के जुलाई महीने में सम्राज्ञी मरीया फ़्योदोरोव्ना ** की सेविका-संगिनी और उनके साथ घनिष्ठता रखनेवाली प्रसिद्ध आन्ना पाव्लोव्ना शेरेर ने उक्त शब्द अपने यहां आयोजित पार्टी में सबसे पहले आनेवाले महत्त्वपूर्ण और ऊंचे पदाधिकारी प्रिंस वसीली से फ़्रांसीसी में कहे। आन्ना पाव्लोव्ना को कई दिनों से खांसी आ रही थी, उसके शब्दों में उसे फ़्लू हो गया था (उन दिनों फ़्लू एक नया शब्द था और उसका बहुत कम ही इस्तेमाल होता था)। उसी सुबह को उसके द्वारा लाल वर्दी पहने अर्दली के हाथ भेजे गये निमन्त्रण-पत्रों में एक ही ढंग से सबको फ़्रांसीसी में यह लिखा गया था:

"काउंट (या प्रिंस), अगर आप किसी और बेहतर काम में व्यस्त न हों और अगर बेचारी बीमार औरत के यहां शाम बिताने के ख़्याल से आपको घबराहट महसूस न हो तो शाम के सात बजे से रात के दस बजे तक आपके आने से मुझे ख़ुशी होगी।

आन्ना शेरेर।"

---

* सन् १८०५ में नेपोलियन बोनापार्ट ने गेनुआ (इटली) को फ़्रांस में शामिल कर लिया और लुक्का नेपोलियन द्वारा बनायी गयी उस रियासत का केन्द्र बन गया जो उसने अपनी बहिन एलीज़ा को दी थी। – सं०

** मरीया फ़्योदोरोव्ना (१७५९–१८२८) रूसी सम्राट पावेल प्रथम की पत्नी और रूसी सम्राट अलेक्सान्द्र प्रथम की मां। – सं०

"हे भगवान, कितना ज़ोरदार हमला किया है आपने!" कमरे में दाख़िल होनेवाले प्रिंस ने ऐसे स्वागत से ज़रा भी परेशान हुए बिना जवाब दिया। वह कढ़ी हुई दरबारी वर्दी, लम्बे मोज़े और बकलसवाले बूट पहने था, उसके वक्ष पर पदक चमक रहे थे और उसके चपटे चेहरे पर शान्ति का भाव था।

वह ऐसी निखरी हुई फ़्रांसीसी बोलता था जिसका हमारे दादा-परदादा केवल बोलचाल में ही उपयोग नहीं करते थे, बल्कि जिसमें सोचते-विचारते भी थे। वह धीरे-धीरे और सरपरस्ती के ऐसे अन्दाज़ में बोलता था जो ऊंची सोसाइटी और राज-दरबार में लम्बे अरसे तक काम कर चुके महत्त्वपूर्ण व्यक्ति का विशेष लक्षण होता है। आन्ना पाव्लोव्ना के निकट जाकर उसने उसका हाथ चूमा, चुम्बन के लिये इत्र से महकती और चमकती हुई अपनी चांद आन्ना पाव्लोव्ना के सामने की और इतमीनान से सोफ़े पर बैठ गया।

"मेरी प्यारी मित्र, सबसे पहले तो मुझे यह बताइये कि आपकी तबीयत कैसी है? मेरे दिल को तसल्ली दीजिये," उसने अपनी आवाज़ को बदले बिना और ऐसे लहजे में कहा जिसमें शिष्टता और सहानुभूति की ओट में उदासीनता, यहां तक कि उपहास की भी झलक मिल रही थी।

"जब आदमी नैतिक रूप से व्यथित हो तो... उसकी तबीयत अच्छी ही कैसे हो सकती है? हमारे ज़माने में भावना रखनेवाला कोई आदमी शान्त ही कैसे रह सकता है?" आन्ना पाव्लोव्ना ने जवाब दिया। "मैं उम्मीद करती हूं कि आप अपनी पूरी शाम यहीं बितायेंगे?"

"लेकिन इंगलैंड के राजदूत की पार्टी? आज तो बुधवार है। मुझे वहां अपनी सूरत तो दिखानी ही चाहिये," प्रिंस ने जवाब दिया। "मेरी बेटी मुझे लिवाने के लिये यहां आयेगी।"

"मेरा ख़्याल था कि आज की पार्टी स्थगित कर दी गयी है। सच कहती हूं कि ये सभी जशन और आतिशबाज़ियां बर्दाश्त के बाहर होती जा रही हैं।"

"अगर उन्हें यह मालूम होता कि आप ऐसा चाहती हैं तो पार्टी स्थगित कर दी गयी होती," प्रिंस ने मानो चाबी भरी हुई घड़ी की भांति बरबस यह कह दिया। वह ऐसी बातें कहता रहता था

जिनके बारे में ख़ुद भी यह नहीं चाहता था कि कोई उनपर विश्वास करे।

"मुझे तंग नहीं करें। हां, नोवोसील्त्सेव* के पत्र के बारे में क्या तय किया गया है? आप तो सब कुछ जानते ही हैं।"

"क्या कहूं आपसे इसके बारे में?" प्रिंस ने रूखे और नीरस ढंग से जवाब दिया। "क्या तय किया गया है? यही तय किया गया है कि बोनापार्ट अपनी लुटिया डुबो चुका है और लगता है कि हम भी ऐसा ही करने जा रहे हैं।"

प्रिंस हमेशा किसी पुराने नाटक में अपनी भूमिका के शब्दों को बोलनेवाले अभिनेता की तरह किसी उत्साह के बिना अपनी बात कहता था। इसके विपरीत, चालीस वर्ष की हो जाने के बावजूद आन्ना पाव्लोव्ना शेरेर बड़ी सजीव और जोश से ओत-प्रोत थी।

ऊंची सोसाइटी में ऐसा जोश दिखाना उसकी आदत बन गया था। कभी-कभी, जब वह ऐसा न चाहती, तब भी केवल इसीलिये अपने को उत्साही प्रकट करती कि उसे इस रूप में जाननेवाले लोगों को निराशा न हो। आन्ना पाव्लोव्ना के चेहरे पर निरन्तर खेलती रहनेवाली मुस्कान, जो बेशक उसके अब मुरझाये हुए नाक-नक़्शे पर जंचती नहीं थी, लाड़-प्यार से बिगड़े हुए बच्चों की भांति उसकी उस प्यारी त्रुटि को ज़ाहिर करती थी जिससे वह मुक्ति नहीं पाना चाहती थी, पा भी नहीं सकती थी और ऐसा करने की ज़रूरत भी नहीं समझती थी।

राजनीतिक गति-विधियों के बारे में बातचीत के दौरान आन्ना पाव्लोव्ना गर्म हो उठी।

"ओह, आस्ट्रिया के बारे में आप मुझसे कुछ न कहें! शायद यह मेरी समझ के बाहर की बात हो, लेकिन आस्ट्रिया ने तो न

---

* प्रमुख रूसी राजकीय कार्यकर्त्ता, काउंट निकोलाई नोवोसील्त्सेव (१७६८–१८३८) को रूसी सम्राट अलेक्सान्द्र प्रथम की ओर से सन् १८०५ के पूर्वार्द्ध में फ़ांस और इंगलैंड के बीच शान्ति-सन्धि करवाने के लिये मध्यस्थ का काम करना था। किन्तु पेरिस जाते हुए रास्ते में यानी बर्लिन में उसे यह पता चला कि नेपोलियन ने गेनुआ और लुक्का पर क़ब्ज़ा कर लिया है जिसके बारे में उसने सम्राट अलेक्सान्द्र प्रथम को अपने पत्र द्वारा सूचित किया। नोवोसील्त्सेव ने मध्यस्थता नहीं की। – सं०

कभी जंग चाही थी और न वह अब चाहता है। वह हमारे साथ विश्वासघात कर रहा है। सिर्फ़ रूस को ही यूरोप की रक्षा करनी होगी। हमारे उपकारी सम्राट* अपने इस कर्त्तव्य को जानते हैं और इसे पूरा करेंगे। बस, यही एक चीज़ है जिसपर मैं विश्वास करती हूं। हमारे दयालु और अद्भुत सम्राट को संसार में महानतम भूमिका अदा करनी है। वह इतने परोपकारी तथा भले हैं कि भगवान अवश्य उनकी सहायता करेंगे तथा वह क्रान्ति के उस बहुमुखी सर्प को कुचल देने का अपना कर्त्तव्य पूरा करेंगे जो अब इस हत्यारे और चांडाल के रूप में और भी ज़्यादा भयानक हो गया है। केवल हमें ही धर्मनिष्ठ लोगों के रक्त का कलंक धोना होगा।** मैं आपसे पूछती हूं कि हम किसपर भरोसा कर सकते हैं?.. अपनी व्यापारिक प्रवृत्ति के कारण इंगलैंड सम्राट अलेक्सान्द्र की आत्मा की उदात्तता को नहीं समझेगा और समझ भी नहीं सकता। उसने माल्टा*** को छोड़ने से इन्कार कर दिया है। वह हमारी सभी कार्रवाइयों के पीछे छिपे किसी गुप्त उद्देश्य को देखना, उसे खोजना चाहता है। नोवोसील्त्सेव को क्या जवाब मिला? कुछ भी तो नहीं। अंग्रेज़ हमारे सम्राट के आत्मत्याग को, जो अपने लिये कुछ नहीं चाहते और दुनिया की भलाई के लिये सब कुछ चाहते हैं, नहीं समझे और समझ नहीं सकते। और किस चीज़ का वादा किया है उन्होंने? किसी भी चीज़ का नहीं। और अगर छोटा-मोटा कोई वादा किया भी है तो वह भी पूरा नहीं होगा! प्रशा ने तो यह घोषणा कर दी है कि बोनापार्ट अजेय है और उसके विरुद्ध सारे यूरोप के किये-धरे भी कुछ नहीं होगा... और मैं न तो गार्डेनबर्ग और न

---

* सम्राट अलेक्सान्द्र प्रथम (१८०१–१८२५) से अभिप्राय है। –सं०

** १८वीं शताब्दी के अन्त और १९वीं शताब्दी के आरम्भ में यूरोप के राजतन्त्रवादी बुर्जुआ देशों में (जिनमें रूस भी शामिल था) तथा अग्रणी कुलीन बुद्धिजीवियों के क्षेत्रों में भी ऐसी धारणा बनी हुई थी कि नेपोलियन क्रान्तिकारी व्यक्ति है। उसने फ्रांस की सन् १७८९ की महान क्रान्ति के समय उन्नति की थी। –सं०

*** माल्टा द्वीप पर सन् १७९८ में नेपोलियन ने और सन् १८०० में इंगलैंड ने क़ब्ज़ा कर लिया। सन् १८०२ की अमवेन्स्क सन्धि के अनुसार इंगलैंड को मार्च १८०३ में उसपर से अपना अधिकार हटा लेना चाहिये था, मगर उसने ऐसा करने से इन्कार कर दिया। –सं०

गाउग्वित्स * के एक भी शब्द पर विश्वास करती हूं। प्रशा की कुख्यात तटस्थता धोखे की टट्टी है। मैं तो भगवान और हमारे प्यारे सम्राट के उच्च लक्ष्य पर ही भरोसा करती हूं। वह यूरोप की रक्षा करेंगे!.." वह अपने जोश का मानो मज़ाक़ उड़ाती-सी मुस्कान के साथ अचानक चुप हो गयी।

"मेरे ख़्याल में," प्रिंस ने मुस्कराते हुए कहा, "अगर हमारे प्यारे विंत्सेनगेरोदे ** की जगह आपको भेजा जाता तो आप धावा बोलकर प्रशा के महाराजा की सहमति प्राप्त कर लेतीं। क्या कमाल हासिल है आपको बोलने में। आप मुझे चाय का प्याला देने की कृपा तो करेंगी?"

"अभी। प्रसंगवश," उसने फिर से शान्त होते हुए कहा, "आज मेरे यहां दो बहुत ही दिलचस्प व्यक्ति आनेवाले हैं, वाईकोंट मोर्तेमार, जिसकी फ़्रांस के एक सर्वश्रेष्ठ रोहांस परिवार के माध्यम से मोन्तमोरेन्सी से रिश्तेदारी है। वह एक असली फ़्रांसीसी प्रवासी है, एक श्रेष्ठ फ़्रांसीसी। इसके अलावा पादरी मोरियो भी आ रहा है। इस बहुत ही गहन विचारक को तो आप जानते ही हैं? वह सम्राट से मिला था। आपको मालूम है न?"

"मुझे इनसे मिलकर ख़ुशी होगी," प्रिंस ने कहा। "लेकिन यह बताइये," उसने लापरवाही के ऐसे अन्दाज़ में अपनी बात जारी रखी मानो अभी कुछ याद आ गया हो, जबकि वास्तव में इसी चीज़ के बारे में पूछने के मुख्य उद्देश्य से वह यहां आया था, "क्या, यह सच है कि विधवा सम्राज्ञी बैरन फ़ुन्के को प्रथम सेक्रेटरी के रूप में वियना में नियुक्त करवाना चाहती हैं? वह तो हर दृष्टि से घटिया आदमी

---

* सन् १८०० के आरम्भ में नेपोलियन की शक्ति से डरनेवाले प्रशा ने इंगलैंड, रूस और प्रशा के गठबन्धन में शामिल होने के मामले में टाल-मटोल की और तटस्थ बना रहा। गार्डेनबर्ग सन् १८०५ में प्रशा का विदेश मन्त्रि था और फ़्रांस-विरोधी रुझान रखता था। गाउग्वित्स प्रशा का प्रमुख राजनयिक था और उसका दृष्टिकोण नेपोलियन के अनुकूल था। – सं०

** विंत्सेनगेरोदे – सन् १७८७ से रूसी सेना का जनरल जिसे सम्राट अलेक्सान्द्र प्रथम ने सन् १८०५ में नेपोलियन के विरुद्ध गठजोड़ करने के लिये प्रशा और आस्ट्रिया भेजा था। अगस्त १८०५ में आस्ट्रिया इस गठजोड़ में शामिल हो गया, मगर प्रशा अपनी तटस्थता बनाये रहा। – सं०

प्रतीत होता है।" प्रिंस वसीली अपने बेटे को यही पद दिलवाना चाहता था जिसे सम्राज्ञी मरीया फ़्योदोरोव्ना के ज़रिये बैरन को देने की कोशिश की जा रही थी।

आन्ना पाव्लोव्ना ने यह ज़ाहिर करने के लिये लगभग अपनी आंखें मूंद लीं कि सम्राज्ञी क्या चाहती हैं और उन्हें क्या पसन्द है, इसके बारे में न तो वह और न कोई दूसरा ही टीका-टिप्पणी कर सकता है।

"सम्राज्ञी की बहन ने बैरन फ़ुन्के की नियुक्ति की सिफ़ारिश की है," उसने उदासी भरे और रूखे अन्दाज़ में सिर्फ़ इतना ही कहा। सम्राज्ञी की चर्चा करते हुए आन्ना पाव्लोव्ना के चेहरे पर अचानक उदासी से घुला-मिला, सच्ची और गहन निष्ठा तथा आदर का वही भाव आ गया जो बातचीत के दौरान अपनी उच्च संरक्षिका का उल्लेख करने पर हर बार झलक उठता था। उसने यह भी कहा कि सम्राज्ञी ने बैरन फ़ुन्के के प्रति बहुत कृपाभाव प्रकट किया है और उसके चेहरे पर फिर से उदासी छा गयी।

प्रिंस वसीली उदासीनता दिखाते हुए चुप रहा। प्रिंस पर इस बात के लिये चोट करने के बाद कि उसने उस व्यक्ति के बारे में ऐसे अनुचित शब्द कहे थे जिसकी सम्राज्ञी से सिफ़ारिश की गयी थी, आन्ना पाव्लोव्ना ने राज-दरबार के वातावरण से प्राप्त तथा नारी-सुलभ चतुराई तथा व्यवहारकुशलता से उसे सान्त्वना भी देनी चाही। इसलिये वह बोली:

"हां, और अब आपके परिवार के बारे में। जानते हैं कि जबसे आपकी बेटी ऊंची सोसाइटी में आने-जाने लगी है, उसने सभी को मुग्ध कर लिया है। लोग कहते हैं कि वह दिन के उजाले की तरह सुन्दर है।"

प्रिंस ने आदर और कृतज्ञता प्रकट करते हुए सिर झुकाया।

"मैं अक्सर सोचती हूं," आन्ना पाव्लोव्ना क्षण भर को चुप रहने के बाद उसके निकट खिसकते, उसकी ओर स्नेहपूर्वक मुस्कराते और इस तरह मानो यह जताते हुए कि राजनीतिक तथा ऊंची सोसाइटी की बातें ख़त्म हो गयीं और अब दिली बातें शुरू होती हैं, कहती गयी, "मैं अक्सर सोचती हूं कि जीवन के वरदानों का कभी-कभी कितना अन्यायपूर्ण बंटवारा होता है। क़िस्मत ने भला किसलिये आपको इतने अच्छे दो बच्चे दिये हैं? आपके छोटे बेटे अनातोल का मैं उल्लेख नहीं

कर रही हूं क्योंकि वह मुझे पसन्द नहीं," उसने भौंहें चढ़ाकर और इस बारे में कोई आपत्ति सुनने से मानो इन्कार करते हुए इतना और जोड़ दिया, "इतने प्यारे बच्चे ? लेकिन आप उनका सबसे कम मूल्यांकन करते हैं और इसलिये उनके लायक़ नहीं हैं।"

और वह अपनी भाव-विभोर मुस्कान के साथ मुस्करा दी।

"क्या किया जाये ? लाफ़ाटेर* ने तो यह कहा होता कि मुझमें बाप के प्यार जैसी कोई चीज़ है ही नहीं," प्रिंस ने जवाब दिया।

"मज़ाक़ को रहने दीजिये। मैं तो आपसे गम्भीरतापूर्वक बातचीत करना चाहती हूं। सुनिये, आपके छोटे बेटे से मैं ख़ुश नहीं हूं। यह बात हम दोनों के बीच ही रहनी चाहिये," और उसके चेहरे पर उदासी का भाव आ गया, "सम्राज्ञी के यहां उसकी चर्चा हुई थी और इस सम्बन्ध में सबने आपके प्रति सहानुभूति प्रकट की थी ..."

प्रिंस ने कोई जवाब नहीं दिया, मगर आन्ना पाव्लोव्ना चुप रहते तथा अर्थपूर्ण दृष्टि से उसकी ओर देखते हुए उत्तर की प्रतीक्षा कर रही थी। प्रिंस वसीली ने बुरा-सा मुंह बनाया।

"मैं क्या करूं ?" आखिर उसने कहा। "आप तो जानती ही हैं कि मैंने उनकी शिक्षा-दीक्षा के लिये वह सभी कुछ किया जो एक बाप के नाते मेरे लिये सम्भव था, मगर दोनों ही बेटे उल्लू निकले। यही शुक्र है कि इप्पोलीत शान्त उल्लू है, जबकि अनातोल तो चैन से बैठना नहीं जानता। बस, इतना ही फ़र्क़ है उनमें," उसने सामान्य से कहीं अधिक कृत्रिमता और उत्साहपूर्ण मुस्कान के साथ कहा तथा इस तरह उसके मुंह के पास पड़नेवाली झुर्रियों में अचानक कोई भद्दी तथा कटु चीज़ बड़ी उग्रता से झलक उठी।

"आप जैसे लोगों के यहां बच्चे पैदा ही क्यों होते हैं ? अगर आप पिता न होते तो मैं किसी भी चीज़ के लिये आपकी भर्त्सना न कर पाती," आन्ना पाव्लोव्ना ने कुछ सोचते हुए नज़रें ऊपर उठाकर कहा।

"मैं आपका वफ़ादार ग़ुलाम हूं और केवल आपके सामने मैं

---

* इ० क० लाफ़ाटेर (१७४१–१८०१) स्विट्ज़रलैंड का लेखक जिसने मनुष्य के चरित्र और उसके लक्षणों तथा उसकी मस्तिष्क-रचना के बीच सम्बन्ध स्थापित किया। – सं०

यह स्वीकार कर सकता हूं कि मेरे बच्चे मेरी ज़िन्दगी का सबसे बड़ा बोझ हैं। मुझे यह मुसीबत सहनी ही होगी। मैं अपने दिल को बस, इसी तरह तसल्ली देता हूं। क्या किया जाये?" वह संकेत द्वारा क्रूर भाग्य के सामने अपनी विवशता प्रकट करके चुप हो गया।

आन्ना पाव्लोव्ना सोच में डूब गयी।

"आपने इस बारे में कभी नहीं सोचा कि आप अपने उड़ाऊ-खाऊ बेटे अनातोल की शादी कर दें? कहते हैं," वह बोली, "कि चिर कुमारियों को शादियां करवाने की सनक होती है। अभी तक तो मैं अपने में इस तरह की सनक महसूस नहीं करती, लेकिन मेरी नज़र में एक ऐसी युवती है जो अपने पिता के साथ बहुत दुखी जीवन बिताती है। वह हमारी एक रिश्तेदार है – प्रिंसेस बोल्कोन्स्काया।"

प्रिंस वसीली ने कोई उत्तर नहीं दिया, यद्यपि ऊंची सोसाइटी के लोगों की बात को फ़ौरन समझने और याद कर लेने के गुण के अनुरूप उसने सिर हिलाकर यह ज़ाहिर कर दिया कि इस मामले को उसने समझ लिया है।

"आप जानती हैं कि इस अनातोल पर मुझे हर साल चालीस हजार का ख़र्च करना पड़ता है," अपनी दुखद विचार-शृंखला को छिपाने में सम्भवतः असमर्थ होने के कारण उसने कह ही दिया और चुप हो गया।

"अगर यह सिलसिला ऐसे ही जारी रहा तो पांच साल के बाद क्या होगा? यह लाभ है पिता होने का। आपकी वह प्रिंसेस अमीर है?"

"उसका पिता बहुत धनी और कंजूस है। वह गांव में रहता है। जानते हैं, वह मशहूर प्रिंस बोल्कोन्स्की है जो हमारे दिवंगत सम्राट के वक़्त में ही रिटायर हो गया था और जिसे 'प्रशा का बादशाह'* कहा जाता है। वह बहुत ही बुद्धिमान, किन्तु कुछ सनकी और टेढ़े मिज़ाज का आदमी है। बेचारी प्रिंसेस बहुत ही क़िस्मत की मारी है। उसका भाई, जिसने कुछ ही समय पहले लीज़ा मैनेन से शादी की थी, कुतूज़ोव का एडजुटेंट है। वह आज यहां आयेगा।"

---

* सम्भवतः पोशाक आदि के सम्बन्ध में प्रशा के बादशाह फ़्रेडरिक द्वितीय की नक़ल करने के लिये ही बुज़ुर्ग प्रिंस बोल्कोन्स्की को ऐसा कहा जाता था। – सं०

"सुनिये, प्यारी अन्नेत," प्रिंस ने अचानक उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया और न जाने क्यों, उसे नीचे की ओर झुकाते हुए कहा, "यह मामला सिरे चढ़वा दीजिये और मुझे हमेशा के लिये अपना वफ़ादार ग़ुलाम, 'म' के साथ ग़ुमाम, समझिये जैसे कि मेरा एक कारिन्दा अपनी रिपोर्टों में लिखता है। वह अच्छे कुल-परिवार की है और अमीर भी। मुझे बस, यही चाहिये।"

और उसने अपनी उन सहज-स्वाभाविक, बेतकल्लुफ़ तथा सजीली अंग-चेष्टाओं से, जो उसके लिये लाक्षणिक थीं, आन्ना पाव्लोव्ना का हाथ अपने हाथ में ले लिया, उसे चूमा और तपाक से हिलाया तथा आरामकुर्सी पर बैठकर दूसरी ओर देखने लगा।

"अरे, हां," आन्ना पाव्लोव्ना ने अचानक कुछ सूझ जाने पर कहा। "मैं आज ही लीज़ा से, जवान प्रिंस बोल्कोन्स्की की पत्नी से इसकी चर्चा चलाऊंगी और हो सकता है कि बात बन जाये। आपके परिवार से ही में दूसरों की शादियां तय करने के चिर कुमारियों के धन्धे का अभ्यास शुरू करूंगी।"

२

आन्ना पाव्लोव्ना के ड्राइंगरूम में धीरे-धीरे मेहमान जमा होने लगे। पीटर्सबर्ग के उच्च वर्ग के लोग यहां आ रहे थे जो उम्र और स्वभाव की दृष्टि से एक-दूसरे से बिल्कुल भिन्न होते हुए भी सोसाइटी के हलक़े के लिहाज़ से बराबर थे। प्रिंस वसीली की बहुत ही रूपवती बेटी एलेन प्रिंस को राजदूत की पार्टी में अपने साथ ले जाने के लिये आ गयी। वह बॉल-नृत्य की पोशाक पहने थी और सम्राज्ञी की सेविका-संगिनी होने के नाते हीरों से जड़ा बैज लगाये थी। पीटर्सबर्ग की सबसे मोहिनी महिला के रूप में विख्यात, जवान और टुइयां-सी प्रिंसेस बोल्कोन्स्काया भी आ गयी थी। पिछले जाड़े में उसकी शादी हुई थी और वह गर्भवती होने के कारण अब "बड़ी" महफ़िलों में नहीं जाती थी। किन्तु छोटी दावतों-पार्टियों में अभी भी चली जाती थी। मोर्तेमार को साथ लिये हुए प्रिंस वसीली का बेटा, प्रिंस इप्पोलीत, भी आ गया

और उसने मोर्तेमार का परिचय करवाया। पादरी मोरियो और अनेक अन्य लोग भी आ गये।

"आप अभी तक मेरी मौसी से नहीं मिले?" या, "मेरी मौसी से आप परिचित नहीं हैं?" आन्ना पाव्लोव्ना आनेवाले मेहमानों से यह पूछती और बड़ी गम्भीरता से उन्हें ऊंचे-ऊंचे रिबन-बो बांधे छोटी-सी बुढ़िया के पास ले जाती। अतिथि जैसे ही आने लगे थे, वैसे ही वह दूसरे कमरे से मन्द-मन्थर गति से बाहर आ गयी थी। आन्ना पाव्लोव्ना मेहमानों के नाम बताती, अपनी दृष्टि को धीरे-धीरे मेहमान से मौसी की ओर ले जाती और फिर वहां से हट जाती।

सभी अतिथियों ने, जो न तो इस मौसी को जानते थे, न उसमें कोई दिलचस्पी रखते थे और न ही जिसकी उन्हें कोई ज़रूरत थी, उसका अभिवादन करने की यह रस्म पूरी की। आन्ना पाव्लोव्ना अतिथियों के अभिवादन को उदासी भरी और गम्भीर रुचि से देखती और चुपचाप उसका अनुमोदन करती। उसकी मौसी सभी से उनके स्वास्थ्य, अपने स्वास्थ्य और सम्राज्ञी के स्वास्थ्य के बारे में, जो भगवान की कृपा से आज बेहतर था, एक जैसे ही वाक्य कहती। उसके पास आनेवाले सभी अतिथि शिष्टतावश किसी प्रकार की उतावली दिखाये बिना यह बोझल कर्त्तव्य पूरा करके मन में राहत महसूस करते हुए वहां से हट जाते और फिर एक बार भी उसके निकट न आते।

जवान प्रिंसेस बोल्कोन्स्काया सुनहरी कढ़ाईवाले मख़मली थैले में बुनाई का कुछ काम अपने साथ लेकर आयी थी। उसका ऊपरवाला सुन्दर होंठ, जिसपर छोटे-छोटे रोयें थे, दांतों की तुलना में कुछ छोटा था, किन्तु इसीलिये वह अधिक प्यारे ढंग से खुलता था तथा उस समय और भी ज़्यादा प्यारा लगता था जब कभी-कभी कुछ फैलकर निचले होंठ से जा मिलता था। जैसा कि बहुत ही सुन्दर स्त्रियों के मामले में हमेशा होता है, लीज़ा का यह दोष – छोटा होंठ और अध-खुला मुंह – उसका विशेष, निजी सौन्दर्य-लक्षण प्रतीत होता था। स्वास्थ्य और स्फूर्ति से ओत-प्रोत इस भावी मां को देखकर, जो अपनी गर्भावस्था को इतनी सहजता से निभा रही थी, सभी को ख़ुशी होती थी। बूढ़ों और ऊब अनुभव करनेवाले उदास जवान लोगों को ऐसा लगता था कि उसके साथ कुछ क्षण बिताने और बातचीत करने पर वे ख़ुद भी उसके समान सजीव हो उठते थे। उससे बात करने और हर शब्द पर

उसकी मधुर मुस्कान देखने तथा चमकते हुए सफ़ेद दांतों की लगातार झलक पानेवाला हर व्यक्ति यही सोचता कि आज वह उसके प्रति विशेष रूप से स्नेहशील है। और हर कोई ऐसा ही सोचता था।

बुनाई का थैला बांह पर लटकाये दायें-बायें थोड़ा झुकती और तेज़ी से छोटे-छोटे क़दम बढ़ाती हुई टुइयां-सी प्रिंसेस मेज़ के पास से गुज़री और बड़े प्यारे ढंग से अपनी पोशाक को ठीक करके चांदी के समोवार के पास इस तरह सोफ़े पर जा बैठी मानो वह जो कुछ भी करती थी, वह स्वयं उसके लिये और उसके इर्द-गिर्द के सभी लोगों के लिये बहुत दिलचस्प था।

"मैं बुनाई का कुछ काम अपने साथ ले आई हूं," उसने अपना थैला खोलते और सभी को सम्बोधित करते हुए कहा।

"सुनिये, अन्नेत, आप मेरे साथ ऐसे क्रूर मज़ाक़ नहीं किया करें," उसने मेज़बान से फ़्रांसीसी में कहा। "आपने तो लिखा था कि आपके यहां छोटी-सी पार्टी होगी। देख रही हैं न कि मैं क्या पहने हुए हूं!"

और उसने हाथ फैलाकर लेसों से सजी हुई अपनी उस सजीली, भूरी पोशाक की तरफ़ संकेत किया जिसपर वक्ष से ज़रा नीचे चौड़े रिबन की पेटी बंधी हुई थी।

"निश्चिन्त रहो, लीज़ा, कोई भी तुम्हारी बराबरी नहीं कर पायेगा," आन्ना पाव्लोव्ना ने जवाब दिया।

"आप जानते हैं, मेरा पति मुझे छोड़कर जा रहा है," वह एक जनरल को सम्बोधित करते हुए पहले जैसे अन्दाज़ में फ़्रांसीसी में ही कहती गयी, "सो भी मरने के लिये। मुझे बताइये कि यह बेहूदा जंग किसलिये हो रही है?" उसने प्रिंस वसीली से पूछा और जवाब का इन्तज़ार किये बिना प्रिंस वसीली की बेटी, रूपवती एलेन से बातें करने लगी।

"कितनी प्यारी है यह टुइयां-सी प्रिंसेस," प्रिंस वसीली ने फुसफुसाकर आन्ना पाव्लोव्ना से कहा।

टुइयां-सी प्रिंसेस के आगमन के कुछ ही देर बाद छंटे हुए छोटे-छोटे बालोंवाला एक चश्माधारी तथा लम्बा-तगड़ा और भारी-भरकम नौजवान ड्राइंगरूम में आया। वह उस वक़्त के फ़ैशन के मुताबिक़ हल्के रंग का पतलून, लेस से सजे ऊंचे कालरवाली क़मीज़ और कत्थई रंग का

पल्लेदार कोट पहने था। यह मोटा-तगड़ा नौजवान सम्राज्ञी येकतेरीना के समय की जानी-मानी हस्ती, काउंट बेज़ूख़ोव* का अवैध बेटा था। काउंट इस वक़्त मास्को में अपने जीवन की अन्तिम सांसें ले रहा था। इस जवान आदमी ने अभी तक कहीं कोई काम-धाम नहीं किया था, वह हाल ही में शिक्षा पाकर विदेश से लौटा था और पहली बार ऊंची सोसाइटी की पार्टी में आया था। आन्ना पाव्लोव्ना ने उसका ऐसे अभिवादन किया जैसे वह अपनी इस पार्टी में आनेवाले सबसे नीचे स्तर के लोगों का किया करती थी। किन्तु सबसे नीचे के स्तरवाले इस अभिवादन के बावजूद प्येर बेज़ूख़ोव के आने पर आन्ना पाव्लोव्ना के चेहरे पर ऐसी परेशानी और घबराहट झलक उठी जो किसी स्थान के लिये अनुपयुक्त बहुत ही बड़ी और अटपटी चीज़ की उपस्थिति से अनुभव होती है। बेशक यह सही है कि प्येर कमरे में एकत्रित अन्य लोगों की तुलना में कुछ अधिक लम्बा और हट्टा-कट्टा था, किन्तु आन्ना पाव्लोव्ना की इस घबराहट का सम्बन्ध उसकी उस बुद्धिमत्तापूर्ण और साथ ही भीरु, पैनी और स्वाभाविक दृष्टि से था जो उसकी बैठक में उपस्थित सभी लोगों से उसे अलग करती थी।

"श्रीमान प्येर, यह तो सचमुच आपने बड़ी मेहरबानी की है कि मुझ बेचारी बीमार औरत का हाल-चाल पूछने आ गये।" आन्ना पाव्लोव्ना ने घबराकर अपनी मौसी की आंखों में झांकते हुए, जिसके पास वह उसे ले गयी थी, प्येर से कहा। प्येर जवाब में अस्पष्ट-सा कुछ बुदबुदाया और नज़रों से मानो किसी को ढूंढ़ता रहा। उसने टुइयां-सी प्रिंसेस की ओर ख़ुशी भरी और सुखद मुस्कान से ऐसे सिर झुकाया मानो वह उसकी सुपरिचित हो और मौसी के पास गया। आन्ना पाव्लोव्ना की घबराहट निराधार नहीं थी, क्योंकि प्येर सम्राज्ञी के स्वास्थ्य के बारे में मौसी का भाषण सुने बिना ही वहां से हट गया। आन्ना पाव्लोव्ना ने घबराकर यह कहते हुए उसे रोका:

"आप पादरी मोरियो को नहीं जानते? बहुत ही दिलचस्प आदमी हैं यह..."

"हां, मैंने शाश्वत शान्ति की उनकी योजना के बारे में सुना है।

---

* सम्राज्ञी येकतेरीना द्वितीय १७६२–१७९६ के शासनकाल के एक जाने-माने व्यक्ति। – सं०

वह दिलचस्प है, मगर उसे अमली शक्ल देना शायद ही मुमकिन हो ..."

"क्या आप सचमुच ऐसा समझते हैं?.." आन्ना पाव्लोव्ना ने केवल कुछ कहने के लिये ही ये शब्द कह दिये और फिर से मेज़बान के अपने कर्त्तव्य की ओर ध्यान देना चाहा। किन्तु प्येर ने इसी वक़्त एक और अटपटी हरकत कर दी। पहले तो वह मौसी की पूरी बात सुने बिना ही उसके पास से हट गया था और अब उसने अपनी बातचीत से आन्ना पाव्लोव्ना को रोक लिया जो जाना चाहती थी। वह सिर झुकाकर और अपनी लम्बी-लम्बी टांगों को एक-दूसरी से दूर टिकाकर आन्ना पाव्लोव्ना के सामने खड़ा होकर यह सिद्ध करने लगा कि क्यों वह पादरी की योजना को हवाई क़िला मानता है।

"हम बाद में इसकी चर्चा करेंगे," आन्ना पाव्लोव्ना ने मुस्कराकर कहा।

इस तरह इस जवान आदमी से पिंड छुड़ाकर, जो यह नहीं जानता था कि किस वक़्त कैसा व्यवहार करना चाहिये, वह फिर से अपने मेज़बान के कर्त्तव्य पूरे करने में व्यस्त हो गयी, ध्यान से सुनने और यह देखने लगी कि बातचीत का रंग कहां फीका पड़ रहा है ताकि फ़ौरन वहां जाकर मदद करे। किसी कताई मिल का मालिक जिस तरह से कताई करनेवालों को उनकी जगहों पर बिठाकर इधर-उधर आता-जाता हुआ यह देखता रहता है कि कहीं कोई तकली रुक तो नहीं गयी या कोई तकली चीं-चर्र की आवाज़ तो पैदा नहीं कर रही, जो उसे पैदा नहीं करनी चाहिये, या फिर बहुत ही शोर तो नहीं मचा रही, और जल्दी से उसके पास जाकर उसकी रफ़्तार धीमी या ठीक कर देता है, आन्ना पाव्लोव्ना भी ठीक इसी तरह से अपनी बैठक में चक्कर लगाती हुई चुप हो जाने या बहुत उत्तेजित होकर बातें करनेवाली टोली के पास जाती, एकाध शब्द कहकर या बातचीत का क्रम बदलकर बातचीत की मशीन को सधी-बंधी और प्यारी लय में चालू रखती। किन्तु इन चिन्ताओं के बीच प्येर के बारे में उसकी विशेष घबराहट को अनुभव किया जा सकता था। प्येर जब मोर्तेमार के इर्द-गिर्द हो रही बातचीत को सुनने के लिये उसके पास गया और फिर उन लोगों के नज़दीक गया जहां पादरी बोल रहा था तो वह बड़ी चिन्तित होकर उसे ग़ौर से देखती रही। प्येर के लिये, जिसका पालन-शिक्षण विदेश में हुआ था, आन्ना पाव्लोव्ना की यह पार्टी रूस की पहली ही पार्टी थी जिसमें वह

हिस्सा ले रहा था। उसे मालूम था कि पीटर्सबर्ग के सबसे अच्छे बुद्धि-जीवी यहां एकत्रित हैं और खिलौनों की दुकान पर जानेवाले बालक की तरह उसकी नज़रें सभी ओर दौड़ रही थीं। उसे लगातार इसी बात की चिन्ता बनी हुई थी कि कहीं वह समझदारी की कोई बात सुनने से चूक न जाये। यहां उपस्थित लोगों के चेहरों पर विश्वास और लालित्य-पूर्ण भावों को देखते हुए वह कोई ख़ास ही समझदारी की बात सुनने की आशा कर रहा था। आख़िर वह मोरियो के क़रीब गया। वहां चल रही बातचीत उसे दिलचस्प लगी और, जैसा कि जवान लोगों को अच्छा लगता है, वह अपने विचार प्रकट कर सकने का अवसर ढूंढ़ने लगा।

३

आन्ना पाव्लोव्ना के यहां पार्टी अपने पूरे रंग पर आ गयी थी। सभी ओर तकलियां एक लय में बंधी हुई और रुके बिना शोर मचा रही थीं। मौसी को छोड़कर, जिसके पास दुबले-पतले और चिन्ताग्रस्त चेहरेवाली अधेड़ उम्र की एक औरत बैठी थी और जो इस ठाठदार वातावरण में अजनबी-सी लग रही थी, पार्टी में उपस्थित सभी लोग तीन दलों में बंट गये थे। अधिकांश पुरुषोंवाले एक दल का केन्द्र-बिन्दु पादरी था। दूसरे, जवान लोगों के दल में प्रिंस वसीली की बेटी, रूपवती प्रिंसेस एलेन और बहुत प्यारी, लाल-लाल गालोंवाली और जवानी को देखते हुए कुछ अधिक ही मोटी टुइयां-सी प्रिंसेस बोल्को-न्स्काया आकर्षण-केन्द्र बनी हुई थीं। और तीसरे दल में मोर्तेमार तथा आन्ना पाव्लोव्ना थे।

वाईकोंट मोर्तेमार प्यारे नाक-नक़्शे और शिष्ट आचार-व्यवहार-वाला जवान आदमी था। उसे स्पष्टतः अपने विख्यात होने की चेतना थी, किन्तु अच्छी शिक्षा-दीक्षा के फलस्वरूप वह इस समय जिन लोगों के बीच था, उनके साथ बड़ी नम्रता से पेश आ रहा था। आन्ना पाव्लोव्ना तो साफ़ तौर पर उसे अपने मेहमानों के सामने एक बढ़िया पकवान की तरह पेश कर रही थी। जैसे किसी रेस्तरां का समझदार

मैनेजर दावत के वक़्त विशेष रूप से मज़ेदार पकवान पेश करता है, जिसे अगर कोई गन्दे रसोईघर में तैयार होता देख ले तो खाना पसन्द नहीं करेगा, वैसे ही आज की पार्टी में आन्ना पाव्लोव्ना ने पहले तो वाईकोंट और फिर पादरी को ख़ास पकवानों की तरह मेहमानों के सामने प्रस्तुत किया। मोर्तेमार के दल में फ़ौरन ही ड्यूक एंगेन की हत्या की चर्चा चल पड़ी। वाईकोंट ने कहा कि ड्यूक एंगेन को उसकी उदारता ने ही मरवाया और बोनापार्ट के उससे नाराज़ होने के विशेष कारण थे।

"अरे हां, हमें इसके बारे में बताइये, वाईकोंट!" आन्ना पाव्लोव्ना ने अपने इस वाक्य में लुई १५वें जैसा कुछ अनुभव करते हुए खुश होकर कहा।

वाईकोंट ने विनयपूर्वक सिर झुकाकर यह ज़ाहिर किया कि वह ऐसा करने को तैयार है और शिष्टता से मुस्करा दिया। आन्ना पाव्लोव्ना ने वाईकोंट के गिर्द घेरा-सा बना दिया और सभी को उसका क़िस्सा सुनने के लिये आमन्त्रित किया।

"वाईकोंट ड्यूक को व्यक्तिगत रूप से जानते थे," आन्ना पाव्लोव्ना ने किसी से फुसफुसाकर कहा। "वाईकोंट को क़िस्से-घटनायें सुनाने के फ़न में कमाल हासिल है," उसने दूसरे से कहा। "साफ़ पता चलता है कि वह ऊंचे कुल-घराने का आदमी है," उसने तीसरे को बताया। और इस तरह से वाईकोंट को बहुत ही सजीले और प्रभावपूर्ण ढंग से, सलाद आदि से खूब सजे हुए पकवान की तरह गर्म प्लेट में लोगों के सामने पेश कर दिया गया।

वाईकोंट ने क़िस्सा शुरू करना चाहा और तनिक मुस्कराया।

"यहां आ जाइये, प्यारी एलेन," आन्ना पाव्लोव्ना ने बला की खूबसूरत प्रिंसेस से कहा जो कुछ दूर, दूसरे दल का केन्द्र-बिन्दु बनी बैठी थी।

प्रिंसेस एलेन मुस्करा दी। वह बहुत ही सुन्दर नारी की निरन्तर बनी रहनेवाली उसी मुस्कान के साथ उठी जिसे होंठों पर लिये हुए बैठक में आयी थी। बॉल-नृत्य की अपनी सफ़ेद पोशाक को ज़रा सरसराती, जिस पर सिरपेंचे की बेल कढ़ी हुई थी, और अपने गोरे-गोरे कन्धों, चमकते बालों और हीरों की लौ देते हुए वह पुरुषों द्वारा उसके जाने के लिये बना दिये गये रास्ते पर बढ़ती गयी। उसने किसी की ओर

आन्ना पाव्लोव्ना शेरेर के यहां पार्टी।

नहीं देखा, मगर सभी की तरफ़ देखकर मुस्कराती रही और मानो बड़ी मेहरबानी करते हुए हर किसी को अपने तराशे बदन, गुदगुदे कन्धों और उस समय के फ़ैशन के अनुरूप बहुत ही उघाड़े वक्ष तथा पीठ को मुग्ध भाव से देखने का अधिकार देते और मानो बॉल-नृत्य की सारी छवि को अपने साथ समेटते हुए वह आन्ना पाव्लोव्ना के पास चली गयी। एलेन इतनी प्यारी थी कि उसमें न केवल किसी तरह की शोख़ी या चंचलता ही नहीं थी, बल्कि, इसके विपरीत, उसे तो मानो अपने सौन्दर्य के सन्देहहीन, अत्यधिक प्रबल और विजयी प्रभाव के लिये लज्जा भी अनुभव हो रही थी।

"उफ़, कितनी सुन्दर है!" उसे देखनेवाला हर कोई कह उठता था। वाईकोंट ने मानो अनुपम सौन्दर्य से चकित होकर कंधे झटके और जब एलेन उसके सामने बैठी तथा उसने उसे सदा बनी रहनेवाली अपनी मुस्कान से जगमगा दिया तो उसकी आंखें झुक गयीं।

"मदाम, ऐसे श्रोताओं के सामने कुछ बयान करने की अपनी क्षमता के बारे में मुझे सन्देह हो रहा है," उसने मुस्कराते हुए सिर झुकाकर कहा।

प्रिंसेस एलेन ने अपनी नंगी गुदगुदी बांह को छोटी-सी मेज़ पर टिका दिया और जवाब में कुछ भी कहने की आवश्यकता अनुभव नहीं की। वह मुस्कराते हुए प्रतीक्षा करने लगी। वाईकोंट के घटना सुनाने के पूरे वक़्त के दौरान वह तनकर सीधी बैठी रही और केवल कभी-कभी बड़े चैन से मेज़ पर टिकी हुई अपनी सुन्दर, गुदगुदी बांह और उससे भी सुन्दर अपने वक्ष पर, जहां उसने हीरों के हार को ज़रा ठीक किया, नज़र डाल लेती थी। कई बार उसने अपनी पोशाक की सिलवटें ठीक कीं और जब घटना का कोई भाग उसे बहुत प्रभावित करता तो वह आन्ना पाव्लोव्ना की ओर देखती, तुरन्त अपने चेहरे पर वही भाव ले आती जो सम्राज्ञी की सेविका-संगिनी के चेहरे पर होता और फिर से उसके होंठों पर वही लौ देती मुस्कान खिल उठती। एलेन के पीछे-पीछे ही छोटी-सी प्रिंसेस भी चाय की मेज़ से उठकर यहां चली आयी।

"ज़रा रुकिये, मैं अपना कढ़ाई का काम ले लूं," वह बोली। "आपको क्या हुआ है? क्या सोच रहे हैं?" उसने प्रिंस इप्पोलीत को सम्बोधित किया। "ज़रा मेरा हैंडबैग लेते आइये।"

मुस्कराती और सभी से कुछ बोलती-बतियाती प्रिंसेस के आने पर

सभी लोगों ने हिल-डुलकर अपनी जगहें बदल लीं। आख़िर वह बैठ गयी और उसने उल्लासपूर्वक अपनी पोशाक को ठीक-ठाक किया।

"अब मैं मज़े में हूं," उसने कहा और यह अनुरोध करते हुए कि क़िस्सा शुरू किया जाये, अपनी कसीदाकारी करने लगी।

प्रिंस इप्पोलीत उसका हैंडबैग लिये हुए उसके पीछे-पीछे ख़ुद भी यहीं आ गया और कुर्सी को उसकी तरफ़ बढ़ाकर उसके पास बैठ गया।

प्यारा इप्पोलीत अपनी बहुत ही सुन्दर बहन के साथ शक्ल-सूरत की असाधारण सादृश्यता के कारण आश्चर्यचकित करता था। किन्तु वह इस बात से और भी ज़्यादा हैरान करता था कि इस सादृश्यता के बावजूद आश्चर्य की सीमा तक असुन्दर था। उसका नाक-नक़्शा बिल्कुल बहन जैसा था, मगर बहन का तो रोम-रोम सजीवता, आत्मतुष्टि और यौवन से उमगती स्थायी मुस्कान और बदन के क्लासिकी सौन्दर्य से आलोकित होता रहता था। इसके विपरीत, भाई का वैसा ही चेहरा-मोहरा बौड़मपन और आत्मविश्वासी असन्तोष से बुझा-बुझा-सा लगता और उसका शरीर दुबला-पतला तथा कमज़ोर था। आंखें, नाक और मुंह – सभी कुछ मानो अनिश्चित और ऊब भरी मुख-विकृति का रूप धारण कर लेता और हाथ-पांव हमेशा अटपटी-सी स्थिति में रहते।

"यह भूत-प्रेतों का कोई क़िस्सा तो नहीं है?" इप्पोलीत ने टुइयां-सी प्रिंसेस के पास बैठते और दूरबीनी चश्मे को अपनी आंखों के सामने करते हुए फ़्रांसीसी में पूछा मानो इस चश्मे को आंखों के सामने किये बिना वह बोलना शुरू न कर सकता हो।

"नहीं, मेरे दोस्त," वाईकोंट ने हैरान होते हुए कन्धे झटककर जवाब दिया।

"बात यह है कि भूतों-प्रेतों के क़िस्से-कहानियों से मुझे नफ़रत है," प्रिंस इप्पोलीत ने कुछ ऐसे अन्दाज़ में कहा जिससे यह ज़ाहिर होता था कि उक्त शब्द कहने के बाद ही वह उनका अर्थ समझा था।

उसने जिस आत्मविश्वास से ये शब्द कहे थे, उसके कारण कोई भी यह नहीं समझ पाया कि उसने कोई बहुत समझदारी या बेहद मूर्खता की बात कही है। वह गहरे हरे रंग का फ़्रॉक-कोट और जैसा कि वह स्वयं कहता था, डरी हुई जलपरी के शरीर जैसे रंग का पतलून, लम्बी जुराबें और बकलसवाले जूते पहने था।

वाईकोंट ने बहुत ही प्यारे ढंग से उन दिनों मशहूर यह क़िस्सा

सुनाया कि ड्यूक एंगेन अभिनेत्री जोर्ज से मिलने के लिये चोरी-छिपे पेरिस गया। वहां उसकी बोनापार्ट से मुलाक़ात हो गयी, क्योंकि प्रसिद्ध अभिनेत्री की बोनापार्ट पर भी कृपादृष्टि थी। ड्यूक से भेंट होने पर बोनापार्ट को अचानक बेहोशी का वह दौरा पड़ गया जो उसे कभी-कभी पड़ जाया करता था। बोनापार्ट उस समय पूरी तरह से ड्यूक के रहम पर था। लेकिन ड्यूक ने इस मौक़े का फ़ायदा नहीं उठाया और बोनापार्ट ने बाद में ड्यूक की इसी उदारता के लिये उसे मौत के घाट उतारवाकर बदला लिया।

यह क़िस्सा बहुत ही मज़ेदार और दिलचस्प रहा, ख़ास तौर पर उस जगह, जब प्रतिद्वन्द्वियों ने सहसा एक-दूसरे को पहचान लिया और महिलायें बुरी तरह से घबरा उठीं।

"बहुत खूब है न!" आन्ना पाव्लोव्ना ने टुइयां-सी प्रिंसेस की ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखते हुए कहा।

"बहुत खूब," टुइयां-सी प्रिंसेस अपनी कढ़ाई में सूई खोंसते हुए फुसफुसायी और इस तरह उसने मानो यह ज़ाहिर किया कि क़िस्सा इतना दिलचस्प और बढ़िया था कि उसे अपनी कसीदाकारी की भी सुध नहीं रही थी।

वाईकोंट ने इस मूक प्रशंसा का ऊंचा मूल्यांकन किया और कृतज्ञता-पूर्वक मुस्कराकर वह अपना क़िस्सा आगे बढ़ाने लगा। किन्तु इसी समय आन्ना पाव्लोव्ना ने, जो भयानक प्रतीत होनेवाले जवान आदमी पर लगातार नज़र रख रही थी, यह देखा कि वह बहुत जोश से और ऊंची आवाज़ में पादरी से कुछ कह रहा है। वह मदद करने के लिये फ़ौरन इस ख़तरनाक जगह पर जा पहुंची। वास्तव में ही प्येर ने पादरी को राजनीतिक संतुलन की बहस में उलझा लिया था और पादरी सम्भवतः इस नौजवान की निष्कपट उत्तेजना में रुचि लेता हुआ उसके सामने अपने मनपसन्द विचार की व्याख्या कर रहा था। दोनों बहुत ही सजीव और स्वाभाविक ढंग से अपनी-अपनी बात कह-सुन रहे थे और आन्ना पाव्लोव्ना को यही अच्छा नहीं लगा था।

"इसका उपाय? इसका उपाय है यूरोप में शक्ति-सन्तुलन और जन-अधिकार," पादरी कह रहा था। "इसके लिये सिर्फ़ इसी चीज़ की ज़रूरत है – रूस जैसा कोई शक्तिशाली राज्य, जो अपनी बर्बरता के लिये विख्यात है, यूरोप में सन्तुलन का लक्ष्य सामने रखनेवाले

राज्य-संघ का निस्स्वार्थ भाव से अगुआ बन जाये और ऐसा राज्य दुनिया को विनाश से बचा लेगा!"

"किन्तु आप ऐसा सन्तुलन प्राप्त कैसे करेंगे?" प्येर ने कहना शुरू किया, लेकिन इसी वक़्त आन्ना पाव्लोव्ना यहां आ पहुंची और उसने प्येर पर एक कड़ी नज़र डालकर इतालवी पादरी से यह पूछा कि उसे यहां का जलवायु कैसा लग रहा है। इतालवी का चेहरा अचानक बदल गया और उसपर घिनौनेपन की हद तक वह बनावटी तथा मधुर भाव आ गया जिसे औरतों के साथ बातचीत करते समय वह अपने चेहरे पर लाने का सम्भवतः आदी था।

"मुझे यहां की जिस सोसाइटी में हिस्सा लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, मैं उसकी, विशेषकर नारियों की समझ-बूझ और सुशिक्षा के सौन्दर्य से इतना अभिभूत हूं कि जलवायु के बारे में सोचने की फ़ुरसत ही नहीं मिली," उसने उत्तर दिया।

पादरी और प्येर को इस तरह अकेले न छोड़ने और इनपर नज़र रख पाने की सुविधा को ध्यान में रखते हुए आन्ना पाव्लोव्ना ने इन्हें भी सभी लोगों की मण्डली में शामिल कर लिया।

इसी समय बैठक में एक नया चेहरा प्रकट हुआ। यह नया आदमी था टुइयां-सी प्रिंसेस का पति, जवान प्रिंस बोल्कोन्स्की। वह मझोले क़द का, कठोर और तीखे नाक-नक़्शेवाला ख़ासा ख़ूबसूरत जवान था। उसकी थकी-थकी और ऊबी-ऊबी दृष्टि से लेकर धीमे-धीमे, नपे-तुले क़दमों तक पूरा व्यक्तित्व ही उसे उसकी टुइयां-सी सजीव पत्नी से बिल्कुल भिन्न रूप में प्रस्तुत करता था। स्पष्ट दिखाई दे रहा था कि यहां उपस्थित सभी लोगों से वह न केवल परिचित ही था, बल्कि इस हद तक ऊब चुका था कि उन्हें देखना और उनकी आवाज़ सुनना भी उसे गवारा नहीं था। जिन चेहरों से वह इतना तंग आ चुका था, उनमें उसकी प्यारी-सी पत्नी का चेहरा उसके मन में सबसे अधिक ऊब पैदा करता था। ऐसी भद्दी-सी सूरत बनाकर, जिससे उसका सुन्दर चेहरा विकृत हो गया, उसने पत्नी की ओर से मुंह फेर लिया। उसने आन्ना पाव्लोव्ना का हाथ चूमा और आंखें सिकोड़कर सभी पर नज़र डाली।

"आप मोर्चे पर जा रहे हैं, प्रिंस?" आन्ना पाव्लोव्ना ने फ़्रांसीसी में पूछा।

"जनरल कुतूज़ोव ने कृपा करके मुझे अपना एडजुटेंट बना लिया है," उसने फ़्रांसीसी में ही उत्तर देते हुए फ़्रांसीसियों की भांति कुतूज़ोव का उच्चारण किया।

"और आपकी पत्नी लीज़ा?"

"वह गांव चली जायेगी।"

"अपनी ऐसी प्यारी बीवी की संगत से हमें वंचित करते हुए आपको शर्म नहीं आती?"

"अन्द्रेई," उसकी पत्नी ने दूसरों को सम्बोधित करने के अपने चंचल अन्दाज़ में ही पति को सम्बोधित करते हुए कहा, "वाईकोंट ने अभिनेत्री जार्ज और बोनापार्ट के बारे में एक बहुत बढ़िया क़िस्सा सुनाया है!"

प्रिंस अन्द्रेई ने त्योरी चढ़ायी और मुंह दूसरी ओर कर लिया। अन्द्रेई के यहां आने के क्षण से ही उसे प्रसन्नता तथा मैत्रीपूर्ण दृष्टि से एकटक देखनेवाला प्येर उसके पास आया और उसने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया। प्रिंस अन्द्रेई ने मुड़े बिना ही अपने हाथ को छूनेवाले के प्रति झल्लाहट ज़ाहिर करते हुए मुंह बनाया, किन्तु प्येर का मुस्करा-ता चेहरा देखकर इतने स्नेह और ऐसे मधुर ढंग से मुस्करा दिया जो सर्वथा अप्रत्याशित था।

"अरे वाह!.. तुम भी यहां हो, इस ऊंची सोसाइटी की पार्टी में!" उसने प्येर से कहा।

"मुझे मालूम था कि आप यहां आयेंगे," प्येर ने उत्तर दिया। "मैं रात का खाना खाने आपके यहां आऊंगा," उसने धीमी आवाज़ में इतना और कह दिया ताकि वाईकोंट के क़िस्से में, जिसे वह अभी भी सुनाता जा रहा था, बाधा न पड़े। "आ सकता हूं न?"

"नहीं, नहीं आ सकते," अन्द्रेई ने हंसते और ज़ोर से उसका हाथ दबाकर यह ज़ाहिर करते हुए उत्तर दिया कि भला यह पूछने की भी कोई ज़रूरत है। उसने कुछ और भी कहना चाहा, मगर इसी वक़्त प्रिंस वसीली अपनी बेटी के साथ उठ खड़ा हुआ और उन्हें रास्ता देने के लिये सभी पुरुष भी उठकर खड़े हो गये।

"मैं आपसे माफ़ी चाहता हूं, प्यारे वाईकोंट," प्रिंस वसीली ने फ़्रांसीसी महानुभाव की आस्तीन को स्नेहपूर्वक नीचे की ओर खींचते हुए कहा ताकि वह खड़ा न हो। "राजदूत के यहां होनेवाला कमबख़्त

समारोह मुझे आपका पूरा क़िस्सा सुनने की ख़ुशी से वंचित कर रहा है और ख़लल डालने के लिये मजबूर कर रहा है। आपकी इतनी बढ़िया पार्टी से जाते हुए मुझे बहुत अफ़सोस हो रहा है," उसने आन्ना पाव्लोव्ना से कहा।

उसकी बेटी, प्रिंसेस एलेन अपनी पोशाक की चुन्नटों को हल्के-फुल्के ढंग से थामे हुए कुर्सियों के बीच से बढ़ चली और उसके सुन्दर चेहरे पर उसकी मधुर मुस्कान और अधिक चमक उठी। यह सुन्दरी जब प्येर के पास से गुज़री तो वह लगभग सहमी, उल्लासपूर्ण आंखों से उसकी तरफ़ देखता रहा।

"बहुत ही सुन्दर है," प्रिंस अन्द्रेई ने कहा।

"बहुत ही," प्येर ने पुष्टि की।

प्येर के निकट से गुज़रते हुए प्रिंस वसीली ने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया और आन्ना पाव्लोव्ना को सम्बोधित करते हुए कहा:

"आप इस भालू को आदमी बना दें। वह एक महीने से हमारे यहां रह रहा है, मगर आज पहली बार मैं उसे सोसाइटी में देख रहा हूं। जवान आदमी को सबसे अधिक तो समझदार महिलाओं की संगत की ज़रूरत होती है।"

४

आन्ना पाव्लोव्ना मुस्करायी और उसने वादा किया कि वह प्येर की तरफ़ ध्यान देगी। उसे यह मालूम था कि प्येर के पिता की तरफ़ से वह प्रिंस वसीली का रिश्तेदार था। अभी तक मौसी के पास बैठी हुई अधेड़ उम्र की महिला जल्दी से उठी और उपकक्ष में प्रिंस वसीली के पास जा पहुंची। उसके चेहरे पर से बनावटी दिलचस्पी का भाव लुप्त हो गया। उसके दयालु और चिन्ताओं से मुरझाये चेहरे पर अब परेशानी और भय ही अंकित रह गया।

"मेरे बोरीस के बारे में आप मुझसे क्या कह सकते हैं, प्रिंस?" उपकक्ष में प्रिंस के पास पहुंचकर उसने पूछा। (वह बोरीस का उच्चारण करते हुए 'ओ' पर विशेष बल देती थी।) "मैं अब पीटर्सबर्ग में और अधिक नहीं रुक सकती। यह बताइये कि घर लौटकर अपने बेचारे बेटे से मैं क्या कह सकती हूं?"

इस चीज़ के बावजूद कि प्रिंस वसीली मन मारकर और लगभग अशिष्टता से उसकी बात सुन रहा था, यहां तक कि खीभ भी ज़ाहिर कर रहा था, अधेड़ उम्र की यह महिला सस्नेह और मर्मस्पर्शी ढंग से मुस्करा दी और इस बात को ध्यान में रखते हुए कि कहीं वह चला न जाये, उसने उसका हाथ थाम लिया।

"सम्राट से एक शब्द कह देना आपके लिये मामूली-सी बात है और आपके ऐसा करने पर मेरे बेटे का फ़ौरन गार्ड-सेना में तबादला कर दिया जायेगा," उसने अनुरोध किया।

"प्रिंसेस, विश्वास कीजिये कि मेरे लिये जो कुछ भी करना सम्भव है, मैं वह करने को तैयार हूं," प्रिंस वसीली ने उत्तर दिया, "किन्तु मेरे लिये सम्राट से ऐसी प्रार्थना करना कठिन है। मैं आपको यह सलाह दूंगा कि आप प्रिंस गोलीत्सिन के ज़रिये रुम्यान्त्सेव* से ऐसा करने का अनुरोध करें। यह ज़्यादा समझदारी की बात होगी।"

अधेड़ उम्र की महिला का कुलनाम द्रुबेत्स्काया था। यह रूस का एक सर्वश्रेष्ठ कुलनाम था। किन्तु वह ग़रीब थी, एक अरसे से ऊंची सोसाइटी में नहीं आती-जाती थी और उसके पहलेवाले अच्छे सम्पर्क-सूत्र भी टूट चुके थे। अपने इकलौते बेटे का गार्ड-सेना में तबादला करवाने के लिये दौड़-धूप करने को ही वह अब पीटर्सबर्ग आयी थी। प्रिंस वसीली से मिल पाने के लिये ही उसने आन्ना पाव्लोव्ना की इस पार्टी में अपने को निमन्त्रित करवा लिया था और सिर्फ़ इसीलिये वह वाईकोंट का क़िस्सा सुनती रही थी। प्रिंस वसीली के शब्द सुनकर उसका दिल बैठ गया, उसके चेहरे पर, जो कभी सुन्दर रहा होगा, नाराज़गी झलक उठी। मगर कोई एक मिनट तक ही ऐसा हुआ। वह फिर से मुस्करा दी और उसने प्रिंस वसीली के हाथ को अधिक कसकर पकड़ लिया।

"सुनिये, प्रिंस," उसने कहना शुरू किया, "मैंने आपसे कभी किसी चीज़ के लिये प्रार्थना नहीं की, कभी प्रार्थना करूंगी भी नहीं, आपके प्रति अपने पिता के मैत्री भाव की भी मैंने आपको कभी याद नहीं दिलायी। किन्तु अब भगवान के नाम पर आपसे यह अनुरोध करती हूं कि मेरे बेटे की सहायता कीजिये। मैं आपका बहुत उपकार

---

* प्रिंस अलेक्सान्द्र गोलीत्सिन (१७७३–१८४४) – प्रभावशाली रूसी राजकीय कार्यकर्त्ता। काउंट निकोलाई रुम्यान्त्सेव (१७५४–१८२६) – प्रमुख रूसी राजकीय कार्यकर्त्ता, राजनयिक। – सं०

मानूंगी," उसने जल्दी से अन्तिम शब्द और जोड़ दिये। "नहीं, आप नाराज़ नहीं हों, मुझे वचन दें। मैं गोलीत्सिन से प्रार्थना कर चुकी हूं, उसने इन्कार कर दिया। अपना पहले जैसा कृपा भाव दिखाइये," उसने मुस्कराने की कोशिश करते हुए कहा, जबकि उसकी आंखों में आंसू आ गये थे।

"पापा, हमें देर हो रही है," दरवाज़े के पास इन्तज़ार करती हुई प्रिंसेस एलेन ने सांचे में ढली मूर्त्ति जैसे कन्धों पर अपना सुन्दर सिर घुमाकर कहा।

ऊंची सोसाइटी में असर-रसूख़ एक ऐसी पूंजी है जिसे सहेजना चाहिये ताकि वह चुक न जाये। प्रिंस वसीली यह जानता था और एक बार इस बात की चेतना हो जाने पर कि अगर वह उससे प्रार्थना करनेवाले हर व्यक्ति के लिये दूसरों से अनुरोध करने लगेगा तो जल्द ही किसी से अपनी मदद करने को नहीं कह सकेगा, अपने असर-रसूख़ का बहुत कम इस्तेमाल करता था। फिर भी प्रिंसेस द्रुबेत्स्काया के मामले में उसकी नयी अपील के बाद उसने मानो अपनी आत्मा की धिक्कार अनुभव की। प्रिंसेस ने उसे सचाई याद दिला दी थी – अपनी तरक़्क़ी की राह पर पहले क़दम बढ़ाने के लिये वह उसके पिता का आभारी था। इसके अलावा प्रिंसेस के रंग-ढंग से वह यह भी समझ गया था कि वह उन महिलाओं, विशेषकर उन माताओं में से है जिनके दिमाग़ में अगर कोई धुन सवार हो जाती है तो वे तब तक पिंड नहीं छोड़ेंगी, जब तक उनकी इच्छा पूरी नहीं हो जायेगी। ऐसा न होने पर वे हर दिन, हर मिनट पीछे पड़ी रहेंगी और रोने-धोने के नाटक करने से भी बाज़ नहीं आयेंगी। इस अन्तिम विचार से वह डांवांडोल हो गया।

"प्यारी आन्ना मिख़ाइलोव्ना," उसने अपनी सामान्य बेतकल्लुफ़ी और कुछ ऊब के अन्दाज में कहा, "आप जो चाहती हैं, मेरे लिये उसे करना लगभग असम्भव है। किन्तु यह प्रमाणित करने के लिये कि मैं आपको कितना अधिक चाहता हूं और आपके दिवंगत पिता की पुण्य स्मृति का कितना अधिक आदर करता हूं, मैं असम्भव को सम्भव कर दिखाऊंगा। आपका बेटा गार्ड-सेना में चला जायेगा। मैं आपको वचन देता हूं। अब आप ख़ुश हैं?"

"मेरे प्यारे मित्र, मेरे उपकारी! मुझे आपसे ऐसी ही आशा थी। मैं जानती हूं कि आप कितने दयालु हैं।"

प्रिंस वसीली ने जाना चाहा।

"ज़रा रुकिये, दो शब्द और कहने हैं आपसे। उसके गार्ड-सेना में चले जाने पर..." वह एक क्षण के लिये चुप रही, "मिख़ाईल इलारिओनोविच कुतूज़ोव के साथ तो आपके बहुत अच्छे सम्बन्ध हैं न। उनके एडजुटेंट के रूप में आप उनसे मेरे बोरीस की सिफ़ारिश कर दीजिये। तब मेरे दिल को चैन मिल जायेगा और तब मैं..."

प्रिंस वसीली मुस्कराया।

"मैं इसका वादा नहीं करता। आप जानती ही होंगी कि जब से कुतूज़ोव को सेनापति नियुक्त किया गया है, किस तरह लोग उन्हें घेरे रहते हैं। उन्होंने स्वयं मुझसे यह कहा था कि मास्को की सभी महिलाओं ने अपने बेटों को उनके एडजुटेंट बनाने के लिये मानो षड्-यन्त्र रच लिया है।"

"नहीं, आप वादा करें, मैं आपको जाने नहीं दूंगी, मेरे प्यारे उपकारक।"

"पापा," पहले जैसे अन्दाज़ में ही सुन्दर एलेन ने दोहराया, "हमें देर हो रही है।"

"तो नमस्ते। आप देख रही हैं न?"

"कल आप सम्राट से कह देंगे?"

"अवश्य ही, लेकिन कुतूज़ोव के बारे में वादा नहीं करता।"

"नहीं, वादा कीजिये, वादा कीजिये, वसीली," आन्ना मिख़ाइलोव्ना ने जवान औरत की चंचल मुस्कान के साथ पुकारकर कहा। यह चंचल मुस्कान कभी तो शायद उसके रूप को चार चांद लगाती होगी, मगर अब उसके सूखे-मुरझाये चेहरे पर शोभा नहीं देती थी।

वह स्पष्टतः अपनी उम्र के बारे में भूल गयी थी और आदत के मुताबिक़ वे सभी पुराने तीर चला रही थी जिनका औरतें ऐसे मौक़ों पर इस्तेमाल करती हैं। मगर प्रिंस वसीली के जाते ही उसके चेहरे पर पहले जैसा भावनाहीन और बनावटी भाव आ गया। वह उसी मण्डली में वापस आ गयी जहां वाईकोंट अपना क़िस्सा जारी रख रहा था और चूंकि उसके आने का मक़सद पूरा हो गया था, इसलिये यहां से जाने के उचित क्षण की प्रतीक्षा करते हुए यह ज़ाहिर करने लगी कि क़िस्से को बहुत ध्यान से सुन रही है।

"यह बताइये कि मिलान में ताजपोशी के नाटक के बारे में आपकी

क्या राय है?" आन्ना पाव्लोव्ना ने जानना चाहा। "और नया मज़ाक़ यह है कि गेनुआ तथा लुक्का नगरों के वासी अब श्रीमान बोनापार्ट के सामने अपनी प्रार्थनायें लेकर उपस्थित होते हैं तथा सिंहासन पर बैठा हुआ बोनापार्ट उनकी इच्छायें पूरी करता है। भई ख़ूब! यह तो मज़ा ही आ गया! नहीं, इससे तो आदमी पागल हो सकता है। ऐसा लग सकता है कि सारी दुनिया का दिमाग़ ख़राब हो गया है।"

आन्ना पाव्लोव्ना से नज़रें मिलाते हुए प्रिंस अन्द्रेई व्यंग्यपूर्वक मुस्कराया।

"यह ताज मुझे भगवान ने दिया है और जो इसे छुएगा, उसकी शामत समझो।" प्रिंस अन्द्रेई ने कहा। (ये शब्द बोनापार्ट ने अपनी ताजपोशी के वक़्त कहे थे।) "कहते हैं कि उक्त शब्द कहते हुए वह बहुत प्रभावपूर्ण लग रहा था," प्रिंस ने इतना और जोड़ दिया तथा इन्हीं शब्दों को इतालवी भाषा में दोहराया।

"मैं आशा करती हूं," आन्ना पाव्लोव्ना ने अपनी बात जारी रखी, "कि यह वह अन्तिम बूंद होगी जिससे प्याला छलक जायेगा। सभी कुछ के लिये ख़तरा बन जानेवाले इस आदमी को यूरोप के सम्राट अब और सहन नहीं कर सकते।"

"सम्राट? मैं रूस की बात नहीं कर रहा हूं।" वाईकोंट ने शिष्ट, किन्तु निराशा के अन्दाज़ में कहा। "सम्राट! उन्होंने क्या किया है लुई १६वें और सम्राज्ञी के लिये, एलिज़ाबेथ के लिये? कुछ भी तो नहीं। और यक़ीन कीजिये कि उन्हें बोर्बोन के ध्येय के प्रति विश्वास-घात करने की यह सज़ा मिल रही है। सम्राट! वे तो सिंहासन को हथिया लेनेवाले का अभिनन्दन करने के लिये अपने राजदूत उसके पास भेजते हैं।"

और उसने तिरस्कारपूर्वक उसांस लेकर फिर से अपने बैठने की स्थिति बदल ली। बहुत देर से अपने दूरबीनी चश्मे में से वाईकोंट की ओर देखते रहनेवाले प्रिंस इप्पोलीत ने उक्त शब्दों को सुनकर अचानक अपने सारे शरीर को टुइयां-सी प्रिंसेस की ओर घुमा दिया और उससे सूई लेकर मेज़ पर कोंडे-परिवार का चिह्न बनाने और इतनी गम्भीरता से उसे उसके बारे में बताने लगा मानो प्रिंसेस ने उससे ऐसा करने का अनुरोध किया हो।

"यह है कोंडे की वंशावली," उसने कहा।

टुइयां-सी प्रिंसेस मुस्कराते हुए उसकी बात सुनती रही।

"अगर बोनापार्ट एक और साल तक सिंहासन पर बना रहा," वाईकोंट ने शुरू की हुई बातचीत को उस व्यक्ति के अन्दाज़ में जारी रखा जो उस मामले में दूसरों के विचारों की तरफ़ इसलिये ज़रा भी ध्यान नहीं देता कि वह उन सभी की तुलना में उसे कहीं ज़्यादा अच्छी तरह जानता-समझता है और इसलिये अपनी ही विचार-शृंखला पर ध्यान केन्द्रित किये रहता है, "तो बहुत कुछ चौपट हो जायेगा। षड्यंत्र, हिंसा, निर्वासन और हत्याओं से फ़्रांसीसी सोसाइटी, ज़ाहिर है कि मेरा मतलब अच्छी सोसाइटी से है, हमेशा के लिये नष्ट हो जायेगी और तब ..."

उसने कन्धे झटके और दोनों ओर हाथ फैला दिये। प्येर ने कुछ कहना चाहा, बातचीत में उसे दिलचस्पी महसूस हो रही थी, किन्तु उसपर कड़ी नज़र रखनेवाली आन्ना पाव्लोव्ना बीच में ही बोल पड़ी।

"सम्राट अलेक्सान्द्र ने यह घोषणा की है," उसने उस भाव-विभोर लहजे में कहा जो सम्राट-परिवार की चर्चा के समय हमेशा उसके शब्दों में आ जाता था, "कि वह फ़्रांसीसियों को ही अपनी शासन-पद्धति चुनने की सम्भावना देंगे। मेरे मतानुसार इसमें शक की ज़रा भी गुंजाइश नहीं कि अपहारी से मुक्ति पाते ही सारा राष्ट्र क़ानूनी बादशाह के सम्मुख नतमस्तक हो जायेगा," आन्ना पाव्लोव्ना ने प्रवासी और राजतन्त्रवादी वाईकोंट के प्रति सौजन्य दिखाने का प्रयास करते हुए कहा।

"पूरे विश्वास से ऐसा नहीं कहा जा सकता," प्रिंस अन्द्रेई ने मत प्रकट किया। "श्रीमान वाईकोंट की बात बिल्कुल सही है कि मामला काफ़ी चौपट हो चुका है। मेरे ख़्याल में तो पुरानी राज्य-प्रणाली को लौटाना कठिन होगा।"

"जो कुछ मैंने सुना है," झेंप से लाल होते और फिर से बातचीत में दख़ल देते हुए प्येर बोला, "उससे तो यही पता चलता है कि लगभग सभी कुलीन बोनापार्ट के साथ हो गये हैं।"

"बोनापार्ट के समर्थक ऐसा कहते हैं," प्येर की तरफ़ देखे बिना ही वाईकोंट ने जवाब दिया। "अब फ़्रांस के जनमत को जानना आसान काम नहीं।"

"ऐसा तो बोनापार्ट कहता था," प्रिंस अन्द्रेई ने व्यंग्यपूर्वक मुस्क-

राते हुए टिप्पणी की। (स्पष्ट था कि उसे वाईकोंट अच्छा नहीं लग रहा था और बेशक वह उसकी ओर देखता नहीं था, फिर भी उसी को अपने शब्दों का निशाना बना रहा था।)

"'मैंने उन्हें कीर्ति का मार्ग दिखाया,'" कुछ देर तक चुप रहने के बाद फिर से नेपोलियन के शब्दों को दोहराते हुए उसने कहा, "'उन्होंने इन्कार कर दिया; मैंने अपनी बैठक के दरवाज़े खोल दिये और वे सभी वहां घुस आये...' मैं नहीं जानता कि उसे ऐसा कहने का क्या अधिकार था।"

"कोई अधिकार नहीं था," वाईकोंट ने कहा। "ड्यूक की हत्या के बाद उसके सबसे बड़े समर्थकों की नज़र में भी वह हीरो नहीं रहा। अगर वह कुछ लोगों के लिये हीरो था भी," वाईकोंट ने आन्ना पाव्लोव्ना को सम्बोधित करते हुए कहा, "तो ड्यूक की हत्या के बाद स्वर्ग में एक शहीद बढ़ गया और पृथ्वी पर एक हीरो कम हो गया।"

आन्ना पाव्लोव्ना और दूसरे लोग मुस्कराकर वाईकोंट के इन शब्दों का अभी मूल्यांकन नहीं कर पाये थे कि प्येर फिर से बातचीत में कूद पड़ा और यद्यपि आन्ना पाव्लोव्ना पहले से ही यह महसूस कर रही थी कि वह कोई भद्दी बात कह देगा, वह उसे रोक नहीं पायी।

"ड्यूक एंगेन की हत्या एक राजनीतिक आवश्यकता थी," प्येर ने कहा। "और मैं इसी चीज़ में नेपोलियन की आत्मा की महत्ता देखता हूं कि वह इस हरकत की पूरी ज़िम्मेदारी अपने ऊपर लेने से नहीं घबराया।"

"हे भगवान! हे भगवान!" आन्ना पाव्लोव्ना बड़ी निराशा से फुसफुसायी।

"तो श्रीमान प्येर, आपको हत्या में आत्मा की महत्ता नज़र आती है?" टुइयां-सी प्रिंसेस ने मुस्कराते और कसीदाकारी के काम को अपने निकट खींचते हुए पूछा।

"ओह! ओह!" विभिन्न आवाज़ें सुनायी दीं।

"बहुत ख़ूब!" प्रिंस इप्पोलीत ने अंग्रेज़ी में कहा और अपने घुटने को हथेली से थपथपाने लगा। वाईकोंट ने केवल कन्धे झटके।

प्येर ने चश्मे के ऊपर से बड़ी गम्भीरता से अपने श्रोताओं की ओर देखा।

"मैं इसलिये ऐसा कह रहा हूं," उसने उत्तेजनापूर्वक अपनी

बात जारी रखी, "कि बोर्बोन वंशवाले तो लोगों को अराजकता की हालत में छोड़, क्रान्ति से डरकर भाग गये। केवल नेपोलियन ही क्रान्ति को समझ पाया, उसपर विजयी हो सका और सभी लोगों की भलाई को ध्यान में रखते हुए एक आदमी की ज़िन्दगी का सवाल सामने आने पर वह रुक नहीं सकता था।"

"आप उस मेज़ पर नहीं जाना चाहेंगे?" आन्ना पाव्लोव्ना ने जानना चाहा। किन्तु प्येर ने कोई जवाब दिये बिना अपनी बात जारी रखी।

"हां, नेपोलियन महान है," वह अधिकाधिक उत्साहित होता हुआ कहता गया, "क्योंकि वह क्रान्ति से ऊपर उठ पाया, उसने उसके दुरुपयोगों को ख़त्म करके उसमें जो कुछ अच्छा था, उसे – नागरिकों की समानता, बोलने और प्रेस की स्वतन्त्रता को – सुरक्षित रखा और इसीलिये उसने सत्ता की बाग-डोर अपने हाथ में ली।"

"हां, अगर उसने सत्ता की बाग-डोर अपने हाथ में लेकर हत्या के लिये उसका उपयोग न किया होता, उसे क़ानूनी बादशाह को लौटा दिया होता तो मैंने उसे महान व्यक्ति कहा होता।"

"वह ऐसा नहीं कर सकता था। लोगों ने इसलिये उसे सत्ता सौंपी कि उसने उन्हें बोर्बोन वंश से निजात दिलाई और इसलिये भी कि उन्हें वह एक महान व्यक्ति लगा। क्रान्ति एक महान कार्य था," प्येर कहता गया और अपने इस निर्भीक तथा चुनौती देनेवाले कथन से उसने यह प्रकट कर दिया कि वह अभी बहुत जवान है और उसके दिमाग़ में जो भी बात आयी है, उसे जल्दी से जल्दी कह देना चाहता है।

"क्रान्ति और राजहत्या एक महान कार्य है? न जाने इसके बाद और क्या कुछ कहा जायेगा ... आप उस मेज़ पर नहीं जाना चाहेंगे?" आन्ना पाव्लोव्ना ने दोहराया।

"रूसो का सामाजिक समझौता,"* वाईकोंट ने ज़रा मुस्कराकर कहा।

"मैं राजहत्या की नहीं, धारणा की बात कर रहा हूं।"

---

* जान-जाक रूसो (१७१२–१७७८) – फ़्रांसीसी लेखक और दार्शनिक-प्रबोधक ने 'सामाजिक समझौते, या राजनीतिक अधिकार के सिद्धान्त' नामक अपनी रचना में इस विचार की पुष्टि की है कि सरकार और जनता के बीच समझौते को ही राजनीतिक सत्ता का आधार होना चाहिये। – सं०

"हां, लूटने, दूसरों की जान लेने, राजहत्या करने के विचार की?" वाईकोंट ने व्यंग्यपूर्ण अन्दाज़ में उसे फिर टोक दिया।

"ज़ाहिर है कि ये ज़्यादतियां थीं, लेकिन क्रान्ति का पूरा अर्थ सिर्फ़ यही नहीं था। उसका महत्त्व निहित है नागरिकों के अधिकारों में, पूर्वग्रहों से मुक्ति में, नागरिकों की समानता में और इन सब धारणाओं को नेपोलियन ने पूरी तरह सुरक्षित रखा है।"

"स्वतन्त्रता और समानता," वाईकोंट ने ऐसे तिरस्कारपूर्वक कहा मानो उसने आख़िर यह तय कर लिया हो कि इस नौजवान को उसके कथनों का पूरा बेतुकापन स्पष्ट कर दे – ये केवल भारी-भरकम शब्द हैं जिनका बहुत पहले से ही दुरुपयोग किया जा रहा है। स्वतन्त्रता और समानता को कौन प्यार नहीं करता? हमारे उद्धारक ईसा मसीह ने भी स्वतन्त्रता और समानता की शिक्षा दी थी। किन्तु क्रान्ति के बाद क्या लोग सुखी हो गये? नहीं, बात इसके बिल्कुल उलट है। हम स्वतन्त्रता चाहते थे, मगर बोनापार्ट ने उसे नष्ट कर दिया।"

प्रिंस अन्द्रेई मुस्कराते हुए कभी तो प्येर, कभी वाईकोंट और कभी मेज़बान की तरफ़ देख रहा था। ऊंची सोसाइटी के वातावरण की अभ्यस्त होने के बावजूद प्येर की उलटी-सीधी बातों से आन्ना पाव्लोव्ना शुरू में तो सकते में आ गयी। किन्तु यह देखकर कि प्येर के राजद्रोही और अपवित्र कथनों के बावजूद वाईकोंट आपे से बाहर नहीं हुआ और जब उसे यह विश्वास हो गया कि इन कथनों से बचा भी नहीं जा सकता तो उसने अपनी शक्ति बटोरी और वाईकोंट का साथ देते हुए प्येर पर टूट पड़ी।

"मेरे प्यारे, श्रीमान प्येर," आन्ना पाव्लोव्ना बोली, "उस महान आदमी के बारे में आप क्या कहेंगे जिसने मुक़दमा चलाये बिना और किसी अपराध के बिना ड्यूक को, कह लीजिये कि एक साधारण व्यक्ति को मौत के घाट उतरवा दिया?"

"मैं यह जानना चाहूंगा," वाईकोंट कह उठा, "श्रीमान प्येर अठारहवें ब्रूमेर* की क्या सफ़ाई दे सकते हैं? क्या यह धोखा नहीं?

---

* सन् १७६६ के ६–१० नवम्बर को (गणतन्त्रीय कैलेण्डर के अनुसार १८–१६ नवम्बर) नेपोलियन बोनापार्ट ने राज्य का तख़्ता उलट दिया जिसके फलस्वरूप सारी वास्तविक सत्ता उसके हाथों में आ गयी। – सं०

यह धोखेबाज़ी है जो महान व्यक्ति की गति-विधियों के बिल्कुल अनुरूप नहीं।"

"और जिन बन्दियों की उसने अफ़्रीका में हत्या करवाई?" टुइयां-सी प्रिंसेस बोली। "बड़ी भयानक बात थी यह!" और उसने कंधे झटके।

"कुछ भी कहिये, वह नया-नया नवाब बननेवाला घटिया आदमी है।" प्रिंस इप्पोलीत ने राय ज़ाहिर की।

श्रीमान प्येर की समझ में नहीं आ रहा था कि वह किसे जवाब दे। उसने सभी पर नज़र डाली और मुस्करा दिया। उसकी मुस्कान दूसरे लोगों जैसी अर्ध-मुस्कान नहीं थी। इसके विपरीत उसके होंठों पर जब मुस्कान आती तो सहसा, आन की आन में उसका गम्भीर, यहां तक कि कुछ कुछ उदास चेहरा कहीं ग़ायब हो जाता और उसकी जगह बच्चे जैसे भोला, दयालु, यहां तक कि बुद्धू-सा चेहरा सामने आता जो मानो क्षमा-याचना करता प्रतीत होता।

प्येर से पहली बार मिलनेवाले वाईकोंट को यह स्पष्ट हो गया कि यह जाकोबपंथी* उतना भयानक नहीं है जितना कि वह अपने शब्दों से लगता था। सभी ख़ामोश हो गये।

"वह आप सबको एकसाथ ही जवाब दे, आप उससे यह आशा कैसे कर सकते हैं?" प्रिंस अन्द्रेई ने कहा। "इसके अलावा किसी राज-नेता के कार्य-कलापों में हमें इस अन्तर को भी समझना चाहिये कि वह एक व्यक्ति के रूप में, सेनापति या सम्राट के रूप में क्या करता है। मुझे तो ऐसा ही लगता है।"

"हां, हां, बेशक ऐसा ही है," प्रिंस अन्द्रेई की हिमायत से प्येर ख़ुशी से कह उठा।

"यह न मानना ग़लत होगा," प्रिंस अन्द्रेई कहता गया, "कि एक इन्सान के नाते अर्कोला पुल पर और जाफ़्फ़ा के अस्पताल में,**

---

* क्रान्तिकारी-जनवादी, १८वीं शताब्दी की फ़्रांसीसी बुर्जुआ क्रान्ति के समय उग्र राजनीतिक क्लब का सदस्य। – सं०

** इटली के उत्तर में आस्ट्रिया की सेना से लोहा लेते समय अर्कोला नामक बस्ती के क़रीब फ़्रांसीसी सेना का संचालन करता हुआ नेपोलियन अपनी जान को ख़तरे में डालकर झण्डा लिये हुए पुल पर आगे बढ़ा था। फ़्रांसीसी सेना ने मार्च १७९९ में

जहां उसने प्लेग के रोगी से हाथ मिलाया, नेपोलियन महान है। लेकिन उसके कुछ दूसरे कार्य भी हैं जिनकी कोई सफ़ाई नहीं दी जा सकती।"

प्रिंस अन्द्रेई, जिसने स्पष्टतः प्येर के कथनों के अटपटे प्रभाव को कुछ कम करना चाहा था, जाने के लिये उठ खड़ा हुआ और उसने अपनी पत्नी को भी चलने का संकेत किया।

अचानक प्रिंस इप्पोलीत खड़ा हो गया और हाथों के इशारों से सब से रुकने तथा बैठने का अनुरोध करके बोला:

"ओह, आज मुझे मास्को का एक ऐसा दिलचस्प क़िस्सा सुनाया गया है कि मैं उससे आप सबका मनोरंजन किये बिना नहीं रह सकता। वाईकोंट, माफ़ कीजिये, मैं यह क़िस्सा रूसी में सुनाऊंगा वरना इसका मज़ा ही किरकिरा हो जायेगा।"

और प्रिंस इप्पोलीत कुछ इस ढंग से रूसी में बोलने लगा जैसे फ़्रांसीसी लोग रूस में एक साल बिताने के बाद बोलते हैं। सभी रुक गये, क्योंकि प्रिंस ने इतने उत्साह से और इतना ज़ोर देते हुए अपने क़िस्से की तरफ़ ध्यान देने का अनुरोध किया था।

"मास्को में एक महिला, एक मदाम है। बड़ी ही कंजूस है वह। उसे यह पसन्द था कि दो नौकर हमेशा उसकी बग्घी के पीछे खड़े रहें और सो भी बहुत लम्बे क़द के। उसका ऐसा ही रंग-ढंग था। उसकी बहुत ही लम्बी नौकरानी थी। महिला ने उससे कहा..."

इतना कहकर प्रिंस इप्पोलीत सोच में डूब गया। स्पष्टतः वह समझ नहीं पा रहा था कि आगे अपनी बात कैसे कहे।

"उसने कहा... हां, उसने नौकरानी से कहा: 'तुम वर्दी पहन लो, मैं लोगों से मिलने जाऊंगी और तुम बग्घी के पीछे खड़ी रहना।'"

इतना कहकर प्रिंस अपनी हंसी पर क़ाबू न पा सका और अपने श्रोताओं से पहले ही ठहाका मारकर हंस पड़ा। इसका श्रोताओं पर अच्छा प्रभाव नहीं पड़ा। इसके बावजूद कई लोग, जिनमें अधेड़ उम्र की महिला और आन्ना पाव्लोव्ना भी शामिल थीं, मुस्करा दिये।

सीरिया के जाफ़्फ़ा बन्दरगाह पर क़ब्ज़ा किया। वहां उस समय ख़ूब ज़ोर की प्लेग फैली हुई थी जिसकी छुत नेपोलियन की सेना को भी लग गयी। अपने मार्शलों के साथ नेपोलियन जाफ़्फ़ा के एक प्लेगवाले अस्पताल में रोगियों को देखने गया था। – सं०

"वह महिला रवाना हो गयी। अचानक तेज़ हवा चल पड़ी। नौकरानी की टोपी उड़ गयी और उसके लम्बे-लम्बे बाल खुलकर हवा में लहराने लगे ..."

अब तो वह अपनी हंसी को बिल्कुल रोक नहीं पाया, रुक-रुककर ज़ोर से पड़नेवाले हंसी के इन दौरों के बीच बोला:

"और सारे शहर में यह ख़बर फैल गयी ..."

क़िस्सा ख़त्म हो गया। बेशक यह समझ में नहीं आया कि किसलिये उसने यह क़िस्सा सुनाया और क्यों इसे रूसी में ही सुनाया जाना चाहिये था। फिर भी आन्ना पाव्लोव्ना और दूसरे लोगों ने इसलिये प्रिंस इप्पोलीत की अच्छी सामाजिक सूझ-बूझ की प्रशंसा की कि उसने श्रीमान प्येर की ऐसी अप्रिय और अटपटी बातों का इतना मधुर अन्त किया था। इस क़िस्से के बाद भूत और भविष्य के बॉल-नृत्यों, खेल-तमाशों और इसी तरह की महत्त्वहीन तथा इधर-उधर की बातों की चर्चा होने लगी कि कौन किससे कब और कहां मिलेगा।

५

आन्ना पाव्लोव्ना को अद्भुत पार्टी के लिये धन्यवाद देने के बाद मेहमान जाने लगे।

प्येर भेद्दपन का नमूना था। मोटा-तगड़ा, सामान्य से कहीं लम्बे क़द का, चौड़े और बड़े-बड़े लाल हाथोंवाला। उसे किसी पार्टी या ड्राइंगरूम में जाने का तौर-तरीक़ा नहीं आता था और वहां से बाहर निकलने का ढंग तो वह और भी कम जानता था यानी यह नहीं जानता था कि विदा लेने से पहले उसे विशेष रूप प्यारे कुछ शब्द कहने चाहिये। इसके अलावा वह अन्यमनस्क भी था। वह उठकर खड़ा हुआ, अपनी टोपी की जगह उसने जनरल की कलगीवाली तिकोनी टोपी हाथ में ले ली और उसे हाथ में लिये हुए तब तक कलगी के पंखों को खींचता रहा, जब तक कि जनरल ने उसे टोपी लौटा देने को नहीं कहा। किन्तु उसकी उदारता, सरलता और नम्रता से उसकी अन्यमनस्कता और पार्टी में आने तथा वहां ढंग से बातें न कर पाने की त्रुटि की पूर्ति हो जाती थी। आन्ना पाव्लोव्ना उसकी ओर मुड़ी और ईसाई धर्म

के अनुरूप विनम्रता से यह ज़ाहिर करते हुए कि उसने उसकी बेतुकी बातों के लिये उसे क्षमा कर दिया है, सिर झुकाया और कहा :

"आशा करती हूं कि आपसे फिर भी भेंट होगी, किन्तु साथ ही यह भी आशा करती हूं कि आप अपने विचार बदल लेंगे, मेरे प्यारे, श्रीमान प्येर।"

आन्ना पाव्लोव्ना के इन शब्दों के जवाब में उसने कुछ नहीं कहा, फिर से सभी को अपनी मुस्कान दिखा दी जो केवल यही कह रही थी : "विचारों की बात छोड़िये, किन्तु आप यह तो देख रहे हैं कि मैं कितना दयालु और भला नौजवान हूं।" और आन्ना पाव्लोव्ना समेत सभी ने बरबस ऐसा ही अनुभव किया।

प्रिंस अन्द्रेई ड्योढ़ी में चला गया था। नौकर ने उसे बरसाती पहना दी थी और वह उदासीनता से प्रिंस इप्पोलीत के साथ, जो ड्योढ़ी में आ गया था, अपनी बीवी की बातचीत सुन रहा था। प्रिंस इप्पोलीत प्यारी-सी, गर्भवती प्रिंसेस के पास खड़ा था और अपने दूरबीनी चश्मे को उसी पर केन्द्रित किये हुए उसे एकटक देखता जा रहा था।

"अन्नेत, अन्दर जाइये, यहां आपको ठण्ड लग जायेगी," टुइयां-सी प्रिंसेस ने आन्ना पाव्लोव्ना से विदा लेते हुए कहा। "तो बात तय रही," उसने धीरे से इतना और जोड़ दिया।

आन्ना पाव्लोव्ना ने टुइयां-सी प्रिंसेस की ननद के साथ अनातोल की सगाई करवाने के अपने इरादे की लीज़ा से चर्चा भी कर ली थी।

"मैं तो आप पर भरोसा कर रही हूं, मेरी प्यारी," आन्ना पाव्लोव्ना ने भी धीमी आवाज़ में कहा, "आप अपनी ननद को लिखिये और मुझे बताइये कि उसके पिता की क्या राय है। तो नमस्ते।" और वह ड्योढ़ी से भीतर चली गयी।

प्रिंस इप्पोलीत टुइयां-सी प्रिंसेस के पास गया और अपने मुंह को उसके नज़दीक करके कुछ खुसर-फुसर करने लगा।

दो नौकर यानी शॉल लिये प्रिंसेस का नौकर तथा लबादा उठाये हुए प्रिंस इप्पोलीत का नौकर, इनकी बातचीत के समाप्त होने की राह देख रहे थे और फ़्रांसीसी भाषा में हो रही इनकी बातचीत को अपने चेहरों पर ऐसा भाव लाकर सुन रहे थे मानो वे सब कुछ समझ रहे हों, किन्तु ऐसा प्रकट न करना चाहते हों। प्रिंसेस तो सदा की भांति

मुस्कराते हुए बातें करती थी और हंसते-हंसते इप्पोलीत की बातें सुनती थी।

"मैं बहुत ख़ुश हूं कि राजदूत की पार्टी में नहीं गया," प्रिंस इप्पोलीत ने कहा, "वहां ऊब से दम निकल जाता ... कितनी बढ़िया पार्टी थी यह, बढ़िया थी न?"

"सुनने में आया है कि बॉल बहुत अच्छा होगा," प्रिंसेस ने होंठ के रोयों को ज़रा ऊपर उठाते हुए कहा। "ऊंची सोसाइटी की सभी ख़ूबसूरत औरतें वहां होंगी।"

"सभी वहां नहीं हो सकतीं, क्योंकि आप वहां नहीं होंगी, सभी नहीं हो सकतीं," प्रिंस इप्पोलीत ने ख़ुशी से खिलखिलाकर हंसते हुए कहा और नौकर से शॉल झपटकर, यहां तक कि उसे परे धकेलते हुए, प्रिंसेस को ओढ़ाने लगा। अपने अनाड़ीपन के कारण या जान-बूझकर (किसी के लिये भी यह कहना सम्भव नहीं था) उसने शॉल ओढ़ाने के बाद भी अपने हाथों को उसके कन्धों से नहीं हटाया और इस तरह मानो जवान प्रिंसेस का आलिंगन करता रहा।

प्रिंसेस ने बड़ी शालीनता से, किन्तु मुस्कराते हुए ही अपने को मुक्त किया, मुड़ी और अपने पति की ओर देखा। प्रिंस अन्द्रेई की आंखें मुंदी हुई थीं – वह बहुत थका-थका और उनींदा-सा प्रतीत हो रहा था।

"आप तैयार हो गयीं?" उसने पत्नी पर नज़र डाले बिना पूछा।

प्रिंस इप्पोलीत ने जल्दी से अपना लबादा पहन लिया जो नये फ़ैशन के मुताबिक़ उसकी एड़ियों से भी नीचे तक पहुंच रहा था। प्रिंस उसमें उलझता-उलझाता हुआ प्रिंसेस के पीछे-पीछे, जिसे नौकर बग्घी में बैठने में सहायता दे रहा था, ओसारे में भागा गया।

"प्रिंसेस, नमस्ते," लबादे में उलझते पांवों के साथ-साथ ज़बान से शब्दों को भी गड़बड़ करता हुआ वह चिल्लाया।

प्रिंसेस अपनी पोशाक को सम्भालते हुए बग्घी के अंधेरे में सीट पर बैठ रही थी और उसका पति अपनी तलवार को ठीक कर रहा था। प्रिंस इप्पोलीत सहायता करने के बहाने से सभी के आड़े आ रहा था।

"मैं माफ़ी चाहता हूं, जनाब," प्रिंस अन्द्रेई ने रूखे और कटु ढंग से प्रिंस इप्पोलीत को सम्बोधित किया जो उसके रास्ते में बाधा बन रहा था।

"मैं तुम्हारा इन्तज़ार करूंगा, प्येर," प्रिंस अन्द्रेई की उसी आवाज़ में अब स्नेह और कोमलता का पुट आ गया था।

कोचवान ने चाबुक सटकारा और बग्घी पहियों को गड़गड़ाती हुई चल पड़ी। ओसारे में खड़ा और वाईकोंट की प्रतीक्षा करता हुआ प्रिंस इप्पोलीत, जिसने उसे अपनी बग्घी में घर पहुंचाने का वादा किया था, हंस रहा था।

"मेरे दोस्त, तुम्हारी यह टुइयां-सी प्रिंसेस बड़ी प्यारी है।" इप्पोलीत के साथ बग्घी में बैठ जाने पर वाईकोंट बोला। "बहुत ही प्यारी है और बिल्कुल फ़्रांसीसी है, फ़्रांसीसी।" उसने अपनी उंगलियों के सिरों को चूमा।

इप्पोलीत ने ज़ोर का ठहाका लगाया।

"जानते हैं, अपने भोले-भाले अन्दाज़ के बावजूद आप भयानक आदमी हैं," वाईकोंट कहता गया। "मुझे उसके बेचारे पति, उस अफ़सर पर रहम आता है जो अपने को बड़ा तीसमारखां ज़ाहिर करता है।"

इप्पोलीत फिर खिलखिलाकर हंसा और बोला:

"और आप कहते थे कि रूसी महिलायें फ़्रांसीसी महिलाओं की बराबरी नहीं कर सकतीं। असली चीज़ तो है अच्छी पसन्द।"

प्रिंस अन्द्रेई के पहुंचने से पहले ही उसके यहां पहुंच जानेवाला प्येर घर के आदमी की तरह उसके अध्ययन-कक्ष में चला गया और ताक़ पर से हाथ में आ जानेवाली पहली किताब उठाकर (यह किताब सीज़र की टिप्पणियां थी) आदत के मुताबिक़ सोफ़े पर लेट गया और कोहनियों के बल उचककर उसे कहीं बीच से पढ़ने लगा।

"मदाम आन्ना पाव्लोव्ना शेरेर के साथ तुमने यह क्या ग़ज़ब कर दिया? अब तो वह बिल्कुल ही बीमार हो जायेगी," प्रिंस अन्द्रेई ने कमरे में दाख़िल होते और अपने छोटे-छोटे गोरे हाथों को मलते हुए कहा।

प्येर ने पूरे शरीर से ऐसे करवट ली कि सोफ़ा चरमरा उठा, अपना उत्सुकतापूर्ण मुंह प्रिंस अन्द्रेई की तरफ़ किया, मुस्कराया और हाथ झटक दिया।

"वह पादरी बहुत दिलचस्प आदमी है, लेकिन मामले को ढंग

से समझता नहीं ... शायद शाश्वत शान्ति सम्भव है, किन्तु मैं यह नहीं जानता कि इस बात को किस तरह से व्यक्त करूं ... हां, इतना ज़रूर है कि राजनीतिक संतुलन से ऐसा नहीं होगा ..."

प्रिंस अन्द्रेई को इस तरह की सामान्य बातचीत में स्पष्टतः कोई दिलचस्पी नहीं थी।

"मेरे प्यारे, हर जगह पर वह सब कुछ कहना ठीक नहीं होता जो हम सोचते हैं। अच्छा, यह बताओ कि आखिर तो तुमने अपने बारे में कोई फ़ैसला कर लिया या नहीं? गार्डों के रिसाले में जाओगे या कूटनीतिज्ञ बनोगे?" थोड़ी देर तक चुप रहने के बाद प्रिंस अन्द्रेई ने पूछा।

प्येर टांगों को अपने नीचे दबाकर सोफ़े पर बैठ गया।

"आप कल्पना कर सकते हैं कि मैं अभी तक यह नहीं जानता। मुझे दोनों में से कोई काम भी पसन्द नहीं।"

"लेकिन तुम्हें कुछ तो फ़ैसला करना चाहिये न? तुम्हारे पिता जी इसका इन्तज़ार कर रहे हैं।"

प्येर को दस साल की उम्र में एक पादरी शिक्षक के साथ विदेश भेज दिया गया था। बीस वर्ष की आयु होने तक वह वहां रहा। जब मास्को लौटा तो उसके पिता ने पादरी शिक्षक की छुट्टी कर दी और जवान बेटे से कहा: "अब तुम पीटर्सबर्ग जाओ, सब कुछ देखो-भालो और अपना आगे का रास्ता चुनो। मेरी ओर से कोई आपत्ति नहीं होगी। यह लो प्रिंस वसीली के नाम चिट्ठी और यह लो पैसे। मुझे सब कुछ लिखना, सभी बातों में मैं तुम्हारी मदद करूंगा।" प्येर तीन महीने से अपने लिये काम का चुनाव कर रहा था और अभी तक ऐसा नहीं कर पाया था। प्रिंस अन्द्रेई अब पेशे के इसी चुनाव की चर्चा कर रहा था। प्येर ने माथे पर हाथ फेरा।

"लेकिन वह ज़रूर फ़्री मेसन* होगा," उसने उस पादरी के बारे में कहा जिसके साथ पार्टी में उसकी मुलाक़ात हुई थी।

---

* फ़्री मेसन – यूरोप के अनेक देशों में फैलनेवाले धार्मिक-नैतिक आन्दोलन से सम्बन्धित संगठन का सदस्य। इस आन्दोलन के अनुयायियों ने एक हवाई लक्ष्य को सामने रखते हुए सारी मानवजाति का एक भ्रातृत्वपूर्ण संघ बनाने और पूरी मानवजाति का नैतिक परिष्कार करने के लिये एक गुप्त, विश्वव्यापी संगठन की रचना का प्रयास किया। – सं०

"वह सब बकवास है," प्रिंस अन्द्रेई ने उसे फिर से टोका, "कोई मतलब की बात करना ज़्यादा अच्छा होगा। तुम गार्डों के रिसाले में गये थे?.."

"नहीं, नहीं गया। लेकिन मेरे दिमाग़ में एक ख़्याल आया है जो मैं आपको बताना चाहता हूं। इस वक़्त नेपोलियन के विरुद्ध युद्ध हो रहा है। अगर यह स्वतन्त्रता-युद्ध होता तो बात मेरी समझ में आ जाती और तब मैं सबसे पहले फ़ौज में जाता। लेकिन संसार के महानतम व्यक्ति के विरुद्ध इंगलैंड और आस्ट्रिया की मदद की जाये ... यह अच्छा नहीं ..."

प्रिंस अन्द्रेई ने प्येर की इस बचकाना बात के जवाब में सिर्फ़ कन्धे झटक दिये। उसने यह ज़ाहिर किया कि ऐसी बेवक़ूफ़ी की बातों का कोई जवाब नहीं दिया जा सकता। किन्तु वास्तव में ही अनाड़ीपन के ऐसे प्रश्न का इसके अतिरिक्त कोई उत्तर देना सम्भव नहीं था जो प्रिंस अन्द्रेई ने दिया:

"यदि सभी अपनी आस्थाओं को लेकर लड़ते तो युद्ध ही न होते।"

"और बहुत ही अच्छा होता यह," प्येर ने कहा।

प्रिंस अन्द्रेई मुस्कराया।

"शायद यह बहुत अच्छा होता, मगर ऐसा होगा कभी नहीं ..."

"यह बताइये कि आप किसलिये युद्ध में जा रहे हैं?" प्येर ने पूछा।

"मैं किसलिये जा रहा हूं? मुझे मालूम नहीं। इसलिये कि ऐसा करना ही चाहिये। इसके अलावा, मैं इसलिये युद्ध में जा रहा हूं ..." वह रुका। "मैं इसलिये भी युद्ध में जा रहा हूं कि जिस तरह की ज़िन्दगी मैं यहां बिता रहा हूं, वह मुझे पसन्द नहीं!"

६

बग़ल के कमरे में महिला की पोशाक की सरसराहट सुनायी दी। प्रिंस अन्द्रेई चौंककर सम्भला और उसके चेहरे पर वही भाव आ गया जो आन्ना पाव्लोव्ना के ड्राइंगरूम में था। प्येर ने अपनी टांगें सोफ़े

से नीचे कर लीं। प्रिंसेस भीतर आयी। वह अब दूसरी, घरेलू पोशाक पहने थी, मगर वह भी वैसी ही सजीली और ताज़गी लिये हुए थी। प्रिंस अन्द्रेई खड़ा हो गया और उसने शिष्टता से पत्नी की ओर आराम-कुर्सी बढ़ा दी।

"मैं अक्सर सोचती हूं," जल्दी-जल्दी और उतावली करते हुए आरामकुर्सी पर बैठकर उसने हमेशा की तरह फ़्रांसीसी में कहना शुरू किया, "अन्नेत ने शादी क्यों नहीं की? आप सभी मर्द लोग कितने बुद्धू हैं कि किसी ने उससे शादी नहीं की। मैं क्षमा चाहती हूं, लेकिन जहां तक औरतों का सवाल है, तो आप लोग कुछ भी नहीं समझते। श्रीमान प्येर, कितने विवादी हैं आप!"

"मैं तो आपके पति से भी बहस करता रहता हूं – मेरी समझ में यह नहीं आ रहा कि वह किसलिये जंग में जा रहा है," प्येर ने किसी तरह की झेंप के बिना (जो जवान मर्द-औरत के सम्बन्धों में इतनी स्वाभाविक होती है) प्रिंसेस को सम्बोधित करते हुए कहा।

प्रिंसेस सिहर उठी। ऐसे लगा कि प्येर के शब्दों ने उसे परेशान कर दिया था।

"ओह, मैं भी यही कहती हूं!" वह बोली। "मेरी समझ में नहीं आता, बिल्कुल समझ में नहीं आता कि पुरुष जंग के बिना रह ही क्यों नहीं सकते? हम नारियां किसलिये ऐसा कुछ नहीं चाहतीं, हमें ऐसा कुछ भी नहीं चाहिये? अब आप ही फ़ैसला कीजियेगा। मैं लगातार अन्द्रेई से यह कहती हूं कि यहां वह मामा जी का एडजुटेंट है, बहुत ही बढ़िया ओहदा है उसका। सभी इसे जानते हैं, सभी इसकी इतनी क़द्र करते हैं। कुछ ही दिन पहले अपराकसिन परिवार में मैंने एक महिला को यह कहते सुना: 'यही है विख्यात प्रिंस अन्द्रेई?' क़सम खाती हूं!" वह हंस दी। "वह जहां कहीं भी जाता है, ऐसा ही होता है। वह बड़ी आसानी से सम्राट का एडजुटेंट बन सकता है। आप जानते हैं, सम्राट ने इसके साथ बहुत ही कृपालु ढंग से बातचीत की थी। अन्नेत के साथ मेरी इस बारे में चर्चा हुई थी। उसका भी यही कहना है कि अन्द्रेई बड़ी आसानी से सम्राट का एडजुटेंट बन सकता है। आपका क्या ख़्याल है?"

प्येर ने प्रिंस अन्द्रेई की तरफ़ देखा और यह महसूस करते हुए कि यह बातचीत उसके दोस्त को पसन्द नहीं, उसने कोई जवाब नहीं दिया।

"आप कब जा रहे हैं?" प्येर ने अन्द्रेई से पूछा।

"इसके जाने की चर्चा नहीं कीजिये, यह चर्चा नहीं कीजिये! मैं इस बारे में कुछ भी सुनना नहीं चाहती," प्रिंसेस ने उसी शोख़ और चंचल अन्दाज़ में कहना शुरू किया जिस अन्दाज़ में वह आन्ना पाव्लोव्ना के ड्राइंगरूम में इप्पोलीत से बातें करती रही थी और जो इस घरेलू वातावरण में, जहां प्येर घर का सा आदमी था, बिल्कुल नहीं जंच रहा था। "आज, जब मैंने यह सोचा कि इन सभी प्यारी महफ़िलों, दावतों से नाता तोड़ना होगा... और इसके अलावा तुम तो जानते ही हो, अन्द्रेई?" उसने अर्थपूर्ण दृष्टि से पति की ओर देखा। "मुझे डर लगाता है, डर लगता है!" वह फुसफुसायी और उसने अपनी पीठ पर सिहरन-सी अनुभव की।

पति ने उसकी तरफ़ ऐसे देखा मानो वह अपने और प्येर के अतिरिक्त किसी अन्य को कमरे में देखकर हैरान हुआ हो। फिर भी उसने भावहीन शिष्टता से पूछा:

"किस बात का डर लगता है तुम्हें, लीज़ा? मैं समझ नहीं पा रहा हूं," उसने कहा।

"यही तो बात है, इसीलिये तो सभी पुरुष स्वार्थी, सभी पुरुष स्वार्थी होते हैं। भगवान जाने अपनी सनक के कारण किसलिये यह मुझे छोड़कर जा रहा है, मुझ अकेली को गांव में बन्द कर रहा है।"

"पिता जी और अपनी बहन के साथ, यह नहीं भूलो," प्रिंस अन्द्रेई ने धीरे से कहा।

"फिर भी **अपने** मित्रों के बिना मैं अकेली ही रहूंगी... और तुम यह चाहते हो कि मैं डरूं नहीं।"

उसके लहजे में बड़बड़ाहट आ गयी थी, ऊपर को उठे हुए होंठ ने उसके चेहरे को ख़ुशी का नहीं, गिलहरी जैसा झल्लाहट का भाव दे दिया था। वह चुप हो गयी मानो प्येर के सामने उसे अपनी गर्भावस्था की चर्चा करना अशिष्ट प्रतीत हो रहा था, जबकि मामले की तह में यही बात थी।

"फिर भी मेरी समझ में नहीं आया कि तुम्हें डर किस बात का लग रहा है," पत्नी पर नज़र टिकाये हुए प्रिंस अन्द्रेई ने धीरे-धीरे कहा।

प्रिंसेस के चेहरे पर लाली दौड़ गयी और उसने हताशा से हाथ झटक दिये।

"नहीं, अन्द्रेई, मुझे कहना ही होगा कि तुम बदल गये हो, बेहद बदल गये हो..."

"तुम्हारे डाक्टर ने तुम्हें रात को जल्दी सोने की सलाह दी है," प्रिंस अन्द्रेई ने कहा। "तुम्हें बिस्तर पर जाना चाहिये।"

प्रिंसेस ने कोई जवाब नहीं दिया और उसका रोयोंवाला छोटा होंठ कांप उठा। प्रिंस अन्द्रेई खड़ा हो गया और कन्धे झटककर उसने कमरे में एक चक्कर लगाया।

प्येर आश्चर्य और भोलेपन से कभी अन्द्रेई और कभी प्रिंसेस की ओर चश्मे में से देखता रहा, ऐसे हिला-डुला मानो वह भी उठना चाहता हो, मगर फिर उसने अपना इरादा बदल लिया।

"मेरी बला से कि श्रीमान प्येर यहां हैं," टुइयां-सी प्रिंसेस ने अचानक कहा और उसका प्यारा चेहरा एकाएक रुआंसा हो गया। "मैं बहुत अरसे से तुमसे यह पूछना चाहती थी, अन्द्रेई – किस कारण तुम मेरे प्रति इतने बदल गये हो? क्या बुराई की है मैंने तुम्हारे साथ? तुम जंग में जा रहे हो, तुम्हें मुझपर तरस नहीं आता। भला क्यों?"

"लीज़ा!" प्रिंस अन्द्रेई ने इतना ही कहा। किन्तु इस शब्द में अनुरोध और धमकी तथा सबसे बढ़कर तो इस बात का विश्वास था कि अपने शब्दों के लिये बाद में उसे ख़ुद अफ़सोस होगा। किन्तु वह जल्दी-जल्दी कहती गयी:

"तुम मेरे साथ किसी पंगु या बच्चे जैसा बर्ताव करते हो। मुझसे कुछ भी छिपा नहीं। छः महीने पहले क्या तुम ऐसे ही थे?"

"लीज़ा, मैं आपकी मिन्नत करता हूं कि यह क़िस्सा बन्द कर दीजिये," प्रिंस अन्द्रेई ने और अधिक ज़ोर देकर कहा।

इस बातचीत के समय अधिकाधिक विह्वल होता हुआ प्येर उठा और प्रिंसेस के पास गया। ऐसे लगा मानो वह उसके आंसुओं की ताब न लाते हुए ख़ुद भी रोने को तैयार था।

"अपने को सम्भालिये, प्रिंसेस। आपको योंही ऐसा लग रहा है, क्योंकि मैं आपको यक़ीन दिलाता हूं कि ख़ुद भी ऐसा अनुभव कर चुका हूं... किसलिये ऐसा होता है... इसलिये कि... नहीं, मैं माफ़ी चाहता हूं, पराये आदमी को इस मामले में दख़ल नहीं देना चाहिये... अपने को सम्भालिये... मुझे जाने की इजाज़त दीजिये..."

प्रिंस अन्द्रेई ने प्येर का हाथ पकड़कर उसे रोका।

"ज़रा रुको, प्येर। प्रिंसेस बहुत दयालु हैं और वह मुझे तुम्हारे साथ शाम बिताने की ख़ुशी से वंचित नहीं करना चाहेंगी।"

"नहीं, वह सिर्फ़ अपने ही बारे में सोचता है," अपने क्रोधपूर्ण आंसुओं पर क़ाबू न पाते हुए प्रिंसेस कह उठी।

"लीज़ा," प्रिंस अन्द्रेई ने अपनी आवाज़ को इस हद तक ऊंचा करते हुए, जो यह ज़ाहिर करती है कि अब सब्र का प्याला छलक गया है, रुखाई से कहा।

प्रिंसेस के प्यारे चेहरे पर अचानक झल्लायी हुई गिलहरी के भाव की जगह मन को छूने और सहानुभूति पैदा करनेवाले भय का भाव आ गया। अपनी सुन्दर आंखों से उसने पति की ओर कनखियों से देखा और उसके चेहरे पर भीरुता तथा अपनी ग़लती को मानने का वह भाव आ गया जो कुत्ते के मुंह पर उस समय होता है, जब वह अपनी नीचे लटकी हुई पूंछ को जल्दी-जल्दी, किन्तु ज़रा-ज़रा हिलाता है।

"हे भगवान, हे भगवान!" वह बुदबुदायी और एक हाथ से पोशाक के छोर को सम्भाले हुए पति के पास गयी और उसने उसका माथा चूमा।

"तो तुम जाओ, लीज़ा!" प्रिंस अन्द्रेई ने उठते और शिष्टता से इस तरह उसका हाथ चूमते हुए कहा मानो वह कोई परायी महिला हो।

दोनों दोस्त ख़ामोश रहे। दोनों में से किसी ने भी बातचीत शुरू नहीं की। प्येर प्रिंस अन्द्रेई की ओर देखता रहा और प्रिंस अन्द्रेई अपने छोटे-से हाथ से माथे को मलता रहा।

"चलो, चलकर खाना खायें," प्रिंस अन्द्रेई ने निःश्वास छोड़कर उठते और दरवाज़े की तरफ़ बढ़ते हुए कहा।

ये दोनों एक सुन्दर, कुछ ही समय पहले बहुत अच्छे ढंग से सजाये गये भोजन-कक्ष में गये। नेपकिनों, चांदी, चीनी और बिल्लौर के बर्तनों से लेकर यहां की हर चीज़ नवीनता की वह ख़ास छाप लिये हुए थी जो नवदम्पति की गिरस्ती का लक्षण होती है। भोजन के मध्य में प्रिंस अन्द्रेई ने मेज़ पर कुहनी टिका ली और उस व्यक्ति की भांति, जिसके मन पर बहुत समय से किसी चीज़ का बोझ बना होता है और जो अचानक ही उसे किसी से कह देने का निर्णय कर लेता है, उसने

ऐसे चिड़चिड़ेपन के मूड में जिसमें प्येर ने उसे पहले कभी नहीं देखा था, कहना शुरू किया :

"तुम कभी, कभी शादी नहीं करना, मेरे दोस्त। तुम्हें मेरी यही नसीहत है कि उस वक़्त तक शादी नहीं करना, जब तक तुम अपने आपसे यह न कह सको कि मैं जो कुछ कर सकता था, मैंने वह सब कर लिया और उस समय से पहले भी नहीं, जब तक कि अपनी पसन्द की औरत के प्रेम से मुक्त न हो जाओ और उसकी रग-रग को न पहचान लो। नहीं तो तुम भयानक और कभी न सुधारी जानेवाली भूल करोगे। बुढ़ा जाने और किसी काम-काज के लायक़ न रहने पर शादी करना ... अन्यथा तुम में जो कुछ अच्छा और उदात्त है, वह सब नष्ट हो जायेगा। छोटी-छोटी बातों में ही तुम अपने को तबाह कर लोगे। हां, हां, हां! मुझे ऐसे हैरानी से नहीं देखो। अगर तुम भविष्य में अपने से कुछ आशायें रखते हो तो शादी कर लेने के बाद तुम्हें क़दम-क़दम पर ऐसा महसूस होगा कि तुम्हारे लिये उस ड्राइंगरूम को छोड़कर सब कुछ ख़त्म हो गया, जहां तुम अपने को दरबारी चपरासी और किसी उल्लू के स्तर पर पाओगे, बाक़ी सभी दरवाज़े तुम्हारे लिये बन्द हो चुके हैं। क्या तुक है इसमें! ..."

उसने बड़े ज़ोर से हाथ झटका।

प्येर ने चश्मा उतार लिया जिससे उसका चेहरा बदल-सा गया, और भी अधिक दयालु प्रतीत होने लगा तथा वह हैरानी से अपने दोस्त को देखता रहा।

"मेरी बीवी," प्रिंस अन्द्रेई कहता गया, "बहुत ही अच्छी औरत है। वह उन दुर्लभ स्त्रियों में से है जिनपर इस बात का भरोसा किया जा सकता है कि वे तुम्हारी इज़्ज़त को कभी बट्टा नहीं लगने देंगी। लेकिन, हे भगवान, शादीशुदा न होने के लिये मैं अब ख़ुशी से कोई भी क़ीमत चुकाने को तैयार हो जाता! मैं यह सिर्फ़ तुमसे और पहली बार कह रहा हूं, क्योंकि तुम्हें चाहता हूं।"

ऐसा कहते हुए प्रिंस अन्द्रेई और भी कहीं कम उस पहलेवाले बोल्को-न्स्की जैसा लग रहा था जो आन्ना पाव्लोव्ना के ड्राइंगरूम की आराम-कुर्सी पर अधलेटा हुआ आंखें सिकोड़कर तथा चबा-चबाकर फ़्रांसीसी भाषा के वाक्य बोलता रहा था। झल्लाहट से फड़फड़ाती हर नस के कारण उसका पतला-सा चेहरा कांप रहा था, आंखें, जो पहले बुझी-

बुझी और निर्जीव लगती थीं, अब ख़ूब चमक रही थीं। साफ़ नज़र आ रहा था कि सामान्य क्षणों में वह जितना निर्जीव प्रतीत होता था, झल्लाहट के क्षणों में उतना ही सजीव हो उठता था।

"शायद तुम्हारी समझ में नहीं आ रहा कि मैं ऐसा क्यों कह रहा हूं," उसने अपनी बात जारी रखी। "लेकिन यह तो ज़िन्दगी की पूरी दास्तान है। तुम बोनापार्ट और उसके कैरियर की बात करते हो," उसने कहा, यद्यपि प्येर ने बोनापार्ट की चर्चा नहीं की थी। "तुम बोनापार्ट की बात करते हो। लेकिन बोनापार्ट जब काम कर रहा था, अपने लक्ष्य की ओर एक-एक क़दम आगे बढ़ता जाता था, उस वक़्त वह मुक्त था, अपने लक्ष्य के अतिरिक्त उसके सामने अन्य कुछ नहीं था और वह अपनी मंज़िल पर पहुंच गया। लेकिन जैसे ही तुम अपने को किसी नारी के साथ बांध लेते हो, वैसे ही पैरों में बेड़ी पहने बन्दी की तरह तुम्हारी आज़ादी हवा हो जाती है। और तुम्हारी सारी आशायें, तुम्हारी सारी शक्ति, सभी कुछ बोझ बनकर रह जाता है और पश्चाताप की यातना तुम्हें व्यथित करती रहती है। दावतें-महफ़िलें, निन्दा-चुग़ली, बॉल-नृत्य, झूठा अहंकार, घटिया बातें – यही है वह बन्द घेरा जिससे मैं बाहर नहीं निकल पाता। मैं अब युद्ध में जा रहा हूं, इतिहास के महानतम युद्ध में। मुझे किसी चीज़ से कोई मतलब नहीं है और मैं अन्य किसी चीज़ के लायक़ नहीं हूं। मैं अच्छा बातूनी हूं," अन्द्रेई कहता गया, "और आन्ना पाव्लोव्ना के यहां मेरी बातों पर कान दिया जाता है। और यह मूर्खों का समाज जिसके बिना मेरी पत्नी जी नहीं सकती और ये औरतें... काश, तुम जानते कि ऊंचे समाज की इन महिलाओं और कुल मिलाकर नारियों की हक़ीक़त क्या है! मेरे पिता जी बिल्कुल ठीक कहते हैं। स्वार्थ, दम्भ, मन्दबुद्धि, हर चीज़ में तुच्छता – असली रूप में ज़ाहिर होने पर यही हक़ीक़त है औरतों की। जब हम उन्हें सोसाइटी में देखते हैं तो लगता है कि उनमें कुछ तो है, मगर वास्तव में कुछ भी नहीं, कुछ भी नहीं, कुछ भी नहीं! इसलिये, मेरे दोस्त, शादी नहीं करना, हरगिज़ शादी नहीं करना," प्रिंस अन्द्रेई ने अपनी बात ख़त्म की।

"मुझे हंसी आ रही है," प्येर ने कहा, "कि आप **अपने को, अपने को ही** किसी लायक़ नहीं समझते और अपनी ज़िन्दगी को – बरबाद ज़िन्दगी मानते हैं। आपको तो अभी आगे सब कुछ करना है,

बहुत कुछ करना है। और आप..."

उसने अपना वाक्य पूरा नहीं किया, किन्तु उसके लहजे ने यह ज़ाहिर कर दिया कि वह अपने मित्र का कितना ऊंचा मूल्यांकन करता है और भविष्य में उससे कैसी आशायें रखता है।

"वह ऐसी बातें कह ही कैसे सकता है?" प्येर सोच रहा था। प्येर इसीलिये अन्द्रेई को पूर्णता का आदर्श रूप मानता था कि उसमें वे सभी गुण उच्चतम स्तर पर केन्द्रित हो गये थे जो प्येर में नहीं थे और जिन्हें शायद संकल्प-शक्ति की संज्ञा देना ही सबसे ज़्यादा सही होगा। सभी तरह के लोगों के साथ सहज ढंग से बर्ताव करने की अन्द्रेई की क्षमता, उसकी असाधारण याददाश्त, उसके अत्यधिक अध्ययन (वह सभी कुछ पढ़ता, सभी कुछ जानता था और सभी विषयों पर उसके अपने विचार थे) और सबसे अधिक तो उसकी काम करने तथा पढ़ने की क्षमता से हमेशा चकित होता रहता था। अगर उसे अन्द्रेई में कल्पनाजन्य दार्शनिकता के अभाव से अक्सर आश्चर्य होता था (जिसकी ओर ख़ुद उसका झुकाव था) तो इसे भी वह उसकी दुर्बलता नहीं, शक्ति मानता था।

अच्छे से अच्छे और घनिष्ठ से घनिष्ठ मैत्री-सम्बन्धों में भी प्रशंसा या तारीफ़ उसी तरह से ज़रूरी होती है, जैसे पहियों को चालू रखने के लिये उनमें तेल लगाना ज़रूरी होता है।

"मेरा तो सब कुछ ख़त्म हो चुका है," प्रिंस अन्द्रेई ने कहा। "मेरी चर्चा ही क्या हो सकती है? आओ, तुम्हारे बारे में बात करें," थोड़ी देर चुप रहने और अपने को तसल्ली देनेवाले विचारों से मुस्कराते हुए वह बोला। उसकी यह मुस्कान उसी क्षण प्येर के चेहरे पर प्रति-बिम्बित हुई।

"मेरे बारे में क्या बात हो सकती है?" प्येर ने निश्चिन्तता और प्रसन्नतापूर्वक मुस्कराते हुए कहा। "मैं हूं ही कौन? एक ग़ैरक़ानूनी बेटा," और अचानक उसका चेहरा सुर्ख हो उठा। साफ़ ज़ाहिर था कि ऐसा कहने के लिये उसे बहुत यत्न करना पड़ा था। "न मान-इज़्ज़त, न दौलत... फिर भी यह सच है..." उसने यह नहीं कहा कि **क्या सच है।** "फ़िलहाल मैं आज़ाद हूं और मेरे बड़े मज़े हैं। सिर्फ़ यही नहीं समझ पा रहा हूं कि क्या काम शुरू करूं। मैं आपके साथ गम्भीरता से सलाह-मशविरा करना चाहता हूं।"

प्रिंस अन्द्रेई ने दयालु आंखों से उसकी ओर देखा। किन्तु मैत्रीपूर्ण और स्नेहमयी होते हुए भी उसकी दृष्टि में अपनी श्रेष्ठता की चेतना झलक रही थी।

"तुम मुझे विशेष रूप से इसलिये प्रिय हो कि हमारी जान-पहचान की सारी ऊंची सोसाइटी में केवल तुम ही एक ज़िन्दा इन्सान हो। तुम ख़ुशक़िस्मत हो। अपने लिये कोई भी पेशा चुन लो, इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ेगा। तुम हर जगह ही भले आदमी रहोगे, लेकिन एक बात का ध्यान रखो – तुम कुरागिन के यहां जाना और उसके ढंग की ज़िन्दगी बिताना बन्द कर दो। बेहद शराब पीना और सभी तरह की आवारगी करना – यह तुम्हें शोभा नहीं देता ..."

"क्या किया जाये, मेरे दोस्त," प्येर ने कंधे झटकते हुए जवाब दिया। "औरतें, मेरे प्यारे, औरतें!"

"यह बात मेरी समझ में नहीं आती," प्रिंस अन्द्रेई ने जवाब दिया। "ढंग की औरतें, यह दूसरा मामला है, लेकिन कुरागिन की औरतें, औरतें और शराब, यह बात मेरी समझ में नहीं आती!"

प्येर प्रिंस वसीली कुरागिन के यहां रहता था और उसके बेटे अनातोल की आवारा ज़िन्दगी में हिस्सा लेता था। यह अनातोल वही था जिसे रास्ते पर लाने के लिये प्रिंस अन्द्रेई की बहन से शादी करने की योजना बनायी जा रही थी।

"एक बात कहूं आपसे!" प्येर इस तरह कह उठा मानो कोई बहुत ही अच्छा विचार अचानक उसके दिमाग़ में आ गया हो, "सच मानिये, मैं बहुत दिनों से इसके बारे में सोच रहा हूं। इस तरह की ज़िन्दगी बिताते हुए तो मैं न तो कोई फ़ैसला कर सकता हूं, न किसी बात पर ढंग से विचार ही कर सकता हूं। सिर में दर्द होता रहता है और जेब खाली है। आज उसने मुझे अपने यहां बुलाया है, मगर मैं वहां नहीं जाऊंगा।"

"मुझे वचन दो कि तुम वहां नहीं जाया करोगे!"

"वचन देता हूं।"

रात का एक बजने के बाद प्येर अपने दोस्त के यहां से बाहर आया। पीटर्सबर्ग की जून महीने की उजली, दूधिया रात थी। घर जाने का इरादा बनाकर प्येर किराये की बग्घी में सवार हो गया।

किन्तु ज्यों-ज्यों वह घर के निकट पहुंचता जाता था, त्यों-त्यों यह अनुभव करता था कि ऐसी रात में, जो शाम या सुबह से अधिक मिलती-जुलती थी, उसे नींद नहीं आयेगी। इतना उजाला था कि सुनसान सड़कों पर दूर-दूर तक सब कुछ दिखाई दे रहा था। प्येर को रास्ते में यह याद आया कि अनातोल कुरागिन के यहां आज जुए की महफ़िल जमनेवाली थी, जिसके बाद अक्सर ख़ूब पिलायी होती थी और ऐसी महफ़िल प्येर के एक मनपसन्द मनोरंजन के साथ ख़त्म होती थी।

"कुरागिन के यहां जाने में मज़ा रहेगा," उसने सोचा। किन्तु इसी क्षण उसे प्रिंस अन्द्रेई को दिया हुआ अपना यह वचन याद आ गया कि अब वह कुरागिन के यहां कभी नहीं जायेगा।

मगर, जैसा कि उन लोगों के साथ होता है, जिन्हें कमज़ोर इरादे-वाले कहा जाता है, उसने अपनी इतनी अच्छी तरह से जानी-पहचानी आवारा ज़िन्दगी का एक बार फिर मज़ा लेने की ऐसी तीव्र इच्छा अनुभव की कि उसने ऐसा ही करने का निर्णय कर लिया। इसी क्षण उसके दिमाग़ में यह विचार भी आया कि प्रिंस अन्द्रेई को दिया हुआ उसका वचन कोई मानी नहीं रखता, क्योंकि उसे वचन देने से पहले वह अनातोल से उसके यहां जाने का वादा कर चुका था। इसके अलावा उसने यह भी सोचा कि क़समें-वादे कोई ख़ास मानी नहीं रखते और यदि इस चीज़ को ध्यान में रखा जाये कि कल उसकी मृत्यु हो सकती है या उसके साथ कोई ऐसी असाधारण बात हो सकती है कि ये सब बातें बेमानी हो जायें, तो इनका कोई महत्त्व ही नहीं रह जाता। इस तरह की दलीलें अक्सर प्येर के दिमाग़ में आती रहती थीं और उसके इरादों तथा फ़ैसलों को ख़त्म कर देती थीं। उसने कुरागिन के यहां जाने का निर्णय कर लिया।

अनातोल गार्ड रिसाले की बैरकों के पासवाले बड़े घर में रहता था। बग्घी से उतरकर वह रोशन ओसारे में गया, ज़ीने पर चढ़ा और खुले दरवाज़े में दाख़िल हुआ। प्रवेश-कक्ष में कोई नहीं था – खाली बोतलें, बरसातियां और गलोश* इधर-उधर पड़े थे, शराब की गंध फैली हुई थी, दूरी पर बातचीत और शोर-गुल सुनायी दे रहा था।

जुआ और रात का खाना ख़त्म हो चुका था, मगर मेहमान अभी

---

* गलोश – कीचड़, बारिश से बचानेवाले ऊपरी जूते। – अनु०

गये नहीं थे। प्येर ने अपनी बरसाती उतार फेंकी और पहले कमरे में दाखिल हुआ जहां रात के भोजन की जूठन और बची-खुची चीज़ें रह गयी थीं और एक नौकर यह सोचते हुए कि उसे कोई भी देख नहीं रहा है, चोरी-छिपे गिलासों में बची हुई शराब पी रहा था। तीसरे कमरे से हो-हल्ला, ठहाके, परिचित आवाज़ों की चीख़-चिल्लाहट और भालू की गुर्राहट सुनायी दे रही थी। कोई आठ जवान आदमी किसी कारण खुली खिड़की के पास भीड़ लगाये हुए थे। तीन जवान आदमी भालू के बच्चे के साथ हुड़दंग मचा रहे थे। उनमें से एक ज़ंजीर से बंधे हुए भालू को घसीट रहा था और दूसरे को उससे डरा रहा था।

"मैं स्टीवेन्ज़ पर एक सौ रूबल की शर्त लगाने को तैयार हूं!" एक चिल्लाया।

"देखो, सहारा नहीं लेना होगा!" दूसरा चिल्लाया।

"मैं दोलोख़ोव का समर्थन करता हूं," तीसरा चिल्ला उठा। "कुरागिन, तुम शर्त तय करो।"

"अरे, भालू का पिंड छोड़ो, यहां शर्त लग रही है।"

"एक ही बार में पूरी बोतल पीनी होगी, वरना यह माना जायेगा कि शर्त हारी गयी," चौथे ने चिल्लाकर कहा।

"याकोव! बोतल लाओ, याकोव!" खुद मेज़बान चिल्लाया। वह लम्बे क़द का सुन्दर नौजवान था और छाती के बटन खोले पतली-सी कमीज़ पहने हुए भीड़ के बीच खड़ा था। "ज़रा रुकिये, महानुभावो! लो, हमारा पेत्रूशा, हमारा प्यारा दोस्त भी आ गया," उसने प्येर को सम्बोधित करते हुए कहा।

मंझोले क़द का, निर्मल नीली आंखोंवाला एक अन्य आदमी, जिसकी आवाज़ नशे में धुत्त इन सभी लोगों की आवाज़ों में अपनी सामान्यता के कारण चकित करती थी, खिड़की पर से चिल्लाया: "तुम शर्त की हार-जीत का फ़ैसला करने को आ जाओ!" यह था सेम्योनोव्स्की रेजिमेंट* का अफ़सर, मशहूर जुआरी और हर वक़्त

---

* सेम्योनोव्स्की रेजिमेंट – अक्तूबर क्रान्ति के पहले रूस की एक सबसे पुरानी और प्रसिद्ध रेजिमेंट जिसे ज़ार पीटर प्रथम ने १८वीं शताब्दी के आरम्भ में मास्को के निकट सेम्योनोवो गांव में संगठित किया था। – सं०

द्वन्द्व-युद्ध को तैयार रहनेवाला दोलोख़ोव जो अनातोल के साथ ही रहता था। प्येर अपने सभी ओर ख़ुशी से देखता हुआ मुस्करा दिया।

"मेरे पल्ले कुछ नहीं पड़ रहा। आख़िर मामला क्या है?" उसने पूछा।

"रुकिये, वह नशे में नहीं है। बोतल मुझे दो," अनातोल ने कहा और मेज़ से गिलास उठाकर प्येर के पास गया।

"सबसे पहले तो तुम पियो।"

प्येर एक के बाद एक गिलास पीने और कनखियों से नशे में गड़गच्च मेहमानों को देखने लगा जो फिर से खिड़की के पास इकट्ठे हो गये थे। वह उनकी बातों पर भी कान दे रहा था। अनातोल उसके गिलास में शराब डालते हुए उसे यह बता रहा था कि दोलोख़ोव यहां आनेवाले अंग्रेज़ जहाज़ी स्टीवेन्ज़ से इस बात की शर्त लगा रहा था कि वह, यानी दोलोख़ोव अपनी टांगें बाहर लटकाकर तीसरी मंज़िल की खिड़की के दासे पर बैठा हुआ रम की पूरी बोतल पी जायेगा।

"बोतल तो ख़त्म करो!" अनातोल ने आख़िरी गिलास उसकी तरफ़ बढ़ाते हुए कहा, "वरना मैं तुम्हें यहां से हिलने नहीं दूंगा।"

"नहीं, और नहीं पीना चाहता," प्येर ने अनातोल को धकेलकर एक तरफ़ करते हुए कहा और खिड़की के पास गया।

अंग्रेज़ जहाज़ी का हाथ थामे हुए दोलोख़ोव ख़ास तौर पर अनातोल और प्येर को बहुत साफ़-साफ़ और विस्तार से शर्त समझा रहा था।

दोलोख़ोव मंझोले क़द का, घुंघराले बालों और हल्की नीली आंखोंवाला कोई पच्चीस साल का जवान था। पैदल फ़ौज के सभी अफ़सरों की तरह उसने भी मूंछें मुंडा रखी थीं और उसका मुंह, जो उसके चेहरे का सबसे महत्त्वपूर्ण लक्षण था, बिल्कुल साफ़ दिखाई देता था। उसके मुंह की रेखा बहुत ही बारीकी से खिंची हुई थी। ऊपर का होंठ मध्य में नीचे के मज़बूत होंठ पर ज़ोर से मुड़ा हुआ था और इस तरह मुंह के दोनों कोनों पर मानो स्थायी रूप से दो मुस्कानें बनी रहती थीं। ये सभी चीज़ें उसकी दृढ़, निर्लज्ज और बुद्धिमत्तापूर्ण दृष्टि के साथ मिलकर ऐसा प्रभाव पैदा करती थीं कि उसके चेहरे की ओर ध्यान दिये बिना नहीं रहा जा सकता था। दोलोख़ोव अमीर नहीं था और उसके कहीं कोई विशेष सम्पर्क या सम्बन्ध भी नहीं थे। इस चीज़ के बावजूद कि अनातोल हज़ारों रूबल ख़र्च करता था, फिर

भी उसी के साथ रहनेवाले दोलोख़ोव ने अपनी कुछ ऐसी स्थिति बना ली थी कि अनातोल और इन दोनों को जाननेवाले सभी लोग अनातोल की तुलना में दोलोख़ोव की ज़्यादा इज़्ज़त करते थे। दोलोख़ोव सभी तरह का जुआ खेलता था और लगभग हमेशा जीत जाता था। वह चाहे कितनी भी शराब क्यों न पी लेता, कभी भी अपने होश-हवास गुम नहीं होने देता था। कुरागिन तथा दोलोख़ोव दोनों ही उस वक़्त के पीटर्सबर्ग की शराब, जुए तथा आवारगी की दुनिया में काफ़ी नाम पैदा कर चुके थे।

रम की बोतल लायी गयी। दो नौकर खिड़की की उस चौखट को तोड़ रहे थे जो बाहरवाली ढाल पर बैठने में बाधा बन रही थी। महानुभावों से घिरे हुए नौकर उनकी सलाहों और चीख़-पुकार के कारण घबराकर स्पष्टतः उतावली कर रहे थे।

अनातोल एक विजेता जैसी शान दिखाता हुआ खिड़की के पास गया। वह कुछ न कुछ तोड़ना चाहता था। उसने नौकरों को धकियाकर एक तरफ़ हटाया और चौखट को ज़ोर से खींचा। मगर चौखट नहीं निकली। चुनांचे उसने शीशा तोड़ दिया।

"अब तुम कोशिश करो, पहलवान," उसने प्येर से कहा।

प्येर ने चौखट को बीच से पकड़कर ज़ोर से खींचा। वह चिटकते हुए कहीं से टूट गयी और कहीं से बाहर निकल आयी।

"पूरी तरह से निकाल दो वरना कोई ऐसा सोचेगा कि मैं इसका सहारा ले रहा हूं," दोलोख़ोव ने कहा।

"अंग्रेज़ बड़ी डींग हांक रहा है... क्यों? सब ठीक है न?.." अनातोल ने पूछा।

"हां," प्येर ने दोलोख़ोव की ओर देखते हुए जवाब दिया जो हाथ में बोतल लिये खिड़की के पास आ रहा था। खिड़की में से सूर्यास्त और सूर्योदय के सन्धि प्रकाश की झलक मिल रही थी।

रम की बोतल हाथ में पकड़े हुए दोलोख़ोव उछलकर खिड़की पर चढ़ गया।

"सुनिये!" खिड़की के दासे पर खड़े हुए उसने चिल्लाकर सभी को सम्बोधित किया। सभी चुप हो गये।

"मैं सोने की पचास मुद्राओं की बाज़ी लगा रहा हूं," (वह फ़्रांसीसी में बोल रहा था ताकि अंग्रेज़ उसकी बात समझ जाये और

सो भी अच्छी तरह से नहीं बोल रहा था)। "सौ मुद्राओं की शर्त चाहते हैं?" उसने अंग्रेज़ को सम्बोधित करते हुए पूछा।

"नहीं, पचास की," अंग्रेज़ ने जवाब दिया।

"अच्छी बात है, पचास की ही सही। शर्त यह है कि मैं खिड़की के बाहर इस जगह पर बैठकर," (उसने झुककर खिड़की के बाहर ढालू दीवार की ओर संकेत किया), "मुंह से हटाये बिना रम की पूरी बोतल पी जाऊंगा और किसी चीज़ का सहारा नहीं लूंगा... ठीक है?"

"बिल्कुल ठीक है," अंग्रेज़ ने जवाब दिया।

अनातोल अंग्रेज़ की तरफ़ मुड़ा और उसके फ़्रॉक-कोट का बटन पकड़कर तथा ऊंचाई से उसकी तरफ़ देखते हुए (अंग्रेज़ का क़द छोटा था), शर्त की सभी बातों को अंग्रेज़ी में दोहराने लगा।

"ज़रा रुको," लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिये खिड़की पर बोतल से आवाज़ करते हुए दोलोख़ोव चिल्लाया। "ज़रा रुको, कुरागिन। आप सभी सुनिये! अगर कोई अन्य व्यक्ति ऐसा ही करने को तैयार हो तो मैं उसे सोने की सौ मुद्रायें दूंगा। समझे?"

अंग्रेज़ ने सिर झुकाया और उसके ऐसा करने से किसी तरह भी यह स्पष्ट नहीं हो सका कि वह नयी बाज़ी लगाने को तैयार है या नहीं। अनातोल अभी भी अंग्रेज़ के फ़्रॉक-कोट का बटन पकड़े हुए था और इस चीज़ के बावजूद कि अंग्रेज़ ने सिर झुकाकर यह स्पष्ट कर दिया था कि वह सब कुछ समझ गया है, अनातोल ने दोलोख़ोव के शब्दों का अंग्रेज़ी में अनुवाद कर दिया। विशेष, सम्राट-संरक्षित गार्ड-रेजिमेंट का एक दुबला-पतला, जवान हुस्सार, जो इस शाम को जुए में पैसे हार गया था, खिड़की पर चढ़ गया और उसने अपना सिर बाहर निकालकर नीचे देखा:

"ओह-हो-हो...!" नीचे सड़क के पथरीले खड़ंजों को देखते हुए वह घबराकर कह उठा।

"बन्द करो यह 'हो-हो'!" दोलोख़ोव चिल्लाया और उसने इस हुस्सार अफ़सर को खिड़की से ऐसे नीचे खींचा कि उसकी एड़ें आपस में उलझ गयीं और वह बड़े अटपटे ढंग से कमरे में कूदा।

रम की बोतल को दासे पर रखकर, ताकि उसे आसानी से हाथ

में लिया जा सके, दोलोख़ोव सावधानी से और धीरे-धीरे खिड़की पर चढ़ा। टांगों को नीचे लटकाकर और दोनों हाथों से खिड़की के सिरों को थामकर वह ढंग से बैठ गया, उसने खिड़की के सिरों पर से हाथ हटा लिये, दायें-बायें ज़रा हिला-डुला और बोतल हाथ में ले ली। अनातोल ने दो मोमबत्तियां लाकर दासे पर रख दीं, यद्यपि बाहर बिल्कुल उजाला हो चुका था। सफ़ेद क़मीज़ से ढकी दोलोख़ोव की पीठ और घुंघराले बालोंवाले उसके सिर पर दोनों ओर से रोशनी पड़ रही थी। सभी खिड़की के पास जमा हो गये थे। अंग्रेज़ सबसे आगे खड़ा था। प्येर मुस्करा रहा था और चुप था। यहां उपस्थित लोगों में से एक, जो अन्य की तुलना में कुछ अधिक उम्र का था, अपने चेहरे पर घबराहट और झल्लाहट लिये हुए अचानक आगे बढ़ा और उसने दोलोख़ोव को क़मीज़ से पकड़ लेना चाहा।

"महानुभावो, यह पागलपन है! वह नीचे गिरकर मर जायेगा," दूसरों की तुलना में कुछ अधिक समझदार इस आदमी ने कहा।

अनातोल ने उसे रोका।

"इसे नहीं छुओ, तुम इसे डरा दोगे और यह नीचे गिरकर मर जायेगा। समझे?.. तब क्या होगा?.. बोलो?.."

दोलोख़ोव ने मुड़कर देखा और फिर हाथों से सहारा लेकर ढंग से बैठ गया।

"अगर कोई फिर मेरे मामले में दख़ल देगा," अपने पतले और कसकर भिंचे हुए होंठों के बीच से धीरे-धीरे एक-एक शब्द निकालते हुए उसने कहा, "तो मैं इसी वक़्त उसे यहां से नीचे फेंक दूंगा। समझ गये!.."

इतना कहकर उसने फिर से बाहर की तरफ़ मुंह कर लिया, हाथ हटा लिये, बोतल उठाकर मुंह से लगा ली, सिर को पीछे की ओर किया और ख़ाली हाथ को सन्तुलन बनाये रखने के लिये ऊपर उठा लिया। शीशे के टुकड़ों को उठानेवाला एक नौकर खिड़की तथा दोलोख़ोव की पीठ पर आंखें जमाये हुए झुका का झुका ही खड़ा रह गया। अनातोल तनकर खड़ा था, आंखें फाड़-फाड़कर देख रहा था। होंठों को आगे की ओर फैलाये हुए अंग्रेज़ एक पहलू से उसे देख रहा था। जिस व्यक्ति ने इस मामले को रोकने की कोशिश की थी, वह कमरे के कोने में भाग गया और दीवार की ओर मुंह करके सोफ़े पर

लेट गया। प्येर ने अपना मुंह ढंक लिया और उसके चेहरे पर यद्यपि हवाइयां उड़ रही थीं, फिर भी एक हल्की-सी, विस्मृत मुस्कान बनी रह गयी। सभी ख़ामोश थे। प्येर ने आंखों पर से हाथ हटाये। दोलोख़ोव पहले की तरह ही बैठा था। हां, उसका सिर पीछे की ओर इतना हट गया था कि उसके घुंघराले बाल क़मीज़ के कालर को छूने लगे थे और बोतल को थामे हुए हाथ अधिकाधिक ऊंचा होता जाता था तथा ऐसे करते हुए ज़ोर लगाने से कांप रहा था। बोतल स्पष्टतः ख़ाली होती जा रही थी और साथ ही अधिकाधिक पीछे की ओर होते जा रहे सिर के अनुपात में ऊंची होती जाती थी। "इतनी देर क्यों लग रही है?" प्येर ने सोचा। उसे ऐसा प्रतीत हुआ मानो आध घण्टे से अधिक समय बीत गया था। अचानक दोलोख़ोव ने पीठ को पीछे की तरफ़ हिलाया-डुलाया और उसका हाथ उत्तेजना से कांप उठा। यह कम्पन खिड़की की ढलान पर बैठे हुए दोलोख़ोव के सारे शरीर को हिलाने के लिये काफ़ी था। उसका पूरा शरीर हिला, उसने अपने को सम्भालने की कोशिश की और ऐसा करने पर उसका हाथ तथा सिर और भी ज़्यादा ज़ोर से कांपे। दासे को पकड़ने के लिये एक हाथ ऊपर उठा, मगर फिर से नीचे चला गया। प्येर ने पुनः आंखें मूंद लीं और अपने आपसे कहा कि अब वह उन्हें कभी नहीं खोलेगा। किन्तु सहसा उसने अनुभव किया कि उसके आस-पास सभी लोग हिल-डुल रहे हैं। उसने नज़र उठाकर देखा – दोलोख़ोव दासे पर खड़ा था, उसका चेहरा पीला और खिला हुआ था।

"बोतल ख़ाली है!"

उसने अंग्रेज़ की ओर बोतल फेंक दी जिसने उसे फ़ुर्ती से लोक लिया। दोलोख़ोव कूदकर खिड़की से नीचे आ गया। उसके मुंह से रम की तेज़ गन्ध आ रही थी।

"कमाल कर दिया! शाबाश! यह हुई न शर्त! बिल्कुल शैतान के चरख़े हो!" सभी ओर से ऊंची आवाज़ें आ रही थीं।

अंग्रेज़ बटुवा निकालकर सोने की मुद्रायें गिनने लगा। दोलोख़ोव नाक-भौंह सिकोड़े हुए चुप था। प्येर उछलकर खिड़की के दासे पर चढ़ गया।

"महानुभावो! कौन लगाता है मेरे साथ शर्त? मैं भी ऐसा करके दिखाता हूं," वह अचानक चिल्ला उठा। "शर्त लगाने की भी ज़रूरत

नहीं, तुम लोग मेरी बात सुनो। बोतल लाने को कह दो। मैं ऐसा करके दिखाऊंगा ... बोतल लाने को कहो।"

"करने दो, इसे ऐसा करने दो!" दोलोख़ोव ने मुस्कराकर कहा।

"तुम्हारा दिमाग़ चल निकला है क्या? कौन तुम्हें ऐसा करने देगा? तुम्हारा तो सीढ़ियों पर ही सिर चकराया करता है," भिन्न दिशाओं से ऐसी आवाज़ें सुनायी दीं।

"मैं पी जाऊंगा, रम की बोतल लाओ!" प्येर ने दृढ़ता और नशे में आये हुए व्यक्ति की तरह ज़ोर से मेज़ पर घूंसा मारते हुए कहा और खिड़की से बाहर टांगें लटकाने लगा।

लोगों ने उसके हाथ पकड़ लिये, मगर वह इतना तगड़ा था कि जो कोई भी उसके नज़दीक आता था, उसे दूर धकेल देता था।

"नहीं, ऐसे उसे कोई नहीं रोक पायेगा," अनातोल ने कहा, "ज़रा रुकिये, मैं अभी उसे चकमा देता हूं। सुनो, मैं तुम्हारे साथ शर्त लगाता हूं, लेकिन कल के लिये और इस वक़्त हम सब ... के यहां चल रहे हैं।"

"हां, चल रहे हैं," प्येर चिल्ला उठा, "वहां चल रहे हैं!.. और भालू को भी अपने साथ ले चलते हैं ..."

इतना कहकर उसने भालू के बच्चे को अपनी बांहों में ऊपर उठा लिया और उसे उठाये हुए ही कमरे में वाल्ज़ नृत्य के चक्कर काटने लगा।

७

आन्ना पाव्लोव्ना के यहां हुई पार्टी में प्रिंसेस द्रुबेत्स्काया ने प्रिंस वसीली से अपने इकलौते बेटे बोरीस के लिये जो अनुरोध किया था, प्रिंस वसीली ने उसे पूरा कर दिया था। उसके लिये सम्राट से प्रार्थना की गयी और अपवादस्वरूप उसे सेम्योनोव्स्की गार्ड-रेजिमेंट में छोटा लेफ़्टिनेंट नियुक्त कर दिया गया। किन्तु प्रिंसेस द्रुबेत्स्काया की सभी कोशिशों, उसकी सारी दौड़-धूप के बावजूद उसका बेटा बोरीस एड-जुटेंट या कुतूज़ोव के अमले का अफ़सर न बन सका। आन्ना पाव्लोव्ना

के यहां हुई पार्टी के कुछ समय बाद प्रिंसेस आन्ना मिख़ाइलोव्ना द्रुबेत्स्काया मास्को लौट आयी और सीधी अपने धनी रिश्तेदारों यानी रोस्तोव परिवार में पहुंची। मास्को में वह हमेशा यहीं ठहरती थी। उसके बहुत लाड़ले बेटे बोरीस का, जो कुछ ही समय पहले सेना में गया था और जिसका तत्काल ही छोटे लेफ़्टिनेंट के रूप में गार्ड-रेजिमेंट में तबादला कर दिया गया था, इसी रोस्तोव परिवार में पालन-पोषण हुआ था और अनेक वर्षों से वह यहीं रह रहा था। गार्ड-रेजिमेंट १० अगस्त को पीटर्सबर्ग से रवाना हो भी चुकी थी और वर्दी, आदि बनवाने के लिये फ़िलहाल मास्को में ही रुके रहनेवाले बोरीस को राद्ज़ीवीलोव के रास्ते में अपनी रेजिमेंट में पहुंच जाना था।

रोस्तोव परिवार में काउंटेस नताल्या और उनकी छोटी बेटी (जिसका नाम भी नताल्या था) का जन्मदिन मनाया जा रहा था। सुबह से ही पोवर्स्काया सड़क पर सारे मास्को में जानी-मानी काउंटेस रोस्तोवा की बड़ी हवेली के सामने बधाई देने के लिये आनेवालों की छः घोड़ों की बग्घियों का तांता लगा हुआ था। काउंटेस अपनी सुन्दर बड़ी बेटी और आते-जाते रहनेवाले अतिथियों के साथ दीवानख़ाने में बैठी थीं।

काउंटेस पूर्वी ढंग के तीखे नाक-नक़्शेवाली पैंतालीस साल की महिला थीं और बच्चे जन-जनकर, जिनकी संख्या बारह थी, स्पष्टतः शिथिल हो गयी थी। दुर्बलता के कारण उनकी धीमी-धीमी गति-विधियां और बातचीत उन्हें एक विशेष गरिमा और प्रतिष्ठा प्रदान करती थीं। घर के आदमी की तरह प्रिंसेस आन्ना मिख़ाइलोव्ना द्रुबेत्स्काया भी यहीं बैठी थी और मेहमानों के स्वागत-सत्कार तथा बातचीत में हिस्सा लेती थी। मेहमानों के सामने उपस्थित रहने की आवश्यकता न अनुभव करते हुए बच्चे पीछेवाले कमरों में थे। काउंट अतिथियों का स्वागत करते, उन्हें विदा करने जाते और सभी को शाम की दावत के लिये निमन्त्रित करते।

"मेरी प्यारी या मेरे प्यारे!" (वह इस बात की ज़रा भी परवाह किये बिना कि कोई दर्जे में उनसे ऊंचा या नीचा है, सभी को मेरी प्यारी या मेरे प्यारे कहते थे), "अपनी ओर से तथा अपनी पत्नी तथा बेटी की ओर से आपको बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं। देखिये, डिनर के लिये आना नहीं भूलिये। नहीं तो मैं बुरा मान जाऊंगा,

मेरे प्यारे। सच्चे दिल से पूरे परिवार की ओर से अनुरोध करता हूं, मेरी प्यारी।" किसी अपवाद या किसी तरह के परिवर्तन के बिना वह अपने गोल, उल्लासपूर्ण और सफ़ाचट चेहरे पर एक ही जैसे भाव लाते, बड़े तपाक से एक ही ढ़ंग से हाथ मिलाते और सिर को बार-बार थोड़ा झुकाते हुए यही शब्द दोहराते। एक मेहमान को विदा करके काउंट अभी भी दीवानख़ाने में उपस्थित पुरुष या महिला अतिथि के पास लौटते, कुर्सी को उसके नज़दीक खींचते और ज़िन्दगी को प्यार करने तथा उसे जीने का ढंग जाननेवाले व्यक्ति की तरह ज़िन्दादिली से टांगें फैलाते, घुटनों पर हाथ टिकाते, महत्त्वपूर्ण ढंग से शरीर को हिलाते, कभी रूसी और कभी बहुत ही भद्दी, किन्तु आत्मविश्वास से भरपूर फ़्रांसीसी भाषा में मौसम के अनुमानों की चर्चा करते, स्वास्थ्य-परामर्श देते और फिर से थके हुए, किन्तु कर्त्तव्य-पालन के मामले में बहुत ही दृढ़ आदमी की तरह अपनी चांद पर बचे-बचाये पके बालों को सहलाते हुए मेहमान को विदा करने जाते और डिनर के लिये निमन्त्रित करते। प्रवेश-कक्ष से लौटते हुए कभी-कभी वह पुष्प-वाटिका तथा बटलरों के कमरे से होते हुए संगमरमर के बड़े हॉल में जाते जहां अस्सी मेहमानों के लिये डिनर का प्रबन्ध किया जा रहा था। वहां वह चांदी और चीनी के बर्तन ला रहे, मेज़ें व्यवस्थित कर रहे तथा उनपर बेल-बूटोंवाले रेशमी मेज़पोश बिछा रहे बैरों को देखते और फिर द्मीत्री वसील्येविच को, उस कुलीन को अपने पास बुलाते जो उनके यहां सभी आयोजनों की देख-भाल करता था, और कहते:

"देखो, मीत्या, सारा प्रबन्ध ख़ूब अच्छा होना चाहिये। हां, यह बढ़िया है," उन्होंने लम्बी मेज़ को देखते हुए ख़ुश होकर कहा। "अच्छी ख़ातिरदारी ही सबसे बड़ी चीज़ है। समझे न..." और वह आत्मसन्तोष से हांफते हुए फिर से दीवानख़ाने में लौट जाते।

"बेटी के साथ मरीया ल्वोव्ना करागिना पधारी हैं!" दीवानख़ाने के दरवाज़े के पास आकर काउंटेस के भीमकाय नौकर ने भारी आवाज़ में घोषणा की। काउंटेस सोच में पड़ गयीं और उन्होंने पति के लघु छविचित्रवाली सोने की नासदानी से चुटकी भरकर नसवार सूंघी।

"नाक में दम आ गया है इन मेहमानों की वजह से," वह बोलीं। "बस, इसके बाद और किसी से नहीं मिलूंगी। यह तो बहुत ही रस्मी औरत है। भेज दो अंदर," उन्होंने ऐसी उदासी भरी आवाज़ में नौकर

से कहा मानो कह रही हों: "ले लो मेरी जान!"

ऊंचे क़द तथा गदराये बदन की गर्वीली-घमंडी महिला और गोल चेहरेवाली उसकी मुस्कराती बेटी अपनी पोशाकों को सरसराती हुई दीवानख़ाने में आयीं।

"ओह, कितना अरसा हो गया... काउंटेस... बेचारी बीमार थी... राज़ुमोव्स्की परिवार के बॉल-नृत्य में... काउंटेस अप्राकसिना... मुझे बड़ी ख़ुशी हुई थी..." एक-दूसरी को टोकती और पोशाकों की सरसराहट तथा कुर्सियों की घसीट से घुली-मिली नारियों की सजीव आवाज़ें सुनायी देने लगीं। वह बातचीत शुरू हो गयी जिसे कोई भी महिला पहले ही विराम पर अपनी पोशाक को सरसराती हुई खड़ी होकर इन शब्दों के साथ समाप्त कर सकती है: "बहुत, बहुत ख़ुश हूं... मां की सेहत... काउंटेस अप्राकसिना..." और फिर से अपनी पोशाक को सरसराते हुए प्रवेश-कक्ष में जाकर अपना समूर का कोट या बरसाती पहनकर विदा हो सकती है। बातचीत उस वक़्त शहर की मुख्य चर्चा यानी सम्राज्ञी येकतेरीना के ज़माने के सुन्दरतम और बहुत ही धनी तथा इस समय बेहद बीमार, बूढ़े काउंट बेज़ूख़ोव और उसके अवैध बेटे प्येर के बारे में होने लगी जिसने आन्ना पाव्लोव्ना शेरेर की पार्टी में शिष्ट व्यवहार का परिचय नहीं दिया था।

"बहुत ही तरस आता है मुझे काउंट पर," अतिथि ने कहा, "उसकी तबीयत तो वैसे ही बहुत ख़राब है और अब बेटे की वजह से उसके दिल को बड़ी ठेस लगी है जो उसकी जान ले लेगी।"

"क्या बात हो गयी?" काउंटेस ने ऐसे पूछा मानो जानती ही न हों कि मेहमान किस बात की चर्चा कर रही है, यद्यपि वह कोई पन्द्रह बार काउंट बेज़ूख़ोव के दुख का कारण सुन चुकी थीं।

"यह नतीजा है आजकल की पढ़ाई-लिखाई का। जब वह विदेश में था," मेहमान ने कहा, "इस नौजवान को उसी समय पूरी आज़ादी दे दी गयी थी और सुनने में आया है कि अब पीटर्सबर्ग लौटकर उसने ऐसी भयानक हरकतें की हैं कि पुलिस ने उसे वहां से निकाल दिया है।"

"सच!" काउंटेस कह उठीं।

"वह बुरी संगत में पड़ गया है," आन्ना मिख़ाइलोव्ना ने बातचीत में हिस्सा लेते हुए कहा। "लोगों का कहना है कि प्रिंस वसीली के बेटे, प्येर और दोलोख़ोव नाम के एक अन्य नौजवान ने, भगवान ही

जानें, क्या करतूत की है। प्येर और दोलोख़ोव को इसका फल भोगना पड़ा। दोलोख़ोव को अफ़सर से मामूली फ़ौजी बना दिया गया और बेज़ूख़ोव के बेटे को मास्को भेज दिया गया। प्रिंस वसीली अपने बेटे अनातोल कुरागिन के मामले को दबा देने में सफल हो गया, फिर भी उसे पीटर्सबर्ग से निकाल दिया गया।

"लेकिन आख़िर उन्होंने किया क्या था?" काउंटेस ने जानना चाहा।

"ये लोग तो बिल्कुल बदमाश हैं, ख़ास तौर पर दोलोख़ोव," मेहमान ने जवाब दिया। "वह मरीया इवानोव्ना दोलोख़ोवा का बेटा है जो इतनी इज़्ज़त-आबरूवाली महिला है। लेकिन क्या किया जाये? आप कल्पना कीजिये – ये तीनों कहीं से एक भालू ले आये, उसे बग्घी में अपने साथ बिठाकर अभिनेत्रियों के यहां पहुंच गये। पुलिसवाले इनकी अक़्ल ठिकाने करने के लिये वहां भागे आये। इन्होंने एक पुलिस-अफ़सर को पकड़कर उसे पीठ के बल भालू की पीठ से बांध दिया और भालू को मोइका नदी में छोड़ दिया। भालू तैरता था और पुलिस-अफ़सर उसकी पीठ पर बंधा हुआ था।"

"पुलिस-अफ़सर की सूरत तो उस वक़्त देखने लायक़ रही होगी, मेरी प्यारी," हंसी के मारे बेहाल होते हुए काउंट चिल्लाये।

"उफ़, कैसी भयानक बात है यह! काउंट, आप हंस किसलिये रहे हैं?"

किंतु महिलायें स्वयं भी बरबस हंस पड़ीं।

"बड़ी मुश्किल से उस अभागे पुलिस-अफ़सर की जान बचाई गयी," मेहमान कहती गयी। "तो काउंट किरील्ल व्लादीमिरोविच बेज़ूख़ोव का बेटा ऐसे बढ़िया ढंग से अपना मन बहलाता है!" उसने अपनी बात जारी रखी। "और लोग कहते थे कि उसकी अच्छी शिक्षा-दीक्षा हुई है और वह बड़ा समझदार है। यह फल है विदेश की शिक्षा-दीक्षा का। आशा करती हूं कि बहुत धन-दौलन के बावजूद यहां कोई भी उसे अपने घर में नहीं आने-जाने देगा। उसके मेरे यहां आने की बात चली, मगर मैंने तो दो टूक जवाब देते हुए इन्कार कर दिया – मेरे घर में जवान बेटियां हैं।"

"आप किस आधार पर यह कह रही हैं कि इस नौजवान के पास बहुत धन-दौलत है?" काउंटेस ने आगे को झुकते हुए, ताकि लड़कियां

उसकी बात न सुन सकें, सवाल किया। लड़कियों ने भी फ़ौरन यह ज़ाहिर किया कि वे सुन नहीं रहीं। "काउंट के तो सभी ग़ैरक़ानूनी बच्चे हैं। लगता है कि... प्येर भी ऐसा ही है।"

मेहमान ने निराशा से हाथ झटका।

"मेरे ख़्याल में तो उसके ऐसे बीस अवैध बच्चे हैं।"

प्रिंसेस आन्ना मिख़ाइलोव्ना ने स्पष्टतः अपने सम्बन्धों और ऊंची सोसाइटी की अपनी जानकारी का प्रदर्शन करने के इरादे से बातचीत में दख़ल दिया।

"बात यह है," उसने महत्त्वपूर्ण ढंग से और फुसफुसाते हुए ही कहा। "काउंट किरील्ल व्लादीमिरोविच बेज़ूख़ोव बदनाम आदमी है, यह सभी जानते हैं... उसके कितने बच्चे हैं, वह तो उनकी गिनती ही भूल गया है। लेकिन प्येर उसका सबसे लाड़ला बेटा है।"

"अभी पिछले साल तक बुड्ढा कितना सुन्दर था! .." काउंटेस ने कहा। "उससे ज़्यादा ख़ूबसूरत मर्द मैंने अपनी ज़िन्दगी में नहीं देखा।"

"मगर अब बहुत बदल गया है," आन्ना मिख़ाइलोव्ना बोली। "हां, तो मैं यह कहना चाहती थी," उसने अपनी बात जारी रखी, "बीवी की ओर से तो प्रिंस वसीली ही उसकी सारी सम्पत्ति का उत्तराधिकारी है, किन्तु प्येर को काउंट बहुत प्यार करता था, उसने उसकी शिक्षा-दीक्षा में रुचि ली और उसके बारे में सम्राट को पत्र भी लिखा... इसलिये कोई भी यह नहीं जानता कि अगर वह मर जायेगा (और उसकी इतनी बुरी हालत है कि किसी भी क्षण ऐसा हो सकता है और इसीलिये पीटर्सबर्ग के मशहूर डाक्टर लोरान को भी बुला लिया गया है), तो किसे इतनी बड़ी सम्पत्ति मिलेगी, प्येर को या प्रिंस वसीली को। चालीस हज़ार भूदास और करोड़ों की नक़द रक़म। मैं यह बहुत अच्छी तरह से जानती हूं, क्योंकि प्रिंस वसीली ने ख़ुद मुझे यह बताया था। और काउंट बेज़ूख़ोव दूर के रिश्ते से मेरा भी मामा है। वही मेरे बोरीस का धर्म-पिता भी है," उसने ऐसे लापरवाही से यह कहा मानो इस बात को कोई महत्त्व न देती हो।

"प्रिंस वसीली कल मास्को आ गया है। मुझे बताया गया है कि वह सरकारी जांच-पड़ताल के किसी काम से यहां आया है।"

"लेकिन, यह बात हमारे बीच ही रहनी चाहिये," काउंटेस

ने कहा, "यह तो सिर्फ़ बहाना है। यह मालूम होने पर कि काउंट की इतनी बुरी हालत है, वास्तव में वह उसी के पास आया है।"

"कुछ भी कहिये, मेरी प्यारी, बहुत ही मज़ेदार क़िस्सा रहा वह," काउंट ने कहा और यह देखकर कि अतिथि महिला उनकी बात नहीं सुन रही है, उन्होंने युवतियों को सम्बोधित किया: "मैं कल्पना कर सकता हूं कि उस वक़्त पुलिस-अफ़सर की सूरत कैसी देखने लायक़ रही होगी!"

और यह कल्पना करके कि पुलिस-अफ़सर कैसे अपने हाथ हिलाता होगा, उन्होंने भारी आवाज़ में ज़ोरदार ठहाका लगाया और इस तरह हंसते हुए उनका भारी-भरकम शरीर पूरी तरह हिल उठा। ख़ूब डटकर खाने, विशेषतः ख़ूब डटकर हमेशा पीनेवाले लोग ही इस तरह से हंसते हैं। "कृपया, डिनर के लिये ज़रूर हमारे यहां आइयेगा," उन्होंने कहा।

८

ख़ामोशी छा गयी। काउंटेस मधुर मुस्कान के साथ मेहमान की ओर देख रही थीं और यह भी नहीं छिपा रही थीं कि अगर अब वह उठकर चली जाये तो उन्हें ज़रा भी अफ़सोस नहीं होगा। मेहमान-महिला की बेटी प्रश्नसूचक दृष्टि से मां को देखते हुए उठने के लिये अपनी पोशाक को ठीक भी करने लगी थी। इसी क्षण बग़ल के कमरे से अचानक दरवाज़े की ओर भागे आ रहे कई लड़के-लड़कियों के पांवों का शोर, कुर्सी के किसी के रास्ते में आने और गिरने की आवाज़ सुनायी दी तथा मलमल के कम लम्बे फ़्रॉक में कुछ छिपाते हुए तेरह साल की एक बालिका भागती हुई भीतर आई और आकर कमरे के बीचोंबीच खड़ी हो गयी। साफ़ नज़र आ रहा था कि वह अनचाहे ही ऐसे बेतहाशा भागती हुई इतनी दूर आ गयी थी। अगले ही क्षण लाल कालरवाला छात्र, गार्ड-रेजिमेंट का अफ़सर, पन्द्रह वर्षीया एक लड़की और बच्चों की जाकेट पहने हुए लाल-लाल गालोंवाला एक मोटा लड़का भी दरवाज़े पर दिखायी दिया।

काउंट झटपट उठे, उन्होंने बांहें फैलायीं और भागकर आनेवाली बालिका को बांहों में भर लिया।

"अरे, यह रही वह!" वह हंसते हुए चिल्ला उठे, "जिसका जन्मदिन है आज! मेरी इस प्यारी बिटिया का जन्मदिन है!"

"मेरी प्यारी, हर चीज़ का कोई वक़्त होता है," काउंटेस ने कठोर होने का ढोंग करते हुए कहा। "तुम इसे बिगाड़ते रहते हो, इल्या," उन्होंने पति को भी हल्की डांट पिलायी।

"नमस्ते, मेरी प्यारी, आपको बधाई देती हूं," अतिथि ने कहा। "कितनी प्यारी बच्ची है!" उसने मां को सम्बोधित करते हुए इतना और जोड़ दिया।

काली आंखों और बड़े मुंहवाली यह बालिका सुन्दर तो नहीं, किन्तु जीवन-स्फूर्ति से ओत-प्रोत थी। बहुत तेज़ दौड़ने के कारण चोली के ढुलक जाने से उसके बालिका-सुलभ कंधे नंगे हो गये थे और उसके काले, घुंघराले बाल पीछे की ओर बिखरे हुए थे। उसकी पतली-पतली बांहें नंगी थीं, छोटी-छोटी टांगों के ऊपर वह लेस की झालरवाली सुथनी और खुलेमुंह के जूते पहने थी। वह उस प्यारी उम्र में थी, जब लड़की बच्ची नहीं रहती, मगर बच्ची अभी युवती नहीं होती। पिता की बांहों से मुक्त होकर वह मां के पास भाग गयी और उसके कठोरता दिखानेवाले शब्दों की कोई परवाह न करते हुए उसने उत्तेजना के कारण अपना लाल चेहरा मां के लेसवाले दुपट्टे में छिपा लिया और हंसने लगी। रुक-रुककर अपनी गुड़िया के बारे में कुछ कहते हुए, जिसे उसने फ्रॉक में से बाहर निकाल लिया था, वह किसी बात पर हंस रही थी।

"देखते हैं न?.. गुड़िया... मीमी... देखते हैं न?"

और नताशा इससे अधिक कुछ न कह सकी (उसे अभी भी यह बहुत हास्यजनक लग रहा था)। वह मां के ऊपर गिर गयी और इतने ज़ोर से तथा गूंजती आवाज़ में हंस पड़ी कि सभी को हंसी आ गयी। यहां तक कि अत्यधिक औपचारिकता बरतनेवाली मेहमान को-शिश करने पर भी अपनी हंसी को नहीं रोक पायी।

"अच्छा, अच्छा, अब अपनी इस भयानक गुड़िया को लेकर भाग जाओ," बनावटी गुस्से से बेटी को परे धकेलते हुए मां ने कहा। "यह मेरी छोटी बिटिया है," उन्होंने अतिथि-महिला को सम्बोधित करते हुए कहा।
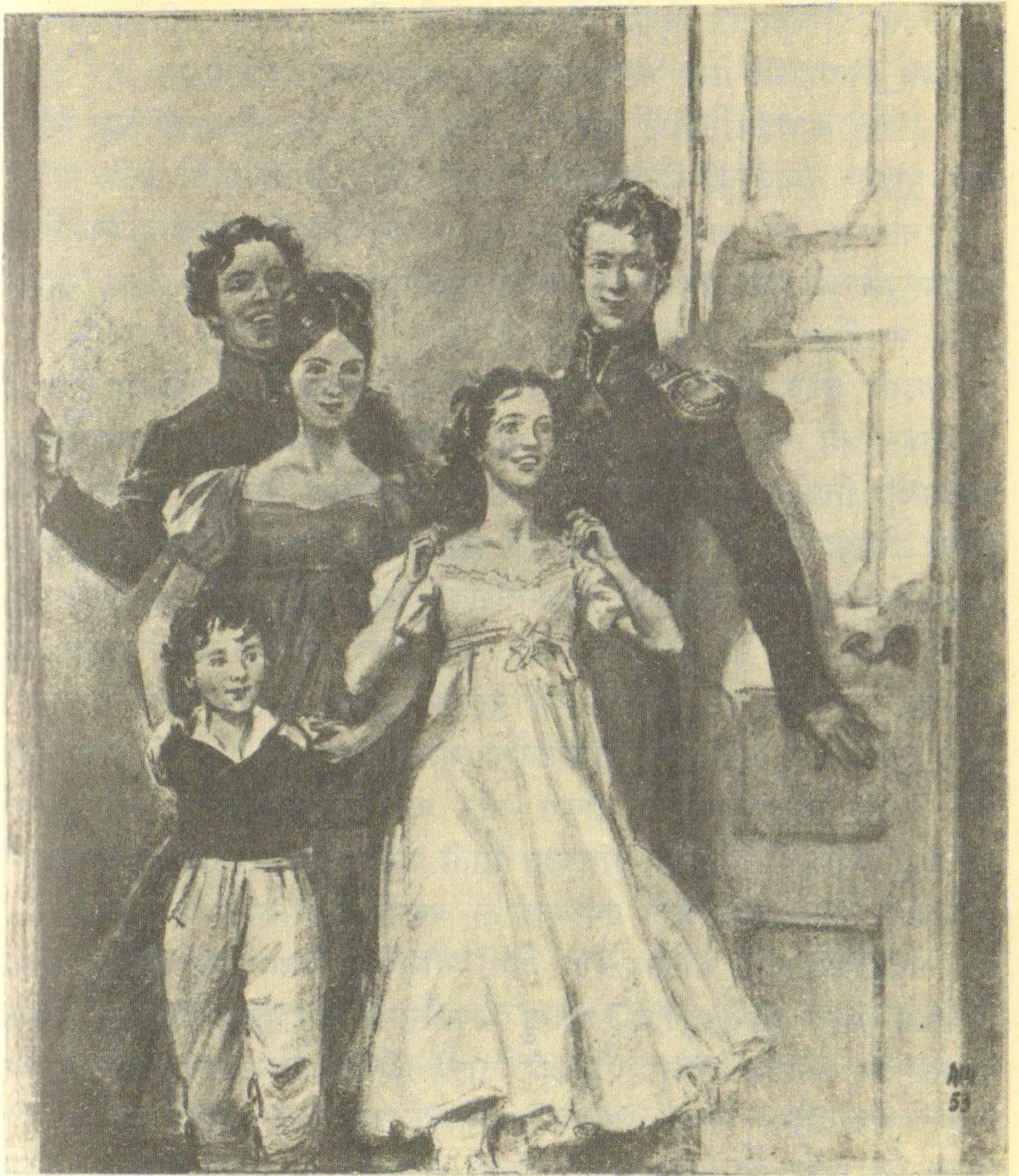
रोस्तोव परिवार के बेटे-बेटियां (नताशा के जन्मदिन का दृश्य)।

नताशा ने मां के लेसवाले दुपट्टे से क्षण भर को अपना मुंह ऊपर उठाया, हंसी के कारण छलक आनेवाले आंसुओं के बीच से उसकी तरफ़ देखा और फिर से अपना मुंह छिपा लिया।

इस पारिवारिक दृश्य को देखने के लिये विवश महिला ने यह अनुभव किया कि उसे भी इसमें कोई भाग लेना चाहिये।

"यह बताइये, मेरी प्यारी," उसने नताशा को सम्बोधित करते हुए पूछा, "यह मीमी गुड़िया आपकी क्या लगती है? बेटी न?"

नताशा को अतिथि-महिला का बच्चों जैसी बातचीत का यह अनुग्रहपूर्ण अन्दाज़ अच्छा नहीं लगा। उसने कोई उत्तर न देकर उसकी ओर गम्भीरता से देखा।

इसी बीच नयी पीढ़ी के ये सभी लड़के-लड़कियां – प्रिंसेस आन्ना मिख़ाइलोव्ना का फ़ौजी अफ़सर बेटा बोरीस, काउंट का बड़ा बेटा, विद्यार्थी निकोलाई, काउंट की पन्द्रह वर्षीया भानजी सोन्या और छोटा पेत्रूशा – सभी दीवानख़ाने में बैठ गये थे और साफ़ दिखाई दे रहा था कि वे सभी अपने हंसी-मज़ाक़ और ख़ुशी को, जो अभी तक उनके रोम-रोम से फूटी पड़ रही थी, बड़ी मुश्किल से शिष्टता की सीमाओं में रखने की कोशिश कर रहे थे। स्पष्ट था कि पीछे के कमरों में, जहां से वे इस तरह ताबड़तोड़ भागते आये थे, उनके बीच यहां की शहरी निन्दा-चुगली, मौसम और काउंटेस अप्राकसिना की तुलना में कहीं अधिक दिलचस्प बातचीत होती रही थी। जब-तब वे एक-दूसरे की ओर देखते और बड़ी कठिनाई से अपनी हंसी को रोक पाते।

विद्यार्थी और अफ़सर – ये दोनों नौजवान बचपन के दोस्त, दोनों हमउम्र और ख़ूबसूरत थे, किन्तु शक्ल-सूरत में एक-दूसरे से बिल्कुल भिन्न थे। बोरीस लम्बा, सुनहरे बालों, तीखे नाक-नक़्शे और सुन्दर चेहरेवाला शान्त तरुण था। निकोलाई नाटा, घुंघराले बालों और चेहरे की निष्कपट भावाभिव्यक्तिवाला नौजवान था। उसकी मसें भीगने लगी थीं और उसके चेहरे पर उत्साह तथा उल्लास झलक रहा था। निकोलाई दीवानख़ाने में आते ही लज्जारुण हो गया। साफ़ नज़र आ रहा था कि वह कुछ कहने के लिये शब्द ढूंढ़ रहा था, मगर उसे ऐसे शब्द मिल नहीं रहे थे। इसके विपरीत, बोरीस को तुरन्त कुछ सूझ गया और उसने इतमीनान से तथा मज़ाक़िया अन्दाज़ में यह बताया कि इस मीमी गुड़िया को वह तब से जानता है, जब वह जवान और

सुन्दर थी, जब उसकी नाक नहीं टूटी थी, कि पिछले पांच सालों में वह कैसे बुढ़ा गयी है और उसका सिर जगह-जगह से टूट गया है। इतना कहकर उसने नताशा की तरफ़ देखा। नताशा ने मुंह फेर लिया, छोटे भाई पर नज़र डाली जिसका शरीर हंसी को दबाने के कारण हिल रहा था और जो आंखों को सिकोड़ रहा था। नताशा यह अनुभव करते हुए कि अब वह अपनी हंसी को वश में नहीं रख पायेगी, नीचे कूदी और जितनी भी तेज़ी से सम्भव हुआ, कमरे से बाहर भाग गयी। बोरीस अपनी हंसी को रोके रहा।

"अम्मां, आप भी तो कहीं जाना चाह रही थीं? बग्घी चाहिये न?" उसने मुस्कराते हुए अपनी मां से पूछा।

"हां, जाओ, जाकर बग्घी तैयार करने को कह दो," मां ने भी मुस्कराते हुए जवाब दिया।

बोरीस धीरे से बाहर आकर नताशा को खोजने लगा। झुंझलाया हुआ मोटा लड़का, जो शायद इस कारण नाराज़ था कि उसकी सोची हुई योजना गड़बड़ हो गयी थी, इन दोनों के पीछे-पीछे ही दीवानख़ाने से बाहर भाग गया।

६

अतिथि-युवती और काउंटेस की बड़ी बेटी को छोड़कर (जो नताशा से चार साल बड़ी थी और वयस्का की तरह व्यवहार करती थी) दीवानख़ाने में निकोलाई और काउंट की भानजी सोन्या ही रह गये। सोन्या काले बालोंवाली दुबली-पतली और छोटी-सी लड़की थी। उसकी सुन्दर आंखों पर लम्बी-लम्बी बरौनियां थीं, वह घने, काले बालों की दोहरी चोटी बनाये थी और उसके चेहरे, ख़ास तौर पर उसकी नंगी, पतली-पतली, किन्तु सजीली और मजबूत बांहों और गर्दन की त्वचा में कुछ पीली-पीली झलक थी। उसकी गति-विधि की मृदुलता, छोटे-छोटे अंगों की कोमलता और लोचशीलता तथा अपने कुछ चालाकी भरे और संयत अंदाज़ से वह ऐसी सुंदर, किन्तु अभी तक पूरी तरह विकसित न हो पानेवाली नन्ही बिल्ली की याद दिलाती थी

जो बड़ी होकर बहुत ही प्यारी बनेगी। स्पष्टतः उचित और शिष्ट मानते हुए ही मुस्कराकर वह सामान्य बातचीत में अपनी रुचि दिखा रही थी। किन्तु उसकी इच्छा के विरुद्ध घनी-घनी और लम्बी-लम्बी बरौनियों के नीचे से उसकी आंखें जल्द ही सेना में जानेवाले ममेरे भाई को युवती-सुलभ ऐसे प्यार से देख रही थीं कि उसकी मुस्कान घड़ी भर को भी किसी को धोखा नहीं दे सकती थी। साफ़ नज़र आ रहा था कि यह छोटी-सी बिल्ली केवल इसीलिये ज़रा बैठ गयी है कि कुछ देर बाद और अधिक ज़ोर से छलांग मार सके तथा अपने ममेरे भाई के साथ उस वक़्त खेल सके जब बोरीस और नताशा की भांति वे दोनों भी इस मेहमानखाने से बाहर जायें।

"हां, मेरी प्यारी," काउंट ने अतिथि-महिला को सम्बोधित और निकोलाई की ओर संकेत करते हुए कहा। "इसका दोस्त बोरीस सेना में अफ़सर हो गया है और दोस्ती निभाते हुए यह भी उससे पीछे नहीं रहना चाहता है। यह विश्वविद्यालय और मुझ बूढ़े को छोड़कर फ़ौज में जा रहा है, मेरी प्यारी। इसके लिये तो अभिलेखागार में नौकरी और अन्य सभी चीज़ों की व्यवस्था हो चुकी थी।* इसे ही कहते हैं न सच्ची दोस्ती!" काउंट ने कहा।

"हां, सुनने में आया है कि जंग का एलान हो गया है," अतिथि ने कहा।

"ऐसा तो बहुत समय से कहा जा रहा है," काउंट ने जवाब दिया। "वे बार-बार ऐसा कहेंगे और फिर बात आयी-गयी हो जायेगी। मेरी प्यारी, इसे ही कहते हैं न सच्ची दोस्ती!" काउंट ने यह वाक्य दोहराया। "वह हुस्सार-सेना में जा रहा है।"

अतिथि ने यह न समझ पाते हुए कि क्या जवाब दे, सिर हिलाया।

"दोस्ती की वजह से मैं बिल्कुल ऐसा नहीं कर रहा हूं," निकोलाई ने भड़कते और इस तरह अपनी सफ़ाई देते हुए कहा मानो वह अपने माथे पर लगा दिया गया कोई कलंक मिटाना चाहता हो। "दोस्ती की वजह से बिल्कुल नहीं, बल्कि इसलिये ऐसा कर रहा हूं कि फ़ौज में ही मेरी असली जगह है।"

---

* कूटनीतिज्ञ बनने के इच्छुक कुलीन जवान लोग सबसे पहले विदेश मंत्रालय के अभिलेखागार में नौकरी करते थे। – सं०

उसने फुफेरी बहन और अतिथि-युवती पर नज़र डाली। वे दोनों ही अनुमोदन की मुस्कान के साथ उसकी ओर देख रही थीं।

"पाव्लोग्राद की हुस्सार-रेजिमेंट का कर्नल शूबेर्ट आज हमारे यहां डिनर पर आ रहा है। वह यहां छुट्टी पर आया हुआ है और निकोलाई को अपने साथ ले जा रहा है। मगर क्या किया जा सकता है?" काउंट ने कंधे झटकते हुए और मज़ाक़िया अन्दाज़ में इस मामले का उल्लेख किया जिससे स्पष्टतः उनके दिल को काफ़ी दुख हुआ था।

"पापा, मैं तो आपसे कह चुका हूं कि अगर आप ऐसा नहीं चाहते तो मैं नहीं जाऊंगा," बेटा बोला। "लेकिन मैं जानता हूं कि फ़ौज के अलावा मैं और किसी काम का नहीं हूं। मैं कूटनीतिज्ञ नहीं हूं, दफ़्तरी बाबू भी नहीं हो सकता, जो कुछ अनुभव करता हूं, उसे छिपाना नहीं जानता," वह एक ख़ूबसूरत नौजवान की शोख़ी से लगातार सोन्या और अतिथि-युवती की ओर देखता हुआ कहता गया।

निकोलाई पर अपनी आंखें गड़ाये हुए बिल्ली सोन्या किसी भी क्षण उससे खेलने और अपना बिल्ली जैसा सारा स्वभाव दिखाने को तैयार थी।

"अच्छा, अच्छा, ठीक है!" बूढ़े काउंट ने कहा। "हर वक़्त भड़कता रहता है। बोनापार्ट ने इन सबके दिमाग़ ख़राब कर दिये हैं। सभी यह सोचते हैं कि कैसे वह लेफ़्टिनेंट से सम्राट बन गया। ठीक है, भगवान इनका कल्याण करे," काउंट ने अतिथि-महिला की व्यंग्यपूर्ण मुस्कान की ओर ध्यान दिये बिना अन्त में इतना और कह दिया।

बुज़ुर्ग लोग बोनापार्ट की चर्चा करने लगे। करागिना की बेटी यूलिया ने जवान निकोलाई रोस्तोव को सम्बोधित किया:

"कितने अफ़सोस की बात है कि बृहस्पतिवार को आप अरख़ारोव परिवारवालों के यहां नहीं आये। आपके बिना मैं ऊब अनुभव करती रही," उसने नज़ाकत से मुस्कराकर कहा।

दिल को गुदगुदा देनेवाले ऐसे शब्द सुनकर जवान निकोलाई होंठों पर जवानी की चोचलेबाज़ी करती मुस्कान लिये हुए उसके नज़दीक जा बैठा और मुस्कराती हुई यूलिया के साथ घुल-मिलकर बातें करने लगा। इस बात की तरफ़ उसका ज़रा भी ध्यान नहीं गया कि उसके होंठों पर अनजाने ही आ जानेवाली उसकी मुस्कान ने डाह की छुरी

से सोन्या के हृदय को चीर डाला था, जिसका चेहरा अब तमतमा उठा था और जो केवल ढोंग करते हुए मुस्करा रही थी। बातचीत के दौरान उसने सोन्या पर नज़र डाली। सोन्या ने दहकती, क्रुद्ध दृष्टि से उसकी ओर देखा और बड़ी मुश्किल से आंसुओं को पीते तथा होंठों पर दिखावटी मुस्कान बनाये हुए उठी और कमरे से बाहर चली गयी। निकोलाई की चंचलता हवा हो गयी। बातचीत में पहला विराम आते ही वह उदास चेहरा लिये हुए कमरे से बाहर आ गया और सोन्या को ढूंढ़ने लगा।

"इन जवान लोगों के राज़ कैसे इनके चेहरों पर लिखे रहते हैं!" आन्ना मिख़ाइलोव्ना ने बाहर जाते हुए निकोलाई की तरफ़ इशारा करके कहा। "चचेरे-ममेरे भाई-बहनों में हमेशा ही प्यार हो जाता है," उसने इतना और जोड़ दिया।

"हां," काउंटेस ने कहा। अब तक वह सूर्य-किरण जैसी चमक जो युवा पीढ़ी के साथ दीवानख़ाने में आयी थी, ग़ायब हो गयी थी और मानो उस प्रश्न का उत्तर देते हुए जो किसी ने भी उनसे नहीं पूछा था, मगर जो हमेशा उनके मन में बना रहता था, बोलीं: "कितनी मुसीबतों, कितनी परेशानियों का सामना करना पड़ता है कि आख़िर हम अपने इन बच्चों को देखकर ख़ुश हो सकें। लेकिन सच तो यह है कि अभी भी ख़ुशी के बजाय मन में भय कहीं अधिक बना रहता है। हर वक़्त दिल डरता रहता है, भयभीत रहता है! यही वह उम्र है जो लड़कियों और लड़कों के लिये बहुत ख़तरनाक होती है।"

"सब कुछ पालन-शिक्षण पर निर्भर करता है," अतिथि-महिला ने कहा।

"हां, आपकी बात बिल्कुल सही है," काउंटेस कहती गयीं। "भगवान की कृपा से अभी तक तो मैं अपने बच्चों की मित्र रही हूं और वे मुझसे अपनी कोई भी बात नहीं छिपाते हैं," काउंटेस ने बहुत-से माता-पिता की इसी भूल को दोहरा दिया जो यह समझते हैं कि बच्चे उनसे किसी तरह के कोई राज़ नहीं रखते। "मैं जानती हूं कि मेरी बेटियां मुझे ही सबसे पहले अपनी राज़दान बनायेंगी और अगर निकोलाई अपने तेज़ स्वभाव के कारण कोई शरारत करेगा भी (लड़के ऐसा किये बिना रह ही नहीं सकते) तो भी पीटर्सबर्ग के उन नौजवान महानुभावों जैसा कुछ नहीं करेगा।"

"हां, अच्छे, बहुत अच्छे बच्चे हैं," काउंट ने पुष्टि की। वह अपने लिये उलझी हुई हर समस्या का हमेशा इसी तरह समाधान करते थे कि उसमें सब कुछ अच्छा ही अच्छा देखते थे। "अब ज़रा ख़्याल कीजिये! वह हुस्सार-रेजिमेंट में जाना चाहता है। बताइये, अब क्या किया जाये, मेरी प्यारी!"

"आपकी छोटी बेटी कितनी अच्छी है!" अतिथि-महिला बोली। "एकदम पटाखा है!"

"हां, पटाखा है," काउंट ने कहा। "मुझपर गयी है! और कितनी बढ़िया आवाज़ है उसकी – बेशक मेरी बेटी है, लेकिन मैं सच कहता हूं कि वह गायिका बनेगी, दूसरी सालोमोनी*। हमने उसे संगीत सिखाने के लिये एक इतालवी शिक्षक का प्रबन्ध कर लिया है।"

"क्या आपने जल्दी नहीं की? कहते हैं कि इस उम्र में गाना सीखने से आवाज़ ख़राब हो जाती है।"

"अजी नहीं, जल्दी कैसी!" काउंट ने जवाब दिया। "हमारी माताओं की क्या बारह-तेरह साल की उम्र में शादियां नहीं हुई थीं?"

"वह तो बोरीस को प्यार भी करती है! कहिये, क्या ख़्याल है?" काउंटेस ने ज़रा मुस्कराकर बोरीस की मां की ओर देखते हुए कहा और स्पष्टतः उसी विचार को ध्यान में रखते हुए जो हमेशा उनके मन में बना रहता था, कहती गयीं: "अगर मैं उसके साथ कड़ाई बरतती, उसे मना करती तो भगवान जानें, वे चोरी-चोरी क्या कुछ करते," (काउंटेस का अभिप्राय था कि चूमाचाटी करते), "और अब मैं उसकी एक-एक बात जानती हूं। शाम को वह ख़ुद ही मेरे पास भागी आती है और सब कुछ मुझे बता देती है। हो सकता है कि मैं उसे बिगाड़ रही हूं, लेकिन सच कहती हूं, मुझे तो ऐसा करना ही सबसे अच्छा प्रतीत होता है। अपनी बड़ी बेटी के साथ मैं कठोर रही थी।"

"हां, मुझे दूसरे ही ढंग से पाला-पोसा गया था," बड़ी, सुन्दर बेटी, काउंटेस वेरा ने मुस्कराकर कहा।

---

* सालोमोनी – प्रसिद्ध ऑपेरा-गायिका जिसने जर्मन कलाकार दल के साथ १८०५–१८०६ के जाड़े में रूस में अपना कला-प्रदर्शन किया था। – सं०

किन्तु, जैसा कि सामान्यतः होता है, मुस्कान से वेरा की सुन्दरता चार चांद नहीं लगे। इसके विपरीत, उसका चेहरा अस्वाभाविक और इसलिये अप्रिय-सा हो गया। बड़ी बेटी, वेरा, सुन्दर थी, समझदार थी, पढ़ने में बहुत होशियार थी, आचार-व्यवहार की दृष्टि से अच्छी थी, उसकी आवाज़ मधुर थी और उसने जो कुछ कहा था, वह न्यायसंगत और सही था। फिर भी अजीब बात थी कि सभी ने, अतिथि-महिला और काउंटेस ने भी मानो इसलिये हैरान होते हुए उसकी तरफ़ देखा कि उसने ये शब्द क्यों कहे हैं और सभी को अटपटापन महसूस हुआ।

"बड़े बच्चों के मामले में हमेशा ही कुछ ज़्यादा अक़्ल से काम लिया जाता है, उन्हें अनूठे बनाने की कोशिश की जाती है," अतिथि-महिला बोली।

"अब इस बात को छिपाने में क्या तुक है, मेरी प्यारी! हमारी प्यारी काउंटेस ने वेरा के मामले में कुछ ज़्यादा ही अक़्ल से काम लिया," काउंट ने कहा। "लेकिन इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ा। वह तो बहुत अच्छी बेटी निकली है," आंख के इशारे से वेरा के प्रति अपनी अच्छी राय, अपनी पसन्दगी ज़ाहिर करते हुए उन्होंने इतना और कह दिया।

अतिथि मां-बेटी डिनर पर आने का वादा करके चली गयीं।

"यह भी कोई तरीक़ा है! जाने का ही नाम नहीं ले रही थीं!" मां-बेटी को विदा करने के बाद काउंटेस ने कहा।

१०

नताशा जब भागती हुई दीवानख़ाने से बाहर निकली तो वह केवल पुष्प-वाटिका तक ही गयी। इस कमरे में रुककर वह दीवानख़ाने में हो रही बातचीत को सुनने और बोरीस के बाहर आने का इन्तज़ार करने लगी। वह इस कारण अधीर होते और पांव पटकते हुए रोने ही वाली थी कि बोरीस उसी क्षण क्यों बाहर नहीं आया। इसी वक़्त उसे किसी नौजवान के न तो बहुत तेज़ और न बहुत धीमे, बल्कि

सामान्य चालवाले क़दमों की आवाज़ सुनायी दी। नताशा लपककर फूलों के बड़े-बड़े गमलों के बीच जा छिपी।

बोरीस कमरे के बीचोंबीच रुका, उसने इधर-उधर नज़र दौड़ाई, वर्दी की आस्तीन पर लगी ज़रा-सी मिट्टी झाड़ी और दर्पण के सामने जाकर अपने सुन्दर चेहरे को निहारा। गमलों के बीच छिपी नताशा दम साधे हुए उसे एकटक देख रही थी और यह देख पाने का इन्तज़ार कर रही थी कि वह क्या करेगा। बोरीस कुछ क्षण तक दर्पण के सामने खड़ा रहा, मुस्कराया और बाहर जाने के दरवाज़े की तरफ़ बढ़ गया। नताशा ने उसे पुकारना चाहा, मगर फिर अपना इरादा बदल लिया।

"ढूंढ़ता रहे मुझे," उसने अपने आपसे कहा। बोरीस के बाहर जाते ही दीवानख़ाने से सोन्या यहां आयी। उसका चेहरा लाल था और वह आंसू बहाते हुए गुस्से से कुछ बुदबुदा रही थी। नताशा ने तुरन्त भागकर उसके पास जाने के अपने विचार को व्यावहारिक रूप नहीं दिया और जहां की तहां छिपी रहकर (मानो उसने अदृश्य बनानेवाली टोपी पहन रखी हो) यह देखने लगी कि दुनिया में क्या हो रहा है। उसे एक विशेष और नये आनन्द की अनुभूति हो रही थी। सोन्या कुछ बुदबुदाती हुई मुड़-मुड़कर दीवानख़ाने के दरवाज़े की तरफ़ देख रही थी। निकोलाई वहां से बाहर आया।

"सोन्या! क्या हुआ है तुम्हें? भला यह भी कोई बात है?" निकोलाई ने भागते हुए उसके पास आकर कहा।

"नहीं, कोई बात नहीं, कोई बात नहीं, मुझे मेरे हाल पर छोड़ दीजिये!" सोन्या सिसकने लगी।

"लेकिन मैं जानता हूं कि क्या बात है।"

"जानते हैं तो बहुत अच्छा है, जाइये उसके पास।"

"प्यारी सो...न्या! सिर्फ़ दो शब्द सुन लो! मन से कोई बात बनाकर मुझे और अपने को यातना देने में भला क्या तुक है?" उसका हाथ अपने हाथ में लेकर निकोलाई ने कहा।

सोन्या ने अपना हाथ छुड़वाया नहीं और रोना बन्द कर दिया।

नताशा दम साधे हुए और हिले-डुले बिना चमकती आंखों से अपने छिपने की जगह से इन दोनों को देख रही थी। "अब क्या होगा?" वह सोच रही थी।

"सोन्या! मुझे तो सारी दुनिया से ही कुछ लेना-देना नहीं। मेरे

लिये तुम ही सब कुछ हो," निकोलाई कहता गया। "मैं तुम्हें यह प्रमाणित करके दिखा दूंगा।"

"जब तुम ऐसे कहते हो तो मुझे अच्छा नहीं लगता।"

"अच्छी बात है, नहीं कहूंगा। मुझे माफ़ कर दो, सोन्या!" उसने सोन्या को अपने निकट खींचकर उसका चुम्बन लिया।

"अहा, कितना मज़ा आया!" नताशा ने सोचा और सोन्या तथा निकोलाई के बाहर चले जाने पर उसने भी गमलों के पीछे से निकलकर बोरीस को अपने पास बुलाया।

"बोरीस, यहां आओ," उसने धूर्त्तता और अर्थपूर्ण ढंग से कहा। "मुझे तुमसे एक बात कहनी है। इधर आओ, इधर," ऐसा कहते हुए वह उसे बड़े गमलों के बीच वहां ले चली जहां छिपकर बैठी रही थी। बोरीस मुस्कराता हुआ उसके पीछे-पीछे चलता रहा।

"क्या **बात** कहना चाहती हो तुम मुझसे?" उसने पूछा।

वह झेंप गयी, उसने अपने इर्द-गिर्द नज़र डाली और एक पीपे पर फेंकी हुई अपनी गुड़िया को देखकर उसे हाथ में उठा लिया।

"गुड़िया को चूमो," वह बोली।

बोरीस ने उसके उत्सुक चेहरे को बहुत ध्यान और बड़ी स्नेहपूर्ण दृष्टि से देखा और कोई उत्तर नहीं दिया।

"नहीं चूमना चाहते? तो इधर आओ," नताशा ने कहा और फूलों के गमलों के बीच काफ़ी आगे जाकर गुड़िया को फेंक दिया। "निकट, और निकट आओ!" वह फुसफुसायी। उसने फ़ौजी अफ़सर बोरीस को कफ़ों से पकड़ लिया और उसके लाल हो गये चेहरे पर रहस्य और भय झलक उठा।

"तो क्या, मेरा चुम्बन लेना चाहोगे?" वह कनखियों से उसे देखती, मुस्कराती और उत्तेजना से लगभग रोती हुई ऐसे फुसफुसायी कि उसके शब्द मुश्किल से ही सुनायी दिये।

बोरीस के चेहरे पर लाली दौड़ गयी।

"तुमपर हंसी आ रही है!" उसने नताशा की ओर झुकते, पहले से भी अधिक लज्जारुण होते, किन्तु वहीं खड़े रहते हुए कहा।

नताशा अचानक एक पीपे पर चढ़कर उससे ऊंची हो गयी, उसने अपनी पतली-पतली नंगी बांहों को बोरीस के गले में डाल दिया, सिर

झटककर बालों को पीछे की ओर किया और उसके होंठों को चूम लिया।

इसके बाद वह दूसरी ओर के गमलों के बीच नीचे उतर गयी और सिर झुकाकर खड़ी हो गयी।

"नताशा," बोरीस ने कहा, "तुम जानती हो कि मैं तुम्हें प्यार करता हूं, लेकिन ..."

"तुम मुझे प्यार करते हो?" नताशा ने उसे टोका।

"हां, प्यार करता हूं, लेकिन मेरा अनुरोध है कि हम ऐसा फिर कभी न करें ... चार साल और बीतने पर ... मैं तुमसे विवाह का प्रस्ताव करूंगा।"

नताशा सोचने लगी।

"तेरह, चौदह, पन्द्रह, सोलह ..." अपनी पतली-पतली उंगलियों पर गिनते हुए उसने कहा। "अच्छी बात है! तो तय हो गया!"

और उसके उत्तेजित चेहरे पर ख़ुशी तथा राहत की मुस्कान खिल उठी।

"हां, तय हो गया!" बोरीस ने जवाब दिया।

"हमेशा के लिये?" नताशा ने पूछा। "ज़िन्दगी की आख़िरी सांस तक के लिये?"

और उसका हाथ अपने हाथ में लेकर वह खिले चेहरे के साथ उसकी बग़ल में धीरे-धीरे चलते हुए पास की बैठक में चली गयी।

११

जन्मदिन की बधाई देने के लिये आनेवालों के कारण काउंटेस इतनी अधिक थक गयी थीं कि उन्होंने आदेश दे दिया कि और किसी भी मेहमान को अब उनके पास न भेजा जाये। हां, द्वारपाल को यह हिदायत भी कर दी गयी कि अब जो लोग भी बधाई देने आयें, उन्हें अवश्य ही डिनर के लिये निमन्त्रित कर लिया जाये। काउंटेस अपनी बचपन की सहेली, प्रिंसेस आन्ना मिख़ाइलोव्ना के साथ एकान्त में बातें करना चाहती थीं, क्योंकि प्रिंसेस के पीटर्सबर्ग से लौटने के बाद

उनकी ढंग से मुलाक़ात नहीं हुई थी। अक्सर आंसू बहाने के कारण मुरझाये, किन्तु मधुर चेहरेवाली आन्ना मिख़ाइलोव्ना ने अपनी कुर्सी काउंटेस के निकट कर ली।

"तुम्हारे साथ तो मैं बिल्कुल खुलकर बात करूंगी," आन्ना मिख़ाइलोव्ना ने कहा। "बहुत कम ही रह गयी हैं हम पुरानी सहेलियां! इसीलिये मैं तुम्हारी दोस्ती को इतना महत्त्व देती हूं।"

आन्ना मिख़ाइलोव्ना ने वेरा की तरफ़ देखा और चुप हो गयी। काउंटेस ने अपनी सहेली का हाथ दबाया।

"वेरा," काउंटेस ने अपनी बड़ी बेटी को, जो स्पष्टतः उनकी लाड़ली नहीं थी, सम्बोधित किया। "तुम कोई बात समझतीं क्यों नहीं? क्या तुम यह महसूस नहीं करतीं कि तुम्हारी यहां ज़रूरत नहीं है? अपनी बहनों के पास जाओ, या..."

सुन्दर वेरा तिरस्कारपूर्वक मुस्करा दी। सम्भवतः उसने ज़रा भी अपमान महसूस नहीं किया था।

"अम्मां, अगर आपने बहुत पहले ही कह दिया होता तो मैं तभी चली गयी होती," वह इतना कहकर अपने कमरे की तरफ़ चल दी। किन्तु बैठक के पास से गुज़रते हुए उसने देखा कि उसकी दोनों खिड़कियों के पास दो जोड़े बैठे हैं। वेरा रुकी और भर्त्सनापूर्वक मुस्करायी। सोन्या निकोलाई की बग़ल में बैठी थी जो जीवन में पहली बार रची गयी अपनी कविता की सोन्या के लिये नक़ल तैयार कर रहा था। बोरीस और नताशा दूसरी खिड़की के पास बैठे थे तथा वेरा के आने पर चुप हो गये थे। सोन्या और नताशा ने अपराधी और उल्लासपूर्ण चेहरों से वेरा की ओर देखा।

प्यार के रंग में रंगी हुई इन लड़कियों को देखना सुखद और मर्मस्पर्शी था, किन्तु इन्हें देखकर वेरा के मन में स्पष्टतः ख़ुशी की कोई भावना नहीं पैदा हुई।

"कितनी बार मैं तुम सब से कह चुकी हूं कि मेरी किसी चीज को हाथ नहीं लगाया करो," वह बोली। "तुम लोगों का अपना कमरा है।" और उसने निकोलाई के हाथ से दवात ले ली।

"ज़रा ठहरो, ज़रा ठहरो," निकोलाई ने स्याही में पेन डुबोते हुए कहा।

"तुम लोग ग़लत वक़्त पर सभी काम करना ख़ूब जानते हो,"

वेरा ने डांट पिलायी। "दीवानख़ाने में ऐसे भागते चले आये कि सभी को तुम्हारे कारण शर्म महसूस हुई।"

इसके बावजूद या इसलिये कि वेरा ने जो कहा था, वह बिल्कुल सही था, किसी ने कोई जवाब नहीं दिया और चारों ने एक-दूसरे की तरफ़ देखा। वेरा दवात हाथ में लिये हुए यहीं खड़ी रही।

"तुम लोगों की उम्र में नताशा और बोरीस तथा तुम दोनों के बीच भला किसी तरह के राज़ ही कहां हो सकते हैं – यह सब बकवास है!"

"तुम्हें इससे क्या मतलब है, वेरा?" नताशा ने धीमी आवाज़ में प्रतिवाद किया।

स्पष्टतः आज वह सदा की तुलना में सभी के प्रति कहीं अधिक दयालु और स्नेहमयी थी।

"यह निरी बेवक़ूफ़ी है," वेरा ने जवाब दिया। "तुम लोगों की वजह से मुझे शर्म आती है। बड़े आये हैं राज़ोंवाले!.."

"हर किसी के अपने राज़ हैं। हम लोग तुम्हारे और बेर्ग के मामले में टांग नहीं अड़ाते हैं," नताशा ने ज़रा पुनकते हुए कहा।

"मैं समझती हूं कि तुम लोग इसलिये टांग नहीं अड़ाते हो," वेरा ने जवाब दिया, "कि मेरी किसी भी हरकत में कभी कोई बेहूदगी नहीं होती। मैं अम्मां को बतलाऊंगी कि तुम बोरीस के साथ कैसा सलूक करती हो।"

"नताल्या इल्यीनिश्ना (नताशा) मेरे साथ बहुत ही अच्छा सलूक करती हैं। मुझे कोई भी शिकायत नहीं," बोरीस ने उत्तर दिया।

"रहने दीजिये बोरीस, आप ऐसे डिप्लोमैट हैं (उन दिनों बच्चों में **डिप्लोमैट** शब्द का एक विशेष अर्थ में प्रयोग का बहुत प्रचलन था) कि ऊब महसूस होने लगती है," नताशा ने बुरा मानते हुए कांपती आवाज़ में कहा। "किसलिये यह मेरे पीछे पड़ी रहती है?"

"तुम कभी भी यह नहीं समझ पाओगी," वह वेरा को सम्बोधित करते हुए बोली, "क्योंकि तुमने कभी किसी को प्यार नहीं किया, तुम्हारे पास दिल नहीं है, तुम तो सिर्फ़ मदाम दे जानलीस हो (यह बहुत ही अपमानजनक माना जानेवाला उपनाम निकोलाई ने वेरा को दिया था), और तुम्हारी सबसे बड़ी ख़ुशी तो दूसरों का दिल

दुखाना है। तुम बेर्ग के साथ जितनी भी चाहो चोचलेबाज़ी कर सकती हो," उसने जल्दी-जल्दी कह दिया।

"हां, यह पक्की बात है कि मैं मेहमानों के सामने किसी नौजवान के पीछे नहीं भागूंगी..."

"तो तुमने कर ली अपने मन की," निकोलाई ने बातचीत में दख़ल देते हुए कहा, "सबको जली-कटी सुना दी, सबके मूड ख़राब कर दिये। आओ, हम लोग अपने कमरे में चलें।"

ये चारों डरे हुए पक्षियों के झुण्ड की तरह उठे और कमरे से बाहर चल दिये।

"तुम लोगों ने ही मुझे जली-कटी बातें कही हैं, मैंने किसी को कुछ नहीं कहा," वेरा ने जवाब दिया।

"मदाम दे जानलीस! मदाम दे जानलीस!" दरवाज़े के पास से हंसती हुई आवाज़ें सुनायी दीं।

सभी के दिलों में झुंझलाहट पैदा करने और उनपर बुरा प्रभाव डालनेवाली सुन्दर वेरा मुस्करायी। उसपर जो कटाक्ष किये गये थे, उनसे सम्भवतः क्षुब्ध हुए बिना वह आईने के पास गयी और उसने अपने दुपट्टे तथा बालों को ठीक-ठाक किया। दर्पण में अपने सुन्दर मुख को देखते हुए वह और भी अधिक भावशून्य और शान्त प्रतीत हुई।

दीवानख़ाने में बातचीत जारी थी।

"ओह, मेरी प्यारी," काउंटेस कह रही थीं, "मेरी ज़िन्दगी भी फूलों की सेज नहीं है। क्या मैं यह नहीं समझती हूं कि जिस ढंग की ज़िन्दगी हम बिताते हैं, उसे इसी तरह बनाये रखने पर हमारी दौलत बहुत दिनों तक हमारा साथ नहीं दे सकेगी! ये क्लब-महफ़िलें और मेरे पति की दरियादिली। हम जब गांव में रहते हैं, तब भी क्या आराम करते हैं? वहां भी थियेटर, शिकार और भगवान जानें क्या-क्या अन्य चीज़ें हमें चैन नहीं लेने देतीं। पर ख़ैर, हटाओ मेरी चर्चा! यह बताओ कि तुमने यह मामला कैसे सिरे चढ़ा लिया? अन्नेत, मैं अक्सर तुम्हारे बारे में यह सोचकर हैरान होती रहती हूं कि कैसे तुम इस उम्र में अकेली ही किराये की बग्घियों में सफ़र करते हुए कभी मास्को तो कभी पीटर्सबर्ग में सभी मन्त्रियों और जाने-माने लोगों के पास पहुंच जाती हो, सभी से मिल-जुल लेती हो! सच, आश्चर्य

होता है मुझे! तो कैसे तुमने यह मामला सिरे चढ़ा लिया? मुझे तो ऐसा कुछ भी करना-कराना नहीं आता।"

"अरी, मेरी प्यारी!" प्रिंसेस आन्ना मिख़ाइलोव्ना ने जवाब दिया। "भगवान न करें कि तुम्हें कभी ऐसा दिन देखना पड़े, जब बेटे के साथ जिसे तुम पागलपन की हद तक प्यार करती हो, तुम मेरी तरह बेसहारा विधवा रह जाओ। ऐसी हालत में आदमी सभी कुछ करना सीख जाता है," वह कुछ गर्व से कहती गयी। "मेरे मुक़दमे ने भी मुझे बहुत कुछ सिखाया है। जब मुझे किसी बड़े आदमी से मिलना होता है तो मैं उसे एक रुक़्क़ा लिख भेजती हूं – फलां-फलां प्रिंसेस आपसे मिलना चाहती है – और उसके पास पहुंच जाती हूं। ज़रूरत होने पर किराये की बग्घी में दो, तीन, चार बार तक – तब तक वहां चक्कर लगाती रहती हूं, जब तक मेरा काम पूरा नहीं हो जाता। मेरे बारे में वे लोग क्या सोचते हैं, मैं इसकी जरा भी परवाह नहीं करती।"

"तो बोरीस के लिये तुमने किससे अनुरोध किया?" काउंटेस ने पूछा। "देखो न, तुम्हारा बेटा तो गार्ड-रेजिमेंट में अफ़सर बनकर जा रहा है, जबकि मेरा निकोलाई केडेट* के तौर पर, क्योंकि उसके लिये कोई दौड़-धूप करनेवाला नहीं है। तुमने किससे मदद ली?"

"प्रिंस वसीली से। वह मेरे साथ बहुत ही अच्छे ढंग से पेश आया। फ़ौरन सब कुछ करने को राज़ी हो गया, इसके लिये उसने सम्राट से प्रार्थना की," आन्ना मिख़ाइलोव्ना ने उस सारे अपमान को बिल्कुल भूलकर, जो उसे अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिये सहन करना पड़ा था, बड़े उत्साह से कहा।

"बहुत बुढ़ा गया है क्या प्रिंस वसीली?" काउंटेस ने जानना चाहा। "रुम्यान्त्सेव परिवारवालों के यहां थियेटर में एकसाथ हिस्सा लेने के बाद से मैंने उसे कभी नहीं देखा। सोचती हूं कि वह भी मुझे भूल गया होगा। तब तो वह मेरे पीछे-पीछे चक्कर काटा करता था," काउंटेस ने मुस्कराते हुए उन दिनों को याद किया।

"पहले जैसा ही है," आन्ना मिख़ाइलोव्ना ने जवाब दिया, "स्नेहशील, मीठी-मीठी बातें करनेवाला। ऊंचे पद ने उसका दिमाग़

---

* केडेट – सैनिक शिक्षार्थी। – अनु०

ख़राब नहीं किया। 'मुझे बड़ा अफ़सोस है कि मैं आपकी बहुत कम ही मदद कर सकता हूं, प्रिंसेस,' उसने मुझसे कहा, 'क्या हुक्म है आपका?' नहीं, वह बहुत भला आदमी और बड़ा अच्छा रिश्तेदार है। नताल्या, तुम तो जानती ही हो कि अपने बेटे को मैं कितना अधिक चाहती हूं। उसकी ख़ुशी के लिये मैं कुछ भी कर सकती हूं। लेकिन मेरी हालत इतनी ख़स्ता है," वह उदास होकर और अपनी आवाज़ धीमी करके कहती गयी, "इतनी ख़स्ता हालत है मेरी कि कुछ न पूछो। कमबख़्त मुक़दमा मेरा सब कुछ हड़पता जा रहा है और जहां का तहां अटका हुआ है। तुम कल्पना कर सकती हो कि मेरे पास शब्दशः कुछ भी नहीं है और मैं नहीं जानती कि बोरीस की वर्दी सिलवाने का कैसे प्रबन्ध करूं," उसने रूमाल निकाला और रोने लगी। "मुझे पांच सौ रूबलों की ज़रूरत है और मेरे पास सिर्फ़ पच्चीस रूबल का नोट है। ऐसी तंगी की हालत है मेरी... मैं तो अब सिर्फ़ काउंट बेज़ूख़ोव पर उम्मीद लगाये बैठी हूं। अगर वह अपने धर्म-पुत्र की सहायता नहीं करेगा – वह तो बोरीस का धर्म-पिता है – और उसके गुज़ारे के लिये कुछ नहीं देगा तो मेरी सारी कोशिशों पर पानी फिर जायेगा। मैं उसके लिये वर्दी का इन्तज़ाम नहीं कर पाऊंगी।"

काउंटेस की आंखें गीली हो गयीं और वह मन ही मन कुछ सोचने लगीं।

"मैं अक्सर ऐसा सोचती हूं... शायद ऐसा सोचना पाप हो," प्रिंसेस ने कहा, "काउंट बेज़ूख़ोव अकेला रहता है... बेशुमार दौलत है उसके पास... और किसलिये जी रहा है वह? उसकी ज़िन्दगी उसके लिये बोझ है, जबकि बोरीस अपनी ज़िन्दगी शुरू ही कर रहा है।"

"वह ज़रूर बोरीस के नाम कुछ न कुछ छोड़ देगा," काउंटेस ने कहा।

"भगवान ही जानता है, मेरी प्यारी! ये अमीर और कुलीन लोग बड़े ही स्वार्थी होते हैं। फिर भी मैं बोरीस को अपने साथ लेकर अभी उसके पास जाऊंगी और उससे साफ़-साफ़ ही सारी बात कह दूंगी। जब मेरे बेटे का भाग्य ही इसपर निर्भर करता है तो लोग मेरे बारे में कुछ भी सोचते रहें, मुझे इसकी ज़रा भी परवाह नहीं। इस वक़्त दिन के दो बजे हैं और आपके यहां चार बजे भोजन शुरू होगा।

तब तक मैं वहां से लौट आऊंगी।"

और पीटर्सबर्ग की कामकाजी महिला की तरह, जो अपने समय का ढंग से उपयोग करना जानती है, आन्ना मिख़ाइलोव्ना ने बेटे को बुलवा भेजा और उसे साथ लिये हुए प्रवेश-कक्ष में आयी।

"तो अभी थोड़ी देर बाद फिर मिलेंगी," उसने काउंटेस से कहा जो उसे दरवाज़े तक पहुंचाने आयी थीं, "मेरी सफलता की कामना करो," उसने फुसफुसाकर कहा ताकि बेटे को सुनायी न दे।

"आप काउंट किरील्ल व्लादीमिरोविच बेज़ूख़ोव के यहां जा रही हैं, मेरी प्यारी?" काउंट ने प्रवेश-कक्ष में आते हुए भोजन-कक्ष से पुकारकर पूछा। "अगर काउंट की तबीयत कुछ अच्छी हो तो प्येर को हमारे यहां खाने के लिये आमन्त्रित कर लीजिये। वह तो कभी मेरे यहां आया करता था, बच्चों के साथ नाचा करता था। अवश्य ही आमन्त्रित कर आइये, मेरी प्यारी। देखेंगे कि तारास आज क्या कमाल दिखाता है। उसका कहना है कि काउंट ओर्लोव के यहां कभी ऐसी दावत नहीं हुई जैसी आज हमारे यहां होगी।"

१२

"मेरे प्यारे बोरीस," प्रिंसेस आन्ना मिख़ाइलोव्ना ने उस समय कहा, जब काउंटेस रोस्तोवा की बग्घी, जिसमें वे दोनों जा रहे थे, भूसे से ढकी सड़क* लांघकर काउंट किरील्ल व्लादीमिरोविच बेज़ूख़ोव के बड़े आंगन में दाख़िल हुई। "मेरे बेटे बोरीस," मां ने पुराने लबादे के नीचे से हाथ निकालकर भीरुता और प्यार से बेटे के हाथ पर रखते हुए कहा, "बहुत स्नेह और शिष्टता का परिचय देना। काउंट किरील्ल व्लादीमिरोविच आख़िर तो तुम्हारा धर्म-पिता है और तुम्हारा भविष्य उसपर निर्भर करता है। यह नहीं भूलना, मेरे बेटे, वैसे ही प्यार से

---

* पुराने वक़्तों में रूस में ऐसी प्रथा थी कि जिस घर में कोई सख़्त बीमार आदमी हो, उसके सामनेवाली सड़क को भूसे से ढक दिया जाता था ताकि बग्घियों की आवाज़ रोगी को परेशान न करे। – सं०

पेश आना, जैसे तुम पेश आ सकते हो..."

"अगर मुझे यह मालूम होता कि अपमान के सिवा इससे कुछ और भी हासिल हो सकेगा," बेटे ने रुखाई से जवाब दिया। "लेकिन मैंने आपसे वादा किया है और आपकी ही ख़ातिर मैं ऐसा करूंगा।"

इस चीज़ के बावजूद कि उनकी बग्घी दरवाज़े पर खड़ी थी, द्वारपाल ने मां-बेटे को ग़ौर से देखा (जो अपने आने की घोषणा करवाये बिना आलों में रखी हुई मूर्त्तियों की दो क़तारों के बीच से गुज़रते हुए सीधे शीशोंवाली ड्योढ़ी में चले गये थे), अर्थपूर्ण दृष्टि से पुराने लबादे पर नज़र डाली और पूछा कि वे किससे, प्रिंसेसों या काउंट से मिलना चाहते हैं। यह मालूम होने पर कि वे काउंट से मिलना चाहते हैं, उसने कहा कि काउंट साहब की तबीयत आज ज़्यादा ख़राब है और वह किसी से भी नहीं मिलेंगे।

"हम वापस जा सकते हैं," बेटे ने फ़्रांसीसी में कहा।

"मेरे बेटे!" प्रिंसेस ने अनुरोधपूर्ण आवाज़ में कहा और फिर से बेटे का हाथ छुआ मानो यह स्पर्श उसे शान्त कर सकता था या उसकी हिम्मत बढ़ा सकता था।

बोरीस चुप हो गया और ओवरकोट उतारे बिना ही उसने प्रश्न-सूचक दृष्टि से मां की ओर देखा।

"सुनो, भैया," आन्ना मिख़ाइलोव्ना ने द्वारपाल को मधुरता से सम्बोधित करते हुए कहा, "मुझे मालूम है कि काउंट किरील्ल व्लादीमिरोविच बहुत बीमार हैं... मैं इसी कारण तो यहां आयी हूं... उनकी रिश्तेदार हूं... मैं उन्हें परेशान नहीं करूंगी, भैया... मुझे तो सिर्फ़ प्रिंस वसीली सेर्गेयेविच से मिलना है–वह तो यहीं ठहरे हुए हैं न। कृपया, उन्हें सूचना भिजवा दो।"

द्वारपाल ने उदासीनता से ऊपर बजनेवाली घण्टी की रस्सी खींच दी और मुंह फेर लिया।

"प्रिंसेस द्रुबेत्स्काया प्रिंस वसीली सेर्गेयेविच से मिलने आयी हैं," द्वारपाल ने घुटन्ना, जूते और फ़्रॉक-कोट पहने नौकर से कहा जो भागकर ज़ीने के पास आया था और वहां से नीचे झांक रहा था।

मां ने अपने फिर से रंगे गये रेशमी फ़्रॉक की तहें ठीक कीं, दीवार में लगे हुए वेनिस के आदम क़द आईने में अपने को निहारा और घिसी-घिसायी एड़ियोंवाले जूतों को ज़ीने के क़ालीन पर बढ़ाती हुई ऊपर चढ़ चली।

"मेरे बेटे, तुमने मुझसे वादा किया था," अपने हाथ के स्पर्श से उसकी हिम्मत बढ़ाते हुए उसने बेटे को फिर से सम्बोधित किया।

बेटा नज़रें झुकाये हुए चुपचाप उसके पीछे-पीछे ज़ीना चढ़ता रहा।

वे एक हॉल में दाख़िल हुए जिसका एक दरवाज़ा उन कमरों की तरफ़ जाता था जहां प्रिंस वसीली ठहरा हुआ था।

मां-बेटे ने जिस समय हॉल के मध्य में पहुंचकर बूढ़े नौकर से, जो उनके आने पर खड़ा हो गया था, रास्ता पूछना चाहा, तो उसी वक़्त एक कमरे का कांसे का हत्था घूमा और प्रिंस वसीली घरेलू ढंग से मख़मली कोट पहने और उसपर एक सितारा लगाये हुए काले बालोंवाले एक सुन्दर पुरुष के साथ बाहर आया। यह पुरुष पीटर्सबर्ग का प्रसिद्ध डाक्टर लोरान था।

"तो यह पक्की बात है?" प्रिंस ने पूछा।

"प्रिंस, इन्सान से ग़लती तो हो ही सकती है..." डाक्टर ने लातीनी में, मगर शब्दों का फ़्रांसीसी ढंग से उच्चारण करते हुए जवाब दिया।

"हां, यह तो ठीक है, ठीक है..." प्रिंस ने कहा।

आन्ना मिख़ाइलोव्ना और उसके बेटे को देखकर प्रिंस वसीली ने सिर झुकाकर डाक्टर से विदा ली और चुपचाप, किन्तु मानो यह पूछते हुए कि क्या बात है, इनके पास आया। बेटे ने देखा कि उसकी मां की आंखों में कैसे एकाएक गहरे दुख का भाव झलक उठा। बेटा ज़रा मुस्कराया।

"ओह, कैसी दुःखद परिस्थितियों में हम यहां मिल रहे हैं, प्रिंस... हमारे प्यारे रोगी का क्या हाल है?" उसने मानो प्रिंस वसीली की अपने चेहरे पर जमी हुई भावहीन, तिरस्कारपूर्ण दृष्टि की अवहेलना करते हुए पूछा।

प्रिंस वसीली ने प्रश्नसूचक, यहां तक कि असमंजस की दृष्टि से प्रिंसेस और फिर बोरीस की ओर देखा। बोरीस ने शिष्टता से सिर झुकाया। प्रिंस वसीली ने बोरीस के अभिवादन का कोई जवाब न देकर आन्ना मिख़ाइलोव्ना की ओर मुंह कर लिया और सिर तथा ज़रा होंठ हिलाकर उसके सवाल का उत्तर दिया जिसका मतलब था कि रोगी के बचने की बहुत ही कम उम्मीद है।

"सच?" आन्ना मिख़ाइलोव्ना ऊंची आवाज़ में कह उठी। "ओह,

बड़ी भयानक बात है यह! इस ख़्याल से ही दिल को दहशत होने लगती है... यह मेरा बेटा है," उसने बोरीस की ओर संकेत करते हुए इतना और कह दिया। "यह व्यक्तिगत रूप से आपको धन्यवाद देना चाहता था।"

बोरीस ने फिर एक बार शिष्टता से सिर झुकाया।

"प्रिंस, विश्वास कीजिये कि मां का दिल उसे कभी नहीं भूल सकेगा जो आपने हमारे लिये किया है।"

"मुझे ख़ुशी है कि मैं आपके लिये कुछ कर पाया, प्यारी आन्ना मिख़ाइलोव्ना," प्रिंस वसीली ने अपने गाउन की झालर ठीक करते हुए जवाब दिया और यहां मास्को में, अपने अन्दाज़ तथा आवाज़ द्वारा अपनी कृतज्ञ आन्ना मिख़ाइलोव्ना के सामने पीटर्सबर्ग में आन्ना शेरेर की पार्टी की तुलना में कहीं अधिक शान दिखायी।

"सेना में बहुत अच्छी तरह से अपना कर्त्तव्य निभाने तथा अपने को उसके योग्य प्रमाणित करने का प्रयास कीजिये," प्रिंस वसीली ने बोरीस को सम्बोधित करते हुए कड़ाई से कहा। "मुझे ख़ुशी है... आप यहां छुट्टी पर आये हैं?" उसने अपने भावनाहीन लहजे में पूछा।

"हुज़ूर, मैं अपनी नयी ड्यूटी पर जाने के आर्डर का इन्तज़ार कर रहा हूं," बोरीस ने प्रिंस के रूखे अन्दाज़ से न तो खीझते और न ही बातचीत करने की विशेष इच्छा प्रकट करते हुए ऐसे शान्त और शिष्ट ढंग से उत्तर दिया कि प्रिंस उसे एकटक देखता रह गया।

"आप अपनी मां के साथ रह रहे हैं?"

"मैं काउंटेस रोस्तोवा के यहां रह रहा हूं," बोरीस ने उत्तर दिया और फिर से "हुज़ूर" सम्बोधन को दोहरा दिया।

"उस इल्या रोस्तोव के यहां जिसने नताल्या शिनशिना से शादी की थी," आन्ना मिख़ाइलोव्ना ने स्पष्ट किया।

"मुझे मालूम है, मालूम है," प्रिंस वसीली ने अपनी भावशून्य आवाज़ में जवाब दिया। "आज तक मेरी समझ में नहीं आया कि नताल्या ने उस भद्दे भालू से क्यों शादी की। वह एकदम बुद्धू और हास्यास्पद है। इसके अलावा यह भी सुनने में आया है कि जुआरी है।"

"लेकिन वह बड़ा दयालु आदमी है, प्रिंस," आन्ना मिख़ाइलोव्ना ने ऐसी मर्मस्पर्शी मुस्कान के साथ टिप्पणी की मानो वह भी यह जानती

हो कि काउंट के बारे में ऐसा मत ठीक है, फिर भी वह बेचारे बूढ़े पर तरस खाने का अनुरोध करती है।

"डाक्टरों की क्या राय है?" थोड़ी देर तक चुप रहने और अश्रु-पीड़ित चेहरे पर गहरे दुख का भाव लाते हुए प्रिंसेस ने पूछा।

"बचने की बहुत कम आशा है," प्रिंस ने जवाब दिया।

"मैं एक और बार **मामा जी को** उन सभी मेहरबानियों के लिये धन्यवाद देना चाहती थी जो उन्होंने मुझपर और बोरीस पर की हैं। वह बोरीस के धर्म-पिता हैं," उसने ऐसे अन्दाज़ में कहा मानो इस ख़बर से प्रिंस वसीली को बहुत खुशी होनी चाहिये।

प्रिंस वसीली सोच में डूब गया और उसके माथे पर बल पड़ गये। आन्ना मिख़ाइलोव्ना समझ गयी कि प्रिंस को इस बात की घबराहट हो रही है कि कहीं वह काउंट बेज़ूख़ोव की वसीयत में हिस्सा बंटाने-वाली तो नहीं बन जायेगी। उसने उसे जल्दी से शान्त कर दिया।

"काश, मेरे दिल में **मामा जी** के लिये सच्चा प्यार और श्रद्धा न होती," उसने विशेष विश्वास और लापरवाही से यह कहा, "मैं उनके स्वभाव को जानती हूं – बहुत ही नेक और निष्कपट व्यक्ति हैं। किन्तु उनके पास तो केवल प्रिंसेसें ही हैं... और वे अभी युवतियां हैं।" उसने प्रिंस की ओर सिर झुकाया और फुसफुसाकर पूछा: "काउंट ने अपना अन्तिम कर्त्तव्य तो पूरा कर लिया या नहीं, प्रिंस? ये अन्तिम क्षण कितने मूल्यवान होते हैं! इससे ज़्यादा ख़राब उनकी हालत तो नहीं हो सकती। जब इतनी ही ज़्यादा तबीयत ख़राब है तो उन्हें तैयार करना चाहिये। प्रिंस, हम औरतें हमेशा यह जानती हैं," वह मधुर ढंग से मुस्करायी, "कि ऐसी बातें किस तरह से कही जायें। मुझे उनसे मिलना ही चाहिये। मेरे लिये यह चाहे कितना ही व्यथापूर्ण क्यों न हो, मगर मैं तो दुख-दर्दों की आदी हो चुकी हूं।"

प्रिंस वसीली सम्भवतः समझ गया और उसने यह महसूस भी कर लिया कि पीटर्सबर्ग में आन्ना शेरेर की पार्टी की भांति यहां भी आन्ना मिख़ाइलोव्ना से पिंड छुड़ाना मुमकिन नहीं होगा।

"काउंट के लिये ऐसी भेंट क्या बहुत कष्टप्रद नहीं होगी?" प्रिंस ने पूछा। "हमें शाम तक इन्तज़ार करना चाहिये। डाक्टरों का कहना है कि आकस्मिक परिवर्तन होने की सम्भावना है।"

"नहीं प्रिंस, ऐसे क्षणों में इन्तज़ार नहीं करना चाहिये। ध्यान

में रखिये कि उनकी आत्मा को बचाने का प्रश्न है ... ओह, यह भयानक बात है, ईसाई का कर्त्तव्य ..."

भीतर के कमरों में से एक का दरवाज़ा खुला और काउंट की एक उदास और कठोर चेहरेवाली भतीजी, एक प्रिंसेस बाहर आयी। उसके लम्बे शरीर की तुलना में उसकी टांगें बहुत छोटी थीं।

प्रिंस वसीली ने उससे पूछा :

"क्यों, कैसी तबीयत है काउंट की?"

"वैसी ही है। इतने शोर-शराबे में आप और उम्मीद ही क्या कर सकते हैं ..." प्रिंसेस ने एक अपरिचित की भांति आन्ना मिख़ाइलोव्ना की ओर देखते हुए कहा।

"अरी मेरी प्यारी, मैं तो आपको पहचान ही नहीं पायी," मन्थर गति से काउंट की भतीजी के पास जाकर आन्ना मिख़ाइलोव्ना ने सुखद मुस्कान के साथ कहा। "मैं **मामा जी** की टहल-सेवा में आप लोगों की मदद करने आयी हूं। मैं कल्पना कर सकती हूं कि आप सबको कितनी तकलीफ़ उठानी पड़ रही होगी," उसने सहानुभूति से आंखें ऊपर को करते हुए इतना और कह दिया।

प्रिंसेस ने कोई जवाब नहीं दिया, मुस्करायी तक भी नहीं और उसी क्षण कमरे से बाहर चली गयी। आन्ना मिख़ाइलोव्ना ने अपने दस्ताने उतार लिये, विजेत्री की भांति आरामकुर्सी पर बैठ गयी और उसने प्रिंस वसीली को भी अपने पास आकर बैठने के लिये कहा।

"बोरीस," उसने बेटे को सम्बोधित किया और मुस्करा दी। "मैं काउंट के पास, **मामा जी** के पास जाऊंगी और इसी बीच तुम, मेरे प्यारे, प्येर से मिल आओ और उसे रोस्तोव परिवार का निमन्त्रण देना भी नहीं भूलना। उन लोगों ने उसे डिनर पर बुलाया है। मेरे ख़्याल में तो वह नहीं जायेगा?" उसने प्रिंस से पूछा।

"इसके विपरीत," प्रिंस ने जवाब दिया जिसका स्पष्टतः मूड ख़राब हो गया था। "अगर आप इस नौजवान से मेरा पिंड छुड़ा देंगी तो मुझे बड़ी ख़ुशी होगी ... वह हर वक़्त यहां बैठा रहता है। काउंट ने तो एक बार भी उसके बारे में नहीं पूछा।"

उसने कंधे झटके। नौकर बोरीस को नीचे और फिर दूसरे ज़ीने से प्योत्र किरील्लोविच (प्येर) के कमरे में ले गया।

१३

तो प्येर पीटर्सबर्ग में अपने लिये कोई कैरियर नहीं चुन सका और वास्तव में ही बेहूदा शरारत करने के लिये उसे मास्को भेज दिया गया था। काउंट रोस्तोव के यहां सुनायी जानेवाली घटना बिल्कुल सही थी। प्येर ने पुलिस-अफ़सर को भालू के साथ बांधने की शरारत में हिस्सा लिया था। वह कुछ दिन पहले मास्को लौटा था और सदा की भांति अपने पिता के घर पर ठहरा था। बेशक वह यह अनुमान लगा सकता था कि पीटर्सबर्गवाली घटना मास्को में सभी को मालूम हो चुकी है और उसके पिता की देखभाल करने तथा उसके प्रति हमेशा शत्रुभाव रखनेवाली महिलाओं ने काउंट को उसके ख़िलाफ़ भड़काने के लिये इसका उपयोग किया होगा। फिर भी वह मास्को पहुंचते ही पिता से मिलने गया। दीवानख़ाने में जाकर, जहां प्रिंसेसें आम तौर पर बैठी रहती थीं, उसने उनका अभिवादन किया। प्रिंसेसें तीन बहनें थीं। उनमें से दो कढ़ाई के फ़्रेम पर काम कर रही थीं और एक उन्हें ऊंचे-ऊंचे किताब पढ़कर सुना रही थी। यही सबसे बड़ी, बेहद साफ़-सुथरी, लम्बी कमरवाली वह कठोर प्रिंसेस थी जो आन्ना मिख़ाइलोव्ना के सामने कमरे से बाहर आयी थी। लाल-लाल गालोंवाली दोनों छोटी सुन्दर बहनों में अगर कोई अन्तर था तो यही कि उनमें से एक के होंठ पर तिल था जो उसे विशेष सुन्दरता प्रदान करता था। ये दोनों कढ़ाई कर रही थीं। प्येर का ऐसा स्वागत हुआ मानो वह क़ब्र से निकल आया कोई मुर्दा या प्लेग का रोगी हो। सबसे बड़ी प्रिंसेस ने किताब पढ़ना बन्द कर दिया और डरी-डरी आंखों से उसे चुपचाप ताकने लगी। उससे छोटी प्रिंसेस ने भी, जिसके होंठ पर तिल नहीं था, ऐसी ही मुद्रा बना ली। सबसे छोटी, तिलवाली प्रिंसेस, जो हंसमुख और ख़ुशमिज़ाज थी, अपनी मुस्कान छिपाने के लिये फ़्रेम पर झुक गयी। वह सम्भवतः उस दृश्य की कल्पना करके मुस्करा रही थी जो कुछ देर बाद सामने आनेवाला था और जिसके दिलचस्प होने का पूर्वानुमान लगा रही थी। उसने कढ़ाई के ऊन को नीचे खींच लिया और बड़ी मुश्किल से अपनी हंसी पर क़ाबू पाते हुए ऐसे झुक गयी मानो बहुत ग़ौर से डिज़ाइनों को देख रही हो।

"नमस्ते, चचेरी बहन। आप क्या मुझे नहीं पहचानतीं?" प्येर ने पूछा।

"मैं बहुत अच्छी तरह, बहुत ही अच्छी तरह से आपको पहचानती हूं।"

"काउंट की तबीयत कैसी है? मैं उनसे मिल सकता हूं?" प्येर ने सदा की भांति अटपटे ढंग से, किन्तु झेंपे बिना पूछा।

"काउंट शारीरिक और मानसिक यातना सह रहे हैं और लगता है कि आपने उन्हें और अधिक मानसिक यातना देने की पूरी कोशिश की है।"

"मैं काउंट से मिल सकता हूं?" प्येर ने अपना प्रश्न दोहराया।

"हुम!.. अगर आप उनकी जान लेना चाहते हैं, पूरी तरह से जान ले लेना चाहते हैं तो मिल सकते हैं। ओल्गा, जाकर देखो कि चाचा जी के लिये अख़नी तैयार हो गयी या नहीं? जल्द ही उन्हें अख़नी देने का वक़्त होनेवाला है," उसने इतना और कह दिया और इस तरह प्येर को यह जता दिया कि वे व्यस्त हैं और सो भी उसके पिता के मन को चैन देने के काम में, जबकि वह स्पष्टतः काउंट को परेशान करने में ही व्यस्त है।

ओल्गा दीवानख़ाने से बाहर चली गयी। प्येर कुछ देर खड़ा रहा, उसने बहनों की ओर देखा और सिर झुकाकर कहा:

"तो मैं अपने कमरे में जाता हूं। जब मिलना सम्भव होगा, तब आप मुझे सूचित कर दीजिये।"

वह बाहर आ गया और उसे अपने पीछे सबसे छोटी, तिलवाली बहन की धीमी, किन्तु खनखनाती हुई हंसी सुनायी दी।

अगले दिन प्रिंस वसीली मास्को आकर काउंट के यहां ठहर गया। उसने प्येर को अपने पास बुलवाकर कहा:

"मेरे प्यारे, अगर तुम यहां भी पीटर्सबर्ग जैसी हरकतें करोगे तो तुम्हारा बुरा अंजाम होगा। यह पक्की बात है। काउंट बहुत, बहुत सख़्त बीमार हैं। तुम्हें उनसे बिल्कुल नहीं मिलना चाहिये।"

इसके बाद प्येर को उसके हाल पर छोड़ दिया गया और अब वह ऊपर, अपने कमरे में ही सारा दिन बिताता था।

बोरीस जिस वक़्त उसके कमरे में दाख़िल हुआ तो प्येर अपने कमरे में इधर-उधर चक्कर लगा रहा था और कभी-कभी किसी कोने में रुककर दीवार की ओर ऐसे भयानक संकेत करता था मानो किसी अदृश्य शत्रु के बदन में तलवार भोंक रहा हो। इसके बाद चश्मे के

शीशों के ऊपर कठोरता से देखता, कुछ अस्पष्ट शब्द बुदबुदाता, कंधों को झटकता और बांहों को झुलाता हुआ फिर से कमरे में इधर-उधर आने-जाने लगता।

"इंगलैंड का खेल ख़त्म हो गया," उसने त्योरी चढ़ाते और उंगली से किसी की तरफ़ इशारा करते हुए कहा। "देशद्रोही और जनता के अधिकार के प्रति विश्वासघाती के रूप में पिट* को यह दण्ड दिया गया..." वह इस क्षण नेपोलियन के रूप में अपनी कल्पना करते और यह मानते हुए कि अपने नायक के साथ वह ब्रिटिश चेनल को पार करके लन्दन पर क़ब्ज़ा कर चुका है, पिट को दिये जानेवाले दण्ड की भी घोषणा नहीं कर पाया था कि उसने एक जवान, सुघड़-सुडौल और सुन्दर फ़ौजी अफ़सर को अपने कमरे में दाख़िल होते देखा। वह रुक गया। बोरीस चौदह साल का था जब प्येर ने उसे आख़िरी बार देखा था और उसे उसकी ज़रा भी याद नहीं थी। किन्तु इसके बावजूद अपने आवेग और उल्लासपूर्ण अन्दाज़ के अनुरूप उसने झटपट बोरीस का हाथ अपने हाथ में ले लिया और सहृदयता से मुस्कराया।

"आपको मेरी याद है?" बोरीस ने शान्त और मधुर ढंग से मुस्कराते हुए पूछा। "मैं और मेरी मां काउंट से मिलने आये थे, लेकिन पता चला कि उनकी तबीयत अच्छी नहीं।"

"हां, ऐसा ही लगता है कि उनकी तबीयत अच्छी नहीं। उन्हें लगातार परेशान किया जाता रहता है," प्येर ने यह याद करते हुए कि यह नौजवान कौन है, जवाब दिया।

बोरीस ने अनुभव किया कि प्येर उसे पहचान नहीं पा रहा है, किन्तु उसने अपना परिचय देने की आवश्यकता नहीं समझी और किसी भी तरह की झेंप अनुभव किये बिना उससे नज़रें मिलाते हुए उसे देखता रहा।

"काउंट रोस्तोव ने अनुरोध किया है कि आप आज डिनर के लिये उनके यहां आने की कृपा करें," उसने प्येर के लिये ख़ासी लम्बी और अटपटी ख़ामोशी के बाद कहा।

---

* विलियम पिट (१७५६–१८०६) ने १८वीं शताब्दी के अन्त और १६वीं शताब्दी के आरम्भ में इंगलैंड की विदेश-नीति का संचालन किया। वह फ़्रांसीसी क्रान्ति और सन् १८०४ से नेपोलियन का कट्टर विरोधी रहा। –सं०

"ओह! काउंट रोस्तोव!" प्येर ने खुश होते हुए कहा। "तो आप उनके सुपुत्र इल्या हैं? देखिये न, शुरू में तो मैं आपको पहचान ही नहीं पाया। आपको याद है न कि कैसे हम मदाम जाको के साथ वोरोब्योव पहाड़ी पर जाया करते थे... बहुत पुरानी बात है यह।"

"आप भूल रहे हैं," साहसपूर्ण और कुछ उपहासजनक मुस्कान के साथ बोरीस ने इतमीनान से जवाब दिया। "मैं तो प्रिंसेस आन्ना मिख़ाइलोव्ना द्रुबेत्स्काया का बेटा बोरीस हूं। इल्या तो काउंट रोस्तोव का नाम है और उनके बेटे को निकोलाई कहते हैं। मदाम जाको को मैं बिल्कुल नहीं जानता।"

प्येर ने अपने हाथों और सिर को ऐसे हिलाया मानो उसपर मच्छरों या मधुमक्खियों के दल ने हमला कर दिया हो।

"ओह, यह क्या तमाशा है! मैंने सब कुछ गड़बड़ कर दिया। मास्को में रिश्तेदार भी तो कितने अधिक हैं! आप बोरीस हैं... हां। तो अब बात साफ़ हो गयी। अच्छा, यह बताइये कि बुलोन के अभियान के बारे में आपका क्या विचार है? अगर नेपोलियन ने नहर पार कर ली तो अंग्रेज़ों का तो बुरा हाल हो जायेगा न? मेरे ख़्याल में तो ऐसा अभियान बिल्कुल सम्भव है। बस, विल्लनेव ही कोई घुटाला न कर दे!"*

बुलोन के अभियान के बारे में बोरीस को कुछ भी मालूम नहीं था, क्योंकि वह अख़बार नहीं पढ़ता था और विल्लनेव का नाम तो उसने पहली बार सुना था।

"यहां मास्को में हम राजनीति की तुलना में दावतों और निन्दा-चुग़लियों में कहीं अधिक व्यस्त हैं," उसने अपने शान्त और उपहासजनक लहजे में कहा। "इसके बारे में मैं कुछ भी नहीं जानता और कुछ भी नहीं सोचता हूं। मास्को तो निन्दा-चुग़लियों में ही अधिक व्यस्त है," वह

---

* सन् १८०४–१८०५ में नेपोलियन ने फ़्रांस के उत्तरी तट पर स्थित बुलोन में एक शक्तिशाली सैनिक शिविर बनाया और इंगलैंड में सेना उतारने की तैयारी की। उसने फ़्रांसीसी-आइसलैंडी जंगी बेड़े के कमांडर एडमिरल विल्लनेव को इंगलैंड की तट की ओर बढ़ने का आदेश दिया। किन्तु ब्रिटिश जंगी बेड़े ने इसे आगे बढ़ने से रोक दिया। २१ अक्तूबर १८०५ को ट्राफ़ालगर के निकट हुई समुद्री लड़ाई में अंग्रेज़ एडमिरल नेलसन ने फ़्रांसीसी बेड़े को नष्ट कर डाला। –सं०

कहता गया। "आजकल आपकी और काउंट की ही चर्चा होती रहती है।"

प्येर अपनी स्वाभाविक, मधुर मुस्कान से मुस्करा दिया। उसे मानो अपने सहभाषी के बारे में इस बात की चिन्ता हो रही थी कि कहीं वह कुछ ऐसा न कह बैठे जिसके लिये उसे बाद में पछताना पड़े। किन्तु बोरीस तो प्येर से नज़रें मिलाते हुए दृढ़ता, स्पष्टता और रुखाई से अपनी बात कहता जा रहा था।

"मास्कोवालों के पास निन्दा-चुग़लियां करने के सिवा कुछ है ही नहीं," वह कहता गया। "सभी यह अनुमान लगाने में व्यस्त हैं कि काउंट किसके नाम अपनी दौलत छोड़ेंगे, जबकि यह बिल्कुल सम्भव है कि वह हम सब से अधिक समय तक जीवित रहें और मैं सच्चे दिल से यही कामना करता हूं..."

"हां, यह बहुत दुख की बात है," प्येर ने उसे टोका। "बहुत दुख की बात है।" प्येर को लगातार इसी बात का अन्देशा हो रहा था कि यह फ़ौजी अफ़सर अनजाने ही ख़ुद अपने लिये कोई अटपटी बात न शुरू कर दे।

"आपको ऐसा लगता होगा," बोरीस ने कुछ लज्जारुण होते, किन्तु अपनी आवाज़ और अन्दाज़ को बदले बिना कहा, "आपको ऐसा लगता होगा कि सभी लोग धनी काउंट से कुछ न कुछ पाने के फेर में पड़े हुए हैं।"

"बिल्कुल ऐसा ही है!" प्येर ने सोचा।

"मैं सिर्फ़ इसीलिये कि आपको किसी तरह की ग़लतफ़हमी न हो जाये, आपसे यह कहना चाहता हूं कि आप मुझे और मेरी मां को ऐसे लोगों में शामिल करके बड़ी भूल करेंगे। हम बहुत ग़रीब लोग हैं, लेकिन कम से कम अपने बारे में मैं यह कह सकता हूं कि चूंकि आपके पिता अमीर हैं, मैं अपने को उनका रिश्तेदार नहीं मानता हूं। न तो मैं और न मेरी मां ही उनसे कभी कुछ मांगेंगे और न ही उनसे कुछ लेंगे।"

प्येर देर तक कुछ भी नहीं समझा, मगर जब समझा तो उछलकर सोफ़े से उठ खड़ा हुआ, अपने स्वभाव के अनुरूप उसने तेज़ी और अटपटेपन से बोरीस की बांह थाम ली और उससे भी अधिक लाल होते हुए लज्जा और उद्विग्नता की मिली-जुली भावना से कहने लगा:

"बड़ी अजीब बात है यह! क्या मैं... भला कौन यह सोच सकता था... मैं बहुत अच्छी तरह से जानता हूं..."

किन्तु बोरीस ने फिर से उसे टोक दिया:

"मैं ख़ुश हूं कि मैंने आपसे सब कुछ साफ़-साफ़ कह दिया। शायद आपको यह अच्छा न लगा हो, इसलिये मैं माफ़ी चाहता हूं," उसने प्येर को तसल्ली देते हुए कहा, जबकि इसके उलट, प्येर को उसे तसल्ली देनी चाहिये थी, "किन्तु मैं आशा करता हूं कि मैंने आपके दिल को ठेस नहीं लगायी है। मेरा तो यही उसूल है कि साफ़-साफ़ बात कह देनी चाहिये... तो मैं क्या जवाब दूं काउंट रोस्तोव को? आप डिनर पर वहां आयेंगे या नहीं?"

और बोरीस सम्भवतः अपने इस कठिन कर्त्तव्य की पूर्त्ति करके, इस अटपटी स्थिति से मुक्ति पाकर और दूसरे को उस स्थिति में डालकर फिर से सौम्य-मधुर हो गया।

"लेकिन सुनिये," प्येर ने शान्त होते हुए कहा। "आप अद्भुत व्यक्ति हैं। आपने अभी-अभी जो कुछ कहा है, वह ख़ूब है, बहुत ख़ूब है। ज़ाहिर है कि आप मुझे नहीं जानते हैं। हम इतने सालों से नहीं मिले... बचपन के ज़माने से... आप मेरे बारे में यह सोच सकते हैं... मैं आपको समझता हूं, अच्छी तरह से समझता हूं। मैं तो ऐसा न कर पाता, मेरी तो हिम्मत न होती, लेकिन यह बहुत ख़ूब बात रही। मुझे बहुत ख़ुशी है कि आपसे परिचय हो गया। अजीब बात है," कुछ देर चुप रहकर उसने मुस्कराते हुए कहा, "क्या विचार रहा होगा आपके दिल में मेरे बारे में!" वह हंस पड़ा। "पर ख़ैर, क्या हो सकता है? हम अधिक अच्छी तरह एक-दूसरे को जानें-समझेंगे। मैं इसके लिये आपसे अनुरोध करता हूं।" उसने तपाक से बोरीस का हाथ दबाया। "जानते हैं कि मैं तो एक बार भी काउंट के पास नहीं गया। उन्होंने मुझे नहीं बुलवाया... इन्सान के नाते मुझे उनपर दया आती है... किन्तु क्या किया जाये?"

"आप क्या सोचते हैं कि नेपोलियन अपनी सेना को नहर के पार भेजने में सफल हो जायेगा?" बोरीस ने मुस्कराते हुए पूछा।

प्येर समझ गया कि बोरीस बातचीत का विषय बदलना चाहता है और उससे सहमत होते हुए बुलोन के अभियान के लाभ-हानियों की चर्चा करने लगा।

नौकर ने आकर बोरीस से कहा कि प्रिंसेस यानी उसकी मां उसे बुला रही है। प्रिंसेस घर जा रही थी। प्येर ने केवल इसीलिये काउंट रोस्तोव के यहां डिनर पर जाना मंज़ूर कर लिया कि बोरीस के साथ घुल-मिल सके। अपने चश्मे में से उसकी ओर स्नेहपूर्वक देखते हुए उसने बड़े प्यार से उसके साथ हाथ मिलाया... बोरीस के जाने के बाद प्येर देर तक कमरे में चक्कर लगाता और पहले की भांति किसी अदृश्य शत्रु के बदन में तलवार भोंकने के बजाय इस प्यारे, समझदार और दृढ़ व्यक्ति को याद करके मुस्कराता रहा।

जैसा कि उठती जवानी के दिनों में, ख़ास तौर पर एकाकी जीवन की स्थिति में होता है, प्येर को इस नौजवान के प्रति अकारण ही स्नेह की अनुभूति हुई और उसने यह इरादा बना लिया कि अवश्य ही उससे दोस्ती करेगा।

प्रिंस वसीली प्रिंसेस आन्ना मिख़ाइलोव्ना को दरवाज़े तक छोड़ने आया। प्रिंसेस आंखों के पास रूमाल टिकाये थी और उसका चेहरा आंसुओं से तर था।

"यह तो बड़ी भयानक बात है! बहुत भयानक बात है!" उसने कहा। "मेरे लिये ऐसा करना चाहे कितना ही कठिन क्यों न हो, मैं अपना कर्त्तव्य पूरा करूंगी। मैं रात को यहां आ जाऊंगी। ऐसी स्थिति में काउंट को इस तरह नहीं छोड़ा जा सकता। एक-एक मिनट बहुत क़ीमती है। मेरी समझ में नहीं आता कि प्रिंसेसें देर किसलिये कर रही हैं। शायद भगवान मुझे काउंट को तैयार करने की शक्ति प्रदान करेंगे... नमस्ते प्रिंस, भगवान आपकी सहायता करें..."

"नमस्ते, मेरी प्यारी," प्रिंस वसीली ने घर में वापस लौटते हुए जवाब दिया।

"ओह, बड़ी बुरी हालत है उसकी," मां ने फिर से बग्घी में बैठने पर बेटे से कहा। "वह तो लगभग किसी को नहीं पहचानता।"

"अम्मां, मैं यह नहीं समझ पा रहा हूं कि प्येर के प्रति उसका क्या रवैया है?" बेटे ने जानना चाहा।

"काउंट के वसीयतनामे से सब कुछ पता चल जायेगा, मेरे बेटे। हमारी क़िस्मत भी उसी पर निर्भर करती है..."

"किन्तु आप ऐसा क्यों मानती हैं कि वह हमें भी कुछ दे देगा?"

"ओह, मेरे बेटे! वह इतना अमीर और हम इतने ग़रीब हैं!"

"परन्तु यह तो उसके ऐसा करने का कोई पर्याप्त कारण नहीं है, अम्मां।"

"हे भगवान! हे भगवान! कितनी बुरी हालत है उसकी!" मां ने अपना दुख प्रकट किया।

१४

आन्ना मिख़ाइलोव्ना जब अपने बेटे के साथ काउंट किरील्ल व्लादीमिरोविच बेज़ूख़ोव के यहां चली गयी तो काउंटेस रोस्तोवा रूमाल से आंखों को पोंछती हुई देर तक अकेली बैठी रहीं। आख़िर उन्होंने नौकरानी को बुलाने के लिये घण्टी बजायी।

"क्या बात है, प्यारी," उन्होंने झल्लाते हुए नौकरानी से कहा जिसने उन्हें कुछ मिनट तक इन्तज़ार करवाया था, "क्या आप ढंग से मेरी सेवा नहीं करना चाहतीं? अगर ऐसी बात है तो मैं आपको कोई दूसरा काम दे सकती हूं।"

काउंटेस अपनी सहेली की चिन्ता और अपमानजनक निर्धनता से परेशान और इसलिये बुरे मूड में थीं। ऐसा होने पर नौकरानी के लिये "प्यारी" और "आप" जैसे सम्बोधन हमेशा उनके इस मूड को अभिव्यक्त करते थे।

"क्षमा चाहती हूं, मालकिन," नौकरानी ने कहा।

"काउंट को मेरे पास भेजिये।"

काउंट डोलते-से और सदा की भांति कुछ-कुछ अपराधी की सी सूरत बनाये हुए उसके पास आये।

"मज़ा आ गया, मेरी प्यारी! कुछ पूछो नहीं, मेरी रानी, कि मदिरा की चटनी के साथ कितने ज़ायकेदार बटेर बनेंगे! मैंने उन्हें चख लिया है। मैंने तारास के लिये एक हज़ार रूबल देकर भूल नहीं की। बिल्कुल ठीक ही किया!"

वह बांके जवान की तरह घुटनों पर अपनी कोहनियां टिकाकर और पके, सफ़ेद बालों को लहराते हुए अपनी बीवी के पास बैठ गये।

"क्या हुक्म है, मेरी प्यारी?"

"बात यह है, मेरे प्यारे, – तुमने यह धब्बा कहां से लगा लिया?"

उन्होंने काउंट की वास्कट की ओर संकेत किया। "यह तो ज़रूर चटनी का ही धब्बा है," उन्होंने मुस्कराते हुए यह भी कह दिया। "बात यह है, काउंट, मुझे रूबलों की ज़रूरत है।"

उनके चेहरे पर दुख का भाव आ गया।

"ओह, मेरी प्यारी!.." और काउंट झटपट अपनी जेब से बटुआ निकालने लगे।

"मुझे बहुत रूबल चाहिये, काउंट, पांच सौ रूबल चाहिये।" और उन्होंने मलमल का रूमाल निकालकर पति की वास्कट पर लगे धब्बे को साफ़ कर दिया।

"अभी, अभी। अरे, वहां कोई है?" वह ऐसी आवाज़ में चिल्लाये जैसी आवाज़ में वे लोग ही चिल्लाते हैं जिन्हें इस चीज़ का पक्का यक़ीन होता है कि जिन्हें वे पुकार रहे हैं, वे भागते हुए चले आयेंगे। "मीत्या को यहां मेरे पास भेजो!"

कुलीन घराने से सम्बन्ध रखनेवाला मीत्या, जिसका काउंट के यहां ही पालन-पोषण हुआ था और जो अब काउंट के सारे काम-काज की देख-भाल करता था, हल्के-हल्के डग भरता कमरे में आया।

"सुनो, प्यारे," काउंट ने आदरपूर्वक कमरे में आनेवाले इस जवान व्यक्ति से कहा। "तुम मुझे," काउंट कुछ सोचने लगे, "सात सौ रूबल ला दो। और देखो, उस बार की तरह गन्दे-मन्दे और फटे हुए नहीं, बल्कि अच्छे नोट लाना। काउंटेस को चाहिये।"

"हां, मीत्या, साफ़-सुथरे नोट ही लाना," काउंटेस ने उदासी से आह भरकर कहा।

"हुज़ूर, आप कब लाने का हुक्म दे रहे हैं?" मीत्या ने जानना चाहा। "कृपया यह बताने की अनुमति दीजिये कि... पर ख़ैर, कोई चिन्ता नहीं करें," उसने यह देखकर कि काउंट कैसे जल्दी-जल्दी और ज़ोर से सांस लेने लगे हैं, झटपट कहा। काउंट का ऐसे सांस लेना इस बात का लक्षण होता था कि वह ग़ुस्से में आने लगे हैं। "मैं तो भूल ही गया था... इसी क्षण लाने का आदेश देते हैं?"

"हां, हां, यही बेहतर होगा, अभी ले आओ। काउंटेस को दे देना।"

"मेरा यह मीत्या तो हीरा है," काउंट ने इस जवान आदमी के चले जाने पर मुस्कराकर कहा। "कभी यह नहीं कहता कि ऐसा

सम्भव नहीं। मुझसे यह तो बर्दाश्त ही नहीं होता। सब कुछ सम्भव है।"

"ओह, पैसा, यह पैसा! कितनी मुसीबतें हैं इसके कारण इस दुनिया में!" काउंटेस ने कहा। "और इन पैसों की बड़ी ज़रूरत है मुझे।"

"मेरी प्यारी, पैसा उड़ाना तो तुम ख़ूब जानती हो," काउंट ने जवाब दिया और पत्नी का हाथ चूमकर फिर से अपने कमरे में चले गये।

आन्ना मिख़ाइलोव्ना जब काउंट बेज़ूख़ोव के यहां से लौटी तो नये-नये नोटों के रूप में पूरी रक़म काउंटेस की छोटी-सी मेज़ पर रूमाल के नीचे रखी हुई थी और आन्ना मिख़ाइलोव्ना ने देखा कि काउंटेस किसी कारण बेचैन हैं।

"तो क्या हाल है काउंट बेज़ूख़ोव का, मेरी प्यारी?" काउंटेस ने पूछा।

"ओह, कैसी बुरी हालत है उसकी! उसे तो पहचाना ही नहीं जा सकता, ऐसा बुरा हाल है उसका, ऐसा बुरा हाल है। मैं तो कोई एक मिनट वहां रही और दो शब्द भी नहीं कह पायी..."

"अन्नेत, भगवान के लिये मुझे इन्कार नहीं करना," काउंटेस ने अचानक रूमाल के नीचे से पैसे उठाते और ऐसे लज्जारुण होते हुए कहा जो उनकी ढलती उम्र के दुबले और गर्वीले चेहरे के लिये अजीब-सी बात थी।

आन्ना मिख़ाइलोव्ना फ़ौरन समझ गयी कि क्या मामला है और उसकी ओर झुक भी गयी, ताकि उचित क्षण सामने आने पर काउंटेस को अच्छे ढंग से गले लगा सके।

"बोरीस की वर्दी आदि के ख़र्च के लिये यह मेरी ओर से..."

आन्ना मिख़ाइलोव्ना ने तो उन्हें बांहों में भर भी लिया था और वह रो रही थी। काउंटेस भी रो रही थीं। ये दोनों इसलिये रो रही थीं कि सहेलियां थीं, इसलिये कि उदारमना थीं, इसलिये कि जवानी के दिनों की इन सहेलियों को पैसे जैसी घटिया चीज़ की चिन्ता करनी पड़ रही थी और यह कि उनकी जवानी बीती कहानी हो चुकी थी... किन्तु दोनों के आंसू मधुर आंसू थे...

१५

काउंटेस रोस्तोवा अपनी बेटियों और अधिकांश अतिथियों के साथ दीवानख़ाने में बैठी थीं। मर्दों को अपने कमरे में ले जाकर काउंट ने उनके सामने अपनी तुर्की पाइपों का बढ़िया संग्रह पेश कर दिया था। कभी-कभी वह कमरे से बाहर जाकर यह पूछते कि वह आयी या नहीं? इस समय यहां मरीया द्मीत्रियेव्ना अख़्रोसिमोवा का इन्तज़ार हो रहा था जिसे ऊंचे समाज में "भयानक घुड़सवार" के नाम से पुकारा जाता था। यह महिला धन-दौलत, ऊंचे कुल या पद के कारण नहीं, बल्कि समझ-बूझ तथा सीधे-सरल और अपने दो टूक व्यवहार के लिये समाज में विख्यात थी। ज़ार-परिवार भी मरीया द्मीत्रियेव्ना को जानता था, सारा मास्को और पीटर्सबर्ग भी उससे परिचित था और दोनों नगरों में उसके बारे में आश्चर्य प्रकट करते हुए लोग चुपके-चुपके उसके उज्जडपन पर हंसते भी थे, उसके बारे में तरह-तरह के क़िस्से-कहानियां भी सुनाते थे, मगर साथ ही किसी अपवाद के बिना सब उसका आदर करते थे, उससे डरते भी थे।

तम्बाकू के धुएं से भरे काउंट रोस्तोव के कमरे में एक घोषणापत्र द्वारा घोषित युद्ध और भरती के बारे में बातचीत हो रही थी। घोषणापत्र अभी तक किसी ने भी नहीं पढ़ा था, मगर उसके जारी होने के बारे में जानते सभी थे। काउंट रोस्तोव पाइप पीते और बातचीत करते हुए दो मेहमानों के बीच तुर्की ढंग के सोफ़े पर बैठे थे। ख़ुद काउंट न तो पाइप पी रहे थे, न बातें कर रहे थे, मगर कभी एक तो कभी दूसरी ओर सिर झुकाकर अपने अग़ल-बग़ल बैठे, पाइप पीते और बातें करते मेहमानों को, जिन्हें उन्होंने एक-दूसरे से भिड़ा दिया था, बड़ी प्रसन्नता से देख रहे थे।

बातचीत करनेवालों में से एक असैनिक था। उसके सफ़ाचट, दुबले, रुग्ण-पीले और झुर्रियोंवाले चेहरे से साफ़ नज़र आता था कि बुढ़ापा उससे अधिक दूर नहीं है, यद्यपि वह बहुत ही फ़ैशनपरस्त जवान आदमी जैसे कपड़े पहने था। वह घर के आदमी की तरह पालथी मारकर तुर्की सोफ़े पर बैठा था, कहरुबे की पाइप को अपने मुंह में एक ओर को दूर तक दबाकर ज़ोर-ज़ोर से कश खींचता और आंखें सिकोड़ता था। यह काउंटेस का चचेरा भाई, चिर अविवाहित शिनशिन था जिसे

मास्को के दीवानख़ानों में दुर्मुख कहा जाता था। ऐसे लगता था कि अपने सहभाषी के साथ वह बड़े घमंड से पेश आ रहा था। दूसरा व्यक्ति ताज़गी लिये हुए लाल-लाल गालोंवाला गार्ड-सेना का अफ़सर था – साफ़-सुथरा, चुस्त-दुरुस्त कपड़े पहने और ढंग से बाल संवारे हुए। वह कहरुबा की पाइप को गुलाबी होंठोंवाले मुंह के मध्य में दबाकर धीरे से कश खींचता और धुएं को छल्लों की शक्ल में लाल-लाल मुंह से बाहर निकालता था। यह सेम्योनोव्स्की नामक रेजिमेंट का वह लेफ़्टिनेंट बेर्ग था जिसके साथ बोरीस फ़ौज में जानेवाला था और नताशा इसी को 'भावी दूल्हा' कहकर बड़ी काउंटेस यानी अपनी बड़ी बहन वेरा को चिढ़ाती थी। काउंट रोस्तोव इन दोनों के बीच बैठे हुए बड़े ध्यान से इनकी बातें सुन रहे थे। काउंट के लिये ताश के बोस्टन खेल को छोड़कर, जिसे वह बेहद पसन्द करते थे, दूसरों की बातें सुनना ही सबसे अधिक प्रिय मनबहलाव था, ख़ास तौर पर उस वक़्त जब वह किन्हीं दो व्यक्तियों को वाद-विवाद में उलझाने में सफल हो जाते थे।

"तो भैया, परम आदरणीय अल्फ़ोन्स कारलिच," शिनशिन मज़ाक़ उड़ाते और बहुत ही सीधे-सादे रूसी लोक-कथनों का बड़े सुन्दर फ़्रांसीसी वाक्यों के साथ मिश्रण करते हुए कह रहा था (उसके बातचीत के अन्दाज़ की यही विशेषता थी)। "आप सरकार से पैसा ऐंठना चाहते हैं, अपनी कम्पनी से भी पैसा ऐंठना चाहते हैं?"

"नहीं, प्योत्र निकोलायेविच, मैं केवल यह स्पष्ट करना चाहता हूं कि पैदल सेना की तुलना में घुड़सेना में कहीं कम लाभ है। आप मेरी ही मिसाल ले सकते हैं।"

बेर्ग हमेशा बड़ी स्पष्टता, शिष्टता और शान्ति से बात करता था। वह सदैव केवल अपने को ही अपनी बातचीत का विषय बनाता था। जब तक उससे सम्बन्ध न रखनेवाली कोई बात होती रहती, वह हमेशा बड़े शान्त भाव से चुप बैठा रहता। और उसकी यह ख़ामोशी घण्टों तक बनी रह सकती थी तथा ऐसा करते हुए न तो वह ख़ुद ही ज़रा-सी भी परेशानी महसूस करता और न दूसरों को ही यह महसूस होने देता। किन्तु जैसे ही स्वयं उसके बारे में ज़रा-सी भी बातचीत शुरू होती, वैसे ही वह बड़े विस्तार और स्पष्ट प्रसन्नता से अपनी चर्चा करने लगता।

"अब मेरी ही मिसाल ले लीजिये, प्योत्र निकोलायेविच – अगर मैं घुड़सेना में होता तो लेफ़्टिनेंट होते हुए भी चार महीनों में मुझे दो सौ से अधिक रूबल न मिलते, जबकि अब मुझे दो सौ तीस रूबल मिलते हैं," उसने मधुरता से मुस्कराते और शिनशिन तथा काउंट पर नज़र डालते हुए ऐसे ख़ुश होकर कहा मानो उसे इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं था कि उसकी सफलता ही शेष सभी लोगों की इच्छा का हमेशा मुख्य उद्देश्य होगी।

"इसके अलावा, प्योत्र निकोलायेविच, गार्ड-सेना में आने से मैं सबकी नज़र में रहता हूं," बेर्ग कहता गया, "और पैदल गार्ड-सेना में ख़ाली जगहें भी कहीं अक्सर निकलती रहती हैं। इसके अलावा आप यह भी ध्यान में रखें कि दो सौ तीस रूबल में मैं क्या कुछ कर सकता हूं। मैं कुछ पैसे जमा भी कर लेता हूं और अपने पिता को भी भेज देता हूं," धुएं का छल्ला हवा में उड़ाते हुए उसने अपनी बात जारी रखी।

"बिल्कुल सही है... जैसा कि कहा जाता है जर्मन तो बालू में से भी तेल निकाल लेता है," शिनशिन ने कहरुबे की पाइप को मुंह में दूसरी ओर दबाते हुए कहा और काउंट को आंख से इशारा किया।

काउंट खिलखिलाकर हंस पड़े। यह देखकर कि शिनशिन बातों के रंग में है, दूसरे मेहमान उसे सुनने के लिये पास आ गये। बेर्ग लोगों की चुटकियों और उदासीनता की परवाह न करते हुए यह बताता रहा कि जैसे गार्ड-सेना में तबादला करवा लेने से वह अपने केडेट-कोर के साथियों की तुलना में एक पद आगे बढ़ गया है, कैसे युद्ध के समय कम्पनी-कमांडर यानी कप्तान मारा जा सकता है और उसके बाद कम्पनी में अपनी वरिष्ठता के कारण वह आसानी से कप्तान बन सकता है, कैसे रेजिमेंट में सभी उसे बहुत चाहते हैं और उसके पापा उससे बहुत ख़ुश हैं। सम्भवतः बेर्ग को यह सब कुछ बताते हुए बहुत मज़ा आ रहा था और ऐसे लगता था कि उसके दिमाग़ में यह ख़्याल तक नहीं आ रहा था कि दूसरे लोगों की भी अपनी दिलचस्पियां हो सकती हैं। किन्तु वह जो कुछ बता रहा था, वह इतना सौम्य-गम्भीर था, उसकी जवानी के समय की इस स्वार्थ की भावना का भोलापन इतना स्पष्ट था कि उसने अपने सभी श्रोताओं को निरस्त्र कर दिया।

"भैया मेरे, आप चाहे पैदल सेना में रहें, चाहे घुड़सेना में,

सभी जगह आपकी चांदी रहेगी, मैं यह भविष्यवाणी कर रहा हूं," शिनशिन ने उसका कंधा थपथपाते हुए कहा और तुर्की सोफ़े से पांव नीचे कर लिये।

बेर्ग ख़ुशी से मुस्करा दिया। काउंट रोस्तोव और उसके पीछे-पीछे मेहमान भी दीवानख़ाने में चले गये।

यह डिनर के पहले का वह वक़्त था, जब आमन्त्रित अतिथि इसलिये कोई लम्बी बातचीत नहीं शुरू करते हैं कि उनसे किसी भी क्षण खाने की मेज़ पर चलने का अनुरोध किया जा सकता है। किन्तु इसके साथ ही यह दिखाने के लिये कि वे भोजन की मेज़ पर जाने की उतावली में नहीं हैं, इधर-उधर हिलना-डुलना और कोई न कोई बात करना आवश्यक समझते हैं। मेज़बान और उसकी पत्नी दरवाज़े की ओर देखते हैं और कभी-कभी एक-दूसरे की आंखों में झांकते हैं। मेहमान उनकी इन नज़रों से इस बात का अनुमान लगाने की कोशिश करते हैं कि उन्हें किस बात का इन्तज़ार है – अभी तक न आनेवाले किसी महत्त्वपूर्ण रिश्तेदार का या किसी पकवान के तैयार हो जाने का।

प्येर डिनर शुरू होने के कुछ ही देर पहले यहां आया, सामने आ जानेवाली पहली ही कुर्सी पर अटपटे ढंग से दीवानख़ाने के बीचोंबीच बैठ गया और इस तरह सबके आने-जाने के रास्ते में बाधा बनने लगा। काउंटेस रोस्तोवा ने कोशिश की कि उसे बोलने-बतियाने के लिये मजबूर करें, लेकिन वह मानो किसी को खोजता हुआ चश्मे के शीशों में से अपने इर्द-गिर्द देखता रहा और काउंटेस के प्रश्नों का उसने "हां", "ना" में ही जवाब दिया। वह दूसरों के लिये परेशानी पैदा कर रहा था और सिर्फ़ वही इस बात को नहीं समझता था। प्येर के भालूवाले क़िस्से से परिचित अधिकांश अतिथि इस लम्बे-तड़ंगे, मोटे और शान्त-से व्यक्ति को जिज्ञासा से देख रहे थे और यह समझ पाने में असमर्थ थे कि ऐसे ढीले-ढाले और विनम्र व्यक्ति ने पुलिस-अफ़सर के साथ इस तरह की हरकत कैसे की।

"आप तो हाल ही में यहां आये हैं?" काउंटेस ने उससे पूछा।

"हां, मदाम," उसने इधर-उधर देखते हुए फ़्रांसीसी में जवाब दिया।

"मेरे पति से मिले हैं?"

"नहीं, मदाम।" वह अकारण ही मुस्करा दिया।

"कुछ ही समय पहले तक आप पेरिस में थे न? मैं समझती हूं कि वहां का जीवन आपके लिये बहुत दिलचस्प रहा होगा।"

"जी हां, बहुत दिलचस्प था।"

काउंटेस ने आन्ना मिख़ाइलोव्ना से नज़रें मिलायीं। आन्ना मिख़ाइलोव्ना समझ गयी कि उससे इस नौजवान की ओर ध्यान देने का अनुरोध किया जा रहा है और वह प्येर के पास बैठकर उससे उसके पिता की चर्चा करने लगी। किन्तु काउंटेस की भांति आन्ना मिख़ाइलोव्ना को भी वह "हां" और "ना" में ही जवाब देता रहा। बाक़ी सब मेहमान आपस में बातें करने में व्यस्त थे।

"राज़ुमोव्स्की परिवारवाले... बड़ा मज़ा रहा... बहुत मेहरबान हैं आप... काउंटेस अप्राकसिना..." सभी ओर से ऐसे असम्बद्ध वाक्य सुनायी दे रहे थे। काउंटेस रोस्तोवा उठीं और हॉल की ओर चली गयीं।

"मरीया द्मीत्रियेव्ना?" हॉल से काउंटेस की आवाज़ सुनायी दी।

"हां, मैं ही हूं," जवाब में किसी नारी का कर्कश स्वर सुनायी पड़ा और इसके फ़ौरन बाद मरीया द्मीत्रियेव्ना ने कमरे में प्रवेश किया।

सभी युवतियां, यहां तक कि बहुत बूढ़ी महिलाओं को छोड़कर, शेष सभी महिलायें भी खड़ी हो गयीं। मरीया द्मीत्रियेव्ना दरवाज़े के पास रुकी और इस पचास वर्षीया लम्बी और भारी बदनवाली महिला ने, जो अपने पके, घुंघराले बालोंवाले सिर को ताने रहती थी, मेहमानों पर नज़र डाली और अपनी आस्तीनों को थोड़ा ऊपर चढ़ाते हुए उनको इतमीनान से ठीक किया। मरीया द्मीत्रियेव्ना हमेशा रूसी ही बोलती थी।

"आज जिसका जन्म-दिवस है, उसे और उसके बच्चों को बधाई," उसने शेष सभी आवाज़ों को दबाते हुए अपनी ऊंची, भारी आवाज़ में कहा। "कहो, पुराने पापी," उसने अपना हाथ चूम रहे काउंट को सम्बोधित किया, "शायद मास्को में तो तुम्हारा मन नहीं लग रहा होगा? कुत्तों को साथ लेकर शिकार के लिये जाने की कोई जगह नहीं? लेकिन क्या किया जाये, भैया, जब ये गुड़ियां बड़ी हो जाती हैं," उसने लड़कियों की ओर संकेत करते हुए कहा, "हम चाहें या

न चाहें, इनके लिये वर तो ढूंढ़ने ही पड़ते हैं।"

"तुम कैसी हो, मेरी कज़्ज़ाक?" (मरीया द्मीत्रियेव्ना नताशा को कज़्ज़ाक कहकर ही सम्बोधित करती थी), उसने किसी प्रकार की घबराहट के बिना और ख़ुशी से अपना हाथ चूमने के लिये अपने पास आनेवाली नताशा को सहलाते हुए पूछा। "जानती हूं कि यह शैतान लड़की है, मगर मैं इसे प्यार करती हूं।"

उसने अपने बहुत बड़े हैंडबैग में से नाशपाती की शक्लवाले लाल मणि के झुमके निकाले और जन्म-दिवस की ख़ुशी से चमकती तथा लज्जारुण होती नताशा को दिये, उसी क्षण उसकी ओर से मुंह फेर लिया और प्येर को सम्बोधित किया।

"अरे, ओ, भले आदमी, इधर आओ तो!" उसने जान-बूझकर अपनी आवाज़ को धीमी और बारीक बनाते हुए कहा। "इधर आओ तो, भले आदमी..."

और उसने मानो डराते हुए अपनी आस्तीनों को थोड़ा और ऊपर चढ़ा लिया।

प्येर भोलेपन से चश्मे के शीशों में से उसे देखते हुए उसके पास गया।

"और निकट आ जाओ, भले आदमी! और निकट आ जाओ! मैंने तो तुम्हारे बाप को भी, जब वह बहुत ऊंची हवा में था, खरी-खरी सुना दी थी और तुम्हारे मामले में ऐसा करना तो मेरा पावन कर्त्तव्य हो जाता है।"

वह चुप हो गयी। बाक़ी सब भी यह इन्तज़ार करते हुए कि आगे क्या होगा, चुप हो गये। वे अनुभव कर रहे थे कि अभी तो उसने भूमिका ही बांधी है।

"यह तो कहना ही होगा कि तुम ख़ूब हो! बहुत अच्छे साहबज़ादे हो!.. बाप आख़िरी सांसें गिन रहा है और यह मज़े लूट रहा है, पुलिस-अफ़सर को भालू पर बिठाकर ख़ुश हो रहा है। डूब मरने की बात है, भैया, डूब मरने की! यही ज़्यादा अच्छा होता कि मोर्चे पर चले जाते।"

इतना कहकर वह मुड़ी और काउंट की ओर अपना हाथ बढ़ा दिया जो बड़ी मुश्किल से अपनी हंसी पर क़ाबू पा रहे थे...

"क्यों क्या ख़्याल है, शायद डिनर की मेज़ पर चलना चाहिये?" मरीया द्मीत्रियेव्ना ने कहा।

मरीया द्मीत्रियेव्ना के साथ काउंट सबसे आगे-आगे और इनके पीछे काउंटेस का हाथ थामे हुए हुस्सार-सेना का कर्नल डाइनिंग हॉल की तरफ़ बढ़ने लगे। इस कर्नल को बड़ा महत्त्व दिया जा रहा था, क्योंकि निकोलाई उसी के साथ रेजिमेंट में जानेवाला था। आन्ना मिखाइलोव्ना शिनशिन के साथ थी और बेर्ग ने वेरा का हाथ थाम रखा था। मुस्कराती हुई यूलिया करागिना निकोलाई के साथ चल रही थी। इनके पीछे-पीछे अन्य जोड़ों की शृंखला पूरे हॉल में फैल गयी और सबसे बाद में एक-एक करके बच्चे, शिक्षक और शिक्षिकायें डाइनिंग हॉल में दाख़िल हुईं। बैरे इधर-उधर दौड़-धूप करने लगे, कुर्सियों के इधर-उधर हिलाये जाने की आवाज़ होने लगी, गैलरी में आर्केस्ट्रा बज उठा और मेहमान कुर्सियों पर बैठ गये। काउंट के घरेलू आर्केस्ट्रा के संगीत की जगह कांटे-छुरियों, मेहमानों की बातचीत और बैरों के क़दमों की धीमी-धीमी आवाज़ें सुनायी देने लगीं। मेज़ के एक सिरे पर काउंटेस बैठी थीं, उनके दायीं ओर मरीया द्मीत्रियेव्ना, बायीं ओर आन्ना मिख़ाइलोव्ना और दूसरी अतिथि महिलायें बैठी थीं। मेज़ के दूसरे सिरे पर काउंट विराजमान थे, उनके बायीं ओर हुस्सार-सेना का कर्नल, दायीं ओर शिनशिन तथा अन्य पुरुष अतिथि बैठे थे। लम्बी मेज़ के एक तरफ़ जवान लोग थे – बेर्ग की बग़ल में वेरा और प्येर के पास बोरीस। मेज़ के दूसरी तरफ़ बच्चे और शिक्षक-शिक्षिकायें थीं। काउंट बिल्लौरी बर्तनों, बोतलों और फलदानों के पीछे से अपनी पत्नी और आसमानी रंग के फीतों से सजी उसकी ऊंची टोपी पर नज़र डालते तथा बड़े उत्साह से अपने आस-पास बैठे मेहमानों के जामों को शराब से भरते जाते और ऐसा करते हुए अपने जाम को भी न भूलते। इसी प्रकार काउंटेस भी मेज़बान के नाते अपने कर्त्तव्य को न भूलते हुए अनानासों के पीछे से पति पर, जिनकी चांद और चेहरा उन्हें उनके सफ़ेद बालों के कारण और भी ज़्यादा लाल प्रतीत होते थे, अर्थपूर्ण दृष्टि डालती रहती थीं। मेज़ के उस सिरे पर, जहां महिलायें बैठी थीं, धीमी-धीमी लयबद्ध बातचीत हो रही थी, किन्तु पुरुषोंवाले सिरे से अधिकाधिक ऊंची आवाज़ें सुनायी दे रही थीं, ख़ास तौर पर हुस्सार-सेना के कर्नल की आवाज़ जो इतना अधिक खा-पी रहा था और जिसका चेहरा अधिकाधिक इतना लाल होता जा रहा था कि काउंट उसे दूसरे मेहमानों के सामने मिसाल के तौर पर भी

पेश करने लगे थे। मृदुलता से मुस्कराता हुआ बेर्ग वेरा को यह बता रहा था कि प्यार सांसारिक नहीं, बल्कि स्वर्गिक भावना है। बोरीस अपने नये मित्र प्येर को खाने की मेज़ पर उपस्थित मेहमानों के नाम बता रहा था और जब-तब अपने सामने बैठी हुई नताशा से आंखें चार कर लेता था। प्येर बहुत कम बोल रहा था, नये चेहरों को ध्यान से देख रहा था और ख़ूब डटकर खा रहा था। दो तरह के सूपों, जिनमें से उसने कछुए का सूप चुना, तथा कचौड़ियों-समोसों से लेकर बटेरों तक उसने न तो किसी डिश और न ही किसी शराब से इन्कार किया जिसे बैरा नेपकिन में लिपटी हुई बोतल में उसकी बग़ल में बैठे मेहमान के कंधे के ऊपर से रहस्यपूर्ण ढंग से आगे बढ़ाता और "ड्राई मदिरा" या "हंगेरियन" या "राइन वाइन" कहता हुआ पेश करता था। प्येर काउंट के नाम तथा कुलनाम के संकेताक्षरों से अंकित अपने सामने रखे हुए चार बिल्लौरी जामों में से कोई भी, जो सबसे पहले उसके हाथ में आ जाता, बैरे के सामने कर देता, बड़े मज़े से पीता और अधिकाधिक मधुरता से मेहमानों की ओर देखता। उसके सामने बैठी हुई नताशा बोरीस की तरफ़ वैसे ही देखती थी जैसे तेरह साल की लड़कियां उस लड़के को देखती हैं जिसका उन्होंने कुछ ही देर पहले जीवन में पहली बार चुम्बन लिया होता है और जिसकी वे प्रेम-दीवानी होती हैं। कभी-कभी वह इसी नज़र से प्येर को भी देखती और न जाने क्यों, इस हास्यास्पद, सजीव लड़की की ऐसी नज़र से, प्येर का हंसने को मन होता।

निकोलाई सोन्या से दूर और यूलिया करागिना के पास बैठा था तथा पहले की भांति अनजाने ही मुस्कराते हुए उससे कुछ कह रहा था। सोन्या शिष्टतावश मुस्करा रही थी, किन्तु मन ही मन सम्भवतः ईर्ष्या की आग में जली जा रही थी। कभी उसके चेहरे का रंग उड़ जाता, कभी उसपर लाली दौड़ जाती और वह अपने कानों पर पूरा ज़ोर डालकर यह सुनने की कोशिश करती कि निकोलाई और यूलिया के बीच क्या बातचीत हो रही है। शिक्षिका बेचैनी से इधर-उधर देखती जाती थी मानो अपने को इस चीज़ के लिये तैयार कर रही हो कि अगर कोई बच्चों के दिल को किसी तरह की ठेस लगाने की कोशिश करे तो वह फ़ौरन उनकी रक्षा को सामने आ जाये। जर्मन शिक्षक सभी डिशों, स्वीट डिशों और शराबों के नाम याद करने का प्रयास कर रहा

था, ताकि बाद में अपने घरवालों को जर्मनी भेजे जानेवाले पत्र में इन सबके बारे में सविस्तार लिख सके। उसे सचमुच तब तो बहुत ही बुरा लगता, जब नेपकिन में बोतल लपेटे हुए बैरा उसकी अवहेलना करके आगे चला जाता था। उस वक़्त जर्मन शिक्षक नाक-भौंह सिकोड़-ता, यह ज़ाहिर करने की कोशिश करता कि वह तो यह शराब चाहता ही नहीं था और उसे बुरा तो सिर्फ़ इस बात से लगा था कि कोई इतना भी समझना नहीं चाहता था कि प्यास बुझाने या लालच के कारण उसे इस शराब की ज़रूरत नहीं थी, बल्कि सच्चीं ज्ञान-पिपासा ही उसे इसके लिये प्रेरित कर रही थी।

१६

मेज़ के उस सिरे पर, जहां मर्द बैठे थे, बातचीत अधिकाधिक सजीव होती जा रही थी। कर्नल ने बताया कि युद्ध का एलान करनेवाला घोषणापत्र पीटर्सबर्ग में निकल भी चुका है और उसकी एक प्रति, जिसे उसने ख़ुद अपनी आंखों से देखा है, सन्देशवाहक द्वारा आज सेनापति को भेज दी गयी है।

"हमें क्या किसी कुत्ते ने काटा है कि हम बोनापार्ट से लड़ें?" शिनशिन ने कहा। "उसने आस्ट्रिया की सारी अकड़-फूं निकाल दी है। मुझे डर है कि कहीं अब हमारी बारी न आ जाये।"

मज़बूत काठी, लम्बे क़द और गर्ममिज़ाजवाला जर्मन कर्नल, स्पष्टतः निष्ठावान सैनिक और देशभक्त था। शिनशिन के शब्द उसे अच्छे नहीं लगे।

"इज़लिये ज़नाब," उसने जर्मन ढंग से रूसी शब्दों का ग़लत उच्चारण करते हुए जवाब दिया, "इज़लिये कि ज़म्राट यह ज़ानते हैं। उन्होंने घोज़णापत्र में यह कहा है कि वह रूज़ के ऊपर मंडरानेवाले ख़तरे, ज़ाम्राज्य की ज़ुरक्षा, उज़की गरिमा और **ज़ैनिक-ज़न्धियों** के पावन मामले में उदाज़ीन नहीं रह ज़कते," कर्नल ने **ज़ैनिक-ज़न्धियों** पर किसी कारण से विशेष ज़ोर दिया मानो सारी बात का यही सार हो।

और इसके बाद सरकारी दस्तावेज़ों के सम्बन्ध में अपनी लाक्षणिक

तेज़ याददाश्त के बल पर उसने घोषणापत्र की प्रस्तावना के ये शब्द दोहराये : "यूरोप में जान्ति की ज़्थायी नीव रखने की इच्छा ज़े – जो ज़म्राट का एकमात्र और अपरिहार्य लक्ष्य है, कुछ ज़ेनाओं को इज़ी की पूर्त्ति के लिये एक नया प्रयाज़ करने के विचार ज़े विदेज़ भेजने का निर्णय किया गया है।"

"इज़लिये ज़नाब," कर्नल ने मानो सीख देते, शराब का जाम ख़त्म करते और प्रोत्साहन के लिये काउंट की ओर देखते हुए अपनी बात समाप्त की।

"यह कहावत सुनी है न – आईने में अपनी सूरत देखो, अपनी औक़ात जानो, अपनी हक़ीक़त पहचानो," शिनशिन ने माथे पर बल डालते और मुस्कराते हुए जवाब दिया। "हमपर यह कहावत ख़ूब लागू होती है। दूसरों की तो बात ही क्या, सुवोरोव को भी मुंह की खानी पड़ी* और अब सुवोरोव जैसे सेनापति हैं कहां? मैं आपसे पूछता हूं।" लगातार रूसी से फ़्रांसीसी भाषा की ओर लपकते हुए उसने कहा।

"हमें कून की आकिरी बूंद तक डटे रहना चाहिये," कर्नल मेज़ पर घूंसा मारते हुए कह उठा, "और हमें अपने ज़म्राट के लिये प्राण न्योछावर करने चाहिये। तब ज़ब कुछ ठीक हो जायेगा। ज़हां तक ज़म्भ... व," (उसने "सम्भव" शब्द को ख़ास तौर पर लम्बा खींचा), "जहां तक ज़म्भ...व हो, बहज़ कम करनी चाहिये।" उसने फिर से काउंट की ओर देखते हुए अपनी बात ख़त्म की। "हम बूढ़े हुज़्ज़ार ऐज़ा मानते हैं। और आपका क्या क्याल है नौज़वान, ज़वान हुज़्ज़ार?" उसने निकोलाई को सम्बोधित करते हुए पूछा जिसने जंग की चर्चा सुनते ही यूलिया के साथ बातचीत बन्द कर दी थी और बहुत ध्यान से कर्नल को देख तथा उसकी बातें सुन रहा था।

---

* अलेक्सान्द्र सुवोरोव (१७२६/३०–१८००) प्रसिद्ध रूसी सेनापति जिसने रूसी-तुर्की युद्धों (१७६८–१७७४ तथा १७८७–१७९१) और नेपोलियन के विरुद्ध इटली तथा स्विट्ज़रलैंड में लड़ी गयी लड़ाइयों (१७९९) में बड़ी जीतें हासिल कीं। किन्तु स्विट्ज़रलैंड की एक लड़ाई में फ़्रांसीसियों ने रूसी जनरल अ० रीम्स्की-कोर्साकोव की सेना को पराजित किया और सुवोरोव की २० हज़ार की सेना को फ़्रांसीसियों की ८० हज़ार की सेना ने घेर लिया था। सुवोरोव घेरे से अपनी सेना को निकाल लेने में सफल हो गया था। यहां इसी बात का उल्लेख है कि कैसे सुवोरोव की सेना भी घिर गयी थी। – सं०

"पूरी तरह आपसे सहमत हूं," निकोलाई ने एकदम लाल होते, प्लेट को घुमाते और शराब के जामों को ऐसी दृढ़ता तथा ज़ोर से इधर-उधर टिकाते हुए कहा मानो इसी क्षण कोई बहुत बड़ा ख़तरा उसके सामने हो, "मुझे इस बात में ज़रा भी सन्देह नहीं कि रूसियों को या तो मरना या जीतना चाहिये," उसने कहा और इन शब्दों को कहने के फ़ौरन बाद दूसरों की भांति ख़ुद भी यह महसूस किया कि उसने इस वक़्त जितनी ज़रूरत थी, उससे कहीं ज़्यादा जोश और ज़ोर से इन्हें कहा था और इसलिये उसे झेंप अनुभव हुई।

"बहुत ख़ूब, आपने जो कुछ कहा है वह अद्भुत है," उसके पास बैठी यूलिया निःश्वास छोड़ते हुए बोली। निकोलाई जिस समय बोल रहा था तो सोन्या सिर से पांव तक कांप रही थी, उसके कानों, कानों की ललरियों, गर्दन तथा कन्धों तक लाली दौड़ गयी। प्येर ने कर्नल की बातें ध्यान से सुनीं और अनुमोदन में सिर हिलाया।

"बहुत बढ़िया," वह बोला।

"नौजवान, आप अज़ली हुज़्ज़ार हैं," फिर से मेज़ पर घूंसा मारते हुए कर्नल चिल्ला उठा।

"किसलिये आप लोग वहां इतना शोर मचा रहे हैं?" अचानक मेज़ के दूसरे सिरे से मरीया द्मीत्रियेव्ना की भारी-भरकम आवाज़ सुनायी दी। "तुम मेज़ क्यों पीट रहे हो?" उसने हुस्सार को सम्बोधित किया। "ज़रूर यहां अपने सामने फ़्रांसीसियों की ही कल्पना कर रहे होगे?"

"मैं तो ज़च बात कह रहा हूं," हुस्सार ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया।

"जंग की, जंग की ही बातें हो रही हैं," काउंट मेज़ के दूसरे सिरे से चिल्लाये। "आख़िर तो मेरा बेटा, मेरा बेटा मोर्चे पर जा रहा है, मरीया द्मीत्रियेव्ना।"

"मेरे तो चार बेटे फ़ौज में हैं, लेकिन मैं तो फिर भी ग़म में नहीं घुलती। जो कुछ करते हैं, भगवान ही करते है–बिस्तर पर लेटे-लेटे भी आदमी मर सकता है और अगर भगवान रक्षा करें तो लड़ाई के मैदान में भी बाल बांका न हो," मेज़ के इस सिरे से मरीया द्मीत्रियेव्ना की भारी आवाज़ आसानी से सब तक पहुंच गयी।

"है तो ऐसा ही।"

और बातचीत फिर से मेज़ के दो सिरों पर केन्द्रित हो गयी – महिलायें आपस में और पुरुष आपस में बातें करने लगे।

"मैं कहता हूं कि तुम नहीं पूछोगी," नताशा के छोटे भाई ने कहा, "कहता हूं कि नहीं पूछोगी!"

"ज़रूर पूछूंगी," नताशा ने जवाब दिया।

नताशा का चेहरा अचानक आवेग और प्रफुल्लतापूर्ण दृढ़ता से तमतमा उठा। वह उठकर खड़ी हो गयी, उसने अपने सामने बैठे हुए प्येर पर दृष्टि डालकर मानो ध्यान से अपनी बात सुनने की दावत दी और मां को सम्बोधित किया :

"अम्मां!" उसकी बच्चों जैसी खनकती आवाज़ मेज़ के एक सिरे से दूसरे सिरे तक गूंज गयी।

"क्या बात है?" काउंटेस ने घबराकर पूछा। किन्तु बेटी के चेहरे से यह देखकर कि वह महज़ शरारत कर रही है, उन्होंने कड़ाई ज़ाहिर करते हुए हाथ झटका, सिर के इशारे से उसे धमकाया तथा मना किया।

ख़ामोशी छा गयी।

"अम्मां! आज स्वीट डिश कौन-सी होगी?" किसी तरह की झिझक के बिना नताशा की आवाज़ और भी ज़्यादा दृढ़ता से गूंज उठी।

काउंटेस ने त्योरी चढ़ानी चाही, मगर ऐसा कर नहीं पायी। मरीया द्मीत्रियेव्ना ने अपनी मोटी-सी उंगली दिखाकर नताशा को धमकी दी।

"कज़्ज़ाक!" उसने धमकाते हुए कहा।

अधिकतर मेहमान यह न समझ पाते हुए कि नताशा की इस हरकत के प्रति कैसी प्रतिक्रिया प्रकट करें, मां-बाप की ओर देख रहे थे।

"देखना, बाद में कैसी ख़बर लेती हूं तुम्हारी!" काउंटेस ने कहा।

"अम्मां! आज कौन-सी स्वीट डिश होगी?" नताशा पहले से ही यह विश्वास करते हुए कि उसकी इस शरारत का बुरा नहीं माना जायेगा, चंचलता मिश्रित प्रसन्नता से चिल्ला उठी।

सोन्या और मोटे पेत्या का हंसी के मारे बुरा हाल था तथा उन्होंने अपने मुंह छिपा लिये।

"लो, पूछ लिया," उसने फुसफुसाकर छोटे भाई और प्येर से कहा जिसपर उसने फिर से दृष्टि डाली थी।

"आइसक्रीम होगी, लेकिन तुम्हें नहीं मिलेगी," मरीया द्मीत्रियेव्ना ने कहा।

नताशा ने देखा कि डरने की कोई बात नहीं है और इसलिये वह मरीया द्मीत्रियेव्ना से भी नहीं डरी।

"मरीया द्मीत्रियेव्ना! कौन-सी आइसक्रीम होगी? ज़्यादा क्रीमवाली मुझे पसन्द नहीं।"

"गाजरवाली।"

"नहीं, कौन-सी होगी? मरीया द्मीत्रियेव्ना, कौन-सी?" वह लगभग चिल्ला उठी। "मैं जानना चाहती हूं!"

मरीया द्मीत्रियेव्ना और काउंटेस हंस पड़ीं और उनके साथ ही बाक़ी मेहमान भी। सभी मरीया द्मीत्रियेव्ना के जवाब पर नहीं, बल्कि इस लड़की के अत्यधिक साहस और चतुराई पर हंस रहे थे जो मरीया द्मीत्रियेव्ना से ऐसे अच्छी तरह और हिम्मत से निबटने में सफल रही थी।

नताशा ने तभी पिंड छोड़ा, जब उसे यह बता दिया गया कि अनानासवाली आइसक्रीम होगी। आइसक्रीम के पहले शेम्पेन पेश की गयी। फिर से आर्केस्ट्रा बजने लगा, काउंट ने काउंटेस को चूमा, मेहमानों ने खड़े होकर काउंटेस को बधाई दी, हाथ बढ़ा-बढ़ाकर काउंट और बच्चों के साथ तथा आपस में जाम छुआये-खनखनाये। फिर से बैरे दौड़-धूप करने लगे, कुर्सियों के इधर-उधर हटाये जाने की आवाज़ होने लगी और मेहमान उसी क्रम में, किन्तु अधिक लाल चेहरों के साथ दीवानख़ाने और काउंट के कमरे में लौटे।

१७

ताश का बोस्टन खेल खेलने के लिये मेज़ें रख दी गयीं, खेल के साथी चुन लिये गये और काउंट के मेहमान दो दीवानख़ानों, बैठक और पुस्तकोंवाले कमरे में बंट गये।

ताश के पत्तों को पंखे की तरह फैलाये हुए काउंट भोजन के बाद झपकी लेने की अपनी आदत पर बड़ी मुश्किल से क़ाबू पा रहे थे और हर बात पर हंस रहे थे। काउंटेस के बढ़ावा देने पर युवजन क्लावीकॉर्ड * और आर्फ़ा वाद्य-यन्त्रों के गिर्द जमा हो गये थे। सभी के अनुरोध पर यूलिया ने ही सबसे पहले आर्फ़ा पर विभिन्न रूपों में एक धुन बजायी और फिर अन्य लड़कियों के साथ मिलकर वह नताशा और निकोलाई से, जो अपने संगीत-गुणों के लिये प्रसिद्ध थे, कुछ गाने का अनुरोध करने लगी। नताशा को, जिसकी एक वयस्क की तरह गाने के लिये मिन्नत की जा रही थी, सम्भवतः गर्वानुभूति हो रही थी, मगर साथ ही वह झेंप भी रही थी।

"हम क्या गायेंगे?" उसने पूछा।

"फ़व्वारा," निकोलाई ने जवाब दिया।

"तो आओ, जल्दी से शुरू करें। बोरीस, यहां आ जाओ," नताशा ने कहा। "सोन्या कहां है?"

उसने इधर-उधर नज़र दौड़ाई और यह देखकर कि उसकी सहेली कमरे में नहीं है, उसे ढूंढ़ने के लिये बाहर भाग गयी।

वह सोन्या के कमरे में भागी और उसे वहां न पाकर बच्चों के कमरे में पहुंची – सोन्या वहां भी नहीं थी। नताशा समझ गयी कि सोन्या गलियारे में सन्दूक़ पर पड़ी होगी। गलियारे में रखा हुआ सन्दूक़ रोस्तोव परिवार की लड़कियों के लिये दुख-दर्द के क्षणों में रोने-धोने और अपना जी हल्का करने की जगह था। सचमुच ही सोन्या सन्दूक़ पर बिछे आया के रोयोंवाले, धारीदार और गन्दे गद्दे पर औंधे मुंह पड़ी थी, उसकी हल्की-फुल्की जालीदार, गुलाबी पोशाक मुसी जा रही थी और उंगलियों से मुंह को ढंके हुए वह ऐसे फूट-फूटकर रो रही थी कि उसके उघाड़े कंधे हिल-डुल रहे थे। जन्मदिन की ख़ुशी में दिन भर खिली रहनेवाली नताशा के चेहरा का भाव अचानक बदल गया – आंखों की चंचलता ग़ायब हो गयी, उसकी चौड़ी गर्दन सिहरी और उसके होंठों के सिरे लटक-से गये।

"सोन्या! क्या बात है? क्या हुआ है तुम्हें? ऊं-ऊं-ऊं!.."

नताशा का बड़ा-सा मुंह फैल गया, जिससे वह एकदम बदसूरत

---

* क्लावीकॉर्ड – पियानो का प्रारम्भिक रूप। – सं०

नज़र आने लगी, और सोन्या के रोने का कारण जाने और यह समझे बिना कि वह क्यों रो रही है, ख़ुद भी बच्चे की तरह ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी। सोन्या ने अपना सिर ऊपर उठाना, नताशा को जवाब देना चाहा, मगर ऐसा नहीं कर पायी तथा उसने अपना मुंह और भी छिपा लिया। नताशा नीली धारीवाले गद्दे पर बैठी और अपनी सहेली को बांहों में भरते हुए रो रही थी। किसी तरह अपनी ताक़त बटोरकर सोन्या उठ बैठी और अपने आंसू पोंछने तथा उसे दिल का हाल बताने लगी।

"निकोलाई एक हफ़्ते बाद फ़ौज में जा रहा है... उसके बुलावे का काग़ज़ आ गया है... उसने ख़ुद मुझे यह बताया... मैं इस कारण तो न रोती," (उसने नताशा को वह काग़ज़ दिखाया जो हाथ में लिये थी – उसपर निकोलाई द्वारा लिखी गयी कविता थी)... "मैं इस कारण तो न रोती, लेकिन तुम भी, कोई भी तो यह नहीं समझ सकता कि... वह दिल का कितना अच्छा है।"

और सोन्या फिर से इस बात के लिये रोने लगी कि निकोलाई दिल का कितना अच्छा है।

"तुम अच्छी क़िस्मतवाली हो... मैं तुमसे ईर्ष्या नहीं करती... मैं तुम्हें बहुत चाहती हूं और बोरीस को भी," उसने कुछ शान्त होते हुए कहा, "वह बहुत अच्छा है... तुम्हारे लिये कोई बाधा नहीं है। मगर निकोलाई मेरा ममेरा भाई है... ख़ुद आर्कबिशप ही हमारी शादी करवा कर सकता है... वरना हो ही नहीं सकती। किन्तु यदि वेरा अम्मां से," (सोन्या काउंटेस को अम्मां ही मानती और कहती थी)... "कहेगी कि मैं निकोलाई का कैरियर ख़राब कर रही हूं, कि मेरे सीने में दिल नहीं है, कि में कृतघ्न हूं, जबकि सच यह है... भगवान साक्षी हैं," (उसने अपने ऊपर सलीब का निशान बनाया)... "मैं उन्हें और आप सभी को इतना अधिक प्यार करती हूं, लेकिन सिर्फ़ वेरा... न जाने ऐसा क्यों है? क्या बिगाड़ा है मैंने उसका? मैं आप सबकी इतनी आभारी हूं कि ख़ुशी से अपना सब कुछ आप लोगों पर न्योछावर कर देती, मगर मेरे पास निछावर करने को कुछ है ही नहीं..."

सोन्या और कुछ नहीं कह पायी तथा उसने फिर से अपना मुंह हाथों और गद्दे में छिपा लिया। नताशा शान्त होने लगी, किन्तु उसके

चेहरे के भाव से स्पष्ट था कि वह अपनी सहेली की परेशानी के महत्त्व को अच्छी तरह से समझती है।

"सोन्या!" नताशा अचानक कह उठी मानो वह अपनी फुफेरी बहन के दुख के असली कारण को भांप गयी हो। "यह सच है न कि वेरा ने डिनर के बाद तुमसे कुछ कहा है? ठीक है न?"

"हां, यह कविता तो निकोलाई ने ख़ुद रची थी और मैंने कुछ अन्य कवितायें नक़ल कर लीं। उसे ये मेरी मेज़ पर मिल गयीं और बोली कि वह इन्हें अम्मां को दिखायेगी, कि मैं कृतघ्न हूं, कि अम्मां उसे कभी भी मुझसे शादी नहीं करने देंगी, कि वह यूलिया से शादी करेगा। तुमने देखा ही है कि कैसे वह दिन भर उसी के साथ... नताशा! क्या क़ुसूर है मेरा?.."

और वह पहले से भी अधिक व्यथित होती हुई रो पड़ी। नताशा ने उसे उठाया, गले लगाया और आंसुओं के बीच से मुस्कराते हुए उसे तसल्ली देने लगी।

"सोन्या, मेरी प्यारी सोन्या, तुम उसकी बात पर विश्वास नहीं करो, बिल्कुल विश्वास नहीं करो। तुम्हें याद है कि कैसे हाल ही में हम तीनों – तुम, मैं और निकोलाई ने रात के भोजन के बाद बैठक में बातें की थीं? हमने तो सब कुछ तय कर लिया था कि कैसे हर चीज़ की जायेगी। कैसे सब कुछ होगा, यह तो मुझे याद नहीं, लेकिन तुम्हें स्मरण होगा कि किस तरह सब कुछ अच्छा और सम्भव था। शिनशिन के भाई ने तो अपनी सगी चचेरी बहन से शादी की है और तुम्हारा तथा निकोलाई का तो तीसरी पीढ़ी का रिश्ता है। बोरीस का भी यही कहना है कि ऐसा बिल्कुल सम्भव है। जानती हो, मैंने उसे सब कुछ बता दिया। और वह इतना अच्छा तथा इतना समझदार है," नताशा कहती गयी... "तुम रोओ नहीं, मेरी प्यारी, मेरी अच्छी, लाड़ली बहन!" और उसने हंसते हुए उसे चूमा। "वेरा को दूसरों का दिल दुखाने में मजा आता है। तुम उसकी तरफ़ कोई ध्यान नहीं दो! सब कुछ ठीक हो जायेगा और वेरा अम्मां से भी कुछ नहीं कहेगी। निकोलाई ख़ुद ही अम्मां से कहेगा और यूलिया के बारे में तो उसके दिमाग़ में कभी कोई ख़्याल ही नहीं आया।"

और उसने सोन्या का सिर चूमा। सोन्या उठकर बैठ गयी - मानो बिल्ली का बच्चा फिर से रंग में आ गया था, उसकी आंखें चमक उठी

थीं और ऐसे लग रहा था कि अभी-अभी पूंछ हिलाकर वह अपने मुलायम-मुलायम पंजों पर छलांग लगायेगा तथा, जैसे कि होना चाहिये, फिर से सूत के गोले के साथ खेलने लगेगा।

"तुम ऐसा ही समझती हो? सच? क़सम खाती हो?" अपनी पोशाक और बालों को झटपट ठीक करते हुए उसने पूछा।

"सच! क़सम खाती हूं!" नताशा ने सोन्या की चोटी में से निकल आनेवाली सख़्त बालों की एक लट को ठीक करते हुए जवाब दिया।

और वे दोनों हंस पड़ीं।

"तो आओ, 'फ़व्वारा' गाने चलें।"

"चलो।"

"जानती हो, वह मोटा प्येर, जो मेरे सामने बैठा था, कुछ ऐसा है कि उसे देखकर मुझे बरबस हंसी आ जाती है," नताशा ने अचानक रुककर कहा। "मुझे बड़ी ख़ुशी महसूस हो रही है!"

और नताशा गलियारे में भाग गयी।

सोन्या अपनी पोशाक से रोयों को झाड़कर और कविता को दिल के पास अपनी चोली में छिपाकर ख़ुशी भरे हल्के-हल्के क़दमों तथा प्रसन्नता से चमकते चेहरे के साथ नताशा के पीछे-पीछे गलियारे से होती हुई बैठक में भाग गयी। मेहमानों की फ़रमाइश पर नताशा, सोन्या, बोरीस और निकोलाई ने मिलकर "फ़व्वारा" गीत गाया जो सभी को बहुत पसन्द आया। इसके बाद निकोलाई ने कुछ ही समय पहले सीखा हुआ यह गाना गाया:

खिली चांदनी, मधुर रात में
बहुत सुखद मन को लगता
यह विचार, है इस दुनिया में
याद तुम्हें भी जो करता।
उसका सुन्दर हाथ, अंगुलियां
छेड़ बीन के तार रहीं,
झंकृत होतीं मधुर लहरियां
वे तो तुम्हें पुकार रहीं।
बीतें दिन दो-चार कि प्यारा स्वर्ग मिले
किन्तु हाय! तेरी प्यारी को मृत्यु छले!

निकोलाई गाने के अन्तिम शब्द ख़त्म भी नहीं कर पाया था कि हॉल में जवान लोग नाचने को तैयार हो गये और गैलरी में आर्केस्ट्रावालों के इधर-उधर आने-जाने तथा खांसने की आवाज़ें सुनायी देने लगीं।

प्येर दीवानख़ाने में बैठा था जहां शिनशिन ने कुछ ही समय पहले विदेश से लौटे व्यक्ति के नाते उसके साथ राजनीतिक बातचीत शुरू कर दी थी, जिसमें दूसरे लोग भी शामिल हो गये थे। प्येर के लिये यह बातचीत ऊब भरी थी। जब आर्केस्ट्रा बज उठा तो नताशा दीवानख़ाने में आई और सीधे प्येर के पास जाकर उसने हंसते तथा लज्जारुण होते हुए उससे कहा :

"अम्मां ने कहा है कि मैं आपको अपने साथ नाचने के लिये आमन्त्रित करूं।"

"मुझे डर है कि मैं नृत्य-मुद्राओं में गड़बड़ कर दूंगा," प्येर ने जवाब दिया। "लेकिन यदि आप मेरी शिक्षिका बनना चाहती हैं तो..."

और उसने अपना भारी हाथ नीचे झुकाते हुए उसे दुबली-पतली-सी नताशा की ओर बढ़ा दिया।

जब तक नाच के दूसरे जोड़े बने और आर्केस्ट्रावालों ने अपने बाजे सुर में किये, प्येर अपनी इस छोटी-सी नृत्य-संगिनी के पास बैठा रहा। नताशा बहुत ही ख़ुश थी, वह **विदेश से** लौटनेवाले **वयस्क व्यक्ति** के साथ नाचनेवाली थी। वह सबकी नज़रों में आ रही थी और प्येर के साथ वयस्क की भांति बातचीत कर रही थी। उसके हाथ में पंखा था जो किसी युवती ने थोड़ी देर को उसे पकड़ा दिया था। ऊंची सोसाइटी की महिला जैसी मुद्रा बनाये हुए (भगवान ही जानें कि उसने कहां और कैसे यह सब सीख लिया था) वह पंखा डुलाते और उसकी ओट में मुस्कराते हुए अपने नृत्य-साथी के साथ बातें कर रही थी।

"अरे, वाह! अरे, वाह! देखिये, ज़रा इसे तो देखिये," बूढ़ी काउंटेस ने हॉल से गुज़रते हुए नताशा की ओर संकेत करके कहा।

नताशा लजाकर लाल हो गयी और हंस पड़ी।

"अम्मां, आप ऐसा क्यों कह रही हैं? भला किसलिये? इसमें हैरानी की कौन-सी बात है?"

तीसरे 'एकोसेज़' नृत्य के मध्य में दीवानख़ाने में, जहां काउंट और मरीया द्मीत्रियेव्ना तथा अधिकांश सम्मानित अतिथि और बुज़ुर्ग ताश खेल रहे थे, कुर्सियां हिली-डुलीं। बहुत देर तक बैठे रहने के बाद उन्होंने अंगड़ाइयां लेकर अपने बदन को सीधा किया, छोटे-बड़े बटुए जेब में डाले और हॉल में आये। मरीया द्मीत्रियेव्ना और काउंट सबसे आगे-आगे थे तथा उनके चेहरे खिले हुए थे। काउंट ने मज़ाक़िया-सी शिष्टता दिखाते हुए बैले-नर्तक के अन्दाज़ में अपने हाथ को मोड़कर मरीया द्मीत्रियेव्ना की ओर बढ़ा दिया। वह सीधा तन गये, उनका चेहरा एक ख़ास ख़ुशी और चालाकी भरी मुस्कान से चमक उठा तथा जैसे ही 'एकोसेज़' की अन्तिम मुद्रा का नृत्य समाप्त हुआ, काउंट ने ज़ोर से ताली बजाकर आर्केस्ट्रावालों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया और प्रमुख वायलिनवादक को सम्बोधित करते हुए कहा :

"सेम्योन! 'डानियल कूपर' नाच तो जानते हो न?"

यह काउंट का सबसे ज़्यादा मनपसन्द नाच था जिसे वह अपनी जवानी के दिनों में नाचते रहे थे। (डानियल कूपर वास्तव में **अंगलेज़** नाच का ही एक अंश था।)

"पापा को तो देखिये," नताशा पूरे ज़ोर से चिल्ला उठी (बिल्कुल यह भूलते हुए कि वह वयस्क प्येर के साथ नाच रही है), उसने घुंघराले बालोंवाला सिर घुटनों की ओर झुका दिया और सारे हॉल में उसकी ज़ोरदार हंसी गूंज उठी।

वास्तव में ही हॉल में उपस्थित सभी लोग ख़ुशी से मुस्कराते हुए इस ख़ुशमिज़ाज बूढ़े काउंट की ओर देख रहे थे जो अपने से लम्बी, मज़बूत काठीवाली मरीया द्मीत्रियेव्ना के साथ नाचते हुए संगीत की लय पर हाथों से तरह-तरह की मुद्रायें बना रहे थे, कंधों को तान रहे थे, पांवों से हल्की-हल्की थाप देकर उन्हें इधर-उधर हिला-डुला रहे थे तथा अपने गोल चेहरे पर मुस्कान को अधिकाधिक फैलाते हुए दर्शकों को आगे के दृश्य के लिये तैयार कर रहे थे। जैसे ही 'डानियल कूपर' की उल्लासपूर्ण और चुनौती देती-सी ध्वनियां सुनायी दीं, जो ख़ुशी भरे रूसी लोक-नृत्य से मिलती-जुलती थीं, वैसे ही हॉल के सभी दरवाज़ों पर अचानक एक ओर पुरुषों तथा दूसरी ओर औरतों की भीड़ जमा हो गयी। ख़ुशी से खिले चेहरोंवाले ये नौकर-नौकरानियां थे जो अपने मालिक को नाचते और मौज करते हुए देखने आये थे।

"देखो तो हमारे मालिक को! उक़ाब हैं, उक़ाब!" एक दरवाज़े से आया ऊंची आवाज़ में कह उठी।

काउंट ख़ूब अच्छा नाचते थे और वह स्वयं भी यह जानते थे। मगर उनकी नृत्य-संगिनी बिल्कुल अनाड़ी थी और ढंग से नाचना भी नहीं चाहती थी। बड़ी काठीवाला उसका शरीर सीधा तना हुआ था, मज़बूत बांहें दायें-बायें नीचे लटकी हुई थीं (उसने अपना हैंडबैग काउंटेस को दे दिया था) और केवल उसका कठोर, किन्तु सुन्दर चेहरा ही नाच रहा था। काउंट का पूरा गोल-मटोल शरीर जो कुछ व्यक्त कर रहा था, उस सभी को मरीया द्मीत्रियेव्ना का अधिकाधिक मुस्कराता चेहरा और हिलती-डुलती नाक ही अभिव्यक्ति दे रहे थे। किन्तु यदि अधिकाधिक रंग में आते हुए काउंट दर्शकों को अप्रत्याशित फुर्तीली फिरकैयों और हल्की, सजीली कुलांचों से मुग्ध कर रहे थे तो मरीया द्मीत्रियेव्ना कंधों को मटकाकर या पांवों की ताल के साथ हाथों से तरह-तरह की मुद्रायें बनाकर कुछ कम प्रभाव पैदा नहीं कर रही थी और उसके भारी-भरकम शरीर तथा उसकी सदा बनी रहनेवाली कठोरता को ध्यान में रखते हुए हर कोई इसका ऊंचा मूल्यांकन कर रहा था। नाच में अधिकाधिक सजीवता आती जा रही थी। दूसरे जोड़े क्षण भर को भी अपनी ओर ध्यान आकर्षित नहीं कर पाये और उन्होंने इसके लिये कोशिश भी नहीं की। सभी की नज़रें काउंट और मरीया द्मीत्रियेव्ना पर जमी हुई थीं। नताशा सभी की आस्तीनें या पोशाकों के पल्लू खींचकर इस बात का अनुरोध कर रही थी कि वे पापा की तरफ़ ध्यान दें, जबकि सब तो वैसे ही इस जोड़े को एकटक देख रहे थे। काउंट नाच के बीच आनेवाले विरामों में ज़रा कठिनाई से सांस लेते, आर्केस्ट्रावालों की तरफ़ हाथ हिलाते और चिल्लाते कि वे और भी द्रुत गति से धुन बजायें। अधिकाधिक तेज़, और तेज़, और ज़्यादा तेज़ तथा अधिकाधिक फुर्ती से नाचते हुए काउंट कभी पंजों तथा कभी एड़ियों के सहारे मरीया द्मीत्रियेव्ना के इर्द-गिर्द चक्कर काटते रहे और आख़िर अपनी नृत्य-संगिनी को उसकी जगह पर ले जाकर उन्होंने अपने एक पांव को फुर्ती से पीछे की ओर उठाकर मुस्कराते चेहरे तथा पसीने से तर माथेवाला सिर झुकाया तथा दायें हाथ को घुमाकर अन्तिम नृत्य-मुद्रा बनायी। सभी लोग, ख़ास तौर पर नताशा, ख़ूब ज़ोर से हंस और तालियां बजा रहे थे। दोनों नृत्य-

साथी बुरी तरह हांफते और सूती रूमालों से पसीना पोंछते हुए रुक गये।

"तो ऐसे नाचते थे हमारे ज़माने में, मेरी प्यारी," काउंट ने कहा।

"यह था असली 'डानियल कूपर'," बड़ी मुश्किल से सांस लेती, अपने को सम्भालती और आस्तीनों को ऊपर चढ़ाती हुई मरीया द्मीत्रियेव्ना बोली।

१८

रोस्तोव परिवार में जिस समय क्लान्त वादकों की बेसुरी धुन के साथ छठा **अंगलेज़** नाच चल रहा था और थके-टूटे बैरे तथा बावर्ची डिनर की तैयारी कर रहे थे, काउंट बेज़ूख़ोव को बीमारी का छठा दौरा पड़ा। डाक्टरों ने कह दिया कि रोगी के बचने की कोई आशा नहीं। असमर्थ रोगी के लिये पाप-स्वीकरण की रस्म तथा धार्मिक अनुष्ठान सम्पन्न किया गया, उसके शरीर पर तेल लगाने के अन्तिम धार्मिक संस्कार की तैयारी की जाने लगी और जैसा कि सामान्यतः ऐसे क्षणों में होता है, घर में दौड़-धूप हो रही थी तथा इस तरह की बेचैनी का वातावरण था कि कुछ देर बाद वहां क्या होनेवाला है। घर के बाहर, फाटकों के पीछे कफ़न-दफ़न का सारा इन्तज़ाम करनेवालों की भीड़ जमा थी जो यहां आनेवाली बग्घियों से अपने को छिपाते हुए काउंट के मातमी जुलूस के लिये बढ़िया आर्डर पाने की उम्मीद कर रहे थे। मास्को का फ़ौजी गवर्नर, जो काउंट का हालचाल मालूम करने के लिये लगातार अपने एडजुटेंट यहां भेजता रहा था, इस शाम को सम्राज्ञी येकतेरीना के ज़माने के इस यूसुफ़, काउंट बेज़ूख़ोव से अन्तिम विदा लेने के लिये ख़ुद आया।

भव्य दीवानख़ाना लोगों से भरा हुआ था। लगभग आध घण्टे तक रोगी के साथ उसके कमरे में अकेले ही रहने के बाद फ़ौजी गवर्नर जब बाहर आया तो दीवानख़ाने में बैठे सभी लोग सादर उठकर खड़े हो गये और वह अपने चेहरे पर नज़रें जमाये डाक्टरों, पादरियों और रिश्तेदारों के अभिवादनों के जवाब में ज़रा सिर झुकाता हुआ जल्दी

से बाहर चला गया। प्रिंस वसीली, जो इन दिनों के दौरान थोड़ा दुबला हो गया था और जिसका चेहरा कुछ पीला पड़ गया था, फ़ौजी गवर्नर को दरवाज़े तक छोड़ने गया और साथ जाते हुए धीरे-धीरे कुछ कहता जा रहा था।

फ़ौजी गवर्नर को विदा करने के बाद प्रिंस वसीली हॉल में अकेला कुर्सी पर जा बैठा। उसने टांग पर टांग रख ली, कोहनी को घुटने पर टिका लिया और हाथ से आंखों को ढंक लिया। कुछ देर तक ऐसे ही बैठे रहने के बाद वह उठा और डरी-डरी नज़रों से इधर-उधर देखते तथा तेज़ क़दमों से, जो उसके लिये सामान्य बात नहीं थी, लम्बे गलियारे को लांघते हुए घर के पिछले भाग में बड़ी प्रिंसेस के कमरे की तरफ़ चला गया।

मद्धिम रोशनीवाले दीवानख़ाने में बैठे लोग ऊंची-नीची फुसफुसाहट में आपस में बातें कर रहे थे और जब कभी अन्तिम सांसें ले रहे काउंट के कमरे में किसी के भीतर जाने या वहां से बाहर आने पर दरवाज़े की हल्की-सी आवाज़ होती तो वे चुप हो जाते और प्रश्नसूचक तथा प्रत्याशित नज़रों से दरवाज़े की तरफ़ देखने लगते।

"मानव जीवन की एक सीमा है," एक बूढ़ा पादरी अपने पास बैठी और भोलेपन से उसकी बातें सुननेवाली महिला से कह रहा था, "मानव जीवन की एक सीमा है और उसे पार नहीं किया जा सकता।"

"मैं यह सोच रही हूं कि क्या अन्तिम धार्मिक संस्कार के लिये देर नहीं हो गयी?" महिला ने पादरी के लिये कोई सम्मानसूचक शब्द जोड़ते हुए ऐसे पूछा मानो इस बारे में उसका अपना कोई मत न हो।

"ओह, यह महान संस्कार है," पादरी ने अपनी चांद पर हाथ फेरते हुए, जहां कुछ-कुछ सफ़ेद हो चुके बालों की थोड़ी-सी लटें संवरी हुई थीं, जवाब दिया।

"यह कौन था? क्या ख़ुद फ़ौजी गवर्नर?" कमरे के दूसरे सिरे पर पूछा जा रहा था। "कितना जवान-सा लगता है!.."

"और उसे सातवां दशक चल रहा है! कहते हैं कि काउंट तो किसी को पहचानते ही नहीं? क्या अन्तिम धार्मिक संस्कार करनेवाले हैं?"

"मैं एक ऐसे व्यक्ति को भी जानता था जिसका सात बार ऐसे अन्तिम धार्मिक संस्कार किया गया था।"

मंझली प्रिंसेस रोगी के कमरे से बाहर आयी। रोने के कारण उसकी आंखें लाल थीं। वह डाक्टर लोरान के पास बैठ गयी जो सम्राज्ञी येकतेरीना के छविचित्र के नीचे मेज़ पर कोहनियां टिकाये और सुन्दर मुद्रा बनाये बैठा था।

"हां, बहुत प्यारा, बहुत प्यारा मौसम है, प्रिंसेस," मौसम के बारे में प्रिंसेस के सवाल का जवाब देते हुए उसने कहा, "और फिर मास्को तो है भी गांव जैसा।"

"है न?" प्रिंसेस उसांस लेते हुए बोली। "तो काउंट को पीने के लिये कुछ दिया जा सकता है?"

लोरान सोचने लगा।

"उन्हें दवा दी जा चुकी है?"

"हां।"

डाक्टर ने घड़ी पर नज़र डाली।

"उबले पानी के गिलास में चुटकी भर," (उसने पतली-पतली उंगलियों से यह दिखाया कि चुटकी से उसका क्या अभिप्राय है), "टार्टर क्रीम डालकर पिला दीजिये..."

"ऐशा तो कोभी होवा ही नहीं," जर्मन डाक्टर रूसी शब्दों का ग़लत उच्चारण करते हुए एडजुटेंट से कह रहा था, "कि कोई तीशरे दौरे के बाद ज़िन्दा बचा हो।"

"और कैसा ग़ज़ब का मर्द था!" एडजुटेंट ने कहा। "काउंट की दौलत किसको मिलेगी?" उसने फुसफुसाते हुए पूछा।

"कुछ कमी नहीं होगी उसे पाने की चाह रखनेवालों की," जर्मन ने मुस्कराते हुए जवाब दिया।

फिर से सभी की नज़रें दरवाज़े की तरफ़ घूम गयीं। वह धीरे से चरमराया और मंझली प्रिंसेस डाक्टर लोरान द्वारा बताया गया पेय तैयार करके उसे रोगी को पिलाने के लिये ले गयी। जर्मन डाक्टर लोरान के पास गया।

"शायद कल सुबह तक मामला खिंच जाये?" भद्दे ढंग से फ़्रांसीसी बोलते हुए जर्मन डाक्टर ने प्रश्न किया।

लोरान ने अपने होंठों को भींचा और कड़ाई से तथा इन्कार करते हुए अपनी नाक के सामने उंगली हिलायी।

"आज रात तक क़िस्सा ख़त्म हो जायेगा," उसने इस आत्म-

सन्तोष के साथ कि वह रोगी की स्थिति को स्पष्ट रूप से समझ और व्यक्त कर सकता है, शिष्टतापूर्वक मुस्कराकर धीरे से जवाब दिया और एक तरफ़ को हट गया।

इसी बीच प्रिंस वसीली ने प्रिंसेस कतेरीना सेम्योनोव्ना के कमरे का दरवाज़ा खोला।

कमरे में अध-अन्धेरा था, केवल देव-प्रतिमाओं के सामने दो दीप जल रहे थे तथा धूपबत्ती और फूलों की प्यारी सुगन्ध फैली हुई थी। सारा कमरा छोटी-छोटी अलमारियों और मेज़ों से भरा हुआ था। परदे के पीछे रोयों के गद्देवाले ऊंचे पलंग का पलंगपोश नज़र आ रहा था। छोटा-सा कुत्ता भौंकने लगा।

"आह, यह आप हैं, भाई जान?"

वह उठकर खड़ी हो गयी और उसने अपने बालों को ठीक किया जो हमेशा, यहां तक कि इस समय भी असाधारण रूप से ऐसे चिकने और चिपके हुए थे मानो सिर के साथ एक ही अंश के बने हों और उनपर पालिश की गयी हो।

"क्या कोई बात हो गयी है?" उसने पूछा। "मैं तो हर वक़्त बहुत ही डरी-सहमी रहती हूं।"

"नहीं, कोई तबदीली नहीं हुई। मैं तो तुम्हारे साथ कुछ काम की बात करने आया हूं, कतीश," थके-थके प्रिंस ने उस आराम-कुर्सी पर बैठते हुए कहा जिससे प्रिंसेस कतेरीना उठी थी। "लेकिन तुमने कुर्सी को बहुत ही गर्म कर रखा है," उसने कहा। "ख़ैर, यहां बैठो, कुछ बातचीत करें।"

"मैंने सोचा कि कहीं कुछ हो तो नहीं गया?" प्रिंसेस बोली और अपने चेहरे को हमेशा की तरह कठोर और भावनाहीन बनाये हुए प्रिंस की बात सुनने को तैयार होती हुई उसके सामने बैठ गयी।

"मैं तो सोना चाहती थी, भाई जान, मगर सो नहीं सकी।"

"तो, मेरी प्यारी बहन?" प्रिंस वसीली ने प्रिंसेस का हाथ अपने हाथ में लेते और आदत के मुताबिक़ उसे नीचे की ओर झुकाते हुए कहा।

स्पष्ट था कि इस 'तो' का बहुत-सी उन चीज़ों से सम्बन्ध था जिनका उल्लेख किये बिना ही वे दोनों अच्छी तरह से समझते थे।

प्रिंसेस, जिसका पतला और सीधा धड़ उसकी टांगों की तुलना में कहीं लम्बा था, अपनी बाहर को निकली भूरी आंखों से सीधे और भावशून्य-सी प्रिंस की ओर देख रही थी। उसने सिर हिलाया और आह भरकर देव-प्रतिमा की ओर देखा। उसकी इस मुद्रा को दुख और श्रद्धा की अभिव्यक्ति तथा थकान और शीघ्र ही विश्राम की आशा की अभिव्यक्ति भी माना जा सकता था। प्रिंस वसीली ने इसे थकान की अभिव्यक्ति का संकेत समझा।

"तुम क्या समझती हो कि मेरे लिये यह सब कुछ आसान है? मेरा तो डाक की बग्घी के घोड़े जैसा बुरा हाल है। फिर भी मुझे तुमसे बात करनी है, कतीश, और सो भी बहुत संजीदा।"

प्रिंस वसीली चुप हो गया और उत्तेजना से कभी उसका दायां तो कभी बायां गाल फड़कने लगा जिससे उसके चेहरे पर ऐसा अप्रिय भाव आ गया, जैसा कि लोगों की संगत में उसके चेहरे पर कभी नहीं आता था। उसकी आंखें भी सदा जैसी नहीं थीं – कभी तो उनमें उपहासजनक निर्लज्जता झलक उठती और कभी वह भयभीत-सा होकर इधर-उधर देखता।

प्रिंसेस दुबले-पतले और हड़ीले हाथों से कुत्ते को गोद में थामे हुए प्रिंस वसीली की आंखों में एकटक देख रही थी और साफ़ नज़र आ रहा था कि बेशक उसे सुबह तक चुप रहना पड़े, वह कोई प्रश्न करके इस मौन को भंग नहीं करेगी।

"बात यह है, मेरी प्यारी प्रिंसेस और रिश्ते की बहन, कतेरीना सेम्योनोव्ना," प्रिंस वसीली ने अपना कथन जारी रखा और ऐसा करने के लिये सम्भवतः उसे भी आन्तरिक संघर्ष करना पड़ा था, "ऐसे क्षणों में सभी चीज़ों के बारे में ख़ूब अच्छी तरह से सोच-विचार करना चाहिये। भविष्य के बारे में, तुम तीनों बहनों के बारे में सोचना चाहिये ... तुम तो जानती ही हो कि मैं तुम तीनों बहनों को अपने बच्चों की तरह प्यार करता हूं।"

प्रिंसेस पहले की भांति उसे बुझी-बुझी और गतिहीन दृष्टि से देखती रही।

"और फिर मुझे अपने परिवार के बारे में भी सोचना चाहिये," झल्लाहट से अपने सामने रखी छोटी-सी मेज़ को आगे की ओर खिसकाते तथा प्रिंसेस की तरफ़ देखे बिना प्रिंस वसीली कहता गया, "तुम

जानती हो, कतीश, कि तुम तीनों मामोन्तोव बहनें और मेरी बीवी ही काउंट की सीधी उत्तराधिकारी हैं। मैं जानता हूं कि तुम्हारे लिये ऐसी बातों की चर्चा करना और इनके बारे में सोचना कितना कष्टप्रद है। मेरे लिये भी यह कुछ आसान नहीं। किन्तु, मेरी प्यारी, मैं साठ के क़रीब पहुंच रहा हूं और मुझे हर चीज़ के लिये तैयार रहना चाहिये। तुम्हें मालूम है या नहीं कि मैंने प्येर को बुला लाने के लिये आदमी भेजा है और काउंट ने उसके छविचित्र की ओर संकेत करते हुए उसे अपने पास बुलाने की मांग की है?"

प्रिंस वसीली ने प्रश्नसूचक दृष्टि से प्रिंसेस की ओर देखा, मगर यह नहीं समझ पाया कि उसने उससे जो कुछ कहा है, वह उसका मतलब समझ गयी या ऐसे ही उसकी ओर देखती जा रही है...

"मैं एक बात के लिये भगवान से लगातार प्रार्थना कर रही हूं, भाई साहब," प्रिंसेस ने उत्तर दिया, "कि वह काउंट पर दया करें और उनकी बहुत ही अच्छी आत्मा को शान्ति से इस दुनिया से विदा होने दें..."

"हां, यह तो ठीक है," प्रिंस वसीली ने अपनी चांद पर हाथ फेरते और झल्लाहट से छोटी-सी मेज़ को पुनः अपनी ओर खींचते हुए अपनी बात जारी रखी, "लेकिन फिर भी, फिर भी मामला यह है कि, जैसे तुम जानती ही हो, काउंट ने पिछले जाड़े में अपना वसीयतनामा लिखा था जिसके मुताबिक़ अपने सीधे वारिसों की और हमारी अवहेलना करते हुए उन्होंने सारी सम्पत्ति प्येर को दे दी है।"

"काउंट के वसीयतनामा लिख देने से क्या फ़र्क़ पड़ता है," प्रिंसेस ने शान्ति से जवाब दिया, "किन्तु वह प्येर को अपनी सम्पत्ति नहीं दे सकते। प्येर उनका क़ानूनी बेटा नहीं है।"

"मेरी प्यारी बहन," प्रिंस वसीली ने मेज़ को अपने साथ सटाते और जोश से जल्दी-जल्दी बोलते हुए अचानक कहा, "लेकिन अगर सम्राट के नाम पत्र लिखा गया है और काउंट ने उनसे प्येर को क़ानूनी बेटा मान लेने की प्रार्थना की है, तब क्या होगा? समझती हो न, कि काउंट की सेवाओं को ध्यान में रखते हुए उनकी इस प्रार्थना को स्वीकार कर लिया जायेगा..."

प्रिंसेस उन लोगों की तरह मुस्करा दी जो यह समझते हैं कि वे मामले को उनसे ज़्यादा अच्छी तरह समझते हैं जिनसे बात कर रहे हैं।

"मैं तुम्हें कुछ और भी बता सकता हूं," प्रिंसेस का हाथ अपने हाथ में लेकर प्रिंस वसीली कहता गया, "ऐसा पत्र लिखा गया था, यद्यपि वह भेजा नहीं गया और सम्राट को इसके बारे में मालूम है। प्रश्न केवल यह है कि यह पत्र नष्ट किया गया या नहीं। अगर नहीं, तो जैसे ही **सब कुछ ख़त्म होगा**," प्रिंस वसीली ने गहरी सांस ली और इस तरह से यह स्पष्ट कर दिया कि जैसे ही **सब कुछ ख़त्म होगा** शब्दों से उसका **क्या** अभिप्राय है, "और काउंट के काग़ज़ खोले जायेंगे, उनका वसीयतनामा और पत्र सम्राट को दे दिये जायेंगे और उनकी प्रार्थना को ज़रूर मान्यता प्रदान कर दी जायेगी। तब क़ानूनी बेटे के रूप में प्येर ही को सारी सम्पत्ति मिल जायेगी।"

"और हमारा हिस्सा?" प्रिंसेस ने ऐसे व्यंग्यपूर्वक मुस्कराकर पूछा मानो और सब कुछ सम्भव है, मगर यह नहीं हो सकता।

"लेकिन, प्यारी कतीश, यह तो दिन के उजाले की तरह साफ़ है। तब तो वही सारी सम्पत्ति का क़ानूनी वारिस होगा और तुम तीनों बहनों को एक पैसा भी नहीं मिलेगा। मेरी प्यारी, तुम्हें यह मालूम होना चाहिये कि वसीयतनामा और ख़त लिखा गया था या नहीं तथा उन्हें नष्ट किया गया या नहीं। और अगर किसी कारण ऐसा नहीं किया गया है तो तुम्हें मालूम होना चाहिये कि वे कहां हैं और उन्हें ढूंढ़ना चाहिये, क्योंकि..."

"यह भी ख़ूब रही!" प्रिंसेस ने कटुतापूर्वक मुस्कराकर, किन्तु आंखों का भाव बदले बिना प्रिंस को टोक दिया। "मैं औरत हूं और आप पुरुषों के अनुसार हम सब बुद्धू हैं। फिर भी मैं इतना जानती हूं कि ग़ैरक़ानूनी बेटा वारिस नहीं बन सकता... ग़ैरक़ानूनी," उसने यह मानते हुए फ़्रांसीसी में कहा मानो इस तरह प्रिंस के मत को निर्णायक रूप से निराधार प्रमाणित कर देगी।

"ओह, कतीश, आख़िर तुम समझती क्यों नहीं! तुम इतनी समझदार हो, तुम इतनी बात क्यों नहीं समझतीं कि अगर काउंट ने सम्राट को पत्र लिखा है और उसमें यह प्रार्थना की है कि उनके बेटे को क़ानूनी मान लिया जाये तो इसका यह मतलब होगा कि वह प्येर न रहकर काउंट बेज़ूख़ोव हो जायेगा और तब वसीयतनामे के मुताबिक़ उसे ही सारी सम्पत्ति मिल जायेगी। और अगर वसीयतनामा तथा पत्र नष्ट नहीं किये गये तो इस सान्त्वना के अतिरिक्त तुम्हें कुछ

नहीं मिलेगा कि तुमने बड़ी निष्ठा से अपना कर्त्तव्य पूरा किया तथा इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं। मेरी इस बात को पत्थर की लकीर मानो।"

"मैं जानती हूं कि वसीयतनामा लिखा गया है, मगर यह भी जानती हूं कि उसकी ज़रा भी क़ानूनी क़ीमत नहीं। भाई साहब, आप मुझे बिल्कुल उल्लू समझते हैं," प्रिंसेस ने ऐसे ढंग से कहा जैसे यह माननेवाली औरतें कहती हैं जो यह समझती हैं कि उन्होंने कोई बहुत ही समझदारी की तथा चुभती हुई बात कही है।

"मेरी प्यारी प्रिंसेस, कतेरीना सेम्योनोव्ना!" प्रिंस वसीली अधीर होते हुए कह उठा। "मैं तुम्हारे पास बहस करने के लिये नहीं, बल्कि अपनी एक रिश्तेदार, भली, नेक और असली रिश्तेदार के साथ तुम्हारे ही भले की बात करने आया हूं। मैं दसवीं बार तुमसे यह कह रहा हूं कि अगर सम्राट के नाम पत्र और प्येर के हक़ में लिखा गया वसीयतनामा काउंट के काग़ज़ों में क़ायम हैं तो, मेरी प्यारी, तुम और तुम्हारी बहनें सम्पत्ति की वारिस नहीं हो सकतीं। अगर तुम्हें मेरी बात का यक़ीन नहीं तो इस मामले के जानकार लोगों की राय पर विश्वास करो – मैंने अभी-अभी द्मीत्री अनूफ़्रीइच (जो इस परिवार का वकील था) से बात की है। उसने भी यही कहा है।"

प्रिंसेस के विचारों में सम्भवतः सहसा कोई परिवर्त्तन हो गया – उसके पतले-पतले होंठों का रंग उड़ गया (यद्यपि आंखें पहले जैसी ही बनी रहीं) और जब वह बोलने लगी तो उसकी आवाज़ ऐसे झटकों के साथ इस तरह टूट-टूट जाती थी कि जिसकी सम्भवतः उसने ख़ुद भी आशा नहीं की थी।

"यह तो बहुत अच्छा होगा," प्रिंसेस बोली। "मैं तो पहले भी कुछ नहीं चाहती थी और अब भी नहीं चाहती।"

उसने अपने कुत्ते को गोद से नीचे उतार दिया और पोशाक की सिलवटें ठीक कीं।

"यह है आभार, यह है कृतज्ञता उन लोगों के प्रति जिन्होंने उनके लिये सब कुछ क़ुर्बान कर दिया," उसने कहा। "कमाल है! बहुत ख़ूब! मुझे कुछ भी नहीं चाहिये, प्रिंस।"

"लेकिन सवाल सिर्फ़ तुम्हारा नहीं है, तुम्हारी बहनें भी तो हैं," प्रिंस वसीली ने जवाब दिया।

किन्तु प्रिंसेस अब उसकी बात नहीं सुन रही थी।

"हां, मैं बहुत पहले से यह जानती थी, किन्तु भूल गयी थी कि नीचता, छल-कपट, ईर्ष्या, षड्यन्त्र के सिवा, कृतघ्नता, घटिया से घटिया कृतघ्नता के सिवा मुझे इस घर में और किसी भी चीज़ की आशा नहीं करनी चाहिये थी..."

"तुम यह जानती हो या नहीं कि वसीयतनामा है कहां?" प्रिंस वसीली ने गालों को पहले से अधिक ऐंठते हुए पूछा।

"हां, मैं मूर्ख थी, अभी भी लोगों पर विश्वास करती थी, उन्हें प्यार करती थी और मैंने उनके लिये आत्म-बलिदान किया। किन्तु नीच और कमीनों को ही सफलता मिलती है। मैं जानती हूं कि किसने यह सारा षड्यन्त्र रचा है।"

प्रिंसेस ने उठना चाहा, मगर प्रिंस ने उसका हाथ पकड़ लिया। प्रिंसेस के चेहरे पर ऐसे व्यक्ति जैसा भाव था जो अचानक पूरी मानव-जाति से निराश हो जाता है। उसने सालती दृष्टि से प्रिंस की तरफ़ देखा।

"अभी वक़्त है, मेरी बहन। तुम इस बात को ध्यान में रखो कतीश, कि यह सब आकस्मिक क्रोध तथा बीमारी के क्षण में किया गया था और बाद में भुला दिया गया। मेरी प्यारी, हमारा कर्त्तव्य है कि हम काउंट की भूल को सुधारें, यह अन्याय न होने देकर उनके जीवन के अन्तिम क्षणों में उन्हें चैन दें, उन्हें यह अनुभव करते हुए न मरने दें कि उन्होंने उन लोगों का दिल दुखाया है..."

"जिन्होंने उनके लिये अपना सब कुछ क़ुर्बान कर दिया," प्रिंसेस ने फिर से उठने की कोशिश करते हुए प्रिंस का वाक्य पूरा किया। किन्तु प्रिंस वसीली ने उसे उठने नहीं दिया। "और जिस क़ुर्बानी का वह कभी मूल्य नहीं आंक सके। नहीं, भाई साहब," वह आह भरकर कहती गयी, "मैं यह याद रखूंगी कि इस दुनिया में हमें किसी तरह के पुरस्कार की आशा नहीं करनी चाहिये, कि इस दुनिया में न तो धर्म-ईमान है और न इन्साफ़। इस दुनिया में आदमी को चालाक और दुष्ट होना चाहिये।"

"बस, बस, शान्त हो जाओ। मैं जानता हूं कि तुम्हारा दिल कितना अच्छा है।"

"नहीं, मेरा दिल बहुत बुरा है।"

"मैं जानता हूं तुम्हारे दिल को," प्रिंस वसीली ने दोहराया। "मैं तुम्हारी मैत्री को बहुत मूल्यवान मानता हूं और चाहता हूं कि मेरे बारे में भी तुम्हारी ऐसी ही भावना हो। अपने को शान्त करो और जब तक वक़्त है – शायद एक दिन, शायद एक घण्टा – हमें ढंग से बातचीत कर लेनी चाहिये। वसीयतनामे के बारे में तुम जो कुछ जानती हो, वह सब, और मुख्यतः तो यह बताओ कि वह कहां है। तुम्हें यह मालूम होना चाहिये। हम इसी वक़्त उसे ले जाकर काउंट को दिखायेंगे। वह तो अवश्य ही उसके बारे में भूल चुके होंगे और यह चाहेंगे कि उसे नष्ट कर दिया जाये। तुम समझती हो न कि मेरी तो सिर्फ़ एक ही इच्छा है – काउंट की चाह की पावन पूर्त्ति। मैं केवल इसीलिये यहां आया हूं। मैं तो काउंट और तुम लोगों की मदद करने के लिये ही यहां हूं।"

"अब मैं सब कुछ समझ गयी। मैं जानती हूं कि किसने यह षड्यन्त्र रचा है। मैं जानती हूं," प्रिंसेस ने कहा।

"महत्त्व की बात यह नहीं है, मेरी बहन।"

"यह आपकी आश्रिता, आपकी प्यारी आन्ना मिख़ाइलोव्ना की ही करतूत है जिसे मैं अपनी नौकरानी भी नहीं रखना चाहूंगी – उसी कमीनी, उसी नीच औरत की करतूत है यह।"

"हमें वक़्त बरबाद नहीं करना चाहिये।"

"ओह, रहने दीजिये! पिछले जाड़े में वह यहां आ घुसी और उसने काउंट से हम सभी के बारे में, ख़ास तौर पर सोफ़िया के बारे में ऐसी-ऐसी घटिया और बुरी-बुरी बातें कह दीं कि मैं उन्हें ज़बान पर भी नहीं ला सकती। ऐसी बातें सुनकर काउंट बीमार हो गये और दो हफ़्ते तक उन्होंने हमारी सूरत तक नहीं देखनी चाही। मुझे मालूम है कि उसी वक़्त उन्होंने यह भयानक, यह घटिया काग़ज़ लिखा था, मगर मैं समझती थी कि इसका कोई महत्त्व नहीं है।"

"यही तो असली बात है। तुमने इसके बारे में मुझे पहले क्यों नहीं बताया?"

"यह काग़ज़ पच्चीकारी की सज्जावाले उस थैले में है जिसे वह हमेशा अपने तकिये के नीचे रखते हैं। अब मैं जानती हूं," प्रिंस के प्रश्न का उत्तर न देते हुए उसने कहा। "अगर मेरा कोई पाप हो सकता है, बहुत बड़ा पाप, तो वह इस नीच औरत से गहरी नफ़रत

ही है," एकदम बदल जानेवाली प्रिंसेस चिल्ला उठी। "किसलिये वह यहां घुसती रहती है? लेकिन मैं उससे सब कुछ, सब कुछ कह दूंगी। हां, वह वक़्त भी आयेगा!"

१९

दीवानख़ाने और प्रिंसेस के कमरे में जिस वक़्त ऐसी बातें हो रही थीं, उसी समय प्येर (जिसे बुलवाया गया था) और आन्ना मिख़ाइलोव्ना (जिसने प्येर के साथ आना ज़रूरी समझा था) को लानेवाली बग्घी काउंट बेज़ूख़ोव के अहाते में दाख़िल हो रही थी। जब खिड़कियों के नीचे बिछे हुए फूस पर बग्घी के पहियों की धीमी-धीमी आवाज़ हुई तो आन्ना मिख़ाइलोव्ना ने प्येर को सान्त्वना देनेवाले कुछ शब्द कहे और यह विश्वास हो जाने पर कि वह बग्घी के कोने में सो रहा है, उसने उसे जगा दिया। प्येर जागा और आन्ना मिख़ाइलोव्ना के पीछे-पीछे बग्घी से नीचे उतरा। केवल इसी समय उसने उस भेंट के बारे में सोचा जो अन्तिम सांसें ले रहे पिता के साथ होनेवाली थी। उसने इस बात की ओर ध्यान दिया कि बग्घी मुख्य द्वार पर नहीं, बल्कि पिछले द्वार के सामने आकर रुकी है। जब वह बग्घी के पायदान से नीचे उतर रहा था तो दुकानदारों जैसे कपड़े पहने हुए दो आदमी दरवाज़े से भागकर दीवार के पास जा खड़े हुए। प्येर रुक गया और मकान की छाया में उसे दोनों ओर ऐसे ही कई अन्य व्यक्ति भी दिखायी दिये। किन्तु न तो आन्ना मिख़ाइलोव्ना, न नौकरों और न कोचवान ने ही, जिनकी अवश्य ही इनपर नज़र पड़ी होगी, इनकी तरफ़ कोई ध्यान दिया। चुनांचे प्येर ने मन ही मन यह तय कर लिया कि ऐसा ही होना चाहिये और वह आन्ना मिख़ाइलोव्ना के पीछे-पीछे चल दिया। आन्ना मिख़ाइलोव्ना पत्थर के बने तंग, कम रोशन ज़ीने पर तेज़ी से बढ़ती और प्येर को अपने पीछे-पीछे बुलाती जाती थी जो यह नहीं समझ पा रहा था कि वह काउंट के पास किसलिये जाये तथा इससे भी कम यह कि इसके लिये पिछले दरवाज़े के ज़ीने से जाने की क्या ज़रूरत है। किन्तु आन्ना मिख़ाइलोव्ना के आत्म-विश्वास और उतावली को ध्यान में रखते हुए उसने मन ही मन यह मान लिया कि ऐसा करना

ज़रूरी है। आधा ज़ीना चढ़ जाने पर बालटियां लिये हुए कुछ लोगों ने, जो अपने बूटों का शोर करते हुए सामने से भागे आ रहे थे, इन दोनों को लगभग नीचे ही नहीं गिरा दिया। इन दोनों को रास्ता देने के लिये वे दीवारों से सट गये और इन्हें देखकर उन्होंने किसी तरह की ज़रा-सी भी हैरानी ज़ाहिर नहीं की।

"प्रिंसेसों के कमरे यहीं हैं न?"

"जी, यहीं हैं," नौकर ने दिलेरी से ऊंची आवाज़ में ऐसे जवाब दिया मानो अब यहां हर चीज़ की छूट हो। "बायीं ओर के दरवाज़े से चली जाइये, मदाम।"

"शायद काउंट ने मुझे बुलवाया ही न हो," ज़ीना ख़त्म होने पर प्येर ने कहा, "यही अच्छा होगा कि मैं अपने कमरे में चला जाऊं।"

आन्ना मिख़ाइलोव्ना रुक गयी ताकि प्येर उसके पास आ जाये।

"ओह, मेरे मित्र!" उसने उसी ढंग से उसके हाथ को छूते हुए जैसे कि सुबह के वक़्त बेटे का हाथ छुआ था, फ़्रांसीसी में कहा, "ओह, मेरे प्यारे, विश्वास कीजिये, मेरे दिल पर कुछ कम भारी नहीं गुज़र रही, मगर आप मर्द बनिये।"

"सच, क्या यही ज़्यादा अच्छा नहीं होगा कि मैं अपने कमरे में चला जाऊं?" प्येर ने चश्मे में से स्नेहपूर्वक देखते हुए पूछा।

"मेरे मित्र, आपके साथ जो ज़्यादतियां हुई हैं, उन्हें भूल जाइये, यह ध्यान में रखिये कि वह आपके पिता हैं।" उसने उसांस ली। "सो भी शायद मृत्यु-शय्या पर। मैं तो फ़ौरन ही आपको बेटे की तरह चाहने लगी हूं। मुझपर भरोसा कीजिये, प्येर। मैं आपके हितों को नहीं भूलूंगी।"

प्येर कुछ भी नहीं समझा। उसे पहले से भी ज़्यादा ऐसे प्रतीत हुआ कि यह सब इसी तरह से होना चाहिये और वह चुपचाप आन्ना मिख़ाइलोव्ना के पीछे-पीछे चल दिया जो दरवाज़ा खोलने लगी थी।

दरवाज़े से पिछवाड़े के प्रवेश-कक्ष को रास्ता जाता था। प्रिंसेसों का बूढ़ा नौकर कोने में बैठा हुआ जुराब बुन रहा था। प्येर मकान के इस भाग में कभी नहीं आया था और उसे तो इन कमरों के होने का गुमान तक नहीं था। आन्ना मिख़ाइलोव्ना ने ट्रे में सुराही रखे हुए जल्दी से आगे निकल रही एक नौकरानी से (उसे मेरी अच्छी,

मेरी प्यारी कहते हुए) प्रिंसेसों के स्वास्थ्य के बारे में पूछताछ की और पत्थर के बने गलियारे में से प्येर को आगे ले चली। गलियारे में बायीं ओर का पहला दरवाज़ा प्रिंसेसों के रिहायशी कमरों की ओर ले जाता था। सुराही लेकर जानेवाली नौकरानी जल्दी में (इस घर में इस समय सभी कुछ जल्दी-जल्दी किया जा रहा था) कमरे का दरवाज़ा बन्द करना भूल गयी और प्येर तथा आन्ना मिख़ाइलोव्ना ने अनचाहे ही इस कमरे में झांक लिया जहां बड़ी प्रिंसेस और प्रिंस वसीली एक-दूसरे के पास बैठे हुए बातें कर रहे थे। इन दोनों को जाते देखकर प्रिंस वसीली झल्लाकर हिला-डुला और पीछे हट गया। प्रिंसेस उछलकर खड़ी हुई और ग़ुस्से का भाव दिखाते हुए उसने पूरे ज़ोर से दरवाज़ा बन्द कर दिया।

प्रिंसेस की यह हरकत उसकी सदा जैसी शान्त मुद्रा के अनुरूप नहीं थी और प्रिंस वसीली के चेहरे पर भय का जो भाव झलका था, वह उसके गर्वीले स्वभाव से इतना अधिक भिन्न था कि प्येर ने रुककर चश्मे में से अपनी गाइड पर प्रश्नसूचक दृष्टि डाली। आन्ना मिख़ाइलोव्ना ने कोई हैरानी ज़ाहिर नहीं की, ज़रा मुस्करायी और आह भरी मानो यह कह रही हो कि इस सब की उसने पहले से आशा की थी।

"मेरे दोस्त, मर्द बनिये और मैं आपके हितों की रक्षा करूंगी," उसने प्येर की प्रश्नसूचक दृष्टि के उत्तर में कहा और पहले से भी अधिक तेज़ी से गलियारे में क़दम बढ़ाने लगी।

प्येर की समझ में नहीं आ रहा था कि यह सब क्या क़िस्सा है। "आपके हितों की रक्षा करूंगी," यह वाक्य तो उसकी समझ में और भी कम आया। किन्तु इतनी बात वह समझ रहा था कि यह सब ऐसे ही होना चाहिये। गलियारा लांघकर ये दोनों काउंट के दीवानख़ाने से सटे, मद्धिम प्रकाशवाले कमरे में पहुंचे। यह उन ठण्डे और शानदार कमरों में से एक था जिनमें प्येर मुख्य प्रवेश कक्ष की ओर से आया करता था। किन्तु इस कमरे के मध्य में नहाने का एक बड़ा, ख़ाली टब रखा था और क़ालीन पर पानी गिरा हुआ था। पंजों के बल चलता हुआ एक नौकर तथा धूपदान लिये हुए डीकन सामने से आये और इन दोनों में से किसी ने भी इनकी तरफ़ कोई ध्यान नहीं दिया। प्येर और आन्ना मिख़ाइलोव्ना दीवानख़ाने में दाख़िल हुए जिसकी इतालवी ढंग की दो खिड़कियां शीतोद्यान में खुलती थीं और

जिसमें सम्राज्ञी येकतेरीना की बड़ी आवक्ष मूर्त्ति थी तथा आदमक़द छविचित्र टंगा हुआ था। यह दीवानख़ाना प्येर का जाना-पहचाना था। वही लोग, लगभग पहले जैसी मुद्राओं में यहां बैठे हुए खुसर-फुसर कर रहे थे। दुख-दर्दों से मुरझाये और पीले चेहरेवाली आन्ना मिख़ाइलोव्ना तथा मोटे और लम्बे-तड़ंगे प्येर के प्रवेश करने पर, जो सिर झुकाये हुए चुपचाप उसके पीछे-पीछे चला आ रहा था, सभी ख़ामोश हो गये और उन्होंने इन दोनों की तरफ़ देखा।

आन्ना मिख़ाइलोव्ना के चेहरे पर इस बात की चेतना झलक रही थी कि निर्णायक क्षण आ गया है। प्येर को अपने बिल्कुल निकट रखते हुए आन्ना मिख़ाइलोव्ना पीटर्सबर्ग की अनुभवी महिला की भांति सुबह की तुलना में भी अधिक साहस से कमरे में दाख़िल हुई। वह यह अनुभव कर रही थी कि चूंकि उस व्यक्ति को अपने साथ ला रही है जिससे मृत्यु-शय्या पर पड़े काउंट ने मिलने की इच्छा प्रकट की है, इसलिये उसके रास्ते में कोई बाधा नहीं हो सकती। दीवानख़ाने में बैठे सभी लोगों पर जल्दी से नज़र डालकर और काउंट के पादरी को देखने के बाद वह मानो झुके बिना, किन्तु अपने क़द को अचानक छोटा करके छोटे-छोटे क़दमों से उसकी तरफ़ फिसल-सी गयी और उसने सम्मानपूर्वक पहले एक और फिर दूसरे पादरी का आशीर्वाद लिया।

"शुक्र है भगवान का कि हम वक़्त पर पहुंच गये," उसने एक पादरी से कहा। "हम सभी रिश्तेदार बहुत चिन्तित हो रहे थे। यह नौजवान काउंट का बेटा है," उसने धीरे से इतना और कह दिया। "ओह, कैसा भयानक क्षण है!"

ये शब्द कहकर आन्ना मिख़ाइलोव्ना डाक्टर के पास गयी।

"डाक्टर साहब," वह बोली, "यह नौजवान – काउंट का बेटा है... काउंट के बचने की कोई उम्मीद है या नहीं?"

डाक्टर ने चुपचाप और तेज़ी से अपनी नज़रें ऊपर को उठायीं और कंधे झटके। आन्ना मिख़ाइलोव्ना ने भी डाक्टर की भांति कंधे झटके और अपनी आंखों को लगभग मूंदकर ऊपर की ओर देखा, गहरी सांस ली और डाक्टर के पास से हटकर प्येर की तरफ़ चली गयी। उसने विशेष आदर और स्नेहपूर्ण उदासी से प्येर को सम्बोधित किया।

"भगवान की कृपा पर विश्वास करें!" उसने प्येर से कहा और एक छोटे-से सोफ़े की तरफ़ इशारा करके, जहां बैठकर उसे उसका इन्तज़ार करना चाहिये, ख़ुद दबे पांव उस दरवाज़े की ओर चली गयी जिसपर सभी की नज़रें टिकी हुई थीं। हल्की-सी आवाज़ के साथ दरवाज़ा उसके पीछे बन्द हो गया।

सभी बातों के लिये अपनी पथ-प्रदर्शिका के अनुदेशों का अनुकरण करने का इरादा बना लेनेवाला प्येर उस छोटे-से सोफ़े की ओर बढ़ गया जिसकी तरफ़ उसने इशारा किया था। आन्ना मिख़ाइलोव्ना के काउंट के कमरे में जाते ही उसने यह महसूस किया कि दीवानख़ाने में उपस्थित सभी लोगों की नज़रें उसपर जमी हुई हैं और उनमें केवल जिज्ञासा तथा सहानुभूति का ही भाव नहीं है। उसने देखा कि सभी मानो भय और चापलूसी से भी उसकी तरफ़ नज़रों से इशारे करते हुए खुसर-फुसर कर रहे हैं। उसके प्रति ऐसा आदर दिखाया जा रहा था, जैसा उसने पहले कभी नहीं देखा था। पादरियों से बातें करनेवाली एक अपरिचित महिला अपनी जगह से उठकर खड़ी हो गयी और उसने उससे वहां बैठने का अनुरोध किया, फ़ौजी गवर्नर के एडजुटेंट ने वह दस्ताना उठाकर उसे दिया जो उसके हाथ से नीचे गिर गया था। जब वह डाक्टरों के पास से गुज़रा तो वे बड़ी इज़्ज़त दिखाते हुए ख़ामोश हो गये और उसे रास्ता देने के लिये एक तरफ़ को हट गये। प्येर ने शुरू में तो किसी दूसरी जगह पर बैठ जाना चाहा ताकि महिला को कष्ट न हो, ख़ुद ही अपना दस्ताना उठा लेना चाहा और डाक्टरों के गिर्द चक्कर काटकर निकल जाना चाहा जो वैसे भी उसके रास्ते में नहीं आ रहे थे। किन्तु उसने सहसा यह अनुभव किया कि ऐसा करना अशिष्ट होगा। उसने महसूस किया कि आज की रात वह ऐसा व्यक्ति है जिसे कोई भयानक और ऐसी रस्म अदा करनी है जिसकी सभी उससे आशा कर रहे हैं और इसलिये उसे सभी की सेवाओं को अवश्य स्वीकार करना चाहिये। उसने एडजुटेंट से चुपचाप दस्ताना ले लिया, मिस्री मूर्त्ति की भोली-भाली मुद्रा के समान आयताकार ढंग से एक-दूसरे के सामने टिके अपने घुटनों पर बड़े-बड़े हाथ रखकर महिला की सीट पर बैठ गया और मन ही मन यह मान लिया कि सब कुछ ऐसे ही होना चाहिये, कि अपना दिमाग़ ठिकाने रखने और कोई ग़लती न करने के लिये आज की रात उसे अपनी अक़्ल से काम न लेकर पूरी तरह उनका

अनुकरण करना चाहिये जो उसका निर्देशन कर रहे हैं।

दो मिनट भी नहीं बीते कि फ़ॉक-कोट पहने, जिसपर तीन सितारे लगे थे, और शान से सिर ऊंचा किये हुए प्रिंस वसीली दीवानख़ाने में आया। सुबह की तुलना में वह दुबला लग रहा था और जब उसने कमरे में नज़र डालकर प्येर को वहां बैठे देखा तो उसकी आंखें सामान्य से कहीं बड़ी-बड़ी हो गयीं। प्येर के पास जाकर उसने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया (जैसा कि उसने पहले कभी नहीं किया था) और उसे नीचे की ओर झुकाया मानो यह जांचना चाहता हो कि वह मज़बूती से वहां जुड़ा हुआ है या नहीं।

"हिम्मत से काम लो, मेरे दोस्त, हिम्मत से। उन्होंने आपको बुलवाने को कहा है। यह अच्छी बात है," और उसने जाना चाहा।

किन्तु प्येर ने प्रिंस से यह पूछना ज़रूरी समझा:

"कैसी तबीयत है..." और वह यह न जानते हुए झिझककर रह गया कि दम तोड़ रहे व्यक्ति को काउंट कहना उचित है या नहीं और पिता कहते हुए उसे संकोच अनुभव हो रहा था।

"आध घण्टे पहले एक और दौरा पड़ा था। हिम्मत से काम लो, मेरे दोस्त।"

प्येर के विचार इस समय इतने उलझे-उलझाये हुए थे कि "दौरा" शब्द सुनकर वह यह न समझ पाया कि किस चीज़ के दौरे की बात हो रही है। वह चकराया-सा प्रिंस वसीली की ओर देखता रहा और केवल बाद में ही समझ पाया कि बीमारी के दौरे की बात हो रही थी। प्रिंस वसीली ने चलते-चलते कुछ शब्द डाक्टर लोरान से भी कहे और फिर पंजों के बल काउंट के कमरे में चला गया। उसे पंजों के बल चलना नहीं आता था और चलते वक़्त वह अटपटे ढंग से सारे शरीर को ऊपर की ओर झटका देता था। प्रिंस के पीछे-पीछे बड़ी प्रिंसेस, फिर कुछ पादरी और डीकन तथा कुछ नौकर-चाकर भी काउंट के कमरे में चले गये। इस कमरे के दरवाज़े के पीछे से कुछ आहट-सी सुनायी दी और आख़िर, पहले जैसा पीला, किन्तु कर्त्तव्य-पालन के दृढ़ संकल्प के भाववाले चेहरे के साथ आन्ना मिख़ाइलोव्ना भागती हुई आयी और प्येर का हाथ छूकर बोली:

"भगवान की दया का कोई पारावार नहीं। तेल लगाने का संस्कार आरम्भ होनेवाला है। आइये, चलें।"

मुलायम क़ालीन पर पांव रखता हुआ प्येर काउंट के कमरे में चला गया और उसने देखा कि फ़ौजी गवर्नर का एडजुटेंट, अपरिचित महिला तथा कुछ अन्य नौकर-चाकर भी उसके पीछे-पीछे दरवाज़ा लांघकर इस कमरे में आ गये हैं मानो अब यहां आने के लिये किसी से अनुमति लेने की आवश्यकता नहीं थी।

२०

स्तम्भों और मेहराब से विभाजित तथा ईरानी क़ालीनों से सजी दीवारोंवाले इस बड़े कमरे को प्येर बहुत अच्छी तरह से जानता था। इस कमरे का स्तम्भों के पीछेवाला भाग, जहां एक ओर तो रेशमी परदों की ओट में बहुत बढ़िया लकड़ी का ऊंचा पलंग था तथा दूसरी ओर देव-प्रतिमाओंवाला बहुत बड़ा बक्स था, लाल रोशनी से वैसे ही चमचमा रहा था जैसे सान्ध्य-प्रार्थना के समय गिरजाघर चमचमाता है। देव-प्रतिमाओं के बक्स के प्रकाश से चमकते नक़्क़ाशीदार चौखटे के नीचे पंगु के लिये एक विशेष ऊंची टेकवाली आरामकुर्सी रखी थी। बर्फ़ जैसे सफ़ेद तथा एक भी सिलवट के बिना स्पष्टतः उसी समय बदले गये तकियों पर, चटक हरे रंग की रज़ाई से कमर तक ढकी हुई प्येर के पिता, काउंट बेज़ूख़ोव की भव्य आकृति थी जिससे वह इतनी अच्छी तरह परिचित था। काउंट के चौड़े माथे के ऊपर सफ़ेद बालों की वही पहले जैसी लटें थीं जो बबर की याद दिलाती थीं और सुन्दर अरुण-पीत चेहरे पर वही विशिष्ट उदात्ततापूर्ण बड़ी-बड़ी झुर्रियां थीं। काउंट देव-प्रतिमाओं के बिल्कुल नीचे लेटा हुआ था, उसके दोनों बड़े-बड़े और मांसल हाथ रज़ाई से बाहर उसके वक्ष पर टिके हुए थे। उसके दायें हाथ की हथेली नीचे की ओर थी तथा अंगूठे और तर्जनी के बीच एक मोमबत्ती टिका दी गयी थी जिसे कुर्सी के पीछे से आगे को झुका हुआ एक बूढ़ा नौकर थामे था। कुर्सी के पास बढ़िया, चमचमाती पोशाकें पहने, लम्बे बालों को लहराते और जलती मोमबत्तियां हाथों में लिये हुए पादरी खड़े थे तथा धीरे-धीरे और समारोही ढंग से धार्मिक अनुष्ठान करवा रहे थे। उनसे कुछ हटकर दोनों छोटी प्रिंसेसें

आंखों से रूमाल लगाये खड़ी थीं। उनकी बड़ी बहन कतीश उनसे ज़रा आगे खड़ी थी, उसके चेहरे पर क्रोध और दृढ़ता का भाव था, वह देव-प्रतिमाओं को एकटक ऐसे देख रही थी मानो कह रही हो कि अगर वह मुड़कर देखेगी तो कोई अटपटी हरकत कर देगी। चेहरे पर विनम्रता, करुणा तथा सभी के लिये क्षमा का भाव लिये आन्ना मिख़ाइलोव्ना तथा एक अजनबी औरत दरवाज़े के पास खड़ी थीं। प्रिंस वसीली दरवाज़े के दूसरी तरफ़ नक़्क़ाशीदार मख़मली कुर्सी के पीछे, जिसकी पीठ को उसने अपनी ओर कर लिया था, पंगु की आरामकुर्सी के पास खड़ा था। उसके बायें हाथ में मोमबत्ती थी जिसे वह कुर्सी पर टिकाये था, दायें हाथ से सलीब का निशान बनाता था और माथे को उंगलियों से छूते हुए हर बार नज़रें ऊपर उठाता था। उसके मुख पर शान्त पावनता और भगवान की इच्छा के प्रति निष्ठा का भाव था। "यदि आप इन भावनाओं को नहीं समझते तो यह आप ही के लिये बुरी बात है," उसका चेहरा मानो यह कहता प्रतीत हो रहा था।

प्रिंस वसीली के पीछे एडजुटेंट, डाक्टर और नौकर खड़े थे। गिरजाघर की तरह पुरुष और औरतें यहां अलग-अलग बंटे हुए थे। सभी ख़ामोश थे, सलीब के निशान बना रहे थे, केवल धार्मिक पाठ, संयत, मन्द स्वर में भजन-गायन और नीरवता के क्षण में पैरों का बदला जाना तथा आहें ही सुनायी देती थीं। आन्ना मिख़ाइलोव्ना अपने चेहरे पर कुछ ऐसा भाव लिये हुए कि वह जो कुछ कर रही है, उसका मतलब समझती है, सारे कमरे को लांघकर प्येर के पास गयी और उसने उसके हाथ में मोमबत्ती दे दी। प्येर ने मोमबत्ती जला ली और अपने इर्द-गिर्द खड़े लोगों को देखने में तल्लीन रहते हुए उसी हाथ से, जिसमें मोमबत्ती थामे था, अपने ऊपर सलीब का निशान बनाने लगा।

सबसे छोटी, लाल-लाल गालोंवाली और हंसोड़ प्रिंसेस सोफ़िया, जिसके होंठ पर तिल था, प्येर की ओर देख रही थी। वह मुस्करायी, उसने रूमाल से अपना मुंह ढंक लिया और उसे देर तक ढंके रही, किन्तु प्येर की तरफ़ देखने पर फिर से हंसने लगी। वह सम्भवतः हंसे बिना उसकी ओर देख ही नहीं सकती थी, मगर ऐसा भी नहीं कर पा रही थी कि उसकी तरफ़ न देखे। चुनांचे इस प्रलोभन से बचने के लिये वह धीरे से स्तम्भ के पीछे चली गयी। धार्मिक अनुष्ठान के मध्य में पादरियों की आवाज़ें अचानक बन्द हो गयीं, उन्होंने फुसफुसाकर

एक-दूसरे से कुछ कहा, बूढ़ा नौकर, जो काउंट के हाथ में मोमबत्ती थामे था, सीधा हुआ और उसने महिलाओं की ओर देखा। आन्ना मिख़ाइलोव्ना आगे आयी, रोगी के ऊपर झुकी और उसने अपने पीछे खड़े हुए फ़्रांसीसी डाक्टर लोरान को उंगली से निकट आने का संकेत किया। डाक्टर जलती मोमबत्ती हाथ में लिये बिना स्तम्भ से टेक लगाये हुए विदेशी की ऐसी आदरपूर्ण मुद्रा में खड़ा था जो यह ज़ाहिर करती है कि अन्य धर्मावलम्बी होने के बावजूद वह इस सम्पन्न हो रही धार्मिक रस्म के महत्त्व को समझता तथा उसका अनुमोदन भी करता है। वह ऐसे दबे क़दमों से, जो भरपूर जवानी के दिनों में ही सम्भव होते हैं, रोगी के पास आया, उसने हरी रज़ाई पर टिके हुए रोगी के मुक्त हाथ पर अपनी पतली-पतली गोरी उंगलियां रखीं, मुंह फेरकर नब्ज़ सुनने लगा और सोच में डूब गया। रोगी को कुछ पिलाया गया, उसके इर्द-गिर्द लोग हिले-डुले, कुछ देर बाद सभी फिर से अपनी जगहों पर वापस आ गये और अनुष्ठान पुनः आरम्भ हो गया। इस विराम के समय प्येर ने देखा कि प्रिंस वसीली अपने चेहरे पर महत्त्व का वही भाव लिये हुए कि वह जानता है कि क्या कर रहा है और अगर दूसरे उसे नहीं समझते तो यह उन्हीं के लिये बुरा है, रोगी के पास नहीं आया, बल्कि उसके नज़दीक से गुज़रते हुए बड़ी प्रिंसेस के क़रीब गया और फिर वे दोनों काउंट के शयन-कक्ष के पिछले भाग में रेशमी परदों-वाले ऊंचे पलंग की ओर चले गये। वहां से वे दोनों पीछे के दरवाज़े से कहीं ग़ायब हो गये, किन्तु अनुष्ठान समाप्त होने के पहले एक-एक करके अपनी जगहों पर वापस आ खड़े हुए। प्येर ने इस चीज़ की ओर भी दूसरी चीज़ों से कुछ अधिक ध्यान नहीं दिया, क्योंकि वह अपने दिमाग़ में एक बार ही यह तय कर चुका था कि इस शाम को उसके सामने जो कुछ भी हो रहा था, वह एकदम ज़रूरी था।

भजन-गायन समाप्त हो गया और पादरी की आवाज़ सुनायी दी जिसने रोगी को अनुष्ठान के लिये सम्मानपूर्वक बधाई दी। रोगी पहले की तरह ही निर्जीव और गतिहीन लेटा हुआ था। उसके इर्द-गिर्द सभी हिलने-डुलने लगे, पैरों की आहट और फुसफुसाहट सुनायी देने लगी जिसमें आन्ना मिख़ाइलोव्ना की आवाज़ सबसे अधिक स्पष्ट सुनायी दी।

प्येर ने उसे यह कहते सुना:

"अवश्य ही बिस्तर पर ले जाना चाहिये, यहां असम्भव है..."

डाक्टरों, प्रिंसेसों और नौकरों ने रोगी को ऐसे घेर लिया कि प्येर को पकी, सफ़ेद जटाओंवाला सिर और अरुण-पीत चेहरा अब नज़र नहीं आ रहा था जो अनुष्ठान के पूरे समय में उसकी आंखों के सामने रहा था, यद्यपि वह अन्य चेहरों को भी देखता रहा था। पंगु की आराम-कुर्सी को घेरनेवाले लोगों की सावधान गति-विधि से प्येर ने यह अनुमान लगा लिया कि वे मरणासन्न काउंट को उठाकर पलंग पर ले जा रहे हैं।

"मेरे हाथ को थाम लो, ऐसे तो गिरा दोगे," उसे एक नौकर की घबरायी हुई आवाज़ सुनायी दी, "नीचे से... एक और," आवाज़ें सुनायी दीं तथा लोगों के हांफने और उनके क़दमों के तेज़ हो जाने से ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो वे जो बोझ उठाये लिये जा रहे थे, वह उनके लिये बहुत भारी था।

मरणासन्न काउंट को ले जा रहे लोग, जिनमें आन्ना मिख़ाइलोव्ना भी शामिल थी, जब प्येर के निकट पहुंचे तो उसे लोगों की पीठों और गुद्दियों के पीछे से क्षण भर को काउंट की उभरी हुई, मांसल और नंगी छाती तथा बड़े-बड़े कंधों की झलक मिली जो बग़लों से उसे थामे हुए लोगों के कारण ऊपर को उठे हुए थे। उसे बबर के अयालों जैसे लम्बे, घुंघराले, सफ़ेद बाल भी दिखायी दिये। असाधारण रूप से चौड़े माथे और जबड़ों, सुन्दर, कामुक मुंह और कठोर, भव्य दृष्टि-वाला यह चेहरा मृत्यु की निकटता से विकृत नहीं हुआ था। काउंट का यह चेहरा, यह सिर वैसा ही था जैसा तीन महीने पहले तब था, जब काउंट ने उसे पीटर्सबर्ग भेजा था। किन्तु काउंट को पलंग पर ले रहे लोगों के क़दमों के लयबद्ध न होने के कारण यह सिर असहाय-सा इधर-उधर डोल रहा था और कठोर तथा उदासीन दृष्टि कहीं टिक नहीं पा रही थी।

काउंट को उठाकर लानेवाले लोग कुछ मिनट तक ऊंचे पलंग के इर्द-गिर्द व्यस्त रहे और उसके बाद चले गये। आन्ना मिख़ाइलोव्ना ने प्येर का हाथ छूकर कहा: "आओ, चलें।" आन्ना मिख़ाइलोव्ना के साथ वह उस पलंग के पास गया जिसपर रोगी को समारोही मुद्रा में लिटाया गया था जिसका सम्भवतः उसी समय किये गये अनुष्ठान से कोई सम्बन्ध था। तकियों पर उसका सिर ऊंचा टिका हुआ था।

उसकी बांहें हरी, रेशमी रज़ाई पर दायें-बायें टिकी हुई थीं और हथेलियां नीचे की ओर थीं। प्येर जब पलंग के निकट गया तो काउंट ने सीधे उसकी तरफ़ देखा, किन्तु ऐसी दृष्टि से जिसका अर्थ और महत्त्व समझना सम्भव नहीं था। यह दृष्टि या तो इस चीज़ के अलावा और कुछ नहीं कह रही थी कि चूंकि आंखें हैं, इसलिये उन्हें कहीं तो देखना चाहिये या फिर वह बहुत कुछ कह रही थीं। प्येर यह न समझ पाते हुए कि क्या करे, झिझकता-सा खड़ा रहा और उसने अपनी निर्देशिका आन्ना मिख़ाइलोव्ना की ओर देखा। आन्ना मिख़ाइलोव्ना ने झटपट रोगी के हाथ की ओर आंखों से इशारा किया और होंठों से चुम्बन लेने का सुझाव दिया। प्येर ने बड़े यत्न से अपनी गर्दन आगे बढ़ायी ताकि रज़ाई न हिले-डुले और आन्ना मिख़ाइलोव्ना की सलाह के मुताबिक़ काउंट का चौड़ा और मांसल हाथ चूमा। किन्तु काउंट का न तो हाथ और न उसके चेहरे की कोई मांस-पेशी ही हिली-डुली। प्येर ने फिर प्रश्नसूचक दृष्टि से आन्ना मिख़ाइलोव्ना की तरफ़ देखा और यह जानना चाहा कि वह अब क्या करे। आन्ना मिख़ाइलोव्ना ने पलंग के पास रखी कुर्सी की तरफ़ आंखों से संकेत किया। प्येर नज़रों से यह पूछना जारी रखते हुए कि उससे ऐसा ही करने को कहा जा रहा है, आज्ञाकारिता से कुर्सी पर बैठने लगा। आन्ना मिख़ाइलोव्ना ने अनुमोदन में सिर झुकाया। प्येर ने सम्भवतः यह अनुभव करते हुए कि उसका बेडौल और स्थूल शरीर बहुत ज़्यादा जगह घेरता है, फिर से मिस्री मूर्त्ति की समयित तथा भोली-सी मुद्रा बना ली और यथासम्भव छोटा-सा प्रतीत होने के लिये अपनी सारी मानसिक शक्ति से काम लेने लगा। उसने काउंट की ओर देखा। काउंट की दृष्टि उसी जगह पर टिकी थी जहां प्येर का चेहरा उस वक़्त था, जब वह खड़ा था। आन्ना मिख़ाइलोव्ना अपने चेहरे पर बाप-बेटे की भेंट के इन अन्तिम क्षणों के मर्मस्पर्शी महत्त्व की चेतना का भाव ले आयी थी। यह स्थिति दो मिनट तक बनी रही जो प्येर को एक घण्टे के बराबर प्रतीत हुई। अचानक काउंट के चेहरे की बड़ी-बड़ी मांस-पेशियों और झुर्रियों में ऐंठन-सी प्रकट हुई। यह ऐंठन बढ़ती गयी, सुन्दर मुंह टेढ़ा-सा हो गया (प्येर केवल अभी यह समझा कि उसके पिता मृत्यु के कितने अधिक निकट हैं) और टेढ़े हो गये मुंह से अस्पष्ट तथा खरखरी-सी ध्वनि सुनायी दी। आन्नां मिख़ाइलोव्ना ने बहुत ध्यान से रोगी की

आंखों में देखा और यह समझ पाने के लिये कि उसे क्या चाहिये कभी प्येर, तो कभी पेय-पात्र की ओर संकेत किया, तो कभी फुसफुसाते हुए प्रश्नात्मक ढंग से प्रिंस वसीली का नाम लिया, तो कभी रज़ाई की तरफ़ इशारा किया। रोगी की आंखों में और चेहरे पर खीझ का भाव झलक उठा। उसने उस नौकर की ओर देखने की कोशिश की जो लगातार उसके सिरहाने खड़ा रहता था।

"दूसरी ओर करवट लेना चाहते हैं," नौकर ने फुसफुसाकर कहा और वह काउंट के भारी शरीर को दीवार की ओर करवट दिलाने के लिये आगे बढ़ा।

प्येर भी मदद करने के लिये कुर्सी से उठा।

काउंट को जिस समय दूसरी ओर करवट दिलायी जा रही थी, उसका एक हाथ निर्जीव-सा पीछे पड़ा रह गया और उसने उसे आगे लाने का व्यर्थ प्रयास किया। काउंट ने प्येर की उस भयपूर्ण दृष्टि को, जिससे वह इस निर्जीव हाथ को देख रहा था, ताड़ लिया या फिर इस क्षण उसके मरणासन्न मस्तिष्क में कोई दूसरा विचार आया, किन्तु उसने अपने असहाय हाथ, प्येर के मुख पर अत्यधिक भय के भाव और पुनः अपने हाथ को देखा और उसके चेहरे पर हल्की-सी कारुणिक मुस्कान झलक उठी जो उसके नाक-नक़्शे से मेल नहीं खाती थी और मानो अपनी विवशता का मज़ाक़ उड़ा रही थी। इस मुस्कान से अचानक प्येर का दिल भर आया, उसे नाक में खुजली-सी अनुभव हुई और उसकी आंखें छलछला आयीं। रोगी को दीवार की ओर करवट दिला दी गयी। उसने उसांस ली।

"काउंट को नींद आ गयी है," आन्ना मिख़ाइलोव्ना ने अपनी ड्यूटी के लिये आनेवाली एक प्रिंसेस को देखकर कहा, "आओ, चलें।"

प्येर कमरे से बाहर चला गया।

२१

प्रिंस वसीली और बड़ी प्रिंसेस के अलावा दीवानख़ाने में अब और कोई नहीं था। सम्राज्ञी येकतेरीना के छविचित्र के नीचे बैठे हुए ये दोनों कोई उत्तेजनापूर्वक बातचीत कर रहे थे। प्येर और उसकी निर्देशि-

का को देखते ही दोनों चुप हो गये। प्येर को ऐसे लगा कि प्रिंसेस ने कुछ छिपा लिया है और वह फुसफुसायी :

"यह औरत तो मुझे फूटी आंखों नहीं सुहाती।"

"कतीश ने छोटे ड्राइंगरूम में चाय का प्रबन्ध करने को कह दिया है," प्रिंस वसीली ने कहा, "ओह, बेचारी आन्ना मिख़ाइलोव्ना, आप वहां जाकर कुछ खा-पी लें वरना आपकी ताक़त जवाब दे देगी।"

प्येर से उसने कुछ नहीं कहा और भावुक होकर कंधे के नीचे उसकी बांह को केवल कुछ दबा दिया। प्येर और आन्ना मिख़ाइलोव्ना छोटे ड्राइंगरूम में चले गये।

"उनींदी रात के बाद कोई भी चीज़ इतनी ताज़गी नहीं देती जितनी बढ़िया रूसी चाय का प्याला," हेंडल के बिना पतले, चीनी के प्याले से चाय पीते हुए लोरान संयत सजीवता से कह रहा था। वह गोल, छोटे ड्राइंगरूम में उस मेज़ के सामने खड़ा था जिसपर चाय के बर्तन और खाने की कुछ चीज़ें रखी हुई थीं। इस रात को काउंट बेज़ूख़ोव के घर में एकत्रित सभी लोग अपने को ज़रा मज़बूत करने के लिये मेज़ के गिर्द जमा थे। दर्पणों और छोटी-छोटी मेज़ोंवाला यह छोटा, गोल ड्राइंगरूम प्येर को बहुत अच्छी तरह से याद था। काउंट के घर में होनेवाले बॉल-नृत्यों के समय प्येर को, जिसे नाचना नहीं आता था, इस दर्पणनोंवाले छोटे ड्राइंगरूम में बैठना और यह देखना अच्छा लगता था कि कैसे बॉल-नृत्य की बढ़िया पोशाकें पहने, हीरों और मोतियों से सजे नंगे कंधोंवाली महिलायें इस कमरे में से गुज़रती थीं और रोशनी से ख़ूब चमचमाते आईनों में अपने को निहारती थीं जो कई बार उनके बिम्बों को दोहराते थे। अब इसी कमरे में दो मोमबत्तियों की मद्धिम-सी रोशनी थी, रात के वक़्त एक छोटी-सी मेज़ पर अव्यवस्थित ढंग से चाय के बर्तन और खाने की चीज़ों की कुछ प्लेटें रखी थीं, किसी तरह की सज-धज के बिना भांति-भांति के लोग यहां बैठे थे, फुसफुसाकर बातें करते थे, उनकी हर गति-विधि और हर शब्द यह ज़ाहिर करता था कि उनमें से कोई भी यह नहीं भूला है कि इस वक़्त यहां क्या हो रहा है और यह भी कि काउंट के शयन-कक्ष में आगे क्या हो सकता है। प्येर का बेशक खाने को बहुत मन हो रहा था, फिर भी उसने कुछ नहीं खाया। उसने प्रश्नसूचक दृष्टि से अपनी निर्देशिका की ओर देखा

और उसे दबे पांव उसी दीवानख़ाने की ओर जाते पाया, जहां प्रिंस वसीली और बड़ी प्रिंसेस बैठे रह गये थे। प्येर ने यही मान लिया कि ऐसा करना भी ज़रूरी था और थोड़ी देर बाद ख़ुद भी वहां चला गया। आन्ना मिख़ाइलोव्ना प्रिंसेस के पास खड़ी थी और वे दोनों दबी-दबी ज़बान, मगर ग़ुस्से से एक-दूसरी से कुछ कह-सुन रही थीं।

"प्रिंसेस, यह तो मैं आपसे बेहतर जानती हूं कि मुझे क्या करना और क्या नहीं करना चाहिये," प्रिंसेस कतीश कह रही थी। वह सम्भवतः उसी तरह से ग़ुस्से में थी जैसे उस वक़्त थी जब उसने फटाक से अपने कमरे का दरवाज़ा बन्द किया था।

"लेकिन, प्यारी प्रिंसेस," आन्ना मिख़ाइलोव्ना ने नम्रता से, मगर अपनी बात का विश्वास दिलाते, काउंट के शयन-कक्ष का मार्ग रोकते और प्रिंसेस को अन्दर न जाने देते हुए कहा, "बेचारे चाचा जी के लिये ऐसे क्षणों में, जब उन्हें आराम की ज़रूरत है, क्या यह कष्टप्रद नहीं होगा? ऐसे क्षणों में उनके साथ इस दुनिया की बातें करना जब उनकी आत्मा दूसरी दुनिया के लिये तैयार..."

प्रिंस वसीली बेतकल्लुफ़ ढंग से टांग पर टांग रखे बैठा था। थैलियों की तरह नीचे को लटकनेवाले उसके थलथल गाल ज़ोर से फड़क रहे थे, मगर वह ऐसे ज़ाहिर कर रहा था मानो इन दोनों महिलाओं की बातचीत से उसे कोई ख़ास मतलब नहीं था।

"नहीं, प्यारी आन्ना मिख़ाइलोव्ना, आप कतीश को वह करने दीजिये जो वह ठीक समझती है। आप तो जानती ही हैं कि काउंट उसे कितना चाहते हैं।"

"मैं तो यह भी नहीं जानती कि इस काग़ज़ में क्या लिखा है," प्रिंसेस कतीश ने प्रिंस वसीली से मुख़ातिब होते और पच्चीकारी की सज्जावाले थैले की ओर संकेत करते हुए कहा जिसे वह हाथों में थामे थी। "हां, मैं इतना जानती हूं कि असली वसीयतनामा तो उनकी मेज़ की दराज़ में है और यह भूला-बिसरा काग़ज़ है..."

प्रिंसेस ने आन्ना मिख़ाइलोव्ना के पास से निकल जाना चाहा, किन्तु वह हल्की-सी छलांग लगाकर फिर से उसके सामने आ खड़ी हुई।

"मैं जानती हूं, प्यारी और दयालु प्रिंसेस," आन्ना मिख़ाइलोव्ना ने थैले को ऐसे मज़बूती से पकड़ते हुए कहा कि स्पष्ट था कि वह उसे

आसानी से नहीं छोड़ेगी। "प्यारी प्रिंसेस, मैं आपसे अनुरोध करती हूं, आपकी मिन्नत करती हूं, आप उनपर तरस खाइये, मैं आपसे प्रार्थना करती हूं..."

प्रिंसेस चुप रही। थैले को छीनने के लिये हो रहे संघर्ष की ही आवाज़ सुनायी दे रही थी। साफ़ दिखायी दे रहा था कि प्रिंसेस अगर कुछ कह उठेगी तो आन्ना मिख़ाइलोव्ना के लिये वे शब्द सुखद नहीं होंगे। आन्ना मिख़ाइलोव्ना थैले को कसकर पकड़े थी, मगर इसके बावजूद उसकी आवाज़ में सदा की सी मधुरता और कोमलता बनी रही।

"प्येर, यहां आइये, मेरे दोस्त। मेरे ख़्याल में इस पारिवारिक विचार-विमर्श में वह पराया आदमी नहीं है। ठीक है न, प्रिंस?"

"आप चुप क्यों हैं, भाई साहब?" प्रिंसेस अचानक इतने ज़ोर से चिल्लायी कि छोटे ड्राइंगरूम में बैठे लोगों को उसकी आवाज़ सुनायी दे गयी और वे चौंक उठे। "आप चुप क्यों हैं, जबकि भगवान जानें कौन है यह औरत जो मरणासन्न व्यक्ति के कमरे की दहलीज़ पर इस तरह का हंगामा कर रही है और बेकार इस मामले में अपनी टांग अड़ा रही है? साज़िशी औरत!" वह ग़ुस्से से फुसफुसायी और उसने पूरे ज़ोर से थैला अपनी ओर खींचा। किन्तु आन्ना मिख़ाइलोव्ना ने थैले से पीछे न रह जाने के लिये कुछ क़दम बढ़ाये और उसे फिर से पकड़ लिया।

"ओह!" प्रिंस वसीली ने भर्त्सना और आश्चर्य से कहा तथा कुर्सी से उठा। "यह तो ख़ासा मज़ाक़ बन गया है। छोड़ दीजिये। मैं आपसे कह रहा हूं।"

प्रिंसेस कतीश ने थैला छोड़ दिया।

"और आप भी!"

आन्ना मिख़ाइलोव्ना ने उसकी बात पर कान नहीं दिया।

"छोड़ दीजिये, मैं आपसे कह रहा हूं। मैं सारी जिम्मेदारी अपने ऊपर लेता हूं। मैं ख़ुद जाकर काउंट से पूछ आता हूं। मैं... बस, काफ़ी कर चुकीं आप दोनों यह सब।"

"लेकिन प्रिंस," आन्ना मिख़ाइलोव्ना ने कहा, "ऐसे महान अनुष्ठान के बाद उन्हें थोड़ी देर चैन महसूस करने दीजिये। प्येर, आप ही अपनी राय दीजिये," उसने प्येर को सम्बोधित किया जो इनके

बिल्कुल नज़दीक आ गया था और क्रोध से विकृत तथा अपनी सारी गरिमा खो चुके प्रिंसेस के चेहरे और प्रिंस वसीली के फड़कते गालों को हैरानी से देख रहा था।

"यह याद रखिये कि आपको अपनी हरकतों के सभी नतीजों के लिये जवाबदेह होना पड़ेगा," प्रिंस वसीली ने कड़ाई से कहा, "आप नहीं जानतीं कि आप क्या कर रही हैं।"

"कमीनी औरत!" आन्ना मिख़ाइलोव्ना पर अचानक झपटते और उसके हाथ से थैला छीनते हुए प्रिंसेस चिल्ला उठी।

प्रिंस वसीली ने सिर झुका लिया और निराशा से हाथ झटके।

इसी क्षण वह दरवाज़ा, वह भयानक दरवाज़ा, जिसकी ओर प्येर इतनी देर तक देखता रहा था और जो बहुत ही धीरे खुलता था, बहुत तेज़ी से, दीवार के साथ टकराकर बहुत ज़ोर से खुला और मंझली प्रिंसेस भागती हुई वहां से बाहर आयी तथा उसने हाथ पर हाथ मारकर उत्तेजना से कहा:

"आप यहां यह क्या कर रहे हैं! वह अन्तिम सांसें ले रहे हैं और आपने मुझे वहां अकेली छोड़ दिया।"

बड़ी प्रिंसेस ने थैला फेंक दिया। आन्ना मिख़ाइलोव्ना तेज़ी से झुकी और इस विवादग्रस्त थैले को उठाकर काउंट के शयन-कक्ष में भाग गयी। बड़ी प्रिंसेस और प्रिंस वसीली सम्भले तथा उसके पीछे-पीछे चल दिये। कुछ मिनट बाद सबसे पहले बड़ी प्रिंसेस ही बाहर आयी पीला और बुझा-बुझा चेहरा लिये तथा नीचे का होंठ काटती हुई। प्येर को देखकर उसके चेहरे पर अदम्य क्रोध का भाव उभर आया।

"अब आप ख़ुश हो सकते हैं," उसने कहा, "आप इसी के तो इन्तज़ार में थे।"

और उसने सिसकते हुए अपने चेहरे को रूमाल से ढंक लिया और कमरे से बाहर भाग गयी।

प्रिंसेस के बाद प्रिंस वसीली बाहर आया। वह लड़खड़ाता हुआ उस सोफ़े तक पहुंचा जिसपर प्येर बैठा था और हाथ से आंखों को ढंके हुए सोफ़े पर ढह पड़ा। प्येर ने देखा कि उसके चेहरे का रंग उड़ा हुआ है और उसका नीचेवाला जबड़ा उसी तरह से कांप और हिल रहा है जैसा कि बुख़ार की जूड़ी के समय होता है।

"ओह, मेरे दोस्त!" प्येर की कोहनी अपने हाथ में लेते हुए उसने कहा। उसकी आवाज़ में ऐसी निश्छलता और कोमलता थी जैसी प्येर ने उसमें पहले कभी अनुभव नहीं की थी। "हम कितने पाप, कितने छल-कपट करते हैं, भला किसलिये? मुझे छठा दशक चल रहा है, मेरे दोस्त... मुझे... मौत के साथ सब कुछ ख़त्म हो जाता है, सब कुछ। भयानक चीज़ है मौत।" और वह रो पड़ा।

आन्ना मिख़ाइलोव्ना सब के बाद बाहर आयी। वह धीमे-धीमे और दबे-दबे क़दम रखती हुई प्येर के पास गयी।

"प्येर!.." उसने कहा।

प्येर ने प्रश्नसूचक दृष्टि से उसकी ओर देखा। उसने प्येर के माथे को अपने आंसुओं से तर करते हुए चूमा। वह कुछ देर चुप रही।

"काउंट नहीं रहे..."

प्येर ने चश्मे में से उसकी तरफ़ देखा।

"चलिये, मैं आपको दूसरे कमरे में ले चलती हूं। रोने की कोशिश कीजिये। आंसुओं से ज़्यादा और किसी भी चीज़ से मन इतना अधिक हल्का नहीं होता।"

वह उसे अंधेरे ड्राइंगरूम में ले गयी और प्येर को इस बात की ख़ुशी हुई कि वहां उसका चेहरा देखनेवाला कोई नहीं था। आन्ना मिख़ाइलोव्ना उसके पास से चली गयी और जब लौटी तो उसने उसे सिर के नीचे हाथ रखे हुए गहरी नींद में सोते पाया।

अगली सुबह को आन्ना मिख़ाइलोव्ना ने प्येर से कहा:

"हां, मेरे दोस्त, आपकी तो बात ही क्या की जाये, यह हम सभी के लिये बहुत बड़ी क्षति है। किन्तु भगवान आपकी मदद करेंगे, आप जवान हैं और मैं यह आशा करती हूं कि अब बहुत बड़ी सम्पत्ति के स्वामी बन गये हैं। वसीयतनामा अभी खोला नहीं गया। मैं आपको अच्छी तरह से जानती हूं और मुझे इस बात का पूरा यक़ीन है कि इससे आप घमंड में नहीं आ जायेंगे, लेकिन आप पर बहुत-सी ज़िम्मेदारियां आ जायेंगी। आपको मर्द बनना होगा।"

प्येर ख़ामोश रहा।

"शायद बाद में मैं आपको यह बताऊं कि अगर मैं यहां न होती तो भगवान जानें क्या हो जाता। आपको मालूम ही है कि दो दिन पहले चाचा जी ने बोरीस को न भूलने का भी वादा किया था, मगर वह

उसे पूरा नहीं कर पाये। मेरे मित्र, मैं आशा करती हूं कि आप अपने पिता की इच्छा को पूरा करेंगे।"

प्येर कुछ नहीं समझा और चुप रहते तथा संकोच से लाल होते हुए उसने प्रिंसेस आन्ना मिख़ाइलोव्ना की ओर देखा। प्येर से बातचीत करने के बाद आन्ना मिख़ाइलोव्ना काउंट रोस्तोव के यहां जाकर सो गयी। सुबह को जागने पर उसने रोस्तोव परिवार और अपनी जान-पहचान के अन्य लोगों को काउंट बेज़ूख़ोव की मौत की तफ़सीलें बतायीं। उसने कहा कि काउंट की मृत्यु ऐसे हुई जैसे वह ख़ुद भी मरना चाहेगी, कि उसका अन्त मर्मस्पर्शी ही नहीं, शिक्षाप्रद भी था। पिता के साथ बेटे की अन्तिम भेंट इतनी मार्मिक थी कि उसकी याद आने पर बरबस उसकी आंखें भर आती थीं और उसके लिये यह कहना मुश्किल था कि उन भयानक क्षणों में किसने अपने व्यवहार की श्रेष्ठता का परिचय दिया– पिता ने, जिन्होंने अन्तिम क्षणों में सभी चीज़ों और हर किसी को याद किया और बेटे से ऐसी मार्मिक बातें कहीं, या प्येर ने जो दुख से बिल्कुल टूटा हुआ था, किन्तु इसके बावजूद जिसने अपने दुख को छिपाने की पूरी कोशिश की, ताकि मरणासन्न पिता का मन व्यथित न हो। "यह सब दुःखद, किन्तु शिक्षाप्रद है। बूढ़े काउंट और उसके सुयोग्य पुत्र जैसे लोगों को देखकर आत्मा का उत्थान हो जाता है।" उसने कहा। उसने बड़ी प्रिंसेस और प्रिंस वसीली के रवैये का भी उल्लेख किया, उसकी भर्त्सना की, मगर बड़े रहस्य के रूप में और कानाफूसी करते हुए।

२२

लीसिये गोरि (नंगी-बुच्ची) पहाड़ियों पर, जहां प्रिंस निकोलाई अन्द्रेयेविच बोल्कोन्स्की की जागीर थी, हर दिन जवान प्रिंस अन्द्रेई बोल्कोन्स्की और उसकी पत्नी के आने की प्रतीक्षा हो रही थी। किन्तु इस प्रतीक्षा से बूढ़े प्रिंस, बड़े जनरल, प्रिंस निकोलाई अन्द्रेयेविच (जिन्हें ऊंचे समाज में 'प्रशा का बादशाह' कहा जाता था) की बंधी-बंधायी दिनचर्या में कोई अन्तर नहीं आया था। यह व्यवस्था
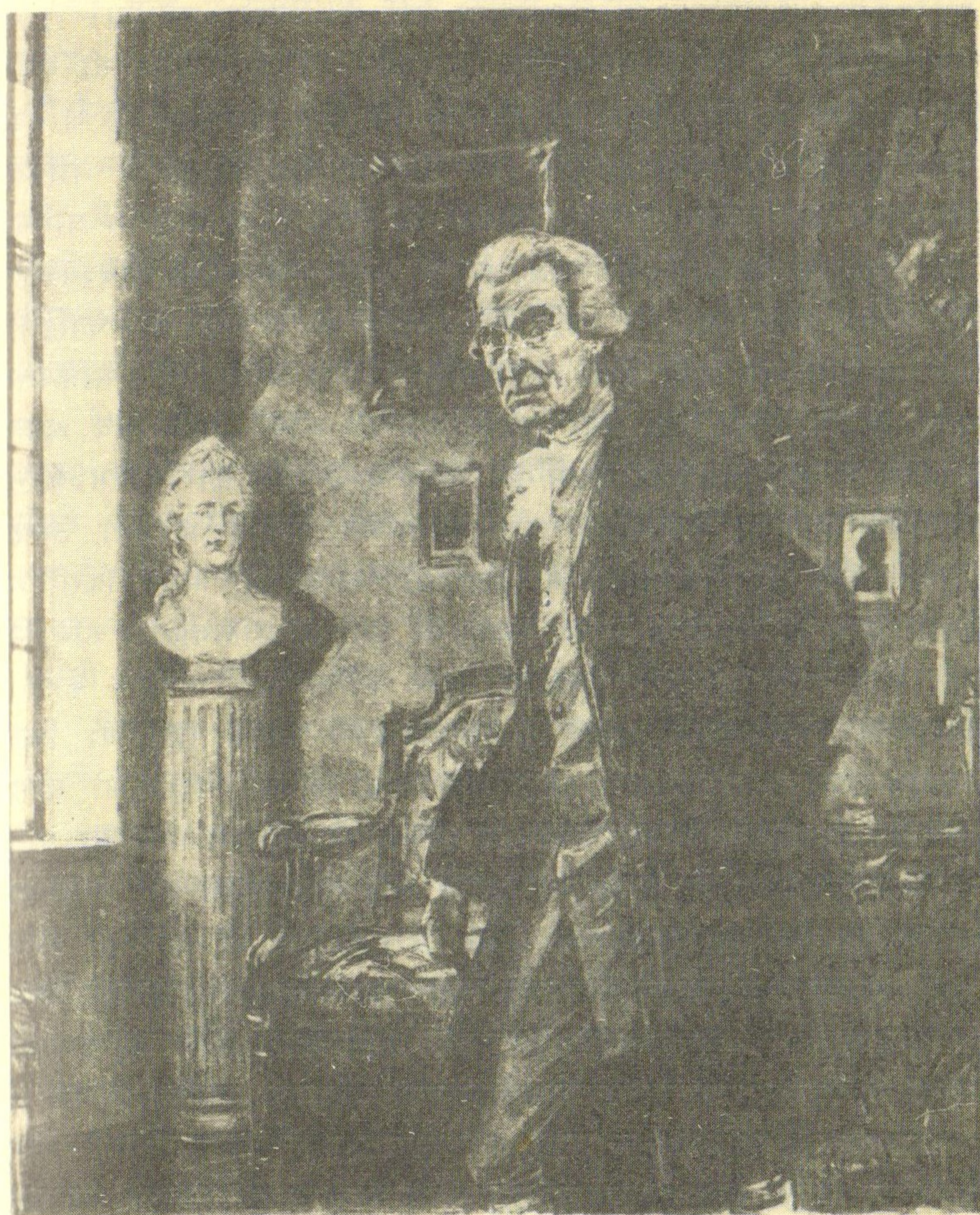
बुजुर्ग प्रिंस बोल्कोन्स्की।

उसी समय से चली आ रही थी, जब ज़ार पावेल के शासनकाल में* उन्हें गांव में निर्वासित कर दिया गया था और वह अपनी बेटी मरीया तथा उसकी संगिनी कुमारी बुर्येन के साथ लीसिये गोरि की जागीर पर रहते थे और कहीं भी आते-जाते नहीं थे। यद्यपि नये ज़ार** के सत्तारूढ़ होने पर उन्हें राजधानियों में जाने की अनुमति दे दी गयी थी, तथापि वह यह कहते हुए गांव में ही रहते चले जा रहे थे कि अगर किसी को उनकी ज़रूरत होगी तो वह खुद मास्को से लीसिये गोरि तक डेढ़ सौ वेर्स्ता*** का फ़ासला तय करके उनके पास आ जायेगा और खुद उन्हें न तो किसी चीज़ और न किसी व्यक्ति की आवश्यकता है। उनका कहना था कि लोगों की बुराइयों के दो स्रोत हैं – काहिली और अन्धविश्वास तथा इसी तरह भलाई के दो आधार हैं – सक्रियता और बुद्धि। अपनी बेटी की शिक्षा-दीक्षा का काम उन्होंने खुद अपने हाथ में ले रखा था और उसमें इन दोनों मुख्य गुणों का विकास करने के लिये वह उसे बीजगणित और रेखागणित सिखाते थे तथा उसके लिये उन्होंने ऐसी दिनचर्या बना रखी थी कि वह हर समय किसी न किसी काम में व्यस्त रहे। वह स्वयं भी इसी तरह लगातार काम में जुटे रहते – अपने संस्मरण लिखते, उच्च गणित के प्रश्न हल करते, ख़राद पर नासदानियां बनाते, बाग़-बगीचे में व्यस्त रहते या फिर निर्माण-कार्यों का निरीक्षण करते जो उनकी जागीर पर कभी ख़त्म होने का नाम ही नहीं लेते थे। चूंकि सक्रिय रूप से काम-काज कर पाने के लिये मुख्य शर्त्त यह है कि जिन्दगी में कोई तौर-तरीक़ा और व्यवस्था हो तो बूढ़े प्रिंस बोल्कोन्स्की के जीवन में इस तरह की बहुत ही नपी-तुली व्यवस्था थी। वह हमेशा एक जैसे और अपरिवर्तित ढंग से खाने की मेज़ पर आते, सो भी घण्टे की नहीं, बल्कि मिनट-मिनट की पाबन्दी बरतते हुए। बेटी से लेकर नौकरों-चाकरों तक वह अपने इर्द-गिर्द के सभी लोगों के साथ कठोर व्यवहार करते, कभी नर्मी न दिखाते और इसलिये क्रूर न होते हुए भी उनके दिलों में भय और आदर का वह भाव पैदा करते जो क्रूरतम व्यक्ति भी पैदा नहीं कर सकता था। इस

---

* सम्राट पावेल प्रथम सन् १७९६ से सन् १८०१ तक रूस के शासक। – सं०

** ज़ार अलेक्सान्द्र प्रथम से अभिप्राय है। – सं०

*** वेर्स्ता – एक किलोमीटर से कुछ अधिक। – अनु०

चीज़ के बावजूद कि अब वह रिटायर हो चुके थे और राजकीय कामकाज की दृष्टि से कोई महत्त्व नहीं रखते थे, इस गुबेर्निया * में, जहां उनकी जागीर थी, आनेवाला हर सरकारी अफ़सर उन्हें प्रणाम करने के लिये उनकी सेवा में उपस्थित होना अपना कर्त्तव्य मानता था और वास्तुकार, माली या प्रिंसेस मरीया की भांति नियत समय पर ऊंची छतवाली बैठक में प्रिंस के आने की राह देखता था। और इस बैठक में उपस्थित हर आदमी उस समय आदर ही नहीं, भय भी अनुभव करता, जब बैठक का ऊंचा, विराट दरवाज़ा खुलता और पाउडर लगा विग पहने छोटे-छोटे सूखे हाथों तथा भूरी घनी भौंहोंवाले नाटे-से बुज़ुर्ग प्रिंम भीतर आते जो कभी-कभी ऐसे तेवर चढ़ाते कि भौंहें उनकी बुद्धिमत्तापूर्ण तथा जवान आंखों की चमक छिपा लेतीं।

जिस दिन प्रिंस अन्द्रेई और उसकी पत्नी आनेवाले थे, उस सुबह को प्रिंसेस मरीया सदा की भांति पिता का अभिवादन करने के लिये बैठक में गयी और भय के कारण वह अपने ऊपर सलीब का निशान बनाती तथा मन ही मन प्रार्थना करती जा रही थी। हर सुबह को ही वह यहां आती थी और हर सुबह को ही यह प्रार्थना करती रहती थी कि पिता के साथ उसकी यह भेंट अच्छी रहे।

सिर पर पाउडर लगा विग पहने बूढ़ा नौकर धीरे से उठा और उसने फुसफुसाकर कहा : "पधारिये।"

दरवाज़े के पीछे से ख़राद की लयबद्ध ध्वनि सुनायी दे रही थी। प्रिंसेस ने आसानी से खुल जानेवाले दरवाज़े को झिझकते-झिझकते खोला और उसी के पास रुक गयी। प्रिंस ख़राद पर काम कर रहे थे और मुड़कर देखने के बाद उन्होंने अपना काम जारी रखा।

बहुत बड़ा कमरा ऐसी चीज़ों से भरा हुआ था जिन्हें स्पष्टतः निरन्तर उपयोग में लाया जाता था। बहुत बड़ी मेज़, जिसपर किताबें और ख़ाके रखे थे, किताबों की शीशोंवाली बड़ी-बड़ी अलमारियां, जिनके दरवाज़ों में चाबियां लगी हुई थीं, खड़े रहकर लिखने की ऊंची मेज़ जिसपर खुली हुई कापी रखी थी, ख़राद, जिसके पास ढंग से रखे औज़ार और सभी ओर बिखरी हुई लकड़ी की छीलन – यह सब कुछ ज़ाहिर करता था कि यहां लगातार, विविधतापूर्ण और सलीके

---

* गुबेर्निया – प्रान्त। – अनु०

से काम होता रहता है। रुपहली कढ़ाईवाला तातारी गमबूट पहने छोटे-से पांव की गति-विधियों और उभरी नसोंवाले पतले-से हाथ के दृढ़ दबाव से यह स्पष्ट था कि ताज़गी लिये हुए प्रिंस के बुढ़ापे में अभी बहुत-सी दृढ़तापूर्ण शक्ति और कार्य-क्षमता बाक़ी है। ख़राद को कुछ और बार घुमाने के बाद उन्होंने उसके पेडल से पांव हटाया, छेनी को पोंछा, उसे ख़राद के साथ लटके चमड़े के थैले में डाला और मेज़ के निकट आकर बेटी को अपने पास बुलाया। वह अपने बच्चों को कभी आशीर्वाद नहीं देते थे और चुम्बन के लिये केवल अपना गाल उसकी तरफ़ बढ़ाकर, जिसपर अभी तक दाढ़ी न बनाने के कारण बालों की खूंटियां उगी हुई थीं, उसे कड़ाई और साथ ही स्नेहपूर्ण ध्यान से देखते हुए बोले :

"तबीयत ठीक है न ?.. तो बैठो!"

प्रिंस ने रेखागणित की कापी ली जिसपर उनके हाथ से लिखे हुए प्रश्न थे और पांव से अपनी कुर्सी को बेटी के निकट खिसकाया।

"ये प्रश्न कल के लिये हैं!" उन्होंने जल्दी से पृष्ठ खोजकर तथा सख़्त नाख़ून से एक पैरे से दूसरे पैरे तक निशान बनाते हुए कहा।

प्रिंसेस मेज़ पर रखी कापी की तरफ़ झुक गयी।

"अरे हां, तुम्हारा एक ख़त आया है," बूढ़े प्रिंस ने मेज़ के साथ बंधे थैले में से एक ख़त निकालकर मेज़ पर फेंकते हुए अचानक कहा। इसपर औरत की लिखावट में पता लिखा था।

पत्र को देखते ही प्रिंसेस के गालों पर सुर्ख़ी दौड़ गयी। उसने उसे झटपट उठा लिया और उसपर अपना सिर झुका दिया।

"यह यूलिया का ख़त है न?" प्रिंस ने रुखाई से मुस्कराते और अपने अभी तक मज़बूत तथा कुछ-कुछ पीले दांतों की झलक देते हुए पूछा।

"हां, यूलिया का है," प्रिंसेस ने सहमी-सहमी नज़र से पिता की ओर देखते और सहमे-सहमे मुस्कराते हुए कहा।

"उसके दो ख़त तुम्हें और दे दूंगा, लेकिन तीसरा पढ़ लूंगा," प्रिंस ने कड़ाई से कहा, "लगता है कि बहुत-सी ऊट-पटांग बातें लिखती हो। तीसरा पत्र मैं पढ़ लूंगा।"

"बेशक इसे ही पढ़ लीजिये, पिता जी," और अधिक लज्जारुण होते तथा उनकी ओर पत्र बढ़ाते हुए प्रिंसेस ने उत्तर दिया।

"तीसरा, कह चुका हूं कि तीसरा," प्रिंस ने पत्र को पीछे हटाते हुए ज़रा चिल्लाकर कहा और मेज़ पर कोहनियां टिकाकर रेखागणित के प्रश्नोंवाली कापी अपनी ओर खींच ली।

"तो देवी जी," बेटी के नज़दीक कापी पर झुकते तथा उस कुर्सी की टेक पर एक हाथ टिकाते हुए, जिसपर प्रिंसेस बैठी थी, प्रिंस ने कहना शुरू किया और प्रिंसेस ने अपने को सभी ओर से तम्बाकू तथा पिता की बुढ़ापेवाली उस तीखी गन्ध से घिरा हुआ पाया जिससे वह बहुत पहले से परिचित थी। "तो देवी जी, ये तिकोण समान हैं – इस कोण abc की ओर ध्यान देने की कृपा कीजिये ..."

प्रिंसेस ने सहमते हुए अपने बहुत ही निकट पिता की चमकती आंखों की ओर देखा। उसके चेहरे पर लाली दौड़ गयी और साफ़ नज़र आ रहा था कि वह कुछ भी नहीं समझ रही तथा इतनी ज़्यादा डर रही है कि भय उसे पिता के स्पष्टीकरण को, वह चाहे कितना ही साफ़ क्यों न हो, आगे समझने में बाधा डाल रहा है। दोष अध्यापक का था या छात्रा का, किन्तु हर दिन यही क़िस्सा दोहराया जाता था – प्रिंसेस की आंखों के सामने धुंधलका-सा छा गया था, वह न तो कुछ देख और न कुछ सुन रही थी, कठोर पिता के मुरझाये चेहरे, सिर्फ़ उनकी सांस और गंध को अपने निकट अनुभव कर रही थी तथा सिर्फ़ यही सोच रही थी कि कैसे जल्दी से जल्दी वह पिता के कमरे से बाहर चली जाये और अपने कमरे में जाकर चैन से इस प्रश्न को हल करे। बुज़ुर्ग आपे से बाहर हुए जा रहे थे: जिस कुर्सी पर बैठे थे उसे उन्होंने ज़ोर से पीछे खिसकाया, फिर आगे खींचा और अपने ग़ुस्से पर क़ाबू पाने की कोशिश की। किन्तु वह लगभग हर बार ही आग-बबूला हो उठते थे, भला-बुरा कहते थे और कभी-कभी तो कापी भी फेंक देते थे।

प्रिंसेस ने सही उत्तर नहीं दिया।

"है न उल्लू लड़की!" कापी को दूर हटाते और तेज़ी से मुंह फेरते हुए प्रिंस चिल्ला उठे। किन्तु उसी समय उठे, उन्होंने कमरे में चक्कर लगाया, हाथों से बेटी के बाल छुए और फिर से बैठ गये।

प्रिंस ने कुर्सी आगे बढ़ायी और प्रश्न का हल समझाते रहे।

"ऐसे काम नहीं चलेगा, प्रिंसेस, ऐसे काम नहीं चलेगा," उन्होंने उस वक़्त कहा, जब प्रिंसेस अगले दिन के लिये दिये गये प्रश्नों की

कापी लेकर और उसे बन्द करके जाने को तैयार हुई, "गणित एक महान विद्या है, देवी जी! मैं यह नहीं चाहता कि आप हमारी अन्य मूर्ख महिलाओं जैसी बनें। सब्र का फल मीठा होता है।" उन्होंने बेटी का गाल थपथपाया। "गणित की बदौलत दिमाग़ से सब उलटी-सीधी बातें निकल जायेंगी।"

प्रिंसेस ने जाना चाहा, मगर बूढ़े प्रिंस ने संकेत से उसे रोका और ऊंची मेज़ से एक नयी पुस्तक उठायी जिसके पृष्ठ अभी तक काटे नहीं गये थे।

"तुम्हारी यूलिया ने तुम्हें यह कोई और 'रहस्य-कुंजी' भेजी है। कोई धार्मिक पुस्तक है। मैं किसी की धार्मिक आस्थाओं में दख़ल नहीं देता हूं... मैंने इसपर नज़र डाल ली है। इसे ले लो। तो अब जाओ, जाओ!"

उन्होंने बेटी का कंधा थपथपाया और उसके बाहर जाते ही दरवाज़ा बन्द कर दिया।

चेहरे पर उदासी तथा भय का भाव लिये हुए प्रिंसेस अपने कमरे में लौटी। ऐसा भाव लगभग हमेशा ही उसके चेहरे पर बना रहता था तथा उसके असुन्दर तथा रुग्ण-से चेहरे को और भी अधिक असुन्दर बना देता था। वह लिखने की मेज़ के सामने बैठ गयी जिसपर लघु छविचित्र रखे थे और जो किताबों तथा कापियों से अटी पड़ी थी। प्रिंसेस के पिता जितने अधिक व्यवस्थित थे, प्रिंसेस उतनी ही अव्यवस्थित थी। उसने रेखागणित की कापी मेज़ पर रख दी और बेसब्री से पत्र खोला। यह उसकी बचपन की सहेली, उसी यूलिया करागिना का पत्र था जो रोस्तोव परिवार में मनाये गये जन्मदिन के समारोह में शामिल हुई थी।

यूलिया ने फ़्रांसीसी में लिखा था:

"मेरी प्यारी और अमूल्य सहेली, कितनी भयानक और बुरी चीज़ है जुदाई! मैं अपने मन को चाहे कितना ही क्यों न समझाऊं कि आप मेरे आधे जीवन और आधी ख़ुशी की संगिनी हैं, कि उस फ़ासले के बावजूद जो हमें अलग करता है, हमारे हृदय अटूट स्नेह-सूत्रों में बंधे हैं, मेरा दिल भाग्य को कोसता है और उन ख़ुशियों तथा आकर्षणों के होते हुए भी जो मुझे यहां सभी ओर से घेरे हैं, मैं उस दबी-दबी उदासी पर क़ाबू पाने में असमर्थ हूं, जिसे हमारी जुदाई के बाद से

प्रिंसेस मरीया।

मैं अपने हृदय की गहराई में अनुभव करती हूं। पिछली गर्मियों की भांति क्यों हम आपके बड़े कमरे में, नीले सोफ़े पर, 'हमारे रहस्यों' के सोफ़े पर एकसाथ नहीं हैं? तीन महीने पहले की तरह क्यों मैं आपकी विनम्र, शान्त और बींधती आंखों से, जिन्हें में इतना अधिक प्यार करती हूं और जिन्हें मैं अब पत्र लिखते समय अपने सामने देख रही हूं, नयी नैतिक शक्ति प्राप्त नहीं कर सकती?"

पत्र को यहां तक पढ़ने के बाद मरीया ने गहरी सांस ली और दायीं ओरवाले दर्पण में अपने को निहारा। दर्पण में उसे असुन्दर, कमजोर शरीर तथा दुबला-सा चेहरा दिखायी दिया। हमेशा उदास रहनेवाली आंखें अब तो विशेष निराशा से अपने को दर्पण में देख रही थीं। "वह मेरी चापलूसी कर रही है," प्रिंसेस ने सोचा, मुंह फेर लिया और पत्र को आगे पढ़ना जारी रखा। किन्तु यूलिया ने अपनी सहेली की चापलूसी नहीं की थी। प्रिंसेस की बड़ी-बड़ी, गहन और आलोकपूर्ण आंखें (मानो उनमें से कभी-कभी प्यारे प्रकाश के किरण-पुंज निकलते हों) इतनी अच्छी थीं कि बहुत अक्सर पूरे चेहरे की असुन्दरता के बावजूद ये आंखें सौन्दर्य से भी अधिक आकर्षक हो जाती थीं। किन्तु प्रिंसेस अपनी आंखों की सुखद अभिव्यक्ति, उस अभिव्यक्ति को कभी नहीं देख पाती थी जो उनमें उस वक़्त झलकती थी, जब वह अपने बारे में नहीं सोचती थी। जैसे ही वह दर्पण में अपने को देखती थी, वैसे ही सभी लोगों की भांति उसका चेहरा तनावपूर्ण, अस्वाभाविक और भद्दा-सा बन जाता था। वह आगे पढ़ती गयी:

"सारे मास्को में बस, युद्ध की ही चर्चा है। मेरे दो भाइयों में से एक तो पहले ही विदेश में है और दूसरा गार्ड-रेजिमेंट में है जो बहुत जल्द ही विदेश जानेवाली है। हमारे प्यारे सम्राट पीटर्सबर्ग से रवाना होनेवाले हैं और ऐसा माना जाता है कि अपने अमूल्य जीवन को युद्ध के ख़तरों का शिकार बनाने जा रहे हैं। भगवान करे कि देवता-तुल्य हमारे सम्राट, जिन्हें प्रभु ने हमपर शासन करने के लिये भेजा है, उस कोरसिकानी राक्षस* का मान-मर्दन कर दें जो यूरोप की शान्ति भंग कर रहा है। इस युद्ध ने न केवल मेरे भाइयों को ही, बल्कि एक अन्य

---

* यहां फ़ांसीसी सम्राट नेपोलियन बोनापार्ट की चर्चा की जा रही है जिसका भूमध्य सागर के उत्तर में स्थित कोरसिका द्वीप में जन्म हुआ था। – सं०

व्यक्ति को भी, जो मुझे बहुत प्रिय है, मुझसे अलग कर दिया है। मेरा अभिप्राय जवान निकोलाई रोस्तोव से है जो अपने जोश के कारण चैन से बैठा नहीं रह सकता था और विश्वविद्यालय की पढ़ाई छोड़कर सेना में चला गया। मेरी प्यारी मरीया, आपके सामने मैं यह स्वीकार करती हूं कि उसके अत्यधिक जवान होने के बावजूद उसका सेना में जाना मेरे लिये बहुत ही दुख की बात थी। इस नौजवान में, जिसकी मैंने पिछली गर्मी में आपसे चर्चा की थी, इतनी उदात्तता, ऐसी सच्ची तरुणाई है जो हमारे समय के 'बीस वर्षीय बूढ़ों' में बहुत कम देखने को मिलती है! उसकी अत्यधिक निश्छलता और हार्दिकता तो विशेष रूप से उल्लेखनीय है। वह मन का इतना निर्मल और कवित्वपूर्ण है कि उसके साथ मेरे सम्बन्ध क्षणिक होते हुए भी मेरे दुखी दिल के लिये, जिसने इतनी अधिक व्यथा-वेदना सही है, मधुरतम प्रसन्नता प्रदान करनेवाले थे। मैं कभी आपको हमारे विदाई के क्षणों और उस समय जो कुछ कहा गया, उसके बारे में बताऊंगी। अभी तो यह सब बहुत ताज़ा है... आह, मेरी प्यारी सहेली, आप इतनी सौभाग्यशालिनी हैं कि दिल को कचोटनेवाले इन सुख-दुख से अपरिचित हैं। आप सौभाग्य-शालिनी हैं, क्योंकि सामान्यत: दुख सुख से सशक्त होता है। मैं इस बात को बहुत अच्छी तरह से समझती हूं कि काउंट निकोलाई अभी इतना अधिक जवान है कि वह मेरे लिये मित्र से अधिक कुछ नहीं हो सकता। किन्तु ऐसी मधुर मैत्री, इतने अधिक काव्यमय और इतने अधिक पवित्र सम्बन्धों की ही तो मेरे हृदय को अपेक्षा थी। किन्तु अब इसकी काफ़ी चर्चा हो चुकी। मास्को की सबसे बड़ी ख़बर तो बूढ़े काउंट बेज़ूख़ोव की मौत और उसकी सम्पत्ति के उत्तराधिकार की है। आप कल्पना कीजिये कि तीनों प्रिंसेसों को सम्पत्ति का बहुत कम हिस्सा मिला है, प्रिंस वसीली को कुछ भी नहीं मिला और प्येर को शेष सारी सम्पत्ति मिल गयी है। इसके अलावा उसे क़ानूनी बेटा भी मान लिया गया है, वह काउंट बेज़ूख़ोव और रूस में सबसे बड़ी सम्पत्ति का भी स्वामी बन गया है। सुनने में आया है कि प्रिंस वसीली ने इस सारे क़िस्से में बड़ी भद्दी भूमिका अदा की और वह बहुत ही अपमानित होकर पीटर्सबर्ग गया है। आपके सामने यह स्वीकार करती हूं कि वसीयतनामे और उत्तराधिकार के मामलों को मैं अच्छी तरह नहीं समझती, किन्तु इतना अवश्य कह सकती हूं कि वह नौजवान जिसे हम सभी मामूली

प्येर के रूप में जानते थे, जबसे काउंट बेज़ूख़ोव और रूस की एक सबसे बड़ी सम्पत्ति का स्वामी बना है, मुझे इस महानुभाव के प्रति जो मुझे हमेशा तुच्छ प्रतीत हुआ है (यह हम दोनों के बीच की बात है), ब्याह-शादी के लायक़ जवान बेटियोंवाली माताओं तथा ख़ुद इन युवतियों के रवैये में होनेवाला परिवर्तन बड़ा दिलचस्प महसूस हो रहा है। चूंकि पिछले दो सालों से सभी मेरे लिये दूल्हे ढूंढ़ने के काम से अपना मन बहला रहे हैं, जिनमें से अधिकतर को मैं जानती भी नहीं होती, तो मास्को की विवाह-सम्बन्धी गपशप के अनुसार अब मुझे काउंटेस बेज़ूख़ोवा बनाया जा रहा है। किन्तु आप तो समझती ही हैं कि मैं बिल्कुल ऐसा नहीं चाहती। प्रसंगवश विवाहों के बारे में। आप जानती हैं या नहीं कि कुछ ही समय पहले **जगत मौसी** आन्ना मिख़ाइलोव्ना ने बहुत ही बड़े रहस्य के रूप में मुझे आपकी शादी करवाने की योजना बतायी। जिस व्यक्ति के साथ आपकी शादी करने की बात सोची जा रही है, वह और कोई नहीं, बल्कि प्रिंस वसीली का बेटा अनातोल ही है जिसे वे लोग किसी धनी और जाने-माने परिवार की लड़की का पति बनाकर सुधारना चाहते हैं। इसके लिये आप ही को चुना गया है। मैं नहीं जानती कि इस बारे में आपका क्या विचार है, किन्तु आपको पहले से सूचित कर देना मैंने अपना कर्त्तव्य समझा। कहते हैं कि वह बहुत ही सुन्दर और उद्दंड है। उसके बारे में मैं सिर्फ़ इतना ही जान पायी हूं।

"किन्तु अब काफ़ी गपशप हो चुकी। दूसरा पृष्ठ समाप्त हो रहा है और अम्मां ने मुझे अप्राकसिन परिवारवालों के यहां खाने पर चलने के लिये बुलवा भेजा है।

"मैं आपको जो रहस्यवादी पुस्तक भेज रही हूं, उसे पढ़िये। हमारे यहां तो इसे ख़ूब पढ़ा जा रहा है। बेशक इसमें कुछ ऐसी चीज़ें हैं जो मानव की तुच्छ बुद्धि की समझ से परे हैं, फिर भी यह बहुत बढ़िया पुस्तक है: इसे पढ़ने से आत्मा को चैन मिलता है, उसका उत्थान होता है। तो नमस्ते। अपने पिता जी को मेरा सादर प्रणाम और मदाम बुर्येन को अभिवादन कहिये। हार्दिक स्नेह सहित,

यूलिया।

पुनश्च – अपने भाई और उसकी प्यारी पत्नी के बारे में लिखने की कृपा कीजिये।"

प्रिंसेस मरीया सोच में डूब गयी, विचारमग्न-सी मुस्करायी (उसकी चमकीली आंखों से आलोकित चेहरा एकदम बदल गया) और फिर अचानक उठकर तथा बोझिल से क़दम रखते हुए मेज़ के पास गयी। उसने काग़ज़ लिया और उसपर उसकी लेखनी तेज़ी से चलने लगी। उसने जवाब में यह लिखा :

"मेरी प्यारी और अमूल्य सहेली। आपके तेरह तारीख़ के ख़त से मुझे बहुत ख़ुशी हुई। आप अभी तक मुझे प्यार करती हैं, मेरी रोमांटिक यूलिया। लगता है कि जुदाई ने, जिसके बारे में आपने ऐसी कटु बातें लिखी हैं, आप पर सामान्य प्रभाव नहीं डाला। आप जुदाई की शिकायत करती हैं, किन्तु यदि मैं, जो उन सभी से बिछुड़ी हुई हूं जिन्हें प्यार करती हूं, ऐसी शिकायत करने की जुर्रत करती तो क्या कहती? ओह, यदि हमें धार्मिक सान्त्वना न प्राप्त होती तो जीवन बहुत ही दुखद होता। जब आप जवान व्यक्ति के प्रति अपने झुकाव की चर्चा करती हैं तो इस विषय में मेरे दृष्टिकोण को कठोर क्यों मान लेती हैं? इस मामले में मैं सिर्फ़ अपने प्रति कठोर हूं। दूसरे लोगों में ऐसी भावनाओं को मैं भली-भांति समझती हूं और चूंकि मैंने इन्हें स्वयं कभी अनुभव नहीं किया, इसलिये यदि मैं इनका अनुमोदन नहीं करती तो भर्त्सना भी नहीं करती। हां, मुझे ऐसा ज़रूर लगता है कि अपने साथियों-मित्रों, अपने शत्रुओं के प्रति ईसाई धर्म के अनुरूप प्यार उन भावनाओं से कहीं अधिक स्तुत्य, सुखकर और श्रेष्ठ है जो किसी नौजवान की सुन्दर आंखें आप जैसी किसी रोमांटिक और प्यार करने-वाली युवती के हृदय में पैदा करती हैं।

"काउंट बेज़ूखोव का मृत्यु-समाचार आपका पत्र आने से पहले ही हम तक पंहुच गया था और मेरे पिता जी उससे बहुत विह्वल हो उठे थे। उनका कहना है कि काउंट बेज़ूख़ोव हमारे महान युग के एक कम अन्तिम प्रतिनिधि थे और अब उनकी बारी है। किन्तु वह अपने भरसक सभी कुछ करेंगे ताकि यह बारी अधिक से अधिक देर में आये। भगवान हमें यह बुरा दिन न दिखायें!

"प्येर के बारे में, जिसे मैं तब से जानती हूं जब वह बालक था, मैं आपके मत से सहमत नहीं हो सकती। मुझे हमेशा ऐसे लगता रहा है कि उसका दिल बहुत ही अच्छा है और यही वह गुण है जिसे मैं लोगों में सबसे अधिक मूल्यवान मानती हूं। जहां तक उसके उत्तराधि-

कार पाने और इस मामले में प्रिंस वसीली की भूमिका का सम्बन्ध है, तो यह दोनों के लिये दुख की बात है। ओह, मेरी प्यारी सहेली, हमारे दिव्य उद्धारक के ये शब्द कि भगवान के दरबार में किसी धनी के जा पाने की तुलना में सूई की नोक में से ऊंट का निकल जाना कहीं अधिक सम्भव है – अत्यधिक सच्चे हैं! मुझे प्रिंस वसीली और उनसे अधिक प्येर पर तरस आ रहा है। इतनी जवानी की उम्र में उसपर इतनी अधिक सम्पत्ति का बोझ आ गया है – कितने अधिक प्रलोभनों का सामना करना होगा उसे! अगर मुझसे यह पूछा जाता कि इस दुनिया में मैं सबसे अधिक क्या चाहती हूं तो यही उत्तर देती कि सबसे ग़रीब भिखारी से भी अधिक ग़रीब होना चाहती हूं। मेरी प्यारी, आपने जो पुस्तक भेजी है, और जिसे आपके यहां इतने उत्साह से पढ़ा जा रहा है, मैं उसके लिये आपकी बहुत-बहुत आभारी हूं। वैसे, आपने यह भी लिखा है कि उसमें बहुत-सी अच्छी बातों के साथ-साथ कुछ ऐसी भी हैं जो तुच्छ मानव बुद्धि की समझ से परे हैं तो मुझे लगता है कि समझ में न आनेवाली चीज़ों को पढ़ने में वक़्त बरबाद करना बेमानी है, क्योंकि ऐसा करने से कोई फ़ायदा नहीं होगा। मैं तो कभी भी ऐसे कुछ लोगों के पागलपन को नहीं समझ पायी जो रहस्यवादी पुस्तकों के चक्कर में पड़कर अपने विचारों को उलझाते हैं, अपने मस्तिष्कों में केवल शंकायें पैदा करते हैं, अपनी कल्पनाओं को उत्तेजित करते हैं और उन्हें ऐसी अतिशयोक्ति की ओर झुकाते हैं जो ईसाई धर्म की सरलता के बिल्कुल प्रतिकूल है। इसलिये धर्मग्रंथ और इंजील पढ़ना ही कहीं ज़्यादा अच्छा होगा। इन पुस्तकों में जो कुछ रहस्यपूर्ण है, हम उसकी तह तक पहुंचने का प्रयास नहीं करेंगे, क्योंकि हम दयनीय, पापी मानव उस समय तक ईश्वरीय विधान के उन भयानक और पावन रहस्यों को कैसे जान सकते हैं, जब तक हम नश्वर शरीर का जामा पहने हैं और जो हमारे और शाश्वत के बीच अभेद्य आवरण बना हुआ है? यही ज़्यादा अच्छा होगा कि हम अपने को उन महान सिद्धान्तों के अध्ययन तक ही सीमित रखें जो हमारे दिव्य उद्धारक इस पृथ्वी पर हम लोगों के निर्देशन के लिये छोड़ गये हैं। हम उनका अनुकरण और इस बात का विश्वास करने का प्रयास करेंगे कि हम लोग अपनी बुद्धि को जितनी कम छूट देंगे, भगवान को, जो उस सारे ज्ञान को अस्वीकार कर देते हैं, जिसका उद्गम-स्रोत

वह स्वयं नहीं होते, उतना ही अधिक अच्छा लगेगा और उस चीज़ की गहराई में हम जितना ही कम जायेंगे जिसे वह हमसे छिपाना चाहते थे, उतनी ही जल्दी वह अपनी दिव्य बुद्धि से उसे हमारे लिये समझना सम्भव बना देंगे।

"पिता जी ने मेरे वर के बारे में मुझसे कुछ नहीं कहा, केवल इतना ही बताया कि प्रिंस वसीली हमारे यहां आनेवाले हैं। जहां तक मुझसे सम्बन्धित विवाह-योजना की बात है, तो इस बारे में मेरी प्यारी और अमूल्य सहेली, मैं आपसे यह कहूंगी कि मैं शादी को विधि का विधान मानती हूं और हमें इसके सम्मुख नतमस्तक होना चाहिये। मेरे लिये यह चाहे कितना ही कष्टप्रद क्यों न हो, किन्तु यदि सर्वशक्तिमान परमेश्वर की ऐसी ही इच्छा होगी कि मैं पत्नी और मां के कर्त्तव्य पूरे करूं तो जिस किसी को भी वह मेरा पति बना देंगे, उसके सम्बन्ध में अपनी भावनाओं की ज़रा भी परवाह किये बिना बहुत ही निष्ठा से इन कर्त्तव्यों को पूरा करने की कोशिश करूंगी।

"मुझे भाई का ख़त मिला है जिसमें उसने अपनी पत्नी के साथ लीसिये गोरि आने की सूचना दी है। किन्तु यह ख़ुशी बहुत ही थोड़े समय की होगी, क्योंकि वह हमें छोड़कर उस जंग में हिस्सा लेने जा रहा है जिसमें, भगवान ही जानते हैं, हम कैसे और किसलिये घसीट लिये गये हैं। काम-काज और सोसाइटी के केन्द्र-बिन्दु आपके मास्को में ही नहीं, बल्कि कृषि-कार्यवाले और हमारे शान्त गांव में भी, जैसी कि नगरवासी इसकी कल्पना करते हैं, युद्ध की ही चर्चा सुनायी देती है और यह मन में बड़ी कटुता पैदा करती है। मेरे पिता तो सिर्फ़ हमलों और जवाबी हमलों का ही ज़िक्र करते रहते हैं जिनके बारे में मैं कुछ भी नहीं समझती। दो दिन पहले गांव की सड़क पर सदा की भांति सैर करते हुए मैंने एक हृदय-विदारक दृश्य देखा। हमारे गांव में भरती किये गये रंगरूटों को फ़ौज में भेजा जा रहा था। इन रंगरूटों की माताओं तथा बीवियों-बच्चों की क्या हालत थी और वे कैसे रो-धो रहे थे, यह देखना बड़ा कष्टप्रद था। ऐसे लगता है कि मानवजाति हमारे दिव्य उद्धारक के प्यार और दिल को लगनेवाली ठेसों के लिये क्षमा के शिक्षा-सिद्धान्तों को भूल गयी है और एक-दूसरे की हत्या की कला को ही अपना सबसे बड़ा गुण मानती है।

"तो अब पत्र समाप्त करती हूं, मेरी प्यारी और दयालु सहेली।

आप पर हमारे दिव्य उद्धारक और उनकी पवित्रतम मां की पावन और सर्वशक्तिमयी छत्रछाया बनी रहे।

मरीया।"

"आप पत्र भेज रही हैं, प्रिंसेस। मैं तो भेज भी चुकी। मैंने अपनी बेचारी मां को पत्र लिखा है," प्रिंसेस मरीया की संगिनी कुमारी बुर्येन ने मुस्कराते और 'र' ध्वनि का अस्पष्ट उच्चारण करते हुए जल्दी-जल्दी, मधुर और रसीली आवाज़ में कहा और वह प्रिंसेस के चिन्तन, उदासी तथा विषादपूर्ण वातावरण में चंचलता-प्रसन्नता और आत्म-तुष्टि की एकदम दूसरी ही दुनिया ले आयी।

"प्रिंसेस, मैं आपको यह बताना चाहती हूं," उसने आवाज़ धीमी करते हुए इतना और कह दिया, "कि आपके पिता ने आज मिख़ाईल इवानिच को ख़ूब डांटा-डपटा है। उनका मूड बहुत ख़राब है, वह बहुत उदास-उदास हैं। आपको चेतावनी दे रही हूं..." उसने 'र' ध्वनि का विशेष रूप से अस्पष्ट उच्चारण करते और बड़ी ख़ुशी से अपनी आवाज़ सुनते हुए कहा।

"ओह, मेरी प्यारी सहेली!" प्रिंसेस मरीया ने जवाब दिया, "मैं आपसे कई बार कह चुकी हूं कि आप मुझसे यह कभी नहीं कहा करें कि मेरे पिता जी का मूड कैसा है। मैं उनके बारे में कभी कोई टीका-टिप्पणी नहीं करूंगी और यह नहीं चाहूंगी कि कोई दूसरा भी ऐसा करे।"

प्रिंसेस ने घड़ी पर नज़र डाली और यह देखकर कि वह क्लावीकॉर्ड बाजे पर अभ्यास के लिये नियत समय के मामले में पांच मिनट की देर कर चुकी है, चेहरे पर घबराहट का भाव लिये हुए बैठक की ओर चल दी। दैनिक कार्यक्रम के अनुसार दिन के बारह बजे से दो बजे तक पिता आराम करते थे और बेटी क्लावीकॉर्ड बजाती थी।

२३

बुज़ुर्ग प्रिंस बोल्कोन्स्की के बहुत बड़े कमरे में दरवाज़े के पास बैठा, पके बालोंवाला नौकर ऊंघता हुआ प्रिंस के खर्राटे सुन रहा था। घर के

दूरवाले कमरे के बन्द दरवाज़े के पीछे से दुस्सेक के सोनाटा के कठिन भागों के बीस-बीस बार दोहराये जाने की आवाज़ सुनायी दे रही थी।

इसी समय एक बग्घी और एक टमटम घर के दरवाज़े के सामने आकर रुकीं। जवान प्रिंस अन्द्रेई बग्घी से नीचे उतरा, उसने अपनी टुइयां-सी बीवी को सहारा देकर बग्घी से नीचे उतारा और ख़ुद पीछे हटते हुए उसे आगे बढ़ जाने दिया। सिर पर विग पहने हुए बूढ़े तीख़ोन ने बैठक के दरवाज़े के पीछे से सिर बाहर निकाला, फ़ुसफ़ुसाकर यह बताया कि बुज़ुर्ग प्रिंस सो रहे हैं और झटपट दरवाज़ा बन्द कर दिया। तीख़ोन जानता था कि न तो बेटे के आगमन और न ही किन्हीं दूसरी असाधारण घटनाओं से यहां की दिनचर्या गड़बड़ होनी चाहिये। प्रिंस अन्द्रेई भी सम्भवतः तीख़ोन की भांति ही यह बात बहुत अच्छी तरह से जानता था। उसने मानो यह जानने के लिये कि इस घर में उसकी अनुपस्थिति की अवधि में पिता की आदतों में कोई तबदीली हुई या नहीं और यह विश्वास हो जाने पर कि ऐसी कोई तबदीली नहीं हुई, पत्नी को सम्बोधित करते हुए कहा:

"बीस मिनट बाद वह जाग जायेंगे। आओ, हम प्रिंसेस मरीया के पास चलें।"

टुइयां-सी प्रिंसेस इस अरसे में मोटी हो गयी थी, किन्तु उसकी आंखों की पलकें और रोयोंवाला छोटा होंठ उसके बोलने के समय पहले की भांति ही प्रफुल्लता तथा प्यारे ढंग से ऊपर उठते थे।

"ओह, यह महल!" उसने सभी ओर दृष्टि दौड़ाते हुए उसी तरह से कहा जिस तरह मेहमान बॉल-नृत्य के आयोजक-मेज़बान की प्रशंसा करते हुए कहते हैं। "तेज़ी से क़दम बढ़ाओ!.." उसने मुड़कर तीख़ोन, पति और आगे-आगे चल रहे नौकर की ओर मुस्कराकर देखा।

"यह मरीया अभ्यास कर रही है न? आओ, हम दबे पांव कमरे में दाख़िल हों ताकि उसे हमारे आने का पता न चल सके।"

प्रिंस अन्द्रेई चेहरे पर शिष्टता और उदासी का भाव लिये हुए उसके पीछे-पीछे चल रहा था।

"तुम कुछ बुढ़ा गये हो, तीख़ोन," उसने अपना हाथ चूमनेवाले तीख़ोन के पास से आगे बढ़ते हुए कहा।

उस कमरे के सामने, जहां से क्लावीकॉर्ड के स्वर सुनायी दे रहे थे, सुनहरे बालोंवाली प्यारी-सी फ़्रांसीसी महिला बग़ल के दरवाज़े

से निकलकर सामने आ गयी। कुमारी बुर्येन तो ख़ुशी से पागल-सी हो रही थी।

"ओह, प्रिंसेस को कितनी अधिक ख़ुशी होगी! आख़िर तो यह दिन आया! उन्हें सूचित करना चाहिये।"

"नहीं, नहीं, कृपया ऐसा नहीं कीजिये... आप कुमारी बुर्येन हैं न? आपके प्रति मेरी ननद के मैत्री-भाव के आधार पर मैं आपसे परिचित हूं," प्रिंसेस ने एक-दूसरी को चूमते हुए कहा। "वह इस समय हमारे आने की आशा नहीं कर रही है!"

ये बैठक के दरवाज़े पर पहुंचे जहां से बार बार बजाये जानेवाले सोनाटा के अंश की ध्वनि आ रही थी। प्रिंस अन्द्रेई रुक गया और उसके माथे पर ऐसे बल पड़ गये मानो वह किसी अप्रिय बात की प्रतीक्षा कर रहा हो।

प्रिंसेस कमरे में दाख़िल हुई। सोनाटा का अंश बीच में ही रह गया, ख़ुशी की चीख़, प्रिंसेस मरीया के बोझिल क़दमों की ध्वनि और चुम्बनों की आवाज सुनायी दी। प्रिंस अन्द्रेई जब बैठक में दाख़िल हुआ तो उसकी शादी के समय थोड़ी देर को मिलनेवाली ये दोनों प्रिंसेसें एक-दूसरी को बांहों में भरे और गालों पर उसी जगह होंठ टिकाये खड़ी थीं, जहां वे शुरू में ही टिक गये थे। कुमारी बुर्येन दिल पर हाथ रखे और श्रद्धापूर्वक मुस्कराते हुए इनके पास खड़ी थी और स्पष्टतः समान रूप से एकसाथ हंसने और रोने को तैयार थी। प्रिंस अन्द्रेई ने कंधे झटके और उसके माथे पर वैसे ही बल पड़ गये जैसे कोई ग़लत सुर बज उठने पर किसी संगीत-प्रेमी के माथे पर पड़ जाते हैं। दोनों प्रिंसेसें एक-दूसरी की बांहों से मुक्त हुईं, इसके बाद मानो डरते हुए कि कहीं विलम्ब न हो जाये, उन्होंने फिर से एक-दूसरी के हाथ अपने हाथों में ले लिये, उन्हें चूमने लगीं, हाथ छोड़कर फिर से मुंह चूमने लगीं, इसके बाद प्रिंस अन्द्रेई के लिये सर्वथा अप्रत्याशित ही ये दोनों रोने और एक-दूसरी को चूमने लगीं। कुमारी बुर्येन भी रोने लगी। प्रिंस अन्द्रेई को सम्भवतः यह अटपटा लग रहा था, किन्तु दोनों औरतों को उनका रोना स्वाभाविक प्रतीत हो रहा था। यह मिलन किसी और ढंग से हो सकता था, वे तो इसकी कल्पना ही नहीं कर सकती थीं।

"ओह, मेरी प्यारी!.. ओह, मरीया!.." दोनों प्रिंसेसें सहसा कह उठीं और हंस पड़ीं। "मैंने सपना देखा था..." – "आप लोग

तो हमारे आने की आशा नहीं कर रहे थे न?.. आह, मरीया, आप कितनी दुबली हो गयी हैं!" – "और आप इतनी मोटी..."

"मैंने तो प्रिंसेस को फ़ौरन पहचान लिया," कुमारी बुर्येन ने कहा।

"मैंने तो आपके इस वक़्त आने की कल्पना भी नहीं की थी!.." प्रिंसेस मरीया कह उठी। "ओह, अन्द्रेई, तुम्हें तो मैंने देखा ही नहीं।"

प्रिंस अन्द्रेई ने अपनी बहन का हाथ अपने हाथ में लेकर चूमा और कहा कि वह तो हमेशा की तरह "रोनी सूरत" ही बनी हुई है। प्रिंसेस मरीया भाई की ओर घूम गयी और आंसुओं के बीच उसकी इस क्षण बड़ी-बड़ी और चमकीली आंखों की प्यार भरी, स्नेही और विनम्र दृष्टि प्रिंस अन्द्रेई के चेहरे पर टिक गयी।

अन्द्रेई की पत्नी लगातार बोलती जा रही थी। छोटे-छोटे रोयोंवाला उसका ऊपर का होंठ रह-रहकर नीचे आता, निचले, लाल होंठ को जहां ज़रूरी होता, छूता, फिर से उसकी मुस्कान खिल उठती और उसके चमकते दांतों तथा आंखों की झलक मिलती। प्रिंसेस ने स्पास्की पहाड़ी पर उनके साथ घटनेवाली उस घटना का ज़िक्र किया जो उसकी वर्त्तमान स्थिति में उसके लिये ख़तरनाक हो सकती थी। इसके फ़ौरन बाद ही यह बताया कि वह अपनी सारी पोशाकें पीटर्सबर्ग में भूल आयी है और भगवान ही जानते हैं कि यहां क्या पहनेगी, कि प्रिंस अन्द्रेई बिल्कुल बदल गया, कि कीति ओदिन्त्सोवा ने बूढ़े से शादी कर ली है, कि प्रिंसेस मरीया के लिये एक वर है जिसकी बाद में चर्चा की जायेगी। प्रिंसेस मरीया अभी तक भाई की ओर चुपचाप देख रही थी और उसकी सुन्दर आंखों में प्यार तथा उदासी थी। साफ़ नज़र आ रहा था कि भाभी की बातों के बावजूद उसके मन में एक अपनी विचार-शृंखला बन गयी थी। कुछ समय पहले पीटर्सबर्ग में हुए एक समारोह की भाभी द्वारा की जानेवाली चर्चा के बीच में ही उसने भाई को सम्बोधित किया:

"तुम जंग में जाने की बात बिल्कुल तय कर चुके हो, अन्द्रेई?" उसने आह भरते हुए पूछा।

लीज़ा ने भी उसांस छोड़ी।

"कल ही जा रहा हूं," भाई ने जवाब दिया।

"वह मुझे यहां छोड़कर जा रहा है और भगवान जानें किसलिये, जबकि उसकी तरक़्क़ी भी हो सकती थी।"

प्रिंसेस मरीया ने उसकी पूरी बात नहीं सुनी और अपने विचारों का अनुकरण करते हुए स्नेहमयी आंखों से भाभी के पेट की ओर संकेत करके पूछा :

"यह पक्की बात है?"

प्रिंसेस के चेहरे का भाव बदल गया। उसने आह भरी।

"हां, बिल्कुल पक्की," उसने जवाब दिया। "ओह! बहुत भयानक है यह..."

लीज़ा का होंठ नीचे आ गया। उसने अपना चेहरा ननद के चेहरे के निकट किया और फिर अप्रत्याशित ही रोने लगी।

"इसे आराम करना चाहिये," अन्द्रेई ने माथे पर बल डालते हुए कहा। "ठीक है न, लीज़ा? तुम इसे अपने कमरे में ले जाओ और मैं पिता जी से मिल आता हूं। कैसे हैं वह? क्या, पहले जैसा ही रंग-ढंग है?"

"हां, सब कुछ वैसा, पहले जैसा ही है। शायद तुम्हें कोई परिवर्तन दिखायी दे," प्रिंसेस ने ख़ुशी से जवाब दिया।

"वही बंधी-बंधायी दिनचर्या और वही वीथियों पर सैर? वही ख़राद?" प्रिंस अन्द्रेई ने हल्की-सी मुस्कान के साथ पूछा जो यह ज़ाहिर करती थी कि पिता के प्रति अपने सारे प्यार और आदर-सम्मान के बावजूद वह उनकी दुर्बलताओं को भी समझता है।

"हां, वही बंधी-बंधायी दिनचर्या और ख़राद, इनके अलावा गणित और रेखागणित के मेरे पाठ," प्रिंसेस मरीया ने ख़ुशी से चहकते हुए उत्तर दिया मानो रेखागणित के उसके पाठ उसके जीवन के सुखदतम अनुभवों में से हों।

जब बुज़ुर्ग प्रिंस के झपकी लेने के बीस मिनट बीत गये तो तीख़ोन ने प्रिंस अन्द्रेई को सूचित किया कि पिता जी उसे बुला रहे हैं। बुज़ुर्ग प्रिंस ने बेटे के आगमन पर ही अपनी दिनचर्या में इतना परिवर्तन किया था कि दिन के भोजन के पहले कपड़े पहनने के समय ही उसे अपने कमरे में बुलवा भेजा था। बुज़ुर्ग प्रिंस पुराने ढंग से रूसी कफ़्तान* और सिर पर पाउडर लगा विग पहनते थे। प्रिंस अन्द्रेई जब पिता के पास गया (इस वक़्त उसके चेहरे पर चिड़चिड़ेपन का वह भाव नहीं

---

* कफ़्तान – पुराने वक़्तों की घुटनों तक लम्बी मर्दाना पोशाक। – सं०

था जो दीवानख़ानों में जाते वक़्त होता था, बल्कि प्येर से बात करने के समय की ज़िन्दादिली झलक रही थी) तो बुज़ुर्ग प्रिंस पाउडर लगाने के लबादे में लिपटे हुए चमड़े से मढ़ी बड़ी कुर्सी पर बैठे थे और तीख़ोन उनके सिर पर पाउडर लगाने में व्यस्त था।

"अरे! तो बड़ा सूरमा आ गया! बोनापार्ट के छक्के छुड़ाने के इरादे हैं?" बुज़ुर्ग ने कहा और पाउडर लगे अपने सिर को उस हद तक झटका दिया जिस हद तक तीख़ोन द्वारा गूंथी जा रही चोटी ने ऐसा करने की सम्भावना दी। "तुम उसकी अच्छी तरह से ख़बर लेना वरना वह जल्द ही हमें भी अपनी प्रजा बना लेगा। तुम ठीक-ठाक हो न!" और उन्होंने अपना गाल बेटे की तरफ़ बढ़ा दिया।

दिन के भोजन के पहले झपकी ले लेने के बाद बुज़ुर्ग का मूड अच्छा था। (उनका कहना था कि दिन के भोजन के बाद झपकी लेना चांदी है और उसके पहले सोना।) वह अपनी घनी, झुकी हुई भौंहों के नीचे से बेटे को कनखियों से प्रसन्नतापूर्वक देख रहे थे। प्रिंस अन्द्रेई ने पिता के पास जाकर उस जगह उनका गाल चूमा जहां ऐसा करने का संकेत किया गया था। उसने पिता की मनपसन्द बात-चीत – आजकल के सेनानियों, विशेषकर बोनापार्ट की खिल्ली उड़ाने के उनके अन्दाज़ के जवाब में कुछ नहीं कहा।

"हां, पिता जी, मैं आ गया और अपनी गर्भवती पत्नी को भी अपने साथ लाया हूं," पिता के चेहरे के हर भाव को सजीवता और आदर की दृष्टि से देखते हुए उसने कहा। "स्वास्थ्य कैसा है आपका?"

"भैया मेरे, अस्वस्थ तो होते हैं केवल मूर्ख और व्यभिचारी। मुझे तो तुम जानते ही हो – मैं सुबह से शाम तक व्यस्त रहता हूं, संयम का जीवन बिताता हूं और इसलिये स्वस्थ हूं।"

"शुक्र है भगवान का," अन्द्रेई ने मुस्कराते हुए कहा।

"भगवान को क्या लेना-देना है इससे। तुम यह बताओ," उन्होंने अपने मनपसन्द विषय की ओर लौटते हुए अपनी बात जारी रखी, "जर्मनों ने तुम लोगों को रणनीति कहलानेवाली तुम्हारी नयी विद्या के अनुसार बोनापार्ट से कैसे लड़ना सिखाया है?"

प्रिंस अन्द्रेई मुस्कराया।

"पिता जी, ज़रा दम ले लेने दीजिये," उसने ऐसी मुस्कान के साथ कहा जो यह ज़ाहिर कर रही थी कि पिता की ऐसी दुर्बलतायें

उसके उन्हें चाहने और उनका आदर करने में बाधक नहीं होतीं। "मैं तो अभी इतना भी नहीं जानता कि हमारे रहने की कहां व्यवस्था की गयी है।"

"व्यर्थ की बात कर रहे हो, व्यर्थ की," बुज़ुर्ग ने यह जांचने के लिये कि चोटी मजबूती से गूंथी गयी है या नहीं, उसे हिलाते तथा बेटे का हाथ अपने हाथ में लेते हुए ऊंची आवाज़ में कहा। "तुम्हारी पत्नी के ठहरने की जगह तैयार है। प्रिंसेस मरीया उसे वहां ले जाकर सब कुछ दिखा-समझा देगी और साथ ही वे दोनों ख़ूब बोल-बतिया भी लेंगी। औरतें यही तो करती हैं। मैं उसके आने से ख़ुश हूं। बैठो, मुझे सब कुछ बताओ। मिख़ेल्सोन की सेना की बात मेरी समझ में आती है, तोलस्तोय की सेना की भी... दोनों सेनायें एकसाथ धावा बोलेंगी... दक्षिणी सेना क्या करेगी? प्रशा तटस्थ है... यह मुझे मालूम है। आस्ट्रिया का क्या रुख़ है?" उन्होंने आरामकुर्सी से उठकर कमरे में इधर-उधर टहलते हुए पूछा। तीख़ोन उनके पीछे-पीछे पोशाक की विभिन्न चीज़ें लिये हुए भाग रहा था और उन्हें पकड़ाता जा रहा था। "स्वीडन का क्या रवैया है? पोमेरानिया को कैसे पार किया जायेगा?"

प्रिंस अन्द्रेई यह देखकर कि पिता यह सब जानना ही चाहते हैं, शुरू में मन मारकर, किन्तु बाद में अधिकाधिक रंग में आते और महज़ आदत के कारण, रूसी की जगह फ़्रांसीसी भाषा का उपयोग करते हुए भावी सैनिक गति-विधियों की योजना बताने लगा। उसने बताया कि कैसे नब्बे हज़ार सैनिकों की सेना प्रशा की तटस्थता ख़त्म करने और उसे युद्ध में खींचने के लिये उसे डरायेगी, कैसे इस सेना का एक भाग श्त्रालज़ुंड में स्वीडन की सेनाओं से जा मिलेगा, कैसे आस्ट्रिया के दो लाख बीस हज़ार सैनिक एक लाख रूसी सैनिकों के साथ मिलकर इटली में और राइन नदी के तट पर फ़ौजी कार्रवाई करेंगे, कैसे पचास हज़ार रूसी और पचास हज़ार अंग्रेज नेपल्ज़ में उतरेंगे और इस तरह कुल मिलाकर कोई पांच लाख सैनिक विभिन्न दिशाओं से फ़्रांसीसियों पर आक्रमण करेंगे। बुज़ुर्ग प्रिंस ने इस पूरे वर्णन के दौरान ज़रा-सी भी दिलचस्पी ज़ाहिर नहीं की मानो सुन ही न रहे हों और इधर-उधर आते-जाते तथा कपड़े पहनते हुए अप्रत्याशित ही उन्होंने तीन बार अन्द्रेई को टोक दिया। पहली बार उन्होंने बेटे को टोका और चिल्ला उठे:

"सफ़ेद! सफ़ेद!"

इसका मतलब यह था कि तीख़ोन उन्हें वह वास्कट नहीं दे रहा था जो वह चाहते थे। दूसरी बार उन्होंने बेटे को टोककर पूछा:

"वह जल्द ही बच्चा जननेवाली है?" और भर्त्सना से सिर हिलाते हुए कहा: "यह तो अच्छी बात नहीं! तुम आगे कहते जाओ, कहते जाओ!"

और प्रिंस अन्द्रेई जब अपनी बात ख़त्म करनेवाला था तो बुज़ुर्ग ने तीसरी बार ख़लल डालते हुए बेसुरी और बुढ़ापे की खरखरी आवाज़ में गाना शुरू कर दिया: "मालब्रूक गया जंग में। ईश्वर जानें, कब लौटेगा।"

बेटा केवल मुस्करा दिया।

"मेरा यह अभिप्राय नहीं है कि यह ऐसी योजना है जिसका मैं अनुमोदन करता हूं," बेटे ने कहा। "मैंने आपको वही बताया है जो वास्तव में है। नेपोलियन ने भी अपनी योजना बना ली है जो इससे बुरी नहीं है।"

"ख़ैर, तुमने मुझे कोई नयी बात नहीं बतायी।" और बुज़ुर्ग ने सोचते हुए जल्दी-जल्दी मन ही मन यह पंक्ति दोहरायी: "'मालब्रूक गया जंग में। ईश्वर जानें, कब लौटेगा।' तो अब खाने के कमरे में जाओ।"

२४

पाउडर लगाये और दाढ़ी बनाये हुए बुज़ुर्ग प्रिंस भोजन-कक्ष में आये, जहां बहू लीज़ा, प्रिंसेस मरीया, कुमारी बुर्येन और प्रिंस का वास्तुकार उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। बुज़ुर्ग प्रिंस की अजीब सनक की बदौलत ही यह वास्तुकार खाने की मेज़ पर उपस्थित रहता था, यद्यपि उसकी तुच्छ सामाजिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए वह किसी तरह भी इस सम्मान के योग्य नहीं था। बुज़ुर्ग प्रिंस ने, जो जीवन में सामाजिक श्रेणियों के अन्तर का कड़ाई से पालन करते थे और गुबेर्निया के महत्त्वपूर्ण सरकारी कर्मचारियों को भी कभी खाने की मेज़ पर नहीं

आने देते थे, अचानक वास्तुकार मिख़ाईल इवानोविच (जो कोने में चौख़ानेदार रूमाल पर नाक सिनक रहा था) के आधार पर यह प्रमाणित कर दिया कि सब लोग समान हैं और अनेक बार अपनी बेटी को यह समझाने की कोशिश की कि उनमें और मिख़ाईल इवानोविच में बिल्कुल कोई अन्तर नहीं है। भोजन करते समय प्रिंस अक्सर मौन रहनेवाले मिख़ाईल इवानोविच को सम्बोधित करते रहते थे।

इस घर के अन्य सभी कमरों की तरह बहुत बड़े और ऊंची छतवाले खाने के कमरे में परिवार के लोग और हर कुर्सी के पीछे खड़े हुए बैरे प्रिंस के आने की राह देख रहे थे। हाथ पर नेपकिन डाले बड़ा बटलर बैरों को आंखों से इशारे करता हुआ मेज़ को जांच रहा था कि वहां सब कुछ ठीक-ठाक है या नहीं और साथ ही दीवाल-घड़ी से उस दरवाज़े की तरफ़ लगातार बेचैनी से देखता जा रहा था जिसमें से प्रिंस बाहर आनेवाले थे। प्रिंस अन्द्रेई सुनहरे चौखटे में जड़े और अपने लिये नये उस बहुत बड़े चित्र को देख रहा था जिसमें बोल्कोन्स्की प्रिंसों की वंशावली चित्रित थी। इसके सामने इतने ही बड़े चौखटे में मुकुट पहने हुए एक शासक-प्रिंस का भोंडा-सा चित्र (जिसे सम्भवतः किसी भूदास-चित्रकार ने बनाया था) लटका हुआ था। यह प्रिंस सम्भवतः र्‍यूरिक वंश से सम्बन्ध रखता था और यही बोल्कोन्स्की कुल का पूर्वज था। प्रिंस अन्द्रेई सिर हिलाते हुए इसे देख तथा ऐसे हंस रहा था जैसे कोई बेढंगेपन की हद तक मौलिक से मिलते-जुलते छविचित्र को देखकर हंसता है।

"यह सब हमारे पिता जी ही कर सकते हैं!" उसने उसी समय अपने पास आनेवाली अपनी बहन, प्रिंसेस मरीया से कहा।

प्रिंसेस मरीया ने हैरानी से भाई की तरफ़ देखा। वह किसलिये मुस्करा रहा है, यह बात उसकी समझ में नहीं आ रही थी। उसके पिता जो कुछ भी करते थे, वह सभी उसके हृदय में श्रद्धा पैदा करता था और उसमें किसी भी तरह की टीका-टिप्पणी की गुंजाइश नहीं होती थी।

"हर किसी की कोई सनक होती है," प्रिंस अन्द्रेई कहता गया। "इतने बुद्धिमान और ये बेतुकी बातें!"

प्रिंसेस मरीया भाई की इस तरह की आलोचना करने की जुर्रत को समझने में असमर्थ थी और आपत्ति करने ही वाली थी कि बुज़ुर्ग

के कमरे से प्रतीक्षित क़दमों की आहट मिली। प्रिंस सदा की भांति तेज़ी और ख़ुशमिज़ाजी से भीतर आये मानो अपनी इन द्रुत गति-विधियों से घर में स्थापित कठोर व्यवस्था की तुलना में जान-बूझकर अन्तर प्रस्तुत कर रहे हों। इसी क्षण बड़ी घड़ी ने दिन के दो बजाये और ड्राइंगरूम में दूसरी घड़ी ने पतली आवाज़ में ऐसा ही किया। प्रिंस रुके, घनी और झुकी हुई भौंहों के नीचे से उनकी उत्साहपूर्ण, चमकती और कठोर आंखों ने सभी पर नज़र डाली और वह जवान प्रिंसेस लीज़ा पर आकर रुक गयी। जवान प्रिंसेस इस समय कुछ ऐसे ही अनुभव कर रही थी जैसे ज़ार के आने पर दरबारी महसूस करते हैं। वह भय और आदर की उसी भावना से अभिभूत थी, जो यह बुज़ुर्ग अपने इर्द-गिर्द के सभी लोगों में पैदा करते थे। उन्होंने प्रिंसेस का सिर सहलाया और फिर कुछ अटपटे ढंग से उसकी गुद्दी को थपथपा-या।

"मैं ख़ुश हूं, ख़ुश हूं," बुज़ुर्ग प्रिंस ने कहा और टकटकी बांधकर उसकी आंखों में देखने के बाद जल्दी से हटे और अपनी जगह पर जा बैठे। "बैठिये, बैठिये! मिख़ाईल इवानोविच, बैठिये।"

उन्होंने बहू को अपने पास बैठने का संकेत किया। बैरे ने उसके लिये कुर्सी बढ़ा दी।

"ओहो!" बहू की गोल हो गयी कमर पर नज़र डालते हुए उन्होंने कहा। "बहुत जल्दी की, यह अच्छी बात नहीं!"

वह हमेशा की भांति रूखी, भावशून्य और अप्रिय हंसी हंस दिये – केवल मुंह से, आंखों से नहीं।

"आपको चलना-फिरना चाहिये, चलना-फिरना चाहिये, जितना भी ज़्यादा हो सके, चलना-फिरना चाहिये," उन्होंने कहा।

टुइयां-सी प्रिंसेस बुज़ुर्ग के शब्दों को सुन नहीं रही थी या सुनना नहीं चाहती थी। वह ख़ामोश थी और मानो झेंप महसूस कर रही थी। बुज़ुर्ग प्रिंस ने उससे उसके पिता का हालचाल पूछा और प्रिंसेस बोलने लगी तथा मुस्करा दी। बुज़ुर्ग ने साझी जान-पहचान के लोगों के बारे में पूछ-ताछ की – प्रिंसेस और भी रंग में आ गयी और उन्हें लोगों की ओर से अभिवादन देने तथा मास्को की सभी तरह की अफ़वाहें और इधर-उधर की बातें बताने लगी।

"बेचारी काउंटेस अप्राकसिना के पति का देहान्त हो गया। उसका

तो रोते-रोते बुरा हाल हो रहा था," प्रिंसेस ने अधिकाधिक रंग में आते हुए कहा।

प्रिंसेस जितनी ज़्यादा रंग में आती जाती थी, बुज़ुर्ग प्रिंस उतनी ही ज़्यादा कड़ाई से उसकी ओर देखते थे और अचानक इस ढंग से मानो उन्होंने उसे काफ़ी अच्छी तरह से समझ लिया हो तथा उसके बारे में अपनी राय बना ली हो, उसकी ओर से मुंह फेर लिया और मिख़ाईल इवानोविच को सम्बोधित किया।

"तो मिख़ाईल इवानोविच, हमारे बोनापार्ट की तो शामत आनेवाला है। जैसे कि प्रिंस अन्द्रेई ने (वह बेटे को हमेशा इसी तरह से अन्य पुरुष में सम्बोधित करते थे) मुझे बताया है कि उसके विरुद्ध बहुत बड़ी सेनायें जमा की जा रही हैं! और आप तथा हम तो उसे बेकार का आदमी मान रहे थे।"

मिख़ाईल इवानोविच को इस बात का आभास तक नहीं था कि कब उन दोनों के बीच बोनापार्ट के बारे में ऐसी चर्चा हुई थी, किन्तु यह समझते हुए कि बुज़ुर्ग प्रिंस को मनपसन्द बातचीत शुरू करने के लिये उसकी ज़रूरत है तथा ख़ुद यह न जानते हुए कि मामला क्या रुख़ लेगा, हैरानी से युवा प्रिंस की तरफ़ देखा।

"यह तो बहुत बड़े रणनीतिज्ञ हैं!" बुज़ुर्ग प्रिंस ने वास्तुकार की ओर संकेत करते हुए बेटे से कहा।

और फिर से युद्ध, बोनापार्ट, वर्त्तमानकाल के जनरलों तथा राजनेताओं के बारे में बातचीत होने लगी। बुज़ुर्ग प्रिंस को मानो न केवल इस बात का यक़ीन था कि इस समय के सभी कार्यकर्त्ता छोकरे थे जिन्हें सैनिक और राजकीय मामलों का ककहरा तक मालूम नहीं था, कि बोनापार्ट एक तुच्छ फ़्रांसीसी था जिसे केवल इसीलिये सफलता मिल गयी थी कि उसके मुक़ाबले में पोत्योमकिन और सुवोरोव जैसे जनरल नहीं थे, बल्कि उन्हें तो इस बात का भी विश्वास था कि यूरोप में किसी तरह की राजनीतिक समस्यायें नहीं थीं, युद्ध भी नहीं था और केवल कठपुतलियों का हास्यपूर्ण तमाशा हो रहा था जिसमें लोग यह ढोंग करते हुए कि महत्त्वपूर्ण काम कर रहे हैं, अपनी भूमिकायें खेल रहे थे। प्रिंस अन्द्रेई नये लोगों पर पिता की फब्तियों को ख़ुशमिज़ाजी से सुनता रहा, अपनी प्रसन्नता प्रकट करते हुए उन्हें बोलते जाने के लिये स्पष्टतः उत्साहित करता था तथा उनकी बातें सुन रहा था।

"अतीत की हर चीज़ अच्छी लगती है," प्रिंस अन्द्रेई ने कहा, "लेकिन क्या वही सुवोरोव मोरो के जाल में नहीं फंस गया था और उसमें से निकल नहीं पाया था?"*

"यह तुमसे किसने कहा? किसने?" बुज़ुर्ग चिल्ला उठे। "सुवोरोव!" और उन्होंने एक प्लेट उठाकर फेंक दी जिसे तीख़ोन ने फुर्ती से लोक लिया। "सुवोरोव!.. तुम ज़रा सोचो तो, प्रिंस अन्द्रेई! वे दो थे – फ़्रेड्रिक और सुवोरोव ... मोरो! अगर सुवोरोव के हाथ बंधे न होते तो मोरो उसका क़ैदी होता। लेकिन सुवोरोव के हाथ बांध रखे थे होफ़्स-क्रीग्स-वुर्स्ट-श्नाप्स-राट ने।** ख़ुद शैतान भी कुछ न कर पाता। अब तुम लोगों का वास्ता पड़ेगा और जान जाओगे कि ये होफ़्स-क्रीग्स-वुर्स्ट-राट वग़ैरह कैसी मुसीबत हैं! अगर सुवोरोव की उनके साथ पटरी नहीं बैठ सकी तो मिख़ाईल कुतूज़ोव के किये भी कुछ नहीं हो सकेगा। नहीं, मेरे दोस्त," वह कहते गये, "तुम्हारी और तुम्हारे जनरलों की बोनापार्ट के सामने दाल नहीं गलेगी। फ़्रांसीसियों को सेना में लेना चाहिये, ज़हर से ही ज़हर का असर ख़त्म होता है। जर्मन पालेन को न्यूयार्क, संयुक्त राज्य अमरीका भेजा गया है कि वह वहां से फ़्रांसीसी मोरो को लाये," उन्होंने उस निमन्त्रण की ओर संकेत करते हुए कहा जो इसी वर्ष मोरो को रूसी सेना में शामिल होने के लिये भेजा गया था। "कमाल है! क्या पोत्योमकिन, सुवोरोव और ओर्लोव आदि जर्मन थे? नहीं, भैया मेरे, या तो तुम सब लोगों के दिमाग़ ख़राब हो गये हैं या फिर मेरी अक़्ल घास चरने चली गयी है। भगवान मदद करे तुम लोगों की और हम देखेंगे कि क्या गुल खिलता है। बोनापार्ट इनके लिये महान सेनापति बन गया है! भई, वाह!.."

"मैं यह नहीं कह रहा हूं कि हमारी सभी योजनायें अच्छी हैं," प्रिंस अन्द्रेई ने कहा। "लेकिन मैं यह समझने में असमर्थ हूं कि आप

---

* यहां अगस्त १७९९ की उस घटना की ओर संकेत है, जब मोरो की कमान में फ़्रांसीसी सेना पर विजय पाने के बाद सुवोरोव पीछे हटते हुए मोरो का पीछा करने के बजाय आस्ट्रिया की उच्चतम सैनिक कमान के आदेश पर स्विट्ज़रलैंड की ओर बढ़ने के लिये विवश हो गया था। वहां उसकी सेना को फ़्रांसीसियों ने घेर लिया था, मगर वह इस घेरे से निकलने में सफल रहा था। – सं०

** आस्ट्रिया की उच्चतम सैनिक संस्था। सुवोरोव के लिये इसके आदेश मानना अनिवार्य था। – सं०

बोनापार्ट के बारे में ऐसी राय कैसे ज़ाहिर कर सकते हैं। आप चाहे कितना ही मज़ाक़ क्यों न उड़ायें, लेकिन बोनापार्ट महान सेनापति तो है ही!"

"मिख़ाईल इवानोविच!" बुज़ुर्ग प्रिंस ने ऊंची आवाज़ में वास्तुकार को सम्बोधित किया जो यह आशा करते हुए कि उसे भुलाया जा चुका है, अब भुने मांस की तरफ़ ध्यान दे रहा था। "मैंने आपसे कहा था न कि बोनापार्ट महान रणनीतिज्ञ है? अब प्रिंस अन्द्रेई भी यही कह रहा है।"

"हां, हां, बिल्कुल ठीक है, हुज़ूर," वास्तुकार ने जवाब दिया।

बुज़ुर्ग प्रिंस फिर भावशून्य-सी हंसी हंस दिये।

"बोनापार्ट तक़दीर का सिकन्दर है। उसके सैनिक बहुत बढ़िया हैं। इसके अलावा उसने यह अक़्लमन्दी भी की कि सबसे पहले जर्मनों पर हमला किया। और जर्मनों की तो कोई काहिल ही पिटाई न करे तो न करे। जब से यह दुनिया बनी है, जर्मनों की सभी ने पिटाई की है। मगर उन्होंने किसी की भी नहीं। हां, उन्होंने आपस में एक-दूसरे को ज़रूर पीटा है। बोनापार्ट ने उन्हीं की पिटाई करके नाम पैदा कर लिया है।"

और बुज़ुर्ग प्रिंस उन सभी ग़लतियों का उल्लेख करने लगे जो उनके मतानुसार बोनापार्ट ने अपने सैनिक और राजकीय मामलों तक में की थीं। बेटे ने कोई आपत्ति नहीं की, मगर यह साफ़ नज़र आ रहा था कि उसके सामने कैसे भी निष्कर्ष क्यों न प्रस्तुत किये जायें, बुज़ुर्ग प्रिंस की भांति वह भी अपनी राय नहीं बदल सकता था। प्रिंस अन्द्रेई किसी प्रकार की आपत्ति किये बिना सुन रहा था और अनायास ही इस बात से आश्चर्यचकित हो रहा था कि उसके बुज़ुर्ग पिता, जो इतने सालों से कहीं आये-जाये बिना गांव में बैठे थे, कैसे इतने विस्तार में तथा इतनी बारीकी से पिछले वर्षों की यूरोप की सारी सैनिक और राजनीतिक परिस्थितियों को जान सकते थे तथा उनपर विचार-विमर्श कर सकते थे।

"तुम सोचते हो कि मैं बूढ़ा आदमी हूं और वास्तविक स्थिति को समझने में असमर्थ हूं?" बुज़ुर्ग ने अपनी बात समाप्त करते हुए कहा। "लेकिन ये बातें मेरे दिल-दिमाग़ पर छायी हुई हैं। मुझे रातों को नींद नहीं आती। तुम मुझे यह बताओ कि तुम्हारे इस महान सेना-

पति ने कहां अपनी बड़ी अक़्ल दिखायी है?"

"यह तो लम्बी कहानी हो जायेगी," बेटे ने जवाब दिया।

"तो जाओ तुम अपने उस बोनापार्ट के पास। कुमारी बुर्येन, यह रहा आपके उस ग़ुलाम सम्राट का एक और भक्त!" वह बहुत बढ़िया फ़्रांसीसी भाषा में चिल्ला उठे।

"प्रिंस, आप तो जानते ही हैं कि मैं बोनापार्ट की अनुयायी नहीं हूं।"

"ईश्वर जानें, कब लौटेगा..." प्रिंस बेसुरी आवाज़ में गाने लगे और इससे भी अधिक बेसुरे ढंग से हंसते हुए मेज़ से उठ खड़े हुए।

टुइयां-सी प्रिंसेस वाद-विवाद और भोजन के बाक़ी समय में भी मौन साधे रही और सहमी-सी कभी तो प्रिंसेस मरीया तो कभी अपने ससुर की ओर देख लेती थी। खाने की मेज़ से उठने के बाद उसने ननद का हाथ अपने हाथ में ले लिया और उसे दूसरे कमरे में ले गयी।

"कितने बुद्धिमान हैं आपके पिता। शायद इसीलिये मैं उनसे डरती हूं," वह बोली।

"ओह, वह तो बहुत ही दयालु हैं," प्रिंसेस मरीया ने उत्तर दिया।

२५

अगले दिन की शाम को प्रिंस अन्द्रेई जानेवाला था। अपनी दिनचर्या में किसी प्रकार का परिवर्तन किये बिना बुज़ुर्ग प्रिंस बोल्कोन्स्की दिन के भोजन के बाद अपने कमरे में चले गये। टुइयां-सी प्रिंसेस ननद के कमरे में थी। स्कन्धिकाओं के बिना सफ़री फ़्रॉक-कोट पहने प्रिंस अन्द्रेई अर्दली की मदद से अपने कमरे में सामान बांध रहा था। बग्घी और उसमें रखे जानेवाले सन्दूक़ों-सूटकेसों का स्वयं निरीक्षण करने के बाद उसने घोड़े जोतने का आदेश दिया। कमरे में सिर्फ़ वही चीज़ें रह गयी थीं जो प्रिंस अन्द्रेई हमेशा अपने साथ रखता था – शृंगारदान, बर्तन रखने का चांदी का सन्दूक़, दो तुर्की पिस्तौलें और खड्ग – जो पिता का दिया उपहार था और जिसे वह ओचाकोव के घेरे से लाये

थे। प्रिंस अन्द्रेई की ये सभी सफ़री चीज़ें बहुत ही सुव्यवस्थित थीं – नयी, साफ़-सुथरी, कपड़े के गिलाफ़ों में और अच्छी तरह फ़ीतों से बंधी हुई।

अपने कार्य-कलापों पर चिन्तन-मनन कर सकनेवाले लोगों पर यात्रा के वक़्त या जीवन-परिवर्तन के क्षणों में आम तौर पर गहरे सोच-विचार का मूड हावी हो जाता है। ऐसे क्षणों में वे सामान्यत: अतीत का जायज़ा लेते हैं और भविष्य की योजनायें बनाते हैं। प्रिंस अन्द्रेई का चेहरा बहुत ही सोच में डूबा हुआ और सौम्य था। वह पीठ पीछे हाथ बांधे, अपने सामने देखता हुआ कमरे के एक सिरे से दूसरे सिरे तक चक्कर लगा रहा था और कुछ सोचते हुए सिर हिला रहा था। क्या उसे जंग में जाते हुए डर महसूस हो रहा था या पत्नी को छोड़ते हुए दुख हो रहा था – शायद दोनों ही बातें थीं। परन्तु सम्भवत: यह न चाहते हुए कि कोई उसे ऐसी मुद्रा में देखे, दालान में किसी के पांवों की आहट सुनते ही उसने झटपट अपने हाथ मुक्त कर लिये, मेज़ के पास ऐसा ज़ाहिर करते हुए रुक गया मानो शृंगारदान का गिलाफ़ बांध रहा हो और अपने चेहरे पर सदा जैसी शान्ति का अभेद्य भाव ले आया। यह आहट प्रिंसेस मरीया के भारी-भरकम क़दमों की थी।

"मुझे बताया गया है कि तुमने घोड़े जोतने का आदेश दे दिया है," उसने हांफते हुए कहा (ज़ाहिर था कि वह भागती हुई आयी थी), "और मैं तो तुम्हारे साथ एकान्त में कुछ और बातें करना चाहती थी। भगवान ही जानते हैं कि हम कितने अरसे के लिये फिर से अलग हो जायेंगे। मेरे आने से तुम्हें बुरा तो नहीं लग रहा? तुम बहुत बदल गये हो, अन्द्रूशा," उसने मानो अपने प्रश्न का स्पष्टीकरण देते हुए इतना और कह दिया।

"अन्द्रूशा" यानी बचपन के घरेलू ढंग के इस नाम से भाई को सम्बोधित करते हुए वह मुस्करा दी। स्पष्ट था कि उसे स्वयं यह सोचना अजीब-सा लग रहा था कि यह कठोर और सुन्दर पुरुष, उसके बचपन का साथी, वही दुबला-पतला और शरारती लड़का, वही अन्द्रूशा था।

"लीज़ा कहां है?" उसने पूछा और केवल मुस्कान के रूप में उसके प्रश्न का उत्तर दिया।

"वह इतनी अधिक थक गयी है कि मेरे कमरे में सोफ़े पर ही सो गयी। ओह, अन्द्रेई! बिल्कुल हीरा है तुम्हारी पत्नी," भाई

के सामने सोफ़े पर बैठते हुए उसने कहा। "वह तो बिल्कुल बच्ची है, बहुत प्यारी, बड़ी ख़ुशमिज़ाज बच्ची है। बहुत ही चाहने लगी हूं मैं उसे।"

प्रिंस अन्द्रेई चुप रहा, किन्तु प्रिंसेस ने देखा कि उसके चेहरे पर व्यंग्य और तिरस्कार का भाव आ गया है।

"छोटी-मोटी दुर्बलताओं के मामले में नर्मी से काम लेना चाहिये। किसमें ऐसी दुर्बलतायें नहीं हैं, अन्द्रेई! तुम्हें यह नहीं भूलना चाहिये कि ऊंची सोसाइटी के वातावरण में उसका पालन-पोषण हुआ है, वह उसी में बड़ी हुई है। और फिर इस वक़्त उसकी स्थिति अच्छी नहीं है। हमें अपने को दूसरों की स्थिति में रखकर देखना चाहिये। जो सब कुछ समझ जायेगा, वह सब कुछ क्षमा कर देगा। तुम ज़रा सोचो तो कि जिस तरह की ज़िन्दगी की वह आदी है, उसको ध्यान में रखते हुए उस बेचारी को पति से बिछुड़ना और उसकी वर्त्तमान स्थिति में गांव में रहना कैसा लग रहा होगा? यह बहुत कठिन होगा उसके लिये।"

प्रिंस बहन की ओर देखते हुए ऐसे मुस्कराया जैसे हम उन लोगों की बात सुनते हुए मुस्कराते हैं जिन्हें, जैसा कि हमें लगता है, हम आर-पार देख सकते हैं।

"तुम गांव में रहती हो, और तुम्हें यहां की ज़िन्दगी भयानक नहीं लगती," अन्द्रेई ने कहा।

"मेरी बात दूसरी है। मेरी चर्चा करने में तुक ही क्या है! मैं तो किसी दूसरे ढंग की ज़िन्दगी चाहती ही नहीं और चाह भी नहीं सकती, क्योंकि किसी दूसरी ज़िन्दगी से परिचित नहीं हूं। लेकिन तुम सोचो तो, अन्द्रेई, कि ऊंची सोसाइटी की आदी और जवान औरत अपने जीवन के सबसे अच्छे वर्षों में गांव में अकेली पड़ी रहे, क्योंकि पिता जी हमेशा व्यस्त रहते हैं, और मैं... मुझे तो तुम जानते ही हो... सबसे अच्छी सोसाइटी की अभ्यस्त औरत के लिये मैं कितनी नीरस हूं। सिर्फ़ कुमारी बुर्येन ही..."

"तुम्हारी यह कुमारी बुर्येन मुझे बिल्कुल अच्छी नहीं लगती," प्रिंस अन्द्रेई ने कहा।

"ओह, नहीं। वह बहुत प्यारी और दयालु है तथा सबसे बड़ी बात तो यह कि दयनीय लड़की है। उसका कोई भी, कोई भी अपना

नहीं है। सच कहूं तो उसकी न केवल मुझे ज़रूरत ही नहीं, बल्कि वह मेरे आड़े भी आती है। तुम तो जानते ही हो कि मैं हमेशा दूसरों से दूर भागती रही हूं और अब तो और भी ज़्यादा ऐसा करती हूं। मुझे तो अकेली रहना अच्छा लगता है... पिता जी उसे बहुत चाहते हैं। वह और मिख़ाईल इवानोविच – यही दो व्यक्ति हैं जिनके प्रति वह हमेशा स्नेहशील और दयालु बने रहते हैं, क्योंकि दोनों ही उनके बहुत आभारी हैं। स्टेर्न* ने ठीक ही कहा है कि 'हम लोगों को उस नेकी के लिये उतना प्यार नहीं करते जो उन्होंने हमारे साथ की है जितना कि उस नेकी के लिये जो हमने उनके साथ की है।' पिता जी उसे अनाथ के रूप में सड़क पर से लाये थे और वह बहुत दयालु है। पिता जी को उसका किताब पढ़ने का ढंग पसन्द है। वह शामों को उन्हें कुछ पढ़कर सुनाती है। बहुत बढ़िया ढंग से पढ़ती है वह।"

"मरीया, सच सच बताओ, मेरे ख़्याल में तो तुम्हें पिता जी के स्वभाव से कभी-कभी बड़ी परेशानी होती होगी?" अन्द्रेई ने अचानक यह पूछा।

प्रिंसेस मरीया शुरू में इस सवाल से हैरान हुई और फिर डर गयी।

"मुझे?.. मुझे?!. मुझे परेशानी?!" वह कह उठी।

"यों तो वह हमेशा ही बड़े कठोर थे, मगर, मुझे लगता है, कि अब तो वह और भी ज़्यादा कठोर होते जा रहे हैं," प्रिंस अन्द्रेई ने सम्भवतः जान-बूझकर पिता के बारे में या तो बहन को क्षुब्ध करने या फिर यह जानने के लिये ऐसी राय ज़ाहिर की थी कि वह क्या उत्तर देती है।

"तुम यों तो हर तरह से अच्छे हो, अन्द्रेई, किन्तु तुममें कुछ बौद्धिक अभिमान-सा है," प्रिंसेस ने बातचीत की तुलना में अपने विचारों का अधिक अनुकरण करते हुए कहा, "और यह बहुत बड़ा पाप है। क्या हम पिता जी के बारे में टीका-टिप्पणी कर सकते हैं? यदि ऐसा सम्भव भी होता तो भी पिता जी जैसे व्यक्ति के लिये हमारे मन में श्रद्धा के सिवा कोई अन्य भावना पैदा ही कैसे हो सकती है? उनके साथ मैं बहुत ख़ुश और सौभाग्यशालिनी हूं! मेरी तो केवल यही कामना

---

* लौरेन्स स्टेर्न (१७१३–१७६८) – अंग्रेज़ी लेखक। – सं०

है कि आप सभी लोग वैसे ही सुखी होते जैसे मैं हूं।"

भाई ने विश्वास न करते हुए सिर हिलाया।

"सिर्फ़ एक बात जिससे मुझे परेशानी होती है – मैं तुमसे बिल्कुल सच कह रही हूं, अन्द्रेई, – वह है धर्म के प्रति पिता जी का रवैया। मेरी समझ में नहीं आता कि कैसे उनके जैसा बुद्धिमान व्यक्ति वही देखने-समझने में असमर्थ है जो दिन के उजाले की तरह रोशन है और ऐसे भटक सकता है? बस, यही एक चीज़ मुझे दुखी करती है। किन्तु इस मामले में भी पिछले कुछ समय में उनमें थोड़ा अच्छा परिवर्तन हुआ है। पिछले समय में उनके व्यंग्य इतने ज़हर बुझे नहीं होते हैं। एक मठवासी से तो वह मिले और देर तक बातचीत भी करते रहे थे।"

"लेकिन मेरी बहन, मुझे लगता है कि तुम और तुम्हारा मठवासी, तुम दोनों ही व्यर्थ अपनी शक्ति बरबाद कर रहे हो," प्रिंस अन्द्रेई ने मज़ाक़ करते हुए, किन्तु स्नेहपूर्वक कहा।

"ओह, प्यारे भाई, मैं तो केवल भगवान से प्रार्थना और यह आशा करती हूं कि वह मेरी विनती सुनेंगे। अन्द्रेई," उसने क्षण भर की चुप्पी के बाद कुछ डरते-डरते कहा, "मैं तुमसे एक बड़ा अनुरोध करना चाहती हूं।"

"कहो, क्या चाहती हो, प्यारी बहन?"

"नहीं, तुम पहले यह वचन दो कि इन्कार नहीं करोगे। तुम्हें इसके लिये किसी तरह की कोई तकलीफ़ नहीं उठानी पड़ेगी और इससे तुम्हारी कोई हेठी भी नहीं होगी। इसे पूरा करने से तुम केवल मेरे मन को चैन दोगे। वचन दो, अन्द्रूशा," उसने हैंडबैग में हाथ डालते, उस चीज़ को हाथ में लेते, किन्तु अभी न दिखाते हुए कहा मानो जो कुछ वह हाथ में लिये थी और जिसके लिये अनुरोध कर रही थी, उसके बारे में अनुरोध-पूर्त्ति का वचन लेने के पहले वह **उसे** हैंडबैग से बाहर नहीं निकाल सकती थी।

उसने सहमी-सहमी, मिन्नत करती दृष्टि से भाई की तरफ़ देखा।

"अगर इसके लिये मुझे बड़ी तकलीफ़ भी उठानी पड़ती तो भी..." प्रिंस अन्द्रेई ने मानो अनुमान लगाते हुए कि वह क्या चाहती है, उत्तर दिया।

"तुम बेशक कुछ भी सोचते रहो! मैं जानती हूं कि इस मामले

में तुम भी पिता जी के समान हो। तुम बेशक कुछ भी सोचते रहो, लेकिन मेरी ख़ातिर ऐसा कर दो। कृपया, ऐसा कर दो! हमारे पिता जी के पिता यानी हमारे दादा, इसे सभी लड़ाइयों में पहने रहे थे..." प्रिंसेस ने अभी तक उस चीज़ को हैंडबैग से बाहर नहीं निकाला था जिसे वह हाथ में पकड़े थी। "तो तुम मुझे वचन देते हो न?"

"हां, बताओ क्या बात है?"

"अन्द्रेई, मैं तुम्हें देव-प्रतिमा देती हूं तथा तुम्हारे लिये मंगल-कामना करती हूं और तुम मुझे यह वचन दो कि इसे कभी भी अपने गले से नहीं उतारोगे... वचन देते हो?"

"अगर इसका वज़न एक मन नहीं है और उससे मेरी गर्दन नहीं टूट जायेगी... तुम्हारी ख़ुशी के लिये..." प्रिंस अन्द्रेई ने कहा, किन्तु इसी क्षण बहन के चेहरे पर दुख का वह भाव देखकर, जो उसके इस मज़ाक़ से बहन के चेहरे पर उभर आया था, उसे पश्चाताप हुआ। "मुझे बड़ी ख़ुशी होगी, सच, बड़ी ख़ुशी होगी, मेरी बहन," उसने इतना और कह दिया।

"तुम्हारी इच्छा न होते हुए भी वह तुम्हारी रक्षा और तुम्हें क्षमा करेंगे, तुम्हें अपने निकट लायेंगे, क्योंकि केवल उन्हीं में सत्य और शान्ति निहित हैं," चांदी में जड़ी ईसा की काले चेहरेवाली पुराने ढंग की अण्डाकार प्रतिमा को, जिसके साथ बारीक कारीगरी की चांदी की ज़ंजीर भी थी, समारोही ढंग से दोनों हाथों में भाई के सामने थामे हुए उसने भाव-विह्वलता से कांपते स्वर में कहा।

प्रिंसेस मरीया ने अपने ऊपर सलीब का निशान बनाया, देव-प्रतिमा को चूमा और अन्द्रेई की तरफ़ बढ़ा दिया।

"अन्द्रेई, कृपया मेरे लिये..."

प्रिंसेस मरीया की बड़ी-बड़ी आंखें स्नेहपूर्ण और सहमी-सहमी-सी किरणों से चमक रही थीं। उसकी इन आंखों से उसका रुग्ण-सा दुबला चेहरा आलोकित हो रहा था और वे उसे सुन्दर बना रही थीं। भाई ने देव-प्रतिमा लेनी चाही, मगर बहन ने उसे ऐसा करने से रोक दिया। अन्द्रेई इसका कारण समझ गया, उसने अपने ऊपर सलीब का निशान बनाया और देव-प्रतिमा को चूमा। उसके चेहरे पर स्नेह (उसके मर्म को छू लिया गया था) भी था और उपहास की झलक भी।

"धन्यवाद, प्यारे भाई!"

प्रिंसेस ने भाई का माथा चूमा और फिर से सोफ़े पर बैठ गयी। दोनों ख़ामोश थे।

"हां, तो मैं तुमसे कह रही थी, अन्द्रेई, कि तुम जैसे हमेशा थे, वैसे ही दयालु और उदार बने रहो। लीज़ा को कड़ाई से नहीं आंको," उसने कहना शुरू किया। "वह इतनी प्यारी, इतनी भली है और अब तो उसकी स्थिति भी बहुत कठिन है।"

"माशा, मुझे लगता है कि मैंने तो तुमसे अपनी पत्नी की कोई शिकायत नहीं की, ऐसा कुछ नहीं कहा कि मैं किसी कारण उससे नाख़ुश हूं। तो तुम किसलिये मुझसे यह सब कह रही हो?"

प्रिंसेस मरीया के गालों पर लज्जा के लाल धब्बे उभर आये और वह चुप रही मानो अपने को दोषी अनुभव कर रही हो।

"मैंने तो तुमसे कुछ नहीं कहा, मगर **तुम्हारे कान भर दिये गये हैं!** मुझे इस बात का दुख है।"

प्रिंसेस मरीया के माथे, गर्दन और गालों पर उभरनेवाले लाल धब्बे और भी अधिक लाल हो गये। उसने कुछ कहना चाहा, किन्तु कह नहीं पायी। भाई ने सही अनुमान लगा लिया था – टुइयां-सी प्रिंसेस दिन के भोजन के बाद रोती रही थी, उसने यह कहा था कि उसे प्रसव के बुरे अन्त की पूर्वानुभूति हो रही है, कि वह उससे डरती है, उसने अपने भाग्य को कोसा था, ससुर और पति के बारे में शिकवा किया था। रोने के बाद उसकी आंख लग गयी थी। प्रिंस अन्द्रेई को बहन पर दया आयी।

"तुम एक बात समझ लो, माशा, कि मैं **अपनी पत्नी** की किसी भी चीज़ के लिये भर्त्सना नहीं कर सकता। मैंने कभी ऐसा नहीं किया और कभी ऐसा नहीं करूंगा और उसके मामले में अपनी भी किसी तरह भर्त्सना नहीं कर सकता और मैं कैसी भी परिस्थितियों में क्यों न होऊं, हमेशा ऐसा ही होगा। किन्तु यदि तुम सचाई जानना ... यह जानना चाहती हो कि मैं सुखी हूं या नहीं, तो मेरा जवाब होगा – नहीं। क्या लीज़ा सुखी है? नहीं। ऐसा क्यों है? यह मैं नहीं जानता ..."

यह कहते हुए वह उठा, बहन के पास गया और उसने झुककर उसका माथा चूमा। उसकी आंखें सूझ-बूझ, दयालुता और असाधारण ज्योति से चमक रही थीं, किन्तु वह बहन की ओर नहीं, बल्कि उसके सिर के ऊपर से खुले हुए दरवाज़े के अंधेरे को देख रहा था।

"आओ, उसके पास चलें, विदा लेने का समय हो गया। या तुम अकेली ही जाओ, उसे जगा दो और मैं अभी वहां आता हूं। पेत्रूशा!" उसने अर्दली को आवाज़ दी। "यहां आकर ये चीज़ें ले जाओ। इसे सीट के नीचे रख दो, इसे दायीं ओर।"

प्रिंसेस मरीया उठकर दरवाज़े की ओर चल दी। वह रुकी:

"अन्द्रेई, अगर तुममें धार्मिक आस्था होती तो तुम भगवान से प्रार्थना करते कि वह तुम्हें वह प्यार दें जो तुम अनुभव करने में असमर्थ हो और तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार कर ली जाती।"

"मगर बात सिर्फ़ इतनी ही नहीं है!" प्रिंस अन्द्रेई ने जवाब दिया। "तुम जाओ, माशा, मैं अभी आ रहा हूं।"

बहन के कमरे की ओर जाते हुए एक घर को दूसरे घर से जोड़ने-वाले दालान में प्रिंस अन्द्रेई की बड़ी मधुरता से मुस्कराती कुमारी बुर्येन से भेंट हुई। उल्लासपूर्ण और भोली-सी ऐसी ही मुस्कान के साथ वह सूने दालानों में आज तीसरी बार प्रिंस अन्द्रेई के सामने आयी थी।

"ओह, मैंने सोचा था कि आप अपने कमरे में हैं," न जाने क्यों लज्जारुण होते और नज़रें झुकाते हुए उसने कहा।

प्रिंस अन्द्रेई ने कड़ाई से उसकी तरफ़ देखा। प्रिंस अन्द्रेई के चेहरे पर अचानक झल्लाहट झलक उठी। उसने उससे कुछ भी नहीं कहा, किन्तु आंखों में झांके बिना, उसके माथे और बालों पर धिक्कार की ऐसी नज़र डाली कि फ़्रांसीसी युवती के गाल लाल हो गये और वह कुछ भी कहे बिना चली गयी। जब वह बहन के कमरे के पास पहुंचा तो प्रिंसेस लीज़ा जाग चुकी थी और खुले हुए दरवाज़े में से उसके ख़ुशी से चहकने की आवाज़ सुनायी दे रही थी। वह ऐसे बोलती जा रही थी मानो बहुत देर तक चुप रहने के बाद खोये हुए समय की क्षतिपूर्ति कर रही हो।

"नहीं, आप नक़ली घुंघराले बालों और नक़ली दांतोंवाली बूढ़ी काउंटेस ज़ूबोवा की कल्पना कीजिये जो मानो अपने बुढ़ापे की खिल्ली उड़ा रही हो... हा, हा, हा, मरीया!"

काउंटेस ज़ूबोवा के बारे में प्रिंस अन्द्रेई दूसरे लोगों के सामने अपनी पत्नी के मुंह से बिल्कुल यही वाक्य और यही हंसी कोई पांच बार पहले भी सुन चुका था। वह दबे पांव कमरे में दाख़िल हुआ। गोल-मटोल, लाल-लाल गालोंवाली प्रिंसेस कढ़ाई का काम हाथ में

अन्द्रेई बोल्कोन्स्की और उसके पिता।

लिये हुए आरामकुर्सी पर बैठी थी और पीटर्सबर्ग की यादों को ताज़ा करती तथा वहां के विशेष वाक्यों का उपयोग करती हुई लगातार बोलती जा रही थी। प्रिंस अन्द्रेई उसके पास गया, उसने उसका सिर सहलाया और पूछा कि उसकी सफ़र की थकान दूर हो गयी या नहीं। प्रिंसेस लीज़ा ने जवाब दिया और अपनी बात जारी रखी।

छः घोड़ोंवाली बग्घी घर के दरवाज़े के सामने खड़ी थी। बाहर पतझर की घुप अन्धेरी रात थी। कोचवान को बग्घी से आगे कुछ भी दिखायी नहीं दे रहा था। नौकर-चाकर लालटेनें लिये ओसारे में दौड़-धूप कर रहे थे। बहुत बड़ी हवेली बड़ी-बड़ी खिड़कियों से छन रही रोशनी से जगमगा रही थी। घर में काम करनेवाले भूदास जवान प्रिंस से विदा लेने के लिये ड्योढ़ी में जमा थे और घर के लोग – मिख़ाईल इवानोविच, कुमारी बुर्येन, प्रिंसेस मरीया और प्रिंसेस लीज़ा – ये सभी बड़े हाल में थे। बुज़ुर्ग पिता ने प्रिंस अन्द्रेई को अपने कमरे में बुलवा भेजा था। वह बेटे से एकान्त में विदा लेना चाहते थे। सभी उनके बाहर आने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

प्रिंस अन्द्रेई जब पिता के कमरे में गया तो वह बूढ़ों जैसा चश्मा चढ़ाये और सफ़ेद ड्रेसिंग गाउन पहने हुए, जिसमें वह बेटे के सिवा और किसी से नहीं मिलते थे, मेज़ के सामने बैठे कुछ लिख रहे थे। उन्होंने मुड़कर देखा।

"तो जा रहे हो?" और वह फिर से लिखने लगे।

"आपसे विदा लेने आया हूं।"

"मुझे यहां चूमो," उन्होंने गाल की ओर इशारा किया, "धन्य-वाद, धन्यवाद!"

"किस चीज़ के लिये आप मुझे धन्यवाद दे रहे हैं?"

"इस चीज के लिये कि जाने में देर नहीं कर रहे हो, बीवी के घाघरे के साथ चिपककर नहीं बैठ रहे हो। सैन्य-सेवा सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण चीज़ है। धन्यवाद, धन्यवाद!" और वह इतने ज़ोर से लिखते जा रहे थे कि लेखनी चीं-चीं कर रही थी और छींटें उड़ा रही थीं। "अगर कुछ कहना चाहते हो तो कहो। ये दोनों काम एकसाथ हो सकते हैं," उन्होंने इतना और जोड़ दिया।

"पत्नी के बारे में... मुझे तो वैसे ही शर्म आ रही है कि उसे आप पर बोझ बनाकर जा रहा हूं।"

"व्यर्थ की बात क्यों कर रहे हो? यह बताओ कि चाहते क्या हो?"

"जब मेरी पत्नी के बच्चा जनने का समय निकट आ जाये तो मास्को से प्रसव-विशेषज्ञ डाक्टर को बुलवा भेजियेगा... उसे उस वक़्त यहां होना चाहिये।"

बुज़ुर्ग प्रिंस ने लिखना बन्द कर दिया और मानो बेटे की बात न समझते हुए उसके चेहरे पर कड़ी दृष्टि जमा दी।

"मैं जानता हूं कि अगर प्रकृति मदद नहीं करेगी तो कोई भी उसकी मदद नहीं कर सकता," स्पष्टतः परेशान होते हुए प्रिंस अन्द्रेई ने कहा। "मैं मानता हूं कि हज़ारों-लाखों प्रसवों में केवल एकाध ही गड़बड़ होता है। किन्तु यह उसकी और मेरी इच्छा है। उससे उलटी-सीधी बातें कह दी गयी हैं, उसने बुरा सपना देखा है और वह डरती है।"

"हुम ... हुम ..." बुज़ुर्ग प्रिंस ने लिखना समाप्त करते हुए अपने आपसे कहा। "यह कर दिया जायेगा।"

उन्होंने अपने हस्ताक्षर किये, अचानक बेटे की ओर घूमे और हंस पड़े।

"बुरी बात है न?"

"क्या बुरी बात है, पिता जी?"

"बीवी!" बूढ़े प्रिंस ने संक्षिप्त और महत्त्वपूर्ण ढंग से उत्तर दिया।

"मैं समझ नहीं पा रहा हूं," अन्द्रेई ने कहा।

"कुछ नहीं किया जा सकता, भैया," बुज़ुर्ग ने कहा। "वे सब ऐसी ही होती हैं, शादी के बन्धन से निकल तो सकते नहीं। तुम कोई चिन्ता नहीं करो, मैं किसी से कुछ नहीं कहूंगा, लेकिन तुम ख़ुद तो यह जानते ही हो।"

उन्होंने अपने हड़ीले, छोटे-से हाथ से बेटे का हाथ थाम लिया, उसे ज़ोर से झंझोड़ा, अपनी पैनी नज़रों से, जो मानो व्यक्ति को आर-पार देख लेती थीं, बेटे के चेहरे को टकटकी बांधकर देखा और फिर से अपनी भावशून्य हंसी हंस दिये।

बेटे ने गहरी सांस ली और इस उसांस से यह स्वीकार कर लिया कि पिता जी उसके मन की स्थिति को समझ गये हैं। बुज़ुर्ग पत्रों को तह करते और उनपर मुहर लगाते हुए अपनी अभ्यस्त फ़ुर्ती से

लाख, मुहर तथा काग़ज़ को हाथ में लेते और नीचे फेंकते रहे।

"क्या हो सकता है? वह सुन्दर है! तुमने जो कुछ कहा है, मैं वह सब कर दूंगा। तुम निश्चिन्त रह सकते हो," वह मुहरें लगाते हुए बीच-बीच में कहते गये।

अन्द्रेई चुप रहा। उसे इस बात की ख़ुशी और अफ़सोस भी था कि पिता जी उसके दिल की बात समझ गये थे। बुज़ुर्ग उठे और उन्होंने पत्र बेटे को दे दिया।

"सुनो," वह बोले, "तुम बीवी की फ़िक्र नहीं करो। जो कुछ करना सम्भव है, सब किया जायेगा। अब ध्यान से मेरी बात सुनो – यह ख़त मिख़ाईल इलारिओनोविच कुतूज़ोव को दे देना। मैंने उसे लिखा है कि ढंग की जगहों पर तुमसे काम ले और बहुत देर तक अपना एडजुटेंट नहीं बनाये रहे। बड़ी बेहूदा नौकरी है यह! उससे कहना कि मैं उसे भूला नहीं हूं और प्यार करता हूं। हां, मुझे लिखना कि तुम्हारे साथ वह किस तरह से पेश आता है। अगर अच्छा बर्ताव करे तो उसके साथ काम करते रहना। निकोलाई अन्द्रेयेविच बोल्कोन्स्की का यानी मेरा बेटा किसी की कृपा के कारण किसी के साथ काम नहीं करेगा। अब इधर आओ।"

वह इतनी जल्दी-जल्दी बोलते थे कि आधे शब्द अधूरे ही रह जाते थे, मगर बेटा उनकी बात समझने का आदी हो चुका था। वह बेटे को एक डेस्क के पास ले गये, उन्होंने उसका ढक्कन उठाया, एक दराज़ खींची और उसमें से अपनी बड़ी-बड़ी, लम्बी तथा घनी लिखावट में लिखी हुई एक कापी निकाली।

"ज़ाहिर है कि मैं तुमसे पहले इस दुनिया से कूच कर जाऊंगा। ये मेरे संस्मरण हैं। मेरी मौत के बाद इन्हें सम्राट को दे देना। यह बैंक का चेक और पत्र है – इस रक़म से सुवोरोव की लड़ाइयों का इतिहास लिखनेवाले व्यक्ति को पुरस्कृत किया जाना चाहिये। इसे अकादमी को भेज देना। यहां मेरी कुछ टिप्पणियां हैं, मेरे मरने के बाद इन्हें पढ़ना, इनमें तुम्हें कुछ काम की बातें मिलेंगी।"

अन्द्रेई ने पिता से यह नहीं कहा कि वह निश्चय ही अभी बहुत समय तक जीवित रहेंगे। वह समझता था कि यह कहने की ज़रूरत नहीं है।

"सब कुछ ऐसे ही कर दिया जायेगा, पिता जी," उसने कहा।

"तो अब जाओ!" उन्होंने चुम्बन के लिये अपना हाथ बेटे की तरफ़ बढ़ा दिया और बेटे को गले लगाया।

"प्रिंस अन्द्रेई, यह याद रखना कि अगर तुम मारे जाओगे तो मुझ बूढ़े को बहुत दुख होगा..." वह अप्रत्याशित ही चुप हो गये और फिर सहसा ऊंची आवाज़ में कहते गये, "लेकिन अगर मुझे यह पता चला कि तुमने निकोलाई बोल्कोन्स्की के बेटे के अनुरूप व्यवहार नहीं किया तो... शर्म से मेरा सिर झुक जायेगा!" वह चिल्ला उठे।

"आपको यह कहने की आवश्यकता नहीं थी, पिता जी," बेटे ने मुस्कराते हुए कहा।

बुज़ुर्ग चुप रहे।

"आपसे एक और अनुरोध करना चाहता था," प्रिंस अन्द्रेई कहता गया, "अगर मैं मारा जाऊं और अगर मेरे यहां बेटा जन्म ले तो उसे अपने यहां से नहीं जाने दीजिये। जैसा कि मैंने आपसे कल कहा था, मैं चाहता हूं कि वह आपके पास ही बड़ा हो... कृपया ऐसा ही कीजिये।"

"उसे तुम्हारी बीवी को नहीं दूं?" बुज़ुर्ग ने कहा और हंस पड़े।

दोनों मौन साधे हुए एक-दूसरे के सामने खड़े थे। बुज़ुर्ग की पैनी नज़रें बेटे की आंखों पर जमी हुई थीं। बुज़ुर्ग प्रिंस के निचले जबड़े में कहीं कुछ सिहरन-सी हुई।

"हमने विदा ले ली... तो अब जाओ!" वह अचानक कह उठे। "जाओ!" अपने कमरे का दरवाज़ा खोलते हुए वह झल्लायी और ऊंची आवाज़ में चिल्ला पड़े।

"क्या बात हो गयी, क्या बात हो गयी?" प्रिंसेस लीज़ा और प्रिंसेस मरीया ने सफ़ेद ड्रेसिंग गाउन पहने, विग के बिना और बूढ़ों जैसा चश्मा चढ़ाये चीख़ते हुए बुज़ुर्ग की आकृति की ज़रा-सी झलक मिलने पर अन्द्रेई से पूछा।

प्रिंस अन्द्रेई ने आह भरी और कोई जवाब नहीं दिया।

"तो," उसने पत्नी को सम्बोधित करते हुए कहा और यह "तो" ऐसे भावनाहीन उपहास की तरह ध्वनित हुआ मानो वह कह रहा हो: "अब आप अपने तमाशे कर लीजिये।"

"अन्द्रेई, तुम जा ही रहे हो?" टुइयां-सी प्रिंसेस ने भय से पति की ओर देखते हुए कहा। उसके चेहरे का रंग उड़ा हुआ था।

प्रिंस अन्द्रेई ने उसे गले लगाया। वह चीख़ उठी और बेहोश-सी होकर उसके कंधे पर गिर गयी।

प्रिंस अन्द्रेई ने बड़ी सावधानी से वह कंधा मुक्त किया जिसपर वह गिरी हुई थी, उसके चेहरे को ध्यान से देखा और सावधानी से उसे आरामकुर्सी पर बैठा दिया।

"विदा, मरीया," उसने धीमी आवाज़ में बहन से कहा, उसके हाथ अपने हाथों में लेकर उसे चूमा और तेज़ क़दम बढ़ाते हुए कमरे से बाहर चला गया।

प्रिंसेस लीज़ा आरामकुर्सी पर लेटी हुई थी, कुमारी बुर्येन उसकी कनपटी सहला रही थी। भाभी को सहारा दिये हुए प्रिंसेस मरीया सजल, सुन्दर आंखों से अभी तक उस दरवाज़े की तरफ़ देख रही थी जहां से प्रिंस अन्द्रेई बाहर गया था और उसपर सलीब का निशान बनाती जा रही थी। बुज़ुर्ग प्रिंस के कमरे से बूढ़ों के ढंग से बार-बार और ग़ुस्से से नाक सिनकने की पिस्तौल की गोलियां चलने जैसी आवाज़ सुनायी दे रही थी। प्रिंस अन्द्रेई के जाते ही कमरे का दरवाज़ा तेज़ी से खुला और सफ़ेद ड्रेसिंग गाउन पहने बुज़ुर्ग की कठोर आकृति ने बाहर झांककर देखा।

"चला गया? बस, ठीक है," उन्होंने बेहोश प्रिंसेस लीज़ा को ग़ुस्से से देखते हुए कहा, तिरस्कार से सिर हिलाया और फटाक से दरवाज़ा बन्द कर दिया।

ਭਾਗ ੨

१

अक्तूबर १८०५ में रूसी सेनायें आस्ट्रिया के सर्वप्रमुख ड्यूक के अधिकार-क्षेत्र के गांवों और नगरों में ठहरी हुई थीं। रूस से और रेजिमेंटें आती जा रही थीं तथा अपनी उपस्थिति से स्थानीय निवासियों पर भारी बोझ बनते हुए ब्राउनाऊ क़िले के आस-पास पड़ाव डालती जाती थीं। ब्राउनाऊ में प्रधान सेनापति कुतूज़ोव का मुख्य सैनिक कार्यालय था।

एक पैदल रेजिमेंट ग्यारह अक्तूबर १८०५ को कुछ ही समय पहले ब्राउनाऊ के निकट पहुंची थी और प्रधान सेनापति द्वारा निरीक्षण की प्रतीक्षा करते हुए नगर से आध मील दूर पड़ाव डाले थी। क्षेत्र और पूरे परिवेश (फलों के बाग़, पथरीली चारदीवारियां, टाइलों की छतें, दूरी पर नज़र आनेवाली पहाड़ियां और जिज्ञासा से रूसी सैनिकों को देख रहे ग़ैररूसी लोग) के रूसी न होने के बावजूद यह रेजिमेंट बिल्कुल वैसी ही लग रही थी जैसी कि रूस के केन्द्र में निरीक्षण के लिये तैयार हो रही कोई भी रूसी रेजिमेंट लग सकती है।

इस रेजिमेंट के कूच के अन्तिम चरण पर शाम के समय यह आदेश मिला कि प्रधान सेनापति रेजिमेंट का कूच की स्थिति में निरीक्षण करेंगे। रेजिमेंट-कमांडर को आदेश के शब्द बेशक अस्पष्ट-से प्रतीत हुए और यह प्रश्न पैदा हुआ कि रेजिमेंट कूच के लिये तैयार स्थिति में हो या न हो, फिर भी बटालियन-कमांडरों की मीटिंग में कम झुकने के बजाय ज़्यादा झुकने के उसूल के मुताबिक़ रेजिमेंट को परेड के रंग में पेश करने का फ़ैसला किया गया। और लगभग चौदह किलोमीटर की मंज़िल मारने के बाद सैनिक पलक झपकाये बिना रात भर अपनी चीज़ों की छोटी-मोटी मरम्मत और सफ़ाई करते रहे, कमांडरों के एडजुटेंट तथा कम्पनी-कमांडर हिसाब-किताब जोड़ते रहे और सुबह होते न होते रेजिमेंट कूच के अन्तिम चरण की पूर्ववेला की अव्यवस्थित भीड़ के बजाय दो हज़ार लोगों की सुव्यवस्थित सेना बन गयी जिसमें हर सैनिक को अपना स्थान और कर्त्तव्य मालूम था, उसका

हर बटन और पट्टी-फ़ीता अपनी सही जगह पर था तथा चमक-दमक रहा था। तैयारी केवल बाहरी तौर पर ही बढ़िया नहीं थी, बल्कि यदि प्रधान सेनापति वर्दी के नीचे भी सैनिक की हालत देखना चाहेंगे तो वहां भी हर सैनिक के बदन पर उन्हें एक जैसी सफ़ेद क़मीज़ नज़र आयेगी और हर किसी के फ़ौजी थैले में, जैसा कि सैनिक कहते हैं, 'ज़रूरी कील-कांटे' दिखायी देंगे। हां, एक चीज़ के बारे में सभी बेचैन थे। यह बेचैनी थी बूटों के मामले में। आधे से ज़्यादा लोगों के बूट टूटे हुए थे। किन्तु इसमें रेजिमेंट-कमांडर का कोई दोष नहीं था, क्योंकि उसके कई बार अनुरोध करने पर भी आस्ट्रिया के फ़ौजी रसद-विभाग ने बूट नहीं दिये थे और रेजिमेंट ने एक हज़ार से अधिक किलोमीटर की मंज़िल तय की थी।

रेजिमेंट-कमांडर अधेड़ उम्र का चुस्त, सफ़ेद भौंहों और गलमुच्छों-वाला स्थूलकाय जनरल था जिसकी छाती एक कंधे से दूसरे कंधे के बजाय पीठ की ओर ज़्यादा चौड़ी थी। वह बहुत अच्छे ढंग से सिली और क्रीज़ों की लौ देती हुई नयी वर्दी पहने था और घनी, सुनहरी स्कन्धिकायें उसके बड़े-बड़े कंधों को मानो झुकाती नहीं, बल्कि ऊपर को उठाती थीं। रेजिमेंट-कमांडर के चेहरे पर अपने जीवन का एक सर्वाधिक समारोही कृत्य करनेवाले व्यक्ति जैसा भाव था। वह रेजिमेंट के सामने इधर-उधर आ-जा रहा था, हर क़दम पर ज़रा शान से पांव झटकता और थोड़ी पीठ झुकाता था। स्पष्ट था कि रेजिमेंट-कमांडर मुग्ध होकर अपनी रेजिमेंट को देख रहा है, उसे उसपर गर्व है और उसकी सारी मानसिक शक्ति उसी पर केन्द्रित है। किन्तु इसके बावजूद उसकी ज़रा अदा दिखाती चाल मानो यह कह रही थी कि सैनिक अभिरुचियों के अतिरिक्त उसके दिल में सोसाइटी की दिलचस्पियों और औरतों के लिये भी कुछ कम जगह नहीं है।

"तो भैया मिख़ाईल द्मीत्रिच," उसने एक बटालियन-कमांडर को सम्बोधित किया (बटालियन-कमांडर मुस्कराकर आगे बढ़ आया, ज़ाहिर था कि वे दोनों बहुत ख़ुश थे), "आज की रात ने तो हमें नाकों चने चबवा दिये। लेकिन लगता है कि रेजिमेंट कुछ बुरी नहीं है... क्यों, क्या ख़्याल है?"

बटालियन-कमांडर इस ख़ुशी भरे व्यंग्य को समझ गया और हंस पड़ा।

"इसे तो त्सारीत्सिन लुग* से भी बाहर न निकाला जाता।"

"क्या?" कमांडर ने पूछा।

इसी समय शहर से आनेवाली सड़क पर, जहां सिगनलर तैनात थे, दो घुड़सवार इधर आते दिखायी दिये। इनमें से एक प्रधान सेनापति का एडजुटेंट और उसके पीछे एक कज़्ज़ाक था।

एडजुटेंट को प्रधान सेनापति ने पिछले दिन के उस आदेश की पुष्टि के लिये, जो स्पष्ट नहीं था, रेजिमेंट-कमांडर के पास भेजा था। उसने बताया कि प्रधान सेनापति रेजिमेंट को उसी हालत में देखना चाहेंगे जिसमें वह यहां पहुंची थी यानी किसी भी तैयारी के बिना सैनिक अपने बड़े फ़ौजी कोट पहने हों और सामान लादे हों।

बात यह थी कि एक दिन पहले वियना से होफ़क्रीग्सराथ** का एक सदस्य कुतूज़ोव के पास ये सुझाव और मांगें लेकर आया था कि कुतूज़ोव को अपनी सेनाओं को जल्दी से जल्दी सर्वप्रमुख ड्यूक फ़र्डीनंड और जनरल माक की सेनाओं के साथ मिला देना चाहिये। कुतूज़ोव ने ऐसे मेल को लाभदायक न मानते हुए अपने मत के समर्थन में प्रस्तुत किये जानेवाले अन्य प्रमाणों के अलावा आस्ट्रिया के जनरल को यह भी दिखाना चाहा कि रूस से आनेवाली सेनायें कैसी बुरी हालत में थीं। इसी उद्देश्य से वह रेजिमेंट को देखना चाहते थे और इसलिये वह जितनी ज़्यादा बुरी हालत में होगी, उन्हें उतनी ही अधिक ख़ुशी होगी। यह सही है कि एडजुटेंट ये सभी तफ़सीलें नहीं जानता था, फिर भी उसने रेजिमेंट-कमांडर को प्रधान सेनापति का यह ज़रूरी आदेश बता दिया कि लोग बड़े फ़ौजी कोट पहने और सामान से लदे-फंदे हों तथा ऐसा न होने पर वह बहुत बुरा मानेंगे।

ये शब्द सुनकर रेजिमेंट-कमांडर का सिर झुक गया, कुछ भी कहे बिना उसने कंधे झटके और ज़ोर से हाथ हिलाये।

"कर दिया न गड़बड़-घुटाला!" वह कह उठा। "मैंने कहा था न, मिख़ाईल द्मीत्रिच, कि अगर रेजिमेंट को कूच की हालत में देखने का सवाल है तो इसका मतलब है कि वह बड़े फ़ौजी कोट पहने

---

* त्सारीत्सिन लुग (ज़ार का मैदान) – पीटर्सबर्ग का वह बड़ा मैदान जहां फ़ौजी परेडें होती थीं। – सं०

** होफ़क्रीग्सराथ – आस्ट्रिया की उच्च सैनिक परिषद। – सं०

हो," उसने भर्त्सना के अन्दाज़ में बटालियन-कमांडर से कहा। "हे भगवान!" उसने इतना और जोड़ दिया तथा दृढ़ता से आगे बढ़ा। "श्रीमान कम्पनी-कमांडरो!" आदेश देने के अभ्यस्त स्वर में वह चिल्लाया। "बड़े सार्जेंटों को फ़ौरन बुलवाइये!.. जल्द ही पधारनेवाले हैं क्या?" रेजिमेंट-कमांडर ने एडजुटेंट से बड़े आदर से और स्पष्टतः यह प्रकट करते हुए पूछा कि वह किस श्रद्धेय व्यक्ति की चर्चा कर रहा है।

"ख़्याल है कि कोई एक घण्टे में।"

"हम सैनिकों के कपड़े तो बदलवा सकेंगे?"

"मुझे मालूम नहीं, जनरल..."

रेजिमेंट-कमांडर सैनिकों के पास जाकर ख़ुद यह व्यवस्था करने लगा कि वे फिर से बड़े फ़ौजी कोट पहन लें। कम्पनी-कमांडर अपनी कम्पनियों की ओर भाग गये, बड़े सार्जेंट दौड़-धूप करने लगे (बड़े फ़ौजी कोट बुरी हालत में थे) और आन की आन में अभी तक सीधी, सटी क़तारों में खड़ी तथा ख़ामोश वर्गाकार सैनिक-आकृतियां हिलने-डुलने लगीं, कुछ फैल गयीं और उनकी धीमी-धीमी आवाज़ें सुनायी देने लगीं। सैनिक इधर-उधर दौड़ने, कंधों को झटककर फ़ौजी थैले और उनके पट्टों को सिर के ऊपर से उतारने लगे, अपने हाथों को ऊपर उठाकर बड़े फ़ौजी कोटों को पहनने लगे।

आध घण्टे बाद सब कुछ पहले जैसी स्थिति में हो गया, केवल वर्गाकार सैनिक-आकृतियां भूरे रंग के बड़े फ़ौजी कोट पहनने के कारण काली से भूरी बन गयीं। रेजिमेंट-कमांडर फिर अदा से चलता हुआ रेजिमेंट के सामने आया और उसने दूर से ही रेजिमेंट पर नज़र डाली।

"यह और क्या बकवास है? यह क्या है?" वह रुकते हुए चिल्ला उठा, "तीसरी कम्पनी का कमांडर पेश हो!.."

"तीसरी कम्पनी का कमांडर जनरल के सामने पेश हो! कमांडर जनरल के सामने, तीसरी कम्पनी का कमांडर जनरल के सामने!.." सैनिक-पंक्तियों में आवाज़ें सुनायी दीं और जनरल का एडजुटेंट कम्पनी-कमांडर को खोजने के लिये भागा।

जब उक्त आदेश को ज़ोर से, किन्तु ग़लत ढंग से "जनरल को तीसरी कम्पनी के सामने," दोहराती आवाज़ें वांछित अफ़सर तक पहुंचीं तो वह अपनी कम्पनी के पीछे से सामने आया और ढलती उम्र

का तथा दौड़ने का अभ्यस्त न होते हुए भी पंजों के बल अटपटी चाल से जनरल की ओर दौड़ चला। कम्पनी-कमांडर यानी कप्तान के चेहरे पर उस स्कूली छात्र जैसी परेशानी थी जिसे याद न किया हुआ पाठ सुनाने के लिये कहा जाता है। उसके लाल चेहरे पर (जो सम्भवतः शराब पीने के कारण लाल था) सुर्ख धब्बे उभर आये थे और मुंह घबराहट से ऐंठ रहा था। रेजिमेंट-कमांडर इस हांफते और अधिकाधिक निकट आने पर अपनी दौड़ धीमी करते जा रहे कप्तान को सिर से पांव तक देख रहा था।

"लगता है कि जल्द ही आप अपने सैनिकों को औरतों की पोशाकें पहनाने लगेंगे! वह क्या है?" निचले जबड़े को आगे बढ़ाते हुए जनरल चिल्लाया और उसने तीसरी कम्पनी के उस सैनिक की ओर संकेत किया जो दूसरों से भिन्न और रंगीन, बड़ा फ़ौजी कोट पहने था। "ख़ुद कहां थे? प्रधान सेनापति आनेवाले हैं और आप अपनी जगह पर नहीं हैं? यह क्या तरीक़ा है?.. निरीक्षण के समय सैनिकों को ऐसी पोशाकें पहनाने के लिये मैं आपकी अक़्ल ठिकाने करूंगा!.. यह क्या तरीक़ा है?.."

जनरल के चेहरे पर नज़र जमाये हुए कम्पनी-कमांडर अपनी दो उंगलियों को फ़ौजी टोपी पर अधिकाधिक दबाता जाता था मानो ऐसा करने में ही उसकी मुक्ति हो।

"आप चुप क्यों हैं? आपकी कम्पनी में किसी हंगेरियन की तरह बना-ठना हुआ यह सैनिक कौन है?" रेजिमेंट-कमांडर ने कड़ाई से मज़ाक़ किया।

"हुज़ूर..."

"यह 'हुज़ूर' की क्या रट लगाने जा रहे हैं? हुज़ूर! हुज़ूर! क्या है यह 'हुज़ूर'?"

"हुज़ूर, यह दोलोख़ोव है जिसे अफ़सर से मामूली फ़ौजी बना दिया गया है," कप्तान ने धीरे से कहा।

"उसे मामूली फ़ौजी बनाया गया है या फ़ील्ड-मार्शल? सैनिक को तो बाक़ी सभी सैनिकों जैसी वर्दी पहननी चाहिये।"

"हुज़ूर, आपने तो ख़ुद ही कूच के समय उसे ऐसा बड़ा कोट पहनने की अनुमति दी थी।"

"अनुमति दी थी? आप जवान लोग हमेशा ऐसा ही करते हैं,"

रेजिमेंट-कमांडर ने थोड़ा शान्त होते हुए कहा। "अनुमति दी थी? आपको कोई ज़रा-ससी छूट दे दे, और आप लोग..." रेजिमेंट-कमांडर चुप हो गया। "आपको कोई ज़रा-सी छूट दे दे और आप लोग... यह क्या है?" उसने फिर से खीझते हुए कहा। "अपने लोगों को ढंग से कपड़े पहनाने की मेहरबानी कीजिये..."

और रेजिमेंट-कमांडर एडजुटेंट पर नज़र डालकर अपनी अदा दिखाती चाल से रेजिमेंट की ओर बढ़ चला। साफ़ दिखायी दे रहा था कि ख़ुद उसे भी अपनी झल्लाहट अच्छी लग रही थी तथा रेजिमेंट का निरीक्षण करते हुए वह अपना गुस्सा दिखाने का कोई और बहाना ढूंढ़ना चाहता था। एक अफ़सर को इसलिये डांटकर कि उसका बैज साफ़ नहीं था और दूसरे को इस कारण फटकारने के बाद कि उसके सैनिकों की क़तार सीधी नहीं थी, वह तीसरी कम्पनी के पास पहुंचा।

"कै-से खड़े हो? पांव कहां है? कहां है पांव?" रेजिमेंट-कमांडर दोलोख़ोव से, जो नीले रंग का बड़ा फ़ौजी कोट पहने था, पांच सैनिकों की दूरी पर ही अपनी आवाज़ में व्यथा की ध्वनि लाते हुए चिल्ला उठा।

दोलोख़ोव ने अपने झुके हुए पांव को धीरे से सीधा किया और अपनी नीली गुस्ताख़ नज़रों से जनरल के चेहरे की तरफ़ देखा।

"बड़ा फ़ौजी कोट नीले रंग का क्यों है? उतारो इसे!.. बड़े सार्जेंट! इसका कोट बदलवाओ... बदलवा..." वह यह शब्द पूरा नहीं कर पाया।

"जनरल, आदेश पूरे करना मेरा कर्त्तव्य है, किन्तु मैं यह सहन नहीं करूंगा..." दोलोख़ोव ने जल्दी से कहा।

"क़तार में खड़े हुए बात नहीं करो!.. बात नहीं करो, कह दिया कि बात नहीं करो!.."

"गाली-गलौज सहन नहीं करूंगा," दोलोख़ोव ने ऊंची, गूंजती आवाज में जवाब दिया।

जनरल और सैनिक की नज़रें मिलीं। जनरल ख़ामोश रहा, उसने खीझते हुए अपने कसे हुए गुलूबन्द को नीचे की ओर झटका दिया।

"कृपया अपना कोट बदल लीजिये, आपसे अनुरोध करता हूं," जनरल ने वहां से हटते हुए कहा।

२

"वे आ रहे हैं!" इसी समय एक सिगनलर चिल्ला उठा।

रेजिमेंट-कमांडर के चेहरे पर लाली दौड़ गयी, वह भागकर घोड़े की तरफ़ गया, उसने कांपते हाथों से रकाब थामी, घोड़े पर चढ़ा, अपने को सीधा किया, तलवार निकाली और चेहरे पर प्रसन्नता तथा दृढ़ता का भाव लाकर एक ओर को मुंह खोला और चिल्लाकर आदेश देने को तैयार हो गया। रेजिमेंट उड़ने के लिये पंख तौलते हुए पक्षी की भांति सिहरी और स्थिर हो गयी।

"सावधान!" रेजिमेंट-कमांडर अन्तर को बींधती आवाज़ में चिल्लाया। यह आवाज़ अपने प्रति सुखद, रेजिमेंट के प्रति कठोर और निकट आ रहे प्रधान सेनापति के प्रति अभिवादन की द्योतक थी।

चौड़ी, कच्ची सड़क पर, जिसके दोनों ओर वृक्ष खड़े थे, वियना के ढंग की हल्के नीले रंग की बग्घी बढ़ी आ रही थी। उसमें तेज़ दुलकी चाल से दौड़नेवाले छः घोड़े जुते थे और उसके स्प्रिंग हल्की-सी आवाज़ पैदा कर रहे थे। बग्घी के पीछे घोड़ों पर प्रधान सेनापति का अमला और अंगरक्षक थे। सफ़ेद वर्दी पहने, जो रूसी सैनिकों की काली वर्दियों के बीच अजीब-सी लग रही थी, कुतूज़ोव के निकट आस्ट्रिया का जनरल बैठा था। बग्घी रेजिमेंट के पास आकर रुकी। कुतूज़ोव तथा आस्ट्रियायी जनरल ने धीरे-धीरे कुछ बातचीत की, कुतूज़ोव मुस्कराये और जब वह भारी-भरकम चाल से पायदान से नीचे क़दम रख रहे थे तो ऐसे लग रहा था मानो इन दो हज़ार व्यक्तियों का, जो सांस रोके हुए उन्हें तथा अपने जनरल को एकटक देख रहे थे, कोई अस्तित्व ही नहीं था।

आदेश गूंज उठा, रेजिमेंट झनझनाहट पैदा करती हुई फिर से हिली-डुली और उसने सलामी दी। गहरी ख़ामोशी में प्रधान सेनापति की धीमी-सी आवाज़ सुनायी दी। रेजिमेंट चिल्ला उठी: "चिरजीवी हों हमारे महामहिम!" फिर से सब कुछ शान्त हो गया। शुरू में, जब तक रेजिमेंट हिलती-डुलती रही, कुतूज़ोव एक जगह पर खड़े रहे और इसके बाद सफ़ेद वर्दी पहने आस्ट्रियायी जनरल और अपने दल के लोगों को साथ लेकर सैनिक-पंक्तियों के बीच पैदल चलने लगे।

रेजिमेंट-कमांडर ने जिस ढंग से प्रधान सेनापति पर आंखें जमाकर

और सीधा-सतर होते हुए उन्हें सलामी दी थी, जिस ढंग से वह दोनों जनरलों के पीछे-पीछे सैनिक-पंक्तियों के बीच आगे को झुका हुआ चल रहा था और बड़ी मुश्किल से अपनी चाल की अदा को बनाये रख पा रहा था और जिस अन्दाज़ से वह प्रधान सेनापति के हर शब्द तथा गति-विधि पर हल्की-सी छलांग मारता था – उससे बिल्कुल स्पष्ट था कि वह संचालक के बजाय मातहत का कर्त्तव्य अधिक ख़ुशी से पूरा करता था। रेजिमेंट-कमांडर की कड़ाई और कोशिश के फलस्वरूप यह रेजिमेंट इसी समय ब्राउनाऊ पहुंचनेवाली दूसरी रेजिमेंटों की तुलना में कहीं बेहतर हालत में थी। पिछड़ने और बीमार होनेवाले सैनिकों की संख्या केवल दो सौ सत्रह थी। बूटों को छोड़कर बाक़ी सब कुछ ठीक-ठाक था।

कुतूज़ोव सैनिकों की क़तारों का निरीक्षण कर रहे थे, कभी-कभी रुककर उन अफ़सरों से, जिन्हें तुर्की के युद्ध के दिनों से जानते थे और कभी-कभी सैनिकों से भी दो-चार स्नेहपूर्ण शब्द कहते। बूटों की ओर देखते हुए उन्होंने कई बार अफ़सोस से सिर हिलाया और चेहरे पर ऐसा भाव लाकर आस्ट्रियायी जनरल का उनकी तरफ़ ध्यान आकृष्ट किया मानो इसके लिये वह किसी की भी भर्त्सना न कर रहे हों, किन्तु यह देखे बिना भी नहीं रह सकते कि यह कितनी बुरी बात है! ऐसा होने पर रेजिमेंट-कमांडर हर बार ही भागकर आगे आ जाता ताकि रेजिमेंट से सम्बन्धित प्रधान सेनापति का कोई भी शब्द अब अनसुना न रह जाये। कुतूज़ोव के पीछे इतने फ़ासले पर कि धीरे से कहा गया हर शब्द सुना जा सके, उनके दल के कोई बीस आदमी आ रहे थे। ये महानुभाव आपस में बातें करते और कभी-कभी हंसते भी थे। प्रधान सेनापति के सबसे अधिक निकट उनका सुन्दर एडजुटेंट चला आ रहा था। यह प्रिंस बोल्कोन्स्की था। उसका साथी नेस्वीत्स्की उसकी बग़ल में था। लम्बे क़द का यह बड़ा अफ़सर बहुत ही मोटा था, सुन्दर, मुस्कराते चेहरे और चंचल आंखोंवाला। वह अपने साथ-साथ आ रहे सांवले-से हुस्सार-अफ़सर की अजीब हरकतों के कारण अपनी हंसी नहीं रोक पा रहा था। यह हुस्सार-अफ़सर मुस्कराये और स्थिर आंखों का भाव बदले बिना बड़ी गम्भीर मुद्रा बनाये हुए रेजिमेंट-कमांडर की पीठ को देखता और उसकी हर गति-विधि की नक़ल करता था। रेजिमेंट-कमांडर के हर बार सिहरने और आगे झुकने पर हुस्सार-

अफ़सर भी बिल्कुल उसी तरह से सिहरता और आगे झुकता। नेस्वीत्स्की हंसता और दूसरों को इस मसख़रे की ओर देखने के लिये कोहनियां मारता।

कुतूज़ोव हज़ारों आंखों के पास से धीरे-धीरे तथा शिथिल-से चले जा रहे थे और ये हज़ारों आंखें अपने प्रधान सेनापति का अनुकरण करती हुई मानो बाहर को निकली पड़ रही थीं। तीसरी कम्पनी के पास पहुंचकर वह अचानक रुक गये। कुतूज़ोव के दल के लोगों ने उनके ऐसे अचानक रुकने की आशा नहीं की थी और इसलिये वे सभी उनके बहुत निकट आ गये।

"अरे, तिमोख़िन!" प्रधान सेनापति लाल नाकवाले कप्तान को पहचानते हुए कह उठे। इसी कप्तान को दोलोख़ोव के नीले कोट के लिये कुछ ही देर पहले डांट पड़ चुकी थी।

ऐसा प्रतीत हो सकता था कि रेजिमेंट-कमांडर की डांट-फटकार के समय तिमोख़िन जितना अधिक तनकर खड़ा था, उसके लिये उससे अधिक तनकर खड़े होना सम्भव नहीं था। किन्तु इस समय प्रधान सेनापति के सम्बोधित करने पर वह इतना ज़्यादा तन गया कि ऐसे लगा कि यदि प्रधान सेनापति कुछ समय तक उसकी तरफ़ और देखते रहेंगे तो वह इस तनाव को बर्दाश्त नहीं कर पायेगा। इसलिये सम्भवतः उसकी इस स्थिति को समझते और कप्तान की केवल भलाई चाहते हुए कुतूज़ोव ने जल्दी से अपना मुंह दूसरी ओर कर लिया। उनके फूले-फूले, घाव के निशान के कारण कुरूप हो गये चेहरे* पर मुश्किल से नज़र आनेवाली मुस्कान झलक उठी।

"यह इज़माईल के दिनों का साथी है," उन्होंने कहा। "बड़ा बहादुर अफ़सर है। तुम इससे ख़ुश हो न?" कुतूज़ोव ने रेजिमेंट-कमांडर से पूछा।

और रेजिमेंट-कमांडर यह न जानते हुए कि हुस्सार-अफ़सर उसकी इतनी अच्छी नक़ल कर रहा है मानो वह दर्पण में प्रतिबिम्बित हो रहा हो, सिहरा, आगे बढ़ा और बोला:

"बहुत ख़ुश हूं, हुज़ूर।"

---

* रूसी-तुर्की युद्ध में (१७८७-१७९१) कुतूज़ोव के सिर पर दो बार चोट लगी थी। –सं०

"हम सभी में कुछ न कुछ कमज़ोरियां हैं," कुतूज़ोव ने मुस्कराते और आगे बढ़ते हुए कहा। "इसे बोतल से बड़ा लगाव था।"

रेजिमेंट-कमांडर डर गया कि इसके लिये कहीं उसे ही दोषी न माना जाये और इसलिये उसने कोई जवाब नहीं दिया। इसी समय हुस्सार-अफ़सर ने पेट को अन्दर की ओर दबाये हुए लाल नाकवाले कप्तान के चेहरे की ओर देखा तथा उसकी इस मुद्रा और चेहरे की इतनी बढ़िया नक़ल उतारी कि नेस्वीत्स्की अपनी हंसी नहीं रोक पाया। कुतूज़ोव ने मुड़कर देखा। स्पष्ट था कि हुस्सार-अफ़सर अपने चेहरे को जैसा चाहता था, वैसा ही बना लेता था। कुतूज़ोव के मुड़कर देखने के पहले ही हुस्सार-अफ़सर रेजिमेंट-कमांडर की नक़ल उतारने के बाद अपने चेहरे को अत्यधिक गम्भीर, आदरपूर्ण और मासूम-सा बना चुका था।

तीसरी कम्पनी अन्तिम थी और कुतूज़ोव मानो कुछ याद करते हुए सोचने लगे। उनके साथ आनेवाले लोगों के दल में से प्रिंस अन्द्रेई ने आगे बढ़कर उनसे फ़्रांसीसी में धीरे से कहा :

"आपने आदेश दिया था कि मैं इस रेजिमेंट में आपको अफ़सर से सैनिक बना दिये गये दोलोख़ोव की याद दिला दूं।"

"दोलोख़ोव कहां है?" कुतूज़ोव ने पूछा।

दोलोख़ोव ने, जो अब सैनिकों का भूरे रंग का बड़ा कोट पहने था, अपने बुलाये जाने की प्रतीक्षा नहीं की। सुनहरे बालों और निर्मल, नीली आंखोंवाला सुघड़-सुडौल सैनिक क़तार में से फ़ौरन आगे आ गया। प्रधान सेनापति के पास जाकर उसने सलूट मारी।

"कोई शिकायत करनी है?" ज़रा-सी त्योरी चढ़ाकर कुतूज़ोव ने पूछा।

"यह दोलोख़ोव है," प्रिंस अन्द्रेई ने बताया।

"ओह!" कुतूज़ोव कह उठे। "उम्मीद करता हूं कि यह सबक़ तुम्हें रास्ते पर ले आयेगा। ढंग से सैन्य-सेवा करो। सम्राट दयालु हैं। अगर तुम अपनी योग्यता सिद्ध कर दोगे तो में भी तुम्हें नहीं भूलूंगा।"

दोलोख़ोव की निर्मल, नीली आंखें प्रधान सेनापति को भी वैसी ही दबंगता से देख रही थीं जैसे उन्होंने रेजिमेंट-कमांडर को देखा था और उनका भाव मानो उस परम्परा के आवरण को छिन्न-भिन्न कर

रहा था जो प्रधान सेनापति और सैनिक के बीच इतना फ़ासला बनाये रखता था।

"महामान्य, आपसे एक प्रार्थना करता हूं," उसने अपनी गूंजती, दृढ़ और स्थिर आवाज़ में कहा। "आपसे अपनी भूल सुधारने और सम्राट तथा रूस के प्रति अपनी निष्ठा सिद्ध करने का अवसर देने की प्रार्थना करता हूं।"

कुतूज़ोव ने मुंह फेर लिया। उनके चेहरे पर क्षण भर को आंखों में झलकनेवाली वही मुस्कान दिखायी दी जो कप्तान तिमोख़िन की ओर से मुंह दूसरी तरफ़ करने पर दिखायी दी थी। उन्होंने मुंह दूसरी ओर कर लिया और उनके माथे पर बल पड़ गये मानो इस तरह से वह यह व्यक्त करना चाहते हों कि दोलोख़ोव ने उनसे जो कुछ कहा था और वह जो कुछ कह सकता था, वह सब उन्हें एक ज़माने से मालूम है, इस सब से वह उकता चुके हैं और यह सब कुछ कहने की कोई ज़रूरत नहीं है। वह मुड़कर बग्घी की ओर चल दिये।

रेजिमेंट कम्पनियों में बंट गयी और ब्राउनाऊ के नज़दीक अपने ठहरने के स्थान की ओर चल दी जहां उसे ढंग के बूट और कपड़े तथा लम्बे कूच के बाद आराम कर पाने की आशा थी।

"आप मुझसे नाराज़ नहीं होइये, प्रोख़ोर इग्नात्येविच!" रेजिमेंट-कमांडर ने तीसरी कम्पनी की तरफ़ घोड़ा बढ़ाकर आगे-आगे जा रहे कप्तान तिमोख़िन के पास पहुंचकर कहा। रेजिमेंट के सफल निरीक्षण के बाद रेजिमेंट-कमांडर के चेहरे पर ख़ुशी फूटी पड़ रही थी। "क्या किया जाये, सम्राट की सेवा में इसके बिना काम नहीं चलता... कभी-कभी परेड के वक़्त भी अपने पर क़ाबू नहीं रहता... आप जानते ही हैं कि मैं ख़ुद ही पहले आकर माफ़ी मांग लेता हूं... बड़े हुज़ूर बहुत ख़ुश होकर गये हैं!" और उसने कम्पनी-कमांडर की तरफ़ हाथ बढ़ा दिया।

"यह आप क्या कह रहे हैं, जनरल, मैं, और आपसे नाराज़ होऊं!" कप्तान ने मुस्कराते हुए जवाब दिया। ऐसा करते समय उसकी नाक पर लाली दौड़ गयी और सामनेवाले वे दो दांत ग़ायब नज़र आये जो इज़माईल के निकट लड़ाई में दुश्मन ने बन्दूक़ का दस्ता मारकर तोड़ दिये थे।

"और श्रीमान दोलोख़ोव से भी कह दीजिये कि मैं उसे नहीं

भूलूंगा, वह निश्चिन्त रह सकता है। अरे हां, मैं आपसे पूछना ही चाहता था, कृपया यह बताइयें कि उसका रंग-ढंग कैसा है? और कुल मिलाकर..."

"अपनी ड्यूटी पूरी करने के मामले में तो बहुत ही अच्छा है, हुज़ूर... लेकिन उसका स्वभाव..." तिमोख़िन ने कहा।

"हां, स्वभाव, स्वभाव के बारे में आप क्या कहना चाहेंगे?" रेजिमेंट-कमांडर ने जानना चाहा।

"हुज़ूर, कभी-कभी तो वह बहुत समझदार, सलीकेवाला और दयालु आदमी लगता है," कप्तान ने जवाब दिया। "मगर कभी-कभी बिल्कुल दरिन्दे जैसा। पोलैंड में तो उसने एक यहूदी की बस, जान ही नहीं ले ली..."

"सच," रेजिमेंट-कमांडर ने कहा, "फिर भी मुसीबत का शिकार हो जानेवाले इस नौजवान के प्रति सहानुभूति से काम लेना चाहिये। बड़े-बड़े लोगों के साथ उसके सम्बन्ध हैं... इसलिये आप..."

"जो हुक्म, हुज़ूर," तिमोख़िन ने जवाब दिया और मुस्कराकर यह स्पष्ट किया कि वह जनरल की इच्छा को समझ रहा है।

"तो ठीक है, ठीक है।"

रेजिमेंट-कमांडर ने दोलोख़ोव को सैनिकों के बीच ढूंढ़ लिया और अपने घोड़े को उसके पास ले जाकर रोका।

"पहला अवसर आते ही आपको वही पद मिल जायेगा," उसने दोलोख़ोव से कहा।

दोलोख़ोव ने मुड़कर देखा, कोई उत्तर नहीं दिया और व्यंग्यपूर्वक मुस्कराते अपने मुंह का भाव भी नहीं बदला।

"तो तय रहा," रेजिमेंट-कमांडर कहता गया। "सैनिकों को मेरी ओर से वोद्का पिलायी जाये," उसने ऐसे कहा कि सभी फ़ौजी सुन लें। "सबको धन्यवाद देता हूं! शुक्र है भगवान का!" और वह घोड़े को आगे बढ़ाकर दूसरी कम्पनी की तरफ़ चला गया।

"मानना होगा कि यह भला आदमी है, उसके मातहत काम किया जा सकता है," तिमोख़िन ने अपने नज़दीक चल रहे छोटे अफ़सर से कहा।

"मतलब यह है कि पान का बादशाह है!.." (रेजिमेंट-कमांडर को पान का बादशाह कहा जाता था), छोटे अफ़सर ने हंसते हुए कहा।

रेजिमेंट के निरीक्षण के बाद अफ़सरों का ख़ुशी का मूड सैनिकों तक भी पहुंच गया। कम्पनी बड़े रंग में बढ़ रही थी। सभी ओर से सैनिकों के बोलने-बतियाने की आवाज़ें आ रही थीं।

"कौन कहता है कि कुतूज़ोव एक आंख से अन्धे हैं?"

"ऐसा तो है ही! बिल्कुल अन्धे हैं।"

"नहीं... मेरे भाई, तुमसे ज़्यादा तेज़ हैं उनकी आंखें। बूट और पैरों की पट्टियां – सभी कुछ ही तो देख लिया उन्होंने..."

"भैया मेरे, जैसे ही वह मेरे पांव की तरफ़ देखते थे... तो बस! मैं सोचता..."

"और उनके साथ वह जो आस्ट्रियायी जनरल था, वह तो जैसे खड़िया से रंगा हुआ लगता था। आटे की तरह सफ़ेद। मेरे ख़्याल में उसे वैसे ही रगड़-रगड़कर साफ़ किया जाता है जैसे हम अपनी बन्दूक़ साफ़ करते हैं।"

"अरे, फ़ेदोशा!.. उन्होंने कुछ कहा कि लड़ाई कब शुरू होगी? तू तो उनके पास खड़ा था। कुछ ऐसा बोला कि बोनापार्ट ख़ुद ब्राउनाऊ में है।"

"बोनापार्ट ख़ुद यहां है! अरे, चंडूख़ाने की गप है यह! न जाने तू अभी और क्या-क्या सुनेगा! अभी तो प्रशावाला बिगड़ा बैठा है। सो आस्ट्रियावाला उसे क़ाबू में कर रहा है। जब वह क़ाबू में आ जायेगा तब बोनापार्ट के साथ लड़ाई शुरू करेगा। यह भी भली कही तूने कि बोनापार्ट ब्राउनाऊ में है! साफ़ पता चलता है कि तू उल्लू है! और सुनाकर ऐसी उलटी-सीधी बातें।"

"शैतान ग़ारत करे इन क्वार्टर देनेवालों को। देख तो, पांचवीं कम्पनी तो गांव की तरफ़ मुड़ रही है, उसके लोग तो दलिया भी पका लेंगे और हम पड़ाव की जगह तक भी नहीं पहुंचेंगे।"

"अरे एक रस्क तो दे, शैतान के चर्ख़े।"

"तूने क्या कल मुझे तम्बाकू दिया था? यही तो बात है, मेरे भाई। ख़ैर, कोई बात नहीं, यह ले।"

"यहां पड़ाव ही डाल दें तो अच्छा रहे, वरना भूखे पेट पांच से अधिक किलोमीटर तक और टांगें तोड़नी पड़ेंगी।"

"तब बड़ा मज़ा रहा था, जब जर्मनों ने हमें बग्घियां दे दी थीं। बड़े ठाठ से सवारी हुई थी।"

"भैया, यहां के लोग तो बिल्कुल दूसरे ढंग के हैं। वहां फिर भी मानो पोलिश थे, रूसी सम्राट की प्रजा थे। मगर अब तो, भैया, चारों तरफ़ जर्मन ही जर्मन हैं।"

"गानेवाले आगे आ जायें!" कप्तान की ऊंची आवाज़ सुनायी दी।

और विभिन्न सैनिक-पंक्तियों से कोई बीसेक फ़ौजी दौड़कर कम्पनी के आगे आ गये। गाना शुरू करनेवाले ढोल-वादक ने गायकों की ओर मुंह किया और हाथ लहराकर सैनिकों का एक लम्बा गाना आरम्भ किया जिसकी पहली पंक्ति थी: "उषा हो रही, उषा हो रही सूरज चढ़ता है..." और अन्तिम शब्द थे: "कीर्ति हमारी फैलेगी पिता कामेन्स्की के साथ..." इस गाने का जन्म तुर्की में हुआ था और अब इसे आस्ट्रिया में "पिता कामेन्स्की" के बजाय "पिता कुतूज़ोव" के मामूली परिवर्तन के साथ गाया जा रहा था।

इन अन्तिम शब्दों को फ़ौजी ढंग से समाप्त करके और हाथों को ऐसे झटककर मानो वह ज़मीन पर कुछ गिरा रहा हो, चालीसेक साल के दुबले-पतले और सुन्दर ढोल-वादक ने सैनिक-गायकों को कड़ाई से देखा और आंखें सिकोड़ लीं। कुछ क्षण बाद यह विश्वास हो जाने पर कि सभी की नज़रें उसपर जमी हुई हैं, उसने दोनों हाथों से मानो बड़ी सावधानी से कोई अदृश्य बहुमूल्य वस्तु सिर के ऊपर उठाई, कुछ सेकण्ड तक उसे वहीं थामे रहा और फिर अचानक ज़ोर से नीचे फेंक दिया:

"ओह, तू ड्योढ़ी मेरी, मेरी!"

"नयी, नयी, मेरी ड्योढ़ी!.." बीस आवाज़ें एकसाथ इस गाने को आगे बढ़ाने लगीं और लकड़ी के चम्मच बजानेवाला सैनिक अपने फ़ौजी सामान के बोझ के बावजूद उछलकर आगे आ गया और कंधों को हिलाता तथा चम्मचों से किसी को धमकाता-सा कम्पनी की ओर पीठ किये हुए आगे-आगे चल दिया। सैनिक गाने की लय के साथ हाथों को ज़ोर से हिलाते-डुलाते, लम्बे-लम्बे डग भरते और अपने आप ही क़दम मिलाकर बढ़ते जाते थे। कम्पनी के पीछे बग्घी

के पहियों की आवाज़, स्प्रिंगों की झनक और घोड़ों की टापें सुनायी दीं। कुतूज़ोव अपने दल के साथ शहर लौट रहे थे। प्रधान सेनापति ने यह संकेत किया कि सैनिक इसी तरह आज़ादी से बढ़ते जायें। कुतूज़ोव तथा उनके दल के सभी लोगों के चेहरों पर गाने के साथ नाचते तथा ख़ुशी और फुर्ती से उमगते सैनिकों को जाते देखकर प्रसन्नता झलक उठी। दायें पहलू की दूसरी क़तार में, जिसके पास से बग्घी आगे निकल रही थी, नीली आंखोंवाले सैनिक, दोलोख़ोव की ओर बरबस ध्यान चला जाता था जो विशेष चुस्ती और सजीलेपन से गीत की लय के साथ क़दम मिलाकर चल रहा था तथा घोड़ों पर सवार और बग्घी में बैठे अफ़सरों के चेहरों को ऐसे देख रहा था मानो उसे उन सभी पर तरस आ रहा हो जो इस समय कम्पनी के साथ नहीं चल रहे थे। कुतूज़ोव के दल का हुस्सार-अफ़सर, जो रेजिमेंट-कमांडर की नक़ल उतारता रहा था, बग्घी से पीछे रह गया और वह अपने घोड़े को दोलोख़ोव के पास ले गया।

जेरकोव नाम का यह हुस्सार-अफ़सर कभी पीटर्सबर्ग के उन उद्दंड लोगों में से एक था जिनका मुखिया दोलोख़ोव था। विदेश में जेरकोव की दोलोख़ोव के साथ सैनिक के रूप में भेंट हुई और उसने उसे पहचानना ठीक नहीं समझा। किन्तु अफ़सर से सैनिक बनाये गये दोलोख़ोव के साथ कुतूजोव की बातचीत के बाद उसने अब एक पुराने दोस्त जैसी ख़ुशी दिखाते हुए उसे सम्बोधित किया:

"कैसे हो तुम, मेरे प्यारे दोस्त?" उसने गाने की आवाज़ के बीच अपने घोड़े की चाल को सैनिकों की चाल के अनुरूप बनाते हुए कहा।

"मैं कैसा हूं?" दोलोख़ोव ने रुखाई से जवाब दिया। "जैसा देख रहे हो।"

उत्साह से ओत-प्रोत गाना ख़ुशी के उस बेतकल्लुफ़ अन्दाज़ को, जिसमें जेरकोव बात कर रहा था, और दोलोख़ोव द्वारा अपने जवाबों में जान-बूझकर दिखायी जानेवाली रुखाई को ख़ास तौर पर उभार रहा था।

"तो अफ़सरों के साथ कैसी पटरी बैठ रही है?" जेरकोव ने पूछा।

"सब ठीक है, भले लोग हैं। तुम मुख्य सैनिक कार्यालय में कैसे जा घुसे?"

"मुझे यहां भेज दिया गया है, ड्यूटी पर हूं।"

दोनों चुप हो गये।

"बाज़ उड़ाया उसने अपनी बायीं आस्तीन से," गाने के शब्द अनचाहे ही प्रफुल्लता और उल्लास की भावनायें पैदा कर रहे थे। अगर ये दोनों गाने की संगत में बातचीत न कर रहे होते तो इनकी बातचीत सम्भवतः दूसरे ही ढंग की होती।

"क्या यह सच है कि आस्ट्रियावालों को पराजित कर दिया गया है?" दोलोख़ोव ने पूछा।

"शैतान ही जाने। हां, ऐसा सुनने में तो आया है।"

"मैं ख़ुश हूं," दोलोख़ोव ने संक्षिप्त और स्पष्ट उत्तर दिया। गाने की लय ऐसी ही अपेक्षा करती थी।

"तो किसी शाम को हमारे यहां आ जाना, कुछ बाज़ियां खेलेंगे," जेरकोव ने कहा।

"लगता है कि कुछ ज़्यादा ही पैसे जमा हो गये हैं तुम्हारे पास?"

"आ जाना।"

"नहीं, ऐसा नहीं कर सकता। क़सम खायी है। जब तक फिर से अफ़सर नहीं बन जाऊंगा, न तो पिऊंगा और न ही जुआ खेलूंगा।"

"तुम्हारा फिर से अफ़सर हो जाना तो दुश्मन से पहली झड़प होने तक की ही बात है..."

"देखा जायेगा।"

दोनों फिर से ख़ामोश हो गये।

"अगर किसी तरह की कोई ज़रूरत महसूस हो तो चले आना, मुख्य सैनिक कार्यालय में तो हमेशा मदद की ही जा सकती है..." जेरकोव ने कहा।

दोलोख़ोव व्यंग्यपूर्वक मुस्कराया।

"तुम कोई फ़िक्र नहीं करो। मुझे जिस भी चीज़ की ज़रूरत होगी, मैं वह मांगूंगा नहीं, ख़ुद ही ले लूंगा।"

"ख़ैर, मैंने तो यों ही..."

"और मैंने भी यों ही।"

"तो नमस्ते।"

"नमस्ते..."

...ऊंचा, और दूर
अपनी धरती की ओर
वह बाज़ उड़ा...

जेरकोव ने घोड़े को एड़ लगायी जो उत्तेजित होकर और यह न समझ पाते हुए कि कौन-सी टांग पहले आगे बढ़ाये, तीन बार उछला, सम्भला और गाने की लय के साथ सरपट दौड़ता हुआ कम्पनी को पीछे छोड़कर बग्घी के पास पहुंच गया।

३

रेजिमेंट के निरीक्षण से लौटने के बाद आस्ट्रियायी जनरल को साथ लिये हुए कुतूज़ोव अपने कमरे में गये और एडजुटेंट को पुकारकर उन्होंने उससे यहां पहुंची सेनाओं की स्थिति और अग्रिम सेनाओं का संचालन कर रहे सर्वप्रमुख ड्यूक फ़र्डीनंड से प्राप्त हुए पत्र लाने को कहा। प्रिंस अन्द्रेई बोल्कोन्स्की मंगाये गये सभी काग़ज़ लिये हुए प्रधान सेनापति के कमरे में दाखिल हुआ। कुतूज़ोव और आस्ट्रिया की होफ़क्रीग्सराथ का सदस्य मेज़ पर बिछे हुए नक़्शे के सामने बैठे थे।

"ओह..." बोल्कोन्स्की की ओर देखते हुए कुतूज़ोव ने ऐसे कहा मानो इस एक शब्द से एडजुटेंट को इन्तज़ार करने का संकेत किया और फ़्रांसीसी भाषा में शुरू की हुई अपनी बातचीत जारी रखी।

"मैं तो केवल इतना ही कह रहा हूं, जनरल," कुतूज़ोव मधुर, सजीली भावाभिव्यक्तिवाले ऐसे अन्दाज़ में बोल रहे थे जो धीरे-धीरे कहे जा रहे हर शब्द को सुनने के लिये विवश करता है। साफ़ दिखाई दे रहा था कि कुतूज़ोव को ख़ुद अपने शब्दों को सुनकर बड़ी ख़ुशी हो रही थी। "मैं तो केवल इतना ही कह रहा हूं, जनरल, कि अगर मामला मेरी ही इच्छा पर निर्भर होता तो महामहिम सम्राट फ़्रांसिस की चाह कभी की पूरी हो गयी होती। बहुत पहले ही मैं सर्वप्रमुख ड्यूक के साथ जा मिला होता। और क़सम खाकर आपको यह विश्वास

दिलाता हूं कि व्यक्तिगत रूप से मेरे लिये अपने से अधिक सूझ-बूझ और योग्यता रखनेवाले जनरल को – जिनकी आस्ट्रिया में कोई कमी नहीं है – अपनी सेनायें सौंप देना और अपने को सारी ज़िम्मेदारी से मुक्त कर लेना बड़ी ख़ुशी की बात होती। किन्तु परिस्थितियां हमसे अधिक बलवती होती हैं, जनरल।"

और कुतूज़ोव ऐसे ढंग से मुस्कराये मानो कह रहे हों: "आपको मेरी बात का विश्वास न करने का पूरा अधिकार है। इतना ही नहीं, मुझे तो इस चीज़ से भी कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि आप मेरी बात पर विश्वास करते हैं या नहीं। किन्तु आपके पास मुझसे ऐसा कहने का कोई कारण नहीं है। और यही मुख्य चीज़ है।"

आस्ट्रियायी जनरल के चेहरे पर खिन्नता झलक रही थी, मगर वह कुतूज़ोव को उनके ही अन्दाज़ में जवाब देने को मजबूर था।

"इसके विपरीत," आस्ट्रियायी जनरल ने बड़बड़ाहट और झल्लाहट के अन्दाज़ में कहा जो उसके प्रशंसा के उन शब्दों के साथ मेल नहीं खाता था जिन्हें वह कहने जा रहा था, "इसके विपरीत, हमारे साझे ध्येय के लिये आपकी भूमिका का सम्राट बहुत ऊंचा मूल्यांकन करते हैं। किन्तु हम यह समझते हैं कि इस समय की जा रही देर यशस्वी रूसी सेनाओं और उनके सेनापतियों को उस कीर्ति से वंचित कर रही है जो वे लड़ाइयों में प्राप्त करने के अभ्यस्त हो चुके हैं," उसने सम्भवतः पहले से तैयार किया हुआ वाक्य समाप्त किया।

अपनी मुस्कान को ज्यों का त्यों बनाये हुए कुतूज़ोव ने सिर झुकाया।

"परन्तु मुझे यह विश्वास है, और, महामहिम सर्वप्रमुख ड्यूक फ़र्डीनंड के अन्तिम पत्र के आधार पर, जो मुझे उनसे पाने का सम्मान प्राप्त हुआ है, मैं ऐसा मानता हूं कि जनरल माक जैसे कुशल सहायक के संचालन में आस्ट्रिया की सेनाओं ने निर्णायक विजय प्राप्त भी कर ली है और उन्हें अब हमारी सहायता की आवश्यकता नहीं रही," कुतूज़ोव ने उत्तर दिया।

जनरल के माथे पर बल पड़ गये। यद्यपि आस्ट्रिया की सेनाओं की पराजय का कोई निश्चित समाचार नहीं आया था, तथापि आम, बुरी अफ़वाहों की पुष्टि करनेवाली बहुत-सी परिस्थितियां थीं और इसलिये कुतूज़ोव का यह मानना कि आस्ट्रियायी फ़ौजों ने जीत भी हासिल कर ली है, मज़ाक़ उड़ाने के समान था। किन्तु कुतूज़ोव यह

ज़ाहिर करते हुए ज़रा मुस्कराये कि उन्हें ऐसा मानने का अधिकार प्राप्त है। वास्तव में ही माक की सेना से मिले अन्तिम पत्र में उन्हें विजय और रणनीतिक दृष्टि से बहुत ही अनुकूल स्थिति की सूचना दी गयी थी।

"मुझे यह ख़त दो," कुतूज़ोव ने प्रिंस अन्द्रेई से कहा। "लीजिये, सुनने की कृपा कीजिये," और कुतूज़ोव ने होंठों के सिरों पर व्यंग्यपूर्ण मुस्कान के साथ सर्वप्रमुख ड्यूक फ़र्डीनंड के पत्र का यह अंश जर्मन में पढ़ा :

"हमारे पास लगभग सत्तर हज़ार सैनिकों की पूरी तरह से संकेन्द्रित शक्ति है और अगर शत्रु लेह को पार करेगा तो हम उसपर आक्रमण करके उसे नष्ट कर सकते हैं। चूंकि हम उल्म पर क़ब्ज़ा कर भी चुके हैं, इसलिये डेन्यूब के दोनों तटों पर अपने आधिपत्य की अनुकूल स्थिति बनाये रख सकते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि अगर दुश्मन लेह को पार नहीं करेगा तो हम किसी भी क्षण डेन्यूब को लांघकर दुश्मन के संचार-मार्ग पर आक्रमण कर सकते हैं और कुछ नीचे जाकर डेन्यूब को लांघते हुए वापस आ सकते हैं और यदि शत्रु हमारे वफ़ादार साथियों पर अपनी सारी शक्ति केन्द्रित करने का इरादा बनायेगा तो हम उसके इस इरादे को पूरा नहीं होने देंगे। इस तरह हम बड़े उत्साह से उस समय की प्रतीक्षा करेंगे, जब सम्राट अलेक्सान्द्र की रूसी सेनायें पूरी तरह से तैयार हो जायेंगी और इसके बाद हमारे लिये मिलकर आसानी से दुश्मन का वह बुरा हाल करना सम्भव होगा जिसके वह लायक़ है।"

इस पैरे को पढ़ने के बाद कुतूज़ोव ने गहरी सांस ली और होफ़क्रीग्सराथ के सदस्य की ओर बहुत ध्यान से तथा स्नेहपूर्वक देखा।

"किन्तु, महामहिम, आप समझदारी का यह नियम तो जानते ही हैं कि हमें बुरी से बुरी बात के लिये तैयार रहना चाहिये," आस्ट्रियायी जनरल ने सम्भवतः यह चाहते हुए कहा कि अब मज़ाक़ों को ख़त्म करके काम की बात करनी चाहिये।

जनरल ने अप्रसन्नता से एडजुटेंट बोल्कोन्स्की की ओर देखा।

"माफ़ी चाहता हूं, जनरल," कुतूज़ोव ने उसे टोका और स्वयं भी प्रिंस अन्द्रेई की ओर मुड़ते हुए उससे कहा : "सुनो, भैया, तुम कोज़्लोव्स्की से हमारे गुप्तचरों द्वारा लायी गयी सारी सूचनायें ले लो।

ये दो पत्र काउंट नोसतीत्स के हैं, यह पत्र महामान्य सर्वप्रमुख ड्यूक फ़र्डीनंड का है और ये काग़ज़ात भी ले लो," कुछ और काग़ज़ प्रिंस अन्द्रेई को देते हुए उन्होंने कहा। "इन सभी के आधार पर फ़्रांसीसी भाषा में एक साफ़-सा 'memorandum' यानी नोट या रिपोर्ट बना लो जिससे आस्ट्रियायी सेनाओं की गति-विधियों के बारे में हमें प्राप्त सारी सूचनायें स्पष्ट हो जायें। ऐसा नोट तैयार हो जाने पर इन महा-महिम को दे देना।"

प्रिंस अन्द्रेई ने यह ज़ाहिर करते हुए सिर झुकाया कि कुतूज़ोव के पहले ही शब्दों से वह न केवल उस चीज़ को समझ गया जो उन्होंने कही, बल्कि उसे भी जो वह कहना चाहते थे। उसने सारे काग़ज़ लिये, दोनों को सिर झुकाया और क़ालीन पर दबे-दबे क़दम रखता हुआ बाहर चला गया।

यह सही है कि प्रिंस अन्द्रेई को रूस छोड़े हुए बहुत समय नहीं बीता था, फिर भी इतने अरसे में ही वह बहुत बदल गया था। उसके चेहरे के भाव, गति-विधियों और चाल-ढाल में पहलेवाला दिखावा, शिथिलता और सुस्ती की लगभग झलक तक बाक़ी नहीं रह गयी थी। अब वह ऐसा व्यक्ति लगता था जिसके पास यह सोचने की फ़ुरसत नहीं थी कि दूसरों पर उसका कैसा प्रभाव पड़ता है, बल्कि यह कि वह किसी रुचिकर और दिलचस्प काम में बड़ा व्यस्त है। उसका चेहरा अपने तथा अपने आस-पास के लोगों के प्रति अधिक सन्तोष प्रकट करता था, उसकी मुस्कान और दृष्टि अधिक प्रसन्नतापूर्ण तथा आकर्षक हो गयी थीं।

प्रिंस अन्द्रेई पोलैंड में ही कुतूज़ोव के पास पहुंच गया था। कुतूज़ोव स्नेहपूर्वक उससे मिले थे, उन्होंने यह वचन दिया था कि वह उसका ध्यान रखेंगे, दूसरे एडजुटेंटों की तुलना में उसे अधिक महत्त्व दिया, उसे अपने साथ वियना ले आये और वह उसे अधिक महत्त्वपूर्ण कार्यभार सौंपते थे। वियना से कुतूज़ोव ने अपने पुराने साथी, प्रिंस अन्द्रेई के पिता को यह लिखा:

"आपका बेटा अपने अध्ययन, दृढ़ता और कर्त्तव्यपरायणता से एक अत्यधिक अच्छा अफ़सर बनने की आशायें बंधवाता है। ऐसे मातहत को अपने निकट पाकर मैं अपने को सौभाग्यशाली अनुभव करता हूं।"

कुतूज़ोव के मुख्य सैनिक कार्यालय, अपने सहयोगी-साथियों और

कुल मिलाकर पूरी सेना में प्रिंस अन्द्रेई के बारे में एक-दूसरे के सर्वथा प्रतिकूल वैसे ही दो मत थे, जैसे कि पीटर्सबर्ग की ऊंची सोसाइटी में। कुछ लोग, जिनकी संख्या कम थी, प्रिंस अन्द्रेई को ख़ुद अपने तथा दूसरे सभी लोगों की तुलना में विशेष व्यक्ति मानते थे, यह आशायें करते थे कि वह बड़ी तरक़्क़ी करेगा, बड़े ध्यान से उसकी हर बात सुनते थे, उसकी प्रशंसा और नक़ल करते थे। ऐसे लोगों के साथ प्रिंस अन्द्रेई सीधे-सरल और मधुर ढंग से पेश आता था। दूसरे, जिनकी संख्या अधिक थी, उसे नहीं चाहते थे, उसे घमंडी, कठोर और अप्रिय व्यक्ति मानते थे। किन्तु प्रिंस अन्द्रेई ऐसे लोगों के साथ इस तरह से पेश आने का ढंग भी जानता था कि ये लोग उसका आदर करते थे, यहां तक कि उससे डरते भी थे।

कुतूज़ोव के कमरे से प्रवेश-कक्ष में आने पर प्रिंस अन्द्रेई सभी काग़ज़ लिये हुए इस वक़्त ड्यूटी बजा रहे अपने साथी, एडजुटेंट कोज़्लोव्स्की के पास गया जो खिड़की के नजदीक बैठा हुआ किताब पढ़ रहा था।

"तो कहो, प्रिंस, क्या मामला है?" कोज़्लोव्स्की ने जानना चाहा।

"यह नोट तैयार करने का हुक्म मिला है कि हमारी सेनायें क्यों आगे नहीं जा रही हैं।"

"लेकिन किसलिये?"

प्रिंस अन्द्रेई ने कंधे झटके।

"जनरल माक के बारे में कोई समाचार नहीं?" कोज़्लोव्स्की ने पूछा।

"नहीं।"

"अगर यह बात सच होती कि वह पराजित हो गया है तो उसके बारे में अब तक सम्भवतः कोई समाचार आ गया होता।"

"हां, सम्भवतः," प्रिंस अन्द्रेई ने कहा और बाहर जाने के लिये दरवाज़े की तरफ़ बढ़ा। किन्तु इसी समय फटाक से अपने पीछे दरवाजा बन्द करते हुए फ़्रॉक-कोट पहने, ऊंचे क़द का एक आस्ट्रियायी जनरल प्रवेश-कक्ष में दाख़िल हुआ। स्पष्ट था कि वह किसी दूसरी जगह से आया था, उसके सिर पर काली पट्टी बंधी थी और उसके कालर पर मरीया तेरेज़ा का पदक* लगा था। प्रिंस अन्द्रेई रुक गया।

---

* यह आस्ट्रिया का एक उच्चतम सैनिक पदक था। इसकी कई श्रेणियां थीं। – सं०

"प्रधान सेनापति कुतूज़ोव यहां हैं?" आगन्तुक जनरल ने कठोर ढंग से जर्मन शब्दों का उच्चारण करते हुए पूछा, दायें-बायें देखा और रुके बिना कुतूज़ोव के कमरे के दरवाज़े की तरफ़ बढ़ गया।

"प्रधान सेनापति व्यस्त हैं," कोज़्लोव्स्की ने जल्दी से अपरिचित जनरल की ओर बढ़ते तथा दरवाज़े का रास्ता रोकते हुए कहा। "क्या सूचना दूं आपके बारे में?"

अपरिचित जनरल ने मझोले क़द के कोज़्लोव्स्की को सिर से पांव तक ऐसे तिरस्कारपूर्वक देखा मानो हैरान हो रहा हो कि कोई उसे न जानता हो, यह कैसे सम्भव हो सकता है।

"प्रधान सेनापति व्यस्त हैं," कोज़्लोव्स्की ने शान्ति से दोहराया।

जनरल ने नाक-भौंह सिकोड़ी, उसके होंठ मुड़े और कांपे। उसने नोटबुक निकाली, पेंसिल से उसपर कुछ घसीटा, कोज़्लोव्स्की को दिया, तेज़ क़दमों से खिड़की के पास गया, धम से कुर्सी पर बैठ गया और कमरे में उपस्थित लोगों की तरफ़ ऐसे देखा मानो पूछ रहा हो कि वे किसलिये उसकी तरफ़ देख रहे हैं? इसके बाद जनरल ने सिर ऊपर उठाया, गर्दन आगे को बढ़ायी जैसे कि कुछ कहना चाहता हो, किन्तु उसी समय मानो लापरवाही से कुछ गुनगुनाते हुए उसने एक अजीब-सी आवाज निकाली जो अगले ही क्षण बन्द हो गयी। कमरे का दरवाज़ा खुला और दहलीज़ पर कुतूज़ोव नज़र आये। जनरल, जिसके सिर पर पट्टी बंधी थी, मानो किसी ख़तरे से बचता हुआ आगे को झुका और अपनी पतली-पतली टांगों से बड़े-बड़े और तेज़ क़दम बढ़ाता हुआ कुतूज़ोव के पास गया।

"आप बदक़िस्मत माक को अपने सामने देख रहे हैं," उसने टूटती आवाज़ में कहा।

कमरे के दरवाज़े के पास खड़े कुतूज़ोव कुछ क्षण के लिये बुत बने-से रह गये। इसके बाद उनके चेहरे पर तरंग की भांति एक सिहरन-सी हुई, माथे पर शान्ति का भाव आ गया, उन्होंने आदर से सिर झुकाया, आंखें मूंद लीं, चुपचाप माक को अपने पास से आगे जाने दिया और ख़ुद अपने पीछे दरवाज़ा बन्द कर लिया।

उल्म के नज़दीक आस्ट्रियायी फ़ौजों की हार और पूरी सेना के हथियार डाल देने की पहले से फैली हुई ख़बर ठीक निकली। आध घण्टे बाद एडजुटेंटों को यह आदेश पहुंचाने के लिये विभिन्न दिशाओं

में भेज दिया गया कि जल्द ही रूसी सेनाओं को, जो अभी तक निठल्ली बैठी रही थीं, दुश्मन का सामना करना पड़ेगा।

मुख्य सैनिक कार्यालय में प्रिंस अन्द्रेई उन इने-गिने अफ़सरों में से एक था जो मुख्य रूप से इस चीज़ में दिलचस्पी ले रहे थे कि युद्ध का ऊंट किस करवट बैठता है। माक को देखने और उसकी पराजय की तफ़सीलें सुनने के बाद वह समझ गया कि आधी लड़ाई तो हारी जा चुकी है। रूसी सेनाओं की सारी कठिनाइयां भी उसकी समझ में आ गयीं, उसने स्पष्ट रूप से यह अनुमान लगा लिया कि उनकी सेनाओं के लिये कैसी स्थिति पैदा होने की आशा की जा सकती है और उसे उसमें कौन-सी भूमिका अदा करनी पड़ेगी। अनचाहे ही उसने अभिमान से चूर आस्ट्रिया का सिर नीचा हो जाने और इसलिये भी उत्तेजनापूर्ण प्रसन्नता अनुभव की कि शायद एक हफ़्ते बाद सुवोरोव के ज़माने के बाद पहली बार फ़्रांसीसियों के विरुद्ध होनेवाली लड़ाइयों में हिस्सा लेना होगा। हां, वह बोनापार्ट की प्रतिभा से भयभीत था जो रूसी सेनाओं की सारी वीरता से अधिक शक्तिशाली सिद्ध हो सकती थी। किन्तु साथ ही वह यह भी नहीं चाहता था कि उसके हीरो यानी बोना-पार्ट का सिर झुके।

इन विचारों से उत्तेजित और झल्लाया हुआ प्रिंस अन्द्रेई अपने कमरे की ओर चल दिया ताकि पिता जी को ख़त लिखे। वह हर दिन ऐसा करता था। गलियारे में उसकी नेस्वीत्स्की, (जिसके साथ वह एक ही कमरे में रहता था) और मसख़रे जेरकोव से भेंट हो गयी। वे सदा की भांति किसी कारण हंस रहे थे।

"तुम ऐसे उदास क्यों हो?" नेस्वीत्स्की ने प्रिंस अन्द्रेई का पीला और चमकती आंखोंवाला चेहरा देखकर पूछा।

"ख़ुश होने की कोई बात नहीं है," प्रिंस अन्द्रेई बोल्कोन्स्की ने उत्तर दिया।

प्रिंस अन्द्रेई जिस समय नेस्वीत्स्की और जेरकोव से मिला, उसी समय रूसी सेनाओं की रसद की देख-भाल के लिये कुतूज़ोव के मुख्य सैनिक कार्यालय में नियुक्त आस्ट्रियायी जनरल श्त्राउख़ और होफ़क्री-ग्सराथ का सदस्य, एक अन्य जनरल, जो पिछली शाम को ही आया था, दालान के दूसरे सिरे से चले आ रहे थे। चौड़े दालान में काफ़ी जगह थी कि ये दोनों जनरल बड़ी आसानी से इन तीन रूसी अफ़सरों

के पास से गुज़र जायें। किन्तु जेरकोव ने नेस्वीत्स्की को हाथ से धकियाते हुए हांफती आवाज़ में कहा :

"वे आ रहे हैं!.. आ रहे हैं!.. एक तरफ़ को हो जाइये, उन्हें रास्ता दीजिये! कृपया रास्ता छोड़ दीजिये!"

दोनों जनरल ऐसा ज़ाहिर करते हुए चले आ रहे थे मानो वे सम्मान-प्रदर्शन की परेशान करनेवाली औपचारिकता से बचना चाहते हों। मसख़रे जेरकोव के चेहरे पर अचानक प्रसन्नता की, जिसे मानो वह दबा नहीं पा रहा था, मूर्खतापूर्ण मुस्कान खिल उठी।

"महामहिम जी," उसने आगे बढ़कर आस्ट्रियायी जनरल को जर्मन भाषा में सम्बोधित करते हुए कहा, "आपको बधाई देता हूं।"

उसने सिर झुकाया और नाच सीखनेवाले बालकों की तरह अटपटे ढंग से कभी एक तो कभी दूसरा पांव फ़र्श पर रगड़ने लगा।

उस जनरल ने, जो होफ़क्रीग्सराथ का सदस्य था, कड़ाई से जेरकोव की तरफ़ देखा, किन्तु मूर्खतापूर्ण मुस्कान में गम्भीरता की झलक मिलने पर वह क्षण भर को उसकी ओर ध्यान दिये बिना न रह सका। उसने यह प्रकट करते हुए आंखें सिकोड़ीं कि वह उसकी बात सुन रहा है।

"आपको बधाई देता हूं कि जनरल माक सही-सलामत लौट आये हैं। बस, यहीं ज़रा-सी खरोंच आयी है," खिली मुस्कान से अपने सिर की ओर संकेत करते हुए उसने कहा।

जनरल ने त्योरी चढ़ायी, मुंह फेरा और आगे बढ़ गया।

"हे भगवान, कैसा उल्लू है यह!" कुछ क़दम आगे जाकर उसने झल्लाहट से कहा।

नेस्वीत्स्की ने ठहाका लगाते हुए प्रिंस अन्द्रेई को बांहों में भर लिया। किन्तु प्रिंस अन्द्रेई ने, जिसका चेहरा पहले से भी अधिक पीला पड़ गया था और जिस पर क्रोध झलक उठा था, उसे परे धकेल दिया और जेरकोव को सम्बोधित किया। जनरल माक को देखने, उसकी पराजय का समाचार पाने और इस विचार के मस्तिष्क में आने से कि रूसी सेना को कैसी मुश्किल का सामना करना पड़ सकता है, उसके भीतर जो विह्वलतापूर्ण झल्लाहट पैदा हुई थी, वह अब जेरकोव के असंगत मज़ाक़ से क्रोध के रूप में बाहर आ गयी :

"जनाब, अगर आप **जोकर** बनना चाहते हैं," निचले जबड़े

के हल्के कम्पन के साथ वह तीखे स्वर में कह उठा, "तो मैं आपको ऐसा करने से मना नहीं कर सकता। किन्तु आपको चेतावनी देता हूं कि यदि आप मेरी उपस्थिति में फिर कभी ऐसा मसख़रापन दिखाने की **जुर्रत करेंगे** तो मैं आपको ढंग से व्यवहार करने का तरीक़ा सिखा दूंगा।"

प्रिंस अन्द्रेई के इस तरह फट पड़ने पर नेस्वीत्स्की और जेरकोव स्तम्भित और आंखें फाड़ फाड़कर उसे चुपचाप देखते रह गये।

"इसमें बुरी बात क्या है, मैंने तो सिर्फ़ बधाई दी थी," जेरकोव ने कहा।

"मैं आपके साथ मज़ाक़ नहीं कर रहा हूं, कृपया चुप रहिये!" प्रिंस अन्द्रेई बोल्कोन्स्की ने चिल्लाकर कहा और नेस्वीत्स्की का हाथ थामकर जेरकोव से, जिसे कोई जवाब नहीं सूझा था, आगे बढ़ चला।

"हटाओ भी, मेरे भाई," नेस्वीत्स्की ने उसे शान्त करते हुए कहा।

"हटाओ कैसे?" प्रिंस अन्द्रेई उत्तेजना से रुकते हुए कह उठा। "तुम इस बात को समझो कि या तो हम फ़ौजी अफ़सर हैं जो अपने ज़ार और देश की सेवा कर रहे हैं तथा साझे ध्येय की सफलता से प्रसन्न और असफलता से दुखी होते हैं या फिर भाड़े के टट्टू हैं जिन्हें अपने मालिकों की हालत से कोई सरोकार नहीं। चालीस हज़ार आदमी मारे गये, हमारा साथ देनेवाली सेना नष्ट हो गयी और ऐसी हालत में आप लोग मज़ाक़ भी कर सकते हैं," उसने फ़ांसीसी में कहा मानो फ़ांसीसी भाषा में कहे गये इस वाक्य से उसने अपने मत को अधिक प्रभावपूर्ण बना दिया हो। "इस महानुभाव जैसे किसी तुच्छ छोकरे के लिये, जिसे आपने अपना दोस्त बना लिया है, यह क्षम्य हो सकता है, मगर आपके लिये नहीं, आपके लिये नहीं। केवल **छोकरे** ही इस तरह से अपना जी खुश कर सकते हैं," प्रिंस अन्द्रेई ने यह देखकर कि जेरकोव के कानों तक अभी उसकी बात पहुंच सकती थी, छोकरे शब्द का फ़ांसीसी ढंग से उच्चारण करते हुए रूसी में उक्त वाक्य और कह दिया।

उसने कुछ क्षण इन्तज़ार किया कि जेरकोव उसे कोई जवाब देता है या नहीं। किन्तु जेरकोव मुड़ा और दालान से बाहर चला गया।

४

पाव्लोग्राद की हुस्सार रेजिमेंट ब्राउनाऊ से कोई दो मील दूर पड़ाव डाले थी। निकोलाई रोस्तोव जिस स्क्वाड्रन (घुड़सवार फ़ौजी दस्ता) में केडेट यानी सैनिक-छात्र था, वह ज़ालत्सेनेक नामक जर्मन गांव में ठहरा हुआ था। स्क्वाड्रन-कमांडर, घुड़सेना के कप्तान देनीसोव को, जो सारे डिवीज़न में वास्का देनीसोव के नाम से मशहूर था, इस गांव में रहने की सबसे अच्छी जगह दी गयी थी। केडेट रोस्तोव जब से पोलैंड पहुंचकर इस रेजिमेंट में शामिल हुआ था, स्क्वाड्रन-कमांडर देनीसोव के साथ ही रह रहा था।

आठ अक्तूबर को, जब जनरल माक की पराजय की ख़बर से मुख्य सैनिक कार्यालय में बड़ी दौड़-धूप शुरू हो गयी थी, स्क्वाड्रन में सैनिक जीवन पहले की तरह बहुत इतमीनान से चल रहा था। रात भर जुआ खेलने के बाद देनीसोव अभी तक घर नहीं लौटा था, जबकि रोस्तोव चारे की तलाश करके अभी, तड़के ही घोड़े पर वापस आया था। केडेट की वर्दी पहने हुए रोस्तोव अपने घोड़े को घर के दरवाज़े तक लाया, लगाम खींचकर उसे रोका, जवानी के अनुरूप लचीले ढंग से उसने अपनी टांग ज़ीन के ऊपर से नीचे की, कुछ क्षण तक रकाब में खड़ा रहा, मानो घोड़े से अलग न होना चाहता हो, आख़िर नीचे कूदा और उसने अर्दली को पुकारा।

"ओह, बोन्दारेन्को, मेरे दोस्त," उसने अपने घोड़े की तरफ़ तेज़ी से भागकर आनेवाले हुस्सार को सम्बोधित किया। "भैया, ज़रा इसे फिरा लाओ," उसने भाई जैसे उसी प्रसन्नतापूर्ण स्नेह से कहा जिससे अच्छे जवान लोग ख़ुशी के मूड में होने पर सभी को सम्बोधित करते हैं।

"जो हुक्म, हुज़ूर," उक्रइनी अर्दली ने प्रसन्नता से सिर झुकाते हुए जवाब दिया।

"देखो, अच्छी तरह से फिरा लाना!"

एक अन्य हुस्सार भी घोड़े की तरफ़ लपका, किन्तु बोन्दारेन्को पहले ही लगाम को घोड़े के सिर के ऊपर से फेंक चुका था। साफ़ ज़ाहिर था कि केडेट रोस्तोव वोद्का के लिये अच्छी बख़्शीश देता था और अर्दली के लिये उसकी कोई भी सेवा करना लाभदायक था।

रोस्तोव ने घोड़े की गर्दन, फिर पुट्ठा थपथपाया और कुछ क्षण को ओसारे में खड़ा रहा।

"बहुत बढ़िया! बहुत ही शानदार घोड़ा निकलेगा यह!" उसने अपने आपसे कहा, तलवार सम्भाली और अपनी एड़ियां बजाता हुआ ड्योढ़ी में भाग गया। जर्सी और नुकीली टोपी पहने तथा हाथ में पंचांगुर लिये जिससे वह लीद साफ़ कर रहा था, जर्मन मकान-मालिक ने मवेशीख़ाने से बाहर नज़र दौड़ायी। रोस्तोव को देखते ही उसकी बाछें खिल गयीं। वह ख़ुशी से मुस्कराया और आंख मिचकाकर "शुभ प्रभात, शुभ प्रभात!" कह उठा। उसने इस अभिवादन को कई बार दोहराया और सम्भवतः उसे इस नौजवान का अभिवादन करते हुए ख़ुशी महसूस हो रही थी।

"काम में भी जुट गये," रोस्तोव ने भाई जैसी उसी प्रसन्नतापूर्ण मुस्कान के साथ कहा जो उसके खिले हुए चेहरे पर लगातार बनी हुई थी। "आस्ट्रियावासी ज़िन्दाबाद! रूसी ज़िन्दाबाद! सम्राट अले-क्सान्द्र ज़िन्दाबाद!" उसने जर्मन मकान-मालिक द्वारा अक्सर कहे जानेवाले शब्दों को दोहराया।

जर्मन हंस पड़ा, मवेशीख़ाने से बाहर आ गया, उसने अपनी नुकीली टोपी उतार ली और उसे सिर के ऊपर लहराते हुए चिल्लाया:

"सारी दुनिया ज़िन्दाबाद!"

रोस्तोव ने भी जर्मन की भांति अपनी छज्जेदार टोपी सिर के ऊपर लहरायी और हंसते हुए चिल्ला उठा: "सारी दुनिया ज़िन्दा-बाद!" यद्यपि मवेशीख़ाने को साफ़ कर रहे जर्मन और सुबह-सुबह चारे की तलाश में सैनिक दल के साथ घोड़े पर चक्कर लगाकर लौटने-वाले रोस्तोव के लिये भी विशेष ख़ुशी की कोई बात नहीं थी, तथापि इन दोनों व्यक्तियों ने उल्लासपूर्वक तथा बन्धु जैसे स्नेह से एक-दूसरे की ओर देखा, पारस्परिक प्यार के प्रतीक के रूप में सिर हिलाये और मुस्कराकर अलग हो गये – जर्मन मवेशीख़ाने में चला गया और रोस्तोव उस घर में जहां वह देनीसोव के साथ रहता था।

"तुम्हारे साहब कहां हैं?" उसने देनीसोव के अर्दली लाव्रूश्का से पूछा जो सारी रेजिमेंट में बदमाश आदमी के रूप में मशहूर था।

"पिछली रात से घर नहीं आये। ज़रूर पैसे हार गये होंगे," लाव्रूश्का ने उत्तर दिया। "मैं यह अच्छी तरह से जानता हूं कि जब

जीत जाते हैं तो अपनी डींग हांकते हुए तड़के ही घर लौट आते हैं और अगर सुबह तक घर नहीं आये तो यही मतलब है कि पैसे हार गये। झल्लाये हुए लौटेंगे। आपके लिये कॉफ़ी ले आऊं?"

"हां, ले आओ, ले आओ।"

लाव्रूश्का दस मिनट बाद कॉफ़ी लाया।

"साहब आ रहे हैं!" उसने कहा। "अब मुसीबत समझिये।"

रोस्तोव ने खिड़की से बाहर झांका और देनीसोव को घर लौटते देखा। देनीसोव लाल चेहरे, चमकती काली आंखों और अस्त-व्यस्त काली मूंछों तथा काले बालोंवाला नाटा आदमी था। वह हुस्सारों की जाकेट (जिसके बटन खुले हुए थे), चौड़ी बिरजस पहने था और उसके सिर पर मुचड़ी-मुचड़ायी टोपी थी। वह उदास और सिर झुकाये हुए ओसारे के नज़दीक पहुंच रहा था।

"लाव्रूश्का," वह 'र' वर्ण का अशुद्ध उच्चारण करते हुए ऊंची और ग़ुस्से से भारी आवाज़ में चिल्ला उठा। "अरे, मुझे नीचे उतार, उल्लू!"

"मैं तो ख़ुद ही ऐसा कर रहा हूं," लाव्रूश्का ने जवाब दिया।

"ओह! तुम जाग गये," देनीसोव ने कमरे में दाख़िल होते हुए कहा।

"कभी का," रोस्तोव ने जवाब दिया, "मैं तो चारे के लिये चक्कर भी लगा आया और कुमारी माटील्डा से भी मेरी भेंट हो गयी।"

"भई वाह! और भैया मेरे, मैं, कुत्ते का पिल्ला, तो कल बुरी तरह पैसे हारता रहा!" देनीसोव चिल्ला उठा। "ओह, कैसी बदक़िस्म-ती थी! कैसी बदक़िस्मती!.. जैसे ही तुम गये, वैसे ही यह सिलसिला शुरू हो गया। अरे, चाय लाओ!"

देनीसोव ने मानो मुस्कराते और अपने छोटे-छोटे मज़बूत दांत दिखाते हुए चेहरे पर बल डाले और छोटी-छोटी उंगलियोंवाले अपने दोनों हाथों से जंगल की तरह फूले-फूले अपने घने, काले बालों को इधर-उधर बिखराने लगा।

"शैतान ही खींच ले गया मुझे उस चूहे (एक अफ़सर का उप-नाम) के पास," दोनों हाथों से माथे और चेहरे को मलते हुए उसने कहा। "तुम कल्पना करो, उसने मुझे एक भी, एक भी ढंग का पत्ता नहीं दिया।"

देनीसोव़ ने अर्दली द्वारा दिया जानेवाला सुलगा हुआ पाइप ले लिया, उसे मुट्ठी में दबाये रखा, चिंगारियां बिखराते हुए फ़र्श पर ठकठकाया और ऊंचे-ऊंचे कहता गया:

"एक पत्ता देता, दो पीट लेता, एक पत्ता देता, दो पीट लेता।"

उसने जलता तम्बाकू बिखरा दिया, पाइप को तोड़ा और फेंक दिया। इसके बाद कुछ देर चुप रहा और फिर अचानक अपनी चमकती, काली आंखों से प्रसन्नतापूर्वक रोस्तोव की ओर देखा।

"और कुछ नहीं तो औरतें ही होतीं। वरना यहां पीने के सिवा करने को कुछ भी नहीं। अच्छा हो कि जल्दी से लड़ाई में ही भेज दिया जाये हमें..."

"अरे, वहां कौन है?" उसने दरवाज़े के पास महमेज़ों की झनक-वाले भारी बूटों की आवाज़ के रुकने और किसी के आदरपूर्वक खांसने की आवाज़ सुनकर पुकारते हुए पूछा।

"क्वाटर मास्टर!" लाव्रूश्का ने जवाब दिया।

देनीसोव के माथे पर और अधिक बल पड़ गये।

"बड़ा बेहूदा मामला है," उसने बटुआ फेंकते हुए कहा जिसमें सोने के कुछ सिक्के थे। "रोस्तोव, मेरे दोस्त, ज़रा गिन लेना कि कितने पैसे बाक़ी रह गये हैं और बटुए को तकिये के नीचे रख देना," उसने कहा और क्वाटर मास्टर से मिलने के लिये कमरे से बाहर चला गया।

रोस्तोव ने पैसे ले लिये और यन्त्रवत पुराने और नये सिक्कों की बराबर ढेरियां बनाते हुए उन्हें गिनने लगा।

"ओह, तेल्यानिन! क्या हालचाल है! मुझे तो कल लूट लिया गया," दूसरे कमरे से देनीसोव की आवाज़ सुनायी दी।

"किसके यहां? बीकोव, चूहे के यहां?.. मुझे इसका पता चला था," दूसरी, पतली आवाज़ सुनायी दी और इसके साथ ही इस घुड़सवार कम्पनी के नाटे क़द के अफ़सर लेफ़्टिनेंट तेल्यानिन ने कमरे में प्रवेश किया।

रोस्तोव ने बटुआ तकिये के नीचे रख दिया और अपनी ओर बढ़े हुए छोटे-से नम हाथ से हाथ मिलाया। तेल्यानिन का कूच के पहले किसी कारणवश गार्ड-सेना से इस रेजिमेंट में तबादला कर दिया गया था। रेजिमेंट में उसका आचार-व्यवहार बहुत अच्छा था, किन्तु उसे

कोई भी पसन्द नहीं करता था। इस अफ़सर के प्रति अपनी अकारण घृणा पर रोस्तोव तो ख़ास तौर से न तो क़ाबू पा सकता था और न ही उसे छिपा पाता था।

"कहिये, नौजवान घुड़सवार, मेरा मुश्की आपको कैसा लग रहा है?" (मुश्की सवारी का वह घोड़ा था जो तेल्यानिन ने रोस्तोव को बेचा था।)

लेफ़्टिनेंट तेल्यानिन कभी भी उस आदमी से नज़र नहीं मिलाता था जिससे बात करता होता। उसकी नज़रें लगातार कभी एक तो कभी दूसरी चीज़ की ओर भटकती रहतीं।

"मैंने आज आपको सवारी करते देखा था ..."

"सब ठीक है, अच्छा घोड़ा है," रोस्तोव ने जवाब दिया। वैसे तो सात सौ रूबल में ख़रीदा गया यह घोड़ा इससे आधी क़ीमत का भी नहीं था। "अगली बायीं टांग पर कुछ लंगड़ाने लगा है ..." उसने इतना और कह दिया ...

"मतलब यह कि सुम फट गया! यह तो मामूली बात है। मैं आपको सिखा दूंगा, यह समझा दूंगा कि वहां कौन-सी रिवेट लगानी चाहिये।"

"हां, कृपया समझा दीजिये," रोस्तोव ने कहा।

"समझा दूंगा, ज़रूर समझा दूंगा, यह कोई राज़ नहीं है। और घोड़े के लिये आप मुझे धन्यवाद देंगे।"

"तो मैं घोड़े को लाने के लिये कह देता हूं," रोस्तोव ने तेल्यानिन से पिंड छुड़ाने के लिये कहा और घोड़े को लाने का आदेश देने को बाहर चला गया।

ड्योढ़ी में देनीसोव मुंह में पाइप दबाये हुए रिपोर्ट पेश कर रहे क्वाटर मास्टर के सामने दहलीज़ पर उकड़ूं बैठा था। रोस्तोव को देखकर देनीसोव ने त्योरी चढ़ायी और कंधे के ऊपर से उस कमरे की तरफ़, जिसमें तेल्यानिन बैठा था, अंगूठे से इशारा करते हुए नाक-भौंह सिकोड़ी और वितृष्णा से सिहरा।

"ओह, यह आदमी मुझे बिल्कुल अच्छा नहीं लगता," उसने क्वाटर मास्टर की उपस्थिति की भी परवाह न करते हुए कहा।

रोस्तोव ने मानो यह कहते हुए कंधे झटके: "मुझे भी अच्छा नहीं लगता, लेकिन क्या किया जाये!" और घोड़े को लाने का आदेश

देकर तेल्यानिन के पास लौट आया।

तेल्यानिन उसी ढीली-ढाली मुद्रा में, जिसमें रोस्तोव उसे छोड़ गया था, बैठा था और अपने छोटे-छोटे गोरे हाथों को मल रहा था।

"ऐसे घृणित लोग भी तो होते हैं," कमरे में दाखिल होते हुए रोस्तोव ने सोचा।

"तो कह दिया घोड़ा लाने को?" तेल्यानिन ने उठते और लापरवाही से इधर-उधर देखते हुए कहा।

"हां, कह दिया।"

"तो आइये, हम भी चलें। मैं तो देनीसोव से कल के आदेश के बारे में ही पूछने आया था। देनीसोव, पहुंच गया आपके पास वह आदेश?"

"अभी तक नहीं। आप कहां चल दिये?"

"इस नौजवान को यह समझाना चाहता हूं कि घोड़े की नाल कैसे ठीक की जाये," तेल्यानिन ने उत्तर दिया।

ये दोनों ओसारा लांघकर अस्तबल में गये। लेफ़्टिनेंट तेल्यानिन ने रोस्तोव को यह दिखाया कि रिवेट कैसे लगानी चाहिये और इसके बाद अपने घर चला गया।

रोस्तोव जब लौटा तो मेज़ पर वोद्का की बोतल और सासेजें रखी थीं। देनीसोव मेज़ के सामने बैठा हुआ क़लम को घसीट-घसीटकर कुछ लिख रहा था। उसने उदासी से रोस्तोव की ओर देखा।

"उस सुन्दरी को ख़त लिख रहा हूं," उसने कहा।

हाथ में क़लम पकड़े हुए उसने मेज़ पर कोहनियां टिका दीं और सम्भवतः इस बात से ख़ुश होते हुए कि उसे वह सब जल्दी से शब्दों में कह देने की सम्भावना मिली है, जो पत्र में लिखने जा रहा था, उसने रोस्तोव को पत्र का आशय बताया।

"बात यह है, मेरे दोस्त," वह बोला। "जब तक हम किसी को प्यार नहीं करने लगते, मानो सोते रहते हैं। हम मिट्टी की सन्तानें हैं... लेकिन जैसे ही प्यार करने लगते हैं – भगवान बन जाते हैं, जन्म लेने के दिन की भांति पवित्र-पावन हो जाते हैं... यह अब और कौन आ गया? भगा दो उसे! मुझे फ़ुरसत नहीं है!" उसने चिल्लाकर लाव्रूश्का से कहा जो ज़रा भी घबराये बिना उसके पास आ गया था।

"कौन आयेगा? आपने ख़ुद ही तो उससे आने को कहा था।

क्वाटर मास्टर पैसों के लिये आया है।"

देनीसोव के माथे पर बल पड़ गये, उसने चिल्लाकर कुछ कहना चाहा, मगर चुप्पी लगा गया।

"बड़ी मुसीबत है," उसने अपने आपसे कहा। "कितने पैसे बाक़ी हैं बटुए में?" उसने रोस्तोव से पूछा।

"सात नये और तीन पुराने रूबल।"

"ओह, बड़ी मुसीबत है! अरे, खड़े-खड़े मुंह क्या ताक रहे हो, मिट्टी के माधो! भेज दो क्वाटर मास्टर को!" देनीसोव लाव्रूश्का पर चिल्ला उठा।

"देनीसोव, कृपया तुम मुझसे कुछ पैसे ले लो। मेरे पास तो बहुत हैं," रोस्तोव ने घबराहट से लाल होते हुए कहा।

"अपने लोगों से क़र्ज़ लेना मुझे पसन्द नहीं, बिल्कुल पसन्द नहीं," देनीसोव बुदबुदाया।

"अगर यार-दोस्त के नाते तुम मुझसे पैसे नहीं लोगे तो मैं बुरा मान जाऊंगा। सच कहता हूं कि मेरे पास तो बहुत पैसे हैं," रोस्तोव ने दोहराया।

"कह तो दिया कि तुमसे नहीं लूंगा।"

और देनीसोव तकिये के नीचे से बटुआ लेने के लिये पलंग के पास गया।

"रोस्तोव, तुमने कहां रखा था बटुआ?"

"निचले तकिये के नीचे।"

"वहां तो नहीं है।"

देनीसोव ने दोनों तकिये फ़र्श पर फेंक दिये। बटुआ नहीं मिला।

"यह भी कमाल हो गया!"

"ज़रा रुको, तुमने कहीं गिरा तो नहीं दिया?" एक-एक तकिये को उठाते और उसे ज़ोर से झाड़ते हुए उसने कहा।

रोस्तोव ने कम्बल उठाकर उसे भी झाड़ा। मगर बटुआ नहीं मिला।

"मैं उसे कहीं और रखकर भूल तो नहीं गया? नहीं, मैंने तो यह भी सोचा था कि तुम बटुए को ख़ज़ाने की तरह सिर के नीचे ही रखते हो," रोस्तोव ने कहा। "मैंने बटुआ यहीं रखा था। कहां गया वह?" उसने लाव्रूश्का से पूछा।

"मैं तो कमरे में आया ही नहीं। आपने जहां रखा था, वहीं होना चाहिये।"

"यहां तो नहीं है।"

"आप हमेशा ऐसा ही करते हैं, चीज़ को कहीं इधर-उधर फेंक देते हैं और भूल जाते हैं। जेबों में तो देखिये।"

"नहीं, अगर मैंने ख़ज़ानेवाली बात न सोची होती तो शायद कहीं और रख दिया होता," रोस्तोव ने कहा, "लेकिन अब तो मुझे अच्छी तरह से याद है कि मैंने उसे तकिये के नीचे ही रखा था।"

लाव्रूश्का ने बिस्तर को उलटा-पलटा, पलंग और मेज़ के नीचे देखा, सारे कमरे को छान मारा और फिर कमरे के बीचोंबीच खड़ा हो गया। देनीसोव चुपचाप लाव्रूश्का की गति-विधियों को देखता रहा और जब उसने यह कहते हुए कि बटुआ कहीं नहीं है, हैरानी से हाथ झटके तो उसने रोस्तोव की तरफ़ देखा।

"रोस्तोव, तुम कहीं स्कूली छोकरों जैसी मज़ाकिया हरकत तो नहीं कर रहे..."

रोस्तोव ने अपने चेहरे पर देनीसोव की दृष्टि को अनुभव किया, नज़रें ऊपर उठायीं और उसी क्षण झुका लीं। उसका सारा ख़ून जो गले के नीचे कहीं रुका हुआ था, तेज़ी से चेहरे और आंखों की ओर दौड़ने लगा। उसके लिये सांस लेना मुश्किल हो गया।

"कमरे में तो लेफ़्टिनेंट और आपके सिवा कोई और था ही नहीं! बटुए को यहीं कहीं होना चाहिये," लाव्रूश्का ने कहा।

"अरे तुम, शैतान की दुम, ज़रा हिलो-डुलो, बटुए को ढूंढ़ो," देनीसोव अचानक गुस्से से लाल होते और धमकाने की मुद्रा में अर्दली की ओर झपटते हुए चिल्लाया। "बटुआ ढूंढ़ दो वरना तुम्हारी चमड़ी उधेड़ दूंगा। सभी की चमड़ी उधेड़ दूंगा!"

देनीसोव से नज़र न मिलाते हुए रोस्तोव अपनी जाकेट के बटन बन्द करने लगा, उसने अपनी तलवार लटका ली और टोपी पहन ली।

"मैं तुमसे कह रहा हूं कि बटुआ अभी मिल जाना चाहिये," अर्दली को कंधों से झंझोड़ते और उसे दीवार से टकराते हुए देनीसोव चिल्लाया।

"देनीसोव, इसे तंग नहीं करो। मैं जानता हूं कि बटुआ किसने

लिया है," रोस्तोव ने दरवाज़े के पास जाते और नज़र ऊपर न उठाते हुए कहा।

देनीसोव रुक गया, उसने कुछ सोचा और सम्भवत: यह समझते हुए कि रोस्तोव किसकी ओर इशारा कर रहा है, उसका हाथ पकड़ लिया।

"यह बेतुकी बात है!" वह ऐसे चिल्ला उठा कि उसकी गर्दन तथा माथे की नसें रस्सी की भांति उभर आयीं। "मैं तुमसे कह रहा हूं कि तुम्हारा दिमाग़ चल निकला है, मैं तुम्हें ऐसा नहीं करने दूंगा। बटुआ यहीं है, मैं इस कमीने की चमड़ी उधेड़ डालूंगा और वह यहीं मिल जायेगा।"

"मैं जानता हूं कि किसने उठाया है बटुआ," रोस्तोव ने कांपती आवाज़ में दोहराया और दरवाज़े की तरफ़ बढ़ गया।

"और मैं तुमसे कह रहा हूं कि तुम ऐसा करने की जुर्रत नहीं करो," देनीसोव केडेट रोस्तोव को रोकने के लिये उसकी तरफ़ लपकते हुए चिल्लाया।

किन्तु रोस्तोव ने ऐसे गुस्से से अपना हाथ छुड़ा लिया मानो देनीसोव उसका सबसे बड़ा दुश्मन हो और उसके चेहरे पर बिल्कुल सीधी तथा दृढ़ता से अपनी नज़र जमा दी।

"तुम जो कुछ कह रहे हो, उसका मतलब तो समझते हो?" रोस्तोव ने कांपती आवाज़ में कहा, "मेरे सिवा कमरे में और कोई नहीं था। इसलिये अगर उसने नहीं तो मैं..."

वह वाक्य पूरा नहीं कर पाया और कमरे से बाहर भाग गया।

"ओह, जहन्नुम में जाओ तुम और बाक़ी सब भी," रोस्तोव को देनीसोव के यही अन्तिम शब्द सुनायी दिये।

रोस्तोव तेल्यानिन के घर पहुंचा।

"साहब घर पर नहीं हैं, मुख्य सैनिक कार्यालय गये हैं," तेल्यानिन के अर्दली ने उसे बताया। "क्या कोई ख़ास बात हो गयी है?" केडेट रोस्तोव का उत्तेजित चेहरा देखकर अर्दली ने हैरान होते हुए पूछा।

"नहीं, कोई ख़ास बात नहीं।"

"बस, अभी-अभी गये हैं।"

मुख्य सैनिक कार्यालय ज़ालत्सेनेक गांव से तीन किलोमीटर से

कुछ अधिक दूर था। रोस्तोव घर नहीं लौटा और घोड़े पर सवार होकर मुख्य सैनिक कार्यालय की ओर चल दिया। मुख्य सैनिक कार्यालय-वाले गांव में एक शराबख़ाना था जहां फ़ौजी अफ़सर अक्सर जाते रहते थे। रोस्तोव वहां पहुंचा और दरवाज़े पर उसे तेल्यानिन का घोड़ा दिखायी दिया।

लेफ़्टिनेंट तेल्यानिन शराबख़ाने के दूसरे कमरे में सासेज की प्लेट और शराब की बोतल अपने सामने रखे खा-पी रहा था।

"अरे, आप भी यहां आ गये, नौजवान," तेल्यानिन ने मुस्कराते और भौंहें चढ़ाते हुए कहा।

"हां," रोस्तोव ने ऐसे जवाब दिया मानो यह शब्द कहने के लिये उसे बड़ी कोशिश करनी पड़ी हो और वह पासवाली दूसरी मेज़ पर बैठ गया।

दोनों चुप हो गये। कमरे में दो जर्मन और एक रूसी अफ़सर बैठा था। सभी ख़ामोश थे और प्लेट पर छुरी चलाने और लेफ़्टिनेंट के सासेज चबाने की आवाज़ सुनायी दे रही थी। नाश्ता ख़त्म करने के बाद तेल्यानिन ने जेब से दोहरा बटुआ निकाला और अपनी छोटी-छोटी गोरी उंगलियों को ऊपर से मोड़कर उसने बटुए के छल्ले हटाकर उसे खोला, सोने का एक सिक्का निकाला और भौंहें ऊपर चढ़ाते हुए उसे बैरे को दे दिया।

"कृपया जल्दी से बाक़ी पैसे ले आओ," उसने बैरे से कहा।

सोने का सिक्का नया था। रोस्तोव अपनी जगह से उठकर तेल्यानिन के पास गया।

"ज़रा अपना बटुआ तो मुझे देखने दीजिये," उसने बहुत ही धीमी, मुश्किल से सुनायी देनेवाली आवाज़ में कहा।

तेल्यानिन ने जल्दी-जल्दी इधर-उधर देखती नज़रों से, किन्तु अभी तक ऊपर को चढ़ी हुई भौंहों को वैसे ही रखते हुए, बटुआ उसे दे दिया।

"हां, अच्छा बटुआ है... हां, अच्छा है..." उसने कहा और अचानक उसके चेहरे का रंग उड़ गया। "देख लीजिये, नौजवान," उसने इतना और कह दिया।

रोस्तोव ने बटुआ हाथ में ले लिया और उसे देखा, उसमें पड़े सिक्कों पर भी नज़र डाली और फिर तेल्यानिन की तरफ़ देखा। लेफ़्टिनेंट

अपनी आदत के मुताबिक़ इधर-उधर नज़र घुमा रहा था और ऐसे लगा कि वह अचानक बड़े रंग में आ गया था।

"जब हम वियना जायेंगे तो ये सभी पैसे मैं वहां उड़ा आऊंगा, मगर इन गन्दे-मन्दे क़स्बों में कहां ख़र्च करूं इन्हें," उसने कहा। "तो लाओ, दे दो मेरा बटुआ, नौजवान, मैं चल दिया।"

रोस्तोव चुप रहा।

"आप भी यहां क्या कुछ खाने-पीने आये हैं? कुछ बुरा नहीं है यहां का खाना," तेल्यानिन कहता गया। "अब दे भी दीजिये मेरा बटुआ।"

उसने हाथ बढ़ाकर बटुआ पकड़ लिया। रोस्तोव ने बटुआ उसे दे दिया। बटुआ लेकर तेल्यानिन उसे अपनी बिरजिस की जेब में डालने लगा, उसकी भौंहें लापरवाही से ऊपर चढ़ गयीं और मुंह ज़रा खुल गया मानो कह रहा हो: "हां, हां, डाल रहा हूं बटुए को मैं अपनी जेब में, बड़ी सीधी-सादी बात है यह और किसी को कोई मतलब नहीं इससे।"

"तो नौजवान?" उसने आह भरकर और चढ़ी भौंहों के नीचे से रोस्तोव की आंखों में देखते हुए कहा। क्षण भर में ही बिजली की तेज़ी से एक कौंध तेल्यानिन की आंखों से रोस्तोव की आंखों की ओर गयी तथा वापस लौटी, फिर से उधर गयी और वापस लौटी।

"इधर आइये," रोस्तोव ने तेल्यानिन का हाथ पकड़ते हुए कहा। वह उसे खिड़की के पास लगभग खींच ही ले गया। "ये पैसे देनीसोव के हैं और आपने ले लिये हैं..." वह तेल्यानिन के कान में फुसफुसाया।

"क्या?.. क्या?.. कैसे आप ऐसी बात कहने की हिम्मत कर रहे हैं? क्या?.." तेल्यानिन कह उठा।

मगर उसके ये शब्द व्यथापूर्ण, हताशा की चीख़ और क्षमा की याचना कर रहे थे। रोस्तोव ने जैसे ही उसकी आवाज़ में इस ध्वनि को अनुभव किया, उसके मन से सन्देह का भारी बोझ हट गया। उसे ख़ुशी हुई, मगर साथ ही अपने सामने खड़े बदक़िस्मत आदमी के लिये अफ़सोस भी हुआ। किन्तु इस शुरू किये हुए मामले को एक किनारे करना तो ज़रूरी था।

"यहां बैठे लोग न जाने क्या कुछ सोचेंगे," तेल्यानिन अपनी टोपी उठाकर एक छोटे-से ख़ाली कमरे की तरफ़ बढ़ते हुए बुदबुदाया,

“मामले को साफ़ कर लेना चाहिये...”

“मैं यह अच्छी तरह से जानता हूं और साबित कर दूंगा,” रोस्तोव ने कहा।

“मैं...”

तेल्यानिन के सहमे, पीले पड़ गये चेहरे की हर मांसपेशी कांपने लगी। उसकी आंखें अभी भी तेज़ी से इधर-उधर घूम रही थीं, मगर रोस्तोव के चेहरे तक ऊपर नहीं उठती थीं। उसके सिसकने की आवाज़ सुनायी दी।

“काउंट!.. मुझ जवान आदमी की ज़िन्दगी बरबाद नहीं कीजिये... ले लीजिये ये क़िस्मत के मारे पैसे...” उसने उन्हें मेज़ पर फेंक दिया। “मेरा बूढ़ा बाप है, मां है!”

तेल्यानिन से नज़र न मिलाते हुए रोस्तोव ने पैसे ले लिये और कुछ भी कहे बिना कमरे से बाहर चल दिया। मगर वह दरवाज़े के पास रुका और लौटा।

“हे भगवान,” उसने आंसू बहाते हुए कहा। “आपने यह किया कैसे?”

“काउंट,” रोस्तोव के पास आते हुए तेल्यानिन गिड़गड़ाया।

“मुझे छुओ नहीं,” उसे अपने से दूर हटाते हुए रोस्तोव कह उठा। “अगर आपको ज़रूरत है तो ले लीजिये ये पैसे।” वह बटुआ उसके सामने फेंककर शराबखाने से बाहर भाग गया।

५

इसी दिन की शाम को देनीसोव के घर पर स्कवाड्रन के अफ़सरों के बीच जोशीली बातचीत हो रही थी।

“और रोस्तोव, मैं आपसे यह कहता हूं कि आपको रेजिमेंट-कमांडर से माफ़ी मांगनी चाहिये,” लम्बे क़द के पके बालों, बड़ी-बड़ी मूंछों, मोटे-मोटे नाक-नक़्शेवाले स्टॉफ़-कप्तान ने, जिसके चेहरे पर झुर्रियों का हल-सा चला हुआ था, उत्तेजना से सुर्ख़ हो रहे रोस्तोव को सम्बोधित करते हुए कहा।

स्टॉफ़-कप्तान कीर्स्तेन को मान-मर्यादा के मामले को लेकर लड़ाई-झगड़ा करने के कारण दो बार अफ़सर से साधारण सैनिक बनाया जा चुका था और दोनों बार उसने फिर से अपना पद प्राप्त कर लिया था।

"मैं किसी को भी यह कहने की छूट नहीं दूंगा कि मैं झूठ बोलता हूं।" रोस्तोव चिल्ला उठा। "उसने मुझसे कहा कि मैं झूठा हूं और मैंने जवाब दिया कि वह झूठा है। बस, क़िस्सा ख़त्म। वह हर दिन मेरी ड्यूटी लगा सकता है, गिरफ़्तार करवा सकता है, मगर माफ़ी मांगने के लिये मुझे कोई भी मजबूर नहीं कर सकता। अगर वह रेजिमेंट-कमांडर होने के कारण द्वन्द्व-युद्ध के लिये मेरी चुनौती स्वीकार करना अपनी शान के ख़िलाफ़ समझता है तो..."

"लेकिन, भैया, आप ज़रा रुकें तो, मेरी बात तो सुनें," स्टॉफ़-कप्तान ने बड़े इतमीनान से अपनी लम्बी-लम्बी मूंछों पर हाथ फेरते हुए भारी-भरकम आवाज़ में उसे टोका। "आपने दूसरे अफ़सरों के सामने रेजिमेंट-कमांडर से यह कहा कि फ़लां अफ़सर ने चोरी की थी..."

"अगर बातचीत दूसरे अफ़सरों के सामने हुई तो इसमें मेरा कोई क़ुसूर नहीं। शायद उनके सामने यह नहीं कहना चाहिये था, लेकिन मैं तो कूटनीतिज्ञ नहीं हूं। मैंने सोचा था कि हुस्सारों की रेजिमेंट में ऐसी बारीकियों की ज़रूरत नहीं पड़ेगी, इसीलिये इसमें आया था और वह मुझसे कहता है कि मैं झूठा हूं... तो ठीक है वह करे मेरे साथ द्वन्द्व-युद्ध..."

"यह सब कहने की क्या ज़रूरत है, कोई भी ऐसा नहीं समझता कि आप कायर हैं। बात यह नहीं। आप देनीसोव से पूछिये कि भला कहीं ऐसा भी होता है कि केडेट रेजिमेंट-कमांडर से द्वन्द्व-युद्ध की मांग करे?"

देनीसोव उदास-सी सूरत बनाये और अपनी मूंछों को चबाते हुए यह बातचीत सुन रहा था। सम्भवतः वह इसमें हिस्सा नहीं लेना चाहता था। स्टॉफ़-कप्तान के प्रश्न के उत्तर में उसने इन्कार करते हुए सिर हिला दिया।

"आपने दूसरे अफ़सरों के सामने रेजिमेंट-कमांडर से ऐसी भद्दी बात कही," स्टॉफ़-कप्तान कहता गया। "बोगदानिच (रेजिमेंट-कमांडर का यही नाम था) ने आपसे चुप रहने को कहा।"

"चुप रहने को नहीं, बल्कि यह कहा कि मैं झूठ बोलता हूं।"

"ख़ैर, ऐसा ही सही, और आपने उससे बहुत-सी उलटी-सीधी बातें कह दीं। इसलिये आपको माफ़ी मांगनी चाहिये।"

"मैं किसी हालत में भी ऐसा नहीं करूंगा!" रोस्तोव चिल्ला उठा।

"मुझे आपसे ऐसी आशा नहीं थी," स्टॉफ़-कप्तान ने गम्भीरता और कड़ाई से कहा। "आप माफ़ी नहीं मांगना चाहते, लेकिन भैया, आप रेजिमेंट-कमांडर के सामने ही नहीं, बल्कि पूरी रेजिमेंट के सामने, हम सभी के सामने कुसूरवार हैं। भला कैसे? तो सुनिये, अगर आप कुछ सोच-विचार करते, सलाह-मशविरा लेते कि किस तरह इस मामले से निपटा जाये तो बात दूसरी होती। मगर आपने तो सीधे-सीधे, और वह भी दूसरे अफ़सरों के सामने सब कुछ कह दिया। रेजिमेंट-कमांडर अब क्या करे? इस अफ़सर को फ़ौजी अदालत के सामने पेश कर दे और सारी रेजिमेंट पर कलंक लगवा दे? एक कमीने के कारण सारी रेजिमेंट का सिर नीचा करवा दे? आपके मुताबिक़ तो यही सूरत बनती है। लेकिन हम ऐसा नहीं मानते। शाबाश है बोगदानिच को कि उसने आपसे यह कहा कि आप झूठ बोल रहे हैं। आपको अच्छा नहीं लग रहा, मगर भैया, आपने ख़ुद इस मुसीबत को बुलाया है। और अब, जब मामले को दबाने की कोशिश की जा रही है तो आप किसी बेतुकी अकड़ के कारण माफ़ी नहीं मांगना चाहते, सब कुछ बताना चाहते हैं। आपको तो यह बुरा लग रहा है कि आपसे फ़ालतू ड्यूटी ली जा रही है, मगर आप ईमानदार तथा बहादुर और बूढ़े कर्नल से माफ़ी नहीं मांगना चाहते। बोगदानिच भला कैसा भी क्यों न हो, मगर ईमानदार, बूढ़ा और बहादुर कर्नल है। आपको यह सब बुरा लग रहा है। लेकिन सारी रेजिमेंट के नाम पर बट्टा लगाते हुए आपको बुरा नहीं लग रहा।" स्टॉफ़-कप्तान की आवाज़ कांपने लगी।

"भैया, आपको रेजिमेंट में आये अभी दिन ही कितने हुए हैं। आप आज यहां हैं और कल किसी बड़े अफ़सर के एडजुटेंट बन जायेंगे। आपकी बला से कि लोग रेजिमेंट के बारे में क्या कहेंगे, कि पाव्लो-ग्राद की रेजिमेंट के अफ़सरों में चोर हैं! लेकिन हमारे लिये तो ऐसी बात नहीं है। क्यों, ठीक है न, देनीसोव? हम तो उदासीन नहीं रह सकते न?"

देनीसोव अभी तक मौन साधे था, हिलता-डुलता भी नहीं था,

सिर्फ़ कभी-कभी अपनी चमकती, काली आंखों से रोस्तोव की तरफ़ देख लेता था।

"आपको अपनी अकड़ प्यारी है, आप माफ़ी नहीं मांगना चाहते," स्टॉफ़-कप्तान ने अपनी बात जारी रखी, "लेकिन हम बूढ़ों को, जो इसी रेजिमेंट में बड़े हुए, अगर भगवान ने चाहा तो इसी रेजिमेंट में मरना भी होगा। इसलिये हमें रेजिमेंट की इज़्ज़त बहुत प्यारी है और बोगदानिच यह जानता है। ओह, कितनी प्यारी है, भैया, हमें हमारी रेजिमेंट की इज़्ज़त! आप जो कर रहे हैं, वह अच्छा नहीं है, अच्छा नहीं है! आप भला मानें या बुरा, मगर मैं तो हमेशा सच बात ही कहता हूं। यह अच्छा नहीं है!"

और स्टॉफ़-कप्तान उठा तथा उसने रोस्तोव की ओर से मुंह दूसरी ओर कर लिया।

"यह बिल्कुल सच है, बुरा हो शैतान का!" देनीसोव उछलकर खड़ा होता हुआ चिल्ला पड़ा। "तो अब बोलो, रोस्तोव, तुम क्या बोलते हो!"

रोस्तोव के चेहरे पर एक रंग आता था, एक रंग जाता था और वह कभी एक तो कभी दूसरे अफ़सर की तरफ़ देखता रहा।

"नहीं, महानुभावो, नहीं... आप लोग ऐसा नहीं सोचें... मैं सब कुछ बहुत अच्छी तरह से समझता हूं, आप लोग व्यर्थ ही मेरे बारे में ऐसा सोचते हैं... मैं... मेरे लिये... रेजिमेंट की इज़्ज़त के लिये... आप क्या समझते हैं? मैं इसे लड़ाई के मैदान में साबित कर दूंगा, और मेरे लिये झण्डे की इज़्ज़त... लेकिन ख़ैर, मैं सचमुच क़ुसूरवार हूं!.." और उसकी आंखें छलछला आयीं। "मैं क़ुसूरवार हूं, सभी के सामने क़ुसूरवार हूं!.. अब और क्या चाहते हैं आप?.."

"यह हुई समझदारी की बात, काउंट," स्टॉफ़-कप्तान उसकी ओर मुड़ते और अपने बड़े-से हाथ से उसका कंधा थपथपाते हुए चिल्ला उठा।

"मैं तुमसे कहता हूं कि यह बहुत ही भला आदमी है," देनीसोव चिल्लाया।

"यह कहीं ज़्यादा समझदारी की बात है, काउंट," स्टॉफ़-कप्तान ने रोस्तोव के क़ुसूर मान लेने पर उसे काउंट की उपाधि से सम्बोधित करते हुए अपना प्रशंसात्मक वाक्य दोहराया। "महामहिम जी, जाइये, जाकर माफ़ी मांग लीजिये, जाइये।"

"महानुभावो, मैं सब कुछ करूंगा, इस बारे में मेरे मुंह से कोई एक शब्द भी नहीं सुन पायेगा," रोस्तोव ने गिड़गिड़ाते हुए कहा, "लेकिन माफ़ी मैं नहीं मांगूंगा, क़सम भगवान की, आप जो भी कहें, यह मैं नहीं कर सकता! कैसे मैं भला बच्चे की तरह माफ़ी मांगने जा सकता हूं?"

देनीसोव खिलखिलाकर हंस पड़ा।

"यह तो आप ही के लिये बुरा होगा। बोगदानिच दिल में मैल रखनेवाला आदमी है। आपको अपनी इस ज़िद्द के लिये नुक़सान उठाना पड़ेगा," कीर्स्तेन ने कहा।

"क़सम खाकर कहता हूं कि यह ज़िद्द नहीं है! मैं आपको बता नहीं सकता कि मैं क्या महसूस कर रहा हूं, नहीं बता सकता..."

"ख़ैर, आप जैसा चाहें, वैसा करें," स्टॉफ़-कप्तान ने कहा। "वह कमीना कहां ग़ायब हो गया?" उसने देनीसोव से पूछा।

"उसने अपने को बीमार बताया है। कल उसे रेजिमेंट से निकालने का अर्डर दिया जा रहा है," देनीसोव ने कहा।

"यह तो सचमुच बीमारी ही है, इसका कोई दूसरा स्पष्टीकरण नहीं हो सकता," स्टॉफ़-कप्तान ने राय ज़ाहिर की।

"बीमारी हो या कुछ और, लेकिन यही अच्छा होगा कि वह मेरे सामने न आये – मैं उसकी जान ले लूंगा!" देनीसोव ख़ून के प्यासे आदमी की तरह चिल्ला उठा।

इसी समय जेरकोव कमरे में दाख़िल हुआ।

"तुम यहां कैसे आ धमके?" सभी अफ़सरों ने एकसाथ उससे पूछा।

"कूच का वक़्त आ गया, महानुभावो। जनरल माक और उसकी सारी फ़ौज ने हथियार डाल दिये।"

"बेपर की उड़ा रहे हो!"

"मैंने अपनी आंखों से देखा है।"

"क्या देखा है? ज़िन्दा माक को? हाड़-मांस के माक को?"

"कूच! कूच! ऐसी ख़बर लाने के लिये तो तुम्हें शराब की बोतल पिलानी चाहिये। लेकिन तुम्हारा यहां आना कैसे हुआ?"

"उस कमबख़्त माक के कारण मुझे फिर से रेजिमेंट में वापस भेज दिया गया है। एक आस्ट्रियायी जनरल ने मेरे ख़िलाफ़ शिकायत

कर दी। मैंने उसे माक के लौट आने पर बधाई दी थी... तुम्हें क्या हुआ है, रोस्तोव? तुम तो जैसे अभी-अभी गर्म हम्माम से बाहर आये हो!"

"भैया, हमारे यहां दो दिन से एक ऐसा ही झंझट चल रहा है।"

रेजिमेंट का एडजुटेंट भीतर आया और उसने जेरकोव द्वारा लाये गये समाचार की पुष्टि की। अगले दिन कूच का डंका बजाने का आदेश दिया गया था।

"कूच, महानुभावो!"

"शुक्र है भगवान का, बहुत दिन हाथ पर हाथ धरे बैठे रहे!"

६

अपनी सेना के साथ कुतूज़ोव ब्राउनाऊ शहर की इन्न नदी और लिन्ज़े नगर की त्राउन नदी के पुलों को तबाह करके वियना की तरफ़ पीछे हट गये। २३ अक्तूबर को रूसी फ़ौजें एन्स नदी को पार कर रही थीं। सामान से लदी रूसी घोड़ा-गाड़ियां, तोप-गाड़ियां और फ़ौजें दोपहर के वक़्त पुल के दोनों ओर से एन्स नगर में से गुज़र रही थीं।

गुनगुना और बरखा-बूंदीवाला पतझर का दिन था। पुल की रक्षा कर रही रूसी तोपें जिस ऊंचाई पर तैनात थीं, वहां से सामने का जो विस्तृत दृश्य उभरता था, वह कभी तो तिरछी वर्षा-धाराओं के पारदर्शी परदे से सिकुड़ जाता और कभी अचानक फैल जाता तथा धूप में दूर की सभी चीज़ें ऐसे साफ़ दिखायी देने लगतीं मानो उनपर वार्निश कर दी गयी हो। नीचे दामन में लाल छतोंवाले सफ़ेद मकान, बड़ा गिरजाघर और एक पुल नज़र आ रहा था जिसके दोनों ओर से रूसी फ़ौजों की भीड़ आगे बढ़ रही थी। डेन्यूब नदी के मोड़ पर जहाज़, द्वीप और पार्क सहित दुर्ग दिखायी दे रहा था जिसके गिर्द डेन्यूब और उसमें यहां आ मिलनेवाली एन्स नदियां बह रही थीं। हरे-भरे शिखर और नीली आभावाले खड्डों की रहस्यपूर्ण दूरी का सनोबर के वनों से ढका हुआ डेन्यूब का बायां, चट्टानी तट भी दिख रहा था। सनोबर के अछूते, निर्जन प्रतीत होनेवाले वन के पीछे मठ की मीनारें और एन्स के दूसरी

ओर, दूरी पर दुश्मन के घुड़सवार नज़र आ रहे थे।

ऊंचाई पर तैनात तोपों के बीच चण्डावल का जनरल अपने अमले के अफ़सर के साथ खड़ा था और दूरबीन में से इर्द-गिर्द के सारे क्षेत्र का जायज़ा ले रहा था। पीछे, कुछ दूर, तोप के सिरे पर नेस्वीत्स्की बैठा था जिसे प्रधान सेनापति ने चण्डावल में भेजा था। नेस्वीत्स्की के साथ आनेवाले कज़्ज़ाक ने उसे थैला और बोतल पकड़ा दी थी और नेस्वीत्स्की अफ़सरों को कचौड़ियां खिला तथा असली डोपेलक्यूमेल शराब पिला रहा था। ख़ुश अफ़सर उसे घेरे हुए थे, कुछ घुटनों के बल और कुछ गीली घास पर तुर्कों के ढंग से पालथी मारकर बैठे हुए थे।

"आस्ट्रिया का वह प्रिंस उल्लू नहीं था जिसने यहां यह दुर्ग बनवाया। बहुत ही प्यारी जगह है यह। आप खा क्यों नहीं रहे, महानुभावो?" नेस्वीत्स्की ने पूछा।

"बहुत, बहुत धन्यवाद, प्रिंस," एक अफ़सर ने जवाब दिया जिसे मुख्य सैनिक कार्यालय के इतने महत्त्वपूर्ण अधिकारी से बात करते हुए ख़ुशी हो रही थी। "हां, बड़ी प्यारी जगह है। हम लोग पार्क के पास से गुज़रे, हमने वहां दो हिरन देखे और फिर वह महल भी कितना ख़ूबसूरत है!"

"देखिये, प्रिंस," दूसरे अफ़सर ने कहा जो एक और कचौड़ी लेने को बेहद इच्छुक था, मगर जो ऐसा करते हुए झिझक रहा था और इसलिये इर्द-गिर्द के क्षेत्र को देखने का ढोंग कर रहा था, "देखिये तो, हमारे पैदल फ़ौजी तो वहां जा भी पहुंचे। देखिये, वे गांव के पीछे, वहां चरागाह में हमारे तीन फ़ौजी कुछ घसीटे लिये जा रहे हैं। वे इस महल को लूट लेंगे," उसने फ़ौजियों के इस काम का स्पष्ट अनुमोदन करते हुए कहा।

"सो तो है ही, सो तो है ही," नेस्वीत्स्की ने कहा। "जानते हैं, मैं क्या चाहूंगा," उसने अपने लाल और नम मुंह में कचौड़ी चबाते हुए इतना और कह दिया, "मैं तो वहां जाना चाहूंगा।"

उसने पहाड़ी पर नज़र आ रहे मीनारोंवाले मठ की ओर संकेत किया। वह मुस्कराया, उसकी आंखें सिकुड़ गयीं और उनमें चमक आ गयी।

"मज़ा आ जाये, महानुभावो!"

अफ़सर खिलखिलाकर हंस पड़े।

"उन साधुनियों को थोड़ा डरा ही दिया जाये। सुनने में आया है कि वहां जवान इतालवी साधुनियां भी हैं। सच कहता हूं कि ऐसा कर पाने के लिये मैं अपनी ज़िन्दगी के पांच साल क़ुर्बान कर देता!"

"वे भी तो ऊब रही होंगी," कुछ अधिक साहसी अफ़सर ने हंसते हुए कहा।

इसी बीच आगे खड़े हुए अमले के अफ़सर ने जनरल को इशारे से कुछ दिखाया। जनरल ने दूरबीन में से उधर देखा।

"ऐसा ही है, ऐसा ही है," जनरल ने दूरबीन नीचे करते और कंधे झटकते हुए गुस्से से कहा। "ऐसा ही है, दुश्मन उतारे पर गोलाबारी करने लगेगा। हमारे लोग वहां देर क्यों कर रहे हैं?"

दुश्मन और उसका तोपख़ाना दूरबीन के बिना ही नदी के दूसरी ओर नज़र आ रहे थे। तोपख़ाने से सफ़ेद, दूधिया धुआं निकला, उसके साथ ही दूरी पर गोले का धमाका हुआ और यह दिखायी दिया कि कैसे हमारी फ़ौजें उतारे पर उतावली करने लगी हैं।

नेस्वीत्स्की गहरा निःश्वास छोड़ते हुए उठा और मुस्कराता हुआ जनरल के पास गया।

"हुज़ूर, आप कुछ खाना पसन्द नहीं करेंगे?" उसने पूछा।

"यह अच्छी बात नहीं है," जनरल ने नेस्वीत्स्की के सवाल का जवाब न देते हुए कहा, "देर कर दी हमारे लोगों ने।"

"मैं घोड़ा दौड़ाकर वहां जाऊं, हुज़ूर?" नेस्वीत्स्की ने पूछा।

"हां, कृपया जाइये," जनरल ने कहा और फिर से वह दोहरा दिया जो विस्तारपूर्वक पहले कहा जा चुका था, "और हुस्सारों से कह दीजिये कि वे सबसे बाद में पुल पार करें और, जैसे कि मैं आदेश दे चुका हूं, पुल को जला दें तथा पुल को आग लगाने के काम आनेवाली चीज़ों की जांच कर लें।"

"अच्छी बात है," नेस्वीत्स्की ने जवाब दिया।

उसने कज़्ज़ाक को घोड़ा लाने के लिये पुकारा, थैले और बोतल को समेटने का आदेश दिया तथा अपनी भारी-भरकम देह के बावजूद फुर्ती से घोड़े पर सवार हो गया।

"सच, उन जवान साधुनियों से मिलकर आऊंगा," उसने मुस्कराते हुए अपनी ओर देखनेवाले अफ़सरों से कहा और बल खाती

पगडंडी से घोड़े को नीचे बढ़ा ले चला।

"तो कप्तान, ज़रा देखें कि तोप कहां तक मार करती है!" जनरल ने तोपख़ाने के अफ़सर को सम्बोधित करते हुए कहा। "ज़रा अपनी ऊब मिटा लीजिये।"

"सभी तोपची ड्यूटी पर!" कप्तान का आदेश सुनायी दिया और क्षण भर बाद ख़ुशी से उमगते हुए तोपची अलावों के पास से इधर भाग आये और तोपों में गोले भरने लगे।

"पहली तोप दागी जाये!" आदेश सुनायी दिया।

पहली तोप ज़ोर से पीछे को हटी। कानों के परदे फाड़ता ज़ोरदार धमाका हुआ और एक सनसनाता गोला पहाड़ी के नीचे जमा हमारी सारी सेनाओं के सिरों के ऊपर से गुज़रा, किन्तु वह दुश्मन तक नहीं पहुंचा और हल्के धुएं से अपने गिरने की जगह दिखाता हुआ नीचे गिरकर फट गया।

इस धमाके के साथ सैनिकों और अफ़सरों के चेहरे खिल उठे। सभी उठकर खड़े हो गये और बड़ी दिलचस्पी से पहाड़ी के नीचे हमारी सेनाओं तथा निकट आते शत्रु की गति-विधियों को देखने लगे जो हाथ की पांच उंगलियों की भांति बिल्कुल साफ़ दिखायी दे रही थीं। इसी क्षण सूरज बादलों से बिल्कुल बाहर आ गया और तोप के गोले के इस एकमात्र धमाके की प्यारी आवाज़ और तेज़ सूरज की चमक एक प्रफुल्ल तथा उल्लासपूर्ण प्रभाव के रूप में घुलमिल गयीं।

७

दुश्मन के दो गोले पुल के ऊपर से गुज़र भी चुके थे और इसलिये पुल पर बड़ी रेल-पेल हो रही थी। इस भीड़-भड़क्के में प्रिंस नेस्वीत्स्की को घोड़े से उतरना पड़ा और वह अपने भारी-भरकम शरीर को जंगले के साथ सटाने के लिये विवश होकर पुल के मध्य में खड़ा हो गया था। वह हंसता हुआ मुड़कर अपने कज़्ज़ाक को देख रहा था जो दो घोड़ों की लगामें थामे हुए उससे कुछ क़दम पीछे खड़ा था। प्रिंस नेस्वी-त्स्की ने जैसे ही आगे बढ़ना चाहा, वैसे ही फ़ौजियों तथा घोड़ा-गाड़ियों

ने उसे धकेला और जंगले के साथ सट जाने को मजबूर कर दिया और उसके लिये मुस्कराने के सिवा कोई चारा न रहा।

"अरे ओ, भाई!" कज़्ज़ाक ने घोड़ा-गाड़ी ले जा रहे और पैदल फ़ौजियों को अपनी घोड़ा-गाड़ी के पहियों तथा घोड़ों के सुमों के नीचे दबा रहे एक फ़ौजी से कहा, "अरे ओ! थोड़ा रुक क्यों नहीं जाते – देखते नहीं हो कि जनरल साहब को रास्ता चाहिये!"

किन्तु घोड़ा-गाड़ी ले जा रहे सैनिक ने जनरल की दुहाई की ओर भी कोई ध्यान नहीं दिया और अपना रास्ता रोकनेवाले फ़ौजियों से पुकारकर कहा:

"अरे, भाइयो! बायें रहो, ज़रा रुक जाओ!"

किन्तु "भाई" कंधों से कंधे सटाये, संगीनों को आपस में फंसाये और उन्हें अलग किये बिना घिचपिच भीड़ के रूप में पुल पर से गुज़र रहे थे। जंगले से नीचे, नदी की ओर देखने पर प्रिंस नेस्वीत्स्की को एन्स नदी की तेज़, शोर मचाती और नीची-नीची लहरें दिखायी दीं जो आपस में घुलती-मिलती, पुल के स्तम्भों के पास भंवर बनाती और फेन उगलती हुई एक-दूसरी से आगे बढ़ने की होड़ कर रही थीं। पुल की ओर देखने पर भी उसे जीवित सैनिकों की एक ही ढंग की इसी तरह की जीवित लहरें, स्कन्धिकायें, ऊंची फ़ौजी टोपियां, फ़ौजी थैले, संगीनें, लम्बी बन्दूक़ें और टोपियों के नीचे उत्साहहीन तथा क्लान्ति का भाव लिये चौड़े जबड़ों तथा धंसे गालोंवाले चेहरे और चिपचिपे कीचड़ से पुते पुल के तख़्तों पर बढ़े जा रहे पांव दिखायी दिये। सैनिकों की एक ही ढंग की इन लहरों में कभी-कभी लबादा ओढ़े और सैनिकों से भिन्न कोई अफ़सर अपनी सूरत की वैसे ही झलक दिखा देता जैसे एन्स की लहरों में श्वेत फेन के बुलबुले। कभी-कभी नदी में चक्कर काट रही छिपटी की भांति कोई पैदल हुस्सार, अर्दली या नागरिक फ़ौजियों की बाढ़ द्वारा पुल पर तेज़ी से आगे धकेल दिया जाता। कभी-कभी नदी में बह रहे कुन्दे की भांति सभी ओर से सैनिकों से घिरी ऊपर तक भरी और चमड़े से ढकी किसी कम्पनी या अफ़सर की घोड़ा-गाड़ी पुल पर से गुज़र जाती।

"देखो तो, जैसे कोई बांध टूट गया हो," आगे बढ़ पाने की कोई आशा न करते हुए कज़्ज़ाक ने कहा। "क्या अभी बहुत हैं तुम्हारे लोग?"

"एक कम दस लाख!" फटा फ़ौजी कोट पहने हुए पास से गुज़रने-

वाले एक ख़ुशमिज़ाज फ़ौजी ने जवाब दिया और भीड़ में ग़ायब हो गया। उसके पीछे-पीछे एक अन्य, बूढ़ा फ़ौजी बढ़ा आ रहा था।

"जैसे ही **वह**", (**वह** का मतलब दुश्मन था), "पुल-पर ही भूनना शुरू करेगा," अपने साथी को सम्बोधित करते हुए बूढ़े सैनिक ने कहा, "वैसे ही तुम अपनी गुद्दी खुजाना भी भूल जाओगे।"

और वह आगे निकल गया। उसके पीछे एक अन्य सैनिक घोड़ा-गाड़ी पर जा रहा था।

"मालूम नहीं कि कमबख़्त ने पैरों पर लपेटने की पट्टियां कहां घुसेड़ दीं?" घोड़ा-गाड़ी के पीछे-पीछे भागते और चीज़ों को उलट-पलटकर देखते हुए अर्दली ने कहा।

और यह अर्दली भी घोड़ा-गाड़ी के साथ-साथ आगे चला गया।

इसके बाद ख़ुशी के रंग में और सम्भवत: पिये हुए फ़ौजी सामने आये।

"वह प्यारा आदमी, जैसे ही इसके दांतों पर बन्दूक़ का दस्ता मारता..." एक फ़ौजी जो अपने बड़े फ़ौजी कोट को ऊपर चढ़ाये था और हाथ को ख़ूब लहरा रहा था, बड़ी ख़ुशी से यह बता रहा था।

"हां, हां, ख़ूब बढ़िया हैम था वह तो," दूसरे ने ठहाका लगाते हुए जवाब दिया।

और ये भी आगे निकल गये तथा नेस्वीत्स्की यह नहीं जान पाया कि किसके दांतों पर दस्ता मारा गया और हैम का किस चीज़ से सम्बन्ध था।

"ओह, कैसे उतावली कर रहे हैं ये लोग! **उसने** तो सिर्फ़ आवाज़ी गोला ही फेंका और ये समझते हैं कि इन सबकी जान चली जायेगी," सार्जेंट ने खीझते हुए और तिरस्कारपूर्वक कहा।

"चाचा, जैसे ही वह गोला पास से गुज़रा," मुश्किल से अपनी हंसी रोक पाते हुए बड़े मुंहवाला एक सैनिक कह रहा था, "मेरा तो दम निकल गया। क़सम भगवान की, मैं तो बहुत ही डर गया, मैंने सोचा कि बस, अब काम तमाम हुआ!" इस सैनिक ने ऐसे कहा मानो अपने डर जाने की डींग मार रहा हो।

और यह भी आगे निकल गया। इसके बाद एक ऐसी घोड़ा-गाड़ी सामने आयी जो अभी तक आनेवाली सभी घोड़ा-गाड़ियों से भिन्न थी। यह जर्मन ढंग की लम्बी, दो घोड़ोंवाली गाड़ी थी जिसपर मानो

पूरा घर ही लदा हुआ था। इस घोड़ा-गाड़ी के पीछे, जिसे एक जर्मन हांके ले जा रहा था, एक बहुत ही सुन्दर, चितकबरी और बड़े-बड़े थनोंवाली गाय बंधी हुई थी। रोयोंवाले गद्दों पर गोद का बच्चा लिये हुए एक औरत, एक बुढ़िया तथा लाल-सुर्ख़ गालोंवाली एक तगड़ी युवती बैठी थी। स्पष्ट था कि विशेष अनुमति से इन विस्थापितों को पुल पर से जाने दिया जा रहा था। सभी सैनिकों की नज़रें इन नारियों पर जम गयी थीं और जब तक यह घोड़ा-गाड़ी धीरे-धीरे आगे बढ़ती गयी, सैनिकों की सारी टीका-टिप्पणियां इन्हीं दो औरतों से सम्बन्धित रहीं। सभी के चेहरों पर इस नारी के बारे में अश्लील विचारों की लगभग एक-जैसी मुस्कान थी।

"देखो तो, जर्मन सासेज* भी जा रही है!"

"हमें बेच दो अपनी बीवी," दूसरे फ़ौजी ने अन्तिम अक्षरांश पर ज़ोर देते और जर्मन को सम्बोधित करते हुए कहा, जो आंखें झुकाये, झल्लाया और डरा-सा तथा बड़े-बड़े क़दम बढ़ाता हुआ आगे चला जा रहा था।

"देखो तो कैसे सजी-धजी है! शैतान की नानियां!"

"फ़ेदोतोव, अगर तुम्हें इनके साथ भेज दिया जाये तो मज़ा आ जाये!"

"हटाओ भी, इनमें कौन-सी ख़ास बात है, मेरे भाई!"

"आप लोग कहां जा रहे हैं?" पैदल फ़ौज के एक अफ़सर ने, जो सेब खा रहा था, ज़रा मुस्कराते और सुन्दर जर्मन लड़की को घूरते हुए पूछा।

आंखें मूंदे हुए जर्मन ऐसे ज़ाहिर कर रहा था कि वह कुछ भी नहीं समझ रहा है।

"चाहती हो तो ले लो," अफ़सर लड़की की तरफ़ सेब बढ़ाते हुए बोला।

लड़की मुस्करायी और उसने सेब ले लिया। पुल पर उपस्थित सभी लोगों की भांति नेस्वीत्स्की की नज़रें भी तब तक इन औरतों पर जमी रहीं, जब तक वे पुल के पार नहीं चली गयीं। इनके जाने के

---

* क्रान्तिपूर्व रूस में किसान और दस्तकार जर्मनों को तिरस्कारपूर्वक "सासेज" कहते थे। – सं०

बाद फिर से पहले जैसी बातें करते हुए पहले जैसे सैनिक गुज़रने लगे और आख़िर सभी रुक गये। जैसा कि अक्सर होता है, पुल को लांघते हुए किसी फ़ौजी कम्पनी की सामान ले जानेवाली घोड़ा-गाड़ी के घोड़े अड़ गये और सारी भीड़ रुकने के लिये मजबूर हो गयी।

"रुक किसलिये गये? कोई व्यवस्था ही नहीं है।" सैनिक कह रहे थे। "अबे, तू किधर बढ़ा जा रहा है? शैतान कहीं का! थोड़ा रुक जाने में क्या मुसीबत है। **उसके** पुल जला देने से भी बुरा हाल होगा। देखो तो, अफ़सर को भी रास्ता नहीं मिल रहा," रुकी हुई भीड़ के लोग मुड़-मुड़कर एक-दूसरे को देखते हुए विभिन्न दिशाओं से बोल रहे थे और साथ ही आगे बढ़ने के लिये दूसरों को धकिया रहे थे।

नीचे, एन्स नदी के पानी की ओर देखने पर नेस्वीत्स्की को अचानक तेज़ी से निकट आती हुई एक नयी आवाज़ सुनायी दी... कोई बड़ी-सी चीज़ छपाके से पानी में गिरी।

"देखो तो **उसने** कहां फेंका है!" आवाज़ की ओर घूमते हुए निकट खड़े सैनिक ने कड़ाई से कहा।

"हमारा हौसला बढ़ा रहा है ताकि हम जल्दी से पुल पार कर लें," दूसरे सैनिक ने बेचैनी से राय ज़ाहिर की।

भीड़ फिर से आगे बढ़ चली। नेस्वीत्स्की समझ गया कि यह तोप का गोला था।

"ऐ कज़्ज़ाक, घोड़ा इधर लाओ!" उसने कहा। "अरे, तुम लोग एक तरफ़ को हट जाओ! हट जाओ! रास्ता दो!"

नेस्वीत्स्की बड़ी मुश्किल से घोड़े तक पहुंचा। लगातार चीख़ते-चिल्लाते हुए वह आगे बढ़ा। उसे रास्ता देने के लिये फ़ौजी एक-दूसरे के साथ सट गये, लेकिन उन्होंने फिर से उसे ऐसे भींचा कि उसका पांव उनके बीच दब गया। इसके लिये उसके पासवाले सैनिक दोषी नहीं थे क्योंकि उन्हें और भी ज़्यादा ज़ोर से भींचा जा रहा था।

"नेस्वीत्स्की! नेस्वीत्स्की! अरे, कमबख़्त!" इसी वक़्त पीछे से खरखरी-सी आवाज़ सुनायी दी।

नेस्वीत्स्की ने मुड़कर देखा और पैदल फ़ौजियों की हिलती-डुलती जीवित भीड़ में अपने से पन्द्रह क़दमों की दूरी पर उसे लाल चेहरे, अस्त-व्यस्त, काले बालोंवाला वास्का (वसीली) देनीसोव दिखायी

दिया जिसकी फ़ौजी टोपी गुद्दी पर खिसकी हुई थी और जो हुस्सारों की जाकेट को बड़े बांकपन से कंधे पर डाले था।

"तुम कहो इन शैतानों से, इन भूतों से कि रास्ता दें," देनीसोव ने शायद ग़ुस्से के दौरे में कोयले की तरह काली आंखों को, जिनमें लाल डोरे थे, चमकाते और इधर-उधर घुमाते तथा चेहरे की ही तरह लाल छोटे-से नंगे हाथ में म्यान में बन्द तलवार को हिलाते हुए चिल्लाकर कहा।

"अरे, वास्या!" नेस्वीत्स्की ने ख़ुश होते हुए जवाब दिया। "तुम्हें क्या परेशानी है?"

"मेरा स्क्वाड्रन पुल पार नहीं कर पा रहा," ग़ुस्से से अपने सफ़ेद दांत दिखाते और सुन्दर, मुश्की बेदुईन घोड़े को एड़ लगाते हुए वास्का देनीसोव चिल्लाया। उसका घोड़ा अपने सामने आनेवाली संगीनों के कारण कनौतियां बदलता था, नथुने फरफराता था, लगाम के दहाने को खनखनाता हुआ अपने इर्द-गिर्द झाग गिराता था, पुल के तख़्तों पर सुम पटकता था और ऐसे लगता था कि अगर उसका सवार उसे इजाज़त दे दे तो वह पुल के जंगले के बीच से नीचे कूदने को तैयार है।

"यह क्या है? भेड़ों की तरह! बिल्कुल भेड़ों की तरह! एक तरफ़ हट जा... रास्ता दे!.. अरे, वहीं रुक जा, ओ घोड़ा-गाड़ी ले जानेवाले, शैतान! तलवार से टुकड़े कर डालूंगा!" वास्तव में ही म्यान से नंगी तलवार निकालकर उसे घुमाते हुए वह चिल्लाया।

सैनिक डरकर एक-दूसरे के साथ सट गये और देनीसोव नेस्वीत्स्की के पास पहुंच गया।

"क्या बात है, तुम आज नशे में धुत्त नहीं हो?" देनीसोव के निकट आ जाने पर नेस्वीत्स्की ने पूछा।

"छककर पीने का वक़्त भी तो नहीं देते!" देनीसोव ने उत्तर दिया। "रेजिमेंट को दिन भर कभी यहां, तो कभी वहां घसीटते रहते हैं। लड़ना है तो डटकर लड़ा जाये। शैतान ही जाने कि यह सब क्या तमाशा है!"

"आज तो तुम बड़े बांके-छैले बने हुए हो!" उसकी नयी जाकेट और ज़ीनपोश को देखते हुए नेस्वीत्स्की ने कहा।

देनीसोव मुस्कराया, उसने झोले में से इत्र से महकता हुआ रूमाल

निकाला और उसे नेस्वीत्स्की की नाक के पास ले गया।

"ऐसा करना तो ज़रूरी था, आख़िर तो लड़ाई के मैदान में जा रहा हूं! मैंने दाढ़ी बनायी, दांत साफ़ किये और अपने को इत्र से तर किया।"

नेस्वीत्स्की के रोबीले व्यक्तित्व, उसकी सेवा में उपस्थित कज़्ज़ाक अर्दली तथा नंगी तलवार को हवा में लहराते और ख़ूब ज़ोर से चीख़ते-चिल्लाते देनीसोव की दृढ़ता ने ऐसा रंग दिखाया कि वे पुल के दूसरे सिरे पर पहुंच गये तथा उन्होंने पैदल सेना के सैनिकों को आगे बढ़ने से रोक दिया। पुल के सिरे पर नेस्वीत्स्की को वह कर्नल मिल गया जिसको उसे जनरल का आदेश देना था और वह अपना कर्त्तव्य पूरा करके वापस चला गया।

पुल पर रास्ता बनाने के बाद देनीसोव ने पुल के सिरे पर अपने घोड़े को रोक दिया। लापरवाही से घोड़े की लगामें थामे हुए, जो स्कवाड्रन के दूसरे घोड़ों के पास जाने को उत्सुक था और पैर पटक रहा था, देनीसोव अपनी ओर बढ़े आ रहे अपने स्कवाड्रन को देखने लगा। पुल के तख़्तों पर सुमों की ऐसी प्रतिध्वनि होने लगी मानो कई घोड़े सरपट दौड़ रहे हों और घुड़सवार दस्ता, जिसमें आगे-आगे अफ़सर और उनके पीछे चार-चार की क़तार में सैनिक घुड़सवार थे, पुल पर फैल गया और दूसरे सिरे की तरफ़ बढ़ने लगा।

पुल पर रोक दिये गये और रौंदे हुए कीचड़ में भीड़ बने हुए पैदल सैनिक परायेपन और व्यंग्य की उसी विशेष द्वेषपूर्ण भावना से, जो सामान्यतः सेना के विभिन्न भागों में पायी जाती है, साफ़-सुथरे और बांके-छैले हुस्सारों को सीधी क़तारों में अपने पास से गुज़रते हुए देख रहे थे।

"ख़ूब सजे-धजे हुए जवान हैं! बस, खेल-तमाशे के मैदान में भेजने के लायक़ हैं!"

"ये हैं ही किस काम के! सिर्फ़ दिखावे के लिये ही हैं!" दूसरे पैदल फ़ौजी ने कहा।

"ऐ प्यारे, धूल-मिट्टी नहीं उड़ा!" हुस्सार ने मज़ाक़ किया जिसके घोड़े ने उछल-कूद करते हुए प्यादे पर कीचड़ के छींटे फेंक दिये थे।

"तुम्हारी पीठ पर फ़ौजी थैला लादकर मैं तो तुम्हें दो दिन का कूच करवाता, तब तुम्हारी ये डोरियां ऐसे चमकती नज़र न आतीं,"

आस्तीन से चेहरे का कीचड़ साफ़ करते हुए प्यादे ने कहा, "वरना तुम घोड़े पर बैठे हुए आदमी नहीं, पक्षी ज़्यादा लगते हो!"

"ज़ीकिन, तुम्हें घोड़े पर बैठा देना चाहिये, तुम वहां ख़ूब जंचोगे," कोरपोरेल ने एक दुबले-पतले और फ़ौजी थैले के बोझ से दबे जा रहे सैनिक पर फब्ती कसी।

"टांगों के बीच सोटा रख लो, समझो कि घोड़े पर सवार हो गये," हुस्सार ने जवाब दिया।

८

बाक़ी पैदल फ़ौजियों ने पुल के सिरे पर कीप-सी बनाते हुए उसे जल्दी-जल्दी पार कर लिया। आख़िर सभी घोड़ा-गाड़ियां भी दूसरी ओर पहुंच गयीं, रेल-पेल कम हो गयी और आख़िरी बटालियन पुल को लांघने लगी। पुल के इस ओर केवल देनीसोव का घुड़सवार हुस्सार स्क्वाड्रन ही दुश्मन के सामने रह गया। पहाड़ी पर से नज़र आनेवाला दुश्मन, यहां नीचे से, पुल के पास से अभी दिखायी नहीं दे रहा था, क्योंकि जिस घाटी में से नदी बहती थी, उसके सामनेवालीं पहाड़ी का क्षितिज कोई आध किलोमीटर की दूरी पर ख़त्म हो जाता था। सामने सुनसान जगह थी जहां कहीं-कहीं हमारे घुड़सवार कज़्ज़ाकों की टुकड़ियां घूम रही थीं। अचानक सामनेवाले ऊंचे रास्ते पर नीली वर्दियां पहने सेना और तोपख़ाना दिखायी दिया। ये फ़्रांसीसी थे। कज़्ज़ाकों की घुड़सवार फ़ौजी टुकड़ियां पहाड़ी की ओट में हो गयीं। देनीसोव के घुड़सवार स्क्वाड्रन के सभी अफ़सर और सैनिक बेशक इधर-उधर की बातें करने और इधर-उधर देखने की कोशिश कर रहे थे, फिर भी लगातार उसी के बारे में सोच रहे थे जो उन्हें पहाड़ी पर नज़र आ रहा था। वे लगातार क्षितिज पर प्रकट होनेवाले उस धब्बे की तरफ़ देख रहे थे जो उन्हें मालूम था कि शत्रु-सेना के सिवा और कुछ नहीं। दोपहर के बाद मौसम फिर सुधर गया था और डेन्यूब नदी तथा उसके इर्द-गिर्द की धुंधली पहाड़ियों पर ख़ूब धूप चमक रही थी। शान्ति छाई थी और सामनेवाली पहाड़ी से कभी-कभी दुश्मन की तुर-

हियों और ललकारने की आवाज़ें सुनायी दे जाती थीं। घुड़सवार स्कवाड्रन और दुश्मन के बीच छोटी-छोटी कज़्ज़ाक टुकड़ियों के सिवा और कोई नहीं था। लगभग छः सौ मीटर का सुनसान मैदान स्कवाड्रन और दुश्मन को अलग करता था। दुश्मन ने गोलाबारी बन्द कर दी थी और इसीलिये उस कठोर, भयानक, अलंघ्य और अप्रत्यक्ष रेखा की अधिक स्पष्ट अनुभूति हो रही थी जो दो शत्रु-सेनाओं को अलग करती थी।

"इस रेखा से, जीवितों को मृतकों से अलग करनेवाली इस रेखा से एक क़दम आगे बढ़ाने पर अज्ञातता, पीड़ा और मृत्यु है। वहां क्या है? वहां कौन है? इस मैदान, इस पेड़ और धूप से चमचमाती छत के पीछे क्या है, कोई नहीं जानता और जानने की बड़ी इच्छा होती है। इस रेखा को लांघते हुए दिल डरता है और फिर भी लांघने को मन होता है तथा यह भी मालूम है कि देर-सबेर हमें इसे लांघना और यह जानना होगा कि इस रेखा के उस ओर क्या है। ठीक वैसे ही, जैसे हमारे लिये यह जानना अनिवार्य है कि वहां, मृत्यु के उस ओर क्या है। मगर हम खुद शक्तिशाली, स्वस्थ, प्रफुल्ल तथा उत्तेजित हैं और इसी तरह के स्वस्थ, उत्तेजित-सजीव लोगों से घिरे हुए हैं।" शत्रु को अपने सामने देखनेवाला हर व्यक्ति यदि ऐसा सोचता नहीं तो अनुभव करता है और ऐसी भावना ऐसे क्षणों में होनेवाली हर चीज़ से सम्बन्धित अनुभूति को विशेष चमक-दमक और उल्लासपूर्ण स्पष्टता प्रदान कर देती है।

उस पहाड़ी पर, जहां शत्रु-सैनिक थे, तोप दग़ने का धुआं दिखायी दिया और सनसनाता हुआ एक गोला हुस्सार स्कवाड्रन के ऊपर से गुज़र गया। एक ही जगह पर खड़े हुए अफ़सर अब अपने-अपने स्थान पर चले गये। हुस्सार बड़े यत्न से अपने घोड़ों की क़तारें सीधी करने लगे। स्कवाड्रन में ख़ामोशी छा गयी। सभी अपने सामने शत्रु को देखते और आदेश की प्रतीक्षा करते हुए स्कवाड्रन-कमांडर की तरफ़ देख रहे थे। दूसरा, फिर तीसरा गोला इनके सिरों के ऊपर से गुज़र गया। ज़ाहिर था कि हुस्सारों को निशाना बनाया जा रहा था, लेकिन गोला एक जैसी द्रुत गति से सनसनाता हुआ हुस्सारों के सिरों के ऊपर से गुज़रकर कहीं पीछे जा गिरता था। हुस्सार मुड़कर नहीं देखते थे, किन्तु अपनी ओर आ रहे गोले की आवाज़ आने तथा उसके नीचे

गिर जाने तक समान-असमान चेहरोंवाला पूरे का पूरा स्कवाड्रन मानो किसी आदेश के अनुसार अपना दम रोककर रकाबों में खड़ा हो जाता और फिर से ज़ीन पर बैठ जाता। सैनिक इधर-उधर सिर न घुमाते, किन्तु यह जानने के लिये अपने साथियों को कनखियों से जिज्ञासापूर्वक देखते कि उनपर इस गोले के गिरने का क्या असर हुआ है। देनीसोव से लेकर बिगुल-वादक तक हर किसी के चेहरे पर होंठ के निकट तथा ठोड़ी के नीचे खीझ और उत्तेजना के संघर्ष का एक सामान्य भाव दिखायी दे रहा था। क्वाटर मास्टर फ़ौजियों की ओर देखते हुए माथे पर ऐसे बल डालता था मानो उन्हें सज़ा देने की धमकी दे रहा हो। केडेट मिरोनोव हर गोले के आने पर झुक जाता था। कुछ लंगड़ाती टांगोंवाले, किन्तु शानदार मुश्की घोड़े पर सवार और बायें बाज़ू खड़ा हुआ रोस्तोव उस ख़ुशी भरे विद्यार्थी जैसा लग रहा था जिसे बहुसंख्यक दर्शकों के सामने परीक्षा के लिये बुलाया गया हो और जिसे इस बात का यक़ीन हो कि वह अपनी योग्यता की धाक जमा देगा। वह ऐसी मधुर और प्यारी दृष्टि से सभी पर नज़र डाल रहा था मानो सब से यह देखने का अनुरोध कर रहा हो कि गोलाबारी में भी वह कैसे शान्ति से खड़ा है। किन्तु उसकी इच्छा के विरुद्ध उसके मुंह के पास भी कुछ अजीब-सी और कठोरता की द्योतक-रेखा झलक उठी।

"वह कौन बार-बार झुकता है? केडेट मिरोनोव! यह अच्छी बात नहीं, मेरी तरफ़ देखिये!" देनीसोव ने चिल्लाकर कहा जो एक जगह पर खड़ा न रहकर स्कवाड्रन के सामने घोड़े पर इधर-उधर आ-जा रहा था।

चपटी नाक और काले बालोंवाले वास्का देनीसोव का चेहरा, बालों से ढकी छोटी-छोटी उंगलियों तथा उभरी नसोंवाले हाथ समेत, जिसमें वह नंगी तलवार की मूठ पकड़े था, उसकी पूरी, छोटी-सी गठीली आकृति बिल्कुल हमेशा जैसी थी। ख़ास तौर पर वैसी, जैसी वह शराब की दो बोतलें चढ़ा लेने के बाद शाम को होती थी। वह तो केवल सामान्य से कुछ अधिक लाल था और अपने झबरीले सिर को ऊपर की तरफ़ ऐसे झटककर, जैसे कि पक्षी पानी पीते समय करते हैं, तथा छोटे-छोटे पांवों से अच्छे बेदुईन घोड़े की बग़लों में निर्दयता से एड़ मारते हुए उसे स्कवाड्रन के दूसरे पहलू की ओर सरपट दौड़ा ले गया और उसने खरखरी-सी आवाज़ में चिल्लाकर कहा कि वे

अपनी पिस्तौलों की तरफ़ ध्यान दें। इसके बाद उसने कीर्स्तेन की तरफ़ अपना घोड़ा बढ़ा दिया। स्टॉफ़-कप्तान चौड़ी पीठवाले बड़े प्रभावपूर्ण घोड़े को क़दम-क़दम चलाता हुआ देनीसोव की तरफ़ आ रहा था। बड़ी-बड़ी मूंछोंवाला यह अफ़सर सदा की भांति ही धीर-गम्भीर था और केवल उसकी आंखें ही सामान्य से अधिक चमक रही थीं।

"कहो, क्या ख़्याल है?" उसने देनीसोव से पूछा। "शायद दो-दो हाथ करने का अवसर नहीं आयेगा। देख लेना, हम पीछे हट जायेंगे।"

"शैतान ही जानता है कि यह सब क्या हो रहा है!" देनीसोव बड़बड़ाया। "अरे! रोस्तोव!" उसका खिला हुआ चेहरा देखकर उसने पुकारकर कहा। "तुम्हें अब ज़्यादा इन्तज़ार नहीं करना पड़ेगा।"

और वह केडेट रोस्तोव के लिये ख़ुश होता हुआ प्रशंसापूर्वक मुस्कराया। रोस्तोव ने अपने को बहुत ही ख़ुश महसूस किया। इसी वक़्त पुल पर रेजिमेंट-कमांडर दिखायी दिया। देनीसोव घोड़े को सरपट दौड़ाता हुआ उसके पास पहुंचा।

"हुज़ूर! हमला करने की इजाज़त दीजिये! मैं इन्हें खदेड़ दूंगा।"

"कैसा हमला," कर्नल ने ऊब भरी आवाज़ में जवाब दिया और ऐसे नाक-भौंह सिकोड़ी मानो लगातार तंग करनेवाली मक्खी से परेशान हो। "और आप यहां किसलिये देर कर रहे हैं? देखते नहीं कि अग्रणी घुड़सवार वापस लौट रहे हैं। अपने स्कवाड्रन को पीछे ले जाइये।"

स्कवाड्रन ने पुल पार कर लिया और एक भी सैनिक के जानी नुक़सान के बिना गोलों की मार से बच निकला। इसके पीछे-पीछे इसके नजदीक ही तैनात दूसरे स्कवाड्रन ने भी पुल पार कर लिया और आख़िरी कज़्ज़ाक भी इस तरफ़ से चले गये।

पाव्लोग्राद की घुड़सवार रेजिमेंट के दो स्कवाड्रन एक-दूसरे के बाद पुल लांघकर पीछेवाली पहाड़ी की तरफ़ बढ़ चले। रेजिमेंट-कमांडर कार्ल बोगदानोविच शूबर्ट देनीसोव के स्कवाड्रन से आ मिला। वह रोस्तोव के निकट ही अपने घोड़े को क़दम-क़दम चाल से बढ़ाता जा रहा था, रोस्तोव की ओर कोई ध्यान नहीं दे रहा था, यद्यपि तेल्यानिन को लेकर उनके बीच हुए झगड़े के बाद उनकी यह पहली

मुलाक़ात थी। रोस्तोव मोर्चे पर अपने को पूरी तरह उस आदमी के बस में अनुभव करते हुए, जिसके सम्मुख वह अब अपने को अपराधी मानता था, लगातार उसकी मज़बूत पीठ, सुनहरे बालोंवाली गुद्दी और लाल गर्दन पर नज़र टिकाये था। रोस्तोव को ऐसे लगा कि बोगदानोविच उसे न देखने का केवल ढोंग ही कर रहा है और उसका एकमात्र उद्देश्य उसकी वीरता की परीक्षा लेना ही है। इसलिये वह तन गया और उसने प्रफुल्लता से इधर-उधर देखा। इसके बाद उसे ऐसे प्रतीत हुआ कि बोगदानोविच जान-बूझकर अपने घोड़े को उसके नज़दीक ही चला रहा है ताकि अपने साहस का प्रदर्शन कर सके। इसके बाद उसके मन में यह ख़्याल आया कि उसका दुश्मन यानी बोगदानोविच अब जान-बूझकर स्कवाड्रन को भयानक हमला करने को भेज देगा, ताकि उसे, रोस्तोव को सजा दे सके। उसके दिमाग़ में यह विचार भी आया कि हमले के बाद वह उसके पास आयेगा और अपने मन की बड़ी उदारता दिखाते हुए उसकी तरफ़, घायल रोस्तोव की तरफ़ सुलह का हाथ बढ़ा देगा।

ऊंचे कंधोंवाला जेरकोव, जिससे पाव्लोग्राद की रेजिमेंट के लोग भली-भांति परिचित थे और जो कुछ ही समय पहले इस रेजिमेंट से चला गया था, घोड़ा दौड़ाता हुआ रेजिमेंट-कमांडर के पास आया। कुतूज़ोव के मुख्य सैनिक कार्यालय से निकाले जाने के बाद जेरकोव यह कहते हुए रेजिमेंट में नहीं रहा था कि वह उल्लू नहीं है कि मोर्चे पर जान खपाता रहे, जबकि सैनिक कार्यालय में कुछ भी किये-कराये बिना कहीं अधिक पुरस्कार पा सकता है और वह प्रिंस बग्रातिओन * का अर्दली-अफ़सर बन गया था। अपने भूतपूर्व संचालक के पास वह चण्डावल के बड़े अफ़सर का आदेश लेकर आया था।

"कर्नल," उसने रोस्तोव के शत्रु को सम्बोधित करते और अपने साथियों पर नज़र डालते हुए उदासी भरे गम्भीर अन्दाज़ में कहा, "रेजिमेंट को रोकने और पुल जलाने का आदेश दिया गया है।"

---

* प्रिंस प्योत्र बग्रातिओन (१७६५–१८१२), रूसी जनरल, जिसने सुवोरोव के युद्ध-अभियानों तथा फ़्रांस के विरुद्ध १८०५–१८०७ तथा १८१२ की लड़ाइयों में हिस्सा लिया। – सं०

"किसने आदेश दिया गया है?" कर्नल ने कड़ाई से पूछा।*

"यह तो मैं नहीं जानता, कर्नल, **किसने आदेश दिया गया है**," जेरकोव ने गम्भीरता से जवाब दिया, "लेकिन प्रिंस बग्रातिओन ने मुझसे यह कहा है : 'जाकर कर्नल से कहो कि हुस्सार जल्दी से वापस लौटकर पुल जला दें'।"

जेरकोव के कुछ ही क्षण बाद अमले का अफ़सर भी यही आदेश लेकर आया। इस अफ़सर के पीछे-पीछे कज़्ज़ाकी घोड़े को सरपट दौड़ाता हुआ मोटा नेस्वीत्स्की भी आ पहुंचा जिसके वज़न को घोड़ा मुश्किल से सहन कर पा रहा था।

"यह क्या मामला है, कर्नल," वह सवारी करते हुए दूर से ही चिल्लाया, "मैंने आपसे पुल जला देने को कहा था और अब किसी ने इस मामले में घुटाला कर दिया है। वहां बड़े अफ़सर बेहद परेशान हो रहे हैं, कुछ सिर-पैर समझ में नहीं आता।"

कर्नल ने इतमीनान से रेजिमेंट को रोका और नेस्वीत्स्की को सम्बोधित किया :

"आपने मुझसे आग लगाने की सामग्री जुटाने के बारे में कहा था," वह बोला, "मगर जलाने के बारे में कुछ नहीं कहा था।"

"कैसे नहीं कहा था, बड़े मियां," अपने घोड़े को रोककर, फ़ौजी टोपी उतारकर तथा गुदगुदे हाथ से पसीने से तर बालों को ठीक करते हुए वह कह उठा, "कैसे नहीं कहा था कि पुल को आग लगानी चाहिये, आग लगाने की सामग्री किसलिये जुटायी गयी है?"

"मैं आपका कोई 'बड़ा मियां' नहीं हूं, श्रीमान स्टॉफ़-अफ़सर, और आपने मुझसे यह नहीं कहा था कि पुल जलाता! मैं अपना फ़ौजी काम अच्छी तरह से जानता और मेरा आदत है कि हुक्म को ठीक तरह से पूरा किया जाये। आपने कहा था कि पुल जलाया जायेगा, मगर कौन जलायेगा, भगवान की क़सम, मैं जान नहीं सकता..."

"हमेशा ऐसा ही होता है," नेस्वीत्स्की ने हाथ झटककर कहा। "तुम यहां किसलिये आये हो?" उसने जेरकोव से पूछा।

"यही कहने के लिये। लेकिन तुम तो भीग गये हो, लाओ मैं तुम्हें पोंछ दूं।"

---

* कर्नल कार्ल बोगदानोविच शूबर्ट जर्मन-रूसी था और रूसी भाषा बोलते वक़्त ग़लतियां करता था। – अनु०

"श्रीमान स्टॉफ़-अफ़सर, आपने यह कहा था..." कर्नल ने नाराज़गी के अन्दाज़ में अपनी बात जारी रखी।

"कर्नल," अमले के अफ़सर ने उसे टोका, "जल्दी करनी चाहिये वरना दुश्मन छर्रोंवाले गोले फेंकने लगेगा।"

कर्नल ने ख़ामोश रहते हुए इस अफ़सर, मोटे स्टॉफ़-अफ़सर और जेरकोव की तरफ़ देखा तथा त्योरी चढ़ायी।

"मैं जलाता हूंगा पुल," उसने ग़लत रूसी में बड़ी शान से मानो यह व्यक्त करते हुए कहा कि उसको बुरी लगनेवाली सभी बातों के बावजूद भी वह सब कुछ करेगा जो उसे करना चाहिये।

अपनी लम्बी, मज़बूत पेशियोंवाली टांगों से घोड़े को ऐसे ज़ोरदार एड़ लगाकर मानो घोड़ा ही हर चीज़ के लिये दोषी हो, कर्नल द्वितीय स्कवाड्रन, उसी स्कवाड्रन की ओर बढ़ गया जिसमें देनीसोव की कमान में रोस्तोव काम करता था और उसने उसे पुल की तरफ़ लौटने का आदेश दिया।

"वही बात है," रोस्तोव ने सोचा, "वह मेरी परीक्षा लेना चाहता है!" उसका दिल बैठ गया और ख़ून चेहरे की तरफ़ दौड़ने लगा। "बेशक वह यह देख ले कि मैं कायर हूं या नहीं," उसने सोचा।

स्कवाड्रन के सभी लोगों के ख़ुशी से खिले चेहरों पर फिर से वही गम्भीर भाव आ गया जो उस समय था जब उनपर गोले बरस रहे थे। रोस्तोव अपने दुश्मन, रेजिमेंट-कमांडर को इसलिये ध्यान से देख रहा था कि उसके चेहरे पर अपने अनुमानों की पुष्टि की झलक पा सके। किन्तु कर्नल ने एक बार भी रोस्तोव की तरफ़ नहीं देखा और हमेशा की भांति बड़ी कड़ाई और उत्साह से अपने सामने खड़ी रेजिमेंट को देख रहा था। उसका आदेश सुनायी दिया।

"ज़रा फुर्ती से! फुर्ती से!" उसके आस-पास कई आवाज़ें सुनायी दीं।

अपनी तलवारों को लगामों में उलझाते और एड़ों को बजाते और यह न जानते हुए कि वे क्या करनेवाले हैं, हुस्सार जल्दी-जल्दी घोड़ों से उतरे। उन्होंने अपने ऊपर सलीब का निशान बनाया। रोस्तोव अब रेजिमेंट-कमांडर की तरफ़ नहीं देख रहा था – उसे इसकी फ़ुरसत ही नहीं थी। वह डर रहा था, धड़कते दिल से यह सोचकर डर रहा था कि कहीं वह हुस्सारों से पीछे न रह जाये। अर्दली को घोड़े की

लगाम थमाते समय उसका हाथ कांप रहा था और वह यह अनुभव कर रहा था कि कैसे उसका दिल ज़ोर से धक-धक कर रहा है। घोड़े पर सवार देनीसोव पीछे को झुकते और कुछ चिल्लाते हुए उसके पास से गुज़र गया। रोस्तोव को अपने इर्द-गिर्द भागे जाते हुस्सारों के सिवा, जिनकी एड़ें उलझती और तलवारें खनकती थीं, और कुछ दिखायी नहीं दे रहा था।

"स्ट्रेचर लाओ!" पीछे से किसी के चिल्लाने की आवाज़ सुनायी दी।

रोस्तोव ने यह नहीं सोचा कि स्ट्रेचर लाने की इस पुकार का क्या मतलब है, वह तो यही कोशिश करते हुए भागता जा रहा था कि सबसे आगे रहे। किन्तु नीचे न देखने के कारण पुल के नज़दीक उसका पांव रौंदे हुए चिपचिपे कीचड़ में पड़ गया और वह ठोकर खाकर हाथों के बल गिर पड़ा। दूसरे लोग उससे आगे निकल गये।

"दोनों ओर, कप्तान," उसे रेजिमेंट-कमांडर की आवाज़ सुनायी दी जो घोड़े को दौड़ाता हुआ सबसे पहले पहुंचकर उत्साह तथा प्रसन्नतापूर्ण चेहरे के साथ पुल के नज़दीक घोड़ा रोके हुए था।

रोस्तोव ने कीचड़ से लथपथ अपने हाथों को बिरजिस पर पोंछा, मुड़कर अपने शत्रु पर नज़र डाली और यह मानते हुए आगे दौड़ना चाहा कि वह जितनी अधिक दूर तक भाग जायेगा, उतना ही अधिक अच्छा होगा। किन्तु बोगदानोविच ने रोस्तोव को देखे और पहचाने बिना ही पुकारकर कहा:

"पुल के बीचोंबीच कौन भागा जा रहा है? दायें हो जाओ! केडेट, वापस आओ!" वह ग़ुस्से से चिल्ला उठा और उसने फिर से देनीसोव को सम्बोधित किया जो अपनी दिलेरी की शान दिखाने के लिये घोड़े की सवारी करते हुए ही पुल पर चला गया था।

"किसलिये ख़तरा मोल लेता, कप्तान! आप घोड़े से नीचे उतर आता," कर्नल ने कहा।

"जिसकी आयी है उसे कोई नहीं बचा सकता," वास्का देनीसोव ने घोड़े पर ही पीछे मुड़कर देखते हुए जवाब दिया।

इसी बीच नेस्वीत्स्की, जेरकोव और अमले का अफ़सर गोलाबारी की सीमा से दूर, एक ही जगह पर खड़े हुए कभी तो पीली फ़ौजी टो-

पियां और सुनहरी डोरियोंवाली गहरे हरे रंग की जाकेटें तथा नीली बिरजिसें पहने पुल के पास जमघट लगाये हुस्सारों को, तो कभी नीली वर्दियां पहने फ़्रांसीसी सैनिकों तथा घोड़ोंवाले दलों को देख रहे थे जिन्हें आसानी से तोपची-दलों के रूप में पहचाना जा सकता था।

"पुल जला पायेंगे या नहीं? कौन बाज़ी जीतेगा? हुस्सार पुल को आग लगाने में कामयाब हो जायेंगे या छर्रोंवाले गोले फेंककर फ़्रांसीसी उन्हें मार डालने में?" धड़कते दिल से और अनचाहे ही ये सवाल पुल से दूर पहाड़ी पर बड़ी संख्या में खड़ी सेनाओं के सभी सैनिक अपने से पूछ रहे थे जो सन्ध्या के प्रखर प्रकाश में पुल और हुस्सारों तथा दूसरी ओर से संगीनों तथा तोपों के साथ नीली वर्दियों में बढ़े आ रहे फ़्रांसीसियों को देख रहे थे।

"ओह! हुस्सारों का बुरा हाल होगा!" नेस्वीत्स्की ने कहा। "वे अब छर्रोंवाले गोलों की मार की हद में हैं।"

"कर्नल ने व्यर्थ ही इतने अधिक लोगों को वहां भेज दिया," अमले के अफ़सर ने राय ज़ाहिर की।

"यह सही है," नेस्वीत्स्की ने सहमत होते हुए कहा। "यहां तो दो चुस्त जवानों से ही काम चल सकता था।"

"वाह, हुज़ूर," हुस्सारों पर नज़र टिकाये जेरकोव ने अपने भोले-से अन्दाज़ में, जिससे यह अनुमान लगाना कठिन था कि वह संजीदा है या मज़ाक़ कर रहा है, बातचीत में शामिल होते हुए कहा। "वाह, हुज़ूर! आप भी कैसी बात कह रहे हैं! दो आदमियों को भेज दिया जाये, तब रिबन के साथ व्लादीमिर पदक कैसे मिलेगा? इस तरह से बेशक कुछ लोगों की जान पर आ बने, मगर पूरे स्कवाड्रन को कोई सम्मान पाने के लिये पेश किया जा सकेगा और कर्नल ख़ुद भी रिबन हासिल कर सकेगा। हमारा बोगदानोविच जानता है कि कैसे और क्या करना चाहिये।"

"लीजिये, यह तो छर्रेवाला गोला आ रहा है," अमले के अफ़सर ने कहा।

उसने फ़्रांसीसी तोपों की ओर इशारा किया जिन्हें जल्दी-जल्दी तोप-गाड़ियों से उतारा जा रहा था और जिनमें गोले भरे जा रहे थे।

फ़्रांसीसियों के तोपोंवाले दलों में लगभग एक ही समय पहली, दूसरी और तीसरी तोप से धुआं निकला तथा जब पहली तोप के दग़ने

का धमाका इन लोगों तक पहुंचा, चौथी तोप से धुआं निकलता दिखायी दिया। एक के फ़ौरन बाद दूसरा और फिर तीसरा धमाका हुआ।

"हाय, हाय!" नेस्वीत्स्की अमले के अफ़सर का हाथ पकड़ते हुए मानो असह्य पीड़ा से चिल्ला उठा। "देखिये तो एक हुस्सार गिर भी गया, गिर गया, गिर गया!"

"लगता है कि एक नहीं, दो?"

"होता मैं ज़ार तो हमेशा के लिये युद्ध से कर देता इन्कार," नेस्वीत्स्की ने मुंह फेरते हुए कहा।

फ़्रांसीसी तोपों में फिर जल्दी से गोले भरे गये। नीली वर्दियोंवाले फ़्रांसीसी सैनिक दौड़ते हुए पुल की तरफ़ बढ़ने लगे। फिर से, मगर भिन्न अन्तरालों के बाद धुआं दिखायी देता और छर्रोंवाला गोला तड़तड़ाता तथा ऊंची आवाज़ करता हुआ पुल पर गिरता। किन्तु इस बार पुल पर जो कुछ हुआ, नेस्वीत्स्की उसे नहीं देख पाया। पुल पर से घना धुआं उठ रहा था। हुस्सार पुल को आग लगाने में सफल हो गये थे और फ़्रांसीसी तोपें बाधा डालने के हेतु नहीं, बल्कि इसलिये गोलाबारी कर रही थीं कि तोपें भरी हुई थीं और उन्हें अपने गोलों को किसी पर तो फेंकना ही था।

हुस्सारों के घोड़ा-अर्दलियों के पास लौट आने के पहले फ़्रांसीसी छर्रोंवाले गोलों से भरी हुई तीन तोपें दाग़ने में कामयाब हो गये थे। दो तोपों के निशाने ख़ाली गये, मगर तीसरी तोप के छर्रे हुस्सारों के एक दल के बीच आ गिरे और तीन हुस्सार उनकी लपेट में आ गये।

बोगदानोविच के साथ अपने सम्बन्धों के विचारों में खोया-सा रोस्तोव यह न समझ पाते हुए कि क्या करे, पुल पर रुक गया। टुकड़े-टुकड़े करने के लिये (लड़ाई की वह ऐसी ही कल्पना करता था) उसके सामने कोई नहीं था, पुल को जलाने के काम में भी वह हाथ नहीं बंटा सका था, क्योंकि दूसरे सैनिकों की तरह बटे हुए फूस का रस्सा अपने साथ नहीं लाया था। वह वहां खड़ा-खड़ा इधर-उधर देख रहा था कि अचानक पुल ऐसे चटकने लगा मानो अख़रोट बिखर रहे हों और उसके सबसे अधिक निकट खड़ा हुस्सार कराहता हुआ जंगले पर गिर पड़ा। दूसरे हुस्सारों के साथ रोस्तोव भी भागकर उसके पास गया। फिर से कोई चिल्लाया: "स्ट्रेचर लाओ!" चार आदमी हुस्सार को उठाने लगे।

"ओह... हाय... हाय!.. ईसा के लिये मुझे छोड़ दीजिये," घायल चिल्ला उठा। फिर भी उसे उठाकर स्ट्रेचर पर लेटा दिया गया।

निकोलाई रोस्तोव ने मुंह फेर लिया और मानो कुछ खोजते हुए दूरी को, डेन्यूब के पानी, आकाश और सूरज को देखने लगा। कितना अच्छा लग रहा था आकाश, कैसा नीला-नीला, शान्त और गहरा-गहरा! अस्ताचल की ओर जाता हुआ सूर्य कितना प्रखर और भव्य था! दूरी पर डेन्यूब का पानी कैसी कोमल चमक दिखा रहा था! डेन्यूब से परे, बहुत दूर नीली आभा में लिपटते पर्वत, मठ, रहस्यपूर्ण खड्ड और फुनगियों तक कुहासे में लिपटे हुए चीड़ के जंगल और भी अधिक प्यारे लग रहे थे... वहां शान्ति थी, सुख था... "काश, मैं वहां होता तो किसी भी, किसी भी चीज़ की चाह न करता," रोस्तोव सोच रहा था। "स्वयं मेरे भीतर और इस सूरज में ही इतना अधिक सुख है, लेकिन यहां... आहें-कराहें, यातनायें, भय, यह अस्पष्टता और दौड़-धूप है... लो, वे फिर से कुछ चिल्ला रहे हैं, फिर से सभी कहीं पीछे की ओर भाग चले हैं और उनके साथ मैं भी भाग रहा हूं, और यह रही, यह रही मौत मेरे ऊपर, मेरे आस-पास... एक क्षण – और मैं फिर कभी नहीं देखूंगा यह सूरज, यह पानी, ये खड्ड..."

इसी क्षण सूरज बादलों की ओट में छिपने लगा – रोस्तोव को अपने सामने दूसरे स्ट्रेचर नज़र आये। मौत का डर और स्ट्रेचर, सूरज और जीवन के प्रति प्यार – सभी कुछ घिनौनी और भयावह अनुभूति में घुल-मिल गया।

"हे भगवान! जो कोई भी है इस आकाश में, वह मुझे बचाये, क्षमा कर दे, मेरी रक्षा करे!" रोस्तोव मन ही मन फुसफुसाया।

हुस्सार घोड़ा-अर्दलियों के पास भाग गये, आवाज़ें ऊंची और कुछ निश्चित हो गयीं, स्ट्रेचर आंखों से ओझल हो गये।

"कहो भाई, सूंघ लिया बारूद?" उसे अपने ऊपर वास्का देनीसोव की ऊंची आवाज़ सुनायी दी।

"यह सब ख़त्म हो गया, लेकिन मैं बुज़दिल हूं," रोस्तोव ने सोचा और गहरी सांस छोड़कर अपने लंगड़ाते मुश्की घोड़े को अर्दली से लेकर उसपर सवार होने लगा।

"यह छर्रोंवाला गोला था?" उसने देनीसोव से पूछा।

"और वह भी कैसा भयानक!" देनीसोव ने चिल्लाकर जवाब दिया। "ख़ूब ढंग से काम किया हमने! मगर यह काम भी कैसा बेहूदा है! धावा बोलना तो बढ़िया मामला है, कुत्तों के टुकड़े करते चले जाओ, लेकिन यहां तो शैतान ही जानता है कि यह सब क्या है, चांदमारी की तरह निशानेबाज़ी हो रही थी।"

और देनीसोव रोस्तोव के पास जमा होनेवाले रेजिमेंट-कमांडर, नेस्वीत्स्की, जेरकोव और अमले के अफ़सर की तरफ़ अपना घोड़ा दौड़ा ले गया।

"फिर ऐसा लगता है कि किसी ने मेरी तरफ़ ध्यान नहीं दिया," रोस्तोव ने मन ही मन सोचा। और वास्तव में ही किसी ने कुछ भी नहीं देखा था, क्योंकि हर कोई उस भावना से परिचित था जो गोलाबारी का पहली बार सामना करने पर केडेट अनुभव करता है।

"यह होगा बढ़िया समाचार-सन्देश," जेरकोव ने कहा, "मैं अब आन की आन में सब-लेफ़्टिनेंट बन जाऊंगा।"

"प्रिंस को बता दीजियेगा कि मैंने जलाया पुल," कर्नल ने उत्साह और प्रसन्नता से कहा।

"और अगर वह जानी नुक़सान के बारे में पूछें, तो?"

"बहुत ही मामूली!" कर्नल ने भारी-भरकम आवाज़ में कहा, "दो हुस्सार घायल हुए और एक वहीं **टें बोल गया,**" ख़ूब ज़ोर से, सुन्दर ढंग से **टें बोल गया** इन शब्दों का उच्चारण करने पर अपनी सुखद मुस्कान को वश में न रख पाते हुए उसने स्पष्ट प्रसन्नता से जवाब दिया।

९

नेपोलियन बोनापार्ट की कमान में एक लाख सैनिकों की फ़्रांसीसी सेना द्वारा खदेड़ी जाती, शत्रुता की भावना रखनेवाली आबादी का सामना करती, अपने मित्र-राष्ट्रों का भरोसा खो चुकी, रसद की कमी महसूस करती और ऐसी परिस्थितियों से दो-चार होती, जिनकी पहले से कल्पना करना असम्भव था तथा दुश्मन से टक्कर लेने के लिये विवश होती पैंतीस हज़ार सैनिकों की रूसी सेना कुतूज़ोव की कमान

में डेन्यूब के साथ-साथ जल्दी-जल्दी पीछे हटती जा रही थी। वह केवल वहीं रुकती थी जहां दुश्मन उसे आ दबोचता था और चण्डावल की केवल ऐसी ही झड़पों में हिस्सा लेती थी जो भारी सैनिक साज़-सामान की विशेष हानि के बिना पीछे हटने के लिये ज़रूरी होती थीं। लाम्बाख, अमश्टेटन और मेल्क के पास ऐसी झड़पें हुईं तथा उस वीरता और दृढ़ता के बावजूद, जिसका रूसी सेना ने इन झड़पों में परिचय दिया, तथा जिसे शत्रु ने भी स्वीकार किया, परिणाम केवल यही हुआ कि वह और भी तेज़ी से पीछे हटने लगी। उल्म के निकट बन्दी बन जाने से बच जानेवाली आस्ट्रियायी सेनायें, जो ब्राउनाऊ के क़रीब कुतूज़ोव की सेना से आ मिली थीं, अब उससे अलग हो गयी थीं और कुतूज़ोव को अपनी दुर्बल तथा थकी-हारी सेना पर ही भरोसा करना पड़ रहा था। वियना की रक्षा करने की तो अब बात भी नहीं सोची जा सकती थी। जवाबी हमले के बजाय, जिसकी समर-विद्या के नवीनतम नियमों के अनुसार बनायी गयी योजना आस्ट्रियायी होफ़क्रीग्सराथ द्वारा कुतूज़ोव को उस समय दी गयी थी, जब वे वियना में थे, उनके सामने अब एकमात्र और लगभग असम्भव-सा यही लक्ष्य रह गया था कि उल्म के निकट जनरल माक की तरह अपनी सेना को तबाह किये बिना उसे किसी तरह रूस से आ रही सेनाओं से जा मिलायें।

अठाईस अक्तूबर को अपनी सेना के साथ कुतूज़ोव डेन्यूब को पार करके उसके बायें तट पर पहुंच गये और डेन्यूब नदी को अपनी सेना तथा फ़्रांसीसियों की मुख्य सैनिक शक्ति के बीच सीमा-रेखा बनाते हुए पहली बार रुके। तीस अक्तूबर को उन्होंने डेन्यूब के बायें तट पर उपस्थित मोर्त्ये के डिवीज़न पर हमला किया और उसे कुचल डाला। इस लड़ाई में पहली बार दुश्मन की कुछ चीज़ें हाथ लगीं – झण्डा, कुछ तोपें और इनके अलावा दो जनरल भी। दो हफ़्ते तक पीछे हटने के बाद रूसी फ़ौजें पहली बार रुकी थीं और उन्होंने न केवल युद्ध-क्षेत्र में विजय प्राप्त की थी, बल्कि फ़्रांसीसियों को खदेड़ भी दिया था। यद्यपि रूसी फ़ौजें अधनंगी और थकी-हारी थीं तथा पीछे छूट जाने, मौत के घाट उतार दिये जानेवालों और घायलों के कारण एक-तिहाई कम हो गयी थीं, यद्यपि डेन्यूब के उस पार शत्रु के नाम उसकी मानवीयता से अपील करनेवाले कुतूज़ोव के पत्र के साथ रोगियों और घायलों को छोड़ दिया गया था, यद्यपि क्रेम्स के बड़े अस्पतालों और छोटे-

छोटे अस्पतालों में परिवर्तित क्रेम्स के घरों में सभी रोगियों और घायलों के लिये काफ़ी जगह नहीं थी – तथापि इस सब के बावजूद क्रेम्स के निकट रूसी फ़ौजों के पड़ाव और मोर्त्ये पर उनकी जीत ने रूसी फ़ौजों के हौसले बहुत बढ़ा दिये थे। पूरी रूसी सेना और मुख्य सैनिक कार्यालय में बहुत ख़ुशी भरी और बेशक झूठी ये अफ़वाहें फैली हुई थीं कि मानो रूस से आनेवाली फ़ौजें नज़दीक पहुंच रही हैं, कि आस्ट्रियावालों ने कोई जीत हासिल की है और डरा हुआ बोनापार्ट दुम दबाकर भाग रहा है।

इस लड़ाई के दौरान प्रिंस अन्द्रेई आस्ट्रियायी जनरल श्मित के साथ काम कर रहा था जो इस लड़ाई में मारा गया था। प्रिंस अन्द्रेई का घोड़ा भी घायल हो गया था और गोली लगने से उसका हाथ भी ज़रा ज़ख़्मी हो गया था। प्रधान सेनापति की विशेष कृपा के प्रमाण-स्वरूप उसे इस जीत का समाचार देने के लिये आस्ट्रिया के राज-दरबार में भेजा गया था जो अब वियना के बजाय, जहां फ़्रांसीसी उसके लिये ख़तरा पैदा कर रहे थे, ब्रून्न में था। लड़ाई की रात को उत्ते-जित, किन्तु थकान के बिना (देखने में कमज़ोर लगने के बावजूद प्रिंस अन्द्रेई बहुत ही बलवान लोगों से भी ज़्यादा शारीरिक थकान सहन कर सकता था) वह क्रेम्स में कुतूज़ोव के पास दोख़्तुरोव का सन्देश लेकर आया था और उसी रात को उसे सन्देशवाहक के रूप में ब्रून्न भेज दिया गया था। ऐसा कार्यभार सौंपने का अर्थ पुरस्कार के अलावा तरक़्क़ी की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण क़दम भी था।

रात अन्धेरी, सितारों से झिलमिलायी हुई थी। पिछले, लड़ाई के दिन होनेवाले हिमपात की सफ़ेदी के बीच से सड़क की काली रेखा-सी खिंची हुई थी। कभी तो एक दिन पहले की लड़ाई की अनुभूतियों के बारे में सोचते, तो कभी ख़ुशी से उस प्रभाव की कल्पना करते हुए जो जीत की ख़बर से वह पैदा करेगा, तो कभी प्रधान सेनापति और उसके साथियों द्वारा दी गयी विदाई का स्मरण करते हुए तेज़ी से डाक-घोड़ा-गाड़ी में जा रहे प्रिंस अन्द्रेई को उस व्यक्ति की भावना की अनुभूति हो रही थी जो बहुत समय तक अपने वांछित सुख-सौभाग्य की प्रतीक्षा करते रहने के बाद उसके आरम्भ-बिन्दु तक पहुंच जाता है। आंखें मूंदते ही उसके कानों में बन्दूक़ों और तोपों की ठांय-ठांय और धांय-धांय गूंजने लगती जो पहियों की आवाज़ और विजय की सुखद अनुभूति

से घुल-मिल जाती। कभी उसे ऐसा लगता कि रूसी भाग रहे हैं और वह ख़ुद मारा गया है। किन्तु वह जल्दी से चौंककर जागता और ख़ुश होते हुए मानो फिर से यह जान जाता कि ऐसा कुछ नहीं हुआ, बल्कि इसके विपरीत, फ़्रांसीसी मैदान छोड़कर भाग गये हैं। उसे जीत की सभी तफ़सीलों और लड़ाई के समय अपने शान्तिपूर्ण साहस की फिर से याद हो आती और वह शान्त होकर फिर से ऊंघने लगता... तारों भरी अन्धेरी रात के बाद उज्ज्वल और सुखद प्रभात आया। धूप में बर्फ़ पिघल रही थी, घोड़े तेज़ी से दौड़ रहे थे और दायें-बायें लगातार नये-नये तथा विविधतापूर्ण वन, मैदान और गांव सामने आते जा रहे थे।

घोड़ा-गाड़ी की एक चौकी पर वह रूसी घायल सैनिकों को ले जानेवाली घोड़ा-गाड़ियों के पास पहुंच गया। इन घोड़ा-गाड़ियों का इंचार्ज रूसी अफ़सर सबसे आगेवाली घोड़ा-गाड़ी में आराम से लेटा था और सैनिकों को भद्दे शब्दों में कुछ भला-बुरा कहता हुआ चिल्ला रहा था। प्रत्येक जर्मन ढंग की लम्बी घोड़ा-गाड़ी में पीले चेहरोंवाले पट्टियां बंधे और गन्दे-मन्दे छः या इससे कुछ अधिक घायल सैनिक पथरीली सड़क पर झटके खाते जा रहे थे। उनमें से कुछ बातचीत कर रहे थे (उसे रूसी बोली सुनायी दी), कुछ रोटी खा रहे थे और जो बहुत ही बुरी तरह घायल थे, वे बाल-सुलभ विनीत और क्लान्त रुचि से अपने निकट से बहुत तेज़ी से बढ़े जा रहे सैनिक सन्देशवाहक को देख रहे थे।

प्रिंस अन्द्रेई ने घोड़ा-गाड़ी रोकने का आदेश दिया और एक सैनिक से पूछा कि वे किस लड़ाई में घायल हुए हैं।

"दो दिन पहले डेन्यूब की लड़ाई में," सैनिक ने जवाब दिया। प्रिंस अन्द्रेई ने बटुआ निकाला और सैनिक को सोने के तीन रूबल दिये।

"ये सभी के लिये हैं," उसने अपने पास आनेवाले अफ़सर से यह भी कह दिया। "अच्छे हो जाओ, जवानो, अभी बहुत कुछ करना बाक़ी है।"

"श्रीमान एडजुटेंट, कैसे समाचार हैं?" स्पष्टतः बातचीत करने के इच्छुक अफ़सर ने पूछा।

"शुभ समाचार हैं! बढ़ाओ गाड़ी!" उसने पुकारकर कोचवान से कहा और उसकी घोड़ा-गाड़ी तेज़ी से आगे बढ़ गयी।

प्रिंस अन्द्रेई जब ब्रून्न पहुंचा और उसने अपने को ऊंची-ऊंची इमारतों, दुकानों की रोशनियों, घरों की रोशन खिड़कियों और सड़क के लैम्पों, पक्की सड़कों पर पहियों की आवाज़ पैदा करती सुन्दर बग्घियों और चहल-पहलवाले बड़े शहर के वातावरण में पाया, जो सैनिक-शिविर के जीवन के बाद फ़ौजी आदमी को हमेशा बहुत अच्छा लगता है, तो बिल्कुल अन्धेरा हो चुका था। उतावली की यात्रा और उनींदी रात के बावजूद महल के नज़दीक पहुंचते हुए प्रिंस अन्द्रेई पिछली शाम की तुलना में अधिक उत्साहपूर्ण था। केवल आंखें ही तेज़ी से चमक रही थीं और विचार बहुत तेज़ी तथा स्पष्टता से बदल रहे थे। लड़ाई की सभी तफ़सीलें बड़ी सजीवता और किसी प्रकार के धुंधलेपन के बिना बहुत सुस्पष्टता और उस नपे-तुले ढंग से सामने आ रही थीं जैसे वह सम्राट फ़्रांसिस के सम्मुख उन्हें प्रस्तुत करनेवाला था। वह प्रसंगवश पूछे जा सकनेवाले प्रश्नों और उन उत्तरों की भी, जो वह देगा, स्पष्ट कल्पना कर रहा था। उसका ख़्याल था कि उसे फ़ौरन ही सम्राट के सामने पेश किया जायेगा। किन्तु महल के बड़े दरवाज़े के नज़दीक एक अफ़सर भागता हुआ उसके पास आया और यह जानकर कि वह सन्देशवाहक है, उसने उसे दूसरे दरवाज़े की तरफ़ भेज दिया।

"हुज़ूर, दालान के दायीं ओर आपको ड्यूटीवाला एडजुटेंट दिखायी देगा," अफ़सर ने उससे कहा। "वह आपको युद्ध-मन्त्री के पास ले जायेगा।"

ड्यूटीवाले एडजुटेंट ने प्रिंस अन्द्रेई से मिलने के बाद उससे कुछ देर इन्तज़ार करने को कहा और युद्ध-मन्त्री के कमरे में गया।

ड्यूटीवाला एडजुटेंट पांच मिनट बाद लौटा और विशेष शिष्टता से सिर झुकाकर तथा प्रिंस अन्द्रेई से आदरपूर्वक अपने आगे-आगे चलने का अनुरोध करके दालान से गुज़रकर उस कमरे में ले गया जहां युद्ध-मन्त्री अपने काम में व्यस्त था। ऐसे प्रतीत हुआ कि ड्यूटीवाले एडजुटेंट ने अपनी विशेष शिष्टता से रूसी एडजुटेंट द्वारा किसी तरह की बेतकल्लुफ़ी दिखाने की कोशिश से अपने को बचाना चाहा था। युद्ध-मन्त्री के कमरे के दरवाज़े के पास पहुंचते हुए प्रिंस अन्द्रेई की ख़ुशी की भावना काफ़ी कम हो गयी थी। उसे अनुभव हुआ कि उसका अपमान किया गया है और अपमान की यह भावना उसकी चेतना के बिना उसी क्षण तिरस्कार की भावना में बदल गयी जिसका

कोई आधार नहीं था। उसकी प्रखर बुद्धि ने उसी क्षण उसके सामने वह दृष्टिकोण प्रस्तुत कर दिया जिसके अनुसार उसे एडजुटेंट और युद्ध-मन्त्री को तिरस्कारपूर्वक देखने का अधिकार था। "शायद इन्हें बारूद की गंध सूंघे बिना जीतें हासिल करना बहुत आसान लगता है!" उसने सोचा। उसकी आंखें तिरस्कार से सिकुड़ गयीं और वह ख़ास तौर पर बहुत ही धीरे-धीरे युद्ध-मन्त्री के कमरे में दाख़िल हुआ। तिर-स्कार की यह भावना उस समय और भी अधिक प्रबल हो गयी, जब उसने बड़ी मेज़ के पीछे बैठे युद्ध-मन्त्री को देखा जिसने पहले दो मिनट तक तो आगन्तुक की ओर कोई ध्यान ही नहीं दिया। कनपटियों के पके बालों और गंजी चांदवाला युद्ध-मन्त्री अपने दायें-बायें जलती दो मोमबत्तियों के बीच सिर झुकाये हुए कुछ काग़ज़ पढ़ रहा था और उनपर पेंसिल से निशान लगा रहा था। उसने दरवाज़ा खुलने और क़दमों की आहट होने पर भी सिर ऊपर नहीं उठाया और उन्हें अन्त तक पढ़ना जारी रखा।

"इन्हें ले जाकर दे दीजिये," युद्ध-मन्त्री ने अपने एडजुटेंट को काग़ज़ पकड़ाते और सन्देशवाहक की ओर अभी भी कोई ध्यान न देते हुए कहा।

प्रिंस अन्द्रेई ने अनुभव किया कि या तो युद्ध-मन्त्री की दिलचस्पी के सभी मामलों में कुतूज़ोव की सेना की गति-विधियों के बारे में उसकी सबसे कम रुचि थी या फिर वह रूसी सन्देशवाहक को ऐसा महसूस करवाना चाहता था। "ख़ैर, मेरी बला से," उसने सोचा। युद्ध-मन्त्री ने बाक़ी सभी काग़ज़ों को एक तरफ़ हटा दिया, उन्हें ढंग से ठीक-ठाक किया और फिर सिर ऊपर उठाया। उसका बुद्धिमत्तापूर्ण और चारित्रिक दृढ़तावाला मस्तक था। किन्तु युद्ध-मन्त्री ने जैसे ही प्रिंस अन्द्रेई की ओर ध्यान दिया, उसके चेहरे का बुद्धिमत्तापूर्ण और दृढ़ भाव सम्भवतः ऐसे बदल गया मानो यह उसकी आदत हो और वह जान-बूझकर ऐसा करता हो। उसके चेहरे पर ऐसे व्यक्ति की मूर्ख-तापूर्ण और बनावटी मुस्कान (जिसके बनावटीपन को वह छिपा नहीं रहा था) अंकित होकर रह गयी जिसके पास एक के बाद एक अनेक आवेदक आते रहते हों।

"जनरल फ़ील्ड-मार्शल कुतूज़ोव का सन्देश लेकर आये हैं?" उसने पूछा। "आशा करता हूं कि कोई अच्छी ख़बर लाये हैं? मोर्त्ये

के साथ मुठभेड़ हुई? जीत हासिल की गयी? आख़िर अब तो ऐसा होना ही चाहिये था!"

उसने अपने नाम भेजा गया पत्र ले लिया और उदास-सा मुंह बनाकर उसे पढ़ने लगा।

"हे भगवान! हे भगवान! श्मित!" उसने जर्मन भाषा में कहा। "कैसा दुर्भाग्य है यह, कैसा दुर्भाग्य!"

पत्र पर जल्दी से नज़र दौड़ाकर उसने उसे मेज़ पर रख दिया और स्पष्टतः कुछ सोचते हुए प्रिंस अन्द्रेई की तरफ़ देखा।

"ओह, कैसा दुर्भाग्य है यह! आपका कहना है कि यह निर्णायक लड़ाई रही? फिर भी मोर्त्ये हाथ नहीं आया।" (उसने कुछ सोचा।) "बहुत अच्छा है कि आप ख़ुशख़बरी लेकर आये, यद्यपि श्मित की मृत्यु इस विजय की बहुत बड़ी क़ीमत है। हमारे परम श्रेष्ठ सम्राट भी सम्भवतः आपसे मिलना चाहेंगे, किन्तु आज नहीं। आपका आभारी हूं, अब आप आराम कीजिये। कल परेड के बाद दरबार में पधारियेगा। वैसे, मैं आपको सूचित करवा दूंगा।"

बातचीत के समय युद्ध-मन्त्री के चेहरे से ग़ायब हो जानेवाली मूर्खतापूर्ण मुस्कान फिर से प्रकट हो गयी।

"फिर मिलेंगे, बहुत बहुत धन्यवाद। हमारे परम श्रेष्ठ सम्राट भी सम्भवतः आपसे मिलना चाहेंगे," उसने दोहराया और सिर भुका-या।

प्रिंस अन्द्रेई यह अनुभव करते हुए महल से बाहर आया कि विजय से सम्बन्धित सारी दिलचस्पी और ख़ुशी अब उसने युद्ध-मन्त्री और उसके शिष्ट एडजुटेंट के पास छोड़ दी है, उनके उदासीन हाथों में सौंप दी है। उसकी विचार-दिशा फ़ौरन बदल गयी। लड़ाई उसे बहुत पुरानी, बहुत पहले की स्मृति-सी प्रतीत होने लगी।

१०

ब्रून्न में प्रिंस अन्द्रेई अपने एक परिचित, रूसी राजनयिक बिलीबिन के यहां ठहरा।

"भाई वाह, मेरे प्यारे प्रिंस, आपसे अधिक अच्छे मेहमान की मैं कल्पना ही नहीं कर सकता था," प्रिंस अन्द्रेई के स्वागत के लिये बाहर आते हुए बिलीबिन ने कहा। "फ़्रांज़, प्रिंस का सामान मेरे सोने के कमरे में ले जाओ," उसने बोल्कोन्स्की को लिवा लानेवाले अपने नौकर से कहा। "विजय-दूत बनकर आये हैं? बहुत ख़ूब। और मैं, जैसा कि आप देख रहे हैं, बीमारी की वजह से घर में बैठा हूं।"

प्रिंस अन्द्रेई हाथ-मुंह धोकर और कपड़े बदलकर राजनयिक के शानदार कमरे में आया और अपने लिये तैयार किये गये भोजन की मेज़ पर जा बैठा। बिलीबिन बड़े चैन से अंगीठी के पास बैठ गया।

प्रिंस अन्द्रेई ने न केवल अपनी यात्रा, बल्कि फ़ौजी कूच के पूरे समय के बाद, जिसके दौरान वह साफ़-सुथरे जीवन की सभी सुविधाओं और नफ़ासतों से वंचित रहा था, ज़िन्दगी की उन ऐश्वर्यपूर्ण परिस्थितियों में जिनका वह बचपन से आदी था, आराम-चैन की मधुर भावना अनुभव की। इसके अलावा आस्ट्रियावालों के स्वागत के बाद उसके लिये रूसी व्यक्ति से बात करना, बेशक रूसी में नहीं (क्योंकि वे फ़्रांसीसी में बातचीत कर रहे थे), सुखद था, क्योंकि वह समझता था कि उसे वह आस्ट्रियावालों के प्रति रूसियों की साझी घृणा (जिसे वह अब विशेष रूप से अनुभव कर रहा था) का भागीदार बना सकेगा।

बिलीबिन पैंतीस साल का अविवाहित और प्रिंस अन्द्रेई जैसी ऊंची सोसाइटी से सम्बन्ध रखनेवाला आदमी था। वे पीटर्सबर्ग में ही एक-दूसरे से परिचित थे, किन्तु कुछ ही समय पहले कुतूज़ोव के साथ प्रिंस अन्द्रेई की वियना-यात्रा के समय इनकी जान-पहचान और अधिक घनिष्ठ हो गयी थी। जैसे प्रिंस अन्द्रेई सैन्य-सेवा में बहुत उन्नति करने की आशा बंधवाता था, वैसे ही बिलीबिन कूटनीतिक सेवा में और भी आगे जाने की उम्मीद पैदा करता था। वह अभी जवान, मगर राजनयिकता की दृष्टि से काफ़ी अनुभवी व्यक्ति था। वह सोलह साल की उम्र से इस क्षेत्र में काम करने लगा था, पेरिस और कोपेनहैगन में काम कर चुका था और अब वियना में उसका ख़ासा महत्त्वपूर्ण पद था। चांसलर और वियना में हमारा राजदूत उसे अच्छी तरह से जानते थे और विशेष महत्त्व देते थे। वह उन बहुसंख्यक राजनयिकों में से नहीं था जिनमें अनिवार्य रूप से नकारात्मक गुण होने चाहिये, जिन्हें कुछ ख़ास चीज़ें नहीं करनी चाहिये और बहुत अच्छे राजनयिक होने

के लिये ही फ़्रांसीसी बोलनी चाहिये। वह उन राजनयिकों में से था जो अपने काम को प्यार करते हैं और उसे ढंग से कर सकते हैं तथा अपनी काहिली के बावजूद वह कभी-कभी रात भर अपनी मेज़ पर बैठा काम करता रहता था। काम कैसा ही क्यों न हो, वह उसे बहुत अच्छी तरह से करता था। उसके लिये "क्यों?" नहीं, बल्कि "कैसे?" प्रश्न अधिक महत्त्व रखता था। कूटनीतिक मामला क्या था, उसके लिये इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता था, किन्तु बड़ी कुशलता, सटीकता और सुन्दरता से कोई परिपत्र, नोट या रिपोर्ट तैयार करने में उसे बड़ा मज़ा आता था। केवल लेखनी के करिश्मे के लिये ही नहीं, बल्कि उच्च क्षेत्रों में लोगों से मिलने-जुलने और बातचीत करने की उसकी कला के लिये भी उसका ऊंचा मूल्यांकन किया जाता था।

बिलीबिन काम की तरह बातचीत करना भी पसन्द करता था, लेकिन सिर्फ़ तभी, जब उसमें मंजी हुई हाज़िरजवाबी का पुट आने की सम्भावना होती। सोसाइटी में वह हमेशा कोई मार्के की बात कहने के मौक़े की ताक में रहता और केवल ऐसी ही परिस्थितियों में बातचीत में हिस्सा लेता। बिलीबिन की बातों में हमेशा ही मौलिक हाज़िरजवाबी और सभी को दिलचस्प लगनेवाले मंजे-मंजाये वाक्य होते। ये वाक्य उसके मन की प्रयोगशाला में मानो जानते-बूझते ऐसे अच्छे रूप में तैयार हो जाते थे कि सोसाइटी के तुच्छ से तुच्छ व्यक्तियों को भी आसानी से याद हो जायें और एक ड्राइंगरूम से दूसरे में पहुंचते रहें। और वास्तव में ही बिलीबिन की दिलों में उतर जानेवाली ये टिप्पणियां वियना के ड्राइंगरूमों में चक्कर काटती रहती थीं और अक्सर तथा-कथित महत्त्वपूर्ण मामलों पर अपना असर डालती थीं।

बिलीबिन के दुबले-पतले, क्लान्त और पीले चेहरे पर बड़ी-बड़ी झुर्रियां पड़ी हुई थीं जो नहाने के बाद उंगलियों के सिरों की भांति हमेशा बहुत साफ़ और अच्छी तरह से धुली-धुलायी होती थीं। इन झुर्रियों का उतार-चढ़ाव ही मुख्यतः उसके चेहरे के भावों को अभिव्यक्ति देता था। कभी तो उसके मस्तक पर चौड़ी-चौड़ी झुर्रियां उभर आतीं, भौंहें ऊपर को चढ़ जातीं, कभी भौंहें नीचे आ जातीं और गालों के निकट बड़े-बड़े बल पड़ जाते। उसकी गहरी, छोटी-छोटी आंखें हमेशा झिझक के बिना सीधे दूसरे की आंखों में देखतीं और उनमें ख़ुशी की चमक बनी रहती।

"तो अब अपने बहादुरी के कारनामे के बारे में बताइये," उसने कहा।

बोल्कोन्स्की ने बहुत ही विनम्रता से, एक बार भी अपना उल्लेख किये बिना लड़ाई का हाल सुनाया और यह बताया कि युद्ध-मन्त्री ने कैसे उसका स्वागत किया।

"इस समाचार के साथ उन्होंने मेरा वैसे ही स्वागत किया जैसे मज़ेदार खेल के मैदान में कुत्ते का स्वागत होता है," उसने बात ख़त्म करते हुए कहा।

बिलीबिन मुस्कराया और उसके चेहरे पर पड़े हुए बल ग़ायब हो गये।

"लेकिन, मेरे प्यारे दोस्त," उसने अपने नाखूनों को दूर से देखते और बायीं आंख के ऊपर बल डालते हुए कहा, "ईसाई धर्म की अनुयायी रूसी सेना के प्रति अपने अत्यधिक आदर भाव के बावजूद मैं यह समझता हूं कि आपकी जीत कुछ बहुत शानदार नहीं थी।"

वह फ़्रांसीसी भाषा में ही अपनी बात कहता रहा था और रूसी शब्दों का केवल तभी उपयोग करता था, जब किसी चीज़ पर घृणापूर्वक ज़ोर देना चाहता था।

"आप यह जानना चाहेंगे कि क्यों वह शानदार नहीं थी? इसलिये कि आप इतनी बड़ी फ़ौज के साथ बदक़िस्मत मोर्त्ये के एक डिवीज़न पर टूट पड़े और वह मोर्त्ये भी आपके हाथ नहीं आया? यह क्या जीत हुई?"

"ख़ैर, अगर संजीदगी से बात की जाये," प्रिंस अन्द्रेई ने जवाब दिया, "तो किसी तरह की डींग हांके बिना हम इतना तो कह ही सकते हैं कि यह उल्म से बेहतर है..."

"आप एक, बेशक एक ही मार्शल को गिरफ़्तार कर लाते। क्यों इतना भी नहीं कर सके?"

"इसलिये कि सब कुछ वैसे ही नहीं होता, जैसे हम पहले से अनुमान लगाते हैं और परेड की तरह नपे-तुले ढंग से भी नहीं। जैसे कि मैं कह चुका हूं, हमें आशा थी कि हम सुबह के सात बजे उनके पिछवाड़े में घुस जायेंगे, लेकिन शाम के पांच बजे तक ऐसा नहीं कर पाये।"

"क्यों नहीं घुस सके सुबह के सात बजे? आपको सुबह के सात

बजे घुसना चाहिये था," बिलीबिन ने मुस्कराते हुए कहा, "सुबह के सात बजे घुसना चाहिये था।"

"आपने कूटनीतिक ढंग से बोनापार्ट के दिमाग़ में यह बात क्यों नहीं डाली कि उसके लिये गेनुआ से दूर रहना ही बेहतर होगा?" प्रिंस अन्द्रेई ने बिलीबिन के लहजे में ही सवाल किया।

"मैं जानता हूं," बिलीबिन ने उसे टोका, "आप सोचते हैं कि अंगीठी के पास सोफ़े पर बैठकर मार्शलों को गिरफ़्तार करने की बात बड़ी आसान है। यह सही है, फिर भी आपने उसे गिरफ़्तार क्यों नहीं किया? और इस बात से भी हैरान नहीं होइयेगा कि केवल युद्ध-मन्त्री ही नहीं, बल्कि हमारे सम्राट और बादशाह फ़्रांसिस भी आपकी इस विजय से बहुत ख़ुश नहीं होंगे। और तो और, रूसी दूतावास का मैं, बदक़िस्मत सेक्रेटरी भी कोई ख़ास ख़ुशी महसूस नहीं कर रहा हूं..."

उसने प्रिंस अन्द्रेई से आंखें मिलायीं और अचानक उसके माथे पर पड़ा हुआ बल ग़ायब हो गया।

"मेरे प्यारे, अब मेरी बारी है आपसे सवाल पूछने की," बोल्कोन्स्की ने कहा। "मैं स्वीकार करता हूं कि मैं यह समझने में असमर्थ हूं और शायद इसमें मेरी तुच्छ बुद्धि से परे की कोई राजनीतिक बारीकी छिपी हो, लेकिन मैं यह समझने में असमर्थ हूं–जनरल माक ने पूरी फ़ौज ही खो दी, बड़ा ड्यूक फ़र्डीनंड और बड़ा ड्यूक कार्ल अपने अस्तित्व का कोई चिह्न तक नहीं प्रकट करते और एक के बाद एक भूल करते जाते हैं और आख़िर तो केवल कुतूज़ोव ही एक वास्तविक विजय प्राप्त करते हैं तथा फ़्रांसीसियों की जीतों का जादू तोड़ते हैं और युद्ध-मन्त्री लड़ाई की तफ़सीलों तक में कोई दिलचस्पी नहीं लेता!"

"इस कारण, मेरे प्यारे, कि यह ज़ार के लिये, रूस और धर्म के लिये हुर्रा है! यह सब तो बहुत बढ़िया है, लेकिन हमें, मेरा मतलब यह है कि आस्ट्रियायी राजदरबार को आपकी जीतों से क्या लेना-देना है? आप यहां, हमारे पास बड़े ड्यूक कार्ल या फ़र्डीनंड की (जैसा कि आप जानते हैं कि वे दोनों समान हैं) अच्छी ख़बर लाइये, बेशक यह बोनापार्ट के आग बुझानेवालों पर विजय पाने की ही ख़बर हो, तब दूसरी बात होगी, तब हम तोपों की सलामी देंगे। लेकिन इस तरह तो आप मानो जान-बूझकर हमारा मुंह चिढ़ाते हैं। बड़ा ड्यूक कार्ल कुछ नहीं करता, बड़ा ड्यूक फ़र्डीनंड अपनी मिट्टी पलीद करवा रहा है।

वियना की आपने अवहेलना कर दी, उसकी रक्षा नहीं करते मानो कह दिया हो कि भगवान हमारा भला करे और तुम तथा तुम्हारी राजधानी जाये भाड़ में। एक जनरल, जिसे हम सभी प्यार करते थे, उस जनरल श्मित को भी आपने गोली का निशाना बनवा दिया और फिर आप हमारे पास विजय की बधाई लेकर आते हैं!.. आपको यह मानना होगा कि आप जो ख़बर लाये हैं, उससे ज़्यादा झल्लाहट पैदा करने-वाली कोई दूसरी ख़बर नहीं हो सकती थी। यह तो मानो जान-बूझकर, हां, जान-बूझकर किया गया हो। इसके अलावा अगर आपने सचमुच शानदार जीत हासिल कर ली होती, बड़े ड्यूक कार्ल ने भी विजय प्राप्त की होती तो भी क्या इससे हालात का आम रुख़ बदल सकता था? अब, जबकि वियना पर फ़्रांसीसी फ़ौजों का क़ब्ज़ा हो चुका है, ऐसे परिवर्तन के लिये देर हो चुकी है।"

"क़ब्ज़ा हो चुका है? वियना पर क़ब्ज़ा हो चुका है?"

"क़ब्ज़ा ही नहीं हो चुका है, बल्कि बोनापार्ट शेनब्रून्न में है और काउंट, हमारा प्यारा काउंट व्रब्ना* आदेश लेने के लिये उसके पास जा रहा है।"

थकान तथा यात्रा के प्रभावों, महल के स्वागत और विशेषतः भोजन के बाद बोल्कोन्स्की यह अनुभव कर रहा था कि उसने जो शब्द सुने हैं, उनका पूरा महत्त्व नहीं समझ पा रहा है।

"काउंट लीख़्टेनफ़ेल्ज़ आज सुबह यहां आया था," बिलीबिन कहता गया, "और उसने मुझे वह ख़त दिखाया जिसमें वियना में फ़्रांसीसियों की परेड का सविस्तार वर्णन किया गया है। प्रिंस म्युराट और दूसरी सभी चीज़ों का... तो आप देख रहे हैं कि आपकी जीत कोई बहुत ज़्यादा ख़ुशी देनेवाली तो नहीं और इसलिये रक्षक के रूप में आपका आदर-सत्कार नहीं हो सकता..."

"सच कहता हूं, मुझे इसकी कुछ परवाह नहीं, कुछ भी परवाह नहीं!" प्रिंस अन्द्रेई ने कहा। उसने अब यह समझना आरम्भ कर दिया था कि आस्ट्रिया की राजधानी पर फ़्रांसीसियों के क़ब्ज़े जैसी महत्त्वपूर्ण घटनाओं को ध्यान में रखते हुए क्रेम्स के निकट लड़ाई की

---

* आस्ट्रियायी राजनीतिक कार्यकर्त्ता जिसने १८०५ में वियना पर नेपोलियन के क़ब्ज़े के बाद फ़्रांस के साथ आस्ट्रियायी सरकार से बातचीत में भाग लिया। – सं०

ख़बर वास्तव में ही कोई ख़ास महत्त्व नहीं रखती थी। "वियना पर क़ब्ज़ा कैसे हो गया? पुल, मशहूर क़िलेबन्दी और प्रिंस आउएरस्पेर्ग का क्या हुआ? हमें उड़ती-उड़ती यह ख़बर मिली थी कि प्रिंस आउएर-स्पेर्ग वियना की रक्षा कर रहा है," उसने कहा।

"प्रिंस आउएरस्पेर्ग डेन्यूब नदी के इस ओर, हमारे तट पर है और हमारी रक्षा कर रहा है। मेरे ख़्याल में बहुत बुरे ढंग से रक्षा कर रहा है, फिर भी कर रहा है। लेकिन वियना तो नदी के उस ओर है। पुल पर अभी तक दुश्मन का क़ब्ज़ा नहीं हुआ और मैं उम्मीद करता हूं कि ऐसा होगा भी नहीं, क्योंकि उसमें माइनें बिछी हुई हैं और उसे उड़ा देने का हुक्म दिया गया है। अगर ऐसा न होता तो हम कभी के बोहिम्या के पहाड़ों में होते और आपकी फ़ौज ने दो-तरफ़ा गोलाबारी का सामना करते हुए बहुत बुरे कोई पन्द्रह मिनट बिताये होते।"

"लेकिन इसका यह मतलब तो फिर भी नहीं निकलता कि जंग ख़त्म हो गयी," प्रिंस अन्द्रेई ने कहा।

"मैं तो यही सोचता हूं कि जंग ख़त्म हो गयी। यहां के महत्त्वपूर्ण लोग भी ऐसा ही समझते हैं, मगर कहने की हिम्मत नहीं करते। जंगी कार्रवाइयों के शुरू में मैंने जो कुछ कहा था, वही होगा, कि ड्यूरेन्स्टेन में आपकी मुठभेड़, कुल मिलाकर बारूद से मामला तय नहीं होगा, बल्कि इसे वे लोग तय करेंगे जिन्होंने इसका आविष्कार किया है," अपने माथे के बल हटाते और ज़रा रुकते हुए बिलीबिन ने अपना एक फड़कता हुआ वाक्य दोहराया। "प्रश्न केवल यह है कि प्रशा के बादशाह के साथ सम्राट अलेक्सान्द्र की बर्लिन में होनेवाली मुलाक़ात का क्या नतीजा निकलता है। अगर प्रशा मित्र-राष्ट्र बन जाता है तो आस्ट्रिया भी मजबूर हो जायेगा और युद्ध होगा। अगर ऐसा नहीं होता तो सिर्फ़ यही तय करना रह जायेगा कि नये Campo Formio (शान्ति-संधि) की पहली धारायें कहां लिखी जायें।"

"किन्तु कितना असाधारण रूप से प्रतिभाशाली है वह!" प्रिंस अन्द्रेई अचानक अपने छोटे-से हाथ की मुट्ठी भींचते और उसे ज़ोर से मेज़ पर मारते हुए चिल्ला उठा। "और कैसा तक़दीर का सिकन्दर है यह आदमी!"

"बोनापार्ट?" बिलीबिन ने माथे पर बल डालते और इस तरह यह संकेत करते हुए पूछा कि अभी वह कोई फड़कता हुआ

वाक्य कहेगा। "बुओनापार्ट?" उसने बोनापार्ट के फ़्रांसीसी उच्चारण में 'उ' पर विशेष ज़ोर देते हुए कहा।* "मैं समझता हूं कि अब, जबकि वह शेनब्रून्न में बैठा हुआ आस्ट्रिया के क़ानून बनाता है तो उसे 'उ' से मुक्त कर देना चाहिये। मैंने तो एक अभिनव परिवर्तन करने का पक्का इरादा बना लिया है और उसे केवल बोनापार्ट ही कहूंगा।"

"ख़ैर, मज़ाक़ को छोड़िये," प्रिंस अन्द्रेई ने कहा, "क्या आप सचमुच ही ऐसा समझते हैं कि जंग ख़त्म हो गयी?"

"मैं जो समझता हूं, वह यह है। आस्ट्रिया का उल्लू बनाया गया है जिसका वह आदी नहीं। और वह इसका बदला लेगा। उसका उल्लू इस तरह बना है कि उसके प्रान्तीय नगरों को लूट लिया गया। (कहते हैं कि प्राच्य ईसाई धर्म के अनुयायी भयानक लुटेरे हैं), उसकी सेना तबाह हो गयी, राजधानी छिन गयी और यह सब सार्डीनिया के सम्राट की सुन्दर आंखों के लिये हुआ। इसलिये, मेरे प्यारे दोस्त, यह हम दोनों के बीच रहनेवाली बात है, मेरी सहजबुद्धि मुझसे यह कहती है कि हमें धोखा दिया जा रहा है, मेरी सहजबुद्धि मुझसे यह कह रही है कि फ़्रांस के साथ शान्ति-सन्धि, गुप्त सन्धि की, अलग से की जाने-वाली सन्धि की बातचीत चल रही है।"

"ऐसा नहीं हो सकता!" प्रिंस अन्द्रेई कह उठा, "यह तो बहुत ही कमीनापन होगा।"

"वक़्त बतायेगा," बिलीबिन ने उत्तर दिया और फिर से उसके माथे का बल ग़ायब हो गया जिसका मतलब था कि बात ख़त्म हो गयी।

प्रिंस अन्द्रेई जब अपने सोने के लिये तैयार किये गये कमरे में गया और साफ़-सुथरा नाइट-सूट पहने रोयोंवाले नर्म-नर्म बिस्तर पर लेटा तथा महकते हुए गुनगुने तकियों पर सिर टिकाया तो उसने यह अनुभव किया कि वह लड़ाई, जिसकी वह ख़बर लेकर आया था, उससे कहीं दूर, बहुत दूर थी। प्रशा के साथ गठजोड़, आस्ट्रिया की ग़द्दारी, बोनापार्ट की नयी विजय, अगले दिन की परेड और दरबार में

---

* नेपोलियन का असली कुलनाम बुओनापार्ट था, मगर फ़्रांसीसी सेना का मुखिया बन जाने पर वह अपने को फ़्रांसीसी ढंग में बोनापार्ट लिखने लगा। – सं०

सम्राट फ़्रांसिस के साथ उसकी भेंट – यही विचार उसके मस्तिष्क में घूम रहे थे।

उसने आंखें मूंद लीं, किन्तु उसी समय उसके कानों में तोपों की धांय-धांय, बन्दूक़ों की ठांय-ठांय, बग्घी के पहियों की खड़खड़ाहट गूंजने लगी। उसे लगा कि बन्दूक़चियों की एक पतली-सी क़तार पहाड़ी से नीचे उतर रही है, फ़्रांसीसी गोलियां चला रहे हैं, उसने अनुभव किया कि कैसे उसका दिल धड़क रहा है और वह शिमत के साथ घोड़े पर आगे जा रहा है, गोलियां प्रफुल्लता से उसके इर्द-गिर्द सनसना रही हैं तथा उसने ज़िन्दगी की ख़ुशी को, जैसी उसने बचपन से अब तक कभी महसूस नहीं की थी, दस गुना अधिक अनुभव किया।

उसकी आंख खुल गयी।

"हां, यह सब कुछ हुआ था!.." उसने कहा और बालक की भांति ख़ुद अपने पर ख़ुशी से मुस्कराता हुआ जवानी की गहरी नींद सो गया।

११

अगली सुबह को प्रिंस अन्द्रेई बोल्कोन्स्की देर से जागा। हाल ही की बातों को दोहराते हुए उसे सबसे पहले तो यह याद आया कि आज उसे सम्राट फ़्रांसिस की सेवा में उपस्थित होना है, उसे युद्ध-मन्त्री, उसके बहुत ही शिष्ट एडजुटेंट, बिलीबिन और उसके साथ पिछली शाम को हुई बातचीत याद हो आयी। महल में जाने के लिये परेड की पूरी वर्दी पहनने के बाद, जो उसने बहुत समय से नहीं पहनी थी, वह ताज़ादम, उत्साह से परिपूर्ण और सुन्दर तथा पट्टी में हाथ लटकाये हुए बिलीबिन के कमरे में दाखिल हुआ। दूतावास के चार महानुभाव उसके कमरे में उपस्थित थे। प्रिंस इप्पोलीत कुरागिन से, जो दूतावास का सेक्रेटरी था, बोल्कोन्स्की पहले से ही परिचित था और बाक़ी तीन से बिलीबिन ने उसकी जान-पहचान करवा दी।

बिलीबिन के कमरे में उपस्थित ऊंची सोसाइटी के अमीर और हंसमुख जवान लोगों की वियना में और यहां भी एक अलग मण्डली

थी, जिसे इसका भूतपूर्व मुखिया बिलीबिन **हमारी** कहता था। लगभग पूरी तरह से राजनयिकों की इस मण्डली की सम्भवतः अपनी रुचियां थीं जिनका युद्ध और राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं था। ये दिलचस्पियां थीं ऊंची सोसाइटी, कुछ औरतों के साथ उनके सम्बन्धों और दफ़्तरी काम-काज के बारे में। इन महानुभावों ने स्पष्टतः बड़ी ख़ुशी से प्रिंस अन्द्रेई को **अपने** ही के रूप में (यह सम्मान बहुत कम लोगों को दिया जाता था) अपनी मण्डली में शामिल कर लिया। शिष्टता के नाते और बातचीत शुरू करने के लिये उन्होंने सेना और लड़ाई के बारे में उससे कुछ सवाल पूछे और इसके बाद फिर से हंसी-मज़ाक़ और गपशप का दौर शुरू हो गया।

"लेकिन ख़ास तौर पर बढ़िया बात तो यह रही," अपने किसी साथी-राजनयिक के बारे में एक ने कहना शुरू किया, "ख़ास तौर पर बढ़िया बात तो यह रही कि चांसलर ने उससे साफ़ ही यह कह दिया कि लन्दन में उसकी नियुक्ति का अर्थ पदोन्नति है और उसे इसी रूप में इसे समझना चाहिये। अब आप कल्पना कर सकते कि यह सुनने पर उसकी सूरत कैसी रही होगी?.."

"सबसे बुरी बात तो यह है, महानुभावो, कि मैं आपके सामने कुरागिन का भंडाफोड़ कर रहा हूं जो बदक़िस्मती के शिकार इस आदमी की स्थिति से फ़ायदा उठाने जा रहा है, यह डोन-जुआन, यह भयानक आदमी!"

प्रिंस इप्पोलीत कुरागिन ऊंची आरामकुर्सी के हत्थे पर टांगें फैलाये बैठा था। वह खिलखिलाकर हंस दिया।

"तो करो न मेरा भंडाफोड़, करो न," वह बोला।

"ओह, डोन-जुआन! ओह, ज़हरीले नाग!" कई आवाज़ें सुनायी दीं।

"आप नहीं जानते, बोल्कोन्स्की," बिलीबिन ने प्रिंस अन्द्रेई को सम्बोधित किया, "फ़्रांसीसी सेना के सारे ज़ुल्म-सितम (मेरे मुंह से रूसी सेना निकलते-निकलते रह गया) उनके मुक़ाबले में कुछ भी नहीं जो ज़ुल्म इस आदमी ने औरतों पर ढाये हैं।"

"नारी पुरुष की संगिनी है," प्रिंस इप्पोलीत ने कहा और दूरबीनी चश्मे में से अपनी ऊपर उठी हुई टांगों को देखने लगा।

बिलीबिन और इस मण्डली के अन्य **हमारे लोग** इप्पोलीत की

आंखों में झांकते हुए ठहाका मारकर हंस पड़े। प्रिंस अन्द्रेई ने देखा कि यही इप्पोलीत, जिससे वह अपनी पत्नी के कारण लगभग ईर्ष्या करता था, (उसे यह तो मानना ही होगा) इस मित्र-मण्डली का विदूषक था।

"नहीं, मुझे कुरागिन की मज़ेदार बातों से आपका जी ख़ुश करना ही होगा," बिलीबिन ने धीमी आवाज़ में बोल्कोन्स्की से कहा। "वह जब राजनीति के प्रश्नों पर विचार-विमर्श करता है, तब तो कमाल ही हो जाता है, उसकी गम्भीरता देखते ही बनती है।"

वह इप्पोलीत के पास जा बैठा और माथे पर बल डालकर उसके साथ राजनीति की बातें करने लगा। प्रिंस अन्द्रेई और बाक़ी लोगों ने इन्हें घेर लिया।

"बर्लिन का मन्त्रिमण्डल सैनिक गठबन्धन के बारे में अपना मत प्रकट नहीं कर सकता," इप्पोलीत ने बड़ी शान से सभी पर नज़र डालते हुए कहना शुरू किया, "यह व्यक्त किये बिना... जैसा कि उसके आख़िरी नोट में है... आप समझते हैं, समझते हैं... और फिर अगर महामान्य सम्राट हमारे सैनिक गठबन्धन के सिद्धान्त को रद्द नहीं कर देंगे..."

"ज़रा रुक जाइये, मैंने अभी अपनी बात ख़त्म नहीं की," प्रिंस अन्द्रेई का हाथ पकड़ते हुए उसने कहा। "मैं समझता हूं कि हस्तक्षेप न करने के बजाय हस्तक्षेप करना अधिक दीर्घकालीन सिद्ध होगा। और..." वह रुका, "२८ नवम्बर के हमारे सन्देश* के न मिलने से मामले को समाप्त समझना सम्भव नहीं। तो इस तरह यह सब समाप्त होगा।"

और उसने बोल्कोन्स्की का हाथ छोड़ दिया तथा इस प्रकार यह ज़ाहिर किया कि वह पूरी तरह अपनी बात कह चुका है।

"डेमोसथेन्स**, तुम्हें मैं उसी कंकड़ से पहचान पाता हूं जो तुम

---

* ज़ार अलेक्सान्द्र प्रथम के जिस सन्देश का यहां उल्लेख है, वह वास्तव में ही आउस्टेरलिट्ज़ की लड़ाई के बाद बर्लिन भेजा गया था। अलेक्सान्द्र प्रथम ने प्रशा के बादशाह को फिर से लड़ाई में शामिल होने को प्रेरित किया था, किन्तु प्रशा ने नेपोलियन से शान्ति-सन्धि कर ली थी। – सं०

** ऐसा माना जाता है कि प्रसिद्ध प्राचीन यूनानी वक्ता डेमोसथेन्स जवानी के दिनों में अपना उच्चारण शुद्ध करने के लिये मुंह में कंकड़ रखकर अभ्यास किया करता था। – सं०

अपने सोने के होंठों के बीच छिपाये रहते हो!" बिलीबिन ने कहा जिसका बालों का भारी गुच्छा ख़ुशी के कारण आगे की ओर खिसक आया था।

सभी ज़ोर से हंस पड़े। इप्पोलीत सबसे ज़्यादा ज़ोर से हंसा। स्पष्टतः उसे ऐसा करने में कष्ट हो रहा था, वह हांफ रहा था, मगर ऐसे ठहाका लगाये बिना न रह सका जिससे उसका हमेशा शान्त रहनेवाला चेहरा तन गया।

"तो महानुभावो," बिलीबिन ने कहा, "बोल्कोन्स्की यहां घर में भी और ब्रून्न में भी मेरा मेहमान है और मैं यथाशक्ति उसे यहां के जीवन का रसास्वादन करवाना चाहता हूं। अगर हम वियना में होते तो मामला बड़ा आसान था, लेकिन यहां, इस मोरावियाई क़स्बे में ऐसा करना कहीं ज़्यादा मुश्किल है। इसलिये मैं आप सबसे मदद करने का अनुरोध करता हूं। ब्रून्न में इसकी ख़ूब ख़ातिरदारी होनी चाहिये। आप थियेटरों की ज़िम्मेदारी लीजिये, मैं सोसाइटी की और ज़ाहिर है, इप्पोलीत आप औरतों की।"

"इसे अमेली से मिलाना चाहिये, क्या ग़ज़ब की औरत है!" इनमें से एक ने उंगलियों के सिरे चूमते हुए कहा।

"कुल मिलाकर यह कि ख़ून के प्यासे इस फ़ौजी का कुछ अधिक मानवीय चीज़ों की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहिये," बिलीबिन ने कहा।

"शायद ही मैं आपकी मेहमाननवाज़ी का लुत्फ़ ले सकूंगा, महानुभावो! और अब मुझे जाना चाहिये," घड़ी पर नज़र डालते हुए बोल्कोन्स्की ने कहा।

"कहां?"

"सम्राट के यहां।"

"ओ, हो! हो... हो!"

"तो फिर मिलेंगे, बोल्कोन्स्की! फिर मिलेंगे, प्रिंस, भोजन करने के लिये जल्दी आ जाइयेगा," कई आवाज़ें सुनायी दीं। "हम आपकी ख़ूब ख़ातिरदारी करेंगे।"

"सम्राट से बातचीत करते समय, जहां तक सम्भव हो, रसद और सेना-मार्गों की अधिक से अधिक प्रशंसा करने का यत्न कीजिये," उसे दरवाज़े तक पहुंचाने के लिये साथ जाते हुए बिलीबिन ने ताकीद की।

"मैं तारीफ़ करना तो चाहता हूं, लेकिन मुझे लगता है कि कर नहीं पाऊंगा," बोल्कोन्स्की ने मुस्कराते हुए जवाब दिया।

"ख़ैर, जहां तक सम्भव हो ज़्यादा बातें कीजिये। उसे बातें सुनने का बड़ा चस्का है, मगर ख़ुद बोलना पसन्द नहीं और वह ऐसा करना भी नहीं जानता। आप यह स्वयं देख लेंगे।"

१२

दरबार के वक़्त सम्राट फ़्रांसिस ने आस्ट्रियायी अफ़सरों के बीच नियत स्थान पर खड़े प्रिंस अन्द्रेई के चेहरे को सिर्फ़ ग़ौर से देखा और उसकी ओर अपना लम्बा-सा सिर झुका दिया। किन्तु दरबार के बाद पिछले दिन के एडजुटेंट ने बड़ी शिष्टता से उसे सूचित किया कि सम्राट उससे मिलना चाहते हैं। सम्राट फ़्रांसिस ने कमरे के बीचोंबीच खड़े हुए उसका स्वागत किया। प्रिंस अन्द्रेई को इस बात की हैरानी हुई कि बातचीत शुरू करने से पहले सम्राट मानो झेंप रहा था, यह नहीं जानता था कि क्या कहे और उसके चेहरे पर लाली दौड़ गयी थी।

"यह बताइये कि लड़ाई कब शुरू हुई थी?" उसने जल्दी से पूछा।

प्रिंस अन्द्रेई ने इसका जवाब दिया। इसके बाद इसी तरह के कुछ अन्य सीधे-सादे प्रश्न पूछे गये: "कुतूज़ोव तो स्वस्थ हैं? वह ख़ुद क्रेम्स से कब आया है?" आदि, आदि। सम्राट ऐसे अन्दाज़ में बात कर रहा था मानो उसका एकमात्र उद्देश्य पूर्वनिश्चित कुछ प्रश्नों को पूछ लेना ही हो। जैसा कि बहुत ही स्पष्ट था, उत्तरों में उसकी कोई दिलचस्पी नहीं थी।

"कितने बजे लड़ाई शुरू हुई?" सम्राट ने जानना चाहा।

"परम श्रेष्ठ को मैं यह तो नहीं बता सकता कि मोर्चे पर लड़ाई कितने बजे शुरू हुई, मगर ड्यूरेन्स्टेन में, जहां मैं था, हमारी फ़ौजों ने शाम के पांच बजे के बाद हमला शुरू किया," बोल्कोन्स्की ने रंग में आते और यह आशा करते हुए जवाब दिया कि अब उसे उसके मस्तिष्क में पहले से तैयार उन सब तफ़सीलों का सच्चा वर्णन करने का

अवसर मिलेगा जो वह जानता था और जिसे उसने अपनी आंखों से देखा था।

किन्तु सम्राट मुस्कराया और उसने बीच में ही पूछ लिया :

"कितने मील का फ़ासला है?"

"कहां से कहां तक, महामान्य?"

"ड्यूरेन्स्टेन से क्रेम्स तक?"

"साढ़े तीन मील का, हुज़ूर।"

"फ़्रांसीसी बायें तट से चले गये?"

"हमारे गुप्तचरों की सूचना के अनुसार रात के वक़्त उनके आख़िरी सैनिक भी बेड़ों पर सवार होकर दूसरी ओर चले गये।"

"क्रेम्स में चारा काफ़ी है?"

"चारा उतनी मात्रा में नहीं पहुंचाया गया जितनी ..."

सम्राट ने उसे टोक दिया :

"जनरल श्मित किस वक़्त मारा गया?"

"लगता है कि शाम के सात बजे।"

"सात बजे? बहुत दुख की बात है! बहुत दुख की!"

सम्राट ने कहा कि वह उसका बहुत आभारी है और सिर झुका दिया। प्रिंस अन्द्रेई बाहर आया और उसी क्षण दरबारियों ने उसे सभी ओर से घेर लिया। चारों तरफ़ से स्नेहमयी आंखें उसे देख रही थीं और स्नेहपूर्ण शब्द सुनायी दे रहे थे। पिछले दिनवाले एडजुटेंट ने इस बात के लिये उसकी भर्त्सना की कि वह महल में नहीं ठहरा और उसने उसे अपने घर पर ठहरने की दावत दी। युद्ध-मन्त्री उसके पास आया और उसने सम्राट द्वारा दिये गये तीसरी श्रेणी के मरीया तेरेज़ा पदक के लिये उसे बधाई दी। सम्राज्ञी के निजी सचिव ने उसे सम्राज्ञी के यहां आने का निमन्त्रण दिया। बड़ी डचेस ने भी उससे मिलने की इच्छा प्रकट की। प्रिंस अन्द्रेई की समझ में नहीं आ रहा था कि किसे क्या उत्तर दे और उसे अपने को सम्भालने में कुछ सेकण्ड लगे। इसी समय रूस के राजदूत ने उसके कंधे पर हाथ रख दिया और उसे खिड़की के पास ले जाकर उससे बातचीत करने लगा।

बिलीबिन के कथन के विपरीत, उसके द्वारा लाये गये समाचार का सहर्ष स्वागत किया गया था। आभार-प्रदर्शन की प्रार्थना की घोषणा की गयी थी। कुतूज़ोव को मरीया तेरेज़ा की बड़ी सलीब से पुरस्कृत

किया गया और सारी सेना को पदक दिये गये। बोल्कोन्स्की को सभी ओर से निमन्त्रण मिले और सारी सुबह वह आस्ट्रिया के उच्च पदाधिकारियों से मिलता-जुलता रहा। दिन के चार बजने के बाद अपनी सारी भेंट-मुलाक़ातों से मुक्त होकर और मन ही मन लड़ाई तथा ब्रून्न की यात्रा के बारे में अपने पिता को लिखा जानेवाला पत्र तैयार करते हुए वह बिलीबिन के घर लौटा। घर के दरवाज़े पर सामान से आधी लदी हुई घोड़ा-गाड़ी खड़ी थी और बिलीबिन का नौकर फ़्रांज़ बड़ी मुश्किल से भारी सूटकेस उठाये हुए बाहर आया। (बिलीबिन के यहां लौटने से पहले प्रिंस अन्द्रेई कूच के दौरान पढ़ने के लिये कुछ किताबें ख़रीदने को किताबों की दुकान पर गया और वहां उसे काफ़ी देर लग गयी थी।)

"यह क्या मामला है?" बोल्कोन्स्की ने पूछा।

"ओह, हुज़ूर!" फ़्रांज़ ने बड़ी मुश्किल से घोड़ा-गाड़ी पर सूटकेस लादते हुए कहा, "हम यहां से और आगे जा रहे हैं। वह शैतान फिर से हमारे सिर पर आ धमकनेवाला है।"

"क्या मामला है? यह क्या क़िस्सा है?"

बिलीबिन बोल्कोन्स्की के स्वागत के लिये बाहर आया। सदा शान्त रहनेवाला उसका चेहरा उत्तेजित था।

"नहीं, नहीं, आपको मानना होगा कि यह तो कमाल ही हो गया," वह कह उठा, "यह टाबोर पुल (डेन्यूब नदी पर वियना का पुल) का क़िस्सा तो बहुत ही बढ़िया रहा। किसी भी तरह के विरोध के बिना उन्होंने उसे पार कर लिया।"

प्रिंस अन्द्रेई कुछ भी नहीं समझ पाया।

"आप कहां से आ रहे हैं कि जो उस चीज़ के बारे में भी नहीं जानते जो शहर के सभी कोचवानों को मालूम है?"

"मैं बड़ी डचेस के यहां से आ रहा हूं। वहां मैंने कुछ नहीं सुना।"

"और यह भी नहीं देखा कि हर जगह लोग अपना सामान घोड़ा-गाड़ियों पर लाद रहे हैं?"

"नहीं, मैंने तो नहीं देखा... क्या क़िस्सा है?" प्रिंस अन्द्रेई ने अधीर होते हुए पूछा।

"क्या क़िस्सा है? क़िस्सा यह है कि आउएरस्पेर्ग जिस पुल की रक्षा कर रहा था, फ़्रांसीसियों ने उसे पार कर लिया है। पुल को

तबाह नहीं किया गया और इसलिये म्युराट अब बड़ी तेज़ी से ब्रून्न की तरफ़ बढ़ा आ रहा है और आज या कल यहां पहुंच जायेगा।"

"यहां पहुंच जायेगा? पुल पर तो माइनें बिछी हुई थीं, तो उसे उड़ाया क्यों नहीं गया?"

"यही तो मैं आपसे पूछता हूं। यह तो कोई भी, ख़ुद बोनापार्ट भी नहीं जानता।"

बोल्कोन्स्की ने कंधे झटके।

"लेकिन अगर उन्होंने पुल पार कर लिया है तो इसका यह मतलब हुआ कि सेना तबाह हो जायेगी, वह तो कट जायेगी," प्रिंस अन्द्रेई बोला।

"यही तो बात है," बिलीबिन ने उत्तर दिया। "सुनिये। जैसा कि मैंने आपसे कहा था, फ़्रांसीसी वियना में दाख़िल हो गये। ख़ैर, ठीक है। अगले दिन यानी कल म्युराट, लान्न और बेल्यार – ये तीनों मार्शल महानुभाव अपने घोड़ों पर सवार हुए और पुल की तरफ़ चल दिये (ध्यान रहे कि तीनों गासकोनी हैं)*। 'महानुभावो,' उनमें से एक ने कहा, 'क्या, आप जानते हैं कि टाबोर पुल पर माइनें बिछी हुई हैं, जवाबी माइनें भी बिछी हैं, हमारे सामने बड़ी मज़बूत क़िलेबन्दी और पन्द्रह हज़ार की सेना है जिसे पुल उड़ा देने और हमें रोकने का आदेश मिला हुआ है। लेकिन अगर हम इस पुल पर क़ब्ज़ा कर लें तो हमारे सम्राट नेपोलियन को ख़ुशी होगी। तो आइये, हम तीनों चलें और पुल पर क़ब्ज़ा कर लें।' – 'चलिये,' बाक़ी दोनों मार्शलों ने कहा। वे चल दिये, उन्होंने पुल पर क़ब्ज़ा कर लिया, उसे पार किया और अब अपनी पूरी सेना के साथ वे डेन्यूब के इस पार हैं, हमारी ओर, आपकी ओर, आपके यातायात-मार्गों की ओर बढ़ रहे हैं।"

"बस, काफ़ी मज़ाक़ हो चुका," प्रिंस अन्द्रेई ने उदासी और गम्भीरता से कहा।

प्रिंस अन्द्रेई के लिये यह समाचार दुखद और साथ ही सुखद भी था। जैसे ही उसे यह पता चला कि रूसी सेना ऐसी बुरी स्थिति में

---

* गासकोनी – दक्षिणी फ़्रांस के गासकोनिया इलाक़े के रहनेवाले लोग जो बहुत तेज़ ज़बान और बड़े चालाक माने जाते हैं। – सं०

है, उसके दिमाग़ में यह विचार कौंध गया कि रूसी सेना को इस स्थिति से उबारने का काम उसी के भाग्य में लिखा है, कि यही वह तुलोन* है जो उसे अज्ञात अफ़सरों की क़तारों से अलग करेगा और उसके लिये ख्याति का पहला मार्ग प्रशस्त करेगा! बिलीबिन की बातें सुनते हुए वह मन ही मन यह कल्पना कर रहा था कि सेना में लौटकर वह युद्ध-परिषद में ऐसा विचार प्रकट करेगा, सिर्फ़ जिसकी बदौलत ही सेना को बचाना सम्भव होगा और उसे ही यह योजना पूरी करने का दायित्व सौंपा जायेगा।

"बस, काफ़ी मज़ाक़ हो चुका," उसने दोहराया।

"मैं मज़ाक़ नहीं कर रहा हूं," बिलीबिन कहता गया, "इससे ज़्यादा सच्ची और दुखद बात नहीं हो सकती। ये तीनों मार्शल महानुभाव ही पुल पर आये, ऊंचे-ऊंचे सफ़ेद रूमाल हिलाये, विश्वास दिलाया कि यह विरामसन्धि का संकेत है और वे प्रिंस आउएरस्पेर्ग से बातचीत करने जा रहे हैं। ड्यूटी-अफ़सर ने उन्हें क़िलेबन्दी तक जाने दिया। क़िलेबन्दी के ड्यूटी-अफ़सर को इन्होंने तरह-तरह की बेसिर-पैर की गासकोनी बातें बतायीं – यह कहा कि युद्ध समाप्त हो चुका है, कि सम्राट फ़्रांसिस ने बोनापार्ट के साथ मुलाक़ात तय कर ली है, कि वे प्रिंस आउएरस्पेर्ग से मिलना चाहते हैं, आदि, आदि। ड्यूटी-अफ़सर ने आउएरस्पेर्ग को बुलाने के लिये आदमी भेजा। ये तीनों महानुभाव अफ़सरों को गले लगाते, हंसी-मज़ाक़ करते और तोपों पर बैठते रहे। इसी बीच एक फ़्रांसीसी बटालियन छिपे-छिपे पुल पर आ गयी, उसने दाहक-सामग्री की बोरियां नदी में फेंक दीं और वह क़िलेबन्दी के पास पहुंच गयी। आख़िर लेफ़्टिनेंट-जनरल, हमारा प्यारा प्रिंस आउएरस्पेर्ग वोन मौतेर्न ख़ुद यहां आया। 'प्यारे शत्रु! आस्ट्रियायी वीरता के सिरमौर, तुर्की की लड़ाइयों के हीरो! हमारे बीच दुश्मनी ख़त्म हो गयी, अब हम एक-दूसरे से हाथ मिला सकते हैं... सम्राट नेपोलियन प्रिंस आउएरस्पेर्ग से परिचित होने को बेचैन हैं।' थोड़े में यह कि इन महानुभावों ने, जो व्यर्थ ही तो गासकोनी नहीं हैं, आउएरस्पेर्ग की तारीफ़ों के ख़ूब पुल बांधे, वह फ़्रांसीसी मार्शलों के साथ इतनी जल्दी से घुल-मिल जाने और इतनी घनिष्ठता हो जाने के कारण इतना ज़्यादा

---

* फ़्रांस का दक्षिणी नगर जिसे जीतने के बाद नेपोलियन जनरल बन गया था।–सं०

ख़ुश हो गया, म्युराट के सुन्दर लबादे और शुतुरमुर्ग़ के पंखोंवाली कलगी से ऐसा चकाचौंध हुआ कि उसकी आंखें केवल उन्हीं की तोपों की आग देख रही थीं और उस आग के बारे में भूल ही गयीं जो उसे दुश्मन पर बरसानी चाहिये थी।" (अपनी बातों के चटपटेपन के बावजूद बिलीबिन कुछ क्षण के लिये इस कारण रुके बिना न रह सका कि उसके इस फड़कते वाक्य की ढंग से प्रशंसा हो सके।) "फ़्रांसीसी बटालियन भागकर क़िलेबन्दी पर पहुंच गयी, उसने तोपों के मुंह बन्द कर दिये और पुल पर उसका क़ब्ज़ा हो गया। नहीं, लेकिन सबसे ज़्यादा मज़ेदार बात तो यह रही," बहुत ही बढ़िया ढंग से अपना यह क़िस्सा सुनाने की उत्तेजना से कुछ शान्त होते हुए वह कहता गया, "कि उस तोप पर नियुक्त सार्जेंट ने, जिसके संकेत के अनुसार माइनों को आग लगाना और पुल को उड़ाया जाना चाहिये था, यह देखकर कि फ़्रांसीसी सेना पुल पर दौड़ी आ रही है, तोप दाग़नी चाही, लेकिन लान्न ने उसका हाथ पकड़ लिया। सार्जेंट, जो स्पष्टतः अपने जनरल से अधिक बुद्धिमान था, आउएरस्पेर्ग के पास गया और बोला: 'प्रिंस, आपको धोखा दिया जा रहा है, देखिये वे सामने रहे फ़्रांसीसी!' म्युराट ने देखा कि अगर सार्जेंट का मुंह बन्द नहीं होगा तो मामला चौपट हो जायेगा। उसने बनावटी हैरानी ज़ाहिर करते हुए (असली गासकोनी है वह) आउएर-स्पेर्ग से कहा: 'क्या यही आपका विश्व-विख्यात आस्ट्रियायी अनुशासन है? आप एक मामूली से सार्जेंट को अपने साथ ऐसे बात करने देते हैं!' कोई जवाब नहीं है उसकी इस सूझ-बूझ का! प्रिंस आउएरस्पेर्ग ने सार्जेंट की इस हरकत को अपना अपमान माना और उसे गिरफ़्तार करने का हुक्म दे दिया। नहीं, आपको मानना होगा कि पुल का यह क़िस्सा बहुत ही बढ़िया है। यह न तो मूर्खता है और न नीचता ही..."

"शायद ग़द्दारी है," प्रिंस अन्द्रेई ने भूरे फ़ौजी ओवरकोटों, घावों, बारूद के धुएं, तोपों की गरज और उस ख्याति की, जो उसे मिलनेवाली थी, सजीव कल्पना करते हुए कहा।

"यह ग़द्दारी भी नहीं। इससे दरबार की स्थिति बड़ी ख़राब हो जाती है।" बिलीबिन कहता गया। "यह न तो ग़द्दारी है, न मूर्खता और न नीचता। यह तो वही है जो उल्म के निकट हुआ था..." वह मानो कोई उपयुक्त अभिव्यक्ति ढूंढ़ते हुए सोचने लगा... "यह तो **माकपन** है। हमपर **माकपन** यानी कलंक का टीका लगाया गया है,"

उसने यह अनुभव करते हुए अपनी बात ख़त्म की कि एक ऐसा नया और फड़कता हुआ शब्द कह दिया है जिसे दोहराया जायेगा।

उसके माथे पर अभी तक पड़े हुए बल उसकी ख़ुशी के चिह्न-स्वरूप झटपट लुप्त हो गये और वह ज़रा मुस्कराकर अपने नाख़ूनों को देखने लगा।

"आप किधर चल दिये?" उसने अचानक प्रिंस अन्द्रेई से पूछा जो उठकर अपने कमरे की तरफ़ चल दिया था।

"मैं जा रहा हूं।"

"कहां?"

"अपनी सेना में।"

"लेकिन आप तो दो दिन और रुकना चाहते थे?"

"मगर अब, इसी समय जा रहा हूं।"

और प्रिंस अन्द्रेई अपनी रवानगी के बारे में हिदायतें देकर अपने कमरे में चला गया।

"सुनिये, मेरे प्यारे," प्रिंस अन्द्रेई के कमरे में दाख़िल होते हुए बिलीबिन ने कहा। "मैंने आपके सम्बन्ध में विचार किया है। क्या ज़रूरत है आपको जाने की?"

और इस चीज़ का प्रमाण प्रस्तुत करते हुए कि उसके तर्क का खण्डन नहीं हो सकता, उसके चेहरे के सभी बल ग़ायब हो गये।

प्रिंस अन्द्रेई ने प्रश्नसूचक दृष्टि से बिलीबिन की तरफ़ देखा और कोई उत्तर नहीं दिया।

"क्या ज़रूरत है आपको जाने की? मैं जानता हूं, आप यह सोच रहे हैं कि अब, जब रूसी सेना ख़तरे में है तो जल्दी से जल्दी वहां पहुंचना आपका कर्त्तव्य है। मैं यह समझ सकता हूं, मेरे प्यारे, यह मर्दानगी है।"

"ज़रा भी नहीं," प्रिंस अन्द्रेई ने जवाब दिया।

"लेकिन आप तो फ़लसफ़ी भी हैं, इसलिये पूरी तरह फ़लसफ़ी बनिये। सारी स्थिति को दूसरे पहलू से देखिये और तब आप यह पायेंगे कि इसके उलट, आपका कर्त्तव्य अपनी रक्षा करना है। यह काम दूसरों के लिये छोड़ दीजिये जो और किसी चीज़ के लायक़ नहीं हैं... आपको वापस लौटने का आदेश नहीं दिया गया और यहां से आपको भेजा नहीं गया। इसका मतलब यह है कि आप यहां रुक सकते हैं और

हमारे साथ वहीं जा सकते हैं, जहां हमारी बदक़िस्मती हमें ले जायेगी। कहते हैं कि हम ओलम्यूत्स जा रहे हैं। ओलम्यूत्स बड़ा प्यारा-सा शहर है। और मेरी बग्घी में हम दोनों चैन से वहां जायेंगे।"

"मज़ाक़ बन्द कीजिये, बिलीबिन," बोल्कोन्स्की ने कहा।

"मैं सच्चे दिल से और एक दोस्त के नाते आपसे यह कह रहा हूं। ज़रा सोचिये। आप कहां और किसलिये जायें, जबकि यहां रुक सकते हैं? आपके साथ दो में से एक बात हो सकती है (उसने बायीं त्योरी चढ़ा ली): या तो आपके सेना तक पहुंचने से पहले ही शान्ति-सन्धि हो जायेगी या फिर कुतूज़ोव की पूरी सेना के साथ आपको भी पराजय और लज्जा का मुंह देखना होगा।"

और बिलीबिन ने यह अनुभव करते हुए त्योरी उतार ली कि उसके तर्क का खण्डन नहीं हो सकता।

"मैं इसपर तर्क-वितर्क नहीं कर सकता," प्रिंस अन्द्रेई ने रुखाई से जवाब दिया और मन में सोचा: "मैं सेना को बचाने जा रहा हूं।"

"मेरे प्यारे, आप सूरमा हैं," बिलीबिन ने कहा।

१३

उसी रात को युद्ध-मन्त्री से विदा लेकर बोल्कोन्स्की अपनी सेना की ओर चल दिया। वह यह नहीं जानता था कि कहां अपनी सेना को ढूंढ़ पायेगा और उसके दिल में इस बात की शंका भी बनी हुई थी कि क्रेम्स की ओर जाते हुए फ़्रांसीसी उसे कहीं रास्ते में ही न पकड़ लें।

ब्रून्न में सभी दरबारी लोग अपना सामान बांध रहे थे और भारी चीज़ें तो ओलम्यूत्स भेजी भी जा चुकी थीं। एत्सेलसडोर्फ़ के क़रीब प्रिंस अन्द्रेई उस सड़क पर जा पहुंचा जहां रूसी सेना बहुत ही जल्दी-जल्दी और बड़े अव्यवस्थित ढंग से बढ़ी जा रही थी। सड़क पर घोड़ा-गाड़ियों की ऐसी घिचपिच थी कि प्रिंस अन्द्रेई के लिये बग्घी में सफ़र जारी रखना असम्भव हो गया। कज़्ज़ाकों के अफ़सर से घोड़ा और

एक कज़्ज़ाक अर्दली को अपने साथ लेकर थका-हारा तथा भूखा-प्यासा प्रिंस अन्द्रेई घोड़ा-गाड़ियों के बीच से अपना रास्ता बनाता हुआ प्रधान सेनापति और अपने सामान से लदी गाड़ी की तलाश करने लगा। रास्ते में उसे अपनी सेना के बारे में बहुत ही बुरी-बुरी अफ़वाहें सुनने को मिलीं और किसी व्यवस्था के बिना उसके इस तरह भागे जाने के दृश्य से इन अफ़वाहों की पुष्टि भी होती थी।

"इस रूसी सेना को, जिसे अंग्रेज़ों का सोना दुनिया के दूसरे सिरे से यहां लाया है, हम अपना वैसा ही बुरा हाल महसूस करने को मजबूर कर देंगे जैसा उल्म के निकट आस्ट्रियायी सेना का हुआ था," प्रिंस अन्द्रेई को इस युद्ध-अभियान के आरम्भ के समय बोनापार्ट द्वारा अपनी सेना से कहे गये उक्त शब्द याद हो आये और इन शब्दों ने उसके हृदय में प्रतिभावान नायक के प्रति आश्चर्य, आहत गर्व और साथ ही ख्याति की आशा की भावना पैदा की। "अगर मौत के सिवा और कुछ भी बाक़ी नहीं रहेगा?" वह सोच रहा था, "अगर मरना ही होगा, तो मैं दूसरों से कुछ बुरी तरह नहीं मरूंगा।"

प्रिंस अन्द्रेई इन अव्यवस्थित सैनिक टुकड़ियों, घोड़ा-गाड़ियों, फ़ौजी साज़-सामान, तोपों, फिर से घोड़ा-गाड़ियों, सभी तरह की घोड़ा-गाड़ियों के इस अन्तहीन गड़बड़-झाले को तिरस्कारपूर्वक देख रहा था जो एक-दूसरी से आगे बढ़ती हुई एक ही क़तार में तीन-तीन, चार-चार की संख्या में एक-दूसरी से सटी हुई गन्दे रास्ते में बाधा बन रही थीं। सभी ओर से, आगे-पीछे से तथा जहां तक कान सुन सकते थे पहियों, गाड़ियों, तोप-गाड़ियों का शोर, घोड़ों की टापें, चाबुकों की सटकार, कोचवानों की चिल्लाहट, सैनिकों, अर्दलियों और अफ़सरों की गाली-गलौज सुनायी दे रही थी। सड़क के दोनों ओर लगातार मरे हुए घोड़े पड़े दिखायी दे रहे थे जिनमें से कुछ की खाल उधड़ी हुई थी और कुछ की नहीं, कहीं टूटी घोड़ा-गाड़ियां नज़र आतीं जिनके पास किसी चीज़ की प्रतीक्षा में कुछ सैनिक बैठे होते या फिर इस फ़ौजी भीड़ से अलग सैनिक दिखते जिनके दल या तो पास के गांवों की तरफ़ जाते होते या वहां से मुर्ग़ियां, भेड़ें, चारा या किसी चीज़ से भरी बोरियां लाते होते। सड़क के उतार-चढ़ावों पर यह जमघट और भी ज़्यादा घना हो जाता और लगातार चीख़-चिल्लाहट सुनायी पड़ती। घुटनों तक कीचड़ में धंसे हुए सैनिक तोपों और गाड़ियों को

आगे धकेलते, घोड़ों पर चाबुक बरसाये जाते, सुम फिसलते, जोतें टूट जातीं और चीख़-चीख़ कर लोगों के फेफड़े मानो फटने को हो जाते। सेना का संचालन करनेवाले अफ़सर घोड़ा-गाड़ियों के बीच अपने घोड़ों पर आगे-पीछे आते-जाते दिखायी देते। इस आम शोर-शराबे में उनकी आवाज़ें बहुत धीमी-सी सुनायी देतीं और उनके चेहरों से यह साफ़ नज़र आता कि इस गड़बड़ को रोकने के मामले में वे अपने को लाचार महसूस कर रहे हैं।

"तो यह है प्राच्य ईसाई धर्म की अनुयायी, हमारी प्यारी सेना," बोल्कोन्स्की ने बिलीबिन के शब्दों को याद करते हुए सोचा।

इन लोगों में से किसी से यह पूछने की इच्छा से कि प्रधान सेनापति कहां हैं, वह गाड़ियों की क़तार की तरफ़ गया। उसके बिल्कुल सामने ही एक घोड़ेवाली अजीब-सी गाड़ी जा रही थी जिसे स्पष्टतः सैनिकों ने उसी सामग्री से बनाया था जो उन्हें उपलब्ध थी और यह बग्घी, घोड़ा-गाड़ी और चौपहिया गाड़ी के बीच की कोई चीज़ थी। इस टमटम को एक सैनिक हांक रहा था और चमड़े के हुड के नीचे आड़ के पीछे शॉलों में लिपटी-लिपटायी एक औरत बैठी थी। प्रिंस अन्द्रेई अपने घोड़े को इस गाड़ी के पास ले गया और उसने सैनिक से सेनापति के बारे में अपना सवाल पूछा ही था कि उसी क्षण टमटम में बैठी औरत की ज़ोरदार चीख़ों ने उसका ध्यान अपनी ओर खींच लिया। इस फ़ौजी कारवां का संचालक-अफ़सर कोचवान के रूप में टमटम को हांकनेवाले फ़ौजी की इसलिये पिटाई कर रहा था कि उसने दूसरों से आगे निकलने की कोशिश की थी और उसका कोड़ा कोचवान तथा औरत की सीट के बीच की आड़ पर पड़ रहा था। औरत बुरी तरह से चीख़ रही थी। प्रिंस अन्द्रेई को देखकर वह आड़ के पीछे से आगे को झुकी और ऊनी शॉलों के नीचे से अपनी पतली-पतली बांहों को हिलाते हुए चिल्लायी:

"एडजुटेंट जी! श्रीमान एडजुटेंट! भगवान के लिये... मेरी रक्षा कीजिये... हाय, हमारा क्या होगा?.. मैं सातवीं निशानेबाज़ रेजिमेंट के डाक्टर की पत्नी हूं... ये लोग हमें आगे नहीं जाने दे रहे, हम पिछड़ गये हैं, अपने लोगों को खो बैठे हैं..."

"तेरा कचूमर निकाल दूंगा, वापस ले जा गाड़ी को!" गुस्से से लाल-पीला होता हुआ अफ़सर फ़ौजी कोचवान पर चिल्लाया। "ले

जा वापस गाड़ी को अपनी इस कुतिया के साथ!"

"श्रीमान एडजुटेंट, मदद कीजिये! यह सब क्या हो रहा है?" डाक्टर की बीवी चिल्लायी।

"कृपया इस गाड़ी को आगे जाने दीजिये। क्या आप देख नहीं रहे कि उसमें औरत है?" प्रिंस अन्द्रेई ने अफ़सर के पास अपना घोड़ा ले जाकर कहा।

अफ़सर ने प्रिंस अन्द्रेई की तरफ़ देखा और कोई जवाब दिये बिना फिर से फ़ौजी को डांटा:

"मैं तेरी अक़्ल ठिकाने करूंगा... पीछे मोड़ गाड़ी!"

"इसे आगे जाने दीजिये, मैं आपसे कह रहा हूं," प्रिंस अन्द्रेई ने होंठ भींचते हुए अपने शब्द दोहराये।

"तुम कौन हो?" अफ़सर ने शराबी की तरह बेहद गुस्से में अचानक उससे पूछा। "तुम कौन हो? तुम (उसने **तुम** पर ख़ास ज़ोर दिया) कमांडर हो क्या? यहां तुम नहीं, मैं कमांडर हूं। अरे, मोड़ गाड़ी," उसने कोचवान से कहा, "मैं तेरा कचूमर निकाल दूंगा!"

सम्भवतः यह वाक्य अफ़सर को बहुत पसन्द आया था।

"अच्छी तबीयत साफ़ की है उसने एडजुटेंट की," प्रिंस अन्द्रेई को अपने पीछे किसी के ये शब्द सुनायी दिये।

प्रिंस अन्द्रेई ने देखा कि अफ़सर क्रोध की उस उन्मादी हालत में है जब लोग जो कुछ कहते हैं, स्वयं उसका अर्थ नहीं समझते। उसने महसूस किया कि टमटम में बैठी डाक्टर की बीवी की हिमायत करते हुए वह उस चीज़ का ख़तरा मोल ले रहा है जिससे दुनिया में सबसे ज़्यादा डरता था यानी अपनी खिल्ली उड़वाने का। मगर उसकी आत्मा की आवाज़ दूसरी ही बात कह रही थी। अफ़सर अपने अन्तिम शब्द कह भी नहीं पाया था कि प्रिंस अन्द्रेई क्रोध से विकृत चेहरे के साथ अपना घोड़ा उसके पास ले गया और उसने अपना कोड़ा ऊपर उठाते हुए कहा:

"कृपया इस घोड़ा-गाड़ी को आगे जाने दीजिये!"

अफ़सर ने हाथ झटका और झटपट वहां से अपना घोड़ा हटा ले गया।

"यह सारी गड़बड़ इन्हीं, इन मुख्य सैनिक कार्यालयवालों की बदौलत ही है," वह बड़बड़ाया। "कीजिये, अपनी मनमानी।"

प्रिंस अन्द्रेई अपनी नज़रें ऊपर उठाये बिना और इस भोंडी घटना के हर ब्योरे को घृणापूर्वक याद करते हुए जल्दी से अपने घोड़े को डाक्टर की बीवी से दूर ले गया जो उसे अपना रक्षक कह रही थी। वह अपने घोड़े को उस गांव की तरफ़ सरपट दौड़ाता रहा, जहां, जैसा कि उसे बताया गया था, प्रधान सेनापति थे।

गांव में पहुंचकर वह घोड़े से नीचे उतरा और इस इरादे से पहले ही घर की तरफ़ चल दिया कि वहां, बेशक कुछ ही देर को आराम कर ले, कुछ खा-पी ले और मन को यातना देनेवाले अपमानजनक विचारों को कुछ स्पष्ट कर ले। "यह सेना नहीं, बदमाशों की भीड़ है," वह पहले ही घर की खिड़की के पास पहुंचते हुए अपने मन में सोच रहा था। इसी वक़्त उसने सुना कि परिचित आवाज़ में कोई उसका नाम पुकार रहा है।

उसने मुड़कर देखा। छोटी-सी खिड़की में से नेस्वीत्स्की का सुन्दर चेहरा बाहर झांक रहा था। वह अपने नम मुंह में कुछ चबाता हुआ हाथ हिला-हिलाकर उसे अपने पास बुला रहा था।

"बोल्कोन्स्की, बोल्कोन्स्की! क्या सुन नहीं रहे? जल्दी से यहां आ जाओ," वह चिल्लाया।

घर में दाख़िल होने पर प्रिंस अन्द्रेई ने देखा कि नेस्वीत्स्की और एक अन्य एडजुटेंट कुछ खा-पी रहे हैं। उन्होंने फ़ौरन बोल्कोन्स्की से यह पूछा कि उसे कुछ नयी जानकारी है या नहीं? उनके इतने जाने-पहचाने चेहरों पर प्रिंस अन्द्रेई को घबराहट और परेशानी का भाव दिखायी दिया। नेस्वीत्स्की के हमेशा हंसते, खिले रहनेवाले चेहरे पर यह भाव विशेष रूप से लक्षित हो रहा था।

"प्रधान सेनापति कहां हैं?" बोल्कोन्स्की ने पूछा।

"यहीं हैं, उस घर में," एडजुटेंट ने उत्तर दिया।

"क्या यह सच है कि शान्ति-सन्धि हो रही है और हम अपनी हार मान रहे हैं?" नेस्वीत्स्की ने प्रश्न किया।

"यह तो मैं आपसे पूछना चाहता हूं। मैं इसके सिवा कुछ नहीं जानता कि किसी तरह आप लोगों तक पहुंच गया।"

"और हम लोगों की क्या हालत है, भाई, कुछ नहीं पूछो! भैया मेरे, मानता हूं कि हमारे लिये माक का मज़ाक़ उड़ाना ठीक

नहीं था, हमारी तो उससे भी बुरी हालत हो रही है," नेस्वीत्स्की ने कहा। "बैठो, कुछ खा तो लो।"

"प्रिंस, अब तो आपको अपनी घोड़ा-गाड़ी और अन्य कोई चीज़ भी नहीं मिलेगी। आपका अर्दली प्योतर कहां है, यह भी भगवान ही जानता है," दूसरे एडजुटेंट ने कहा।

"मुख्य सैनिक कार्यालय कहां है?"

"हम ज़्नैम में रात बितायेंगे।"

"मुझे जो कुछ चाहिये, मैंने उसे ऐसे पैक करवा लिया है कि वह सब दो घोड़ों पर लद जाये। और पैकेट भी बहुत बढ़िया बना दिये हैं। ज़रूरत होने पर मैं तो बोहेमिया के पहाड़ों को भी लांघ सकता हूं। बुरा हाल है, भाई मेरे। क्या तुम्हारी तबीयत अच्छी नहीं है कि तुम ऐसे कांप रहे हो?" नेस्वीत्स्की ने उसे ऐसे सिहरते देखकर पूछा मानो उसने बर्फ़ जैसे किसी ठण्डे बर्तन को छू लिया हो।

"नहीं, ऐसी कोई बात नहीं," प्रिंस अन्द्रेई ने जवाब दिया।

इस क्षण उसे डाक्टर की बीवी और सैनिक कारवां के संचालक-अफ़सर के साथ हुई अपनी भेंट की याद आ गयी थी।

"प्रधान सेनापति यहां क्या कर रहे हैं?" प्रिंस अन्द्रेई ने पूछा।

"मुझे तो कुछ भी मालूम नहीं।"

"और मैं तो एक बात जानता हूं कि सब कुछ बहुत घृणित है, बहुत घटिया है, बहुत घृणित है," प्रिंस अन्द्रेई ने कहा और उस घर की ओर चल दिया जहां प्रधान सेनापति थे।

कुतूज़ोव की बग्घी, उनके अमले के बुरी तरह थके-हारे सवारी के घोड़ों और आपस में ऊंचे-ऊंचे बातें कर रहे कज़्ज़ाकों के पास से गुज़रकर प्रिंस अन्द्रेई ड्योढ़ी में दाखिल हुआ। जैसा कि प्रिंस अन्द्रेई को बताया गया था, कुतूज़ोव स्वयं तो प्रिंस बग्रातिओन और वैरोटेर के साथ भीतर थे। वैरोटेर आस्ट्रियायी जनरल था और लड़ाई में मारे गये श्मित की जगह नियुक्त हुआ था। नाटा कोज़्लोव्स्की ड्योढ़ी में मुंशी के सामने उकड़ूं बैठा था। मुंशी अपनी आस्तीनें चढ़ाये और टब को उलटा रखकर उसकी मेज़-सी बनाये हुए जल्दी-जल्दी कुछ लिख रहा था। कोज़्लोव्स्की का चेहरा बहुत थका-थका-सा था – स्पष्टतः वह रात को सोया नहीं था। उसने प्रिंस अन्द्रेई की तरफ़ देखा और अभिवादन में सिर तक नहीं झुकाया।

"दूसरी पंक्ति ... लिख ली ?" उसने मुंशी को लिखवाना जारी रखा।

"कीयेव की ग्रेनेडियर रेजिमेंट, पोदोल्स्क की ..."

"इतनी जल्दी-जल्दी नहीं लिख सकता, हुज़ूर," मुंशी ने कोज़्लोव्स्की की ओर देखते हुए अशिष्टता और झल्लाहट से कहा।

इसी समय दरवाज़े के पीछे से कुतूज़ोव की उत्तेजित और खीझी-सी आवाज़ सुनायी दी जिसे कोई दूसरी और अपरिचित आवाज़ बीच-बीच में टोक रही थी। इन आवाज़ों से, उसकी ओर उठनेवाली कोज़्लोव्स्की की चिन्तित दृष्टि, परेशान मुंशी की अशिष्टता, प्रधान सेनापति से कुछ ही दूर, टब के पास फ़र्श पर बैठे कोज़्लोव्स्की और मुंशी तथा घर की खिड़की के क़रीब घोड़ों के निकट खड़े कज़्ज़ाकों के अट्टहास से प्रिंस अन्द्रेई को यह महसूस हुआ कि कोई बहुत ही महत्त्वपूर्ण और दुर्भाग्यपूर्ण घटना होनेवाली है।

प्रिंस अन्द्रेई ज़ोर देकर कोज़्लोव्स्की से अपने सवाल पूछता गया।

"अभी, प्रिंस," कोज़्लोव्स्की ने जवाब दिया। "बग्रातिओन को भेजने की तैयारी की जा रही है।"

"और आत्म-समर्पण ?"

"ऐसा कुछ नहीं। लड़ाई के लिये आदेश दिया जा चुका है।"

प्रिंस अन्द्रेई उस दरवाज़े की तरफ़ चल दिया जिसके पीछे से आवाज़ें सुनायी दे रही थीं। किन्तु उसी समय, जब उसने दरवाज़ा खोलना चाहा, कमरे से आती आवाज़ें बन्द हो गयीं, दरवाज़ा खुला और थलथल चेहरे पर उक़ाब की चोंच जैसी नाकवाले कुतूज़ोव दहलीज़ पर दिखायी दिये। प्रिंस अन्द्रेई कुतूज़ोव के बिल्कुल सामने खड़ा था, किन्तु प्रधान सेनापति की एकमात्र देखनेवाली आंख के भाव से ऐसा नज़र आ रहा था कि वह अपने विचारों और चिन्ताओं में इतने अधिक डूबे हुए हैं कि मानो कुछ भी नहीं देख पा रहे। उनकी दृष्टि अपने एडजुटेंट यानी बोल्कोन्स्की के चेहरे पर टिकी थी, मगर वह उसे पहचान नहीं रहे थे।

"हां, तो लिखवा दिया ?" उसने कोज़्लोव्स्की से पूछा।

"अभी, महामहिम जी।"

प्रधान सेनापति के पीछे-पीछे नाटा, पूर्वी ढंग के दृढ़ और शान्त चेहरेवाला, दुबला-पतला और अधेड़ उम्र का बग्रातिओन बाहर आया।

"मैं सादर आपको सूचित करता हूं कि आदेश पूरा करके लौट आया हूं," प्रिंस अन्द्रेई ने लिफ़ाफ़ा देते हुए काफ़ी ज़ोर से अपने आने की सूचना को दोहराया।

"ओह, वियना से? अच्छी बात है। बाद में, बाद में!"

कुतूज़ोव बग्रातिओन के साथ घर से बाहर गये।

"तो प्रिंस, जाओ," उन्होंने बग्रातिओन से कहा। "ईसा मसीह की तुमपर कृपादृष्टि रहे। बहुत बड़े काम के लिये तुम्हें आशीर्वाद देता हूं।"

कुतूज़ोव के चेहरे पर अचानक कोमलता का भाव आ गया और उनकी आंखें छलछला आयीं। उन्होंने बायें हाथ से बग्रातिओन को अपनी तरफ़ खींच लिया और दायें हाथ से, जिसमें अंगूठी पहने थे स्पष्टतः अभ्यस्त ढंग से उसपर सलीब का निशान बनाया और अपना थलथल गाल उसकी तरफ़ बढ़ा दिया। किन्तु बग्रातिओन ने गाल की जगह उनकी गर्दन को चूमा।

"तुमपर ईसा मसीह की कृपादृष्टि रहे!" कुतूज़ोव ने दोहराया और अपनी बग्घी के पास चले गये। "मेरे साथ बैठो," उन्होंने बोल्कोन्स्की से कहा।

"महामहिम जी, मैं तो यहां किसी काम के लिये उपयोगी होना चाहता हूं। कृपया मुझे प्रिंस बग्रातिओन की फ़ौज में रहने दीजिये।"

"बैठो," कुतूज़ोव ने कहा और यह देखकर कि बोल्कोन्स्की कुछ आनाकानी कर रहा है, बोले: "अच्छे अफ़सरों की मुझे ख़ुद भी ज़रूरत है, ख़ुद भी ज़रूरत है।"

बग्घी में जाते हुए दोनों कुछ देर तक ख़ामोश रहे।

"अभी तो आगे बहुत कुछ, बहुत कुछ होनेवाला है," उन्होंने एक बूढ़े आदमी की गहरी सूझ-बूझ के ढंग से कहा मानो बोल्कोन्स्की के दिल में हो रही उथल-पुथल को अच्छी तरह समझ गये हों। "अगर उसकी फ़ौज का दसवां भाग भी कल सही-सलामत वापस आ गया तो मैं भगवान को धन्यवाद दूंगा," उन्होंने मानो अपने आपसे बात करते हुए इतना और कह दिया।

प्रिंस अन्द्रेई ने कुतूज़ोव की तरफ़ देखा और बरबस ही उसे अपने बहुत नज़दीक बैठे कुतूज़ोव की कनपटी पर उस घाव के साफ़ निशान दिखायी दिये, जहां इज़्माईल की लड़ाई में उन्हें गोली लगी थी। उनकी

अन्धी आंख की तरफ़ भी उसका ध्यान गया। "हां, इन्हें इन लोगों के मौत के मुंह में जाने की ऐसे शान्त ढंग से चर्चा करने का अधिकार है।" बोल्कोन्स्की ने सोचा।

"इसीलिये तो मैं आपसे यह अनुरोध कर रहा हूं कि मुझे इस फ़ौज में भेज दिया जाये," बोल्कोन्स्की ने कहा।

कुतूज़ोव ने कोई उत्तर नहीं दिया। उन्होंने जो कुछ कहा था, वह तो मानो उसके बारे में भूल भी गये थे और किसी सोच में डूबे हुए बैठे थे। पांच मिनट बाद बग्घी के नर्म स्प्रिंगों पर धीरे-धीरे डोलते हुए कुतूज़ोव ने प्रिंस अन्द्रेई को सम्बोधित किया। उनके चेहरे पर विह्वलता का चिह्न तक शेष नहीं रहा था। हल्के-से व्यंग्य के साथ उन्होंने प्रिंस अन्द्रेई से सम्राट से हुई उसकी भेंट, क्रेम्स की लड़ाई के बारे में दरबार में सुनी गयी कुछ बातों और दोनों की जान-पहचान की कुछ महिलाओं के बारे में तफ़सीलें पूछीं।

१४

नवम्बर की पहली तारीख़ को अपने एक गुप्तचर से मिलनेवाली सूचना के अनुसार कुतूज़ोव को यह सपष्ट हो गया कि जिस सेना के वह कमांडर हैं, उसकी स्थिति बहुत ख़राब है। गुप्तचर ने यह सूचना दी कि वियना के पुल को लांघकर फ़्रांसीसी सेनायें बहुत बड़ी संख्या में उस तरफ़ बढ़ रही हैं जहां कुतूज़ोव की सेना को रूस से आनेवाली सेना से मिलना था। अगर कुतूज़ोव क्रेम्स में ही रुकने का निर्णय करते तो नेपोलियन के डेढ़ लाख सैनिक उनके सभी सम्पर्क-मार्ग काट देते, उनकी चालीस हज़ार की थकी-हारी सेना को घेर लेते और उनकी भी उल्म के निकट आस्ट्रियायी जनरल माक जैसी हालत हो जाती। अगर वह रूस से आनेवाली सेना से अपनी सेना के मिलने का रास्ता छोड़ देते तो उन्हें दुश्मन की कहीं बड़ी सेना से अपनी सेना की रक्षा करते हुए बोहेमिया के अपरिचित और मार्गहीन पहाड़ी इलाक़ों में जाना पड़ता तथा बुक्सगेव्देन से मिलने की आशा बिल्कुल छोड़ देनी पड़ती। अगर वह रूस से आ रही सेना के साथ मिलने के लिये क्रेम्स से ओल्म्यूत्स

की तरफ़ जानेवाले रास्ते पर पीछे हटने का निर्णय करते तो इस बात का ख़तरा था कि वियना का पुल पार कर चुकी फ़्रांसीसी सेना इस मार्ग पर पहले पहुंच जायेगी और तब सारे साज़-सामान और घोड़ा-गाड़ियों समेत कूच के दौरान ही दोनों ओर से घेर लेनेवाली अपनी सेना से तिगुनी दुश्मन की सेना से लोहा लेना होगा।

कुतूज़ोव ने यही, अन्तिम रास्ता ही चुना।

गुप्तचर की सूचना के मुताबिक़ फ़्रांसीसी वियना का पुल लांघकर बहुत ही तेज़ी से ज़्नैम की तरफ़ बढ़ रहे थे जो कुतूज़ोव के पीछे हटने के रास्ते पर एक सौ से ज़्यादा किलोमीटर दूर था। ज़्नैम में फ़्रांसीसियों से पहले पहुंचने का यह मतलब था कि सेना के बचने की बड़ी आशा की जा सकती थी और फ़्रांसीसियों को अपने से पहले पहुंच जाने देने का अर्थ था – सम्भवतः सारी सेना का उल्म की तरह अपमान करवाना या उसे नष्ट कर देना। किन्तु पूरी सेना के साथ वहां फ़्रांसीसियों से पहले पहुंचना असम्भव था। वियना से ज़्नैम तक का फ़्रांसीसियों का रास्ता रूसियों के क्रेम्स से वहां पहुंचने के रास्ते से छोटा और बेहतर था।

सूचना मिलने की रात को कुतूज़ोव ने बग्रातिओन की कमान में चार हज़ार सैनिकों को पहाड़ों में से क्रेम्स-ज़्नैस मार्ग से वियना-ज़्नैम मार्ग की तरफ़ दायीं ओर को भेज दिया था। बग्रातिओन को विश्राम के बिना यह फ़ासला तय करना था और वियना की तरफ़ मुंह तथा ज़्नैम की ओर पीठ करके रुकना था। यदि वह फ़्रांसीसियों से पहले वहां पहुंचने में सफल हो जाये तो उसे उन्हें जब तक सम्भव हो, वहीं रोके रखना था। ख़ुद कुतूज़ोव पूरे सामान और गाड़ियों के साथ ज़्नैम की ओर रवाना हो गये थे।

तूफ़ानी रात में रास्तों के बिना पहाड़ों को लांघते हुए बग्रातिओन के भूखे-प्यासे, नंगे पांव सैनिकों ने, जिनमें से एक तिहाई पीछे रह गये, पैंतीस किलोमीटर से अधिक का फ़ासला तय किया और वियना-ज़्नैम मार्ग पर स्थित होल्लाब्रून में फ़्रांसीसियों से, जो वियना से यहां आ रहे थे, कुछ घण्टे पहले पहुंच गये। कुतूज़ोव को सारे सामान और गाड़ियों के साथ ज़्नैम पहुंचने के लिये अभी चौबीस घण्टों तक और सफ़र जारी रखना था। इसलिये सेना को बचाने के लिये बग्रातिओन को भूखे और थके-हारे चार हज़ार सैनिकों के सहारे होल्लाब्रून में अपने

सामने आनेवाली दुश्मन की सारी सेना को चौबीस घण्टों तक रोके रखना था जो स्पष्टतः असम्भव था। किन्तु भाग्य के एक अजीब खेल ने असम्भव को सम्भव बना दिया। धोखे की उस चाल की सफलता ने, जिसकी बदौलत लड़ाई के बिना ही वियना का पुल फ़्रांसीसियों के क़ब्ज़े में आ गया था, म्युराट को कुतूज़ोव की आंखों में भी धूल झोंकने के लिये प्रोत्साहित किया। ज़्नैम के रास्ते पर बग्रातिओन की थोड़ी-सी फ़ौज के सामने आने पर म्युराट ने सोचा कि यह कुतूज़ोव की पूरी सेना थी। इस सेना को बिल्कुल ही कुचल डालने के लिये यह ज़रूरी था कि वह वियना से अपनी पूरी फ़ौज के आ जाने का इन्तज़ार करे। इसी उद्देश्य से उसने इस शर्त पर तीन दिन के युद्ध-विराम का सुझाव पेश किया कि दोनों सेनायें अपनी स्थिति नहीं बदलेंगी और अपनी-अपनी जगह से नहीं हिलेंगी। म्युराट ने विश्वास दिलाया कि शान्ति-सन्धि की बातचीत चल रही है और इसलिये व्यर्थ की ख़ून-ख़राबी से बचने के हेतु वह युद्ध-विराम का प्रस्ताव पेश करता है। आस्ट्रियायी जनरल काउंट नोसतीत्स ने, जो अपनी सेना के साथ आगे की चौकियों पर था, म्युराट के सन्देशवाहक के शब्दों का विश्वास कर लिया, वहां से हट गया और इस तरह उसने बग्रातिओन की फ़ौज को अरक्षित छोड़ दिया। दूसरा सन्देशवाहक इसी शान्ति-सन्धि की बातचीत की ख़बर और तीन दिन के युद्ध-विराम का सुझाव लेकर रूसी सेना में पहुंचा। बग्रातिओन ने जवाब दिया कि वह युद्ध-विराम को स्वीकार या अस्वीकार नहीं कर सकता और इसलिये उसने अपने एडजुटेंट को इस प्रस्ताव की सूचना देने के लिये कुतूज़ोव के पास भेजा है।

कुतूज़ोव के लिये युद्ध-विराम ही कुछ समय हासिल करने, बहुत बुरी तरह से थकी-हारी बग्रातिओन की फ़ौज को थोड़ा आराम कर लेने देने और भारी सामान तथा गाड़ियों को (जिनकी गति-विधि को फ़्रांसीसियों से गुप्त रखा गया था) ज़्नैम के कुछ अधिक निकट पहुंचने की सम्भावना देने का एकमात्र उपाय था। युद्ध-विराम का प्रस्ताव सेना को बचाने का एकमात्र और अप्रत्याशित अवसर दे रहा था। यह सूचना मिलते ही कुतूज़ोव ने अपने साथ उपस्थित एडजुटेंट-जनरल विंत्सीनगेरोदे को फ़ौरन शत्रु-शिविर में भेजा। उसे न केवल युद्ध-विराम को स्वीकारने, बल्कि आत्म-समर्पण की शर्तें भी पेश करने की हिदायत दी गयी। साथ ही कुतूज़ोव ने अपने एडजुटेंटों को इस हेतु

वापस भेजा कि वे क्रेम्स-ज़्नैम मार्ग पर सामान की गाड़ियों की गति को यथासम्भव तेज़ करवाने की कोशिश करें। बग्रातिओन की थकी-हारी, भूखी-प्यासी फ़ौज को ही इन गाड़ियों और पूरी सेना के आगे बढ़ते जाने की प्रक्रिया को छिपाने के लिये अपने से आठ गुना शक्तिशाली शत्रु के सामने डटे रहना था।

कुतूज़ोव का यह अनुमान कि उन्हें किसी भी चीज़ के लिये वचनबद्ध न करनेवाले आत्म-समर्पण का प्रस्ताव कुछ गाड़ियों को पहुंच जाने की सम्भावना दे देगा सही निकला। इतना ही नहीं, उनका यह सोचना भी ठीक निकला कि म्युराट की ग़लती की जल्दी ही क़लई खुल जायेगी। जब बोनापार्ट को, जो होल्लाब्रून से छब्बीस किलोमीटर दूर शेनब्रून्न में था, म्युराट का सन्देश और युद्ध-विराम तथा आत्म-समर्पण का मसविदा मिला, तो उसने फ़ौरन इसमें छिपे धोखे को भांप लिया और म्युराट को यह पत्र लिखा:

"प्रिंस म्युराट को। शेनब्रून्न, २५ ब्रूमेर, १८०५, सुबह के ८ बजे।

आपके प्रति अपनी नाराज़गी प्रकट करने के लिये मेरे पास शब्द नहीं हैं। आप केवल मेरे हरावल के कमांडर हैं और मेरे आदेश के बिना आपको युद्ध-विराम का प्रस्ताव करने का कोई अधिकार नहीं है। आप मुझे सारे अभियान के सुफलों से वंचित होने को विवश कर रहे हैं। युद्ध-विराम को तुरन्त भंग करके शत्रु पर आक्रमण कीजिये। उसे बता दीजिये कि आत्म-समर्पण के लिये हस्ताक्षर करनेवाले जनरल को ऐसा करने का कोई अधिकार नहीं था और रूसी सम्राट के अतिरिक्त अन्य किसी को यह अधिकार नहीं है।

हां, अगर रूसी सम्राट उल्लिखित शर्तों को स्वीकार कर लेता है तो मैं भी स्वीकार कर लूंगा। किन्तु यह चालाकी के सिवा कुछ नहीं। आगे बढ़िये, रूसी सेना को कुचल डालिये... आप उनके फ़ौजी सामान, गाड़ियों और तोपों पर क़ब्ज़ा कर सकते हैं।

रूसी सम्राट का एडजुटेंट-जनरल धोखेबाज़ है... सत्ताधिकार न होने पर अफ़सरों का कोई महत्त्व नहीं होता। उसके पास भी सत्ताधिकार नहीं है... वियना का पुल पार करने के मामले में आस्ट्रिया-

वाले धोखे का शिकार हो गये और अब आप सम्राट के एडजुटेंट के धोखे में आ रहे हैं।

नेपोलियन।"

बोनापार्ट का एडजुटेंट यह भयंकर पत्र लेकर अपने घोड़े को सरपट दौड़ाता हुआ म्युराट की ओर रवाना हो गया। ख़ुद बोनापार्ट भी, जो अपने जनरलों पर भरोसा नहीं करता था, पूरी सेना लेकर युद्ध-क्षेत्र की ओर चल पड़ा, ताकि कहीं बलि का बकरा उसके हाथ से न निकल जाये। इसी समय बग्रातिओन के चार हज़ार सैनिक अलाव जलाकर अपने कपड़े सुखा रहे थे, तन गर्मा रहे थे, तीन दिन के बाद पहली बार दलिया पका रहे थे और उनमें से कोई भी न तो जानता था और न कल्पना ही कर सकता था कि उसके साथ क्या बीतनेवाली है।

१५

प्रिंस अन्द्रेई कुतूज़ोव से लगातार अनुरोध करता रहा कि उसे लड़ाई में भेज दिया जाये और आख़िर उनकी स्वीकृति पाकर वह दिन के तीन बजने के बाद ग्रुन्ट में प्रिंस बग्रातिओन के सामने हाज़िर हुआ। बोनापार्ट का एडजुटेंट अभी तक म्युराट के पास नहीं पहुंचा था और लड़ाई अभी शुरू नहीं हुई थी। बग्रातिओन की फ़ौज में घटनाचक्र के सामान्य रुख़ के बारे में किसी को कुछ मालूम नहीं था। वहां शान्ति की चर्चा होती थी, किन्तु उसकी सम्भावना में कोई विश्वास नहीं करता था। लड़ाई की बात होती थी, किन्तु यह भी कोई नहीं मानता था कि जल्द ही लड़ाई होनेवाली है।

बग्रातिओन यह जानता था कि बोल्कोन्स्की प्रधान सेनापति का चहेता और विश्वसनीय एडजुटेंट है, इसलिये उसने उसकी ओर ख़ास ध्यान देते और कृपाभाव दिखाते हुए उसका स्वागत किया, उसे यह बताया कि सम्भवतः आज या कल लड़ाई शुरू हो जायेगी और इस बात की पूरी छूट दे दी कि लड़ाई के वक़्त वह उसके साथ रह सकता है या फिर चण्डावल में रहकर पीछे हटने के प्रबन्ध पर नज़र रख

सकता है, "जो कुछ कम महत्त्वपूर्ण नहीं था।"

"वैसे, सम्भवतः आज तो लड़ाई नहीं होगी," बग्रातिओन ने मानो प्रिंस अन्द्रेई को तसल्ली देते हुए कहा।

"अगर यह प्रधान सेनापति के स्टॉफ़ का एक आम बांका-छैला अफ़सर है जिसे तमग़ा हासिल करने के लिये यहां भेजा गया है तो चण्डावल में रहते हुए भी इनाम हासिल कर लेगा और अगर यह मेरे साथ रहना चाहता है तो बेशक ऐसा करे... अगर बहादुर अफ़सर है तो मेरे किसी काम आयेगा," बग्रातिओन ने सोचा। प्रिंस अन्द्रेई ने कोई जवाब न देकर सारी स्थिति का जायज़ा लेने और यह देखने की अनुमति मांगी कि सेना कहां-कहां तैनात है, ताकि कोई कार्य-भार सौंपा जाने पर उसे यह मालूम हो कि कहां और किधर जाना है। इस फ़ौज के ड्यूटी-अफ़सर ने, जो सुन्दर और बना-ठना व्यक्ति था, तर्जनी उंगली में हीरे की अंगूठी पहने था तथा ग़लत, मगर बड़े उत्साह से फ़्रांसीसी बोलता था, प्रिंस अन्द्रेई के साथ जाने को तत्परता प्रकट की।

सभी ओर बारिश में भीगे और मुंह लटकाये अफ़सर मानो कुछ ढूंढ़ते-से दिखायी दे रहे थे और सैनिक गांव से दरवाज़े, बेंचें और बाड़ें घसीटकर ला रहे थे।

"देखिये प्रिंस, इन लोगों को किसी तरह भी रोकना सम्भव नहीं," सैनिकों की ओर संकेत करते हुए ड्यूटी-अफ़सर ने कहा। "इनके अफ़सर इन्हें ढील दे देते हैं। और वहां," उसने कैंटीन के तम्बू की तरफ़ इशारा किया, "वहां वे जमा होकर बैठे रहते हैं। आज सुबह मैंने सभी को वहां से खदेड़ा था, अब देखिये, फिर वहां उनकी भीड़ जमा है। प्रिंस, वहां जाकर उन्हें ज़रा डराना-धमकाना चाहिये। मैं अभी लौटता हूं।"

"हम साथ ही चलते हैं, मैं भी वहां से कुछ पनीर और एक पाव रोटी ले लूंगा," प्रिंस अन्द्रेई ने कहा जो अभी तक भोजन नहीं कर पाया था।

"आपने पहले यह क्यों नहीं बताया, प्रिंस? मैं आपके लिये खाने को कुछ हाज़िर कर देता।"

ये दोनों घोड़ों से उतरकर कैंटीनवाले तम्बू में गये। वहां क्लान्त और लाल चेहरोंवाले कुछ अफ़सर बैठे हुए खा-पी रहे थे।

"यह भी कोई बात है, महानुभावो !" ड्यूटी-अफ़सर ने उस व्यक्ति के भर्त्सनापूर्ण अन्दाज़ में कहा जो एक ही बात को पहले भी कई बार कह चुका हो। "अपनी जगहों से आपका ऐसे ग़ायब रहना अच्छा नहीं। प्रिंस का आदेश है कि यहां किसी को भी नहीं होना चाहिये। कप्तान महोदय," उसने तोपख़ाने के नाटे-से, गन्दे-मन्दे, दुबले-पतले अफ़सर को सम्बोधित किया जो बूटों के बिना (जिन्हें उसने सुखाने के लिये कैंटीनवाले को दे दिया था) केवल मोज़े पहने था, इन दोनों अफ़सरों के आने पर खड़ा हो गया था और बनावटी ढंग से मुस्करा रहा था।

"कप्तान तूशिन, आपको शर्म नहीं आती?" ड्यूटी-अफ़सर कहता गया। "तोपख़ाने के अफ़सर के नाते आपको दूसरों के सामने मिसाल पेश करनी चाहिये, लेकिन आप बूटों के बिना हैं। अगर ख़तरे की घण्टी बज जाती है तो आप बूटों के बिना बहुत ख़ूब नज़र आयेंगे।" (ड्यूटी-अफ़सर मुस्कराया।) "महानुभावो, कृपया सभी अपनी-अपनी जगह पर चले जाइये, सभी के सभी," उसने अधिकारपूर्ण ढंग से इतना और कह दिया।

कप्तान तूशिन की ओर देखते हुए प्रिंस अन्द्रेई बरबस मुस्करा दिया। ख़ामोश और मुस्कराते तथा पांव बदलते हुए वह बड़ी-बड़ी, समझदार और दयालु आंखों से मानो कुछ पूछता-सा कभी प्रिंस अन्द्रेई तो कभी ड्यूटी-अफ़सर की तरफ़ देख रहा था।

"फ़ौजियों का कहना है कि बूटों के बिना अधिक फुर्ती से काम हो सकता है," कप्तान तूशिन ने मुस्कराते और झेंपते हुए कहा। सम्भवतः वह अपनी इस अटपटी स्थिति को मज़ाक़ में बदल देना चाहता था।

किन्तु अपनी बात पूरी किये बिना ही उसने यह महसूस कर लिया कि उसके मज़ाक़ को मज़ाक़ की तरह नहीं लिया गया और उसे अपने उद्देश्य में कामयाबी नहीं मिली। वह झेंप गया।

"अपनी जगहों पर चले जाइये," गम्भीर मुद्रा बनाये रखने की कोशिश करते हुए ड्यूटी-अफ़सर ने कहा।

प्रिंस अन्द्रेई ने तोपख़ाने के इस अफ़सर की नाटी-सी आकृति पर फिर से नज़र डाली। उसमें कोई ख़ास बात थी, सैनिक जैसा कुछ नहीं था, थोड़ा उपहासजनक, मगर बहुत ही आकर्षक कुछ था।

ड्यूटी-अफ़सर और प्रिंस अन्द्रेई घोड़ों पर सवार होकर आगे चल दिये।

गांव से बाहर जाने पर अपने पास से आते-जाते विभिन्न प्रकार के सैनिकों और अफ़सरों से उनकी भेंट होती रही तथा बायीं ओर उन्हें इस समय खोदी जा रही ख़न्दक़ों की ताज़ा-ताज़ा और लाल-लाल मिट्टी दिखायी दी। ठण्डी हवा के बावजूद सैनिकों की कई बटालियनें सफ़ेद चींटियों की भांति इन ख़न्दक़ों को खोदने में जुटी हुई थीं और ख़न्दक़ों के पीछे से फावड़े लगातार लाल मिट्टी बाहर फेंकते जा रहे थे। ये दोनों इस क़िलेबन्दी के पास गये और इसे देखकर आगे बढ़ गये। इस क़िलेबन्दी के बिल्कुल पीछे उन्हें कुछ दर्जन सैनिक दिखायी दिये जो अपनी बारी लेने के लिये लगातार ख़न्दक़ की तरफ़ दौड़ रहे थे या वहां से वापस आ रहे थे। इन दोनों को इस भयानक बदबूवाले वातावरण से बचने के लिये अपनी नाकें दबानी और घोड़ों को एड़ लगाकर तेज़ी से दुलकी चाल से भगाना पड़ा।

"यह है सैनिक-शिविर की ज़िन्दगी का लुत्फ़, प्रिंस," ड्यूटी-अफ़सर ने कहा।

वे सामनेवाली पहाड़ी पर चढ़ गये। यहां से फ़्रांसीसी दिखायी दे रहे थे। प्रिंस अन्द्रेई रुककर सभी ओर नज़र दौड़ाने लगा।

"वहां हमारी तोपें हैं," ड्यूटी-अफ़सर ने सबसे ऊंचे स्थान की ओर संकेत करते हुए कहा। "वही अजीब-सा आदमी, जो बूटों के बिना बैठा था, इस तोपख़ाने का अफ़सर है। वहां से सब कुछ दिखायी देता है। आइये चलें, प्रिंस।"

"आपको बहुत, बहुत धन्यवाद देता हूं। मैं अब अकेला ही जाऊंगा," ड्यूटी-अफ़सर से अपना पिंड छुड़ाने की इच्छा से प्रिंस अन्द्रेई ने कहा। "आपको अब और तकलीफ़ उठाने की जरूरत नहीं।"

ड्यूटी-अफ़सर वापस चला गया और प्रिंस अन्द्रेई ने अपना घोड़ा आगे बढ़ा दिया।

ज्यों-ज्यों वह शत्रु की दिशा में बढ़ता गया, त्यों-त्यों उसने सैनिकों को अधिकाधिक सुव्यवस्थित और प्रसन्नचित्त पाया। सबसे ज़्यादा गड़बड़ और मायूसी उसे सामान और तोपोंवाली गाड़ियों के ज़्नैम के सबसे पासवाले उस तांते के सैनिकों में दिखायी दी थी, जिसके क़रीब से वह उस सुबह को गुज़रा था और जो फ़्रांसीसियों से कोई ग्यारह

किलोमीटर दूर था। ग्रुन्ट में भी कुछ घबराहट और किसी चीज के भय की अनुभूति होती थी। प्रिंस अन्द्रेई फ़्रांसीसियों की सीमा के जितना अधिक निकट पहुंचता जाता था, हमारे सैनिक उसे अधिकाधिक आश्वस्त दिखायी देते थे। बड़े फ़ौजी कोट पहने हुए सैनिक क़तारों में खड़े थे और सार्जेंट-मेजर तथा कम्पनी-कमांडर हर क़तार के आखिरी फ़ौजी की छाती पर उंगली मारते और उसे हाथ ऊपर उठाने का आदेश देते हुए उनकी गिनती कर रहे थे। सारे क्षेत्र में फैले फ़ौजी लकड़ियां और टहनियां ला रहे थे तथा हंसते और बोलते-बतियाते हुए झोंपड़ियां बना रहे थे। अलावों के पास कपड़े पहने और नंगे फ़ौजी बैठे थे जो अपनी क़मीज़ों तथा पैरों पर लपेटने की फ़ौजी पट्टियां सुखा रहे थे, अपने बूटों या बड़े फ़ौजी कोटों की मरम्मत कर रहे थे या देग़चों और दलिया पकानेवालों के गिर्द भीड़ लगाये थे। एक कम्पनी में दलिया तैयार भी हो गया था और सैनिक ललचायी नज़रों से भाप उगलते देग़चों को देखते हुए उसके चख लिये जाने का इन्तज़ार कर रहे थे जिसे क्वाटर मास्टर सार्जेंट लकड़ी के कटोरे में डालकर अपनी झोंपड़ी के सामने बैठे हुए अफ़सर के पास ले जा रहा था।

एक अन्य, अधिक ख़ुशक़िस्मत कम्पनी में, क्योंकि सभी फ़ौजी कम्पनियों के पास वोद्का नहीं थी, सैनिक एक चौड़े-चकले कन्धोंवाले चेचकरू सार्जेंट-मेजर के नज़दीक भीड़ लगाये खड़े थे जो कनस्तर को झुका-झुकाकर अपनी ओर बढ़ाये जानेवाले मगों में बारी से वोद्का डालता जाता था। सैनिक श्रद्धापूर्ण चेहरों से मगों को मुंह के पास ले जाते, वोद्का को मुंह में डालते, गला तर करते, ओवरकोटों की आस्तीनों से होंठ पोंछते और खिले हुए चेहरों से सार्जेंट-मेजर के पास से हट जाते। सभी चेहरे ऐसे शान्त थे मानो यह सब कुछ दुश्मन के बिल्कुल नज़दीक, लड़ाई के पहले नहीं, जिसमें कम से कम आधे सैनिक खेत रहनेवाले थे, बल्कि पड़ाव की प्रतीक्षा में कहीं मातृभूमि में ही हो रहा हो। निशानेबाज़ों की रेजिमेंट के पास से गुज़रने के बाद प्रिंस अन्द्रेई कीयेव की ग्रेनेडियर रेजिमेंट के निकट पहुंचा जिसके हृष्ट-पुष्ट जवान ऐसे ही शान्तिपूर्ण कार्यों में व्यस्त थे। यहां एक झोंपड़ी के क़रीब, जो ऊंची होने के कारण अन्य रेजिमेंट-कमांडरों की झोंपड़ियों से भिन्न थी, वह ग्रेनेडियर रेजिमेंट के एक ऐसे दस्ते के निकट जा पहुंचा जिसके सामने एक नंगा आदमी लेटा हुआ था। दो फ़ौजी उसे पकड़े हुए थे

और दो फ़ौजी लचीले बेंतों को हवा में घुमाकर लयबद्ध ढंग से उसकी नंगी पीठ पर मार रहे थे। सज़ा पानेवाला फ़ौजी ख़ूब ज़ोर से चीख़-चिल्ला रहा था। एक मोटा-सा मेजर लगातार उसके सामने इधर-उधर आता-जाता और उसकी चीख़ों की तरफ़ कोई ध्यान दिये बिना कहता जा रहा था :

"सैनिक के लिये चोरी करना बहुत शर्म की बात है, सैनिक को ईमानदार, नेक और बहादुर होना चाहिये। अगर उसने अपने फ़ौजी भाई की कोई चीज़ चुरायी है, तो उसमें ईमानदारी जैसी कोई चीज़ नहीं। वह कमीना है। और पिटाई करो, और पिटाई करो इसकी!"

और लचीले बेंतों की मार और फ़ौजी की बहुत ऊंची तथा बनावटी चीख़ें लगातार सुनायी दे रही थीं।

"और पिटाई करो, और पिटाई करो," मेजर कहता जा रहा था।

एक जवान अफ़सर अपने चेहरे पर अचम्भे और वेदना का भाव लिये हुए सज़ा पानेवाले के पास से हट गया और घोड़े पर जा रहे एडजुटेंट को प्रश्नसूचक दृष्टि से देखता रहा।

प्रिंस अन्द्रेई अग्रिम रेखा पर पहुंचकर आगेवाली चौकियों के नज़दीक से गुज़रने लगा। दायें और बायें बाज़ू हमारी और दुश्मन की फ़ौजें एक-दूसरी से काफ़ी दूर खड़ी थीं, किन्तु बीच में उस जगह, जहां सुबह के वक़्त युद्ध-विराम के सन्देशवाहक मिले थे, वे इतनी निकट आ गयी थीं कि फ़ौजी एक-दूसरे को देख और आपस में बातें कर सकते थे। इन चौकियों पर उपस्थित फ़ौजियों के अलावा दोनों ओर अनेक स्थानीय, जिज्ञासु दर्शक खड़े थे जो हंसी-मज़ाक़ करते हुए अपने लिये इन अजीब और अजनबी शत्रुओं को घूर-घूरकर देख रहे थे।

अग्रिम चौकियों के नज़दीक आने की मनाही के बावजूद अफ़सर लोग सुबह से ही जिज्ञासु दर्शकों से अपना पिंड नहीं छुड़ा पा रहे थे। कोई दुर्लभ चीज़ दिखानेवाले लोगों की भांति इन चौकियों पर खड़े फ़ौजी अब फ़्रांसीसियों की तरफ़ ध्यान न देकर दर्शकों की ओर देखते थे तथा ऊबते हुए अपनी ड्यूटी के ख़त्म होने का इन्तज़ार करते थे। प्रिंस अन्द्रेई ने फ़्रांसीसियों पर अच्छी तरह नज़र दौड़ाने के लिये अपना घोड़ा रोका।

"अरे देख तो, उधर देख तो," एक फ़ौजी अपने साथी सैनिक

से उस निशानेबाज़ रूसी सैनिक की तरफ़ इशारा करके कह रहा था जो अपने कप्तान के साथ फ़्रांसीसियों की चौकी के क़रीब पहुंच गया था और फ़्रांसीसी ग्रेनेडियर से जल्दी-जल्दी और उत्तेजित आवाज़ में कुछ कह रहा था। "अरे वाह, कैसे फर्राटे से बोल रहा है! बेचारा फ़्रांसीसी इतनी जल्दी-जल्दी जवाब नहीं दे पा रहा है। अब तू कुछ बोल तो, सीदोरोव!.."

"ज़रा ठहर, सुनने दे। भई वाह, ख़ूब है!" सीदोरोव ने जवाब दिया जो फ़्रांसीसी भाषा का बड़ा पंडित माना जाता था।

हंसते हुए फ़ौजी जिस सैनिक की तरफ़ इशारा कर रहे थे, वह दोलोख़ोव था। प्रिंस अन्द्रेई ने उसे पहचान लिया और उसकी बातचीत सुनने लगा। अपने कप्तान के साथ दोलोख़ोव बायें बाज़ू से, जहां उनकी निशानेबाज़ रेजिमेंट थी, यहां आया था।

"कुछ और कहो, तुम कुछ और कहो!" कप्तान आगे झुकते और अपने पल्ले न पड़नेवाले एक-एक शब्द को सुनने की कोशिश करते हुए दोलोख़ोव को उत्साहित कर रहा था। "कृपया, बोलते जाओ। वह क्या कह रहा है?"

दोलोख़ोव ने कप्तान को जवाब नहीं दिया। वह फ़्रांसीसी ग्रेनेडियर के साथ गर्मागर्म बहस में उलझा हुआ था। जैसा कि होना चाहिये था, वे दोनों लड़ाई की चर्चा कर रहे थे। आस्ट्रियावालों को रूसियों के साथ गड़बड़ाते हुए फ़्रांसीसी सैनिक यह सिद्ध करने का प्रयास कर रहा था कि रूसी अपनी हार मानकर उल्म के निकट से मैदान छोड़कर भाग खड़े हुए थे। दूसरी ओर दोलोख़ोव यह प्रमाणित कर रहा था कि रूसियों की हार नहीं हुई थी, बल्कि उन्होंने फ़्रांसीसियों के छक्के छुड़ा दिये थे।

"यहां आपको मार भगाने का हुक्म मिलेगा तो मार भगायेंगे," दोलोख़ोव कहता रहा।

"बस, इतनी ही ख़ैर मनाइये कि आपके सभी कज़्ज़ाकों समेत आप सबको बन्दी न बना लिया जाये," फ़्रांसीसी ग्रेनेडियर ने कहा।

दर्शक और फ़्रांसीसी श्रोता खिलखिलाकर हंस पड़े।

"आपको वैसे ही नाकों चने चबवायेंगे जैसे सुवोरोव के वक़्त हुआ था," दोलोख़ोव ने जवाब दिया।

"यह क्या राग अलाप रहा है?" एक फ़्रांसीसी ने पूछा।

"पुराने इतिहास का," एक फ़्रांसीसी ने कहा जिसने अनुमान लगा लिया था कि अतीत की लड़ाइयों की चर्चा हो रही है। "हमारा सम्राट तुम्हारे सुवारा और बाक़ी सबकी भी अक़्ल ठिकाने करेगा..."

"बोनापार्ट..." दोलोख़ोव ने कहना शुरू किया, मगर फ़्रांसीसी ने उसे टोक दिया।

"बोनापार्ट नहीं, सम्राट! बुरा हो शैतान का..." वह ग़ुस्से से चिल्लाया।

"तुम्हारे सम्राट पर शैतान की मार!"

और दोलोख़ोव ने फ़ौजी ढंग से रूसी में ढेर सारी गन्दी गालियां बक दीं और बन्दूक़ को कंधे पर लटकाकर पीछे हट गया।

"आइये चलें, इवान लुकीच," उसने कप्तान से कहा।

"तो ऐसे बोली जाती है फ़्रांसीसी भाषा," चौकी के सैनिक कह उठे। "तो अब तू कुछ बोल, सीदोरोव!"

सीदोरोव ने आंख मिचकायी और फ़्रांसीसियों को सम्बोधित करते हुए जल्दी-जल्दी तथा समझ में न आनेवाले शब्द बोलने लगा:

"कारी, माला, ताफ़ा, साफ़ी, मूटेर, कास्का," अपनी आवाज़ को अभिव्यक्तिपूर्ण बनाते हुए वह बड़बड़ाता गया।

"हो, हो, हो! हा, हा, हा, हा! हे! हे!" फ़ौजियों के बीच स्वस्थ और ज़ोरदार ठहाका गूंज उठा तथा ख़ुशी की यह लहर बरबस फ़्रांसीसियों तक पहुंच गयी। इसके बाद ऐसा प्रतीत हुआ कि अब बन्दूक़ों की गोलियां हवा में छोड़ दी जानी चाहिये, गोला-बारूद को तबाह करके इन सबको जल्दी से अपने-अपने घरों को लौट जाना चाहिये।

किन्तु बन्दूक़ें ज्यों की त्यों भरी रहीं, झोंपड़ियों और लट्ठों की चौकियों में गोलियां चलने के लिये बनाये गये छेद पहले की तरह ही रौद्रता से सामने की ओर देखते रहे और तोप-गाड़ियों से उतारकर नीचे रख दी गयीं तोपें एक-दूसरी के सामने रखी रहीं।

१६

दायें से बायें बाज़ू तक पूरे मोर्चे का चक्कर लगाकर प्रिंस अन्द्रेई अपने घोड़े को उस तोपख़ाने के पास टीले पर चढ़ा ले गया, जहां

से, ड्यूटी-अफ़सर के शब्दों में, पूरा मैदान दिखायी देता था। यहां घोड़े से उतरकर वह तोप-गाड़ियों से नीचे उतार ली गयीं चार तोपों में से अन्तिम तोप के पास रुक गया। एक सन्तरी तोपों के सामने पहरा दे रहा था। उसने अफ़सर के सामने तनकर सावधान खड़े होना चाहा था, किन्तु प्रिंस अन्द्रेई की ओर से ऐसा न करने का संकेत मिलने पर उसने फिर से अपने सधे-बधे और नीरस ढंग से पहरा देना शुरू कर दिया। तोपों के पीछे उनकी गाड़ियां खड़ी थीं तथा थोड़ी और दूरी पर घोड़ों के खूंटे तथा तोपचियों के अलाव जल रहे थे। बायीं ओर, अन्तिम तोप से कुछ ही दूर टट्टर की नयी झोंपड़ी बनी हुई थी जिसमें से अफ़सरों की उत्साहपूर्ण बातचीत सुनायी दे रही थी।

वास्तव में ही तोपख़ाने से पूरी रूसी सेना और शत्रु-सेना का अधिकांश भाग दिखायी दे रहा था। तोपख़ाने की बिल्कुल सीध में, सामनेवाली पहाड़ी के क्षितिज पर शेनग्राबेन गांव नज़र आ रहा था। बायें और दायें अलावों के धुएं के बीच से तीन जगहों पर फ़्रांसीसी सैनिक दलों को देखा जा सकता था जिनका अधिकतर भाग सम्भवतः गांव में और पहाड़ी के पीछे ही था। गांव से बायीं ओर को धुएं में तोपख़ाने जैसा कुछ लग रहा था। किन्तु उसे केवल आंखों से ही अच्छी तरह देख पाना सम्भव नहीं था। हमारी सेना का दायां बाज़ू काफ़ी खड़ी ऊंचाई पर था और फ़्रांसीसी सेना की स्थिति से ऊंचा था। हमारी पैदल सेना इस ऊंचाई पर थी और इसके बिल्कुल सिरे पर घुड़सेना दिख रही थी। मध्य में, जहां तूशिन का तोपख़ाना था, और जहां से प्रिंस अन्द्रेई सेना की स्थिति को देख रहा था, बहुत ही खड़ी ढाल और हमारी सेना को शेनग्राबेन गांव से अलग करनेवाले नाले की ओर जानेवाली चढ़ाई थी। बायीं तरफ़ हमारी सेना जंगल से सटी हुई थी, जहां हमारे सैनिकों के अलाव जल रहे थे और प्यादा फ़ौजी पेड़ काट रहे थे। फ़्रांसीसियों का मोर्चा हमारे मोर्चे से अधिक चौड़ा था और स्पष्ट था कि फ़्रांसीसी दोनों बाज़ुओं से हमपर हमला कर सकते थे। हमारी सेना के पीछे खड़ा और गहरा खड्ड था जिसके कारण तोपख़ाने और घुड़सेना के लिये पीछे हट पाना मुश्किल होगा। प्रिंस अन्द्रेई ने तोप पर कोहनी टिका ली और नोटबुक निकालकर अपने लिये सेनाओं की स्थिति का ख़ाका बनाने लगा। उसने इस इरादे से दो जगहों पर पेंसिल से निशान लगाये कि उनकी तरफ़ वह बग्रातिओन का ध्यान

आकृष्ट करेगा। उसका पहला विचार तो यह था कि पूरे तोपख़ाने को मध्य में ही केन्द्रित किया जाये और दूसरे यह कि घुड़सेना को खड्ड के दूसरी ओर ले जाया जाये। निरन्तर प्रधान सेनापति के साथ रहने, बड़े पैमाने पर सेनाओं की गति-विधि तथा सामान्य अनुदेशों की ओर ध्यान देने और लगातार लड़ाइयों के ऐतिहासिक वर्णन का अध्ययन करने के फलस्वरूप प्रिंस अन्द्रेई ने अनचाहे ही मोटे तौर पर यह अनुमान लगा लिया कि भावी लड़ाई का रुख़ क्या हो सकता है। उसे लगा कि प्रमुख सम्भावनायें ये हो सकती हैं: "अगर शत्रु दायें बाज़ू पर हमला करता है," उसने अपने आपसे कहा, "तो कीयेव की ग्रेनेडियर रेजिमेंट और पोदोल्स्क की निशानेबाज़ों की रेजिमेंट को उस वक़्त तक डटे रहना होगा, जब तक कि मध्य की रिज़र्व सेना उन तक नहीं पहुंच जाती। ऐसी स्थिति में घुड़सेना दुश्मन पर कामयाबी से जवाबी हमला कर सकती है। यदि शत्रु मध्य भाग पर आक्रमण करता है तो हम मध्य के तोपख़ाने को इस ऊंची जगह पर तैनात कर देंगे और इसकी गोलाबारी की ओट में बायें बाज़ू की सेना को पीछे हटा लेंगे और सोपान बनाते हुए खड्ड तक पीछे हट जायेंगे," उसने अपने आपसे तर्क किया...

जब से वह तोप के पास खड़ा था, उसे झोंपड़ी में बातें कर रहे अफ़सरों की आवाज़ें लगातार सुनायी दे रही थीं। किन्तु, जैसा कि अक्सर होता है, उनकी बातचीत का एक भी शब्द उसकी समझ में नहीं आया था। अचानक झोंपड़ी से आ रही आवाज़ों की हार्दिकता से वह ऐसा चकित हुआ कि उसने बरबस उनपर कान लगा दिये।

"नहीं, मेरे दोस्त," प्रिंस अन्द्रेई को प्यारी और जानी-पहचानी-सी आवाज़ सुनायी दी, "मैं यह कह रहा हूं कि अगर हमारे लिये इतना जानना सम्भव होता कि मृत्यु के बाद क्या होगा तो हममें से कोई भी मौत से न डरता। यह बात है, मेरे प्यारे।"

दूसरी, कुछ अधिक जवान आवाज़ ने इस बात को काटते हुए कहा:

"डरो या न डरो, इससे फ़र्क़ ही क्या पड़ता है। मौत से बचा तो जा नहीं सकता।"

"फिर भी डर तो लगता ही है! ओह, तुम सब कुछ जाननेवाले लोग," तीसरी दिलेराना आवाज़ ने पहली दोनों आवाज़ों के तर्क

काटते हुए कहा, "तुम तोपची फ़लसफ़े की ऐसी बातें इसलिये कर सकते हो कि अपनी सभी चीज़ें, वोद्का और खाने-पीने का सामान भी अपने साथ ले जा सकते हो।"

और दिलेराना आवाज़वाला, जो सम्भवतः प्यादा फ़ौज का अफ़सर था, हंस दिया।

"हां, डर तो लगता ही है," पहली, परिचित आवाज़ फिर से सुनायी दी। "डर तो लगता है आगे के बारे में अस्पष्टता-अज्ञानता से। यही असली बात है। कहने को तो यह कहा जा सकता है कि आत्मा स्वर्ग में चली जायेगी... लेकिन हम सब जानते हैं कि स्वर्ग नहीं है, केवल वायुमण्डल है।"

दिलेराना आवाज़वाले ने फिर से तोपची को टोका।

"अपनी जड़ी-बूटियोंवाली वोद्का तो चखाइये, तूशिन," उसने कहा।

"अरे, यह तो वही कप्तान है जो कैंटीन में बूटों के बिना खड़ा था," प्रिंस अन्द्रेई ने दार्शनिक बातें करनेवाली प्यारी आवाज़ को ख़ुशी से पहचानते हुए सोचा।

"हां, वह ज़रूर चखायी जा सकती है," तूशिन ने जवाब दिया, "फिर भी अगली ज़िन्दगी को समझने के बारे में..." वह अपनी बात पूरी नहीं कर पाया।

इसी क्षण हवा में एक सनसनाहट सुनायी दी – वह निकट, निकटतर, अधिकाधिक तेज़ी से और ऊंची होती हुई, अधिकाधिक ऊंची होती और तेज़ी से नज़दीक आती गयी तथा एक गोला, जो मानो अपनी पूरी बात नहीं कह पाया, जो कहना चाहता था, बहुत ही भयानक धमाके के साथ झोंपड़ी के नज़दीक गिरकर फटा। धरती इस धमाके से मानो कराह उठी।

नाटा-सा तूशिन ही अपने कुतरे सिरेवाले पाइप को मुंह के एक कोने में दबाये हुए सबसे पहले बाहर भागा आया। उसके दयालु, बुद्धिमत्तापूर्ण चेहरे का ज़रा रंग उड़ा हुआ था। उसके पीछे-पीछे दिलेराना आवाज़वाला, प्यादा फ़ौज का बांका अफ़सर बाहर निकला और भागते-भागते ही अपने बटन बन्द करता हुआ अपनी कम्पनी की तरफ़ चला गया।

१७

प्रिंस अन्द्रेई घोड़े पर सवार होकर तथा तोपखाने के पास ही रुककर उस तोप के धुएं को देखने लगा जिससे गोला आया था। पूरे विस्तार पर उसकी नज़र दौड़ गयी। उसे केवल इतना ही दिखायी दिया कि कुछ देर पहले तक फ़्रांसीसी सैनिकों का निश्चल-निश्चेष्ट समूह अब हिल-डुल रहा था और बायीं ओर वास्तव में ही तोपख़ाना था। उसके ऊपर अभी भी धुआं मंडरा रहा था। दो फ़्रांसीसी घुड़सवार, जो सम्भवतः एडजुटेंट थे, पहाड़ी पर अपने घोड़ों को सरपट दौड़ाते चले जा रहे थे। पहाड़ी के दामन में शायद अगली क़तार को मज़बूत करने के लिये छोटा, किन्तु स्पष्ट दिखायी देनेवाला सैन्य-दल बढ़ रहा था। पहले गोले का धुआं अभी ग़ायब नहीं हुआ था कि फिर से तोप दग़ने की आवाज़ हुई और दूसरे गोले का धुआं प्रकट हो गया। लड़ाई शुरू हो गयी थी। प्रिंस अन्द्रेई ने अपना घोड़ा मोड़ा और प्रिंस बग्रातिओन को ढूंढ़ने के लिये उसे ग्रुन्ट की ओर सरपट वापस दौड़ाने लगा। अपने पीछे उसे तोपों की धांय-धांय तेज़ और अधिकाधिक ऊंची होती सुनायी दे रही थी। स्पष्ट था कि हमारी ओर से भी जवाब दिया जाने लगा था। नीचे, जहां सन्देशवाहक मिले थे, बन्दूक़ों की ठांय-ठांय सुनायी दे रही थी।

लेमारुआ अभी-अभी बोनापार्ट का क्रोधपूर्ण पत्र लेकर आया था और लज्जित म्युराट ने अपनी भूल सुधारने के लिये तत्काल अपनी सेनाओं को मध्य भाग और दायें-बायें दोनों बाज़ुओं पर यह आशा करते हुए हमला करने को भेज दिया कि शाम होने और सम्राट के आने के पहले-पहले ही वह अपने सामने खड़ी इस छोटी-सी सेना को कुचल डालेगा।

"शुरू हो गयी लड़ाई! शुरू हो गयी!" प्रिंस अन्द्रेई ने यह अनुभव करते हुए कि कैसे उसका दिल बहुत ज़ोर से धड़कने लगा है, सोचा। "किन्तु कहां है वह? किस रूप में मेरा तुलोन सामने आयेगा?" वह सोच रहा था।

उन्हीं फ़ौजी कम्पनियों के बीच से गुज़रते हुए, जहां पन्द्रह मिनट पहले दलिया खाया और वोद्का पी जा रही थी, उसे हर जगह फुर्ती से क़तारों में खड़े होते और बन्दूक़ें सम्भालते सैनिक दिखायी दिये और

उन सभी के चेहरों पर उत्साह का वही भाव था जो उसके दिल में उमड़ रहा था। "शुरू हो गयी लड़ाई! शुरू हो गयी! भयानक और उल्लासपूर्ण!" प्रत्येक सैनिक तथा अफ़सर का चेहरा मानो यही कह रहा था।

अभी तक बनायी जा रही क़िलेबन्दी तक पहुंचने के पहले पतझर की बुरे मौसमवाली शाम के सन्धि-प्रकाश में उसे अपनी ओर आते घुड़सवार दिखायी दिये। लबादा और मेमने की बढ़िया खाल की टोपी पहने सबसे आगे आ रहा घुड़सवार सफ़ेद घोड़े पर सवार था। यह प्रिंस बग्रातिओन था और प्रिंस अन्द्रेई उसकी प्रतीक्षा करते हुए रुक गया। प्रिंस बग्रातिओन ने अपना घोड़ा रोका और प्रिंस अन्द्रेई को पहचानकर उसकी तरफ़ सिर झुकाया। प्रिंस अन्द्रेई जब तक वह सब कुछ बताता रहा जो उसने देखा था, प्रिंस बग्रातिओन लगातार सामने की तरफ़ देखता रहा।

"लड़ाई शुरू हो गयी! शुरू हो गयी!" यह भाव तो प्रिंस बग्रातिओन की अधमुंदी, धुंधली-धुंधली मानो उनींदी आंखोंवाले, दृढ़, सांवले चेहरे पर भी देखा जा सकता था। प्रिंस अन्द्रेई व्याकुलतापूर्ण जिज्ञासा से इस शान्त-धीर चेहरे को देख रहा था और यह अनुमान लगाना चाहता था कि इस क्षण वह क्या सोच तथा अनुभव कर रहा है? "इस शान्त-निरावेग चेहरे के पीछे कुछ और भी है या नहीं?" उसे देखते हुए प्रिंस अन्द्रेई अपने आपसे पूछ रहा था। प्रिंस बग्रातिओन ने प्रिंस अन्द्रेई के शब्दों के साथ सहमति व्यक्त करने के लिये सिर झुकाया और कुछ ऐसे अन्दाज़ में "बिल्कुल ठीक" कहा मानो जो कुछ हो रहा था और उसे जो कुछ बताया जा रहा था, सोलह आने सही था जिसकी उसने पहले से कल्पना की थी। घोड़े को तेज़ी से दौड़ाने के कारण प्रिंस अन्द्रेई हांफ रहा था और जल्दी-जल्दी बोल रहा था। प्रिंस बग्रातिओन अपने पूर्वी उच्चारण में विशेष रूप से धीरे-धीरे बातें कर रहा था मानो यह जताना चाहता हो कि उतावली करने की कोई ज़रूरत नहीं है। फिर भी उसने अपने घोड़े को दुलकी चाल से तूशिन के तोपख़ाने की तरफ़ बढ़ा दिया। प्रिंस अन्द्रेई भी पूरे अमले के साथ उसके पीछे-पीछे हो लिया। प्रिंस बग्रातिओन के पीछे उसके अमले में शामिल थे – अमले का अफ़सर, उसका निजी एडजुटेंट जेरकोव, अर्दली-अफ़सर, ख़ूबसूरत अंग्रेज़ी घोड़े पर सवार ड्यूटी-

अफ़सर और फ़ौजी अदालत का असैनिक सरकारी वकील जिसने जिज्ञासावश लड़ाई के समय उपस्थित रहने का अनुरोध किया था। भोली-सी मुस्कान के साथ इधर-उधर देखता, थलथल चेहरेवाला लम्बा-सा सरकारी वकील, जो मोटा ऊनी ओवरकोट पहने था, हुस्सारों, कज़्ज़ाकों और एडजुटेंटों के बीच किसी अफ़सर के माल ले जानेवाले घोड़े के ज़ीन पर बैठा और धचके खाता हुआ अच्छा ख़ासा नमूना-सा लग रहा था।

"यह हज़रत लड़ाई देखना चाहता है," जेरकोव ने असैनिक सरकारी वकील की तरफ़ इशारा करते हुए बोल्कोन्स्की से कहा, "लेकिन इसे अभी से ठण्डे पसीने आ रहे हैं।"

"बस, काफ़ी मज़ाक़ कर चुके," असैनिक सरकारी वकील ने खिली, भोली, किन्तु साथ ही ऐसी चालाकी भरी मुस्कान के साथ कहा मानो जेरकोव का उसकी खिल्ली उड़ाना उसे अच्छा लग रहा था और वह वास्तव में जितना बुद्धू था, अपने को जान-बूझकर उससे अधिक बुद्धू ज़ाहिर करने की कोशिश कर रहा था।

"यह बहुत दिलचस्प है, मेरे प्रिंस हुज़ूर," ड्यूटी-अफ़सर ने फ़्रांसीसी में कहा। (उसे याद था कि फ़्रांसीसी में **प्रिंस** की उपाधि के लिये एक ख़ास शब्द का उपयोग होता है, मगर वह किसी तरह भी उसे ढंग से कह नहीं पा रहा था।)

इसी समय ये सभी तूशिन के तोपख़ाने के नज़दीक पहुंच गये थे और एक गोला इनके सामने आकर गिरा।

"यह क्या गिरा है?" असैनिक सरकारी वकील ने भोलेपन से मुस्कराकर पूछा।

"फ़्रांसीसी पराठा," जेरकोव ने जवाब दिया।

"तो वे लोग यही फेंकते हैं?" असैनिक सरकारी वकील ने पूछा। "कैसी भयानक चीज़ है!"

ऐसे लगा कि वह बाग़-बाग़ हुआ जा रहा है। उसने अपनी बात पूरी ही की थी कि फिर से अप्रत्याशित भयानक सनसनाहट हुई जो अचानक किसी तरल चीज़ में धमाका और सूं-सूं की आवाज़ पैदा करती हुई बन्द हो गयी – वकील के कुछ दायें और पीछे-पीछे आ रहा कज़्ज़ाक और उसका घोड़ा, दोनों ही धरती पर लुढ़क गये। जेरकोव और ड्यूटी-अफ़सर ज़ीनों पर थोड़ा झुक गये और अपने घोड़ों को दूर हटा ले गये। वकील कज़्ज़ाक के सामने रुककर उसे जिज्ञासापूर्वक और बहुत

ध्यान से देखने लगा। कज़्ज़ाक मर गया था और उसका घोड़ा छटपटा रहा था।

आंखें सिकोड़े हुए प्रिंस बग्रातिओन ने मुड़कर देखा और वहां होनेवाली गड़बड़ी का कारण जानने के बाद ऐसे उदासीनता से मुंह फेर लिया मानो कह रहा हो : "बेवक़ूफ़ी की बातों की ओर ध्यान देने में भी कोई तुक है !" उसने एक बढ़िया घुड़सवार के अन्दाज़ से अपने घोड़े को रोका, थोड़ा झुका और लबादे में उलझ गयी तलवार को ठीक किया। तलवार पुराने ढंग की थी, वैसी नहीं, जैसी आजकल होती हैं। प्रिंस अन्द्रेई को याद हो आया कि कैसे सुवोरोव ने इटली में प्रिंस बग्रातिओन को अपनी तलवार भेंट की थी। उसे इस चीज़ का इस समय याद हो आना विशेषतः मधुर प्रतीत हुआ। वे उसी तोपख़ाने के पास पहुंच गये जिसके निकट खड़े होकर बोल्कोन्स्की ने युद्ध-क्षेत्र का निरीक्षण किया था।

"यह किसकी कम्पनी है ?" प्रिंस बग्रातिओन ने गोलों के बक्सों के नज़दीक खड़े हुए एक तोपची से पूछा।

प्रिंस ने पूछा था : "यह किसकी कम्पनी है ?" मगर वास्तव में उसने यह जानना चाहा था कि "तुम लोग यहां डर तो नहीं रहे हो ?" और तोपची इस बात को समझ गया।

"कप्तान तूशिन की, बड़े हुज़ूर," लाल बालोंवाला तोपची, जिसके चेहरे पर ढेरों झांइयां थीं, सलूट मारता हुआ ख़ुशी भरी आवाज़ में ज़ोर से चिल्ला उठा।

"ठीक है, ठीक है," बग्रातिओन कुछ सोचता हुआ बुदबुदाया और तोप-गाड़ियों के पास से अपने घोड़े को आख़िरी तोप की तरफ़ बढ़ा ले चला।

जब वह तोप के निकट पहुंच रहा था, उसी वक़्त उसके तथा अमले के कान बहरे करती हुई तोप दनदनायी और अचानक उसके गिर्द उठनेवाले धुएं में से तोप को पकड़कर तथा ज़ोर लगाते हुए उसे जल्दी-जल्दी पहलेवाले स्थान पर लाते तोपचियों की झलक मिली। चौड़े-चकले कन्धोंवाला भीमकाय तोपची नम्बर १ हाथों में लम्बे हत्थेवाला ब्रश लिये हुए पहिये की तरफ़ लपका। नम्बर २ तोपची कांपते हाथ से तोप में गोला भर रहा था। नाटा, कुछ झुकी पीठवाला अफ़सर यानी तूशिन, जिसका जनरल की तरफ़ ध्यान नहीं गया था,

तोप के पिछले हिस्से से ठोकर खाता हुआ आगे भाग गया और आंखों पर अपने छोटे-से हाथ की ओट करके सामने देखने लगा।

"दो प्वाइंट और बढ़ा दो, तब ठीक रहेगा," वह पतली-सी आवाज़ में चिल्ला उठा जिसे उसने दिलेराना बनाने की कोशिश की थी और जो उसके डील-डौल के साथ मेल नहीं खाती थी। "दूसरी तोप भर दो!" वह चिचियाया। "मेद्वेदेव, चखाओ उन्हें मज़ा!"

बग्रातिओन ने तूशिन को पुकारा और वह फ़ौजियों की सलामी की तरह नहीं, बल्कि आशीर्वाद देनेवाले पादरी की तरह अपनी तीन उंगलियों को सहमे-सहमे तथा अटपटे ढंग से टोपी पर टिकाकर जनरल के पास गया। यद्यपि तूशिन के तोपख़ाने को घाटी में गोलाबारी करनी चाहिये थी, तथापि वह सामने नज़र आनेवाले गांव शेनग्राबेन पर, जिसके सम्मुख भारी संख्या में फ़ांसीसी जमा हो रहे थे, आग लगाने-वाले गोले बरसा रहा था।

तूशिन को किसी ने भी यह आदेश नहीं दिया था कि वह कहां और कैसे गोले बरसाये। उसने अपने सार्जेंट-मेजर ज़ाख़ारचेन्को के साथ, जिसकी वह बड़ी इज़्ज़त करता था, सलाह-मशविरा करके यह तय किया कि गांव को जला डालना ठीक होगा। "ठीक है!" बग्रा-तिओन ने तूशिन की रिपोर्ट सुनने के बाद कहा और मानो कुछ सोचते-समझते हुए अपने सामने नज़र आनेवाले पूरे युद्ध-क्षेत्र को देखने लगा। फ़ांसीसी दायीं ओर ही सबसे अधिक निकट आ गये थे। पहाड़ी के नीचे, जहां कीयेव की रेजिमेंट थी, नदीवाली घाटी से बन्दूक़ों की गोलियां की दिल दहलानेवाली आवाज़ सुनायी दे रही थी। अमले के अफ़सर ने प्रिंस बग्रातिओन का ध्यान दायीं ओर आकृष्ट किया जहां बहुत ही आगे और घुड़सेना के पीछे बहुत बड़ा फ़ांसीसी सैनिक दल हमारी सेना पर हमला करने के लिये बढ़ रहा था। निकटवर्ती जंगल के कारण बायीं ओर का दृश्य दूर तक नज़र नहीं आ रहा था। प्रिंस बग्रातिओन ने मध्य की दो बटालियनों को दायें बाज़ू की सेना की मदद के लिये जाने का आदेश दिया। अमले के अफ़सर ने प्रिंस से यह कहने की हिम्मत की कि मध्य की दो बटालियनों के चले जाने पर तोपख़ाना अरक्षित रह जायेगा। प्रिंस बग्रातिओन अमले के अफ़सर की तरफ़ मुड़ा और उसने अपनी धुंधली-धुंधली आंखों से चुपचाप उसपर नज़र डाली। प्रिंस अन्द्रेई को लगा कि अमले के अफ़सर की बात ठीक थी

और सचमुच ही उसके जवाब में कुछ नहीं कहा जा सकता था। किन्तु इसी क्षण घाटी में तैनात रेजिमेंट के कमांडर का एडजुटेंट सरपट घोड़ा दौड़ाता हुआ आया और उसने कमांडर की ओर से यह ख़बर दी कि फ़्रांसीसियों के दल-बादल उसकी सेना पर हमले कर रहे हैं, कि रेजिमेंट में अफ़रा-तफ़री मची हुई है और वह कीयेव की ग्रेनेडियर रेजिमेंट की ओर पीछे हट रहा है। प्रिंस बग्रातिओन ने सहमति और अनुमोदन के रूप में सिर झुकाया। घोड़े को क़दम-क़दम चलाते हुए वह दायीं ओर बढ़ गया तथा उसने अपने एडजुटेंट को यह आदेश देने के लिये घुड़सेना की तरफ़ भेजा कि वह फ़्रांसीसियों पर हमला करे। किन्तु यह एडजुटेंट आध घण्टे बाद यह समाचार लेकर लौटा कि घुड़सेना का कमांडर पहले ही खड्ड के पीछे जा चुका था, क्योंकि उसकी सेना पर बहुत भारी गोलाबारी हो रही थी, उसके लोग व्यर्थ ही मारे जा रहे थे और इसलिये उसने अपने निशानेबाज़ों को घोड़ों से उतरकर जंगल में जाने का हुक्म दे दिया था।

"बहुत ठीक है!" बग्रातिओन ने कहा।

जब वह तोपख़ाने से वापस जा रहा था तो बायीं ओर के जंगल से भी गोलियां चलने की आवाज़ सुनायी दी। लेकिन चूंकि बायां बाज़ू बहुत दूर था और वह खुद वहां वक़्त पर नहीं पहुंच सकता था, इसलिये उसने जेरकोव को वरिष्ठ जनरल से यह कहने को भेजा कि जितनी जल्दी हो सके, वह अपनी रेजिमेंट को खड्ड के पीछे ले जाये क्योंकि दायां बाज़ू सम्भवतः बहुत देर तक दुश्मन को रोके नहीं रख सकेगा। यह वरिष्ठ जनरल वही था जिसने ब्राउनाऊ में कुतूज़ोव के सामने अपनी रेजिमेंट पेश की थी। तूशिन और उसके तोपख़ाने की रक्षा करनेवाली बटालियन का किसी को भी ध्यान नहीं रहा। प्रिंस अन्द्रेई सैन्य-संचालकों से होनेवाली प्रिंस बग्रातिओन की बातचीत और उसके द्वारा दिये जानेवाले आदेशों को बहुत ध्यान से सुन रहा था और उसे यह देखकर हैरानी हुई थी कि प्रिंस बग्रातिओन किसी भी तरह के आदेश नहीं दे रहा था, कि वह केवल ऐसा दिखावा करता था कि आवश्यकता, संयोग और किन्हीं सैन्य-संचालकों की इच्छानुसार जो कुछ भी होता था, वह बेशक उसके हुक्म से नहीं, फिर भी उसकी सहमति से हो रहा था और उसके इरादे के मुताबिक़ ही था। प्रिंस अन्द्रेई ने महसूस किया कि बेशक सब कुछ संयोग और प्रिंस बग्रातिओन की इच्छा के बिना ही

हो रहा था, फिर भी उसकी व्यवहारकुशलता के फलस्वरूप उसकी उपस्थिति बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर रही थी। उसके पास मुंह लटकाये हुए आनेवाले सैन्य-संचालक शान्त हो जाते थे, सैनिक और अफ़सर बड़ी ख़ुशी से उसका स्वागत करते थे, वे उसकी उपस्थिति से खिल उठते थे और स्पष्टतः उसके सामने अपनी बहादुरी की शान दिखाने की कोशिश करते थे।

१८

हमारी सेना के दायें बाजू के सबसे ऊंचे स्थल तक जाकर प्रिंस बग्रातिओन अपने घोड़े को नीचे ले जाने लगा जहां लगातार गोलियों की ठांय-ठांय हो रही थी और बारूद के धुएं के कारण कुछ भी नज़र नहीं आ रहा था। ये लोग घाटी की ओर जितना अधिक नीचे जा रहे थे, उन्हें अपने सामने की चीज़ें उतनी ही कम दिखायी दे रही थीं और वास्तविक युद्ध-क्षेत्र की अधिकाधिक निकटता की अनुभूति हो रही थी। घायल भी उनके सामने आने लगे। टोपी के बिना ख़ून से लथपथ सिरवाले एक घायल को दो फ़ौजी बग़लों से सहारा देकर लिये जा रहे थे। उसके गले से खरखरी-सी आवाज़ और मुंह से ख़ून निकल रहा था। गोली शायद उसके मुंह या गले में लगी थी। बन्दूक़ के बिना दूसरा घायल अकेला ही बड़ी फुर्ती से चला जा रहा था, ऊंचे-ऊंचे हाय-वाय कर रहा था और हाथ के ताज़ा-ताज़ा घाव के कारण उसे ज़ोर से हिला-डुला रहा था। उसके हाथ से उसके बड़े कोट पर ख़ून ऐसे बह रहा था मानो किसी ने बोतल उंडेल दी हो। उसके चेहरे पर पीड़ा के बजाय भय अधिक झलक रहा था। वह एक मिनट पहले ही घायल हुआ था। बग्रातिओन और उसके दल के लोग रास्ता लांघकर खड़ी ढाल से नीचे आने लगे। ढाल पर उन्हें कई लेटे हुए सैनिक दिखायी दिये। सैनिकों का एक ऐसा समूह भी इनके सामने आया जिसमें कुछ सैनिक घायल नहीं थे। सैनिक हांफते हुए पहाड़ी पर चढ़ रहे थे और जनरल के सामने होने पर भी ऊंचे-ऊंचे बोल-बतिया और हाथों को इधर-उधर हिला-डुला रहे थे। सामने, धुएं में भूरे बड़े फ़ौजी कोटों

की क़तारें नज़र आ रही थीं और बग्रातिओन को देखकर अफ़सर चीख़ता और यह मांग करता हुआ इस सैनिक-समूह के पीछे दौड़ा कि ये लोग लौट आयें। बग्रातिओन फ़ौजियों की क़तारों के पास अपना घोड़ा बढ़ा ले गया जहां तेज़ी से इधर-उधर गोलियां चल रही थीं जिनकी आवाज़ों के कारण बातचीत और आदेश सुनायी नहीं देते थे। सारे वातावरण में बारूद की गंध बसी हुई थी। सैनिकों के चेहरे बारूद से काले और उत्तेजित थे। कुछ अपने गज़ों से बदूक़ों को साफ़ कर रहे थे, कुछ बारूद भर रहे थे, कुछ थैलों से कारतूस निकाल रहे थे और कुछ गोलियां चला रहे थे। किन्तु वे किस पर गोलियां चला रहे थे, यह बारूद के धुएं के कारण, जिसे हवा उड़ाकर नहीं ले जा रही थी, नज़र नहीं आ रहा था। प्यारी भनभन और सनसन अक्सर सुनायी देती थी। "यह क्या मामला है?" सैनिकों की इस भीड़ के नज़दीक अपना घोड़ा ले जाते हुए प्रिंस अन्द्रेई सोच रहा था। "यह सैनिक-पांत तो नहीं हो सकती, क्योंकि ये सभी जमघट लगाये हैं! यह धावा भी नहीं हो सकता, क्योंकि एक ही जगह पर खड़े हैं, वर्गाकार ब्यूह-रचना भी नहीं हो सकती, क्योंकि उस ढंग से नहीं खड़े हैं।"

दुबला-पतला, देखने में कमज़ोर-सा, मधुर मुस्कान तथा ऐसे पपोटोंवाला बूढ़ा रेजिमेंट-कमांडर, जो उसकी आंखों को पूरी तरह नहीं ढंकते थे और इस तरह उसकी सूरत को विनम्र-विनीत बनाते थे, अपने घोड़े पर प्रिंस बग्रातिओन के पास आया और उसका ऐसे स्वागत किया जैसे कोई मेज़बान बहुत ही सम्मानित मेहमान का स्वागत करता है। उसने प्रिंस बग्रातिओन के सामने यह रिपोर्ट पेश की कि उसकी रेजिमेंट पर फ़्रांसीसी घुड़सेना ने आक्रमण किया था और यद्यपि आक्रमण को असफल बना दिया गया था, तथापि रेजिमेंट के आधे से अधिक सैनिक खेत रहे थे। रेजिमेंट-कमांडर ने अपनी सेना पर हुए आक्रमण के लिये इन्हीं सैनिक शब्दों का उपयोग किया था, किन्तु वास्तव में यह नहीं जानता था कि आध घण्टे के दौरान उसको सौंपी गयी रेजिमेंट के साथ क्या बीती थी—आक्रमण असफल बना दिया गया था या उसकी रेजिमेंट का बुरा हाल कर डाला गया था। उसे केवल इतना ही मालूम था कि इस मुठभेड़ के आरम्भ में उसकी रेजिमेंट पर तोप-गोले और हथगोले गिरने तथा लोगों पर चोट करने लगे। बाद में कोई "घुड़सेना" चिल्लाया और हमारे सैनिक गोलियां चलाने लगे। वे अभी तक गोलियां चला

रहे थे, किन्तु घुड़सेना पर नहीं जो ग़ायब हो गयी थी, बल्कि फ़्रांसीसी प्यादा सैनिकों पर जो घाटी में सामने आकर हमारे सैनिकों पर गोलियां चलाने लगे थे। प्रिंस बग्रातिओन ने यह ज़ाहिर करते हुए सिर झुकाया कि सब कुछ वैसे ही हुआ था, जैसा उसने चाहा और सोचा था। एडजुटेंट को सम्बोधित करते हुए उसने आदेश दिया कि निशानेबाज़ों की छठी रेजिमेंट की वे दो बटालियनें यहां ले आये जिनके पास से वे अभी-अभी गुज़रकर आये थे। इस क्षण प्रिंस बग्रातिओन के चेहरे पर जो भाव-परिवर्तन हुआ, प्रिंस अन्द्रेई उससे चकित रह गया। उसका चेहरा वैसी एकाग्रता और सुखद संकल्प-दृढ़ता व्यक्त कर रहा था जैसी सख़्त गर्मी के दिन पानी में कूदने के पहले निर्णायक दौड़ लगाते वक़्त होती है। अब उनींदी-उनींदी और धुंधली-धुंधली आंखें नहीं रही थीं, विचारों में डूबने का बनावटी दिखावा भी लुप्त हो गया था – उसकी बाज़ जैसी गोल-गोल और दृढ़ आंखें स्पष्टतः कहीं भी टिके बिना उत्साह तथा कुछ तिरस्कार से अपने सामने देख रही थीं, यद्यपि उसकी गति-विधि ढीली-ढाली और नपी-तुली ही बनी रही थी।

रेजिमेंट-कमांडर ने प्रिंस बग्रातिओन की मिन्नत करते हुए यह कहा कि वह अपने घोड़े को लौटा ले जाये, क्योंकि यहां बहुत ख़तरा था। "हुज़ूर, भगवान के लिये मेरी बात मानिये!" उसने समर्थन पाने के हेतु अमले के अफ़सर की ओर देखते हुए कहा जिसने मुंह फेर लिया। "ज़रा देखिये तो!" उसने गोलियों की तरफ़ इशारा किया जो लगातार भनभनाती और सनसनाती हुई इनके पास से गुज़र रही थीं। वह मिन्नत और भर्त्सना के वैसे ही अन्दाज में यह कह रहा था जैसे कोई बढ़ई हाथ में कुल्हाड़ा लेनेवाले किसी रईस से यह कहता है: "हम तो इसके आदि हैं, लेकिन आपके हाथों में छाले पड़ जायेंगे।" वह ऐसे बात कर रहा था मानो ये गोलियां ख़ुद उसकी तो जान नहीं ले सकती थीं। रेजिमेंट-कमांडर की अधमुंदी आंखें उसके शब्दों को और भी प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति प्रदान कर रही थीं। ड्यूटी-अफ़सर भी रेजिमेंट-कमांडर की मिन्नत-समाजत में साथ देने लगा। किन्तु प्रिंस बग्रातिओन ने उन्हें कोई जवाब न देकर केवल यही आदेश दिया कि वे गोलियां चलाना बन्द कर दें और अपने को ऐसे व्यवस्थित करें कि उनके नज़दीक आ रही दो बटालियनों के लिये जगह बन जाये। इसी समय, जब वह बात कर रहा था, हवा का झोंका आया और मानो किसी अदृश्य

हाथ के संकेत से धुएं का बादल दायें से बायें चला गया और इस तरह उसमें छिपी हुई घाटी, सामने की पहाड़ी और उसपर बढ़े आ रहे फ़्रांसीसी साफ़ नज़र आने लगे। सभी लोगों की आंखें अपने आप ही हमारी ओर बढ़ी आ रही और ऊबड़-खाबड़ धरती पर फ़्रांसीसियों की इस टेढ़ी-मेढ़ी भीड़ पर जम गयीं। फ़्रांसीसी सैनिकों की झबरीली टोपियां दिखायी देने लगी थीं, सैनिकों में अफ़सरों को पहचानना सम्भव था और डंडे पर बंधे झण्डे को फड़फड़ाते देखा जा सकता था।

"बहुत अच्छे ढंग से बढ़े आ रहे हैं," बग्रातिओन के अमले में से किसी ने कहा।

फ़्रांसीसियों के इस दल-बादल का अग्रभाग घाटी में उतर भी आया था। मुठभेड़ ढाल के इस ओर होनेवाली थी...

कुछ देर पहले तक लड़ती रहनेवाली हमारी रेजिमेंट का बचा-खुचा भाग जल्दी से अपने को पुनर्व्यवस्थित करता हुआ दायें को हट गया। उसके पीछे से पिछड़ जानेवाले सैनिकों को खदेड़ती हुई निशानेबाज़ों की छठी रेजिमेंट की दो बटालियनें नज़दीक आती जा रही थीं। वे अभी तक बग्रातिओन के क़रीब नहीं पहुंची थीं, किन्तु लोगों की बड़ी भीड़ के क़दमों की भारी और लयबद्ध आवाज़ साफ़ सुनायी दे रही थी। गोल-मटोल चेहरे पर बुद्धू जैसा और सुखद भाव लिये हुए हट्टा-कट्टा कम्पनी-कमांडर बायें बाज़ू से बग्रातिओन के सबसे निकट चला आ रहा था। यह वही अफ़सर था जो तूशिन के पीछे-पीछे झोंपड़ी से बाहर भागा था। इस समय वह इस चीज़ के सिवा सम्भवतः और कुछ नहीं सोच रहा था कि ख़ूब शान दिखाता हुआ बड़े अफ़सरों के पास से गुज़रे।

अग्रणी होने की आत्मतुष्टि से किसी भी तरह के प्रयास के बिना ख़ूब तना हुआ वह अपनी मज़बूत मांस-पेशियों के सहारे बड़ी चुस्ती से क़दम बढ़ा रहा था, मानो तैर रहा था और इसी चुस्ती के कारण अपने साथ क़दम मिलाकर चल रहे सैनिकों की बोझल चाल से भिन्न प्रतीत हो रहा था। पतली-सी नंगी तलवार (यह छोटी-सी तलवार मुड़ी हुई थी तथा असली जैसी नहीं लगती थी) उसकी टांगों के साथ लटक रही थी और अपनी पूरी मज़बूत काठी को बड़े लचीले ढंग से मोड़ते हुए वह कभी तो अपने अफ़सरों को तो कभी पीछे मुड़कर देखता था तथा किसी हालत में भी लय भंग नहीं होने देता था। ऐसे लगता

था कि वह इसी चीज़ के लिये अपना एड़ी-चोटी का ज़ोर लगा रहा है कि ज़्यादा से ज़्यादा अच्छे अन्दाज़ में अफ़सरों के नज़दीक से गुज़रे और यह महसूस करते हुए कि उसे इसमें अच्छी सफलता मिल रही है, ख़ुश था। "बायां ... बायां ... बायां ..." वह मानो हर क़दम के बाद मन ही मन यह दोहराता था और इसी लय को बनाये रखते हुए थैलों और बन्दूक़ों का बोझ लादे विभिन्नतापूर्ण कठोर चेहरोंवाले सैनिकों की दीवार भी बढ़ती जा रही थी और मानो इन सैकड़ों सैनिकों में से प्रत्येक मन ही मन हर क़दम के बाद दोहरा रहा था: "बायां ... बायां ... बायां ..."। हांफते और कूच की लय खो बैठे मोटे मेजर ने अपने रास्ते में आ जानेवाली झाड़ी के गिर्द चक्कर लगाया, पिछड़ जानेवाला एक सैनिक हांफता तथा पिछड़ जाने के कारण चेहरे पर भय का भाव लिये हुए भागकर अपनी कम्पनी से मिल रहा था, हवा को चीरता हुआ एक गोला प्रिंस बग्रातिओन और उसके अमले के ऊपर से गुज़रा तथा "बायां, बायां!" की लय के साथ सैनिक-समूह पर गि-रा। "सट जाओ!" कम्पनी-कमांडर की प्रफुल्ल आवाज़ सुनायी दी। जहां गोला गिरा था, सैनिक अर्ध-चक्र में उस जगह से आगे बढ़े और सिरे पर चल रहा बूढ़ा, पदक से सम्मानित एक छोटा अफ़सर, जो मृतकों के पास रुक गया था, भागकर अपनी क़तार में पहुंचा, उसने उछलकर क़दम बदला, क़दम मिलाकर चलने लगा और ग़ुस्से से अपने इर्द-गिर्द देखा। "बायां ... बायां ... बायां ..." ऐसे लगता था कि दहशत पैदा करनेवाली ख़ामोशी और एकसाथ धरती पर पड़नेवाले क़दमों की समरस ध्वनि के पीछे यही शब्द सुनायी दे रहा था।

"शाबाश, जवानो!" प्रिंस बग्रातिओन ने कहा।

"महामहिम के लिये ... ये ... ये! .." सैनिक-पंक्तियों में ऊंची आवाज़ गूंज उठी। बायीं ओर चल रहे खिन्न-से सैनिक ने उक्त शब्द चिल्लाते हुए बग्रातिओन की तरफ़ ऐसी नज़रों से देखा मानो कह रहा हो: "हम ख़ुद भी यह जानते हैं।" दूसरा, इधर-उधर देखे बिना, मानो इस बात से डरता हो कि कहीं उसका ध्यान दूसरी ओर न चला जाये, पूरी तरह मुंह खोले और चिल्लाता हुआ गुज़रा।

सैनिकों को रुकने और थैले नीचे रख देने का आदेश दिया गया।

बग्रातिओन ने अपने पास से गुज़री सैनिक-पंक्तियों के गिर्द घोड़े पर चक्कर लगाया और नीचे उतरा। उसने घोड़े की लगामें कज़्ज़ाक

अर्दली को पकड़ा दीं, लबादा उतारकर दे दिया, टांगें सीधी कीं और सिर पर टोपी को ठीक किया। फ़्रांसीसी सेना का अग्रभाग, जिसमें अफ़सर आगे-आगे चल रहे थे, पहाड़ी के दामन में दिखायी दिया।

"भगवान भला करें!" बग्रातिओन ने दृढ़ और गूंजती आवाज़ में कहा, क्षण भर को मुड़कर सैनिकों की तरफ़ देखा और हल्के-हल्के हाथ हिलाते-डुलाते तथा अधिकतर घोड़े पर सवार रहनेवाले आदमी की तरह, चलने में मानो कठिनाई महसूस करते हुए अटपटी चाल से ऊबड़-खाबड़ मैदान में बढ़ चला। प्रिंस अन्द्रेई ने अनुभव किया कि कोई अदम्य शक्ति उसे आगे लिये जा रही है और उसे बड़ी ख़ुशी की अनुभूति हो रही थी।*

फ़्रांसीसी नज़दीक आ चुके थे। प्रिंस बग्रातिओन की बग़ल में चल रहा प्रिंस अन्द्रेई फ़्रांसीसियों की कारतूस-पेटियां, उनकी लाल स्कन्धिकायें, यहां तक कि चेहरे भी साफ़ तौर पर देख सकता था। (बूट पहने एक बूढ़े फ़्रांसीसी अफ़सर को तो वह बिल्कुल स्पष्ट रूप से देख रहा था जो झाड़ियों का सहारा लेकर मुश्किल से पहाड़ी पर चढ़ रहा था।) प्रिंस बग्रातिओन ने कोई नया हुक्म नहीं दिया और वह पहले की तरह चुपचाप ही अपनी सैनिक-पांतों के आगे-आगे चलता जा रहा था। अचानक फ़्रांसीसियों के बीच से पहली, दूसरी और फिर तीसरी गोली चली... और शत्रु की सभी टेढ़ी क़तारों में धुआं फैल गया तथा गोलियां चलने लगीं। हमारे कुछ सैनिक गिर गये जिनमें गोल चेहरेवाला वह अफ़सर भी था जो इतने रंग में और इतनी शान से चल रहा था। किन्तु जैसे ही पहली गोली चली, उसी क्षण बग्रातिओन मुड़कर "हुर्रा!" चिल्ला उठा।

"हुर्रा... ा!" हमारी सैनिक-पंक्तियों में लम्बी, ऊंची आवाज़ गूंजी और प्रिंस बग्रातिओन तथा एक-दूसरे को पीछे छोड़ते हुए हमारे सैनिक क़तारों में नहीं, मगर प्रफुल्ल तथा उत्साहपूर्ण जमघट के रूप में अव्यवस्थित फ़्रांसीसियों पर टूट पड़े।

---

* यहीं वह हमला हुआ था जिसके बारे में त्येर ने लिखा है: "रूसियों ने बड़ी शूर-वीरता का परिचय दिया और, जैसा कि युद्ध में बहुत कम ही होता है, दो पैदल फ़ौजें बड़ी दृढ़ता से एक-दूसरी की तरफ़ बढ़ती रहीं और मुठभेड़ होने तक दोनों में से एक भी पीछे नहीं हटी। नेपोलियन ने भी पवित्र हेलेन द्वीप पर कहा था: 'कुछेक रूसी बटालियनों ने बड़ी निडरता दिखायी'।" –सं०

11*

१६

निशानेबाज़ों की छठी रेजिमेंट के हमले ने दायें बाज़ू की सेना का पीछे हटना सुनिश्चित कर दिया। मध्य भाग में तूशिन के भूले हुए तोपख़ाने ने, जो शेनग्राबेन गांव को आग लगाने में सफल हो गया था, फ़्रांसीसियों का आगे बढ़ने से रोक दिया। फ़्रांसीसी हवा के कारण फैलती आग को बुझा रहे थे और इसलिये हमारे सैनिकों को पीछे हटने का समय दे रहे थे। मध्य भाग की सेना जल्दी-जल्दी और शोर-ग़ुल करती हुई खड्ड के उस पार पीछे हटी, मगर पीछे हटते हुए भी अपना क्रम बनाये रही। किन्तु बायें बाज़ू की सेना में, जिसमें अज़ोव और पोदोल्स्क की प्यादा और पाव्लोग्राद की हुस्सार रेजिमेंटें शामिल थीं और जिसपर लान्न के नेतृत्व में फ़्रांसीसियों की बहुत ही बढ़िया सेना ने सामने और पीछे से भी हमला कर दिया था, खलबली मच गयी थी। बग्रातिओन ने जेरकोव को बायें पहलू के जनरल को यह आदेश देने के लिये भेजा कि वह फ़ौरन अपनी सेना को पीछे हटा ले।

जेरकोव ने सलामी की मुद्रा में टोपी पर हाथ रखे हुए ही बड़ी दिलेरी से घोड़े को एड़ लगायी और उसे सरपट दौड़ा ले चला। किन्तु बग्रातिओन के पास से कुछ दूर जाते ही उसकी हिम्मत जवाब दे गयी। उसपर बुरी तरह डर हावी हो गया और वह वहां नहीं जा सका, जहां ख़तरा मंडरा रहा था।

बायें बाज़ू की सेनाओं के पास पहुंचने पर वह वहां आगे नहीं गया जहां गोलियां चल रही थीं, बल्कि जनरल और दूसरे बड़े फ़ौजी अफ़सरों को वहां ढूंढ़ने लगा जहां उनका होना सम्भव नहीं था और इसलिये उसने आदेश नहीं पहुंचाया।

वरिष्ठता के अनुसार बायें पहलू की सेना का कमांडर वही जनरल था जिसने ब्राउनाऊ के नज़दीक कुतूज़ोव को अपनी रेजिमेंट की परेड दिखायी थी और जिसमें दोलोख़ोव भी शामिल था। किन्तु बायें पहलू के छोरवाली सेना की कमान पाव्लोग्राद की रेजिमेंट-कमांडर के हाथ में थी जिसमें रोस्तोव था और दोनों कमांडरों के बीच कुछ ग़लतफ़हमी पैदा हो गयी थी। दोनों कमांडर एक-दूसरे से बेहद चिढ़े हुए थे और उस समय, जबकि दायें बाज़ू पर कभी की लड़ाई शुरू हो गयी थी और फ़्रांसीसी आक्रमण कर रहे थे, ये दोनों कमांडर बहस में उलझे

हुए थे जिसका उद्देश्य केवल एक-दूसरे का अपमान करना था। प्यादा और घुड़सेना रेजिमेंटें इस लड़ाई के लिये बिल्कुल तैयार नहीं थीं। सैनिक से लेकर जनरल तक कोई भी लड़ाई के इतनी जल्दी शुरू होने की उम्मीद नहीं कर रहा था और सभी शान्तिपूर्ण कामों में लगे हुए थे – घुड़सेना के लोग घोड़ों को चरा रहे थे और पैदल सेना के सैनिक लकड़ियां जमा कर रहे थे।

"वहां वह है मुझसे बड़ा अपसर," रूसी भाषा को ग़लत ढंग से बोलनेवाले हुस्सार घुड़सेना के जर्मन कर्नल ने लाल-पीला होते हुए अपने पास आनेवाले एडजुटेंट से कहा, "वह जो चाहता, वह करता। मैं अपने हुस्सारों की बलि नहीं देना मांगता। बिगुल-वादक! बजा पीछे हटने का बिगुल!"

किन्तु स्थिति बड़ी गम्भीर होती जा रही थी। दायें बाज़ू और मध्य में तोपें गरज रही थीं, गोलियां चल रही थीं, लान्न के फ़्रांसीसी निशानेबाज़ों के लबादे पनचक्की के बांध को लांघते हुए दिखायी दे रहे थे और लगभग निशाने की हद में इस ओर क़तारों में खड़े हो रहे थे। प्यादा रेजिमेंट का कर्नल कुछ झटके से चलता हुआ घोड़े के पास आया, उसपर सवार हुआ और अत्यधिक तनकर तथा ऊंचा होकर अपने घोड़े को पाव्लोग्राद की हुस्सार रेजिमेंट-कमांडर की तरफ़ ले चला। दोनों कमांडर शिष्टतापूर्ण अभिवादन करके और मन में द्वेषभाव छिपाये हुए एक-दूसरे से मिले।

"फिर भी कर्नल, मैं अपने आधे लोगों को जंगल में नहीं छोड़ सकता," जनरल ने कहा। "मैं आपसे **अनुरोध करता हूं**, आपसे **अनुरोध करता हूं**," उसने दोहराया, "कि आप अपना **मोर्चा** सम्भाल लें और हमला करने के लिये तैयार हो जायें।"

"मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि आप दूसरे के मामले में टांग नहीं अड़ाइता," जर्मन कर्नल ने भड़कते हुए ग़लत रूसी में कहा। "अगर आप घुड़सैनिक होइता..."

"मैं घुड़सैनिक नहीं हूं, कर्नल, लेकिन रूसी जनरल हूं और अगर आप यह नहीं जानते..."

"हम बहुत अच्छी तरह से जानता है, महामहिम जी," अचानक लाल-सुर्ख होते और घोड़े को एड़ लगाते हुए कर्नल चिल्लाया। "क्या आप मोर्चे के पास चलने का मेहरबानी करता और यह देखता कि ऐसी

सैनिक स्थिति किसी काम का न होती। आपकी ख़ुशी के वास्ते हम अपना रेजिमेंट का ख़ून नहीं करता।"

"आप अपनी हैसियत को भूल रहे हैं, कर्नल। मैं अपनी ख़ुशी की बात नहीं कर रहा हूं और आपको ऐसा कहने की इजाज़त नहीं दूंगा।"

जनरल ने साहस-प्रदर्शन की प्रतियोगिता के लिये कर्नल की चुनौती को स्वीकार करते हुए छाती तान ली, त्योरी चढ़ायी और उसके साथ मोर्चे के अग्रभाग की ओर घोड़ा बढ़ा दिया मानो उनके सारे मतभेदों का वहां, मोर्चे के निकट और गोलियों की बौछार का सामना करते हुए निर्णय होनेवाला था। वे मोर्चे के अग्रभाग में पहुंच गये, कुछ गोलियां उनके ऊपर से गुज़रीं और वे अपने घोड़े रोक कर वहां चुपचाप खड़े रहे। वहां से देखने की कोई ख़ास बात नहीं थी, क्योंकि उसी जगह से, जहां वे पहले खड़े थे, यह साफ़ था कि झाड़ियों और गड्ढों में घुड़सेना कुछ नहीं कर सकती और यह कि फ़्रांसीसी बायें पहलू को घेरे में ले रहे हैं। जनरल और कर्नल लड़ने के लिये तैयार दो मुर्ग़ों की तरह बड़ी कड़ाई और अर्थपूर्ण दृष्टि से एक-दूसरे को देख और व्यर्थ ही यह आशा कर रहे थे कि दोनों में से कोई एक कायरता के लक्षण प्रकट कर दे। दोनों ही इस परीक्षा में सफल रहे। चूंकि कहने को दोनों के पास कुछ नहीं था और दोनों में से कोई भी दूसरे को यह कहने का मौक़ा नहीं देना चाहता था कि वह मैदान छोड़ गया, इसीलिये वे एक-दूसरे के साहस की परीक्षा लेते हुए वहां शायद और भी देर तक खड़े रहते यदि इसी वक़्त उन्हें जंगल से लगभग अपने पीछे से गोलियां चलने की और दबी-घुटी चीख़ की आवाज़ सुनायी न देती। फ़्रांसीसियों ने जंगल में लकड़ियां इकट्ठी करनेवाले सैनिकों पर हमला कर दिया था। हुस्सार अब प्यादा फ़ौज के साथ पीछे नहीं हट सकते थे। फ़्रांसीसियों ने बायीं ओर पीछे हटने की रेखा से उन्हें काट दिया था। अब इस जगह के बेहद असुविधापूर्ण होते हुए भी उनके लिये ज़रूरी हो गया था कि अपना रास्ता बनाने की ख़ातिर वे दुश्मन पर हमला करें।

रोस्तोव जिस स्कवाड्रन में शामिल था, उसके सैनिक घोड़ों पर सवार ही हुए थे कि उन्होंने अपने को शत्रुओं के सामने पाया। एन्स पुल की भांति इस दस्ते और दुश्मन के बीच कोई नहीं था तथा एक बार फिर से उनके बीच अस्पष्टता और भय की रेखा – मानो जीवितों को मृतकों

से अलग करनेवाली रेखा – ही विद्यमान थी। सभी लोग इस रेखा को अनुभव कर रहे थे और यह प्रश्न कि वे इस रेखा को लांघ सकेंगे या नहीं और कैसे लांघ पायेंगे, उन्हें विह्वल कर रहा था।

कर्नल अपने घोड़े को हुस्सारों के पास ले गया, उसने झल्लाकर अफ़सरों के सवालों का कुछ जवाब दिया और अपने ही मन की करनेवाले हठी व्यक्ति की भांति उसने कोई आदेश दे दिया। निश्चित रूप से किसी ने कुछ नहीं कहा, किन्तु स्कवाड्रन में यह ख़बर फैल गयी कि हमला करना होगा। हुस्सारों के क़तारों में खड़े होने का हुक्म गूंजा और इसके बाद तलवारों को म्यानों से बाहर निकालने की आवाज़ सुनायी दी। मगर अभी तक कोई भी हिला-डुला नहीं था। बायें बाज़ू की सेनायें, प्यादा और घुड़सेना, दोनों ही समान रूप से यह अनुभव कर रही थीं कि कमांडर ख़ुद यह नहीं जानते कि क्या करें और उनके इस असमंजस की उन्हें भी अनुभूति हो रही थी।

"काश, जल्दी से, बहुत जल्दी से शुरू हो जाये," रोस्तोव यह महसूस करते हुए सोच रहा था कि आख़िर तो आक्रमण के उस उल्लास को अनुभव करने का क्षण आ गया जिसके बारे में उसने अपने हुस्सार-साथियों से इतना कुछ सुना था।

"भगवान तुम्हारा भला करें, जवानो, दुलकी चाल से बढ़ाओ अपने घोड़े!" देनीसोव की आवाज़ गूंजी।

सबसे आगे की क़तार में घोड़ों के पुट्ठे हिलने लगे। रोस्तोव के मुश्की घोड़े ने लगामों को झटका और ख़ुद ही चल पड़ा।

रोस्तोव को अपने हुस्सारों की क़तारें दायीं ओर दिखायी दे रही थीं, सामने एक काली-सी रेखा नज़र आ रही थी जिसे वह साफ़ तौर पर देखने में असमर्थ था, मगर उसे दुश्मनों की क़तार मानता था। गोलियों की आवाज़ सुनायी दे रही थी, लेकिन दूरी पर।

"धावा बोलो!" आदेश सुनायी दिया और रोस्तोव ने अनुभव किया कि सरपट दौड़ते हुए उसके मुश्की घोड़े की पिछली टांगें कैसे झुक जाती हैं।

वह अपने घोड़े की गति-विधि का पहले से ही अनुमान लगा रहा था और उसका मन अधिकाधिक प्रफुल्ल होता जा रहा था। उसे अपने सामने एक वृक्ष दिखायी दिया था। शुरू में यह वृक्ष सामने, उस रेखा के मध्य में था जो उसे इतनी भयानक प्रतीत हो रही थी। किन्तु अब

वह रेखा को लांघ चुका था और न केवल कोई भयानक बात नहीं हुई थी, बल्कि मन अधिकाधिक खिलता और सजीव होता जा रहा था। "ओह, कैसे चलाऊंगा मैं अपनी इस तलवार को," तलवार की मूठ को हाथ में दबाते हुए रोस्तोव सोच रहा था।

"हुर्रा...ा!" आवाज़ें गूंज उठीं।

"अब कोई भी आ जाये मेरे सामने," रोस्तोव ने मुश्की घोड़े की बग़लों में ज़ोर से एड़ें दबाते, उसे पूरी रफ़्तार से सरपट दौड़ाते और दूसरों को पीछे छोड़ते हुए सोचा। दुश्मन सामने नज़र आ रहा था। अचानक मानो किसी ने स्कवाड्रन पर चौड़ी झाड़ू-सी फेर दी। रोस्तोव ने दुश्मनों को काटने के लिये तैयार होते हुए तलवार ऊपर उठायी, किन्तु इसी समय उसके आगे अपने घोड़े को दौड़ाता हुआ निकीतेन्को उससे दूर हो गया और रोस्तोव ने मानो सपने की तरह यह महसूस किया कि वह असाधारण तेज़ी से आगे बढ़ता जाता है और साथ ही जहां का तहां खड़ा है। पीछे से परिचित हुस्सार बान्दारचूक अपना घोड़ा सरपट दौड़ाता हुआ उसके क़रीब आ गया और उसने ग़ुस्से से उसकी तरफ़ देखा। बान्दारचूक का घोड़ा तेज़ी से एक तरफ़ को हटा और वह आगे निकल गया।

"यह क्या मामला है? क्या मैं हिल-डुल नहीं रहा हूं? – मैं गिर गया हूं, मर गया हूं..." रोस्तोव ने एक ही क्षण में ये सवाल किये और इनके जवाब दिये। मैदान के बीच में वह अब अकेला था। सरपट दौड़ते घोड़ों और हुस्सारों की जगह अब उसे अपने गिर्द अचल भूमि और डंठल ही दिखायी दे रहे थे। उसके नीचे गर्म-गर्म ख़ून बह रहा था। "नहीं, मैं घायल हो गया हूं और घोड़ा मारा गया है।" मुश्की घोड़े ने अगली टांगों पर उठने की कोशिश की, मगर घुड़सवार का पांव अपने नीचे दबाते हुए नीचे गिर पड़ा। घोड़े के सिर से ख़ून बह रहा था। घोड़ा छटपटा रहा था और उठने में असमर्थ था। रोस्तोव ने उठना चाहा और वह भी गिर गया – झोला काठी से उलझ गया था। हमारे लोग कहां थे, फ़्रांसीसी कहां थे – उसे कुछ मालूम नहीं था। आस-पास कोई नहीं था।

अपने पांव को मुक्त करके वह खड़ा हुआ। "कहां, और किस तरफ़ थी वह रेखा जो दोनों सेनाओं को इतनी स्पष्टता से अलग कर रही थी?" उसने अपने आपसे पूछा और कोई उत्तर नहीं दे सका।

"मेरे साथ कोई बुरी बात तो नहीं हो गयी? क्या ऐसी परिस्थितियां भी होती हैं और ऐसी परिस्थितियों में क्या करना चाहिये?" उसने उठते हुए अपने आपसे पूछा और इसी वक़्त यह अनुभव किया कि उसके सुन्न हो गये बायें हाथ पर कोई फालतू बोझ-सा लटक रहा है। उसकी कलाई मानो परायी-सी हो गयी थी। उसने ख़ून ढूंढ़ते हुए बहुत ग़ौर से अपनी कलाई को देखा। "लो, लोग भी आ गये," उसने कुछ लोगों को अपनी ओर भागे आते देखकर ख़ुश होते हुए सोचा। "वे मेरी मदद करेंगे!" अजीब-सी टोपी और नीला, बड़ा फ़ौजी कोट पहने गरुड की चोंच जैसी नाकवाला धूप में संवलाया हुआ एक आदमी इन लोगों के आगे-आगे भागा आ रहा था। दो अन्य व्यक्ति और उनके पीछे अनेक दूसरे लोग भागते चले आ रहे थे। उनमें से एक ने, अजीब-सी, ग़ैररूसी भाषा में कुछ कहा। इसी तरह की टोपियां पहने पीछेवाले लोगों में एक रूसी हुस्सार खड़ा था। वे लोग उसके हाथ पकड़े हुए थे और उसके पीछे उसके घोड़े को थामे थे।

"निश्चय ही हमारे आदमी को क़ैदी बना लिया गया है... हां, ऐसा ही है। क्या मुझे भी क़ैदी बना लिया जायेगा? कौन हैं ये लोग?" रोस्तोव अपनी आंखों पर विश्वास न करते हुए सोचता जा रहा था। "क्या ये फ़्रांसीसी ही हैं?" उसने निकट आते फ़्रांसीसियों को ध्यान से देखा और इस चीज़ के बावजूद कि एक क्षण पहले वह इसीलिये अपने घोड़े को सरपट दौड़ा रहा था कि उनके पास पहुंचकर उनके टुकड़े-टुकड़े कर डाले, उनकी निकटता अब उसे इतनी भयानक लग रही थी कि अपनी आंखों पर यक़ीन नहीं हो रहा था। "कौन हैं ये लोग? किसलिये भागे आ रहे हैं? क्या मेरी तरफ़ भागे आ रहे हैं? किसलिये? मुझे मारने के लिये? **मुझे**, जिसे सभी इतना अधिक प्यार करते हैं?" उसे अपने प्रति अपनी मां, परिवार और मित्रों के प्यार की याद हो आयी तथा उसे मारने का दुश्मन का इरादा नामुमकिन-सा लगा। "लेकिन हो सकता है कि वे मुझे मार ही डालें?" वह अपनी स्थिति को समझ न पाते हुए दस सेकण्ड से अधिक समय तक जहां का तहां खड़ा रहा। गरुड की चोंच जैसी नाकवाला अग्रणी फ़्रांसीसी इतना अधिक निकट आ गया था कि उसके चेहरे का भाव साफ़ नज़र आ रहा था। और उत्तेजित तथा बेगाने चेहरेवाले इस व्यक्ति ने, जो संगीन ताने और सांस रोके हुए फुर्ती से उसकी तरफ़ दौड़ता आ रहा

था, रोस्तोव को भयभीत कर दिया। उसने झटपट अपनी पिस्तौल निकाली और उससे गोली चलाने के बजाय उसे फ़्रांसीसी पर फेंक दिया और जान छोड़कर झाड़ियों की तरफ़ भागा। असमंजस और दुविधा की उस स्थिति में नहीं, जिसमें वह एन्स के पुल को जलाने के लिये भागा था, बल्कि कुत्तों से डरकर भागनेवाले ख़रगोश की तरह भाग चला। अपने यौवनपूर्ण और सुखी जीवन के लिये भय की एकमात्र भावना ही उसके रोम-रोम में छाई थी। वह बचपन में छू-पकड़ खेल खेलने के समय की तेज़ी से हल-रेखाओं को लांघते हुए कभी-कभार ही अपना पीला, दयालु और जवान चेहरा पीछे की ओर घुमाकर देखता और मैदान को ताबड़तोड़ पार करता जा रहा था। डर के मारे उसे पीठ पर झुरझुरी महसूस हो रही थी। "नहीं, मुड़कर न देखना ही बेहतर होगा," उसने सोचा, मगर दौड़ते हुए झाड़ियों के निकट पहुंच जाने पर उसने एक बार फिर मुड़कर देखा। फ़्रांसीसी पीछे रह गये थे और यहां तक कि जिस क्षण उसने पीछे मुड़कर देखा तो सबसे आगेवाला फ़्रांसीसी दौड़ने के बजाय चलने भी लगा था और उसने घूमकर अपने पीछे आ रहे साथी से ऊंची आवाज़ में कुछ कहा। रोस्तोव रुका। "ज़रूर मुझसे कोई ग़लती हो रही है," उसने सोचा, "यह नहीं हो सकता कि ये लोग मुझे मार डालना चाहते हों।" इसी बीच उसका बायां हाथ इतना भारी हो गया था मानो उसपर मन भर का बोझ लटका दिया गया हो। उससे और आगे भागा नहीं गया। फ़्रांसीसी भी रुक गया और उसने उसका निशाना साध लिया। रोस्तोव ने आंखें मूंद लीं और झुक गया। सनसनाती हुई एक, फिर दूसरी गोली उसके पास से गुज़री। उसने अपनी बची-बचायी शक्ति बटोरी, बायें हाथ को दायें हाथ में साधा और झाड़ियों तक भाग गया। झाड़ियों में रूसी निशानेबाज़ थे।

२०

प्यादा रेजिमेंटें, जिन्हें दुश्मन ने अचानक ही जंगल में आ घेरा था, भाग रही थीं और कम्पनियां एक-दूसरी में मिलकर क्रमहीन जमघट के रूप में जा रही थीं। एक सैनिक ने भयभीत होकर युद्ध की दृष्टि

से भयानक और अर्थहीन शब्द "कट गये!" कह दिये और भय की भावना के साथ ये शब्द सभी पर हावी हो गये।

"घिर गये! कट गये! मारे गये!" भागते हुए सैनिक चिल्ला रहे थे।

अपने पीछे गोली चलने और चीख़ने की आवाज़ सुनते ही रेजिमेंट-कमांडर यह समझ गया कि उसकी रेजिमेंट के साथ कोई भयानक बात हो गयी है तथा इस विचार ने कि अनेक सालों तक, सैन्य-सेवा कर चुकनेवाले उस निर्दोष और आदर्श अफ़सर पर अब उसके ऊंचे अफ़सर लापरवाही तथा अयोग्यता का आरोप लगा सकते हैं, उसे ऐसे विचलित कर दिया कि वह घुड़सेना के आज्ञा न माननेवाले कमांडर तथा जनरल के नाते अपनी प्रतिष्ठा, और सबसे बढ़कर तो ख़तरे तथा आत्मरक्षा की भावना को भी भूलकर उसी क्षण अपने घोड़े के ज़ीन का सिरा थामकर तथा घोड़े को ज़ोर से एड़ लगाते हुए गोलियों की बौछार में उसे सरपट दौड़ा ले चला। यह तो सौभाग्य ही था कि वह किसी गोली का निशाना नहीं बना। उसकी सिर्फ़ यही इच्छा थी कि वास्तविक स्थिति की जानकारी प्राप्त करे और अगर उससे कोई भूल हो गयी है तो किसी भी क़ीमत पर उसे सुधारे और बाईस साल तक नौकरी कर चुके, कभी किसी बात के लिये फटकारे न जानेवाले उस आदर्श अफ़सर के माथे पर कलंक का टीका न लगे।

फ़्रांसीसियों के बीच से सही-सलामत बच निकलने के बाद वह घोड़ा दौड़ाता हुआ जंगल के पीछे उस मैदान की ओर चला गया जहां से हमारे सैनिक भागे जा रहे थे और आदेशों पर कान दिये बिना पहाड़ी से नीचे उतरते जाते थे। नैतिक दुविधा का वह क्षण आ गया था जो लड़ाई का भाग्य-निर्णय करता है: ये अस्त-व्यस्त सैनिक अपने कमांडर का हुक्म मानेंगे या मुड़कर उसकी तरफ़ देखने के बाद आगे दौड़ जायेंगे। कुछ समय पहले तक सैनिकों के दिलों में बेहद दहशत पैदा करनेवाले रेजिमेंट-कमांडर के ज़ोर से चीख़ने-चिल्लाने, उसके अत्यधिक तमतमाये, ग़ुस्से से लाल-सुर्ख़ और पराये-से लगनेवाले चेहरे तथा उसके नंगी तलवार लहराने के बावजूद सैनिक भागते चले जा रहे थे, आपस में बातें करते थे, हवा में गोलियां छोड़ते थे और आदेशों की तरफ़ कोई ध्यान नहीं देते थे। लड़ाई का भाग्य-निर्णय करनेवाली नैतिक दुविधा सम्भवतः भय के पक्ष में तय हो रही थी।

चीख़ने-चिल्लाने और बारूद के धुएं के कारण जनरल खांसने लगा और हताश होकर रुक गया। ऐसे प्रतीत होता था कि सब कुछ ख़त्म हो गया, किन्तु इसी क्षण हमारे सैनिकों पर हमला कर रहे फ़्रांसीसी किसी स्पष्ट कारण के बिना अचानक वापस भागने लगे, वन-छोर के पीछे ग़ायब हो गये और जंगल में रूसी निशानेबाज़ दिखायी दिये। यह तिमोख़िन की कम्पनी थी। सिर्फ़ यही फ़ौजी क़म्पनी जंगल में व्यवस्थित बनी रही थी, जंगल के पास खड्ड में घात लगाये बैठी थी और उसने अचानक फ़्रांसीसियों पर हमला कर दिया था। हाथ में छोटी-सी तलवार लिये तिमोख़िन ऐसे ज़ोर से चीख़ता और उन्मादी उन्मत्तता से फ़्रांसीसियों पर झपटा था कि उनके होश-हवास गुम हो गये और वे अपनी बन्दूक़ें फेंककर भाग खड़े हुए। तिमोख़िन की बग़ल में भागे आ रहे दोलोख़ोव ने एक फ़्रांसीसी पर नज़दीक से गोली चलाकर उसे मार डाला और घुटने टेक देनेवाले एक अफ़सर को दूसरों से पहले कालर से पकड़ लिया। भगोड़े वापस आ गये, बटालियनें फिर से क्रमबद्ध हो गयीं और फ़्रांसीसी, जो हमारी सेना के बायें बाज़ू को दो भागों में बांट ही देनेवाले थे, कुछ देर को पीछे धकेल दिये गये। हमारे रिज़र्व फ़ौजी दस्ते आपस में मिल गये और भगोड़े रुक गये। रेजिमेंट-कमांडर मेजर एकोनोमोव के साथ पुल के नज़दीक खड़ा था और पीछे हटती हुई कम्पनियां उसके पास से गुज़र रही थीं। इसी समय एक सैनिक उसके पास आया, उसने उसके घोड़े की रक़ाब थाम ली और लगभग उसका सहारा ले लिया। सैनिक नीली-सी रंगतवाला बनात का बड़ा फ़ौजी कोट पहने था, थैले और टोपी के बिना था, उसके सिर पर पट्टी बंधी थी और कंधे पर फ़्रांसीसी कारतूसों का थैला लटका हुआ था। उसके हाथों में अफ़सरोंवाली तलवार थी। इस फ़ौजी का चेहरा पीला था, उसकी नीली आंखें ढिठाई से रेजिमेंट-कमांडर के चेहरे को ताक रही थीं और होंठों पर मुस्कान थी। रेजिमेंट-कमांडर बेशक मेजर एकोनोमोव को हिदायतें देने में व्यस्त था, फिर भी वह इस सैनिक की ओर ध्यान दिये बिना न रह सका।

"हुज़ूर, ये हैं जीत की दो चीज़ें, दो विजय-चिह्न," दोलोख़ोव ने फ़्रांसीसी तलवार और थैले की तरफ़ इशारा करते हुए कहा। "मैंने ही फ़्रांसीसी अफ़सर को बन्दी बनाया है। मैंने ही कम्पनी को रोका है।" दोलोख़ोव थकान के कारण हांफ रहा था, रुक-रुककर बोल

रहा था। "सारी कम्पनी इस बात की गवाही दे सकती है। हुज़ूर, आपसे अनुरोध करता हूं कि इस बात को भूलिये नहीं!"

"ठीक है, ठीक है," रेजिमेंट-कमांडर ने कहा और पुनः मेजर एकोनोमोव से बात करने लगा।

किन्तु दोलोख़ोव वहां से हटा नहीं। उसने सिर पर बंधा हुआ रूमाल खोला, खींचकर उसे हटाया और बालों में जमा हुआ ख़ून दिखाया।

"यह संगीन का घाव है, इसके बावजूद मैं सबसे आगे की क़तार में बना रहा। यह भूलियेगा नहीं, हुज़ूर।"

तूशिन के तोपख़ाने का किसी को भी ध्यान नहीं रहा था। केवल लड़ाई के अन्त में मोर्चे के मध्य भाग से तोपों की गरज सुनते रहने पर ही प्रिंस बग्रातिओन ने पहले तो बड़े अफ़सर और फिर प्रिंस अन्द्रेई को यह आदेश पहुंचाने के लिये वहां भेजा कि तोपख़ाना जल्दी से जल्दी पीछे हट जाये। तूशिन की तोपों की रक्षा के लिये उसके पास खड़ी सेना लड़ाई के मध्य में ही किसी के आदेश से वहां से चली गयी थी। किन्तु तोपख़ाना गोलाबारी करता रहा और फ़्रांसीसियों ने उसपर केवल इसीलिये क़ब्ज़ा नहीं किया कि वे यह कल्पना ही नहीं कर सकते थे कि रक्षा करनेवाली सेना के बिना चार तोपें गोलाबारी करने की हिम्मत कर सकती थीं। इसके विपरीत, यह तोपख़ाना जिस जोश से गोलाबारी कर रहा था, उसका फ़्रांसीसियों ने यही अर्थ लगाया कि रूसी सेना की मुख्य शक्ति, यहीं मध्य में ही संकेन्द्रित है। उन्होंने दो बार इसपर हमला करने की कोशिश की और दोनों बार इस ऊंचाई पर तैनात इन चार तोपों ने ही छर्रोंवाले गोले चलाकर उन्हें खदेड़ दिया।

प्रिंस बग्रातिओन के पहाड़ी से नीचे जाने के थोड़ी देर बाद ही तूशिन शेनग्राबेन को आग लगाने में सफल हो गया था।

"देखो तो कैसे भगदड़ मच गयी है! लपटें उठ रही हैं! देखो, धुआं तो देखो! ख़ूब है! कमाल हो गया! जरा धुएं को तो देखो, धुएं को!" तोपची बड़े रंग में आकर कह उठे थे।

चारों तोपें किसी आदेश के बिना ही आग की दिशा में गोले बरसा रही थीं। तोपची मानो एक-दूसरे की हिम्मत बढ़ाते हुए हर

गोला चलने पर ख़ूब ज़ोर से चिल्लाते थे: "लाजवाब! यह बढ़िया बात हुई! अरे वाह... मज़ा आ गया!" हवा से भड़कनेवाली लपटें-ज्वालायें तेज़ी से फैलती जा रही थीं। गांव से आगेवाला फ़्रांसीसी सैनिक दल पीछे हट गया और मानो अपनी इस असफलता का बदला लेने के लिये उसने गांव के दायीं ओर दस तोपें तैनात कर दीं और उनसे तूशिन की तोपों पर गोलाबारी करने लगा।

गांव को आग लगने से हमारे तोपचियों के दिलों में दौड़नेवाली बच्चों जैसी ख़ुशी की लहर और फ़्रांसीसियों पर सफल गोलाबारी से पैदा हुए जोश के कारण उनका इस तोपख़ाने की तरफ़ तभी ध्यान गया, जब दो गोले और उनके फ़ौरन बाद चार अन्य गोले तोपों के बीच आकर गिरे। एक गोले ने दो घोड़ों की जान ले ली और दूसरे ने बारूद की घोड़ा-गाड़ी के कोचवान की टांग उड़ा दी। किन्तु हमारे तोपची एक बार जिस तरह जोश में आ गये थे, वह कम नहीं हुआ और केवल उसका स्वरूप ही बदल गया। एक अतिरिक्त तोप-गाड़ी के घोड़ों को मरनेवाले घोड़ों की जगह जोत दिया गया, घायलों को हटा दिया गया और चार तोपों के मुंह दुश्मन की दस तोपों की तरफ़ कर दिये गये। तूशिन का अफ़सर-साथी लड़ाई के शुरू में ही मारा गया था और घण्टे भर की लड़ाई के दौरान चालीस तोपचियों में से सत्रह खेत रहे थे। मगर वे पहले की तरह ही बहुत ख़ुश और जोश में थे। दो बार उन्होंने फ़्रांसीसियों को नीचे, अपने नज़दीक प्रकट होते देखा और तब उन्होंने उन्हें छर्रोंवाले गोले बरसाकर खदेड़ दिया।

नाटा-सा, क्षीण तथा अटपटी गति-विधियोंवाला तूशिन अपने अर्दली को, उसी के शब्दों में **इसके लिये एक और पाइप भरने** का लगातार आदेश देता, उससे चिंगारियां बिखराता हुआ भागकर आगे जाता और छोटी-सी हथेली से आंखों पर ओट करके फ़्रांसीसियों को देखता।

"इनका कचूमर निकाल दो, जवानो!" वह कहता और पहिये से तोप को पकड़कर ख़ुद उसका पेच ठीक करता।

तोपें चलने के अविराम धमाकों से मानो बहरा होने और हर बार सिहर उठनेवाला तूशिन अपने पाइप को मुंह में दबाये हुए धुएं में एक तोप से दूसरी तक भागता, कहीं निशाना ठीक करता, कहीं गोले गिनता, कहीं मरे तथा घायल हुए घोड़ों की जगह दूसरे घोड़े जुतवाता और अपनी क्षीण, पतली तथा ढुलमुल आवाज़ में चिल्लाता।

तूशिन का तोपखाना।

उसके चेहरे पर अधिकाधिक सजीवता आती जा रही थी। केवल लोगों के मारे जाने या घायल हो जाने पर ही वह नाक-भौंह सिकोड़ता और मृत की ओर से मुंह फेरकर उन लोगों पर चिल्लाता जो, जैसा कि हमेशा होता है, घायल या मुर्दा फ़ौजी को उठाते हुए झिझकते। सैनिक, जिनमें से अधिकांश सुन्दर जवान थे (जैसा कि तोपख़ाने में आम तौर पर होता है, अपने अफ़सर से कहीं अधिक लम्बे-चौड़े), मुश्किल में पड़े हुए बच्चों की तरह सभी अपने कमांडर की तरफ़ देखते और उसके चेहरे पर दिखायी देनेवाला भाव अनिवार्य रूप से उनके चेहरों पर भी झलक उठता।

इस भयानक शोर-शराबे, ध्यान को संकेन्द्रित तथा दौड़-धूप करने के फलस्वरूप तूशिन को भय की अप्रिय भावना की लेशमात्र अनुभूति नहीं हुई और यह विचार कि उसकी हत्या हो सकती है अथवा वह बुरी तरह घायल हो सकता है, उसके दिमाग़ तक में नहीं आया। इसके विपरीत, वह अधिकाधिक उल्लसित होता गया। उसे ऐसा लगता था कि बहुत वक़्त पहले, शायद पिछले दिन ही वह क्षण आया था जब उसने दुश्मन को देखा और पहला गोला चलाया था तथा भूमि के जिस छोटे-से टुकड़े पर वह खड़ा था, उससे वह एक ज़माने से परिचित था, वह उसका चिर-पहचाना था। इस चीज़ के बावजूद कि वह सब कुछ याद रख रहा था, सब कुछ समझ रहा था, सब कुछ कर रहा था, जो अच्छे से अच्छा अफ़सर ऐसी परिस्थितियों में कर सकता था, वह सरसाम या नशे में धुत्त आदमी की सी हालत में था।

सभी ओर से कान बहरे करनेवाली अपनी तोपों की आवाज़ों, दुश्मन के गोलों की सनसनाहट तथा धमाकों, तोपों के पास दौड़-धूप करते तोपचियों के पसीने से तर और तमतमाये चेहरों, लोगों तथा घोड़ों के ख़ून, दूसरी ओर दुश्मन की तोप से उठनेवाले हल्के-से धुएं (जिसके बाद हर बार गोला आता था जो ज़मीन, किसी व्यक्ति, तोप या घोड़े पर गिरता था) – इन सभी चीज़ों के कारण उसका एक अपना स्वप्न-लोक बन गया था जो उसे इस क्षण प्रसन्नता प्रदान कर रहा था। उसकी कल्पना में शत्रु की तोपें, तोपें नहीं, बल्कि पाइपें थीं जिनमें से कोई अदृश्य पाइप पीनेवाला कभी-कभार धुएं के कश छोड़ता था।

"लो, फिर पाइप से धुएं का कश छोड़ दिया," तूशिन ने उस

समय अपने आपसे फुसफुसाते हुए कहा, जब पहाड़ी से फिर धुआं उठा और हवा के साथ एक धारी की तरह बायीं ओर को चला गया, "अब गेंद आयेगा – हमें उसे लौटाना होगा।"

"क्या हुक्म है, हुज़ूर?" उसके नज़दीक खड़े तोपची ने पूछा जिसने उसे कुछ बुदबुदाते सुना था।

"कुछ नहीं, गोला..." उसने उत्तर दिया।

"तो अब अपना रंग दिखाओ, हमारी मत्वेव्ना," उसने अपने आपसे कहा। उसकी कल्पना में पुराने ढंग के मुंहवाली बड़ी तोप मत्वेव्ना थी। अपनी तोपों के पास फ़्रांसीसी उसे चींटियों जैसे लग रहे थे। दूसरी तोप का सुन्दर और बोतल का दीवाना एक नम्बरवाला तोपची उसके कल्पना-लोक में **चाचा** था। दूसरों की तुलना में तूशिन उसकी ओर कहीं अधिक देखता तथा उसकी हर गति-विधि से ख़ुश होता था। पहाड़ी के दामन में कभी शान्त और कभी फिर ऊंची हो जानेवाली गोलियों की आवाज़ उसे किसी के सांस लेने जैसी प्रतीत होती थी। इन आवाज़ों के डूबने और उभरने को वह बहुत ध्यान से सुनता था।

"अरे, फिर से सांस आने-जाने लगी है," वह अपने आपसे कहता।

ख़ुद अपनी वह ऐसे लम्बे-तड़ंगे, भीमकाय पुरुष के रूप में कल्पना करता जो दोनों हाथों से फ़्रांसीसियों पर गोले फेंक रहा था।

"तो मत्वेव्ना, मेरी प्यारी, निराश नहीं करना!" उसने तोप के पास से हटते हुए कहा और इसी क्षण उसे अपने ऊपर किसी की अनजानी, अपरिचित आवाज़ गूंजती सुनायी दी:

"कप्तान तूशिन! कप्तान!"

तूशिन ने घबराकर पीछे देखा। यह वही बड़ा अफ़सर उसे पुकार रहा था जिसने उसे ग्रुन्ट की केन्टीन में से निकाल दिया था। वह हांफती आवाज़ में पुकारकर कह रहा था:

"आप क्या पागल हो गये हैं? आपको दो बार पीछे हटने का हुक्म दिया जा चुका है, मगर आप..."

"किस बात के लिये मुझे डांटा जा रहा है?" तूशिन ने भय से बड़े अफ़सर की ओर देखते हुए मन ही मन सोचा।

"मैं... मैं तो कुछ नहीं..." उसने टोपी के साथ दो उंगलियां सटाते हुए कहा। "मैं..."

किन्तु कर्नल जो कुछ कहना चाहता था, पूरी तरह कह नहीं पाया। नज़दीक से गुज़रते हुए गोले ने उसे घोड़े पर झुकने, उसके साथ चिपक जाने को विवश कर दिया। वह चुप हो गया, उसने फिर से कुछ कहना ही चाहा कि एक अन्य गोले ने उसे चुप रहने को विवश कर दिया। उसने घोड़े को मोड़ा और उसे सरपट दूर दौड़ा ले चला।

"पीछे हट जायें! सभी पीछे चले जायें!" वह दूर से चिल्लाया।

फ़ौजी हंस पड़े। एक क्षण बाद यही आदेश लेकर एडजुटेंट आ गया।

यह प्रिंस अन्द्रेई था। तूशिन की तोपें जिस जगह तैनात थीं, उस जगह के निकट पहुंचते हुए सबसे पहले उसका ध्यान तोप-गाड़ी में जुते घोड़ों से अलग उस घोड़े की तरफ़ आकर्षित हुआ जिसकी टांग घायल हो गयी थी और जो जुते हुए घोड़ों के पास पड़ा हिनहिना रहा था। उसकी टांग से फ़व्वारे की तरह ख़ून बह रहा था। तोप-गाड़ियों के बीच कुछ लाशें पड़ी थीं। जब वह इधर आ रहा था तो एक के बाद एक गोला उसके ऊपर से गुज़र रहा था और उसने अपनी पीठ पर भय की झुरझुरी-सी महसूस की। किन्तु एक इसी विचार ने कि वह डर रहा है, उसे फिर से साहस प्रदान किया। "मैं डर नहीं सकता," उसने सोचा और वह धीरे से तोप-गाड़ियों के बीच घोड़े से नीचे उतरा। उसने आदेश पहुंचा दिया, मगर तोपख़ाने से वापस नहीं गया। उसने तय किया कि अपनी उपस्थिति में तोपों को लदवाकर पीछे भेज देगा। तूशिन के साथ लाशों के बीच आते-जाते और फ़्रांसीसियों की भयानक गोलाबारी की परवाह न करते हुए वह तोपों को लदवाने के काम में जुट गया।

"अभी-अभी एक और अफ़सर साहब आये थे, मगर झटपट यहां से चलते बने," एक तोपची ने प्रिंस अन्द्रेई से कहा, "वह आप जैसे नहीं थे, हुज़ूर।"

प्रिंस अन्द्रेई ने तूशिन से कोई बातचीत नहीं की। वे दोनों इतने व्यस्त थे कि ऐसे लगता था मानो एक-दूसरे को देख ही न रहे हों। जब चार में से सही-सलामत रह जानेवाली दो तोपें गाड़ियों पर लदवा दी गयीं (टूटी हुई दो तोपें छोड़ दी गयीं) तो प्रिंस अन्द्रेई तूशिन के पास गया।

"तो फिर मिलेंगे, नमस्ते," प्रिंस अन्द्रेई ने तूशिन की तरफ़ हाथ बढ़ाते हुए कहा।

"नमस्ते, प्यारे," तूशिन ने जवाब दिया। "भले आदमी! नमस्ते, मेरे प्यारे," तूशिन ने आंसू बहाते हुए कहा जो न जाने किस कारण उसकी आंखों में उमड़ आये थे।

२१

हवा शान्त हो गयी थी और युद्ध-क्षेत्र के ऊपर झुके-झुके काले बादल छा गये थे जो क्षितिज पर बारूद के धुएं से एकाकार हो रहे थे। अन्धेरा छा गया था और इसीलिये दो स्थानों पर आग की लपटें ज़्यादा साफ़ दिखायी देने लगी थीं। तोपों की गरज धीमी हो गयी थी, किन्तु पीछे से तथा दायीं ओर से गोलियां चलने की आवाज़ अधिकाधिक अक्सर तथा निकटतर सुनायी देती थी। तूशिन जैसे ही अपनी तोप-गाड़ियों को घायलों के गिर्द घुमाकर या उनके निकट से गुज़ारते हुए दुश्मन की तोपों की गोलाबारी की हद से बाहर ले आया और खड्ड में उतर गया, वैसे ही उसे अपने सामने बड़े अफ़सर तथा एडजुटेंट दिखायी दिये जिनमें बड़ा अफ़सर तथा जेरकोव भी शामिल था जिसे दो बार तूशिन के तोपख़ाने तक भेजा गया था और जो एक बार भी वहां नहीं पहुंचा था। एक-दूसरे को टोकते हुए वे सभी उसे आदेश देते और अपने आदेशों का पारस्परिक खण्डन करते हुए यह बताने लगे कि वह कैसे और किधर जाये। वे उसकी टीका-टिप्पणी भी करते थे, उसे दोषी भी ठहराते थे। तूशिन तोपख़ाने की मरियल-सी घोड़ी पर सवार चुपचाप पीछे-पीछे आ रहा था, कुछ भी कहते हुए डरता था, क्योंकि, न जाने क्यों, उसे लगता था कि एक भी शब्द मुंह से निकालते ही वह रो पड़ेगा। यद्यपि घायलों को वहीं छोड़ देने का आदेश दिया गया था, तथापि उनमें से अधिकांश सेना के पीछे-पीछे घिसटते चले आ रहे थे और तोप-गाड़ियों पर बैठ जाने की इजाज़त मांगते थे। प्यादा फ़ौज का वह हट्टा-कट्टा अफ़सर, जो लड़ाई शुरू होने के पहले तूशिन के झोंपड़े से निकलकर भागा था, पेट में गोली लगने से बुरी तरह घायल हो गया था। उसे मत्वेव्ना तोप-गाड़ी पर लिटा दिया गया था। पहाड़ी के दामन में एक हाथ से दूसरे हाथ को थामे

हुस्सारों की घुड़सेना का केडेट, जिसका चेहरा ज़र्द था, तूशिन के पास आया और उसकी मिन्नत करने लगा कि वह उसे किसी तोप-गाड़ी पर बैठे जाने की अनुमति दे दे।

"कप्तान, भगवान के लिये मुझे बैठ जाने दीजिये, मेरे हाथ पर चोट लगी है," उसने झिझकते-झिझकते कहा। "भगवान के लिये... मैं चल नहीं सकता। भगवान के लिये!"

साफ़ नज़र आ रहा था कि यह केडेट किसी गाड़ी पर बैठ जाने की इजाज़त पाने के लिये कई बार दूसरों से अनुरोध कर चुका था और हर बार ही उसे इन्कार कर दिया गया था। उसने हिचकते-हिचकते और दयनीय आवाज़ में विनती की:

"भगवान के लिये अपने तोपचियों से कह दीजिये कि वे मुझे तोप-गाड़ी पर बैठ जाने दें।"

"बिठा लीजिये, बिठा लीजिये," तूशिन ने कहा। "अरे चाचा, इसके लिये बड़ा फ़ौजी कोट बिछा दो," उसने अपने चहेते सैनिक से कहा। "घायल अफ़सर कहां है?"

"हमने उसे नीचे उतार दिया, मर गया था," किसी ने जवाब में कहा।

"बिठा लीजिये। बैठ जाइये, भले आदमी, बैठ जाइये। अन्तोनोव, बड़ा फ़ौजी कोट बिछा दो।"

यह केडेट रोस्तोव था। वह एक हाथ से दूसरा हाथ थामे था, उसके चेहरे का रंग उड़ा हुआ था और उसका नीचे का जबड़ा बुख़ार जैसी जूड़ी के कारण कांप रहा था। उसे मत्वेव्ना यानी उसी तोप-गाड़ी पर बिठा दिया गया जिससे मृत अफ़सर को नीचे उतारा गया था। उसके बैठने के लिये जो फ़ौजी कोट बिछाया गया था, उसपर ख़ून लगा हुआ था जिससे रोस्तोव की बिरजिस और हाथ सन गये।

"आप क्या घायल हैं, मेरे प्यारे?" तूशिन ने उस तोप-गाड़ी के पास आते हुए, जिसपर रोस्तोव बैठा था, उससे पूछा।

"नहीं, भीतरी चोट आयी है।"

"तो तोप-गाड़ी पर ख़ून कहां से आ गया?" तूशिन ने प्रश्न किया।

"हुज़ूर, यह तो उस घायल अफ़सर का ख़ून लग गया है इसपर," एक तोपची ने फ़ौजी ओवरकोट की आस्तीन से ख़ून पोंछते और मानो

तोप-गाड़ी के इस तरह गन्दी होने के लिये क्षमा मांगते हुए जवाब दिया।

प्यादा फ़ौज की मदद से तोपों को बमुश्किल पहाड़ी पर चढ़ाया गया और ये लोग गुन्टेरसडोर्फ़ गांव में पहुंचकर रुक गये। इतना अधिक अन्धेरा हो गया था कि दस क़दम की दूरी पर भी वर्दियों को पहचानना सम्भव नहीं था। गोलियों की आवाज़ धीमी पड़ने लगी थी। किन्तु अचानक निकट ही दायीं ओर से फिर चीख़ें तथा गोलियों की ठांय-ठांय सुनायी देने लगी। गोलियां चलने से अन्धेरा रोशन होने लगा था। यह फ़्रांसीसियों का आख़िरी हमला था जिसका गांव के घरों में घुसे हुए हमारे सैनिक जवाब दे रहे थे। एक बार फिर सभी गांव से बाहर दौड़ पड़े, मगर तूशिन की तोपें अपनी जगह से हिल नहीं पायीं और तोपची, तूशिन तथा केडेट रोस्तोव चुपचाप एक-दूसरे की ओर देखते हुए अपने भाग्य की प्रतीक्षा करने लगे। कुछ देर बाद गोलियां चलने की आवाज़ कम होने लगी और बग़ल की गली से ज़िन्दादिली से बतियाते सैनिक सामने आये।

"सही-सलामत हो, पेत्रोव?" एक फ़ौजी ने दूसरे से पूछा।

"भाई मेरे, ख़ूब ख़बर ली हमने उनकी। अब इधर आने का नाम नहीं लेंगे," दूसरे ने जवाब दिया।

"कुछ भी तो नज़र नहीं आता। ओह, कैसे उन्होंने अपनों को ही भून डाला! बिल्कुल घुप अंधेरा है, भाइयो! पीने को कुछ है?"

फ़्रांसीसियों का आख़िरी हमला नाकाम बना दिया गया था। फिर से तूशिन का तोपख़ाना मानो बोलते-बतियाते प्यादा फ़ौजियों के चौखटे में जड़ा-सा आगे बढ़ चला।

अंधेरे में मानो फुसफुसाहट, बातचीत, सुमों और पहियों की घुली-मिली आवाज़ों का शोर पैदा करता हुआ एक अदृश्य और उदास-सा दरिया एक ही दिशा में बहता चला जा रहा था। रात के अन्धेरे में इस आम शोर में घायलों की आहें-कराहें दूसरी आवाज़ों से कहीं अधिक साफ़ सुनायी दे रही थीं। फ़ौज को अपनी लपेट में लेनेवाले अन्धेरे में उनकी आहें-कराहें बसी हुई थीं, वे और इस रात का अन्धेरा एक-जान हो गये थे। कुछ समय बाद इस चलती हुई भीड़ में उत्तेजना की एक हल्की-सी लहर दौड़ गयी। अमले से घिरा सफ़ेद घोड़े पर सवार कोई व्यक्ति वहां से गुज़रा था और उसने गुज़रते हुए कुछ कहा था।

"क्या कहा है? अब हम किधर जायेंगे? हमें धन्यवाद दिया

है क्या ?" सभी ओर से उत्सुकतापूर्ण प्रश्न सुनायी दिये और यह चलती हुई भीड़ रेल-पेल करने लगी (सम्भवतः आगेवाले सैनिक रुक गये थे) तथा यह ख़बर फैलने लगी कि रुकने का आदेश दिया गया है। सभी कीचड़वाले रास्ते के मध्य में ही जहां के तहां रुक गये।

अलाव जल उठे और बोलने-बतियाने की आवाज़ें अधिक स्पष्ट रूप से सुनायी देने लगीं। अपनी कम्पनी को ज़रूरी हिदायतें देने के बाद कप्तान तूशिन ने एक सैनिक को केडेट रोस्तोव के लिये मरहम-पट्टी की चौकी या कोई डाक्टर ढूंढ़ने को भेजा और सड़क-किनारे सैनिकों द्वारा जलाये गये अलाव के पास जा बैठा। रोस्तोव भी जैसे-तैसे अलाव के निकट चला गया। दर्द के कारण बुख़ार जैसी जूड़ी, ठण्ड और नमी से उसका सारा शरीर कांप रहा था। नींद लगातार उसपर हावी हो रही थी, किन्तु अत्यधिक यातनापूर्ण पीड़ा तथा हाथ के लिये अनुकूल, आरामदेह स्थिति न मिलने के कारण वह सो नहीं पा रहा था। वह कभी तो आंखें मूंद लेता, कभी आग की तरफ़ देखने लगता जो उसे दहकती हुई लाल-लाल प्रतीत होती थी, तो कभी कमज़ोर और झुके-झुके कंधोंवाले तूशिन को देखता जो उसके नज़दीक ही पालथी मारे बैठा था। तूशिन की बड़ी-बड़ी, दयालु और बुद्धिमत्तापूर्ण आंखें सहानुभूति तथा संवेदना से उसके चेहरे पर जमी हुई थीं। वह अनुभव कर रहा था कि तूशिन जी-जान से उसकी मदद करना चाहता है, मगर कुछ भी नहीं कर सकता।

सभी ओर उनके निकट से गुज़रने तथा उनके गिर्द डेरा डालनेवाले प्यादा फ़ौजियों के क़दमों, उनकी सामान-गाड़ियों और बोलने-बतियाने की आवाज़ें सुनायी दे रही थीं। बोलने-बतियाने, क़दमों की आवाज़, कीचड़ में घोड़ों के सुमों की छपछप और दूर तथा निकट लकड़ियों के चटकने की ध्वनियां घटते-बढ़ते शोर में घुल-मिल रही थीं।

पहले की भांति अब अंधेरे में कोई अदृश्य नदी नहीं बह रही थी, बल्कि मानो तूफ़ान के बाद परेशान सागर विह्वल होते हुए भी शान्त होता जा रहा था। रोस्तोव मानो कुछ न समझते हुए अपने सामने और इर्द-गिर्द होनेवाली चीज़ों को देख तथा आवाज़ों को सुन रहा था। एक प्यादा फ़ौजी अलाव के निकट आया, उकड़ूं बैठ गया, आग की तरफ़ अपने हाथ बढ़ाकर वह उन्हें तापने लगा और उसने मुंह दूसरी ओर कर लिया।

तूशिन के तोपचियों के बीच घायल निकोलाई रोस्तोव।

“आपको कोई आपत्ति तो नहीं, हुज़ूर?” उसने तूशिन से पूछा। “हुज़ूर, मैं अपनी कम्पनी से बिछुड़ गया हूं, ख़ुद नहीं जानता कि अब कहां हूं। मुसीबत है!”

सैनिक के साथ-साथ प्यादा फ़ौज का एक अफ़सर भी, जिसके गाल पर पट्टी बंधी हुई थी, अलाव के पास आया और उसने तूशिन से अनुरोध किया कि वह अपनी तोपों को थोड़ा एक तरफ़ हटाने का आदेश दे दे ताकि सामान से लदी घोड़ा-गाड़ी गुज़र सके। इस कम्पनी-कमांडर के बाद दो सैनिक अलाव के पास आये। वे एक बूट को एक-दूसरे से छीनते हुए आपस में गाली-गलौज और हाथापाई कर रहे थे।

“हां, हां, तूने ही इसे उठाया था! बहुत चालाक बनता है!” खरखरी आवाज़ में एक चिल्ला रहा था।

इसके पश्चात एक दुबला-पतला और पीले चेहरेवाला सैनिक आया जिसकी गर्दन के गिर्द ख़ून से सनी हुई पट्टी बंधी थी और उसने झल्लायी हुई आवाज में तोपचियों से पानी मांगा।

“क्या कुत्ते की मौत मरना होगा?” उसने कहा।

तूशिन ने उसे पानी पिला देने का आदेश दिया। थोड़ी देर बाद एक हंसमुख फ़ौजी आया और उसने प्यादा फ़ौज के लिये अलाव जलाने को आग मांगी।

“प्यादा फ़ौज के लिए आग, ख़ूब दहकती आग चाहिये! भाइयो, भला हो तुम्हारा, आग के लिये शुक्रिया, हम इसे सूद के साथ लौटा देंगे,” जलती हुई लकड़ी को कहीं अन्धेरे में ले जाते हुए उसने कहा।

इस फ़ौजी के पश्चात फ़ौजी ओवरकोट पर कोई बड़ा बोझ उठाये हुए कुछ सैनिक अलाव के पास से गुज़रे। उनमें से एक को ठोकर लग गयी।

“ओह, शैतानों ने रास्ते में लकड़ियां डाल दी हैं,” वह बड़बड़ाया।

“यह तो मर चुका है, इसे उठाकर ले जाने में क्या तुक है?” उनमें से एक ने पूछा।

“चुप रहो!”

और वे अपना बोझ उठाये हुए अन्धेरे में ग़ायब हो गये।

“तो दर्द होता है?” तूशिन ने फुसफुसाकर रोस्तोव से पूछा।

“हां, होता है।”

"हुज़ूर, आपको जनरल साहब ने बुलाया है। वह पासवाले घर में हैं," एक तोपची ने तूशिन के निकट आकर कहा।

"अभी जाता हूं, भैया।"

तूशिन उठा और अपने फ़ौजी ओवरकोट के बटन बन्द करते तथा तनकर सीधा होते हुए अलाव के पास से चला गया...

तोपचियों के अलाव के नज़दीक ही प्रिंस बग्रातिओन के लिये एक घर तैयार कर दिया गया था। वह यहां एकत्रित कुछ सेनाध्यक्षों के साथ भोजन करता हुआ बातचीत कर रहा था। अधमुंदी आंखोंवाला कर्नल भी यहां था तथा बुरी तरह भेड़ की हड्डी को चिचोड़ रहा था; बाईस साल की अनिन्द्य सैन्य-सेवावाला जनरल भी यहां उपस्थित था जिसके चेहरे पर वोद्का का जाम पीने तथा भोजन करने के बाद लाली आ गयी थी; अपने नाम के अक्षरवाली अंगूठी पहने हुए बड़ा अफ़सर भी यहीं था, बेचैनी से सभी को देखता हुआ जेरकोव तथा प्रिंस अन्द्रेई भी यहां बैठे थे। प्रिंस अन्द्रेई का चेहरा पीला था, होंठ भिंचे हुए थे और आंखें अत्यधिक चमक रही थीं।

फ़्रांसीसियों से छीना गया एक झण्डा इस घर के एक कोने में खड़ा था। भोला-सा मुंह बनाये हुए सरकारी वकील उसके कपड़े को छू तथा सम्भवतः इसलिये सन्देह से सिर हिला रहा था कि उसे झण्डे में सच्ची दिलचस्पी महसूस हो रही थी या फिर इसलिये ऐसा कर रहा था कि दूसरों को खाते-पीते देखकर उसके दिल पर भारी गुज़र रही थी, क्योंकि बेहद भूखा था और उससे खाने की मेज़ पर बैठने को नहीं कहा गया था। घुड़सैनिकों द्वारा बन्दी बनाया गया फ़्रांसीसी कर्नल बग़लवाले घर में था। हमारे अफ़सर उसके पास भीड़ लगाये हुए उसे देख रहे थे। प्रिंस बग्रातिओन अलग-अलग सेनाओं के कमांडरों को धन्यवाद देता हुआ उनसे लड़ाई की तफ़सीलें और जानी नुक़सान के बारे में पूछ-ताछ कर रहा था। ब्राउनाऊ के निकट कुतूज़ोव को अपनी रेजिमेंट की परेड दिखानेवाला जनरल प्रिंस को यह बता रहा था कि लड़ाई शुरू होते ही वह जंगल से पीछे हट गया था, उसने वृक्ष काट रहे सैनिकों को एकत्रित किया, फ़्रांसीसियों को अपने क़रीब से गुज़र जाने दिया, फिर दो बटालियनों से उनपर संगीनों द्वारा हमला किया और उन्हें कुचल डाला।

"हुज़ूर, जैसे ही मैंने यह देखा कि उनकी पहली बटालियन में

गड़बड़ मच गयी है, मैं रास्ते में खड़ा हो गया और मैंने अपने आपसे कहा: 'मैं इन्हें गुज़र जाने दूंगा और फिर इनपर गोलियां बरसाना शुरू करूंगा,' – और मैंने यही किया।"

रेजिमेंट-कमांडर ऐसा करने को इतना अधिक उत्सुक था, उसे ऐसा न कर पाने का इतना अधिक अफ़सोस था कि अब यह प्रतीत होता था कि सचमुच सब कुछ ऐसे ही हुआ था। हां, सम्भव है कि वास्तव में ऐसा ही हुआ हो? उस गड़बड़-झाले में भला कौन यह जान सकता था कि क्या हुआ था और क्या नहीं हुआ था?

"हुज़ूर, मैं आपको यह भी बताना ज़रूरी समझता हूं," उसने कुतूज़ोव के साथ दोलोख़ोव की बातचीत और कुछ देर पहले दोलोख़ोव से हुई अपनी मुलाक़ात को याद करते हुए कहा, "कि अफ़सर के पद से साधारण सैनिक बनाये गये दोलोख़ोव ने मेरी आंखों के सामने एक फ़्रांसीसी अफ़सर को बन्दी बनाया और विशेष वीरता का परिचय दिया।"

"हुज़ूर, इसी वक़्त तो मैंने पाव्लोग्राद की घुड़सेना को धावा बोलते देखा," बेचैनी से इधर-उधर नज़र दौड़ाते और बातचीत में शामिल होते हुए जेरकोव ने कहा। उसने उस दिन हुस्सारों को देखा तक नहीं था और प्यादा फ़ौज के एक अफ़सर के मुंह से ही उनके बारे में सुना था। "जनाब, उन्होंने तो दो वर्गाकार व्यूह-रचनाओं को नष्ट कर डाला।"

जेरकोव के शब्दों पर कुछ लोग मुस्करा दिये, क्योंकि सदा की भांति उन्होंने उससे मज़ाक़ की आशा की थी। किन्तु यह देखकर कि उसने जो कुछ कहा था, उससे हमारी सेना और आज की लड़ाई के काम को चार चांद लगते हैं, उन्होंने गम्भीर मुद्रा बना ली, यद्यपि उनमें से अधिकांश इस बात को समझते थे कि वह जो कुछ कह रहा था, झूठ था, निराधार था। प्रिंस बग्रातिओन ने बुज़ुर्ग कर्नल को सम्बोधित करते हुए कहा:

"आप सब को धन्यवाद देता हूं, महानुभावो। सेना के सभी भागों – प्यादा फ़ौजियों, घुड़सैनिकों और तोपचियों – सभी ने बड़ी वीरता दिखायी। हां, मध्य भाग की दो तोपें किस तरह वहीं रह गयीं?" उसने आंखों से किसी को ढूंढ़ते हुए पूछा। (प्रिंस बग्रातिओन ने बायें पहलू की तोपों के बारे में नहीं पूछा। उसे मालूम था कि लड़ाई शुरू होते ही वहां सारी तोपें छोड़ दी गयी थीं।) "लगता है कि मैंने आपसे

वहां जाने को कहा था," उसने बड़े अफ़सर को सम्बोधित किया।

"एक तोप तो नाकारा हो गयी थी," बड़े अफ़सर ने जवाब दिया, "दूसरी वहां कैसे रह गयी, यह मैं ख़ुद नहीं समझ पा रहा। मैं स्वयं वहां पूरे वक़्त उपस्थित रहकर अनुदेश देता रहा था और अभी-अभी वहां से आया हूं... यह सच है कि वहां ख़ूब गोलाबारी हो रही थी," उसने नम्रता से इतना और जोड़ दिया।

किसी ने यह सूचना दी कि कप्तान तूशिन का तोपख़ाना गांव के पास ही खड़ा है और उसे बुलवा भेजा गया है।

"अरे हां, आप भी तो वहां थे," प्रिंस बग्रातिओन ने प्रिंस अन्द्रेई से कहा।

"हां, हां, हम तो एक-दूसरे से थोड़ा ही आगे-पीछे हो गये," बड़े अफ़सर ने बड़े सौजन्य से बोल्कोन्स्की की ओर देखकर मुस्कराते हुए कहा।

"मुझे आपको वहां देखने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ," प्रिंस अन्द्रेई ने तुरन्त रुखाई से जवाब दिया। सभी ख़ामोश रहे।

दरवाज़े पर तूशिन दिखायी दिया। वह सहमा-सहमा-सा जनरलों की पीठों के पीछे से आगे बढ़ने लगा। तंग घर में जनरलों के गिर्द चक्कर लगाते और सदा की भांति इस समय भी बड़े अफ़सरों की उपस्थिति में घबराये हुए से तूशिन को झण्डे का डंडा नज़र नहीं आया और वह उसके साथ ठोकर खा गया। कुछ लोग खिलखिलाकर हंस पड़े।

"तोप वहां कैसे छोड़ दी गयी?" बग्रातिओन ने कप्तान की तुलना में हंसनेवालों पर, जिनमें जेरकोव की आवाज़ सबसे ज़्यादा ऊंची सुनायी दी थी, कहीं अधिक गुस्से से त्योरी चढ़ाते हुए पूछा।

कठोर, ऊंचे अफ़सर का सामना होने पर तूशिन को केवल अभी अपने अपराध और इस कलंक की चेतना हुई कि उसने ज़िन्दा रहते हुए दो तोपें गंवा दीं। वह इतना अधिक उत्तेजित था कि इस क्षण तक इस बारे में सोच ही नहीं पाया था। अफ़सरों की हंसी ने उसे और भी हतप्रभ कर दिया। वह बग्रातिओन के सामने खड़ा था, उसका निचला जबड़ा कांप रहा था और वह कठिनाई से ही इतना कह पाया:

"मालूम नहीं... हुज़ूर... लोग नहीं थे, हुज़ूर।"

"आप तोपख़ाने की रक्षा करनेवाली सेना से लोग ले सकते थे!"

तूशिन ने यह नहीं कहा कि वहां रक्षा-सेना नहीं थी, यद्यपि यह बिल्कुल सच बात थी। वह नहीं चाहता था कि ऐसा कहकर किसी दूसरे अफ़सर को **मुसीबत में डाल दे** और इसलिये ख़ामोश रहते और बग्रातिओन के चेहरे पर नज़रें जमाये हुए उसे ऐसे देख रहा था जैसे कोई छात्र परीक्षक को देखता है।

यह ख़ामोशी काफ़ी देर तक बनी रही। प्रिंस बग्रातिओन सम्भवतः कठोर नहीं होना चाहता था और इसलिये समझ नहीं पा रहा था कि क्या कहे। अन्य लोगों की इस बातचीत में दख़ल देने की हिम्मत नहीं हुई। प्रिंस अन्द्रेई उदासी से तूशिन की ओर देख रहा था और उसके हाथों की उंगलियां बेचैनी से हिल रही थीं।

"हुज़ूर," प्रिंस अन्द्रेई ने तीखी आवाज़ में इस मौन को भंग किया, "आपने मुझे कप्तान तूशिन के तोपख़ाने पर भेजने की कृपा की थी। मैं वहां गया और मैंने दो-तिहाई तोपची तथा घोड़े मरे हुए पाये, दो तोपें नकारा हो गयी थीं और तोपख़ाने की रक्षा करनेवाली सेना का कहीं नाम-निशान नहीं था।"

प्रिंस बग्रातिओन और तूशिन, दोनों ही अब उत्तेजना को दबाकर संयत ढंग से बोल रहे बोल्कोन्स्की को बहुत ग़ौर से देख रहे थे।

"और अगर, हुज़ूर, आप मुझे अपनी राय ज़ाहिर करने की इजाज़त दें," उसने अपनी बात जारी रखी, "तो मैं कहूंगा कि आज की कामयाबी के लिये हम सबसे ज़्यादा तो इस तोपख़ाने की कार्रवाई तथा कप्तान तूशिन और उसकी कम्पनी की वीरतापूर्ण दृढ़ता के आभारी हैं," प्रिंस अन्द्रेई ने कहा और उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना उसी क्षण उठा और मेज़ से दूर हट गया।

प्रिंस बग्रातिओन ने तूशिन की ओर देखा और सम्भवतः बोल्कोन्स्की की दो टूक राय के प्रति अविश्वास न प्रकट करना चाहते तथा साथ ही अपने को उसकी बात से पूरी तरह सहमत होने की स्थिति में न पाते हुए उसने सिर झुकाया और तूशिन से कहा कि वह जा सकता है। प्रिंस अन्द्रेई उसके पीछे-पीछे बाहर आया।

"धन्यवाद, प्यारे, आपने मुझे बचा लिया," तूशिन ने उससे कहा।

प्रिंस अन्द्रेई ने तूशिन की तरफ़ देखा और कुछ भी कहे बिना वहां से चला गया। प्रिंस अन्द्रेई का मन भारी और उदास था। यह सब

कुछ इतना अजीब और जैसी उसने आशा की थी, उससे बहुत भिन्न था।

"ये कौन हैं? किसलिये ये लोग यहां हैं? इन्हें क्या चाहिये? और यह सब कब ख़त्म होगा?" रोस्तोव अपने सामने बदलती परछाइयों को देखते हुए सोच रहा था। बांह का दर्द अधिकाधिक यातनापूर्ण होता जा रहा था। नींद उसपर हावी हो रही थी, आंखों के सामने लाल-लाल घेरे नाच रहे थे और इन आवाज़ों तथा चेहरों की छापें तथा एकाकीपन की भावना पीड़ा से घुल-मिलकर एकाकार हो रही थी। यही, ये घायल और वे सैनिक जो घायल नहीं थे, वे सभी तो उसे दबा रहे थे, कुचल रहे थे, उसकी नसें मरोड़ रहे थे और उसकी टूटी बांह तथा कंधे का मांस जला रहे थे। इनसे निजात पाने के लिये उसने आंखें मूंद लीं।

वह थोड़ी देर को ऊंघ गया, किन्तु ऊंघने के इस एक क्षण में ही उसे अनगिनत चीज़ें दिखायी दीं – उसने अपनी मां और उसका बड़ा-सा गोरा हाथ देखा, सोन्या के दुबले-दुबले कंधे देखे, नताशा की आंखें और हंसी देखी, उसे देनीसोव की आवाज़ सुनायी दी, उसकी मूंछें तथा तेल्यानिन की झलक मिली और तेल्यानिन एवं बोगदानिच के साथ हुआ अपना सारा क़िस्सा नज़र आया। यह सारा क़िस्सा और तीखी आवाज़वाला सैनिक आपस में गड्डमड्ड हो गये थे और इसी क़िस्से के लोग और यही सैनिक तो इतने यातनापूर्ण ढंग से तथा कसकर उसकी बांह को पकड़े थे, उसे दबा रहे थे और एक ही दिशा में खींच रहे थे। उसने उनसे मुक्ति पाने की कोशिश की, किन्तु वे उसके कंधे को ज़रा भी और क्षण भर को भी नहीं छोड़ते थे। अगर ये उसके कंधे को न खींचते तो उसमें दर्द न होता, वह भला-चंगा होता। किन्तु इनसे पिंड छुड़ाना मुमकिन नहीं था।

उसने आंखें खोलीं और ऊपर की तरफ़ देखा। रात का काला चंदवा अंगारों की चमक से कोई एक मीटर से भी कम ऊंचाई पर छाया हुआ था। इस चमक में हिमकण उड़ रहे थे। तूशिन नहीं लौटा था, डाक्टर नहीं आया था। वह अकेला था, कोई सैनिक अब अलाव के दूसरी ओर नंगा बैठा था और अपने दुबले-पतले तथा पीले शरीर को गर्मा रहा था।

"किसी को मेरी ज़रूरत नहीं," रोस्तोव सोच रहा था। "कोई मेरी मदद करनेवाला नहीं, मुझपर तरस खानेवाला नहीं। लेकिन कभी तो मैं अपने घर पर था, शक्तिशाली, प्रसन्न-प्रफुल्ल और चहेता-लाड़ला।" उसने गहरी उसांस ली तथा उसांस लेने के साथ बरबस कराह भी उठा।

"दर्द हो रहा है क्या?" सैनिक ने आग के ऊपर अपनी क़मीज़ झाड़ते हुए पूछा और उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना खंखारकर इतना और कह दिया: "उफ़! कितने लोगों का एक ही दिन में बुरा हाल कर डाला गया है!"

रोस्तोव सैनिक की बात नहीं सुन रहा था। वह आग के ऊपर हवा में तैर रहे हिमकणों को देख रहा था और उसे रूस की सर्दी, गर्माहटवाले रोशन घर, समूर के फूले-फूले ओवरकोट, तेज़ी से दौड़ती स्लेज, स्वस्थ शरीर तथा परिवार के लोगों के प्यार और उनकी चिन्ताओं की याद आ रही थी। "किसलिये मैं यहां चला आया!" वह सोच रहा था।

अगले दिन फ़्रांसीसियों ने फिर से हमला नहीं किया और बग्रातिओन की बची-बचायी सेना कुतूज़ोव की सेना से जा मिली।

भाग 3

१

प्रिंस वसीली बहुत सोच-समझकर अपनी भावी योजनायें नहीं बनाता था। अपने फ़ायदे के लिये दूसरों का बुरा करने की तो वह और भी कम सोचता था। वह तो सिर्फ़ ऊंची सोसाइटी का आदमी था जिसमें उसे कामयाबी हासिल हुई थी और उसके लिये कामयाबी एक आदत बन गयी थी। परिस्थितियों और लोगों की निकटता के अनुसार निरन्तर उसकी योजनायें और मंसूबे बनते रहते थे जिनके सम्बन्ध में वह ख़ुद बहुत अच्छी तरह से सोच-विचार नहीं करता था, किन्तु वही उसके जीवन की दिलचस्पी होते थे। एक वक़्त में उसकी ऐसी एक ही योजना या मंसूबा नहीं, बल्कि दसियों योजनायें और मंसूबे होते थे जिनमें से कुछ जन्म ही लेने लगते थे, कुछ सिरे चढ़ने और कुछ नष्ट किये जानेवाले होते थे। उदाहरण के लिये, वह अपने आपसे ऐसा कुछ नहीं कहता था : "इस वक़्त इस आदमी की तूती बोल रही है, मुझे उससे दोस्ती करनी और उसका विश्वास-पात्र बनना चाहिये तथा उससे फ़लां फ़ायदा उठाना चाहिये," या फिर यह कि "प्येर अब बहुत अमीर आदमी है, मुझे किसी तरह उसे अपनी बेटी से शादी करने के लिये फुसलाना और फिर चालीस हज़ार रूबल का क़र्ज़ लेना चाहिये जिसकी मुझे बड़ी ज़रूरत है।" लेकिन जैसे ही असर-रसूख़वाले किसी आदमी से उसकी मुलाक़ात होती, वैसे ही उसका अन्तर्ज्ञान उससे यह कह देता कि इस आदमी से कोई फ़ायदा हो सकता है, प्रिंस वसीली उससे घनिष्ठता बढ़ा लेता और पहली सम्भावना सामने आते ही किसी तरह की तैयारी के बिना और अपने सहज ज्ञान का अनुसरण करते हुए वह उसकी चापलूसी-ख़ुशामद करता, उसके साथ बेतकल्लुफ़ हो जाता और उसके सम्मुख अपनी ज़रूरत पेश कर देता।

मास्को में प्येर उसके पास ही था और प्रिंस वसीली ने उसे राज-दरबार के छोटे अफ़सर का पद दिलवा दिया जो उस समय प्रिवी-कौंसिलर के पद के बराबर था और इस बात के लिये ज़ोर दिया कि

वह उसके साथ पीटर्सबर्ग चले और उसके घर पर ही ठहरे। प्रिंस वसीली खोये-खोये-से अन्दाज़ में, किन्तु साथ ही इस बात के पूरे विश्वास से कि ऐसा होकर रहना चाहिये, अपनी बेटी की प्येर से शादी करने की हर कोशिश कर रहा था। अगर वह पहले से ही सोच-समझकर अपनी योजनायें बनाता तो अपने से ऊंची तथा नीची स्थितिवाले सभी लोगों के साथ उसके व्यवहार में ऐसी स्वाभाविकता, सरलता और बेतकल्लुफ़ी न होती। अपने से अधिक प्रभावशाली और धनी लोगों की ओर वह निरन्तर आकर्षित होता रहता था और उसमें उस क्षण का लाभ उठाने का दुर्लभ गुण था, जब लोगों से अपना कोई काम निकलवाना सम्भव होता है।

कुछ ही समय पहले की एकाकीपन और बेफ़िक्री की ज़िन्दगी के बाद अचानक काउंट बेज़ूख़ोव बन जाने पर प्येर ने अपने को लोगों से इतना अधिक घिरा हुआ तथा व्यस्त अनुभव किया कि केवल बिस्तर में ही उसे अपने लिये कुछ समय मिलता। उसे बहुत-से काग़ज़-पत्रों पर हस्ताक्षर करने होते, कई सरकारी दफ़्तरों में जाना होता। किस-लिये वह ऐसा करता है यह बात स्पष्ट रूप से उसकी समझ में न आती। उसे बड़े कारिन्दे से कुछ पूछ-ताछ करनी होती, मास्को के निकट अपनी जागीर पर जाना तथा अनेक लोगों से मिलना होता जो पहले उसके अस्तित्व के बारे में जानना तक नहीं चाहते थे। मगर अब, यदि वह उनसे मिलने से इन्कार कर देता तो बुरा मानते और उनके दिल को बड़ी ठेस लगती। काम-काजवाले, रिश्तेदार और परिचित – भांति-भांति के ये सभी लोग समान रूप से अच्छे थे, जवान वारिस को चाहते थे, सभी स्पष्टतः तथा किसी प्रकार के सन्देह के बिना प्येर के ऊंचे गुणों पर विश्वास करते थे। उसे लगातार ऐसे शब्द सुनने को मिलते: "आपकी असाधारण दयालुता की बदौलत," या "आपके सोने जैसे दिल के होते हुए", "आप तो खुद इतने अच्छे हैं, काउंट..." या "काश, वह आपके जैसा बुद्धिमान होता," आदि, आदि और इसका नतीजा यह हुआ कि वह सचमुच ही अपनी दयालुता तथा असाधारण समझ-बूझ पर विश्वास करने लगा। विशेषतः इसलिये कि अपनी आत्मा की गहराई में तो उसे हमेशा ऐसा प्रतीत हुआ ही था कि वह वास्तव में बहुत दयालु और बहुत बुद्धिमान है। वे लोग भी, जो पहले उसके साथ बहुत बुरी तरह से पेश आते थे और स्पष्टतः बैर भाव रखते थे, वे

भी अब उसके साथ बहुत अच्छा बर्ताव करते थे, उसे चाहते थे। लम्बी कमर और गुड़िया के बालों की तरह चिपके बालोंवाली सबसे बड़ी और बेहद ग़ुस्सैल बड़ी प्रिंसेस भी काउंट बेज़ूख़ोव के कफ़न-दफ़न के बाद प्येर के कमरे में आयी। नज़र झुकाये और लगातार लज्जारुण होते हुए उसने प्येर से कहा कि उसे उनके बीच हो जानेवाली ग़लत-फ़हमी का बड़ा अफ़सोस है और काउंट की मृत्यु के इतने बड़े धक्के के बाद अब वह उससे इस चीज़ के सिवा और कोई अनुरोध नहीं कर सकती कि उसे इसी घर में, जिसे वह इतना अधिक प्यार करती थी और जहां उसने इतनी ज़्यादा कुर्बानियां की थीं, कुछ हफ़्तों तक और रहने की इजाज़त दे दी जाये। वह अपनी भावनाओं को वश में न रख सकी और यह कहते-कहते रो पड़ी। इस बात से द्रवित होकर कि मूर्त्ति जैसी लगनेवाली यह प्रिंसेस इतनी अधिक बदल सकती है, प्येर ने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया और ख़ुद भी ऐसा करने का कारण न जानते हुए उससे माफ़ी मांगी। प्रिंसेस इसी दिन से उसके लिये धारीदार गुलूबन्द बुनने लगी और प्येर के प्रति उसका रवैया बिल्कुल बदल गया।

"मेरे प्यारे, उसके लिये इतना तो कर ही दो, आख़िर उसने दिवंगत की सेवा-शुश्रूषा का बहुत कष्ट सहन किया है," प्रिंस वसीली ने प्रिंसेस के हक़ में कोई काग़ज़ हस्ताक्षर के लिये उसे देते हुए कहा।

प्रिंस वसीली ने यह तय किया था कि रोटी का यह टुकड़ा यानी तीस हज़ार रूबल की यह हुंडी बेचारी प्रिंसेस को इसलिये दे ही दी जानी चाहिये थी कि पच्चीदार थैले के मामले में उसकी भूमिका के बारे में सोचने का ख़्याल ही प्रिंसेस के दिमाग़ में न आये। प्येर ने हुंडी पर हस्ताक्षर कर दिये और उस दिन से प्रिंसेस उसके साथ और भी ज़्यादा मधुर व्यवहार करने लगी। उसकी छोटी बहनें भी उसके प्रति स्नेहमयी हो गयीं, ख़ास तौर पर सबसे छोटी, जो बहुत सुन्दर थी, जिसके होंठ पर मस्सा था तथा जो प्येर के सामने आने पर अपनी मुस्कानों तथा झेंप से उसे अक्सर परेशान कर देती थी।

प्येर को सभी लोगों का उसे प्यार करना बिल्कुल स्वाभाविक लगता था। अगर कोई उसे प्यार न करता तो उसे यह बात बहुत अस्वाभाविक लगती। और वह अपने इर्द-गिर्द के लोगों की निश्छलता पर विश्वास किये बिना नहीं रह सकता था। इसके अलावा उसके पास

अपने से यह पूछने का समय भी नहीं था कि ये लोग उसके प्रति निष्कपट हैं या नहीं। फ़ुरसत तो कभी होती ही नहीं थी, वह लगातार अपने को हल्के और सुखद नशे की सी हालत में महसूस करता था। वह अपने को निरन्तर किसी सामान्य गति-विधि का केन्द्र-बिन्दु और यह अनुभव करता था कि उससे निरन्तर कुछ प्रत्याशा की जाती है, कि उसके ऐसा न करने पर बहुत-से लोगों को दुख होगा, उनकी आशाओं पर पानी फिर जायेगा और उसके ऐसा कर देने पर सब कुछ बहुत अच्छा रहेगा। इसलिये उससे जो कुछ अपेक्षित होता, वह कर देता, फिर भी कुछ न कुछ अच्छा तो आगे करने के लिये ही रह जाता।

शुरू के इस वक़्त में प्रिंस वसीली ने प्येर के काम-काजों और ख़ुद प्येर को भी अपने नियन्त्रण में ले लिया। काउंट बेज़ूख़ोव की मृत्यु हो जाने पर उसने प्येर को अपने हाथों से नहीं निकलने दिया। प्रिंस वसीली कामों के बोझ से दबे हुए, थके-हारे और बेहद परेशान व्यक्ति-सा प्रतीत होता, किन्तु इसके बावजूद वह सहानुभूति के कारण इस असहाय नौजवान को, जो अब इतनी बड़ी सम्पत्ति का मालिक और आख़िर तो उसके मित्र का बेटा था, क़िस्मत की मनमानी और बदमाश लोगों के बुरे इरादों का शिकार होने के लिये नहीं छोड़ सकता था। काउंट बेज़ूख़ोव की मौत के बाद मास्को में अपने रुकने के कुछ दिनों के दौरान वह कभी तो प्येर को अपने पास बुला लेता और कभी ख़ुद उसके पास चला जाता और थके-थके तथा विश्वास के ऐसे अन्दाज़ में हिदायतें देता मानो हर बार यह कह रहा हो:

"तुम तो जानते ही हो कि मुझपर अपने काम-काज का कितना अधिक बोझ है, किन्तु तुम्हें इस तरह बेसहारा छोड़कर चले जाना बड़ी संगदिली होती। और तुम यह भी जानते हो कि जो कुछ मैं तुमसे कह रहा हूं, केवल वही करना सम्भव है।"

"तो मेरे दोस्त, आख़िर तो कल हम यहां से रवाना हो रहे हैं," प्रिंस वसीली ने आंखें मूंदकर तथा उंगलियों से उसकी कोहनी छूते हुए एक दिन ऐसे अन्दाज़ में कहा मानो वह जो कुछ कह रहा था, उसके बारे में उनके बीच कभी का फ़ैसला हो चुका था और कोई दूसरा फ़ैसला हो ही नहीं सकता था।

"कल हम यहां से रवाना हो रहे हैं और मैं तुम्हें अपनी बग्घी में जगह दे रहा हूं। बहुत ख़ुशी है मुझे। यहां हमारे सभी महत्त्वपूर्ण काम-

काज ख़त्म हो चुके हैं। मुझे तो बहुत पहले ही चले जाना चाहिये था। मेरे पास चांसलर का यह पत्र आया है। मैंने उससे तुम्हारे लिये प्रार्थना की थी। तुम्हें राजनयिक निकाय में शामिल कर लिया गया है और राज-दरबार में भी स्थान दे दिया गया है। अब तुम्हारे लिये राजनयिक बनने का मार्ग-द्वार खुला हुआ है।"

क्लान्ति और विश्वास के जिस अन्दाज़ में ये शब्द कहे गये थे, उसके बावजूद अपने भावी कार्य-मार्ग के बारे में बहुत समय तक सोच-विचार कर चुके प्येर ने आपत्ति करनी चाही। किन्तु प्रिंस वसीली ने अपनी स्नेहपूर्ण भारी-भरकम आवाज़ से, जो उसे टोकने की सम्भावना समाप्त कर देती थी तथा जिसका वह किसी को अपनी बात का क़ायल करने की अत्यधिक आवश्यकता के समय ही उपयोग करता था, प्येर को बीच में ही रोक दिया।

"मेरे प्यारे, मैंने यह अपने लिये, अपनी आत्मा के सन्तोष के लिये किया है और तुम्हें मुझे धन्यवाद देने की ज़रूरत नहीं। इस बात की तो कभी किसी ने शिकायत नहीं की कि उसे बहुत ज़्यादा प्यार किया जाता है। इसके अलावा, तुम पूरी तरह से आज़ाद हो, चाहो तो कल इस काम को छोड़ सकते हो। पीटर्सबर्ग में तुम ख़ुद अपनी आंखों से ही सब कुछ देख लोगे। और तुम्हें तो इन भयानक स्मृतियों के वातावरण से कभी का दूर चले जाना चाहिये था।" प्रिंस वसीली ने गहरी सांस ली। "तो ऐसी बात है, मेरे प्यारे। मेरा अर्दली तुम्हारी बग्घी में जा सकता है। अरे हां, मैं तो भूल ही गया था," प्रिंस वसीली ने इतना और कह दिया, "तुम्हारे दिवंगत पिता के साथ हमारा कुछ हिसाब-किताब था। तो र्याज़ान की जागीर से मुझे कुछ पैसे मिल गये हैं जिन्हें मैं अपने पास रख लेता हूं। तुम्हें तो उनकी ज़रूरत है नहीं। बाद में हम तुम्हारे साथ हिसाब निबटा लेंगे।"

प्रिंस वसीली ने र्याज़ान की जागीर से मिलनेवाले जिन कुछ पैसों का उल्लेख किया था, वे वास्तव में लगान के कई हज़ार रूबल थे जिन्हें प्रिंस वसीली ने अपने पास रख लिया।

मास्को की भांति पीटर्सबर्ग में भी प्येर ने अपने को स्नेह देने और प्यार करनेवाले लोगों के वातावरण में पाया। प्रिंस वसीली ने उसे जो नौकरी या यह कहना अधिक सही होगा पद (क्योंकि वह कुछ भी तो नहीं करता था) दिलवाया था, वह उससे इन्कार नहीं

कर पाया और जान-पहचान के लोगों, निमन्त्रणों तथा सभा-सोसाइटी में आने-जाने के कारण इतनी ज़्यादा दौड़-धूप रहती थी कि वह मास्को से भी अधिक झुंझलाहट, हड़बड़ी और निकट भविष्य में किसी सुख-सौभाग्य की भावना को निरन्तर अनुभव करता रहता, मगर जो अभी तक वास्तविकता नहीं बनी थी।

प्येर के पहले के अविवाहित दोस्तों में से अधिकांश अब पीटर्सबर्ग में नहीं थे। गार्ड-सेना के उसके मित्र मोर्चे पर चले गये थे। दोलोख़ोव को अफ़सर से मामूली फ़ौजी बना दिया गया था। अनातोल भी सेना और किसी प्रान्तीय नगर में था, प्रिंस अन्द्रेई विदेश में था और इसलिये वह अब न तो वैसे रातें बिता पाता था, जैसे पहले बिताना पसन्द करता था और न ही अपने से बड़े, आदरणीय मित्र के साथ मैत्रीपूर्ण बातचीत करके कभी-कभार अपने मन का बोझ हल्का कर पाता था। उसका सारा वक़्त दावतों, बॉल-नृत्यों और मुख्यतः तो प्रिंस वसीली के यहां, उसकी मोटी बीवी और बहुत ही सुन्दर बेटी एलेन की संगत में बीतता।

दूसरे लोगों की भांति, आन्ना पाव्लोव्ना शेरेर भी प्येर को उसके प्रति सोसाइटी के दृष्टिकोण में हुए परिवर्तन की चेतना करवाती रहती।

आन्ना पाव्लोव्ना की उपस्थिति में प्येर पहले लगातार यह अनुभव करता रहता था कि वह अशिष्ट और फूहड़ ढंग से बातें करता है, वह नहीं कहता जो कहना चाहिये, कि वे बातें जो उसे उस वक़्त तक समझदारी की लगती हैं, जब तक वह उन्हें अपने दिमाग़ में सोचता है, उसकी ज़बान पर आते ही मूर्खतापूर्ण हो जाती हैं और इसके विपरीत, इप्पोलीत की तुच्छ से तुच्छ बातें भी समझदारी की तथा बहुत प्यारी होती हैं। किन्तु अब तो वह जो कुछ भी कहता, सभी बहुत सुन्दर होता। आन्ना पाव्लोव्ना यदि ऐसा कहती नहीं थी, तो भी वह यह देखे बिना न रह पाता कि ऐसा कहने को उसका मन हुलस रहा है और केवल उसकी नम्रता को ध्यान में रखते हुए ही उसने ऐसा नहीं किया है।

१८०५ के जाड़े के आरम्भ में प्येर को आन्ना पाव्लोव्ना का सदा जैसा गुलाबी रंग का निमन्त्रण-पत्र मिला जिसमें इतना और जोड़ दिया गया था: "अनुपम सुन्दरी एलेन भी, जिसे देखते हुए कभी आंखें नहीं भरतीं, मेरे यहां आयेगी।"

उक्त शब्दों को पढ़ते हुए प्येर ने पहली बार यह अनुभव किया

कि उसके तथा एलेन के बीच कोई सम्बन्ध-सूत्र बन गया है जिसे दूसरे लोग भी अनुभव करते हैं। इस विचार से वह भयभीत भी हुआ मानो उसे ऐसे बन्धन में बांधा जा रहा है जिसे वह निभा नहीं सकेगा और साथ ही एक मनोरंजक अनुमान के रूप में उसे इससे ख़ुशी भी हुई।

आन्ना पाव्लोव्ना शेरेर के यहां होनेवाली पार्टी पहली पार्टी जैसी ही थी। फ़र्क़ सिर्फ़ इतना था कि इस बार नवीन आकर्षण के रूप में उसने मोर्तेमार की जगह एक राजनयिक को निमन्त्रित किया था जो कुछ ही समय पहले बर्लिन से आया था और सम्राट अलेक्सान्द्र की पोट्सडम-यात्रा की नवीनतम तफ़सीलें और यह जानता था कि कैसे वहां दो महान मित्रों ने मानवजाति के शत्रु के विरुद्ध न्यायपूर्ण ध्येय की रक्षा के लिये अटूट एकजुटता की प्रतिज्ञा की थी। आन्ना पाव्लोव्ना ने ज़रा उदासी ज़ाहिर करते हुए प्येर का स्वागत किया। यह उदासी सम्भवत: उस शोक से सम्बन्धित थी जो काउंट बेज़ूख़ोव के देहान्त के रूप में इस नौजवान को हाल ही में सहन करना पड़ा था (सभी लोग प्येर को लगातार इस बात का विश्वास दिलाना ज़रूरी समझते थे कि पिता की मृत्यु से, जिसे वह लगभग नहीं जानता था, उसे बहुत दुख हुआ है)। आन्ना पाव्लोव्ना की यह उदासी बिल्कुल वैसी ही थी, जैसी उदात्त उदासी वह अत्यधिक आदरणीया सम्राज्ञी मरीया फ़्योदोरोव्ना का उल्लेख आ जाने पर प्रकट करती थी। प्येर को उसकी यह भावाभिव्यक्ति अच्छी लगी। आन्ना पाव्लोव्ना ने अपनी सामान्य दक्षता से अपने दीवानख़ाने में मेहमानों के दल बनाये। बड़ा दल, जिसमें प्रिंस वसीली और जनरल शामिल थे, राजनयिक से बातचीत का लाभ उठा रहा था। दूसरा दल चाय की छोटी-सी मेज़ के पास बनाया गया था। प्येर ने पहले अतिथि-दल में सम्मिलित होना चाहा, किन्तु आन्ना पाव्लोव्ना ने, जो युद्ध-क्षेत्र में सेनापति के उस मानसिक चिड़चिड़ेपन की स्थिति में थी, जब उसके दिमाग़ में बहुत ही शानदार हज़ारों नये ख़्याल आते हैं और जिन्हें वह मुश्किल से अमली शक्ल दे पाता है, प्येर को अपने सामने देखते ही उसके कोट की आस्तीन पर उंगली रखते हुए कहा :

"ज़रा रुकिये, आज की पार्टी में आपके लिये मेरे मन में कुछ ख़ास मंसूबे हैं।" उसने एलेन की तरफ़ देखा और मुस्करायी।

"मेरी प्यारी एलेन, मेरी बेचारी मौसी पर, जो आपकी दीवानी

है, दया कीजिये। उसके पास दस मिनट बिता दीजिये। इसलिये कि आपको बहुत ज़्यादा ऊब अनुभव न हो, यह रहा हमारा प्यारा काउंट जो आपका साथ देने से इन्कार नहीं करेगा।"

सुन्दरी एलेन मौसी की तरफ़ चल दी, किन्तु आन्ना पाव्लोव्ना ने यह ज़ाहिर करते हुए प्येर को कुछ देर के लिये अपने पास और रोक लिया मानो उसे कुछ अन्तिम तथा ज़रूरी हिदायतें देनी हों।

"क्यों है न अद्भुत?" उसने बांकी चाल से चली जा रही अनुपम सुन्दरी एलेन की ओर संकेत करते हुए प्येर से कहा। "और इसका आचरण भी कितना अच्छा है! ऐसी जवान लड़की और ऐसी व्यवहार-कुशलता, आचरण की ऐसी दक्षता! यह सब बनावटी नहीं, दिली है। वह आदमी बड़ा ही ख़ुशक़िस्मत होगा जिसकी वह बीवी बनेगी! ऐसी बीवी के साथ सोसाइटी से कोई नाता न रखनेवाले आदमी की भी किसी कोशिश के बिना और अनचाहे ही सोसाइटी में बहुत बढ़िया जगह बन जायेगी। ठीक है न? इस बारे में मैं तो केवल आपकी राय जानना चाहती थी।" इतना कहकर आन्ना पाव्लोव्ना ने उसे जाने दिया।

एलेन के आचार-व्यवहार की कला के बारे में आन्ना पाव्लोव्ना के प्रश्न के उत्तर में प्येर ने सच्चे दिल से सहमति प्रकट की। अगर वह एलेन के बारे में कभी सोचता था तो उसकी सुन्दरता और उसकी इस असाधारण क्षमता के बारे में ही कि कैसे वह सोसाइटी में इतनी शान्त, मौन और भव्य बनी रहती है।

मौसी ने इन दोनों जवान व्यक्तियों का स्वागत किया, किन्तु ऐसा प्रतीत हुआ कि उसने एलेन के प्रति अपनी मुग्धता को छिपाने और आन्ना पाव्लोव्ना के सम्मुख अपने भय को कहीं अधिक अभिव्यक्त करने का प्रयास किया। उसने अपनी भानजी की ओर ऐसे देखा मानो पूछ रही हो कि मैं इन दोनों व्यक्तियों का क्या करूं। इनके पास से हटते हुए आन्ना पाव्लोव्ना ने अपनी उंगली से एक बार फिर प्येर के कोट की आस्तीन को छुआ और बोली:

"आशा करती हूं कि अब आप ऐसा कभी नहीं कहेंगे कि मेरे यहां ऊब अनुभव होती है।"

एलेन ऐसे मुस्करायी मानो कह रही हो कि वह ऐसी सम्भावना की कल्पना ही नहीं कर सकती कि कोई उसे देखे और मुग्ध हुए बिना

रह जाये। मौसी खांसी, उसने लार निगली और फ़्रांसीसी में यह कहा कि एलेन के आने से उसे बहुत ख़ुशी हुई है। इसके बाद उसने इन्हीं शब्दों और चेहरे के ऐसे ही भाव से प्येर का अभिवादन किया। ऊब पैदा करती और लड़खड़ाती बातचीत के मध्य में एलेन ने प्येर की ओर देखा और वैसे ही खिली-खिली, सुन्दर मुस्कान से मुस्करायी जैसे वह सभी की ओर देखकर मुस्कराती थी। प्येर इस मुस्कान का ऐसा आदी हो चुका था, उसके लिये वह इतनी कम भावाभिव्यक्ति रखती थी कि उसने उसकी तरफ़ कोई ध्यान नहीं दिया। इसी समय मौसी नासदानियों के उस संग्रह की चर्चा कर रही थी जो प्येर के दिवंगत पिता के पास था और साथ ही उसने अपनी नासदानी दिखायी। प्रिंसेस एलेन ने नासदानी पर बनी हुई मौसी के पति की तस्वीर देखने के लिये उससे नासदानी ले ली।

"सम्भवतः चित्रकार वीनेस ने ही इसे बनाया है," प्येर ने लघु चित्रों के प्रसिद्ध चित्रकार का उल्लेख करते, नासदानी को हाथ में लेने के लिये मेज़ की ओर झुकते तथा दूसरी मेज पर हो रही बातचीत की ओर ध्यान देते हुए कहा।

वह मेज़ के गिर्द चक्कर काटकर जाने के लिये थोड़ा उठा, किन्तु मौसी ने एलेन की पीठ के पीछे से नासदानी उसकी तरफ़ बढ़ा दी। मौसी को हाथ बढ़ाने के लिये जगह देने की ख़ातिर एलेन आगे को झुक गयी और उसने मुस्कराते हुए प्येर की तरफ़ देखा। सभी पार्टियों की तरह वह आज भी उस समय के फ़ैशन के मुताबिक़ पीठ और अग्रभाग को काफ़ी उघाड़नेवाला फ़्रॉक पहने थी। उसका वक्ष, जो प्येर को हमेशा मरमरी प्रतीत होता था, उसकी नज़र के इतना अधिक निकट था कि वह अपनी कमज़ोर नज़र के बावजूद उसके कन्धों और गर्दन के सजीव सौन्दर्य को आंके बिना न रह सका और ये उसके होंठों के इस हद तक नज़दीक थे कि ज़रा-सा झुकने पर ही उन्हें छू सकता था। वह उसके शरीर की गर्माहट, इत्र की ख़ुश्बू और हिलने-डुलने पर उसकी चोली की सरसराहट को अनुभव कर रहा था। वह उसके फ़्रॉक का अभिन्न अंग बने हुए मरमरी सौन्दर्य को नहीं, बल्कि उसके सारे शरीर के सौन्दर्य को देख और अनुभव कर रहा था जो केवल पोशाक से ढका हुआ था। एक बार इसे देख लेने पर वह उसे उसी तरह से किसी अन्य रूप में नहीं देख सकता था। ठीक वैसे ही, जैसे

हम स्पष्ट हो गये किसी मोहभ्रम को पहले की तरह स्वीकार नहीं कर सकते।

वह मुड़ी, अपनी काली, चमकती आंखों को उसने उसके चेहरे पर जमा दिया और मुस्करायी।

"तो आपने अब तक इस बात की ओर ध्यान नहीं दिया था कि मैं इतनी सुन्दर हूं?" एलेन मानो कह रही थी। "आपने इस चीज़ की तरफ़ भी ध्यान नहीं दिया था कि मैं नारी हूं? हां, मैं नारी हूं जो किसी की भी, आपकी भी हो सकती है," उसकी नज़र कह रही थी। इसी क्षण प्येर ने यह महसूस किया कि एलेन न केवल उसकी पत्नी बन सकती है, बल्कि यह कि उसे उसकी पत्नी बनना ही चाहिये और इसके अतिरिक्त कुछ हो ही नहीं सकता।

इस क्षण वह यह बात ऐसे ही निश्चित रूप से जानता था जैसे कि विवाह की वेदी पर उसके साथ खड़े हुए जान सकता था। यह कैसे होगा? कब होगा? उसे यह मालूम नहीं था। वह यह भी नहीं जानता था कि ऐसा होना अच्छा होगा या नहीं (उसे यह भी अनुभव होता कि न जाने क्यों, यह अच्छा नहीं होगा), मगर जानता था कि ऐसा होकर रहेगा।

प्येर ने नज़रें झुका लीं, फिर से ऊपर उठायीं और एक बार फिर से उसे वैसे ही, अपने से दूर की परायी सुन्दरी के रूप में देखना चाहा जैसे वह हर दिन उसे देखने का आदी हो चुका था। मगर अब वह ऐसा नहीं कर सका। वह उसी तरह से ऐसा नहीं कर सका जैसे कोई व्यक्ति कुहासे में सरकंडे को पेड़ के रूप में देखे, मगर सरकंडे को देख लेने के बाद उसे फिर पेड़ के रूप में नहीं देख सकता। बहुत ही निकट थी वह उसके। उसने उसके ऊपर अपना अधिकार भी जमा लिया था। और इन दोनों के बीच प्येर की अपनी इच्छा के अतिरिक्त कोई बाधा भी नहीं रही थी।

"अच्छी बात है, तो मैं आपको इस एकान्त कोने में ही छोड़ देती हूं। देख रही हूं कि आप यहां मज़े में हैं," आन्ना पाव्लोव्ना की आवाज़ सुनायी दी।

और प्येर ने घबराकर यह सोचते तथा लज्जारुण होते हुए कि उससे कोई अटपटी हरकत तो नहीं हो गयी, अपने इर्द-गिर्द नज़र दौड़ायी। उसे लगा कि ख़ुद उसकी भांति बाक़ी सब भी यह जानते थे

कि उसके साथ क्या हो गया है।

कुछ देर बाद जब वह बड़े अतिथि-दल के पास आया तो आन्ना पाव्लोव्ना ने उससे कहा :

"सुनने में आया है कि आप पीटर्सबर्ग के अपने मकान को ठीक-ठाक करवा तथा सजा रहे हैं।"

(यह सच था। वास्तुकार ने कहा था कि उसे ऐसा करना चाहिये और प्येर ख़ुद यह न जानते हुए कि किसलिये ऐसा कर रहा है, पीटर्सबर्ग के अपने बहुत बड़े मकान को ठीक करवा रहा था।)

"यह नेक ख़्याल है, मगर आप प्रिंस वसीली के घर को नहीं छोड़िये। ऐसे दोस्त का होना बहुत अच्छी बात है।" उसने प्रिंस वसीली की ओर देखकर मुस्कराते हुए कहा। "मैं भी इस बारे में कुछ जानती-समझती हूं। क्यों, ठीक है न? आप तो अभी इतने जवान हैं। आपको कोई सलाह-मशविरा देनेवाला होना चाहिये। आप बुरा नहीं मानियेगा कि मैं बुढ़िया के नाते अपने इन अधिकारों का उपयोग कर रही हूं," वह चुप हो गयी जैसे कि औरतें अपनी उम्र का ज़िक्र करने के बाद हमेशा चुप हो जाती हैं। "हां, अगर आप शादी कर लें तो दूसरी बात है।" और उसने इन दोनों को एक ही दृष्टि-सूत्र में बांध लिया। प्येर एलेन की तरफ़ नहीं देख रहा था और एलेन भी उसकी ओर नहीं। किन्तु वह अभी भी उसके बहुत ही निकट थी। प्येर कुछ बुदबुदाया और उसके मुंह पर लाली दौड़ गयी।

घर लौटने पर प्येर देर तक नहीं सो सका, यह सोचता रहा कि उसके साथ क्या क़िस्सा हो गया है। हां, आख़िर हुआ क्या है? कुछ भी तो नहीं। वह केवल इतना ही समझा था कि वह औरत, जिसे वह कभी बच्ची के रूप में जानता था और जिसके बारे में जब उससे यह कहा जाता था कि एलेन बहुत सुन्दर है, वह लापरवाही से यह कह देता था, "हां, अच्छी है," वही औरत अब उसकी हो सकती है।

"मगर वह बुद्धू है, मैं ख़ुद यह कहता रहा हूं कि उसके पास दिमाग़ नाम की कोई चीज़ नहीं," वह सोच रहा था। "यह प्यार नहीं। इसके विपरीत वह मेरे मन में जो भावना पैदा करती है, उसमें कुछ घिनौनापन है, कुछ अनुचित-सा है। मुझे बताया गया था कि इसका भाई अनातोल इसे प्यार करता था और यह उसे, कि इस कारण ख़ासा हंगामा हो गया था और इसीलिये अनातोल को यहां से भेज दिया गया

था। इप्पोलीत – इसका भाई है... प्रिंस वसीली – इसका पिता है... यह अच्छा नहीं," वह सोच रहा था। इसी वक़्त, जब वह ऐसे सोच रहा था (यह चिन्तन अभी पूरा नहीं हुआ था) उसने अपने को मुस्कराते हुए पाया और यह महसूस किया कि विचारों की पहली शृंखला से एक अन्य शृंखला भी उभर आयी है, कि वह एकसाथ ही उसकी तुच्छता के बारे में सोच तथा यह कल्पना भी कर रहा था कि कैसे वह उसकी पत्नी बनेगी, कैसे उसे प्यार करने लगेगी, कैसे वह बिल्कुल भिन्न हो सकती है और कैसे वह सब कुछ, जो उसने उसके बारे में सोचा और सुना है, ग़लत हो सकता है। फिर से उसने उसे किसी प्रिंस वसीली की बेटी के रूप में नहीं, बल्कि उसके सारे शरीर को देखा जो केवल भूरे फ़्रॉक से ढका हुआ था। "लेकिन नहीं, यह विचार मेरे दिमाग़ में पहले कभी क्यों नहीं आया?" और फिर से उसने अपने आपसे यह कहा कि ऐसा सम्भव नहीं, कि ऐसे विवाह में कुछ घिनौना, कुछ अस्वाभाविक और, जैसे कि उसे प्रतीत हुआ, कुछ कलंकित करनेवाला होगा। उसे उसके द्वारा पहले कहे गये शब्द, उसकी नज़रें तथा उन लोगों के शब्द और नज़रें याद हो आयीं जिन्होंने उन्हें साथ-साथ देखा था। उसे आन्ना पाव्लोव्ना के उस समय के शब्द और नज़रें याद हो आयीं, जब उसने उससे घर की चर्चा की थी, प्रिंस वसीली तथा दूसरे लोगों की ओर से इस प्रकार के हज़ारों इशारों का ध्यान हो आया और वह यह सोचकर बुरी तरह से परेशान हो उठा कि क्या उसने किसी ऐसे कार्य को पूरा करने का दायित्व तो अपने ऊपर नहीं ले लिया है जो सम्भवतः अच्छा नहीं है और जिसे उसे नहीं करना चाहिये। किन्तु उसी समय, जब वह अपने मन में ऐसे निर्णय को अभिव्यक्ति दे रहा था, उसके मन के दूसरे कोने से स्त्रैणता के पूरे सौन्दर्य के साथ एलेन का बिम्ब उसके सामने उभर रहा था।

२

सन् १८०५ के नवम्बर महीने में प्रिंस वसीली को चार गुबेर्नियों के निरीक्षण के लिये जाना पड़ा। उसने इस ख़्याल से अपने लिये ऐसे

दौरे की व्यवस्था की थी कि अपनी उपेक्षित जागीरों की भी सुध ले लेगा और अपने बेटे अनातोल को उसकी रेजिमेंट से अपने साथ लेकर प्रिंस निकोलाई अन्द्रेयेविच बोल्कोन्स्की के यहां भी हो आयेगा ताकि इस धनी बूढ़े की बेटी से उसकी शादी कर सके। लेकिन यहां से रवाना होने और नये कामों की तरफ़ ध्यान देने के पहले उसे प्येर के साथ मामला तय करना था जो, यह सच था, कि पिछले कुछ अरसे से पूरा-पूरा दिन घर पर ही यानी प्रिंस वसीली के यहां ही, जहां वह रहता था, बिताता था और एलेन की उपस्थिति में हास्यास्पद, घबराया-घबराया और बुद्धू-सा लगता था (जैसा कि किसी प्रेमी को होना चाहिये), किन्तु जिसने अभी तक एलेन से अपने साथ शादी करने का प्रस्ताव नहीं किया था।

"यह सब तो बहुत अच्छा है, मगर हर चीज़ की कोई हद होती है," प्रिंस वसीली ने एक सुबह को गहरी सांस लेते और यह अनुभव करते हुए अपने से कहा कि प्येर, जिसपर उसके इतने एहसान हैं (ख़ैर, क्या लेना है इसके बारे में सोचकर) इस मामले में बिल्कुल ढंग का व्यवहार नहीं कर रहा है। "जवानी... चंचलता... ख़ैर, भगवान भला करें उसका," प्रिंस वसीली ने ख़ुशी से अपनी उदारता को अनुभव करते हुए सोचा, "लेकिन इस क़िस्से को ख़त्म करना चाहिये। परसों मेरी बिटिया का जन्मदिन है, मैं कुछ लोगों को अपने यहां आमन्त्रित कर लूंगा और अगर वह तब भी यह नहीं समझ पायेगा कि उसे क्या करना चाहिये तो फिर इस मामले से मैं ख़ुद निपटूंगा। मैं—बाप हूं!"

आन्ना पाव्लोव्ना के यहां हुई पार्टी और उसके बाद की उनींदी तथा बेचैनी भरी रात के बाद, जब उसने यह तय किया था कि एलेन के साथ शादी करना उसका बड़ा दुर्भाग्य होगा और उसे उससे बच निकलना तथा यहां से चले जाना चाहिये, इस निर्णय के डेढ़ महीने बाद तक प्येर प्रिंस वसीली के घर से नहीं गया। वह कांपते दिल से यह महसूस करता कि लोगों की नज़रों में हर दिन अपने को उसके साथ अधिकाधिक जोड़ता जाता है, कि उसके प्रति किसी प्रकार भी अपना पहलेवाला दृष्टिकोण नहीं लौटा सकता, कि उससे नाता नहीं तोड़ सकता, कि यह बहुत भयानक बात होगी, मगर उसे उसके साथ अपने भाग्य की डोर बांधनी ही होगी। सम्भव है कि वह इस

स्थिति से बच भी निकलता, यदि प्रिंस वसीली के यहां हर शाम को ही कोई पार्टी न होती (उसके यहां बड़ी पार्टियां अक्सर नहीं होती थीं) और अगर प्येर सभी की खुशी तथा आशाओं पर पानी नहीं फेरना चाहता था तो उसे भी उन पार्टियों में ज़रूर ही हिस्सा लेना पड़ता। उन दुर्लभ क्षणों में, जब प्रिंस वसीली घर पर होता, तो प्येर के पास से गुज़रते हुए वह उसका हाथ अपने हाथ में लेकर उसे नीचे को झटकता, खोया-खोया-सा अपने सफ़ाचट और झुर्रियोंवाले गाल को चुम्बन पाने के लिये उसकी तरफ़ बढ़ा देता और कहता "कल मिलेंगे", या "दोपहर के खाने के वक़्त ज़रूर आ जाना वरना तुमसे मुलाक़ात नहीं होगी", या "मैं तो तुम्हारे लिये ही रुक रहा हूं", आदि, आदि। किन्तु इस चीज़ के बावजूद कि प्रिंस वसीली जब प्येर के लिये ही घर पर रुकता (जैसा कि वह कहता था), वह उसके साथ दो शब्द भी न बोलता, मगर प्येर उसे निराश करने की हिम्मत न कर पाता। वह हर दिन अपने से बारम्बार यही कहता: "आख़िर तो मुझे एलेन को समझना और यह निर्णय करना चाहिये कि वास्तव में वह है क्या? उसके बारे में क्या मुझसे पहले भूल हुई थी या फिर मैं अब भूल कर रहा हूं? नहीं, वह बुद्धू नहीं, बहुत ही अच्छी लड़की है!" कभी-कभी वह अपने आपसे कहता। "वह कभी कोई ग़लती नहीं करती, कभी कोई बेवक़ूफ़ी की बात नहीं कहती। वह कम बोलती है, किन्तु जो कुछ कहती है, हमेशा सीधा-सादा और स्पष्ट होता है। इसलिये वह बुद्धू नहीं है। मैंने उसे पहले और अब भी कभी परेशान होते नहीं देखा। इसलिये वह बुरी औरत नहीं है!" अक्सर ऐसा होता कि वह एलेन के साथ किसी विषय पर विचार-विनिमय करता या ऊंचे बोलते हुए सोचता और हर बार ही एलेन या तो संक्षिप्त और उचित उत्तर देती जो यह ज़ाहिर कर देता कि उसकी इस बात में कोई दिलचस्पी नहीं या फिर मूक मुस्कान और दृष्टि से यही जता देती और इससे प्येर के लिये उसकी श्रेष्ठता और अधिक सुस्पष्ट हो जाती। अपनी इस मुस्कान की तुलना में एलेन का सभी तरह के विचार-विनिमय को बकवास मानना ठीक ही था।

एलेन अब प्येर को सदा ऐसी खुशी और विश्वास भरी मुस्कान से देखती जो केवल उसी के लिये होती और जिसमें उसके चेहरे की सदा शोभा बनी रहनेवाली सामान्य मुस्कान से कुछ अधिक अर्थ छिपा रहता।

प्येर जानता था कि सभी इस प्रतीक्षा में हैं कि आख़िर तो वह एक आवश्यक शब्द कह दे, एक सुपरिचित सीमा-रेखा को लांघे और वह जानता था कि देर-सबेर इस सीमा-रेखा को अवश्य लांघेगा। किन्तु इस भयानक क़दम को उठाने के विचारमात्र से उसके मन पर एक अनबूझ भय हावी हो जाता। इस डेढ़ महीने के दौरान, जब वह यह महसूस कर रहा था कि उस भयानक खड्ड की तरफ़ अधिकाधिक खिंचता चला जा रहा है, उसने हजारों बार अपने आपसे यह कहा: "आख़िर यह क्या है? मुझे दृढ़ता से काम लेना चाहिये! क्या मुझमें वह दृढ़ता नहीं है?"

वह कोई निर्णय करना चाहता था, किन्तु बहुत दुखी मन से उसने यह अनुभव किया कि इस मामले में उसमें वह दृढ़ता नहीं है, जिसके अपने भीतर होने के बारे में वह सचेत था और जो वास्तव में उसके भीतर थी भी। प्येर उन लोगों में से था जो केवल अपने को पूरी तरह निर्दोष अनुभव करने पर ही शक्तिशाली होते हैं। उस दिन से, जब आन्ना पाव्लोव्ना के यहां नासदानी पर झुककर एलेन को देखते हुए वह वासना से अभिभूत हो गया था, इसी वासना की अचेतन अपराध-भावना उसकी दृढ़ता को पंगु बना देती थी।

एलेन के जन्मदिन पर प्रिंस वसीली के यहां थोड़े से और बहुत ही घनिष्ठ लोग, प्रिंसेस के शब्दों में रिश्तेदार और मित्र, रात के भोजन पर आये हुए थे। इन सभी रिश्तेदारों और मित्रों को पहले से ही यह इशारा कर दिया गया था कि इस शाम को एलेन के भाग्य का निर्णय हो जायेगा। मेहमान भोजन कर रहे थे। प्रिंसेस कुरागिना, मोटी, किन्तु जो कभी सुन्दर और बड़ी प्रभावपूर्ण महिला रही होगी, मुख्य स्थान पर बैठी थी। उसके दोनों ओर सबसे अधिक सम्मानित अतिथि – अपनी पत्नी के साथ बूढ़ा जनरल और आन्ना पाव्लोव्ना शेरेर बैठे थे। मेज़ के दूसरे सिरे पर कम बुज़ुर्ग और कम प्रतिष्ठित अतिथियों को स्थान दिया गया था और वहीं घर के लोगों की तरह प्येर तथा एलेन – एक दूसरे के पास बैठे हुए थे। प्रिंस वसीली भोजन नहीं कर रहा था – वह बड़ी उल्लासपूर्ण मनःस्थिति में मेज़ के गिर्द चक्कर लगा रहा था, कभी एक तो कभी दूसरे मेहमान के पास बैठता था और एलेन तथा प्येर को छोड़कर, जिनकी ओर वह जैसे कोई ध्यान ही नहीं दे रहा था, हर किसी से हंसी-मज़ाक़वाले

तथा मधुर शब्द कहता था। प्रिंस वसीली सभी को रंग में ला रहा था। मोमबत्तियां ख़ूब लौ दे रही थीं, बिल्लौर और चांदी के बर्तन, महिलाओं की पोशाकें तथा पुरुषों की सुनहरी तथा रुपहली स्कन्धिकायें चमक-दमक दी थीं। लाल वर्दियां पहने हुए नौकर-चाकर मेज़ के गिर्द आ-जा रहे थे, छुरियों, गिलासों और प्लेटों की आवाज़ें तथा इस मेज़ के सभी ओर सजीव बातचीत की ध्वनियां सुनायी दे रही थीं। यह सुनायी दे रहा था कि कैसे एक कोने में एक बूढ़ा दरबारी एक बूढ़ी बैरनेस को अपने दहकते प्यार का विश्वास दिला रहा था और वह हंस रही थी, दूसरे कोने में किसी मरीया वीक्तोरोव्ना के दुर्भाग्य का क़िस्सा सुनाया जा रहा था। मेज़ के बीचोंबीच प्रिंस वसीली अपने ऊपर श्रोताओं का ध्यान केन्द्रित किये हुए था। होंठों पर मज़ाक़ भरी मुस्कान चस्पां किये हुए वह महिलाओं को बुद्धवार को हुई राजकीय परिषद की अन्तिम सभा के बारे में बता रहा था जिसमें पीटर्सबर्ग के नये फ़ौजी गवर्नर-जनरल सेर्गेई कुज़्मीच व्याज़्मितीनोव द्वारा सम्राट अलेक्सान्द्र पाव्लोविच से प्राप्त हुआ राजपत्र पढ़ा गया था और जिसकी इन दिनों बड़ी चर्चा थी। सम्राट द्वारा सेना से भेजे गये इस पत्र में सम्राट ने सेर्गेई कुज़्मीच को सम्बोधित करते हुए यह-कहा था कि उसे (सम्राट को) सभी ओर से जनता की वफ़ादारी की घोषणाओं की सूचनायें मिल रही हैं और पीटर्सबर्ग के लोगों की ऐसी घोषणा उसे विशेष रूप से बहुत प्रिय है, कि उसे ऐसे राष्ट्र का सम्राट होने के सम्मान का गर्व है और वह अपने को इसके योग्य सिद्ध करने का प्रयास करेगा। यह राजपत्र इन शब्दों से शुरू होता था: "**सेर्गेई कुज़्मीच! सभी ओर से मेरे पास ये सूचनायें पहुंच रही हैं**, आदि, आदि।"

"तो क्या वह 'सेर्गेई कुज़्मीच' से आगे नहीं बढ़ सका?" एक महिला ने पूछा।

"हां, हां, ज़रा भी आगे नहीं बढ़ सका," प्रिंस वसीली ने हंसते हुए उत्तर दिया। "'सेर्गेई कुज़्मीच... सभी ओर से। सभी ओर से, सेर्गेई कुज़्मीच...' बेचारा व्याज़्मितीनोव किसी तरह भी आगे नहीं पढ़ पाया। कई बार उसने इस पत्र को फिर से पढ़ने की कोशिश की, किन्तु 'सेर्गेई' कहते ही वह सिसकने लगता... 'कुज़्मीच' कहते-कहते उसके आंसू छलक आते और 'सभी ओर से' पढ़ते-पढ़ते ये शब्द सिसकियों में डूब जाते और वह आगे न पढ़ पाता। फिर से रूमाल

हाथ में लेकर आंसू पोंछता, फिर से 'सेर्गेई कुज़्मीच, सभी ओर से,' पढ़ता और आंसू छलछला आते ... आख़िर किसी दूसरे से ही यह पत्र पढ़ने को कहा गया।"

"कुज़्मीच ... सभी ओर से ... और आंसू ..." किसी ने हंसते हुए इन शब्दों को दोहराया।

"यह तो आप उसके साथ अन्याय कर रहे हैं," मेज़ के दूसरे सिरे से उंगली दिखाकर धमकाते हुए आन्ना पाव्लोव्ना ने कहा, "वह इतना भला आदमी है, हमारा वह दयालु व्याज़िमतीनोव ..."

सभी ख़ूब खिलखिलाकर हंस पड़े। मेज़ के उस सिरे पर, जहां सर्वाधिक सम्मानित अतिथि बैठे थे, सभी बहुत प्रसन्न और सजीवता की विभिन्न मनःस्थितियों के प्रभाव में प्रतीत हो रहे थे। केवल प्येर और एलेन ही मेज़ के लगभग दूसरे सिरे पर एक-दूसरे के निकट चुप-चाप बैठे थे। दोनों के चेहरों पर मुस्कान खिली हुई थी जिसका सेर्गेई कुज़्मीच के क़िस्से से कोई सम्बन्ध नहीं था – यह अपनी भावनाओं के सम्मुख लज्जा की मुस्कान थी। दूसरे लोग चाहे कुछ भी कहते, कैसे ही हंसते और हंसी-मज़ाक़ करते, बेशक कितने ही मज़े ले लेकर राइन शराब पीते, लज़ीज़ पकवान या आइसक्रीम खाते, इस जोड़ी की ओर देखने से कतराते, इन दोनों के प्रति उदासीनता और लापरवाही का भाव दिखाते, फिर भी कभी-कभार इनकी तरफ़ उठनेवाली उनकी नज़रों से न जाने क्यों यह महसूस होता कि सेर्गेई कुज़्मीच का क़िस्सा, उनकी हंसी और खाना-पीना – यह सब ढोंग है तथा इन सभी लोगों का ध्यान पूरी तरह से इसी जोड़ी पर – प्येर और एलेन पर ही केन्द्रित है। प्रिंस वसीली सेर्गेई कुज़्मीच की सिसकियों की नक़ल उतार रहा था और साथ ही बेटी को अपनी नज़रों से आंक रहा था। जब वह हंस रहा था तो उसके चेहरे का भाव कह रहा था: "हां, हां, सब ठीक हो रहा है, आज सब कुछ तय हो जायेगा।" आन्ना पाव्लोव्ना उसे उंगली दिखाते हुए "हमारे दयालु व्याज़िमतीनोव" के साथ अन्याय करने के लिये धमका रही थी, किन्तु उसकी आंखों में, जो इस क्षण प्येर की ओर देखकर क्षण भर को चमक उठी थीं, प्रिंस वसीली ने भावी दामाद और बेटी के सौभाग्य की बधाई झलकती देखी। बूढ़ी प्रिंसेस ने अपने पास बैठी महिला का जाम भरते हुए उदासी भरी गहरी सांस ली, झल्लाहट से बेटी की ओर देखा और अपनी गहरी सांस से मानो

यह कहा : "हां, अब हमारे लिये मीठी शराब पीने के सिवा और कुछ नहीं रह गया, मेरी प्यारी! अब तो दिलेरी से चुनौती देते हुए इन जवान लोगों के सुखी होने का वक़्त आ गया है।" – "मैं जो कुछ कह रहा हूं, वह सब बकवास है, मानो इस सबमें मेरी कोई दिलचस्पी हो," इन दोनों प्रेमियों के खिले चेहरों की ओर देखते हुए राजनयिक ने सोचा, "ख़ुशी तो यह है!"

यहां उपस्थित लोगों को सूत्रबद्ध करनेवाली बहुत ही तुच्छ और कृत्रिम रुचियों में दो जवान, स्वस्थ और सुन्दर व्यक्तियों के पारस्परिक आकर्षण की साधारण भावना शामिल हो गयी थी। और इस मानवीय भावना ने शेष सभी कुछ पर हावी होकर उनकी कृत्रिम बातों को बेरंग बना दिया था। मज़ाक़ों में हंसी नहीं थी, ख़बरें-अफ़वाहें ग़ैरदिलचस्प थीं और ज़िन्दादिली – स्पष्ट रूप से बनावटी थी। केवल ये लोग ही नहीं, बल्कि मेज़ पर बैरों का काम करनेवाले नौकर-चाकर भी मानो ऐसा ही अनुभव कर रहे थे और ख़ुशी से चमकते चेहरेवाली सुन्दर एलेन तथा प्येर के सुन्दर, बड़े, प्रसन्न और बेचैन चेहरे को देखते हुए ढंग से अपना काम करना भूल जाते थे। ऐसे प्रतीत होता था कि मोमबत्तियों की रोशनी भी उन दो सुखी चेहरों पर संकेन्द्रित थी।

प्येर यह अनुभव कर रहा था कि वही इस पूरे वातावरण का केन्द्र-बिन्दु है और इस चीज़ से उसे ख़ुशी तथा परेशानी भी हो रही थी। वह किसी चिन्तन में गहरे डूबे हुए व्यक्ति की सी हालत में था। वह स्पष्ट रूप से न तो कुछ देख, न समझ और न सुन ही रहा था। केवल कभी-कभार तथा अप्रत्याशित ही वास्तविकता के कुछ असम्बद्ध विचार और प्रभाव उसके मस्तिष्क में कौंध उठते।

"तो क़िस्सा ख़त्म हो गया!" वह सोच रहा था। "लेकिन यह सब हो कैसे गया? सो भी इतनी जल्दी! अब मैं यह जानता हूं कि केवल एलेन के लिये नहीं, केवल मेरे लिये नहीं, बल्कि सभी के लिये **यह** अनिवार्य रूप से होकर रहेगा। ये सभी **इसके होने की** इतनी अधिक प्रतीक्षा कर रहे हैं, इन्हें इसके होने का इतना अधिक विश्वास है कि मैं इन्हें निराश नहीं कर सकता। लेकिन यह होगा कैसे? मैं यह नहीं जानता, मगर यह होगा, अवश्य ही होगा!" अपनी आंखों के बिल्कुल निकट ही चमक रहे इन कन्धों को देखते हुए प्येर सोच रहा था।

अचानक उसे किसी वजह से शर्म महसूस होने लगती। उसे बड़ा

अटपटा लगता कि वही सभी के ध्यान का केन्द्र-बिन्दु बना हुआ है, कि दूसरों की नज़रों में वह सौभाग्यशाली है, कि अपने भोंडे-से चेहरे के साथ वह ट्राय की हेलेन का स्वामी बननेवाला पारिस है। "किन्तु निश्चय ही हमेशा ऐसा होता है और ऐसा ही होना चाहिये," उसने अपने को तसल्ली दी। "मगर मैंने इसके लिये किया ही क्या है? यह सिलसिला कब शुरू हुआ? मास्को से मैं प्रिंस वसीली के साथ यहां आया। उस वक़्त तक कोई बात नहीं थी। इसके बाद मैं उसके यहां ठहर गया, मगर ऐसा क्यों न करता? इसके पश्चात मैं एलेन के साथ ताश खेलता रहा, एक बार उसका बैग उठाया और उसके साथ बग्घी में बाहर जाता रहा। यह सब कब आरम्भ हुआ, यह सब कुछ हो कब गया?" और अब वह उसके मंगेतर के रूप में उसके पास बैठा है, उसे अपने निकट देख-सुन रहा है, उसकी सांसों, उसकी गति-विधियों और उसकी सुन्दरता की निकटता को अनुभव कर रहा है। अचानक उसे ऐसा लगता कि एलेन नहीं, बल्कि वह ख़ुद ही असाधारण रूप से सुन्दर है, कि इसीलिये सभी उसकी ओर ऐसे देख रहे हैं, और सभी की इस प्रशंसा से उल्लसित होकर वह अपनी छाती तान लेता है, शान से सिर ऊंचा उठाता है और अपने सुख-सौभाग्य से प्रसन्न होता है। सहसा उसे किसी की आवाज़, किसी की परिचित आवाज़ सुनायी देती है और दूसरी बार उससे कुछ कहती है। किन्तु वह अपने ख़्यालों में इतना ज़्यादा डूबा हुआ है कि उससे जो कुछ कहा जा रहा है, वह उसे नहीं समझता।

"मैं तुमसे यह पूछ रहा हूं कि हाल ही में तुम्हें बोल्कोन्स्की का पत्र कब मिला," प्रिंस वसीली ने तीसरी बार अपना प्रश्न दोहराया। "तुम कितने बेध्यान हो, मेरे प्यारे।"

प्रिंस वसीली मुस्कराया और प्येर ने देखा कि सभी उसकी तथा एलेन की तरफ़ देखकर मुस्करा रहे हैं। "अगर आप सभी जानते हैं, तो ठीक है," प्येर ने अपने आपसे कहा। "तो इसमें क्या ख़ास बात है? यह सच है।" और वह अपनी विनम्र, बाल-सुलभ मुस्कान से ख़ुद मुस्करा देता है और एलेन भी मुस्कराती है।

"कब मिला तुम्हें पत्र? ओल्म्यूत्स नगर से?" प्रिंस वसीली ने दोहराया जिसे मानो किसी बहस के फ़ैसले के लिये यह जानने की ज़रूरत थी।

"लोग भला ऐसी छोटी-छोटी बातों की चर्चा ही क्यों करते हैं और इनके बारे में सोचते ही क्यों हैं?" प्येर सोच रहा था।

"हां, ओल्म्यूत्स नगर से मिला है," उसने गहरी सांस लेते हुए उत्तर दिया।

भोजन के बाद प्येर दूसरों के पीछे-पीछे अपनी संगिनी को ड्राइंगरूम में ले गया। मेहमान अपने घरों को जाने लगे और कुछेक तो एलेन से विदा लिये बिना ही चले गये। कुछ मेहमान मानो इस गम्भीर कार्य से एलेन का ध्यान दूसरी ओर न हटाने के विचार से प्रेरित होकर क्षण भर को ही विदा लेने के लिये उसके पास आये और विदा करने के हेतु अपने साथ बाहर आने से उसे मना करके फ़ौरन ही चले गये। ड्राइंगरूम से बाहर निकलते हुए राजनयिक उदासी भरा मौन साधे रहा। प्येर के सुख-सौभाग्य की तुलना में उसे राजनयिक का अपना सारा कैरियर बेकार ही लग रहा था। बूढ़े जनरल की बीवी ने जब उससे यह पूछा कि उसका पांव कैसा है, तो वह झुंझलाकर कुछ बुड़बुड़ा दिया। "अरी, उल्लू बुढ़िया," उसने मन में सोचा। "यह एलेन तो पचास साल की उम्र में भी सुन्दरी ही बनी रहेगी।"

"लगता है कि मैं आपको बधाई दे सकती हूं," आन्ना पाव्लोव्ना ने फुसफुसाकर एलेन की मां से कहा और उसे ज़ोर से चूमा। "अगर यह अधसीसी का दर्द मुझे परेशान न करता तो मैं और भी रुक जाती।"

एलेन की मां ने कोई उत्तर नहीं दिया। अपनी बेटी के सुख-सौभाग्य से ईर्ष्या की भावना उसे व्यथित कर रही थी।

मेहमानों को विदा करने के समय प्येर बहुत देर तक एलेन के साथ छोटे ड्राइंगरूम में, जहां वे बैठे थे, अकेला रहा। पिछले डेढ़ महीने में भी वह एलेन के साथ अक्सर अकेला रहा था, मगर उसने उससे कभी प्यार की चर्चा नहीं की थी। अब उसने अनुभव किया कि ऐसा करना ज़रूरी है, मगर वह किसी तरह भी यह निर्णायक क़दम उठाने का फ़ैसला नहीं कर पाया। उसे शर्म महसूस हो रही थी, ऐसा लग रहा था कि एलेन के निकट वह किसी दूसरे व्यक्ति की जगह पर बैठा है। "यह ख़ुशी तुम्हारे लिये नहीं है," उसके भीतर की कोई आवाज़ उससे कह रही थी। "यह ख़ुशी उनके लिये है जिनके पास वह नहीं जो तुम्हारे पास है।" किन्तु कुछ तो कहना ज़रूरी था और इसलिये वह कहने लगा। उसने एलेन से पूछा कि वह आज की

पार्टी से खुश है? एलेन ने अपनी सदा की सी सरलता से उत्तर दिया कि आज का जन्मदिन का समारोह उसके जीवन का एक सबसे सुखद समारोह है।

नज़दीकी रिश्तेदारों में से कुछ अभी भी रह गये थे। वे बड़े ड्राइंगरूम में बैठे थे। प्रिंस वसीली धीरे-धीरे क़दम बढ़ाता हुआ प्येर के पास आया। प्येर खड़ा हो गया और बोला कि अब तो काफ़ी देर हो गयी है। प्रिंस वसीली ने ऐसी कठोर और प्रश्नसूचक दृष्टि से उसकी ओर देखा मानो उसने जो कुछ कहा था, वह इतना अजीब था कि उसे अपने कानों पर यक़ीन नहीं हो रहा था। किन्तु तुरन्त ही एक अन्य भाव ने कठोरता के इस भाव की जगह ले ली, प्रिंस वसीली ने नीचे की ओर उसका हाथ झटका, उसे बिठाया और स्नेहपूर्वक मुस्करा दिया।

"कहो तो क्या हालचाल है, बिटिया?" उसने उसी क्षण बेटी को लापरवाही के अपने उस अभ्यस्त अन्दाज़ में सम्बोधित किया जो बचपन से ही अपने बच्चों को लाड़ लड़ानेवाले माता-पिताओं में पैदा हो जाता है और जिसे प्रिंस वसीली ने दूसरे माता-पिताओं की नक़ल करते हुए ही अपनाया था।

और वह फिर से प्येर की ओर मुड़ा।

"**सेर्गेई कुज़्मीच, सभी ओर से,**" अपनी वास्कट का सबसे ऊपर-वाला बटन खोलते हुए उसने कहा।

प्येर मुस्कराया, लेकिन उसकी मुस्कान से यह स्पष्ट था कि वह समझता है कि इस वक़्त प्रिंस वसीली की सेर्गेई कुज़्मीच के क़िस्से में दिलचस्पी नहीं है और प्रिंस वसीली भी यह समझ गया कि प्येर यह बात समझता है। प्रिंस वसीली अचानक कुछ बुदबुदाया और बाहर चला गया। प्येर को लगा कि प्रिंस वसीली भी परेशान था। ऊंची सोसाइटी के इस व्यक्ति के चेहरे पर नज़र आनेवाली परेशानी ने प्येर के मर्म को छू लिया। उसने एलेन की तरफ़ देखा – उसे वह भी परेशान प्रतीत हुई और उसकी नज़र मानो कह रही थी: "आप खुद ही इसके लिये दोषी हैं।"

"यह क़दम उठाना बिल्कुल ज़रूरी है, मगर मैं ऐसा कर नहीं सकता, कर नहीं सकता," प्येर ने सोचा और फिर से इधर-उधर की बातें करने और सेर्गेई कुज़्मीच के बारे में पूछने लगा कि यह क्या

क़िस्सा था, क्योंकि उसने उसे ध्यान से सुना नहीं था। एलेन ने मुस्कराते हुए जवाब दिया कि उसे भी मालूम नहीं।

प्रिंस वसीली जब दीवानख़ाने में गया तो उसकी बीवी एक बुज़ुर्ग महिला के साथ प्येर के बारे में खुसर-फुसर कर रही थी।

"इसमें कोई शक नहीं कि वह बहुत ही अच्छा वर है, लेकिन सुख-सौभाग्य तो, मेरी प्यारी ..."

"शादियां तो भगवान के घर में ही तय होती हैं," बुज़ुर्ग महिला ने उत्तर दिया।

प्रिंस वसीली मानो महिलाओं की ये बातें न सुनते हुए दूर के कोने में जाकर सोफ़े पर बैठ गया। उसने आंखें मूंद लीं और मानो ऊंघने लगा। उसका सिर झुक गया और वह जाग उठा।

"अलीना," उसने बीवी को पुकारा, "ज़रा जाकर देखो तो कि वे दोनों क्या कर रहे हैं।"

प्रिंसेस दरवाज़े के पास गयी, बड़ी शान और उदासीनता से उसके पास से गुज़री तथा उसने छोटे ड्राइंगरूम में झांककर देखा। प्येर और एलेन पहले की तरह बैठे हुए बातें ही कर रहे थे।

"पहले की तरह बातें ही कर रहे हैं," उसने पति से कहा।

प्रिंस वसीली के माथे पर बल पड़ गये, मुंह एक ओर को ऐंठ गया, उसके स्वाभावानुसार अप्रिय और रुखाई के भाव से उसके गाल फड़क उठे। अपने को झटका देकर वह खड़ा हुआ, उसने सिर पीछे की ओर किया और दृढ़ क़दमों से महिलाओं के पास से गुज़रकर छोटे ड्राइंगरूम में चला गया। वह खुश-खुश और तेज़ क़दमों से प्येर के क़रीब पहुंचा। प्रिंस वसीली का चेहरा इतना संजीदा था कि प्येर उसे देखकर डर के मारे खड़ा हो गया।

"शुक्र है भगवान का!" उसने कहा। "बीवी ने मुझे सब कुछ बता दिया है!" उसने एक बांह प्येर की कमर और दूसरी बेटी की कमर में डाल दी। "बिटिया मेरी! मैं बहुत, बहुत ख़ुश हूं।" उसकी आवाज़ कांप उठी। "मैं तुम्हारे पिता को बहुत चाहता था ... और यह तुम्हारी अच्छी पत्नी बनेगी ... तुम दोनों पर भगवान की कृपादृष्टि बनी रहे! .."

उसने बेटी को गले लगाया, फिर से प्येर का आलिंगन किया और

बुढ़ापे के अनुरूप मुंह से उसे चूमा। निश्छल मन के आंसू उसके गालों को भिगो रहे थे।

"प्रिंसेस, यहां आओ," उसने पत्नी को बुलाया।

प्रिंसेस आई और वह भी रो पड़ी। बुज़ुर्ग महिला भी रूमाल से आंसू पोंछ रही थी। प्येर को चूमा जा रहा था और उसने भी कई बार सुन्दर एलेन का हाथ चूमा। कुछ समय बाद इन्हें फिर से अकेले छोड़ दिया गया।

"यह सब ऐसे ही होना चाहिये था, दूसरा कुछ हो ही नहीं सकता था," प्येर सोच रहा था, "इसलिये यह प्रश्न ही बेकार है कि अच्छा हुआ या बुरा? अच्छा इसलिये है कि बात एक किनारे हो गयी और दुविधा की पहलेवाली यातनापूर्ण स्थिति नहीं रही।" प्येर ख़ामोश रहते हुए अपनी मंगेतर का हाथ थामे था और हर सांस के साथ उसके ऊपर उठते तथा नीचे जाते सुन्दर वक्ष को देख रहा था।

"एलेन!" उसने ऊंचे कहा और चुप हो गया।

"ऐसे मौक़ों पर कुछ ख़ास शब्द कहे जाते हैं," प्येर सोच रहा था, मगर किसी तरह भी वह यह याद नहीं कर पा रहा था कि क्या शब्द कहे जाते हैं। उसने ग़ौर से एलेन के चेहरे को देखा। एलेन उसके निकट आ गयी। उसके चेहरे पर लाली दौड़ गयी।

"ओह, इसे उतार लो... इसे," उसने चश्मे की तरफ़ इशारा किया।

प्येर ने चश्मा उतार लिया और उसकी आंखें चश्मा उतार लेनेवाले व्यक्ति की सामान्य रूप से अजीब-अजीब दृष्टि के अतिरिक्त भयभीत और कुछ पूछती-सी लग रही थीं। प्येर ने उसके हाथ पर झुकना और उसे चूमना चाहा, मगर एलेन ने तेज़ी तथा भद्दे ढंग से अपने सिर को घुमाकर उसके होंठों पर अपने होंठ टिका दिये। प्येर उसके चेहरे के परिवर्तित, अप्रिय तथा चकराये-से भाव से चकित रह गया।

"अब तो वक़्त हाथ से निकल चुका है, सब कुछ समाप्त हो चुका है और फिर मैं इसे प्यार भी तो करता हूं," प्येर ने सोचा।

"मैं आपको प्यार करता हूं!" प्येर ने उन शब्दों को याद करके कहा जो ऐसे मौक़ों पर कहे जाते हैं। किन्तु ये शब्द ऐसी मरी-मरी आवाज़ में कहे गये कि उसे ख़ुद अपने पर शर्म आयी।

डेढ़ महीने के बाद उसकी शादी हो गयी और, जैसा कि लोग

उसके बारे में कहते थे, लाखों-करोड़ों की दौलत और बहुत ही रूपवती पत्नी का स्वामी बनकर वह फिर से ख़ूब सजायी गयी बेज़ूख़ोव काउंटों की पीटर्सबर्ग की बड़ी हवेली में रहने लगा।

३

सन् १८०५ के दिसम्बर महीने में बूढ़े प्रिंस निकोलाई अन्द्रेयेविच बोल्कोन्स्की को प्रिंस वसीली का एक पत्र मिला जिसमें यह सूचना दी गयी थी कि वह अपने बेटे के साथ आ रहा है। ("मैं मुआयने के दौरे पर जा रहा हूं और, मेरे अतीव आदरणीय उपकारी, आपके दर्शन करने के लिये एक सौ से कुछ अधिक किलोमीटर का चक्कर लगाना मैं अपना सौभाग्य मानूंगा," उसने लिखा था, "और मेरा बेटा अनातोल भी अपनी सेना की ओर जाते हुए मेरे साथ आ रहा है। मैं आशा करता हूं कि आप उसे व्यक्तिगत रूप से वह श्रद्धा व्यक्त करने की अनुमति देंगे जो अपने पिता के उदाहरण का अनुकरण करते हुए वह आपके प्रति अनुभव करता है।")

"लीजिये, मरीया को अब तो पार्टियों-दावतों में ले जाने की भी ज़रूरत नहीं रही, उससे शादी करने के इच्छुक तो ख़ुद ही यहां चले आ रहे हैं," टुइयां-सी प्रिंसेस ने यह सुनकर कुछ असावधानी से कह दिया।

प्रिंस निकोलाई अन्द्रेयेविच के माथे पर बल पड़ गये और वह ख़ामोश रहे।

पत्र आने के दो सप्ताह बाद शाम के वक़्त प्रिंस वसीली के नौकर-चाकर पहले से ही यहां पहुंच गये और अगले दिन बेटे के साथ वह ख़ुद भी आ गया।

प्रिंस वसीली के बारे में बुज़ुर्ग बोल्कोन्स्की की कभी अच्छी राय नहीं रही थी और पिछले कुछ वर्षों में, ज़ार पावेल तथा ज़ार अलेक्सान्द्र के शासनकाल में उसके नये ऊंचे पद तथा मान-सम्मान पाने से यह राय और भी ख़राब हो गयी थी। अब, पत्र में किये गये संकेतों और टुइयां-सी प्रिंसेस के कथन से वह समझ गये कि प्रिंस वसीली के आने का उद्देश्य क्या है और

प्रिंस निकोलाई अन्द्रेयेविच के दिल में उसके बारे में घटिया राय ने दुर्भावनापूर्ण तिरस्कार का रूप ले लिया। प्रिंस वसीली की चर्चा करते हुए वह लगातार भुनभुनाते रहते। प्रिंस वसीली को जिस दिन आना था, उस दिन तो प्रिंस निकोलाई आन्द्रेयेविच ख़ास तौर पर बहुत झल्लाये हुए तथा बुरे मूड में थे। उनका मूड इसलिये ख़राब था कि प्रिंस वसीली आ रहा था या चूंकि मूड ख़राब था, इसलिये वह प्रिंस वसीली के आगमन से ख़ास तौर पर झल्लाये हुए थे – कारण कुछ भी हो, मगर तथ्य यही था कि उनका मूड बहुत बिगड़ा हुआ था और इसीलिये तीख़ोन ने वास्तुकार को सुबह ही यह सलाह दी थी कि आज वह प्रिंस के पास अपने निर्माण-कार्य की रिपोर्ट लेकर न जाये।

"सुनते हैं, वह कैसे धम-धम करते हुए चल रहे हैं," तीख़ोन ने प्रिंस के क़दमों की आवाज़ की तरफ़ ध्यान दिलाते हुए कहा। "पांव पटकते हुए चल रहे हैं – हम सब जानते हैं इसका मतलब ..."

फिर भी सुबह के नौ बजे बुज़ुर्ग प्रिंस बोल्कोन्स्की सेबल के समूर के कालरवाला मख़मली ओवरकोट और इसी समूर की टोपी पहने हुए घूमने के लिये बाहर आये। पिछली रात को हिमपात हो गया था। प्रिंस निकोलाई अन्द्रेयेविच जिस संकरे मार्ग पर टहलते हुए ताप-पौधाघर की ओर जाते थे, उसे साफ़ कर दिया गया था, बर्फ़ पर अभी भी झाड़ू के निशान दिखाई दे रहे थे और इस संकरे मार्ग के दोनों ओर लगाये गये भुरभुरी बर्फ़ के ढेरों में से एक में फावड़ा घुसा हुआ था। त्योरी चढ़ाये और ख़ामोश रहते हुए प्रिंस ने ताप-पौधाघरों, नौकर-चाकरों के घरों और निर्माण-स्थलों के क़रीब से चक्कर लगाया।

"स्लेज घोड़ा-गाड़ी में यहां तक आया जा सकता है?" बुज़ुर्ग प्रिंस ने उन्हें घर तक पहुंचाने के लिये साथ आ रहे सम्मानित, शक्ल-सूरत तथा हाव-भाव में अपने से कुछ मिलते-जुलते कारिन्दे से पूछा।

"बर्फ़ बहुत ज़्यादा है, हुज़ूर। मैंने प्राश्पेक्ट, यानी मुख्य रास्ते को साफ़ करने का हुक्म दे दिया है।"

प्रिंस ने सिर झुकाया और घर के ओसारे की ओर बढ़ गये। "शुक्र है भगवान का," कारिन्दे ने सोचा। "गुस्से का तूफ़ान गुज़र गया!"

"स्लेज घोड़ा-गाड़ी के आने में मुश्किल होती, हुज़ूर," कारिन्दे ने इतना और कह दिया, "सुना है, हुज़ूर, कि आपके पास मन्त्री आ रहे हैं?"

प्रिंस कारिन्दे की ओर घूमे और त्योरी चढ़ाये हुए उन्होंने अपनी नज़रें उसके चेहरे पर जमा दीं।

"क्या? मन्त्री? कैसा मन्त्री? किसने हुक्म दिया था बर्फ़ साफ़ करने का?" वह अपनी तीखी और कठोर आवाज़ में कह उठे। "प्रिंसेस के लिये, मेरी बेटी के लिये नहीं, मन्त्री के लिये बर्फ़ साफ़ की गयी है! मुझे किसी मन्त्री से कुछ लेना-देना नहीं!"

"हुज़ूर, मैंने सोचा..."

"तुमने सोचा!" प्रिंस अधिकाधिक जल्दी-जल्दी और असम्बद्ध शब्द बोलते हुए चिल्ला पड़े। "तुमने सोचा... शैतान कहीं के! बदमाश कहीं के!.. मैं चखाऊंगा तुम्हें सोचने का मज़ा," और उन्होंने छड़ी ऊपर उठाकर कारिन्दे की तरफ़ घुमाई और अगर कारिन्दे ने अनचाहे ही अपने को बचा न लिया होता, तो चोट खा जाता। "तुमने सोचा! बदमाश कहीं के!.." वह जल्दी-जल्दी चिल्लाते रहे। किन्तु छड़ी की मार से बचने की अपनी गुस्ताख़ी से भयभीत होकर कारिन्दा प्रिंस के पास आ गया और उसने नम्रता से अपना गंजा सिर उनके सामने झुका दिया। उसके ऐसा करने के बावजूद या शायद इसी कारण प्रिंस ने "बदमाश कहीं के!..फिर से सड़क पर बर्फ़ डाल दो!" यह चिल्लाते हुए पुनः छड़ी नहीं उठाई और तेज़ी से कमरे में चले गये।

प्रिंसेस मरीया और कुमारी बुर्येन यह जानते हुए कि बुज़ुर्ग प्रिंस अच्छे मूड में नहीं हैं, दोपहर के खाने के पहले खड़ी हुई उनके आने का इन्तज़ार कर रही थीं। कुमारी बुर्येन का चेहरा खिला हुआ था और मानो यह कह रहा था: "मुझे कुछ भी मालूम नहीं और मैं वैसी ही हूं, जैसी हमेशा होती हूं।" किन्तु प्रिंसेस मरीया के चेहरे का रंग उड़ा हुआ था, वह सहमी-सहमी तथा आंखें झुकाये हुए थी। प्रिंसेस मरीया के लिये सबसे ज़्यादा मुसीबत की बात यह थी कि वह जानती थी कि ऐसे मौक़ों पर उसे कुमारी बुर्येन जैसा ही व्यवहार करना चाहिये, मगर ऐसा कर नहीं सकती थी। उसे लगता: "अगर मैं यह ढोंग करती हूं कि मुझे उनके बुरे मूड के बारे में कुछ मालूम नहीं तो वह यह सोचेंगे कि मेरे दिल में उनके लिये कोई सहानुभूति नहीं और अगर मैं ख़ुद उदास-उदास तथा अपने को बुरे मूड में ज़ाहिर करती हूं तो वह कहेंगे (जैसा कि पहले हो चुका था) कि मैं मुंह लटकाये हुए हूं", आदि, आदि।

बुज़ुर्ग प्रिंस ने बेटी के सहमे हुए चेहरे पर नज़र डाली और झल्लाहट

से नथने फरफराये :

"उल ... उल्लू ! .." उन्होंने धीरे से कहा।

"और दूसरी ग़ायब है ! उसके भी कान भर दिये गये हैं," उसने टुइयां-सी प्रिंसेस यानी बहू के बारे में सोचा जो खाने के कमरे में नहीं थी।

"प्रिंसेस कहां हैं ?" बुज़ुर्ग ने पूछा। "छिप रही हैं ? .."

"उनकी तबीयत बहुत अच्छी नहीं है," कुमारी बुर्येन ने उल्लास-पूर्वक मुस्कराकर कहा, "वह खाने के लिये नहीं आयेंगी। उनकी स्थिति में इस बात को आसानी से समझा जा सकता है।"

"हुम ! हुम !" प्रिंस बड़बड़ाये और भोजन करने के लिये मेज़ के सामने जा बैठे।

प्लेट उन्हें साफ़ नहीं प्रतीत हुई, उन्होंने उसपर लगे धब्बे की तरफ़ इशारा किया और उसे उठाकर फेंक दिया। तीख़ोन ने उसे लोक लिया और बैरे को पकड़ा दिया। टुइयां-सी प्रिंसेस अस्वस्थ नहीं थी, किन्तु बुज़ुर्ग प्रिंस से इतना अधिक डरती थी कि उनका मूड ख़राब होने की बात सुनकर उसने खाने की मेज़ पर न आना ही ठीक समझा।

"बच्चे की वजह से मेरा दिल डरता है," उसने कुमारी बुर्येन से कहा, "कौन जाने कि डर का उसपर क्या असर पड़े।"

कहना चाहिये कि प्रिंस अन्द्रेई की पत्नी यानी टुइयां-सी प्रिंसेस लीसिये गोरि नामक जागीर पर स्थायी रूप से भय तथा बुज़ुर्ग प्रिंस के प्रति कटु-भावना अनुभव करते हुए रहती थी, यद्यपि भय के अत्यधिक प्रबल होने के कारण वह इस भावना के प्रति सजग नहीं हो पाती थी। बुज़ुर्ग प्रिंस भी उसे नहीं चाहते थे और उनकी यह कटु-भावना तिरस्कार के नीचे दब जाती थी। लीसिये गोरि जागीर पर बस जाने के बाद प्रिंसेस को कुमारी बुर्येन से ख़ास लगाव हो गया, वह उसी के साथ अपने दिन बिताती, कभी-कभी उससे अपने ही कमरे में सोने का अनुरोध करती, अक्सर अपने ससुर की चर्चा चलाती और टीका-टिप्पणी करती।

"प्रिंस, हमारे यहां मेहमान आ रहे हैं," कुमारी बुर्येन अपने गुलाबी हाथों से सफ़ेद नेपकिन खोलते हुए बोली। "अगर मैंने ठीक सुना है तो महामहिम प्रिंस कुरागिन अपने बेटे के साथ पधार रहे हैं ?" उसने प्रश्न के अन्दाज़ में कहा।

"हुम ... यह महामहिम कल का छोकरा है ... मैंने ही उसे नौकरी

दिलवायी थी," बुज़ुर्ग प्रिंस ने तिरस्कार से जवाब दिया। "लेकिन उसका बेटा किसलिये आ रहा है – यह बात मेरी समझ में नहीं आती। शायद प्रिंसेस लीज़ा और प्रिंसेस मरीया को यह मालूम हो कि वह अपने इस बेटे को किसलिये यहां ला रहा है। मुझे तो उसकी कोई ज़रूरत नहीं।" और उन्होंने शर्म से लाल हो गयी अपनी बेटी की तरफ़ देखा।

"क्या तबीयत अच्छी नहीं है? जैसा कि आज उस उल्लू कारिन्दे ने कहा था, मन्त्री के आने की खबर सुनकर डर के मारे?"

"नहीं, ऐसी तो कोई बात नहीं, पिता जी।"

बहुत ही अटपटे विषय पर बातचीत शुरू करने के बावजूद कुमारी बुर्येन खामोश नहीं हुई। वह ताप-पौधाघरों तथा नये खिलनेवाले एक फूल की सुन्दरता के बारे में बातें करती रही और शोरबा खाने के बाद बुज़ुर्ग प्रिंस कुछ नर्म हो गये।

भोजन करने के पश्चात वह बहू के कमरे में गये। टुइयां-सी प्रिंसेस छोटी-सी मेज़ के पास बैठी हुई अपनी नौकरानी माशा से बातें कर रही थी। ससुर को देखकर उसके चेहरे का रंग उड़ गया।

टुइयां-सी प्रिंसेस बहुत बदल गयी थी। अब वह सुन्दर ही नहीं, कुरूप लगती थी। उसके गाल धंस गये थे, होंठ ऊपर को उठ गया था और आंखों के नीचे घेरे पड़ गये थे।

"जी, कुछ भारीपन-सा महसूस हो रहा है," उसने ससुर के इस प्रश्न का कि उसकी तबीयत कैसी है, उत्तर दिया।

"तुम्हें किसी चीज़ की ज़रूरत तो नहीं?"

"नहीं, धन्यवाद, पिता जी।"

"तो ठीक है, ठीक है।"

वह बाहर आये और रसोई के भण्डारघर में गये। वहां कारिन्दा सिर झुकाये खड़ा था।

"रास्ते को फिर बर्फ़ से पाट दिया?"

"जी हुज़ूर, पाट दिया। भगवान के लिये मुझे माफ़ कर दीजिये, वह तो मेरी बेवक़ूफ़ी थी।"

प्रिंस ने उसे टोक दिया और अपनी कृत्रिम हंसी से हंस दिये।

"ख़ैर, कोई बात नहीं, कोई बात नहीं।"

उन्होंने अपना हाथ आगे बढ़ा दिया जिसे कारिन्दे ने झटपट चूम लिया। इसके बाद वह अपने कमरे में चले गये।

शाम को प्रिंस वसीली यहां पहुंच गया। कोचवानों और नौकर-चाकरों ने **प्रेश्पेक्ट** (प्रोस्पेक्ट का ऐसे ही उच्चारण किया जाता था) पर उसका स्वागत किया और जान-बूझकर बर्फ़ से पाटे गये रास्ते पर ज़ोर लगाते और शोर मचाते हुए बाप-बेटे के सामान से लदी घोड़ा-गाड़ियों और स्लेजों को उपगृह तक ले गये।

प्रिंस वसीली और अनातोल को ठहरने के लिये अलग-अलग कमरे दिये गये।

अपना लबादा उतारकर और कमर पर हाथ टिकाये हुए अनातोल एक मेज़ के सामने बैठा था और उसने मुस्कराते हुए तथा बेख़्याली से अपनी बड़ी-बड़ी तथा सुन्दर आंखों को मेज़ के कोने पर टिका रखा था। अपनी पूरी ज़िन्दगी को वह एक स्थायी जशन ही मानता था जिसे किसी न किसी को उसके लिये ऐसा ही बनाना चाहिये था। क्रोधी वृद्ध प्रिंस और उनकी कुरूप, धनी, उत्तराधिकारिणी के यहां अपने आगमन को भी वह इसी दृष्टि से देखता था। उसके मतानुसार यह सारा मामला बहुत अच्छा और दिलचस्प हो सकता था। "अगर वह बहुत ही अमीर है तो उससे क्यों न शादी की जाये? पैसा तो हमेशा काम आ ही जाता है," अनातोल सोच रहा था।

उसने दाढ़ी बनायी और बहुत अच्छी तरह तथा खुले दिल से, जो उसकी आदत बन गये थे, अपने को इत्र से तर किया तथा ख़ुशमिज़ाजी और विजेता का जन्मजात भाव तथा सुन्दर सिर को शान से अकड़ाये हुए पिता के कमरे में गया। प्रिंस वसीली के दो नौकर उसे कपड़े पहनाने के काम में जुटे हुए थे और वह ख़ुद बड़ी दिलचस्पी से अपने इर्द-गिर्द देख रहा था। बेटे के कमरे में आने पर उसने ख़ुशी से उसका अभिवादन करते हुए सिर झुकाया मानो कह रहा हो : "हां, मैं तुम्हें ऐसा ही देखना चाहता हूं।"

"पापा, मज़ाक़ तो मज़ाक़ रहा, लेकिन यह बताइये कि क्या वह बहुत ही बदसूरत है? सच?" उसने मानो यात्रा के दौरान कई बार उनके बीच हुई बातचीत को जारी रखते हुए फ़्रांसीसी में पूछा।

"बस, बेवक़ूफ़ी की बहुत बातें कर चुके! तुम्हारे लिये सबसे बड़ा काम यह है कि तुम बुज़ुर्ग प्रिंस के साथ बड़े आदर और बड़ी समझदारी से पेश आने की कोशिश करो।"

"अगर वह डांट-डपट करने लगेंगे तो मैं वहां से उठकर चला

जाऊंगा," अनातोल ने कहा। "ऐसे बुड्ढे मुझे फूटी आंखों नहीं सुहाते। ठीक है?"

"यह याद रखो कि तुम्हारा सब कुछ तुम्हारे व्यवहार पर ही निर्भर करता है।"

इसी बीच महिलाओं को न केवल मन्त्री और उसके बेटे के आने की सूचना मिल चुकी थी, बल्कि इन दोनों की शक्ल-सूरत का भी उनके सामने सविस्तार वर्णन किया जा चुका था। प्रिंसेस मरीया अपने कमरे में अकेली बैठी थी और अपनी मानसिक बेचैनी पर व्यर्थ ही क़ाबू पाने की कोशिश कर रही थी।

"इन लोगों ने किसलिये यह लिखा, किसलिये लीज़ा ने मुझसे इसकी चर्चा की? ऐसा तो कभी हो ही नहीं सकता!" उसने दर्पण में अपने को देखते हुए कहा। "मैं ड्राइंगरूम में कैसे जाऊंगी? वह तो अगर मुझे अच्छा भी लगेगा तो भी मैं अब उसके साथ स्वाभाविक ढंग से व्यवहार नहीं कर सकूंगी।" पिता की दृष्टि के विचार मात्र से उसकी रूह फ़ना हो रही थी।

टुइयां-सी प्रिंसेस और कुमारी बुर्येन नौकरानी माशा से सारी ज़रूरी सूचनायें प्राप्त कर चुकी थीं। उन्हें मालूम हो चुका था कि मन्त्री का बेटा लाल-लाल गालों तथा काली भौंहोंवाला बड़ा सुन्दर जवान है, कि उसका पापा तो बड़ी मुश्किल से ज़ीने पर चढ़ा था, जबकि बेटा सूरमा की तरह तीन-तीन पैड़ियां एकसाथ फांदता हुआ उसके पीछे-पीछे ऊपर चढ़ता चला गया था। ये सूचनायें प्राप्त करने के बाद टुइयां-सी प्रिंसेस और कुमारी बुर्येन ज़िन्दादिली से ऊंचे-ऊंचे बातें करते हुए, जिनकी आवाज़ें दालान से ही सुनायी दे रही थीं, प्रिंसेस मरीया के कमरे में दाख़िल हुईं।

"मरीया, आप जानती हैं कि वे आ गये," दायें-बायें डोलते अपने पेट के साथ बोझिल ढंग से आरामकुर्सी पर बैठते हुए टुइयां-सी प्रिंसेस ने कहा।

वह इस वक़्त उसी ढीली-ढाली पोशाक में नहीं थी जो आम तौर पर सुबह के वक़्त पहने रहती थी। उसने अपना एक सबसे बढ़िया फ़्रॉक पहन रखा था। वह बहुत ही अच्छे ढंग से केश-विन्यास किये थी और उसके चेहरे पर सजीवता थी, मगर इसके बावजूद उसके नाक-नक़्श में जो बदसूरती और मुर्दनी-सी आ गयी थी, वे छिप नहीं रही थीं।

पीटर्सबर्ग की ऊंची सोसाइटी में वह सामान्यतः जो बढ़िया पोशाक पहने रहती थी, उसमें और भी स्पष्ट रूप से यह नज़र आ रहा था कि वह कितनी कुरूप हो गयी है। कुमारी बुर्येन ने भी, न जाने कब अपने को बनाव-शृंगार से निखार लिया था और इससे उसका सुन्दर तथा ताज़गी लिये हुआ चेहरा और भी ज़्यादा आकर्षक हो गया था।

"आप क्या यही पोशाक पहने रहेंगी?" टुइयां-सी प्रिंसेस ने मरीया से पूछा। "जल्द ही कोई नौकर हमें यह सूचना देने आ जायेगा कि वे ड्राइंगरूम में चले गये हैं। तब नीचे जाना होगा और इसलिये आप अपने को कुछ तो ठीक-ठाक कर लें!"

टुइयां-सी प्रिंसेस आरामकुर्सी से उठी, उसने नौकरानी को बुलाने के लिये घण्टी बजायी, वह जल्दी-जल्दी तथा सहर्ष यह तय करने लगी कि प्रिंसेस मरीया कौन-सी पोशाक पहने और अपने विचार को अमली शक्ल देने लगी। प्रिंसेस मरीया अपने आत्म-सम्मान की भावना के प्रति इसलिये ठेस अनुभव कर रही थी कि मंगेतर के आने से वह बेचैन हो उठी थी और इससे भी ज़्यादा उसे इस बात से दुख हो रहा था कि उसकी दोनों सहेलियां इस स्थिति को स्वाभाविक मान रही थीं। अगर वह उनसे यह कहती कि उसे अपने तथा उनके लिये शर्म आ रही है तो इसका मतलब अपनी मानसिक विह्वलता का भंडाफोड़ करना होता और अगर उनके द्वारा प्रस्तावित पोशाक पहनने से इन्कार करती तो उसे देर तक उनके मज़ाक़ों और नसीहतों का शिकार बनना पड़ता। उसके चेहरे पर लाली दौड़ गयी, उसकी सुन्दर आंखों की चमक ग़ायब हो गयी, उसके चेहरे पर धब्बे उभर आये और बलि के बकरे के उसी अप्रिय भाव के साथ, जो अक्सर उसके चेहरे पर बना रहता था, उसने अपने को कुमारी बुर्येन तथा लीज़ा के हवाले कर दिया। ये दोनों महिलायें **बिल्कुल सच्चे दिल से** उसे सुन्दर बनाने की कोशिश करने लगीं। वह इतनी कुरूप थी कि इन दोनों में से किसी के दिमाग़ में भी उसके साथ होड़ करने का ख़्याल तक नहीं आ सकता था। इसलिये ये दोनों बिल्कुल सच्चे मन से तथा महिलाओं के इस भोले और दृढ़ विश्वास से कि पोशाक चेहरे को सुन्दर बना सकती है, इसका बनाव-सिंगार करने लगीं।

"नहीं, सच कहती हूं, मेरी प्यारी, यह पोशाक कुछ जंच नहीं रही," लीज़ा ने दूर हटकर एक पहलू से प्रिंसेस को देखते हुए कहा,

"तुम नौकरानी से अपनी गहरे लाल रंग की मख़मली पोशाक लाने को कहो! सच, ऐसा ही करो! अरे, हो सकता है कि तुम्हारी क़िस्मत का ही फ़ैसला हो जाये! यह पोशाक बहुत हल्के रंग की है, नहीं, तुमपर बिल्कुल अच्छी नहीं लगती!"

पोशाक भद्दी नहीं थी, बल्कि भद्दा तो था प्रिंसेस मरीया का चेहरा और उसकी सारी आकृति। मगर कुमारी बुर्येन और टुइयां-सी प्रिंसेस लीज़ा इस बात को अनुभव नहीं कर रही थीं। उन्हें ऐसे प्रतीत होता था कि अगर ऊपर को उठाये गये बालों में आसमानी रंग का रिबन बांध दिया जाये और गहरे लाल रंग की पोशाक के साथ उसे आसमानी रंग का दुपट्टा ओढ़ा दिया जाये तो सब कुछ ठीक हो जायेगा। वे यह भूल जाती थीं कि सहमे हुए चेहरे और आकृति को तो नहीं बदला जा सकता और इस चेहरे को वे चाहे कैसे भी चौखटे तथा अंलकारों से क्यों न सजायें, चेहरा तो वैसा ही दयनीय और कुरूप रहेगा। दो या तीन पोशाकें बदलने के बाद, जिन्हें प्रिंसेस मरीया ने किसी तरह की आपत्ति के बिना चुपचाप बदल लिया, जब उसके बालों का ऊपर की ओर जूड़ा बना दिया गया (जिससे उसका चेहरा बिल्कुल भिन्न और पहले से ज़्यादा भद्दा हो गया) और उसने आसमानी रंग के दुपट्टे के साथ गहरे लाल रंग की पोशाक पहन ली तो टुइयां-सी प्रिंसेस ने उसके गिर्द एक-दो चक्कर लगाये, अपने छोटे-से हाथ से कहीं पोशाक की सिलवट ठीक की, कहीं दुपट्टे को खींचकर नीचे किया और फिर कभी एक, तो कभी दूसरी तरफ़ सिर झुकाकर उसे ध्यान से देखा।

"नहीं, यह पोशाक नहीं चलेगी," प्रिंसेस लीज़ा ने हाथ पर हाथ मारते हुए अपना फ़ैसला सुना दिया। "नहीं मरीया, यह पोशाक तो आप पर ज़रा भी अच्छी नहीं लग रही। आप मुझे अपनी हर दिन की भूरी पोशाक में कहीं ज़्यादा प्यारी लगती हैं। कृपया मेरी ख़ातिर ही उसे पहन लीजिये। कात्या," उसने नौकरानी से कहा, "प्रिंसेस की भूरी पोशाक ले आओ और, कुमारी बुर्येन, तब आप देखेंगी कि कैसे मैं प्रिंसेस को ढंग से सजाती हूं," उसने पहले से कलात्मक रस की प्रसन्नता को अनुभव करते हुए मुस्कराकर कहा।

किन्तु जब कात्या वह पोशाक लेकर आई, जिसकी फ़रमाइश की गयी थी, तो प्रिंसेस मरीया हिले-डुले बिना दर्पण के सामने बैठी हुई अपने चेहरे को देख रही थी। दर्पण में उसे दिखायी दिया कि उसकी

आंखों में आंसू हैं, कि उसका मुंह सिसकियां भरने के लिये तैयार होता हुआ कांप रहा है।

"प्यारी प्रिंसेस," कुमारी बुर्येन ने कहा, "ज़रा और सब्र से काम लीजिये।"

टुइयां-सी प्रिंसेस नौकरानी के हाथ से पोशाक लेकर प्रिंसेस मरीया के पास आई।

"नहीं, अब हम सीधे-सादे और सुन्दर ढंग से यह सब कुछ कर देंगी," उसने कहा।

उसकी, कुमारी बुर्येन और किसी कारण हंस रही कात्या की आवाज़ें मानो पक्षियों के तराने जैसी उल्लासपूर्व चहक में घुल-मिल गयीं।

"नहीं, मुझे मेरे हाल पर छोड़ दीजिये," प्रिंसेस मरीया कह उठी।

उसकी आवाज़ में ऐसी गम्भीरता और व्यथा थी कि पक्षियों की चहक एकदम बन्द हो गयी। उन्होंने मरीया की बड़ी-बड़ी और सुन्दर आंखों की तरफ़ देखा जिनमें आंसू और चिन्तन था और जो बहुत स्पष्ट रूप से तथा अनुरोध करते हुए उनकी ओर देख रही थीं। यह तीनों समझ गयीं कि अब उसे विवश करना व्यर्थ और उसके प्रति अत्याचार भी होगा।

"कम से कम अपना केश-विन्यास तो बदल लीजिये," टुइयां-सी प्रिंसेस बोली। "मैंने आपसे कहा था न," उसने ताना देते हुए कुमारी बुर्येन को सम्बोधित किया, "कि मरीया का चेहरा ऐसे चेहरों में से है जिनपर इस तरह का केश-विन्यास बिल्कुल अच्छा नहीं लगता। कृपया बदल लीजिये।"

"मुझे मेरे हाल पर छोड़ दीजिये, मुझे किसी भी चीज़ की परवाह नहीं," मरीया ने बड़ी मुश्किल से आंसुओं पर क़ाबू पाते हुए कहा।

कुमारी बुर्येन और टुइयां-सी प्रिंसेस अपने आपसे यह बात नहीं छिपा सकती थीं कि प्रिंसेस मरीया इस रूप में बहुत ही भोंडी, हमेशा से भी कहीं भद्दी लग रही थी। लेकिन बात बिगड़ चुकी थी। वह इनकी ओर ऐसे भाव से, चिन्तन और उदासी के ऐसे भाव से देख रही थी जिससे ये दोनों परिचित थीं। यह भाव भय नहीं पैदा कर रहा था। (प्रिंसेस मरीया किसी में भी भय पैदा नहीं करती थी।) मगर ये दोनों जानती थीं कि जब उसके चेहरे पर यह भाव आ जाता है तो

वह मौन साध लेती है और अपने निर्णय पर अटल रहती है।

"आप अपना केश-विन्यास बदल लेंगी न?" लीज़ा ने कहा और जब प्रिंसेस मरीया ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया तो वह कमरे से बाहर चली गयी।

प्रिंसेस मरीया अकेली रह गयी। उसने लीज़ा की इच्छा पूरी नहीं की और न केवल अपना केश-विन्यास ही नहीं बदला, बल्कि दर्पण में अपने को देखा तक नहीं। वह लाचारी से अपनी आंखें झुकाये और हाथ लटकाये हुए चुपचाप बैठी तथा सोच रही थी। वह अपनी कल्पना में पति को देख रही थी, बलवान, रोबीले और अनबूझ रूप से आकर्षक उस प्राणी को, जो अचानक उसे अपनी, सर्वथा दूसरी और सौभाग्यशाली दुनिया में ले जाता है। उसने **अपना** बच्चा देखा। वैसा ही, जैसा कि एक दिन पहले उसने धाय की बेटी का बच्चा देखा था और मानो वह उसकी छाती से दूध पी रहा था। उसकी कल्पना में उभरा पति जो बड़े प्यार से उसे तथा बच्चे को देख रहा था। "नहीं, यह सम्भव नहीं, मैं बहुत ही बदसूरत हूं," उसने सोचा।

"कृपया चाय के लिये चलिये। प्रिंस अभी पधार रहे हैं," दरवाज़े पर से नौकरानी की आवाज़ सुनायी दी।

प्रिंसेस मरीया चौंकी और वह जो कुछ सोच रही थी, उससे वह भयभीत हो उठी। नीचे, ड्राइंगरूम में जाने के पहले वह देव-प्रतिमाओं-वाले कमरे में गयी और हाथ जोड़े हुए कुछ मिनट तक ईसा मसीह के काले चेहरेवाली बड़ी देव-प्रतिमा के सामने, जो दीप-प्रकाश से आलोकित थी, हाथ जोड़े खड़ी रही। प्रिंसेस मरीया की आत्मा यातनापूर्ण दुविधा से संतप्त थी। क्या उसके लिये प्यार की ख़ुशी, पुरुष के साथ सांसारिक सुख की ख़ुशी पाना सम्भव है? विवाह सम्बन्धी अपने विचारों में प्रिंसेस मरीया ने पारिवारिक सुख और बच्चों की कल्पना की, किन्तु उसका मुख्य, सबसे अधिक वांछित और गुप्त सपना था – सांसारिक प्यार। उसने इस इच्छा को दूसरों से, यहां तक कि अपने से भी छिपाने की जितनी अधिक कोशिश की, यह उतनी ही अधिक बलवती हुई। "हे भगवान," उसने कहा, "इन शैतानी विचारों का मैं अपने दिल में कैसे गला घोंटूं? कैसे मैं सदा के लिये इन बुरे विचारों से मुक्ति पाऊं ताकि शान्ति से तुम्हारी इच्छा को पूरा कर सकूं?" उसने यह प्रश्न किया ही था कि उसे अपने दिल में भगवान

का यह उत्तर सुनायी दिया : "अपने लिये कोई कामना न करो, न कुछ खोजो, न बेचैन हो, न ईर्ष्या करो! लोगों का भविष्य और तुम्हारा भाग्य तुम्हें ज्ञात नहीं। किन्तु हर चीज़ के लिये तैयार रहते हुए जीवन व्यतीत करो। यदि भगवान विवाह-कर्त्तव्यों के पालन के लिये तुम्हारी परीक्षा लेना चाहेंगे तो तुम उनकी यह इच्छा पूरी करने को तैयार रहना।" इस सान्त्वनापूर्ण विचार के साथ (फिर भी अपने निषिद्ध सांसारिक स्वप्न के साकार होने की आशा लिये हुए) प्रिंसेस मरीया ने आह भरकर अपने ऊपर सलीब का निशान बनाया और अपनी पोशाक, केश-विन्यास और इस बारे में सोचे बिना ही कि वह कैसे कमरे में दाख़िल होगी तथा वहां क्या कहेगी, नीचे चल दी। भगवान ने, जिनकी इच्छा के बिना पत्ता तक नहीं हिलता और जिन्होंने पहले से ही सब कुछ निश्चित कर दिया था, उसकी तुलना में इस सबका क्या महत्त्व हो सकता था।

४

प्रिंसेस मरीया जब कमरे में दाख़िल हुई, तो प्रिंस वसीली और उसका बेटा वहां बैठे हुए टुइयां-सी प्रिंसेस और कुमारी बुर्येन के साथ बातचीत कर रहे थे। वह एड़ी पर ज़ोर देती हुई जब अपनी भारी चाल से कमरे में आई तो कुमारी बुर्येन तथा पुरुष खड़े हो गये और टुइयां-सी प्रिंसेस ने संकेत से उसकी ओर पुरुषों का ध्यान खींचते हुए कहा : "लो, मरीया आ गयी!" प्रिंसेस मरीया ने सबको देखा और सिर से पांव तक अच्छी तरह से देखा। उसने प्रिंस वसीली के चेहरे की तरफ़ ध्यान दिया जो उसे देखते ही क्षण भर को गम्भीर हो गया था तथा अगले ही क्षण उसपर मुस्कान आ गयी थी। उसने टुइयां-सी प्रिंसेस के चेहरे को भी देखा था जो बड़ी जिज्ञासा से अतिथियों के दिलों पर पड़ रहे मरीया के प्रभाव का उनके चेहरों के भावों के आधार पर अध्ययन कर रही थी। उसने रिबन बांधे, सुन्दर मुखवाली कुमारी बुर्येन को भी देखा जो ऐसी सजीव दृष्टि से, जैसी मरीया ने पहले कभी नहीं देखी थी, **उसकी** ओर ताक रही

थी। किन्तु वह उसे नहीं देख पायी। उसने तो कमरे में दाख़िल होने के वक़्त केवल इतना ही देखा था कि कुछ बड़ा-सा, चमकता और सुन्दर उसकी ओर बढ़ा था। पहले तो प्रिंस वसीली उसके पास आया, उसने उसका हाथ चूमने के लिये झुके हुए प्रिंस के सिर की चांद को चूमा और उसके इन शब्दों के उत्तर में कि वह उसे भूल गयी होगी यह कहा कि उसे तो उसकी बहुत अच्छी तरह से याद है। इसके बाद अनातोल उसके पास आया। उसने अभी तक उसे नहीं देखा था। उसे तो केवल कोमल-से हाथ की अनुभूति हुई जिसने उसके हाथ को दृढ़ता से थाम लिया था और मरीया ने उसके गोरे माथे को, जिसके ऊपर पोमेड लगे सुन्दर, सुनहरे बाल थे, अपने होंठों से तनिक छुआ। जब उसने उसे देखा तो वह उसके सौन्दर्य से ठगी-सी रह गयी। वर्दी के बन्द बटन पर अंगूठा रखे, छाती को आगे तथा पीठ को पीछे की ओर अकड़ाये, कुछ दूर टिके एक पांव को थोड़ा हिलाते तथा सिर को ज़रा झुकाये हुए अनातोल मौन साधे और सम्भवतः उसके बारे में कुछ भी न सोचते हुए उसे प्रसन्नता से देख रहा था। अनातोल हाज़िरजवाब नहीं था, बातचीत में चुस्त और वाक-पटु नहीं था, लेकिन इन चीज़ों की जगह उसमें शान्त बने रहने और किसी भी हालत में आत्मविश्वास न खोने का वह गुण था जो सामाजिक दृष्टि से बहुत ही मूल्यवान होता है। आत्मविश्वास से वंचित कोई व्यक्ति यदि पहले परिचय के समय ही मौन साध लेता है और वह अपने इस मौन की अशिष्टता की चेतना तथा कहने के लिये कुछ खोजने की इच्छा प्रकट करता है तो इसका बुरा प्रभाव पड़ता है। किन्तु अनातोल अपने पांव को हिलाता और प्रफुल्लता से प्रिंसेस के केश-विन्यास का निरीक्षण करता हुआ चुप रहा। साफ़ नजर आ रहा था कि वह बहुत देर तक ऐसे ही ख़ामोश रह सकता था। वह तो मानो यह कहता प्रतीत हो रहा था: "अगर किसी को यह ख़ामोशी अटपटी लग रही है तो वह कोई बात करे, लेकिन मैं तो ऐसा नहीं करना चाहता।" इसके अलावा औरतों के साथ अनातोल के व्यवहार में वह अन्दाज़ भी बना रहता था जो उनमें कुतूहल, भय और यहां तक कि प्यार को भी जन्म देता है यानी अपनी श्रेष्ठता की चेतना का दम्भपूर्ण अन्दाज़। वह तो मानो यह कहता लगता था: "मैं आप सबको जानता हूं, अच्छी तरह से जानता हूं, किसलिये मैं आपकी परवाह करूं? हां, आपको तो मेरे ऐसा करने से बहुत ख़ुशी होगी।" बहुत सम्भव है कि

औरतों से मुलाक़ात होने पर वह ऐसा न सोचता हो (तो इसी बात की ज़्यादा सम्भावना है कि वह ऐसा नहीं सोचता था, क्योंकि यों भी बहुत कम सोचता था), मगर उसके चेहरे के भाव और अन्दाज़ ऐसे ही होते थे। प्रिंसेस ने यह महसूस कर लिया और मानो उसे यह स्पष्ट करने के लिये कि वह तो ऐसा सोचने की हिम्मत तक नहीं कर सकती कि वह उसमें दिलचस्पी ले, उसने प्रिंस वसीली को सम्बोधित किया। टुइयां-सी प्रिंसेस की आवाज़ और उसके सफ़ेद दांतों से लगातार ऊपर उठ रहे रोयेंदार होंठ की बदौलत सभी के लिये दिलचस्प, सजीव बातचीत हो रही थी। टुइयां-सी प्रिंसेस ने प्रिंस वसीली के साथ ऐसे मज़ाक़िया ढंग से बातचीत शुरू की, जिसका बातूनी और ख़ुशमिज़ाज लोग अक्सर इस्तेमाल करते हैं और जिसका उद्देश्य यह ज़ाहिर करना होता है कि बात करनेवाले और जिससे बातचीत शुरू की जा रही है, उन दोनों के बीच कुछ बहुत पुरानी, हास्यपूर्ण और मनोरंजक तथा दूसरों के लिये अज्ञात स्मृतियां विद्यमान हैं, जबकि वास्तव में ऐसी स्मृतियों का कोई अस्तित्व नहीं होता और टुइयां-सी प्रिंसेस तथा प्रिंस वसीली के बीच भी ऐसा कुछ नहीं था। प्रिंस वसीली ने ख़ुद भी ख़ुशी से यह ढंग अपना लिया और टुइयां-सी प्रिंसेस ने अनातोल को भी, जिसे वह बहुत ही कम जानती थी, ऐसी हास्यपूर्ण घटनाओं के संस्मरणों में, जो कभी घटी ही नहीं थीं, घसीट लिया। कुमारी बुर्येन भी बड़ी ख़ुशी से इन साझे संस्मरणों में शामिल हो गयी और यहां तक कि प्रिंसेस मरीया को भी इस बात से प्रसन्नता हुई कि उसे इन दिलचस्प यादों का भागीदार बना लिया गया है।

"कम से कम अब आप पूरी तरह हमारे हाथों में होंगे, प्यारे प्रिंस," टुइयां-सी प्रिंसेस ने प्रिंस वसीली से कहा, (ज़ाहिर है कि फ़्रांसीसी में)। "अब अन्नेत (आन्ना पाव्लोव्ना शेरेर) की पार्टियोंवाली बात नहीं हो सकेगी जहां से आप हमेशा ही भाग जाते हैं। प्यारी अन्नेत तो याद है न आपको ?"

"आह, लेकिन आप तो अन्नेत की तरह मुझसे राजनीति की बातें नहीं करती हैं न !"

"और हमारी वह चाय की छोटी-सी मेज़ ?"

"हां, हां, बहुत अच्छी तरह से याद है !"

"आप अन्नेत के यहां कभी क्यों नहीं आये ?" टुइयां-सी प्रिंसेस

ने अनातोल से पूछा। "अरे हां! मुझे सब मालूम है, सब मालूम है," उसने आंख मिचकाकर कहा, "आपके भाई इप्पोलीत ने मुझसे आपकी हरकतों की चर्चा की थी। ओह!" उसने तर्जनी दिखाकर मानो उसे धमकाया। "मैं तो आपकी पेरिस की शरारतों के बारे में भी जानती हूं!"

"और इप्पोलीत ने तुम्हें यह नहीं बताया," प्रिंस वसीली ने बेटे को सम्बोधित करते और प्रिंसेस लीज़ा का हाथ थामते हुए कहा जो मानो भागने जा रही थी और वह मुश्किल से ही उसे रोक पाया था, "और उसने तुम्हें यह नहीं बताया कि कैसे वह ख़ुद यानी इप्पोलित इस प्यारी प्रिंसेस पर जान छिड़कता था और कैसे इसने उसे घर से निकाल बाहर किया था?"

"ओह, यह तो औरतों में असली हीरे के समान है!" प्रिंस वसीली ने प्रिंसेस मरीया से लीज़ा के बारे में कहा।

पेरिस का ज़िक्र आने पर कुमारी बुर्येन ने भी संस्मरणों की इस साझी बातचीत में हिस्सा लेने का मौक़ा हाथ से नहीं जाने दिया।

उसने यह जानना चाहा कि अनातोल को पेरिस छोड़े कितना अरसा हो गया है और उसे वह शहर कैसा लगा। अनातोल ने बड़ी ख़ुशी से इस फ़्रांसीसी महिला के सवाल का जवाब दिया और मुस्कराते तथा बहुत ग़ौर से उसकी तरफ़ देखते हुए उससे उसकी मातृभूमि की चर्चा करने लगा। कुमारी बुर्येन को देखते ही अनातोल इस नतीजे पर पहुंच गया कि यहां लीसिये गोरि में भी उसे ऊब महसूस नहीं होगी। "कुछ बुरी नहीं है!" उसे ध्यान से देखते हुए उसने सोचा। "कुछ बुरी नहीं है प्रिंसेस मरीया की यह संगिनी। उम्मीद की जा सकती है कि मुझसे शादी करने के बाद वह इसे भी अपने साथ ले आयेगी," उसने सोचा, "सच, कुछ बुरी नहीं है।"

बुज़ुर्ग प्रिंस बोल्कोन्स्की माथे पर बल डाले और यह सोचते हुए कि उन्हें कैसा रवैया अपनाना चाहिये अपने कमरे में धीरे-धीरे कपड़े पहन रहे थे। इन मेहमानों के आने से उन्हें झुंझलाहट हो रही थी: "क्या लेना-देना है मुझे प्रिंस वसीली और उसके बेटे से? प्रिंस वसीली शेख़ीख़ोर और तुच्छ आदमी है और बेटा भी ऐसा ही होना चाहिये," वह मन ही मन बड़बड़ा रहे थे। उन्हें झल्लाहट इसलिये हो रही थी कि इन मेहमानों के आने से उनके दिल में उस सवाल ने सिर उठा

लिया था जिसे वह कभी हल नहीं कर पाये थे और जिसे हमेशा मन में ही दबा देते थे – यह वह सवाल था जिसके बारे में बुज़ुर्ग प्रिंस ख़ुद अपने को धोखा देते रहते थे। सवाल यह था कि क्या कभी वह अपनी बेटी, प्रिंसेस मरीया से अलग होने और उसकी शादी कर देने का निर्णय कर पायेंगे या नहीं। प्रिंस कभी भी इस सवाल को अपने से सीधे-सीधे पूछने की हिम्मत नहीं कर पाये थे, क्योंकि पहले से ही जानते थे कि ईमानदारी से इसका उत्तर देने का मतलब था – न केवल अपनी भावनाओं का, बल्कि अपने अस्तित्व की सारी सम्भावनाओं का भी विरोध करना। ऐसा प्रतीत होने के बावजूद कि वह प्रिंसेस मरीया को बहुत महत्त्व नहीं देते हैं, उसके बिना अपनी ज़िन्दगी की कल्पना नहीं कर सकते थे। "क्या मिलेगा इसे शादी करके?" वह सोच रहे थे। "शायद दुख-मुसीबत ही। लीज़ा को ही देखिये, उसने अन्द्रेई से शादी की (शायद उससे बेहतर पति पाना सम्भव नहीं), लेकिन क्या वह अपने भाग्य से सन्तुष्ट है? इसके प्यार में दीवाना होकर भला कौन इसे अपनी बीवी बनायेगा? बड़ी बदसूरत, बड़ी बेढंगी है यह। अच्छे सम्बन्धों और दौलत के लिये ही कोई इससे शादी करेगा। क्या लड़कियां अविवाहिता नहीं रहतीं? और ज़्यादा सुखी भी!" बुज़ुर्ग प्रिंस बोल्कोन्स्की कपड़े पहनते हुए ऐसा सोच रहे थे, किन्तु साथ ही यह सवाल, जिसे स्थगित करना सम्भव नहीं था, फ़ौरी फ़ैसले की मांग करता था। प्रिंस वसीली स्पष्टतः सगाई-विवाह का प्रस्ताव करने के इरादे से यहां आया था और सम्भवतः आज या कल साफ़-साफ़ जवाब देने के लिए कहेगा। जहां तक ऊंची सोसाइटी में इस परिवार के नाम और मान-मर्यादा का सम्बन्ध है, तो वह सब ठीक है। "ख़ैर, मैं इसके विरुद्ध नहीं हूं," बुज़ुर्ग ने अपने आपसे कहा, "लेकिन इस लड़के को मेरी बेटी के लायक़ होना चाहिये। यही तो हमें देखना है।"

"यही तो हमें देखना है," उन्होंने ऊंचे कहा। "यही तो हमें देखना है।"

और हमेशा की भांति फ़ुर्ती से क़दम बढ़ाते हुए उन्होंने दीवानख़ाने में प्रवेश किया, एक ही नज़र में सबको आंक लिया, इस चीज़ की तरफ़ ध्यान दिया कि छोटी-सी प्रिंसेस दूसरी पोशाक पहने है, कुमारी बुर्येन के रिबन, प्रिंसेस मरीया के भोंडे केश-विन्यास, कुमारी

बुर्येन तथा अनातोल की मुस्कानों और साझी बातचीत में प्रिंसेस मरीया के हिस्सा न लेने को भी ताड़ लिया। "उल्लू की तरह से सजी-धजी हुई है।" गुस्से से अपनी बेटी की तरफ़ देखते हुए उन्होंने सोचा। "कोई शर्म-हया नहीं! और वह तो इसकी ज़रा भी परवाह नहीं कर रहा!"

बुज़ुर्ग बोल्कोन्स्की प्रिंस वसीली के पास गये:

"नमस्ते, नमस्ते, ख़ुशी हुई आपके आने से।"

"प्यारे दोस्त से मिलने का मोह खींच लाया," प्रिंस वसीली ने हमेशा की भांति जल्दी-जल्दी, आत्मविश्वास और बेतकल्लुफ़ी से जवाब दिया। "यह मेरा दूसरा बेटा है, आपसे अनुरोध करता हूं कि इसे अपना प्यार दीजिये, इसपर अपनी कृपादृष्टि बनाये रखिये।"

बुज़ुर्ग प्रिंस बोल्कोन्स्की ने अनातोल को ध्यान से देखा।

"बहुत अच्छा लड़का है, बहुत अच्छा लड़का है!" उन्होंने कहा। "लो, मुझे चूमो," और उन्होंने अपना गाल उसकी तरफ़ बढ़ा दिया।

अनातोल ने बुज़ुर्ग को चूमा और जिज्ञासा तथा बिल्कुल शान्त भाव से यह अनुमान लगाते हुए उनकी तरफ़ देखा कि उसके पिता ने बुज़ुर्ग बोल्कोन्स्की के जिस सनकीपन की चर्चा की थी, वह जल्द ही सामने आयेगा या नहीं।

बुज़ुर्ग प्रिंस बोल्कोन्स्की वहीं बैठ गये, जहां हमेशा बैठते थे, यानी सोफ़े के कोने में। उन्होंने प्रिंस वसीली के लिये एक आरामकुर्सी अपने नज़दीक खींच ली, इशारे से उसे वहां बैठने को कहा और राजनीतिक मामलों तथा ख़बरों के बारे में पूछ-ताछ करने लगे। वह मानो बहुत ध्यान से प्रिंस वसीली की बातें सुन रहे थे, मगर साथ ही प्रिंसेस मरीया की तरफ़ लगातार देखते जाते थे।

"तो पोट्सडम से ख़त आ रहे हैं?" उन्होंने प्रिंस वसीली के अन्तिम शब्दों को दोहराया और अचानक उठकर अपनी बेटी के पास गये।

"तुमने मेहमानों के लिये ऐसी सज-धज बनायी है?" उन्होंने कहा। "ख़ूब, बहुत ख़ूब। तुम नये ढंग का केश-विन्यास करके मेहमानों के सामने आयी हो और मैं मेहमानों के सामने ही तुमसे यह कहे देता हूं कि भविष्य में मेरी अनुमति के बिना कभी हार-सिंगार नहीं करना।"

"यह तो मेरा क़ुसूर है, पिता जी," छोटी-सी प्रिंसेस ने लज्जारुण होते हुए कहा।

"आप अपने लिये जो भी चाहें, कर सकती हैं," बुज़ुर्ग प्रिंस ने अपनी बहू के सामने ज़रूरत से ज़्यादा झुकते हुए कहा, "मगर इसे अपने को भोंडा बनाने की ज़रूरत नहीं – यह तो यों ही भोंडी है।"

और रुआंसी हो गयी बेटी की तरफ़ कोई ध्यान दिये बिना वह फिर से अपनी जगह पर जा बैठे।

"नहीं, नहीं, यह केश-विन्यास तो प्रिंसेस को बहुत जंच रहा है," प्रिंस वसीली ने कहा।

"तो भैया, नौजवान प्रिंस, क्या नाम है तुम्हारा?" प्रिंस बोल्कोन्स्की ने अनातोल को सम्बोधित किया, "यहां आओ, हम तुमसे कुछ बातचीत करें, अच्छी तरह जान-पहचान कर लें।"

"तो अब तमाशा शुरू होगा," अनातोल ने सोचा और मुस्कराते हुए बुज़ुर्ग बोल्कोन्स्की के नज़दीक जा बैठा।

"तो, मेरे प्यारे, मैंने सुना है कि तुम्हारी शिक्षा-दीक्षा विदेश में हुई है। तुम्हारे बाप और मेरी तरह किसी पादरी ने तुम्हें पढ़ना-लिखना नहीं सिखाया है। तो आजकल तुम गार्ड-घुड़सेना में हो?" अनातोल को निकट से तथा एकटक देखते हुए बुज़ुर्ग ने पूछा।

"नहीं, मैं सेना में आ गया हूं," मुश्किल से अपनी हंसी पर क़ाबू पाते हुए अनातोल ने जवाब दिया।

"अच्छा! बहुत ख़ूब। तो, मेरे प्यारे, तुम ज़ार और मातृभूमि की सेवा करना चाहते हो? आजकल जंग का ज़माना है। तुम्हारे जैसे सूरमा को सैन्य-सेवा करनी चाहिये, ज़रूर करनी चाहिये। तो मोर्चे पर जा रहे हो?"

"नहीं, प्रिंस। हमारी रेजिमेंट तो मोर्चे पर चली गयी। लेकिन मेरा नाम तो उसमें दर्ज है... पापा, किसमें दर्ज है मेरा नाम?" अनातोल ने हंसते हुए पिता से पूछा।

"बहुत बढ़िया फ़ौजी सेवा कर रहे हो, बहुत बढ़िया। 'किसमें दर्ज है मेरा नाम!' हा-हा-हा!" बुज़ुर्ग प्रिंस बोल्कोन्स्की हंस पड़े।

अनातोल और भी ज़्यादा ज़ोर से हंस दिया। बुज़ुर्ग प्रिंस बोल्कोन्स्की के माथे पर अचानक बल पड़ गये।

"ख़ैर, जाओ अपनी जगह पर," उसने अनातोल से कहा।

अनातोल मुस्कराता हुआ फिर से महिलाओं के पास चला गया।

"प्रिंस वसीली, तुमने तो इसे विदेशों में पढ़ाया-लिखाया है? ठीक है न?" बुज़ुर्ग प्रिंस ने प्रिंस वसीली से पूछा।

"मेरे लिये जो कुछ सम्भव था, मैंने वह सब किया है। मैं आपसे यह कह सकता हूं कि वहां की शिक्षा-दीक्षा हमारे यहां की तुलना में कहीं बेहतर है।"

"हां, आजकल तो सब कुछ दूसरे, सब कुछ नये ही ढंग से होता है। बहुत अच्छा लड़का है! बहुत अच्छा है! आओ, मेरे कमरे में चलें।"

प्रिंस वसीली की बांह थामकर वह उसे अपने कमरे में ले गये।

बुज़ुर्ग बोल्कोन्स्की के साथ अकेले रह जाने पर प्रिंस वसीली ने फ़ौरन उनसे अपनी इच्छाओं और आशाओं की चर्चा कर दी।

"तुम क्या समझते हो," बुज़ुर्ग प्रिंस ने खीझते हुए कहा, "कि मैंने उसे बांधकर बिठा रखा है, मैं उसके बिना रह नहीं सकता? यह भी ख़ूब रही!" वह ग़ुस्से से कहते गये। "मेरी बला से बेशक कल ही ऐसा हो जाये! लेकिन तुमसे साफ़ कहता हूं कि अपने दामाद को मैं ज़्यादा अच्छी तरह से जानना चाहूंगा। तुम तो मेरे उसूल जानते ही हो – सब कुछ किसी भी तरह की लाग-लपेट के बिना होना चाहिये। कल मैं तुम्हारे सामने ही उससे पूछ लूंगा – अगर वह चाहेगी तो तुम्हारा बेटा यहां रुक सकता है। बेशक यहां रहे, मैं भी उसे देख-समझ लूंगा।" बुज़ुर्ग प्रिंस ने नथने फरफराये। "बेशक शादी कर ले, मुझे इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता," वह उसी तरह से तीखी आवाज़ में चिल्ला उठे, जैसे बेटे को मोर्चे के लिये विदा करते समय चिल्लाये थे।

"मैं आपसे किसी तरह का दुराव-छिपाव किये बिना साफ़-साफ़ कहना चाहता हूं," प्रिंस वसीली ने ऐसे चालाक आदमी के अन्दाज़ में कहा जिसे इस बात का यक़ीन हो गया हो कि दूसरे की रग-रग पहचाननेवाले इस आदमी से चालाकी करने में कोई तुक नहीं। "आप तो लोगों को आर-पार देख लेते हैं। अनातोल प्रतिभाशाली नहीं, मगर ईमानदार और दयालु नौजवान है, बहुत अच्छा बेटा और रिश्ते-नातेदार है।"

"ठीक है, ठीक है, देखा जायेगा।"

जैसा कि पुरुषों की संगत के बिना लम्बे अरसे तक अकेली रहनेवाली

औरतों के साथ हमेशा होता है, बुज़ुर्ग प्रिंस बोल्कोन्स्की के घर की इन तीनों औरतों ने अनातोल के आने पर यह महसूस किया कि इस वक़्त से पहले उनकी ज़िन्दगी मानो ज़िन्दगी नहीं थी। इन तीनों की चिन्तन, अनुभव और निरीक्षण की क्षमता एकबारगी दस गुना बढ़ गयी और मानो अभी तक अन्धेरे में बीतनेवाला उनका जीवन सहसा किसी नये महत्त्व से ओत-प्रोत, किसी प्रकाश से आलोकित हो उठा।

प्रिंसेस मरीया तो अपने चेहरे और केश-विन्यास के बारे में सोच ही नहीं रही थी और उसे उनका ध्यान तक नहीं रहा था। उस व्यक्ति का सुन्दर, निष्कपट चेहरा, जो शायद उसका पति बन जाये, पूरी तरह से उसके दिल-दिमाग़ पर छा गया था। वह उसे दयालु, बहादुर, इरादे का पक्का, दिलेर और दरियादिल लग रहा था। उसे इस बात का पूरा यक़ीन हो गया था। उसकी कल्पना में भावी पारिवारिक जीवन के हज़ारों सपने लगातार उभर रहे थे। वह उन्हें अपने मन से दूर भगाने और छिपाने का प्रयास कर रही थी।

"लेकिन क्या मैं उसके साथ बहुत रुखाई से पेश नहीं आ रही हूं?" प्रिंसेस मरीया सोच रही थी। "मैं अपने को इसलिये संयत रखने का प्रयत्न करती हूं कि अपनी आत्मा की गहराई में अपने को उसके बहुत ही निकट अनुभव कर रही हूं। लेकिन उसके बारे में मैं जो कुछ सोचती हूं, उसे तो उसका ज्ञान नहीं और ऐसा समझ सकता है कि वह मुझे पसन्द नहीं।"

इसलिये प्रिंसेस मरीया ने इस नये मेहमान के प्रति स्नेहशील होने का प्रयास किया, मगर ऐसा कर नहीं पायी।

"ओह बेचारी! बहुत ही बदसूरत है यह," अनातोल उसके बारे में सोच रहा था।

अनातोल के आने से बहुत ही ज़्यादा उत्तेजित हो जानेवाली कुमारी बुर्येन कुछ दूसरी ही बातें सोच रही थी। ज़ाहिर है कि सोसाइटी में किसी निश्चित स्थिति, रिश्तेदारों और मित्रों के बिना, यहां तक कि मातृभूमि से भी दूर सुन्दर जवान लड़की बुज़ुर्ग प्रिंस बोल्कोन्स्की को ऊंचे-ऊंचे किताब पढ़कर सुनाने और प्रिंसेस मरीया की संगिनी बने रहने के काम को ही अपना जीवन समर्पित कर देने की बात नहीं सोच सकती थी। कुमारी बुर्येन बहुत समय से ऐसे रूसी प्रिंस की प्रतीक्षा कर रही थी जो फ़ौरन ही भद्दी, भोंडे ढंग से पहनने-ओढ़नेवाली और

बेढंगी रूसी प्रिंसेसों के मुक़ाबले में उसकी श्रेष्ठता का मूल्यांकन करेगा, उसको प्यार करने लगेगा और उसे अपने साथ ले जायेगा। आख़िर ऐसा रूसी प्रिंस आ गया था। कुमारी बुर्येन को एक क़िस्सा याद था जो उसने कभी अपनी मौसी से सुना था और जिसमें उसने अपनी कल्पना का कुछ मिर्च-मसाला और जोड़ दिया था। उसे मन ही मन इस क़िस्से को दोहराना अच्छा लगता था। क़िस्सा यह था कि कैसे एक लड़की किसी पुरुष के बहकावे में आकर शादी के बिना ही अपने को उसे समर्पित कर देती है और कैसे उसकी बेचारी मां ऐसा करने के लिये उसे भला-बुरा कहती है। कुमारी बुर्येन अपनी कल्पना में अपने को बहकानेवाले **उस पुरुष को** यह क़िस्सा सुनाते हुए रो तक पड़ती थी। अब **वह** असली रूसी प्रिंस प्रकट हो गया था। वह उसे भगा ले जायेगा, फिर बेचारी मां सामने आ जायेगी और प्रिंस उससे शादी कर लेगा। कुमारी बुर्येन के दिमाग़ में उस वक़्त, जब वह प्रिंस अनातोल के साथ पेरिस की चर्चा कर रही थी, उसके भविष्य की सारी दास्तान ने यही रूप लिया। कुमारी बुर्येन सोच-समझकर ऐसा नहीं कर रही थी (उसने तो क्षण भर को भी यह नहीं सोचा था कि उसे क्या करना चाहिये), किन्तु यह सब तो बहुत पहले से ही उसके दिमाग़ में एक निश्चित रूप ले चुका था और अनातोल के प्रकट होने पर उसके साथ जुड़ गया था जिसके मन को वह अधिक से अधिक मुग्ध करने की कोशिश कर रही थी।

बिगुल की आवाज़ सुननेवाले रेजिमेंट के बूढ़े घोड़े की भांति टुइयां-सी प्रिंसेस भी अनजाने ही तथा अपनी स्थिति को भूलकर किसी निहित विचार या मानसिक द्वन्द्व के बिना भोले-भाले और हल्के-फुल्के मनोरंजन के इरादे से अभ्यस्त चोंचलेबाज़ी की सरपट दौड़ के लिये तैयार हो गयी।

इस चीज़ के बावजूद कि औरतों की संगत में अनातोल सामान्यतः अपने को ऐसे व्यक्ति के रूप में ज़ाहिर करता था जो उनके अपने पीछे दौड़ते रहने से तंग आ चुका हो, फिर भी इन तीनों पर पड़ने-वाले अपने प्रभाव से उसके अहंभाव की तुष्टि हुई। इसके अलावा वह सुन्दर तथा भावनाओं को उत्तेजित करनेवाली बुर्येन के प्रति उस वास-नापूर्ण पाशविक आकर्षण को अनुभव करने लगा था जो बहुत जल्दी से उसपर हावी हो जाता था और जिसके प्रभाव में वह अत्यधिक भद्दी

और साहसपूर्ण हरकतें कर सकता था।

चाय के बाद सभी बड़े दीवानख़ाने में चले गये और प्रिंसेस मरीया से क्लावीकॉर्ड पर कुछ बजाने का अनुरोध किया गया। अनातोल कुमारी बुर्येन के निकट ही कोहनियां टिकाकर प्रिंसेस के सामने खड़ा हो गया और उसने अपनी ख़ुशी से चमकती आंखें प्रिंसेस के चेहरे पर जमा दीं। प्रिंसेस मरीया यातना और प्रसन्नतापूर्ण विह्वलता से अपने ऊपर टिकी हुई उसकी दृष्टि को अनुभव कर रही थी। प्रिंसेस का मनपसन्द सोनाटा उसे आत्मा के अत्यधिक काव्यमय संसार में ले गया और अपने चेहरे पर टिकी हुई दृष्टि की अनुभूति ने इस संसार को और भी अधिक काव्यमय बना दिया। अनातोल की दृष्टि बेशक प्रिंसेस मरीया के चेहरे पर टिकी हुई थी, मगर उसका ध्यान उसकी तरफ़ नहीं, बल्कि कुमारी बुर्येन के पांव के हिलने-डुलने की ओर था जिसे वह क्लावीकॉर्ड के नीचे अपने पांव से छू रहा था। कुमारी बुर्येन भी प्रिंसेस की ओर देख रही थी और उसकी सुन्दर आंखों में भी सहमी-सहमी ख़ुशी तथा आशा का ऐसा भाव था जिसे प्रिंसेस मरीया पहली बार देख रही थी।

"कितना अधिक प्यार करती है यह मुझे!" प्रिंसेस मरीया सोच रही थी। "कितनी सौभाग्यशाली हूं मैं अब और कितनी सौभाग्यशाली हो सकती हूं ऐसी सहेली और ऐसे पति के साथ! क्या सचमुच पति के साथ?" अनातोल के चेहरे को देखने का साहस न कर पाते और अपने चेहरे पर उसकी दृष्टि को अनुभव करते हुए उसने सोचा।

डिनर के बाद जब सब अपने-अपने कमरों में जाने लगे तो अनातोल ने प्रिंसेस का हाथ चूमा। उसे ख़ुद भी यह पता नहीं चला कि उसमें इतना साहस कहां से आ गया, किन्तु उसने कमज़ोर नज़रवाली अपनी आंखों के निकट आते हुए उसके चेहरे पर बेझिझक नज़र डाली। प्रिंसेस के बाद वह कुमारी बुर्येन का हाथ चूमने के लिये उसकी ओर बढ़ा (ऐसा करना अशिष्ट था, किन्तु वह तो सभी कुछ बड़े विश्वास और सरलता से करता था), और कुमारी बुर्येन शर्म से लाल हो गयी तथा उसने घबराकर प्रिंसेस मरीया की तरफ़ देखा।

"कितना ध्यान रखती है वह दूसरों की भावनाओं का," प्रिंसेस मरीया ने सोचा। "क्या अमेली (कुमारी बुर्येन का यही नाम था) ऐसा सोचती है कि मुझे उससे जलन हो सकती है और मैं अपने प्रति

उसके निर्मल प्यार और निष्ठा का मूल्यांकन करने में असमर्थ हूं?" उसने कुमारी बुर्येन के पास जाकर उसे चूमा। अनातोल टुइयां-सी प्रिंसेस का हाथ चूमने के लिये बढ़ा।

"नहीं, नहीं, नहीं! जब आपके पिता मुझे यह लिखेंगे कि अब आप उलटी-सीधी हरकतें नहीं करते, तब मैं आपको अपना हाथ चूमने दूंगी। इसके पहले नहीं।"

और उंगली से मानो उसे धमकाकर तथा मुस्कराकर वह कमरे से बाहर चली गयी।

५

सभी अपने-अपने कमरे में चले गये और अनातोल के सिवा, जो बिस्तर पर लेटते ही गहरी नींद सो गया, उस रात किसी को भी देर तक नींद नहीं आयी।

"क्या सचमुच यह मेरा पति बननेवाला है, यह अजनबी, सुन्दर और दयालु पुरुष? हां, सबसे बढ़कर तो यही कि यह दयालु पुरुष," प्रिंसेस मरीया सोच रही थी और भय ने, जो लगभग कभी भी उसके पास नहीं फटकता था, उसे दबोच लिया। वह मुड़कर देखते हुए घबराती थी – उसे ऐसा लगता था कि परदों के पीछे, अंधेरे कोने में कोई खड़ा हुआ है। और यह कोई था वह – यानी शैतान – तथा वह – गोरे माथे, काली भौंहों और लाल-लाल मुंहवाला पुरुष।

उसने घण्टी बजाकर नौकरानी को बुलाया और उससे अपने ही कमरे में सोने का अनुरोध किया।

कुमारी बुर्येन इस रात को व्यर्थ ही किसी की राह देखती, किसी की ओर मुस्कराती तथा अपने पतन के बाद बेचारी मां की डांट-फटकार की कल्पना करके आंसू तक बहाती हुई बहुत देर तक शीत-वाटिका में घूमती रही।

टुइयां-सी प्रिंसेस इस कारण अपनी नौकरानी पर बिगड़ती रही कि बिस्तर आरामदेह नहीं था। वह न तो करवट लेकर और न पेट के बल ही चैन से लेट पा रही थी। उसका पेट उसे परेशान कर रहा

था। अन्य किसी भी समय की तुलना में वह उसे आज इसलिये कहीं ज़्यादा परेशान कर रहा था कि अनातोल की उपस्थिति से उस दूसरे समय की स्मृतियां सजीव हो उठी थीं, जब उसकी ऐसी हालत नहीं थी और सब कुछ बहुत अच्छा और उल्लासपूर्ण था। वह ड्रेसिंग-गाउन और रात की टोपी पहने आरामकुर्सी पर बैठी थी। उसकी नौकरानी कात्या, जिसकी आंखें नींद से मुंदी जा रही थीं और चोटी अस्त-व्यस्त हो रही थी, तीसरी बार रोयों के भारी गद्दे को थपथपाते और उलटते-पलटते हुए कुछ बड़बड़ा रही थी।

"मैंने तुझसे कहा था न कि गद्दा कहीं से ऊंचा और कहीं से नीचा है," टुइयां-सी प्रिंसेस रट लगाये थी। "मैं तो ख़ुद भी सोने को बेक़रार हूं। इसका मतलब यह है कि मेरा कोई क़ुसूर नहीं।" और उसकी आवाज़ रोने के लिये तैयार बालक की तरह कांप उठी।

बुज़ुर्ग प्रिंस भी नहीं सो रहे थे। ऊंघता हुआ तीख़ोन यह सुन रहा था कि कैसे वह ग़ुस्से से इधर-उधर आ-जा रहे हैं और नथने फरफरा रहे हैं। बुज़ुर्ग प्रिंस को ऐसा लग रहा था कि बेटी के कारण उनका अपमान हुआ है। यह अपमान इसलिये और भी ज़्यादा कटु था कि इसका सम्बन्ध स्वयं उनसे नहीं, बल्कि दूसरे व्यक्ति, उनकी बेटी से था जिसे वह अपने से भी ज़्यादा प्यार करते थे। उन्होंने अपने आपसे कहा कि वह इस मामले पर अच्छी तरह से सोच-विचार करेंगे, कोई उचित और ऐसा हल ढूंढ़ेंगे जो ज़रूरी होगा, मगर ऐसा करने के बजाय और भी ज़्यादा झल्ला उठे।

"पहला मर्द सामने आते ही अपने बाप और बाक़ी सब कुछ को भी भूल गयी, ऊंचा-ऊंचा केश-विन्यास कर लिया, दुम हिलाती है और ऐसे बदल गयी कि पहचान से बाहर! ख़ुशी से पिता को छोड़ने को तैयार है! वह जानती थी कि यह सब मेरी नज़र से छिपा नहीं रह सकेगा। फर्र... फर्र... फर्र... क्या मैं देख नहीं रहा हूं कि यह उल्लू सिर्फ़ बुर्येन के फेर में ही पड़ा हुआ है (इस बुर्येन को निकाल बाहर करना चाहिये)! और उसमें इस बात को समझने का आत्म-सम्मान भी नहीं! अगर आत्म-सम्मान नहीं तो बेशक अपने लिये नहीं, मेरी ख़ातिर ही उसे इस बात को समझना चाहिये। इसे दिखाना चाहिये कि यह उल्लू उसके बारे में ज़रा भी नहीं सोचता, बल्कि सिर्फ़ बुर्येन पर ही नज़र टिकाये रहता है। उसमें आत्म-सम्मान नहीं है,

लेकिन मैं उसे इसकी चेतना कराऊंगा..."
बुज़ुर्ग प्रिंस यह जानते थे कि अगर वह अपनी बेटी से यह कह देंगे कि वह ग़लतफ़हमी का शिकार हो रही है, कि अनातोल तो सिर्फ़ बुर्येन के साथ प्रेम-खिलवाड़ करना चाहता है तो इससे प्रिंसेस मरीया के स्वाभिमान को ज़ोरदार ठेस लगेगी और उन्हें अपने उद्देश्य (बेटी से अलग न होने की इच्छा) में सफलता मिल जायेगी और इसलिये वह ऐसा सोचकर शान्त हो गये। उन्होंने तीख़ोन को पुकारा और कपड़े बदलने लगे।

"शैतान ही उन्हें यहां लाया है!" वह उस समय सोच रहे थे, जब तीख़ोन उनके सूखे, छाती पर सफ़ेद बालों से ढके बुढ़ापे के शरीर पर रात की क़मीज़ पहना रहा था। "मैंने तो इन्हें यहां बुलाया नहीं। मेरी ज़िन्दगी को गड़बड़ करने के लिये चले आये हैं। और वह थोड़ी-सी ही तो बाक़ी रह गयी है।"

"जहन्नुम में जायें!" वह उस समय कह उठे, जब उनका सिर अभी क़मीज़ से ढका हुआ था।

अपने विचारों को कभी-कभी ऊंची आवाज़ में व्यक्त करने की प्रिंस की आदत से तीख़ोन परिचित था और इसलिये क़मीज़ के नीचे से प्रकट होनेवाले प्रिंस के चेहरे पर तथा उनकी दृष्टि में झल्लाहट और प्रश्न का भाव देखकर वह तनिक भी विचलित नहीं हुआ।

"बिस्तर पर चले गये?" प्रिंस ने पूछा।

सभी अच्छे नौकरों की भांति तीख़ोन भी सहज-बुद्धि से अपने मालिक के विचारों की दिशा को समझ लेता था। उसने अनुमान लगा लिया कि मालिक प्रिंस वसीली और उसके बेटे के बारे में पूछ रहे हैं।

"हुज़ूर, वे बिस्तर पर चले गये हैं और उन्होंने बत्ती बुझा दी है।"

"ख़ैर, कोई बात नहीं, कोई बात नहीं..." प्रिंस ने जल्दी-जल्दी कहा और पांवों में स्लीपर पहनकर तथा ड्रेसिंग-गाउन की आस्तीनों में बाहें खोंसकर उस सोफ़े की तरफ़ चले गये जिसपर सोते थे।

यद्यपि अनातोल और कुमारी बुर्येन ने एक-दूसरे से एक भी शब्द नहीं कहा था, तथापि अपने रोमांस के पहले भाग अर्थात् "बेचारी मां" के प्रकट होने के पूर्व के भाग को वे दोनों बिल्कुल अच्छी तरह समझ गये थे, यह जानते थे कि उन्हें चोरी-छिपे एक-दूसरे से बहुत

कुछ कहना है और इसलिये सुबह से ही कहीं एकान्त में मिलने का मौक़ा ढूंढ़ रहे थे। प्रिंसेस मरीया जब हर दिन के नियत समय पर अपने पिता के पास गयी, उसी वक़्त कुमारी बुर्येन और अनातोल शीत-वाटिका में मिले।

प्रिंसेस मरीया इस दिन विशेष रूप से बहुत धड़कते दिल के साथ पिता के कमरे के दरवाज़े पर आयी। उसे लग रहा था कि घर के सभी लोग न केवल यह जानते हैं कि आज उसके भाग्य का निर्णय होनेवाला है, बल्कि यह भी जानते हैं कि वह स्वयं इस बारे में क्या सोचती है। उसने तीख़ोन और प्रिंस वसीली के अर्दली के चेहरे पर भी यही भाव देखा जिससे उसकी दालान में उस समय भेंट हुई थी, जब वह गर्म पानी लेकर आ रहा था और उसने बहुत झुककर उसका अभिवादन किया था।

बुज़ुर्ग प्रिंस ने इस सुबह को बेटी के प्रति अपने व्यवहार में अत्य-धिक स्नेह और संयम का परिचय दिया। प्रिंसेस मरीया इस संयत भाव से भली-भांति परिचित थी। यह वही भाव था जो पिता के चेहरे पर उस वक़्त आता था, जब प्रिंसेस गणित का कोई प्रश्न नहीं समझ पाती थी और जब ग़ुस्से से पिता के सूखे हाथों की मुट्ठियां भिंच जाती थीं, वह उससे दूर हट जाते थे और कुछेक शब्दों को ही धीरे-धीरे और बार-बार दोहराते रहते थे।

बुज़ुर्ग प्रिंस ने बेटी को "आप" कहते हुए तत्काल इसी मामले की चर्चा आरम्भ कर दी।

"मुझसे आपके बारे में एक प्रस्ताव किया गया है," उन्होंने बनावटी ढंग से मुस्कराते हुए कहा। "मैं समझता हूं, आपने यह अनुमान लगा लिया होगा," वह कहते गये, "कि प्रिंस वसीली मेरे आकर्षण के कारण अपने आश्रित को (कहना मुश्किल है कि प्रिंस बोल्कोन्स्की ने अनातोल को आश्रित क्यों कहा) साथ लेकर यहां नहीं आया है। कल शाम को आपके बारे में मुझसे एक प्रस्ताव किया गया है। और चूंकि आप मेरे उसूल जानती हैं, इसलिये मैं इस मामले को आपके सामने पेश कर रहा हूं।"

"मैं आपकी बात का क्या मतलब समझूं, पिता जी?" प्रिंसेस ने कहा और उसका चेहरा पहले तो पीला और फिर लाल हो गया।

"क्या मतलब समझें मेरी बात का?" पिता ग़ुस्से से चिल्लाये।

"प्रिंस वसीली को ऐसा लगता है कि तुम उसकी बहू बनने के लायक़ हो और वह अपने आश्रित के साथ तुम्हारी शादी करने का प्रस्ताव करता है। यह मतलब, यह मतलब है मेरी बात का! और मैं तुमसे इसके बारे में पूछ रहा हूं।"

"मुझे मालूम नहीं कि इसके बारे में आपका क्या विचार है, पिता जी," प्रिंसेस ने फुसफुसाकर कहा।

"मेरा विचार? मेरा विचार? मेरे विचार का क्या सवाल पैदा होता है? मुझे इस मामले से अलग रखिये। मुझे तो शादी नहीं करनी। **आपकी** क्या राय है? मैं यह जानना चाहता हूं।"

प्रिंसेस ने महसूस किया कि पिता जी को यह प्रस्ताव पसन्द नहीं है, किन्तु इसी क्षण उसके दिमाग़ में यह विचार भी आया कि या तो इसी क्षण या फिर कभी भी उसके जीवन का भाग्य-निर्णय नहीं हो सकेगा। उसने आंखें झुका लीं ताकि उसे उस दृष्टि का सामना न करना पड़े, जिसके प्रभाव के कारण, जैसा कि वह अनुभव करती थी, उसकी सोचने की सारी शक्ति हवा हो जाती थी और वह आदत के मुताबिक़ केवल आज्ञापालन करती थी।

"मैं तो केवल एक ही बात चाहती हूं कि आपकी इच्छा पूरी करूं," वह बोली, "लेकिन अगर मुझे अपनी इच्छा प्रकट करनी होती..."

वह अपना वाक्य पूरा नहीं कर पायी। प्रिंस ने उसे बीच में ही टोक दिया।

"बहुत खूब!" वह चिल्ला उठे। "वह तुम्हारे दहेज के साथ तुमसे शादी कर लेगा और इसके अलावा कुमारी बुर्येन को भी साथ ले जायेगा। वह बीवी होगी और तुम..."

प्रिंस रुक गये। वह भांप गये कि इन शब्दों का बेटी पर क्या प्रभाव हुआ है। प्रिंसेस का सिर झुक गया और वह रुआंसी हो गयी।

"अरे, मैं तो मज़ाक़ कर रहा था, मज़ाक़ कर रहा था," वह बोले। "इतना याद रखना, प्रिंसेस, कि मेरे उसूलों के मुताबिक़ लड़की को अपने जीवन-साथी के चुनाव का पूरा अधिकार है। मैं तुम्हें पूरी आज़ादी देता हूं। यह नहीं भूलना कि तुम्हारे निर्णय पर ही तुम्हारा सुख-सौभाग्य निर्भर करता है। मेरी चर्चा बेकार है।"

"लेकिन मैं नहीं जानती... पिता जी।"

"ख़ैर, ज़्यादा बात करने में कोई तुक नहीं! उससे अगर कहा जायेगा तो वह केवल तुमसे ही नहीं, किसी से भी शादी कर लेगा। किन्तु तुम चुनाव करने को स्वतन्त्र हो... अपने कमरे में जाकर अच्छी तरह से सोच-विचार करो और एक घण्टे के बाद यहां आकर उसके सामने ही हां या ना कह देना। मैं जानता हूं कि तुम जाकर पूजा-प्रार्थना करने लगोगी। बेशक ऐसा करो। लेकिन यह ज़्यादा अच्छा होगा कि सोच-विचार कर लो। जाओ।"

"हां या ना, हां या ना, हां या ना!" वह उस वक़्त भी चिल्लाते रहे, जब प्रिंसेस मानो सुध-बुध खोये हुए लड़खड़ाती-सी कमरे से बाहर निकली।

प्रिंसेस के भाग्य का निर्णय हो गया था और यह निर्णय उसके सुख-सौभाग्य के हक़ में हुआ था। किन्तु पिता जी ने कुमारी बुर्येन के बारे में जो कहा था – उनका यह इशारा बहुत भयानक था। माना जा सकता था कि इसमें सचाई नहीं थी, फिर भी यह संकेत भयानक था और वह इसके बारे में सोचे बिना नहीं रह सकती थी। वह कुछ भी देखे-सुने बिना शीत-वाटिका में से सीधी चली जा रही थी कि अचानक कुमारी बुर्येन की जानी-पहचानी फुसफुसाहट से चौंक गयी, उसने नज़र ऊपर उठायी और अपने से दो क़दमों की दूरी पर उसे फ़्रांसीसी कुमारी को बांहों में भरे हुए अनातोल दिखायी दिया जो उसके कानों में धीरे-धीरे कुछ फुसफुसा रहा था। अनातोल ने सुन्दर चेहरे पर भयानक भावाभिव्यक्ति के साथ मुड़कर प्रिंसेस मरीया की तरफ़ देखा और कुमारी बुर्येन को, जिसने प्रिंसेस को नहीं देखा था, तत्क्षण बांहों से मुक्त नहीं किया।

"यहां कौन है? किसलिये है? रुकिये!" अनातोल का चेहरा मानो कह रहा था। प्रिंसेस मरीया चुपचाप इन दोनों को देख रही थी। वह इस स्थिति को समझ नहीं पा रही थी। आख़िर कुमारी बुर्येन चीख़ उठी और भाग गयी। अनातोल ने ख़ुशी भरी मुस्कान के साथ प्रिंसेस मरीया का अभिवादन किया मानो उसे इस अजीब मामले पर हंसने को निमन्त्रित कर रहा हो और कंधे झटककर अपने कमरे के दरवाज़े की तरफ़ बढ़ गया।

एक घण्टे बाद तीख़ोन प्रिंसेस मरीया को बुलाने आया। उसने कहा कि बुज़ुर्ग प्रिंस उसे बुला रहे हैं और यह भी बताया कि प्रिंस वसीली

भी वहीं है। तीख़ोन के आने के वक़्त अपने कमरे में सोफ़े पर बैठी प्रिंसेस मरीया रो रही कुमारी बुर्येन का आलिंगन करती हुई उसके सिर को धीरे-धीरे सहला रही थी। प्रिंसेस की सुन्दर आंखों में पहले जैसी शान्ति और चमक आ गयी थी तथा वे प्यार और खेद की भावना से कुमारी बुर्येन के प्यारे चेहरे को देख रही थीं।

"नहीं, प्रिंसेस, मैं सदा के लिये आपका स्नेह खो बैठी हूं।" कुमारी बुर्येन ने कहा।

"भला क्यों? मैं तो आपको अब पहले से कहीं ज़्यादा प्यार करती हूं और आपकी ख़ुशी के लिये अपने बस भर सभी कुछ करूंगी," प्रिंसेस मरीया ने उत्तर दिया।

"किन्तु आप तो अब मुझे तिरस्कार की दृष्टि से देखती होंगी। आप, जो इतनी पवित्र-निर्मल हैं, आपको तो मेरा तिरस्कार करना चाहिये। आप तो कभी भी मनोविकारों के बहाव में बह जाने की बात नहीं समझ पायेंगी। ओह, मेरी बेचारी मां..."

"मैं सब कुछ समझती हूं," प्रिंसेस मरीया ने उदासी से मुस्कराकर जवाब दिया। अपने को शान्त कीजिये, मेरी प्यारी। मैं पिता जी के पास जा रही हूं," वह इतना कहकर बाहर चली गयी।

प्रिंस वसीली टांग पर टांग रखे और हाथों में नासदानी लिये हुए इतना अधिक भावुक बना बैठा था मानो स्वयं उसे अपनी भावुकता का दुख हो रहा हो और वह उसका मज़ाक़ उड़ा रहा हो। प्रिंसेस मरीया जब कमरे में दाख़िल हुई तो प्रिंस वसीली के चेहरे पर उसी भावुकता की मुस्कान खिली हुई थी। उसने झटपट नसवार की चुटकी सूंघ ली।

"ओह, प्यारी बिटिया, प्यारी बिटिया," उसने उठते और उसके दोनों हाथों को अपने हाथों में लेते हुए कहा। उसने गहरी सांस ली और कहता गया: "मेरे बेटे की क़िस्मत की डोर आपके हाथों में है। आप जो भी चाहें निर्णय कर सकती है, मेरी प्यारी, मेरी अच्छी, मेरी नाज़ुक मरीया जिसे मैं हमेशा अपनी बेटी की तरह प्यार करता रहा हूं।"

वह एक तरफ़ को हट गया। निष्कपट आंसू की एक बूंद उसकी आंख में झलक उठी।

बुज़ुर्ग प्रिंस बोल्कोन्स्की ने नथने फरफराये।

"प्रिंस वसीली अपने आश्रित ... अपने बेटे की ओर से विवाह का प्रस्ताव कर रहा है। तुम प्रिंस अनातोल कुरागिन की पत्नी बनना चाहती हो या नहीं? तुम हां या ना में जवाब दो!" बुज़ुर्ग चिल्ला उठे, "इसके बाद मुझे भी अपना मत प्रकट करने का अधिकार होगा। हां, अपना मत और केवल अपना मत ही," बुज़ुर्ग प्रिंस ने प्रिंस वसीली की ओर देखते तथा उसके चेहरे के मिन्नत करते भाव का उत्तर देते हुए कहा। "हां या ना?"

"पिता जी, मेरी तो केवल यही इच्छा है कि कभी भी आपसे दूर न होऊं, कभी भी अपने को आपसे अलग न करूं। मैं शादी नहीं करना चाहती," उसने अपनी सुन्दर आंखों से प्रिंस वसीली और पिता जी की ओर देखते हुए दृढ़ता से कहा।

"बिल्कुल बकवास, बिल्कुल बेवक़ूफ़ी की बात है! एकदम बकवास, बकवास, बकवास!" बुज़ुर्ग प्रिंस नाक-भौंह सिकोड़कर चिल्ला उठे। उन्होंने बेटी का हाथ अपने हाथ में ले लिया, उसे अपने निकट खींच लिया, मगर चूमा नहीं, केवल अपने माथे को झुकाकर उसके माथे से छुआ दिया और अपने हाथ में लिये हुए उसके हाथ को इतने ज़ोर से दबाया कि प्रिंसेस मरीया दर्द से बेचैन हो गयी और धीरे से चीख़ उठी।

प्रिंस वसीली उठकर खड़ा हो गया।

"मेरी प्यारी, मैं आपसे यह कहे बिना नहीं रह सकता कि इस क्षण को कभी नहीं भूल सकूंगा। लेकिन मेरी बहुत ही दयालु, आप हमें थोड़ी-सी आशा तो बंधवाइये कि आपके इस अत्यधिक कोमल, अत्यधिक उदार हृदय को कभी तो छूना सम्भव होगा। इतना ही कह दीजिये – शायद कभी ऐसा हो सके ... भविष्य तो बहुत बड़ा है। इतना ही कह दीजिये: शायद कभी ऐसा हो सके।"

"प्रिंस, मैंने जो कुछ कहा है, मेरे दिल में उससे अधिक और कुछ नहीं। आपने मुझे जो सम्मान प्रदान किया, उसके लिये आपकी आभारी हूं, मगर आपके बेटे की पत्नी मैं कभी नहीं बनूंगी।"

"तो क़िस्सा ख़त्म हो गया, मेरे प्यारे। बहुत ख़ुशी हुई तुम्हारे आने से, बहुत ख़ुशी हुई। प्रिंसेस, अपने कमरे में जाओ," बुज़ुर्ग प्रिंस ने कहा। "बहुत, बहुत ख़ुशी हुई तुम्हारे आने से," उन्होंने प्रिंस वसीली को गले लगाते हुए कहा।

"मेरे जीवन का ध्येय दूसरा है," प्रिंसेस मरीया मन ही मन सोच रही थी, "मेरे जीवन का ध्येय दूसरे ही सुख-सौभाग्य, प्यार और आत्म-त्याग के सुख से सुखी होना है। मुझे चाहे कुछ भी क्यों न करना पड़े, मैं बेचारी अमेली को आवश्य सुखी बनाऊंगी। वह इसे इतना अधिक प्यार करता है। वह इतनी अधिक पछता रही है। इसके साथ इसकी शादी करवाने के लिये मैं अपना पूरा ज़ोर लगाऊंगी। अगर वह धनी नहीं है तो मैं उसे धन-दौलत दे दूंगी, इसके लिये पिता जी से अनुरोध करूंगी, अन्द्रेई से अनुरोध करूंगी। जब वह इसकी पत्नी बन जायेगी तो मुझे बहुत ही ख़ुशी होगी। वह इतनी बदक़िस्मत, परायी, एकाकी और बेसहारा है! अगर उसे अपनी सुध-बुध ही नहीं रही तो कितना अधिक प्यार करती है वह उसे। शायद मैंने भी ऐसा ही किया होता!..." प्रिंसेस मरीया सोच रही थी।

६

रोस्तोव परिवार को बहुत समय तक निकोलाई की कोई ख़बर नहीं मिली। जाड़े के मध्य में ही काउंट को अपने बेटे के हाथ से लिखे गये पतेवाला पत्र मिला। पत्र मिलने पर इस बात की कोशिश करते हुए कि किसी को इसका पता न चले, घबराये-से काउंट पंजों के बल जल्दी-जल्दी क़दम बढ़ाते हुए अपने कमरे में गये, उन्होंने दरवाज़ा बन्द किया और उसे पढ़ने लगे। आन्ना मिख़ाइलोव्ना को यह मालूम होने पर (जैसे कि उसे घर में होनेवाली हर बात के बारे में मालूम होता ही था) कि पत्र आया है, दबे पांव काउंट के कमरे में दाख़िल हुई और उसने काउंट को पत्र हाथों में लिये सिसकते और साथ ही हंसते हुए पाया।

आन्ना मिख़ाइलोव्ना अपनी माली हालत के बेहतर हो जाने के बावजूद रोस्तोव परिवार में ही रहती जा रही थी।

"क्या बात है, मेरे दयालु मित्र?" आन्ना मिख़ाइलोव्ना ने हर प्रकार की दिलचस्पी ज़ाहिर करने के लिये तत्परता दिखाते हुए उदासी भरी आवाज़ में पूछा।

काउंट और भी ज़्यादा ज़ोर से सिसकने लगे।

"प्यारे निकोलाई का... पत्र आया है... घायल हो... हो गया था... मेरा प्यारा बच्चा... ओह, मेरी काउंटेस... अब उसे अफ़सर बना दिया गया... शुक्र है भगवान का... प्यारी काउंटेस को कैसे बताया जाये?..."

आन्ना मिख़ाइलोव्ना काउंट के पास बैठ गयी, उसने अपने रूमाल से उसकी आंखें और उसके आंसुओं के कारण पत्र पर पड़ गये धब्बे पोंछे, अपने आंसुओं को भी पोंछा, पत्र पढ़ा, काउंट को तसल्ली दी और यह तय किया कि दोपहर के खाने तथा शाम की चाय तक वह काउंटेस को मानसिक दृष्टि से तैयार कर लेगी और अगर भगवान ने उसकी मदद की तो चाय के बाद उसे सब कुछ बता देगी।

दोपहर के भोजन के समय आन्ना मिख़ाइलोव्ना लगातार युद्ध-सम्बन्धी अफ़वाहों और निकोलाई की चर्चा करती रही, उसने दो बार यह पूछा कि उसका आख़िरी ख़त कब आया था, यद्यपि वह इसके बारे में पहले से जानती थी, और यह कहा कि बहुत सम्भव है कि आज भी उसका कोई पत्र आ जाये। ऐसे संकेतों पर काउंटेस हर बार ही परेशान होने लगती और व्याकुलता से कभी काउंट तो कभी आन्ना मिख़ाइलोव्ना की तरफ़ देखती। आन्ना मिख़ाइलोव्ना बहुत ही चतुराई से बातचीत को बड़ी मामूली बातों की ओर मोड़ देती। पूरे रोस्तोव परिवार में बोलने के अन्दाज़, देखने के ढंग और चेहरे के भावों के सूक्ष्म अन्तरों को सबसे अधिक अनुभव करने की क्षमता रखनेवाली नताशा भोजन के शुरू होने के वक़्त से ही चौकन्नी हो गयी थी और जानती थी कि उसके पिता और आन्ना मिख़ाइलोव्ना कोई रहस्य जानते हैं जिसका उसके भाई से सम्बन्ध है और यह कि आन्ना मिख़ाइलोव्ना इस मामले की चर्चा करने के लिये ज़मीन तैयार कर रही है। अपनी सारी दिलेरी के बावजूद (नताशा यह जानती थी कि निकोलाई से सम्बन्धित किसी भी ख़बर के बारे में मां कितनी अधिक संवेदनशील थीं), वह भोजन के वक़्त कुछ भी पूछने की हिम्मत नहीं कर पायी, बेचैनी के कारण उसने कुछ भी नहीं खाया और अपनी शिक्षिका की टीका-टिप्पणियों की तरफ़ कोई ध्यान न देते हुए कुर्सी पर बेचैनी से इधर-उधर हिलती-डुलती रही। भोजन के बाद वह तेज़ी से आन्ना मिख़ाइलोव्ना के पीछे-पीछे भागी, बैठक में उसके पास पहुंचकर उसने

उसके गले में अपनी बांहें डाल दीं।

"प्यारी आंटी, बताइये न कि बात क्या है?"

"कुछ भी नहीं, बिटिया।"

"नहीं, मेरी अच्छी, मेरी बहुत ही प्यारी, मेरी मीठी-मीठी आंटी, मैं आपका पीछा नहीं छोड़ूंगी। मैं जानती हूं कि आपको ज़रूर कुछ मालूम है।"

आन्ना मिख़ाइलोव्ना ने लाचारी से सिर हिलाया।

"बड़ी शैतान हो तुम," उसने कहा।

"निकोलाई का ख़त आया है? ठीक है न?" आन्ना मिख़ाइलोव्ना के चेहरे पर अनुमोदन का भाव पढ़ते हुए नताशा चिल्ला उठी।

"भगवान के लिये सावधानी से काम लेना। तुम तो जानती ही हो कि तुम्हारी मां पर इसका क्या असर हो सकता है।"

"हां, हां, सावधान रहूंगी। नहीं बतायेंगी? तो मैं अभी जाकर मां से कह दूंगी।"

आन्ना मिख़ाइलोव्ना ने इस शर्त पर कि नताशा किसी से भी इसकी चर्चा नहीं करेगी, थोड़े से शब्दों में उसे पत्र का सार बता दिया।

"क़सम खाती हूं, पक्का वादा करती हूं कि किसी से कोई ज़िक्र नहीं करूंगी," अपने ऊपर सलीब का निशान बनाते हुए नताशा ने विश्वास दिलाया, "किसी से कुछ भी नहीं कहूंगी," और इसी क्षण सोन्या के पास भाग गयी।

"निकोलाई... घायल... ख़त आया है..." उसने बड़े उत्साह और उल्लास से घोषणा की।

"निकोलाई!" सोन्या केवल इतना ही कह पायी और इसी क्षण उसके चेहरे का रंग उड़ गया।

भाई के घायल होने की ख़बर से सोन्या पर जो प्रभाव पड़ा, उसे देखकर ही नताशा को इस समाचार के दुखद पक्ष की पहली बार चेतना हुई।

वह सोन्या की ओर लपकी, उसने उसे बांहों में भर लिया और रो पड़ी।

"थोड़ा-सा घायल हुआ है और अफ़सर बना दिया गया है। अब वह बिल्कुल ठीक-ठाक है, उसने ख़ुद लिखा है," नताशा ने आंसू बहाते हुए कहा।

"साफ़ नज़र आ रहा है कि तुम, सभी औरतें, रोना-धोना ख़ूब जानती हो," पेत्या ने बड़े-बड़े और दृढ़ क़दमों से कमरे में चहलक़दमी करते हुए कहा। "मैं तो बहुत ख़ुश हूं, सचमुच, बहुत ख़ुश हूं कि मेरे भाई ने ऐसी बहादुरी दिखायी है। तुम सब रोनी सूरतें हो! कुछ भी तो नहीं समझतीं।"

नताशा रोते-रोते ही मुस्करा दी।

"तुमने ख़त नहीं पढ़ा?" सोन्या ने पूछा।

"नहीं पढ़ा, लेकिन आंटी ने बताया है कि वह भला-चंगा है और अफ़सर बन गया है..."

"शुक्र है भगवान का," सोन्या ने अपने ऊपर सलीब का निशान बनाते हुए कहा। "लेकिन हो सकता है कि आंटी ने झूठ-मूठ ही ऐसे कह दिया हो? आओ, मां के पास चलें।"

पेत्या चुपचाप कमरे में चक्कर लगाता जा रहा था।

"अगर मैं निकोलाई की जगह होता तो और भी ज़्यादा संख्या में इन फ़्रांसीसियों को मौत के घाट उतारता," वह बोला, "ऐसे दरिन्दे हैं वे! मैं तो इतने अधिक मारता कि उनकी लाशों के ढेर लग जाते," पेत्या कहता गया।

"चुप रह, पेत्या, तू बड़ा बेवक़ूफ़ है!.."

"बेवक़ूफ़ तो मैं नहीं, बल्कि वे हैं जो ज़रा-ज़रा-सी बात पर टसुए बहाती हैं," पेत्या ने जवाब दिया।

"निकोलाई तुम्हें याद है?" क्षण भर की चुप्पी के बाद नताशा ने अचानक पूछा। सोन्या मुस्करायी।

"मुझे निकोलाई याद है या नहीं?"

"नहीं सोन्या, मेरा मतलब यह है कि तुम्हें वह इस तरह, इतनी अच्छी तरह से याद है कि उसकी पूरी आकृति को अपने सामने देख सको," नताशा ने ज़ोरदार संकेत से कहा। वह अपने शब्दों को स्पष्टतः बहुत गम्भीर अर्थ प्रदान करना चाहती थी। "निकोलाई तो मुझे भी याद है, मुझे भी याद है," उसने कहा। "मगर बोरीस याद नहीं है। बिल्कुल याद नहीं..."

"कैसे याद नहीं? तुम्हें बोरीस याद नहीं?" सोन्या ने हैरानी से पूछा।

"ऐसा तो नहीं कि मुझे वह याद नहीं – मैं जानती हूं कि वह

कैसा लगता है, लेकिन उस तरह से याद नहीं जैसे निकोलाई याद है। उसे तो मैं आंखें मूंदने पर अपने सामने देख सकती हूं, मगर बोरीस को नहीं (उसने आंखें मूंद लीं), नहीं, कुछ भी तो नहीं है मेरे सामने!"

"ओह, नताशा!" सोन्या ने अपनी सहेली को उल्लासपूर्वक और गम्भीरता से देखते हुए ऐसे कहा मानो वह उसे वे शब्द सुनने के लायक़ न समझती हो जो कहने जा रही थी और मानो उन्हें किसी अन्य व्यक्ति से कह रही हो जिसके साथ मज़ाक़ करना असम्भव हो–"मैंने तो हमेशा के लिये तुम्हारे भाई को प्यार किया है और अब उसके साथ और मेरे साथ चाहे कुछ भी क्यों न हो जाये, मैं उसे जीवन भर प्यार करती रहूंगी।"

नताशा ने हैरान होकर कुतूहल से सोन्या की तरफ़ देखा और चुप रही। उसने अनुभव किया कि सोन्या ने जो कुछ कहा था, वह सच था, कि ऐसा प्यार भी है जिसकी सोन्या ने चर्चा की थी। किन्तु नताशा को अभी तक ऐसी कोई अनुभूति नहीं हुई थी। वह विश्वास करती थी कि ऐसा प्यार हो सकता है, किन्तु इसे समझती नहीं थी।

"तुम उसे पत्र लिखोगी?" नताशा ने पूछा।

सोन्या सोचने लगी। यह प्रश्न कि वह निकोलाई को कैसे पत्र लिखे और उसे ऐसा करना भी चाहिये या नहीं, उसके लिये यातनापूर्ण प्रश्न था। अब, जबकि वह अफ़सर बन गया था, घायल हो चुका हीरो था, क्या उसके लिये उसे अपनी याद दिलाना और एक तरह से उस वादे की याद दिलाना उचित होगा जो उसने उसके साथ किया था।

"मैं नहीं जानती। सोचती हूं कि अगर वह मुझे पत्र लिखेगा तो मैं भी उसे लिख दूंगी," उसने लज्जारुण होते हुए उत्तर दिया।

"और तुम्हें उसे पत्र लिखते हुए झेंप महसूस नहीं होगी?"

सोन्या मुस्करायी।

"नही।"

"लेकिन मुझे तो बोरीस को पत्र लिखते हुए झेंप महसूस होगी। मैं उसे पत्र नहीं लिखूंगी।"

"इसमें झेंप की कौन-सी बात है?"

"बस, ऐसे ही, मुझे मालूम नहीं। ऐसा करना अटपटा-सा लगता है, शर्म आती है।"

"मैं जानता हूं कि इसे ऐसा करते हुए क्यों शर्म महसूस होगी," पेत्या ने कहा जो उसकी कुछ ही समय पहले की गयी टिप्पणी के कारण उससे नाराज़ था, "इसलिये कि यह उस चश्माधारी मोटे (पेत्या अपने हमनाम, नये जवान काउंट बेज़ूख़ोव का ऐसे ही उल्लेख करता था) की प्रेम-दीवानी थी और अब इस गवैये (पेत्या का नताशा के इतालवी संगीत-शिक्षक से अभिप्राय था) को प्यार करती है। इसीलिये इसे शर्म महसूस होती है।"

"पेत्या, तुम बुद्धू हो," नताशा ने कहा।

"तुमसे ज़्यादा बुद्धू नहीं हूं, देवी जी," नौ साल के पेत्या ने ऐसे कहा मानो वह कोई बुज़ुर्ग ब्रिगेडियर हो।

दोपहर के भोजन के वक़्त आन्ना मिख़ाइलोव्ना के संकेतों से काउंटेस को मानसिक रूप से तैयार कर दिया गया था। अपने कमरे में जाकर वह आरामकुर्सी पर बैठ गयीं, उनकी नज़रें नासदानी पर बने हुए बेटे के लघुचित्र पर टिकी रहीं और उनकी आंखों में आंसू उमड़ते-घुमड़ते रहे। आन्ना मिख़ाइलोव्ना पत्र लिये हुए काउंटेस के कमरे के पास दबे पांव जाकर रुक गयी।

"अभी भीतर नहीं आइये," उसने अपने पीछे-पीछे आनेवाले बूढ़े काउंट से कहा, "बाद में," और कमरे में जाकर दरवाज़ा बन्द कर लिया।

काउंट ने चाबी के सूराख़ के साथ अपना कान लगा दिया।

शुरू में उन्हें मामूली बातचीत की आवाज़ें सुनायी दीं, इसके बाद लम्बा भाषण देती-सी सिर्फ़ आन्ना मिख़ाइलोव्ना की आवाज़, इसके पश्चात एक चीख़ सुन पड़ी, फिर ख़ामोशी छा गयी, इसके बाद ख़ुशी के लहजे में बातें करती दोनों आवाज़ें और फिर पांवों की आहट सुनने को मिली। इसी क्षण आन्ना मिख़ाइलोव्ना ने दरवाज़ा खोल दिया। आन्ना मिख़ाइलोव्ना के चेहरे पर किसी सर्जन का ऐसा गर्वीला भाव था जिसने कोई कठिन अंग काट दिया हो और जो अब दर्शकों को अपनी कला परखने के लिये आमन्त्रित कर रहा हो।

"सब ठीक है!" उसने विजेता की तरह काउंटेस की ओर संकेत करते हुए कहा जो एक हाथ में बेटे के लघुचित्रवाली नासदानी और

दूसरे में पत्र लिये थीं और कभी लघुचित्र तो कभी पत्र को चूमती जा रही थीं।

काउंट को देखकर उन्होंने उनकी तरफ़ अपनी बांहें फैला दीं, उनके गंजे सिर को बांहों में भर लिया, गंजे सिर के ऊपर से पत्र और लघुचित्र को देखा और उन्हें फिर से चूमने के लिये काउंट के गंजे सिर को थोड़ा-सा पीछे हटा दिया। वेरा, नताशा, सोन्या और पेत्या कमरे में आ गये। पत्र को सब के सामने पढ़ा जाने लगा। पत्र में फ़ौजी कूच, उन दो लड़ाइयों का, जिनमें निकोलाई ने भाग लिया था और इस बात का संक्षिप्त वर्णन था कि कैसे उसे अफ़सर बना दिया गया है। इसके बाद यह कहा गया था कि वह अम्मां तथा पापा के हाथ चूमता है, उनसे आशीर्वाद देने का अनुरोध करता है, वेरा, नताशा, और पेत्या को चूमता है। इसके अलावा उसने मिस्टर शेलिंग तथा मदाम शोस तथा अपनी आया को अभिवादन भेजा था और यह प्रार्थना भी की थी कि प्यारी सोन्या को उसकी ओर से चूमा जाये जिसे वह पहले की तरह ही प्यार करता है और हमेशा याद रखता है। ये शब्द सुनकर सोन्या शर्म से एकदम लाल हो गयी और उसकी आंखें छलछला आयीं। अपनी ओर केन्द्रित सब की नज़रों की ताब न लाते हुए वह हॉल में भाग गयी, इधर-उधर दौड़ती और चक्कर काटती रही, यहां तक कि उसका फ़्रॉक ग़ुब्बारे की तरह फूल गया और उत्तेजना से लाल चेहरा तथा होंठों पर मुस्कान लिये हुए फ़र्श पर बैठ गयी। काउंटेस रो रही थीं।

"आप रो किसलिये रही हैं, अम्मां?" वेरा ने कहा। "असने जो कुछ लिखा है, उससे तो रोना नहीं, ख़ुश होना चाहिये।"

वेरा की यह बात बिल्कुल न्यायसंगत थी, किन्तु काउंट, काउंटेस और नताशा – सभी ने उसकी ओर भर्त्सना की दृष्टि से देखा। "मालूम नहीं, किस पर गयी है यह!" काउंटेस ने सोचा।

निकोलाई का पत्र सैकड़ों बार पढ़ा गया और जिन्हें इसे सुनने के लायक़ समझा जाता था, उन्हें काउंटेस के पास जाकर ही सुनना होता था, क्योंकि वह इसे किसी दूसरे को नहीं देती थीं। शिक्षक आये, आयायें आयीं, मीत्या और कुछ परिचित इसे सुनने आये। काउंटेस हर बार ही एक नया आनन्द अनुभव करते हुए इसे पढ़तीं और हर बार ही इस पत्र से उन्हें अपने बेटे की कुछ नयी ख़ूबियों की अनुभूति

होती। उन्हें यह बात कितनी अजीब, असाधारण और ख़ुशी भरी लग रही थी कि उनका बेटा – बीस साल पहले बहुत ही छोटे-छोटे अंगों-वाला उनका वही बेटा जो उनके पेट में ज़रा-ज़रा हिल-डुल करता था, वही बेटा जिसके लिये वह कई बार काउंट से लड़ी-झगड़ी थीं क्योंकि वह उसे लाड़-प्यार से बिगाड़ते थे, वही बेटा, जो "मां" के बजाय "नाशपाती" शब्द पहले बोलने लगा था, वही बेटा अब पराये देश और पराये वातावरण में बहादुर सूरमा था और किसी की मदद, किसी के मार्ग-निर्देशन के बिना वहां पुरुषोचित अपना काम कर रहा था। सारी दुनिया के सदियों के इस अनुभव का काउंटेस के लिये कोई अस्तित्व ही नहीं था कि बच्चे अनजाने ही पालनों से जवानी की उम्र तक पहुंच जाते हैं। उनके बेटे के विकास का हर चरण ही उन्हें इतना असाधारण प्रतीत हुआ था मानो लाखों-करोड़ों लोग कभी इस तरह से जवान ही नहीं हुए थे। जैसे बीस साल पहले उन्हें यह विश्वास नहीं होता था कि वह नन्हा-सा प्राणी, जो कहीं उनके दिल के पास सांस ले रहा था, एक दिन रोने-चिल्लाने और उनका दूध पीने लगेगा, वैसे ही अब यह विश्वास नहीं होता था कि यही नन्हा-सा प्राणी वह शक्ति-शाली और बड़ा साहसी मर्द, दूसरों के बेटों तथा लोगों के लिये आदर्श-उदाहरण बन सकता है, जैसा कि उसके इस पत्र के आधार पर अब वह था।

"क्या बढ़िया शैली है उसकी, कितने अच्छे ढंग से वर्णन करता है!" पत्र के विवरणात्मक भागों को पढ़ते हुए वह कहतीं। "और कैसी उदात्त आत्मा है उसकी! अपने बारे में एक शब्द नहीं... एक शब्द भी नहीं! किसी देनीसोव का उल्लेख किया है, जबकि मुझे यक़ीन है कि ख़ुद वह उन सभी से ज़्यादा बहादुर है। अपनी व्यथा-पीड़ा की चर्चा तक नहीं। कैसा लाजवाब दिल है उसका! कितना उसके अनुरूप है! और कैसे उसने सभी को याद किया है! किसी को भी तो नहीं भूला। मैं तो हमेशा, हमेशा यह कहती रही हूं, जब वह बित्ते भर का था, तब से, मैं तो हमेशा से ही यह कहती रही हूं..."

एक हफ़्ते तक पूरे घर की ओर से निकोलाई के नाम पत्र के कच्चे मसविदे और उनकी साफ़ नक़लें तैयार की गयीं। काउंटेस के निरीक्षण और काउंट की चिन्तापूर्ण देख-रेख में ज़रूरी चीज़ें तथा कुछ ही समय पहले फ़ौजी अफ़सर बननेवाले बेटे की वर्दी और अन्य आवश्यकताओं

की पूर्त्ति के लिये पैसे जमा किये गये। आन्ना मिख़ाइलोव्ना ने, जो बड़ी व्यावहारिक महिला थी, अपने तथा अपने बेटे के लिये सेना में भी संरक्षण प्राप्त कर लिया था और इस तरह उसे उसके साथ पत्र-व्यवहार करने के लिये भी सुविधा मिल गयी थी। उसे गार्ड-सेना के कमांडर, बड़े ड्यूक युवराज कोन्स्तान्तीन पाव्लोविच को अपने पत्र भेजने के भी अवसर मिले थे। रोस्तोव परिवारवाले इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि **विदेश में रूसी गार्ड-सेना** बहुत भरोसे का पता है और अगर उनका पत्र गार्ड-सेना के कमांडर, बड़े ड्यूक तक पहुंच जायेगा तो कोई कारण नहीं कि वह पाव्लोग्राद की रेजिमेंट तक न पहुंचे जिसे कहीं पास में ही होना चाहिये। इसलिये यह तय किया गया कि बड़े ड्यूक के सन्देश-वाहक के ज़रिये पत्र और पैसे बोरीस को भेज दिये जायें जो उन्हें निकोलाई तक पहुंचा दे। बूढ़े काउंट, काउंटेस, पेत्या, वेरा, नताशा और सोन्या के पत्रों के अलावा काउंट ने नयी वर्दी के लिये छः हज़ार रूबल और अन्य बहुत-सी चीज़ें बेटे को भेजीं।

७

युद्ध में भाग लेनेवाली कुतूज़ोव की सेना १२ नवम्बर को ओल्म्यूत्स के निकट पड़ाव डाले थी और अगले दिन रूस और आस्ट्रिया के सम्राटों के निरीक्षण के लिये अपने को तैयार कर रही थी। रूस से उसी समय आनेवाली गार्ड-सेना ओल्म्यूत्स से कोई सत्रह किलोमीटर दूर ठहरी हुई थी और अगली सुबह को दस बजे सीधे ओल्म्यूत्स के परेड-मैदान में पहुंच गयी जहां सेना-निरीक्षण होनेवाला था।

निकोलाई रोस्तोव को इसी दिन बोरीस का यह रुक्क़ा मिला कि इज़्माइलोव्स्की रेजिमेंट ओल्म्यूत्स से कोई सत्रह किलोमीटर दूर रात बिता रही है और वह उसे पैसे तथा पत्र देने के लिये उसकी राह देखेगा। रोस्तोव को अब तो पैसों की ख़ास तौर पर बहुत ज़रूरत थी, जब सेनायें लड़ाई में भाग लेने के बाद ओल्म्यूत्स के क़रीब पड़ाव डाले थीं और साज़-सामान से ख़ूब लैस केंटीनों तथा दुकानोंवाले और आस्ट्रिया के यहूदी तरह-तरह की आकर्षक वस्तुओं से मन को ललचा रहे थे।

पाव्लोग्राद की रेजिमेंटवाले लड़ाई में मिले पुरस्कारों के सम्मान में दावतों पर दावतें कर रहे थे और ओल्म्यूत्स में "हंगरी की कारोलीना" के यहां जाते थे जिसने वहां बैरा-लड़कियोंवाला एक रेस्तरां खोला था। निकोलाई रोस्तोव ने कुछ ही समय पहले अपने को अफ़सर बनाये जाने का समारोह मनाया था, देनीसोव का बेदुईन घोड़ा ख़रीद लिया था और अपने साथियों तथा केंटीनवालों का बुरी तरह से क़र्ज़दार हो गया था। बोरीस का रुक्क़ा मिलने पर रोस्तोव अपने एक अफ़सर दोस्त के साथ ओल्म्यूत्स गया, वहां उसने दोपहर का भोजन किया, शराब की बोतल पी और फिर अकेला ही अपने बचपन के दोस्त को ढूंढ़ने के लिये गार्ड-सेना के शिविर की तरफ़ घोड़ा बढ़ा ले चला। रोस्तोव अभी अपनी नयी वर्दी नहीं बनवा पाया था। वह मामूली क्रॉस पदकवाली सैनिक की पुरानी-सी जाकेट पहने था, उसकी बिरजिस भी ऐसी पुरानी-धुरानी ही थी, उसका चमड़ा घिसा हुआ और ख़स्ताहाल था और वह अफ़सरवाली तलवार लगाये था। दोन क्षेत्र के जिस घोड़े पर वह सवार था, उसने उसे अभियान के वक़्त किसी कज़्ज़ाक से ख़रीदा था और हुस्सारों की मुचड़ी-मुचड़ायी टोपी को अपने सिर पर बड़े बांकपन से पीछे की ओर तथा टेढ़े-तिरछे अन्दाज़ में रखे हुए था। इज़्माइलोव्स्की रेजिमेंट के शिविर के पास पहुंचते हुए वह यह सोच रहा था कि कैसे बोरीस और उसके गार्ड-सेना के साथियों को असली लड़ाकू हुस्सार की शक्ल-सूरत से, जो मोर्चे की मुसीबतों का भी सामना कर चुका है, चकित कर देगा।

गार्ड-सेना अपने पूरे कूच के दौरान सफ़ाई और अनुशासन की शान दिखाते हुए ऐसे बढ़ती आयी थी मानो सैर-सपाटे के लिये जा रही हो। थोड़े-थोड़े फ़ासले पर उसके पड़ाव होते थे, उसके थैले घोड़ा-गाड़ियों पर लादकर भेजे जाते थे और सभी पड़ावों पर आस्ट्रिया के संचालक इस सेना के अफ़सरों के लिये बढ़िया दावतों का प्रबन्ध करते थे। इसकी रेजिमेंटें बैंड बजाती हुई शहरों में दाख़िल होतीं और बाहर आतीं और पूरे कूच के दौरात (और गार्ड-सैनिकों को इस बात का बड़ा गर्व था) बड़े ड्यूक के आदेशानुसार सैनिक क़दम से क़दम मिलाकर परेड करते हुए चलते रहे और अफ़सर भी अपनी-अपनी जगहों पर उनका पैदल साथ देते रहे। कूच के सारे समय में बोरीस बेर्ग के साथ-साथ, जो अब कम्पनी-कमांडर बन चुका था चलता और उसके साथ

ही ठहरता रहा। कूच के दौरान कप्तान बन जानेवाले बेर्ग ने अपनी कर्त्तव्य-परायणता और अच्छे आचार-व्यवहार से बड़े अफ़सरों का विश्वास प्राप्त कर लिया था और अपनी आर्थिक स्थिति काफ़ी बेहतर बना ली थी। बोरीस ने कूच के इसी वक़्त में बहुत-से ऐसे लोगों से अपनी जान-पहचान कर ली जो उसके लिये उपयोगी हो सकते थे और प्येर से प्राप्त की गयी सिफ़ारिशी चिट्ठी के आधार पर उसने प्रिंस अन्द्रेई बोल्कोन्स्की से भी परिचय कर लिया था जिसकी मदद से वह प्रधान सेनापति के स्टॉफ़ में जगह हासिल करने की आशा कर रहा था। धुले-धुलाये और ढंग के कपड़े पहने तथा पिछले दिन की यात्रा के बाद आराम करके ताज़ादम हुए बेर्ग और बोरीस अपने साफ़-सुथरे क्वार्टर में गोल मेज़ के सामने बैठे हुए शतरंज खेल रहे थे। बेर्ग धुआं छोड़ते पाइप को घुटनों के बीच दबाये था। बेर्ग के चाल चलने की प्रतीक्षा करते हुए बोरीस ढंग से हर काम करने के अपने अन्दाज़ के अनुरूप पतले-पतले और गोरे-गोरे हाथों से गोटियों की मीनार-सी बना रहा था और सम्भवतः खेल के बारे में सोच रहा था, जैसा कि वह हमेशा उसी चीज़ के बारे में सोचता था जिसमें व्यस्त होता था।

"तो आप कैसे इस स्थिति में से निकलेंगे?" उसने कहा।

"कोशिश करूंगा," बेर्ग ने प्यादे को छूते और फिर उससे अपना हाथ हटाते हुए जवाब दिया।

इसी समय दरवाज़ा खुला।

"ओह, आख़िर तो तुम मिल गये!" रोस्तोव ने चिल्लाकर कहा। "और बेर्ग भी यहां है! अरे तुम, 'बच्चो, बिस्तर पर जाओ!'" उसने अपनी आया द्वारा फ़्रांसीसी में कहे जानेवाले उन शब्दों को ज़ोर से दोहराया जिनपर वे कभी बोरीस के साथ हंसा करते थे।

"हे भगवान, तुम कितने बदल गये हो!" बोरीस रोस्तोव से मिलने के लिये खड़ा हुआ, किन्तु ऐसा करते हुए शतरंज के गिरते मोहरों को सम्भालना और उन्हें उनकी जगह पर ढंग से रखना नहीं भूला। उसने दोस्त को गले लगाना चाहा, मगर निकोलाई पीछे हट गया। जवानी की उस विशेष भावना के अनुरूप, जो घिसी-पिटी लीकों से कतराती है, उसने दूसरों की नक़ल न करते हुए ख़ास अपने और नये ढंग से अपनी भावनायें व्यक्त करना चाहा। केवल उस तरह से नहीं, जैसे बुज़ुर्ग लोग, सो भी अक्सर दिखावे के रूप में व्यक्त करते हैं।

दोस्त से मुलाक़ात होने पर निकोलाई कुछ ख़ास बात ही करना चाहता था – वह चाहता था कि उसे चुटकी काटे, धकिया दे, मगर किसी भी हालत में चूमने का इरादा नहीं रखता था जैसे कि सभी लोग करते हैं। इसके विपरीत, बोरीस ने बड़े शान्त और मैत्रीपूर्ण ढंग से उसे गले लगाया और तीन बार चूमा।

लगभग छः महीनों से इनकी मुलाक़ात नहीं हुई थी। इस उम्र में, जब जवान लोग अपने जीवन-मार्ग पर पहले क़दम बढ़ाते हैं, उन्होंने एक-दूसरे में बहुत ही बड़े परिवर्तन अनुभव किये जो उस नये वातावरण को प्रतिबिम्बित करते थे जिसमें उन्होंने ये पहले डग भरे थे। अपनी अन्तिम भेंट के बाद के समय में दोनों बहुत बदल गये थे और दोनों ही अपने में हुए परिवर्तनों को जल्दी से जल्दी एक-दूसरे को दिखाना चाहते थे।

"अरे, कमबख़्तो, तुम तो कैसे बांके-छैले बने हुए हो! साफ़-सुथरे, ताज़ादम, मानो सैर-सपाटा करके आये हो। हम मुसीबत के मारे मामूली फ़ौजियों जैसे नहीं हो," रोस्तोव ने कीचड़ के छींटोंवाली अपनी गन्दी-मन्दी बिरजिस की ओर संकेत करते हुए बोरीस के लिये नयी तथा भारी आवाज़ और ठेठ फ़ौजी अन्दाज़ में कहा।

रोस्तोव की ऊंची आवाज़ सुनकर जर्मन गृह-स्वामिनी ने दरवाज़े में से भीतर झांका।

"ख़ासी अच्छी है न?" रोस्तोव ने जर्मन औरत की तरफ़ आंख से इशारा करते हुए कहा।

"तुम ऐसे चीख़-चिल्ला क्यों रहे हो? घर के लोगों को डरा दोगे," बोरीस ने कहा। "मैंने तुम्हारे आज आने की उम्मीद नहीं की थी," उसने अपनी बात जारी रखी। "मैंने तो कल ही अपने एक परिचित, कुतूज़ोव के एडजुटेंट बोल्कोन्स्की के ज़रिये तुम्हें रुक़्क़ा भेजा था। मैंने तो ऐसा सोचा ही नहीं था कि वह इतनी जल्दी उसे तुम तक भिजवा देगा। तो कैसा हाल-चाल है तुम्हारा? गोलियों का मजा भी चख चुके?" बोरीस ने पूछा।

रोस्तोव ने कोई जवाब नहीं दिया, फ़ौजी ढंग से अपनी वर्दी की डोरी के साथ लटकते हुए सेंट जार्ज के क्रॉस को झटक दिया, अपने पट्टी बंधे हाथ की तरफ़ इशारा किया और मुस्कराकर बेर्ग की ओर देखा।

"जैसा कि देख रहे हो," उसने कहा।

"हां, हां, नज़र आ रहा है!" बोरीस ने मुस्कराकर जवाब दिया, "और हमारा कूच भी बहुत बढ़िया रहा है। बात यह है कि युवराज लगातार हमारी रेजिमेंट के साथ ही रहे और इसलिये हमें सभी तरह के आराम मिले, सभी सुविधायें मिलीं। पोलैंड में क्या कमाल की दावतें हुईं, कैसे शानदार बॉल-नृत्य आयोजित किये गये – मैं बयान नहीं कर सकता! युवराज हमारे सभी अफ़सरों के साथ बहुत ही अच्छी तरह से पेश आते रहे।"

और दोनों दोस्त एक-दूसरे को अपने-अपने अनुभव बताने लगे – एक तो हुस्सारों के साथ रंग-रलियों और मोर्चे की ज़िन्दगी के बारे में तथा दूसरा ज़ार-परिवार के सदस्य की कमान में सैन्य-सेवा के आनन्द और लाभों आदि के सम्बन्ध में।

"ओह, तुम गार्ड-सेनावाले!" रोस्तोव ने कहा। "सुनो, तुम किसी को शराब की बोतल लाने के लिये तो भेजो।"

बोरीस ने मुंह बनाया।

"अगर तुम ज़रूर ही पीना चाहते हो," उसने कहा।

वह पलंग के पास गया और एकदम साफ़-सुथरे तकियों के नीचे से बटुआ निकालकर उसने शराब लाने के लिये किसी को भेज दिया।

"और हां, तुम अपने पैसे तथा पत्र भी ले लो," उसने इतना और कह दिया।

रोस्तोव ने पत्र ले लिया और पैसों का बटुआ सोफ़े पर फेंककर तथा मेज़ पर दोनों कोहनियां टिकाकर उसे पढ़ने लगा। उसने कुछ पंक्तियां पढ़ीं और ग़ुस्से से बेर्ग की तरफ़ देखा। उससे नज़र मिलने पर रोस्तोव ने पत्र की ओट में मुंह छिपा लिया।

"ख़ैर, रक़म तो आपको ख़ासी बड़ी भेजी गयी है," बेर्ग ने सोफ़े में धंस गये भारी बटुए की ओर देखते हुए कहा। "हम लोग तो किसी तरह अपनी तनख़्वाह से ही काम चलाते हैं, काउंट। मैं आपको अपने बारे में बता सकता हूं..."

"सुनिये, मेरे प्यारे बेर्ग," रोस्तोव बोला। "जब आपके घर से ख़त आयेगा और आप किसी अपने ऐसे अन्तरंग व्यक्ति से मिलेंगे जिससे सभी चीज़ों के बारे में पूछ-ताछ करना चाहेंगे और मैं वहां उपस्थित हूंगा – तो उसी क्षण वहां से चलता बनूंगा, ताकि मेरी वजह

से कोई ख़लल न पड़े। इसलिये मेरी बात सुनिये, यहां से बाहर चले जाइये, कृपया, कहीं, कहीं भी चले जाइये ... जहन्नुम में चले जाइये!" वह चिल्ला उठा और उसी क्षण सम्भवतः अपने शब्दों के उजड्डपन को कुछ कम करने की कोशिश करते हुए उसने उसका कन्धा पकड़कर तथा प्यार से उसके चेहरे को देखते हुए यह भी कह दिया: "देखिये, बुरा नहीं मानिये, मेरे प्यारे, भले आदमी। मैंने तो अपने एक पुराने परिचित की तरह किसी प्रकार की लाग-लपेट के बिना, सच्चे दिल से आपसे ऐसा कहा है।"

"नहीं, नहीं, इसमें बुरा मानने की क्या बात है, काउंट, मैं ख़ूब अच्छी तरह से समझता हूं," बेर्ग ने उठते और दबे-घुटे कंठ्य स्वर में बोलते हुए जवाब दिया।

"आप मकान-मालिकों के यहां हो आइये, उन्होंने आपको बुलवाया भी था," बोरीस ने अपनी ओर से कहा।

बेर्ग ने एक भी धब्बे और धूलकण के बिना साफ़-सुथरा फ़्रॉक-कोट पहना, आईने के सामने खड़े होकर सम्राट अलेक्सान्द्र पाव्लोविच के अन्दाज़ में कनपटियों पर अपनी ज़ुल्फ़ को ऊपर की ओर संवारा और रोस्तोव की नज़र से इस बात का पूरा विश्वास करके कि उसके फ़्रॉक-कोट की तरफ़ ध्यान दिया गया है, मधुरता से मुस्कराता हुआ कमरे से बाहर चला गया।

"ओह, कैसा गधा हूं मैं!" पत्र पढ़ते हुए रोस्तोव कह उठा।

"क्यों, क्या हो गया?"

"ओह, कैसा सूअर हूं मैं कि मैंने घरवालों को एक भी ख़त नहीं लिखा और इस बुरी तरह से उन्हें डरा दिया। ओह, कैसा सूअर हूं मैं!" उसने अचानक शर्म से लाल होते हुए कहा। "ख़ैर, तुमने गव्रीला को शराब लाने के लिये भेज दिया न! पियेंगे!" वह बोला।

घरवालों के पत्रों में प्रिंस बग्रातिओन के नाम एक सिफ़ारिशी चिट्ठी भी थी जो बूढ़ी काउंटेस ने आन्ना मिख़ाइलोव्ना की सलाह पर किन्हीं परिचितों के ज़रिये हासिल की थी और यह अनुरोध करते हुए बेटे को भेजी थी कि वह उसे प्रिंस बग्रातिओन को दे दे और इससे फ़ायदा उठाये।

"यह क्या बकवास है! बड़ी ज़रूरत पड़ी है मुझे इसकी," ख़त को मेज़ के नीचे फेंकते हुए रोस्तोव ने कहा।

“तुमने इसे फेंक क्यों दिया?” बोरीस ने पूछा।

“कोई सिफ़ारिशी चिट्ठी है, मुझे क्या लेना-देना है इससे!”

“कैसे लेना-देना नहीं?” चिट्ठी को उठाकर उसका सिरनामा पढ़ते हुए बोरीस ने कहा। “यह तुम्हारे लिये बहुत काम की चिट्ठी है।”

“मुझे इसकी ज़रूरत नहीं और मैं किसी का एडजुटेंट नहीं बनना चाहूंगा।”

“भला क्यों?”

“इसलिये कि यह अर्दली जैसा काम है!”

“देख रहा हूं कि तुम तो अब भी पहले जैसे ही आदर्शवादी हो,” बोरीस ने अफ़सोस से सिर हिलाते हुए कहा।

“और तुम पहले जैसे ही डिप्लोमैट। ख़ैर, हटाओ इस बात को...”

“तो कैसा हाल-चाल है तुम्हारा?” रोस्तोव ने पूछा।

“जैसा कि देख रहे हो। अभी तक तो सब कुछ बहुत अच्छा है। लेकिन यह स्वीकार करता हूं कि मैं मोर्चे पर रहने के बजाय एडजुटेंट बन जाने को बहुत इच्छुक हूं।”

“किसलिये?”

“इसलिये कि अगर फ़ौज की नौकरी कर ही ली है तो जहां तक मुमकिन हो, इसे ज़्यादा से ज़्यादा शानदार कैरियर बनाना चाहिये।”

“ओह, यह बात है!” रोस्तोव ने सम्भवतः किसी दूसरी चीज़ के बारे में सोचते हुए कहा।

वह किसी सवाल का उत्तर पाने के लिये शायद व्यर्थ ही अपने दोस्त को एकटक और प्रश्नसूचक दृष्टि से देखता रहा।

बूढ़ा नौकर गव्रीला शराब ले आया।

“तो क्या अब बेर्ग को न बुलवा लिया जाये?” बोरीस ने पूछा। “वह तुम्हारे साथ पी लेगा, लेकिन मैं नहीं पी सकता।”

“बुलवा लो, बुलवा लो! इस जर्मन के साथ कैसी निभ रही है?” रोस्तोव ने तिरस्कारपूर्ण मुस्कान के साथ पूछा।

“वह बहुत, बहुत ही अच्छा, ईमानदार और प्यारा आदमी है,” बोरीस ने जवाब दिया।

रोस्तोव ने एक बार फिर टकटकी बांधकर बोरीस की आंखों में देखा और आह भरी। बेर्ग वापस आ गया और शराब पीते हुए तीनों अफ़सरों के बीच ख़ूब ज़िन्दादिली से बातें होने लगीं। गार्ड-सेना के

अफ़सरों यानी बेर्ग और बोरीस ने रोस्तोव को अपने कूच तथा इस बारे में बताया कि कैसे रूस, पोलैंड और विदेशों में उनका स्वागत-सत्कार हुआ। उन्होंने अपने कमांडर, युवराज के कथनों और कार्य-कलापों की चर्चा की, उनकी उदारता और तुनकमिज़ाजी के क़िस्से सुनाये। बेर्ग सदा की भांति उस समय ख़ामोश रहा, जब बातों का उससे कोई सम्बन्ध नहीं होता था। किन्तु युवराज की गर्ममिज़ाजी की चर्चा शुरू होने पर उसने बड़ा मज़ा लेते हुए यह बताया कि कैसे गालीत्सिया में उसे उस समय युवराज से बात करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जब उन्होंने रेजिमेंट का निरीक्षण किया और वह सैनिकों की चाल से नाख़ुश होकर भड़क उठे। चेहरे पर बड़ी सुखद मुस्कान के साथ उसने बताया कि ग़ुस्से से आग-बबूला होते हुए युवराज अपने घोड़े को उसके क़रीब लाकर चिल्ला उठे : "वहशी!" (ग़ुस्से में होने पर युवराज की यही मनपसन्द गाली होती थी), और उन्होंने कम्पनी-कमांडर को अपने सामने पेश होने का हुक्म दिया।

"विश्वास कीजिये, काउंट, मैं ज़रा भी डरा-घबराया नहीं, क्योंकि जानता था कि मुझसे कहीं कोई भूल नहीं हुई। जानते हैं, काउंट, किसी भी तरह की डींग हांके बिना मैं यह कह सकता हूं कि मुझे रेजिमेंट से सम्बन्धित सभी आदेश-अनुदेश और नियम भी वैसे ही जबानी याद हैं जैसे भगवान की प्रार्थना। इसलिये, काउंट, मेरी फ़ौजी कम्पनी में कभी किसी छोटी-सी बात की भी अवहेलना नहीं की जाती। यही कारण है कि मेरी आत्मा निश्चिन्त रहती है। सो मैं हाज़िर हुआ।" (बेर्ग खड़ा हो गया और उसने यह दिखाया कि कैसे सलूट के रूप में अपनी फ़ौजी टोपी के साथ हाथ सटाये हुए वह युवराज के सामने गया। वास्तव में ही चेहरे के भाव द्वारा इससे अधिक आदर और आत्मसन्तोष प्रकट करना कठिन था।) "वह मुझपर बरसे, जैसा कि कहा जाता है, ख़ूब बरसे, बेहद बरसे, जैसा कि कहते हैं, मेरे लिये ज़िन्दगी की नहीं, मौत की सी नौबत आ गयी। वह 'वहशी' और 'शैतान के चर्ख़े' कहकर चिल्लाये, उन्होंने साइबेरिया* भेजने की धमकी दी," बेर्ग ने अपनी चतुर मुस्कान के साथ कहा। "मैं जानता था कि मुझसे कोई भूल नहीं हुई और इसलिये मैं चुप रहा।

---

* निर्वासन की जगह। – अनु०

ठीक है न, काउंट? 'तुम क्या गूंगे हो?' युवराज चिल्ला उठे। मैं तब भी चुप्पी साधे रहा। और आप कल्पना कर सकते हैं, काउंट? अगले दिन इस मामले का कहीं उल्लेख तक नहीं किया गया। तो ऐसा अच्छा नतीजा होता है अपना सन्तुलन बनाये रखने का। सच कहता हूं, काउंट," बेर्ग ने अपना पाइप सुलगाते और धुएं के छल्ले उड़ाते हुए कहा।

"हां, यह तो ख़ूब क़िस्सा रहा," रोस्तोव ने मुस्कराते हुए मत प्रकट किया।

किन्तु बोरीस ने यह भांपकर कि रोस्तोव बेर्ग का मज़ाक़ उड़ाने जा रहा है, बड़ी चतुराई से बातचीत को बदल दिया। उसने रोस्तोव से यह बताने का अनुरोध किया कि उसे कैसे और कहां चोट लगी थी। रोस्तोव को इससे ख़ुशी हुई, उसने यह बताना शुरू किया और बताते हुए अधिकाधिक जोश में आता गया। उसने उन्हें अपनी शेनग्राबेन की घटना उसी तरह से सुनायी जैसे लड़ाइयों में हिस्सा लेनेवाले उनके बारे में सामान्यतः सुनाते हैं यानी उस तरह, जैसे वे चाहते हैं कि वे होतीं, उस तरह, जैसे उन्होंने दूसरों से उनके बारे में सुना होता है, उस तरह, जैसे उन्हें सुनाना अच्छा लगता है, किन्तु बिल्कुल उस तरह से नहीं, जैसे वे वास्तव में हुई थीं। रोस्तोव सच बोलनेवाला नौजवान था, उसने किसी हालत में भी जान-बूझकर झूठ न बोला होता। उसने तो यह घटना जैसे हुई थी, उसे उसी तरह सुनाने के इरादे से बताना शुरू किया था, किन्तु अपनी इच्छा के विरुद्ध बिल्कुल अनजाने, अनचाहे और बरबस वह झूठ बोलने लगा था। यदि वह अपने इन श्रोताओं को सच-सच ही सब कुछ बताता तो ख़ुद उसकी भांति ये लोग भी, जो अनेक बार धावों-हमलों के क़िस्से सुन चुके थे और उनके बारे में एक निश्चित धारणा बनाये हुए थे तथा उससे भी हमले का ऐसा ही क़िस्सा सुनने की अपेक्षा करते थे, तो उन्होंने या तो उसपर विश्वास न किया होता या फिर इससे भी बुरा यह होता कि ऐसा सोचते कि अगर रोस्तोव के साथ वैसा नहीं हुआ, जैसा कि घुड़सेना के हमला करनेवालों के साथ सामान्यतः होता है, तो इसके लिये वह ख़ुद ही दोषी है। वह उन्हें सीधे-सादे ढंग से यह नहीं बता सकता था कि वे सभी अपने घोड़ों को दुलकी चाल से दौड़ाते हुए दुश्मन की तरफ़ बढ़े, कि वह घोड़े से नीचे गिर गया, उसके हाथ में मोच आ गयी और वह फ़्रांसीसियों से

बचने के लिये सिर पर पांव रखकर जंगल में भाग गया। इसके अलावा, जो कुछ हुआ था, केवल वही सब कुछ बताने के लिये उसे बहुत संयम से काम लेना पड़ता। सचाई बताना बड़ा मुश्किल होता है और जवान लोग बहुत कम ही ऐसा कर पाते हैं। उसके श्रोता उससे यह सुनना चाहते थे कि कैसे वह जोश से दीवाना होकर तथा अपनी सुध-बुध खोकर शत्रु की वर्गाकार ब्यूह-रचना पर झपटा था, उसमें घुस गया था, दायें-बायें दुश्मनों को गाजर-मूली की तरह काटता रहा था, कैसे उसकी तलवार ने मांस का मज़ा चखा था और कैसे वह थक-टूटकर गिर पड़ा था, आदि, आदि। और उसने उन्हें यह सब कुछ सुनाया।

रोस्तोव के वर्णन के मध्य में, जब वह यह कह रहा था: "तुम तो कल्पना ही नहीं कर सकते कि हमले के वक़्त कैसे जनून का भूत सिर पर सवार हो जाता है," प्रिंस अन्द्रेई बोल्कोन्स्की कमरे में दाख़िल हुआ जिसका बोरीस को इन्तज़ार था। प्रिंस अन्द्रेई, जिसे जवान लोगों की सरपरस्ती करना अच्छा लगता था और इस बात से ख़ुशी होती थी कि वे उसका संरक्षण पाना चाहते हैं, और बोरीस के प्रति कृपालुता का भाव रखने के कारण क्योंकि एक दिन पहले वह उसकी नज़रों में चढ़ गया था, उसकी इच्छा पूरी करना चाहता था। वह कुतूज़ोव के कुछ काग़ज़ात लेकर युवराज के पास आया था और बोरीस को कमरे में अकेला पाने की आशा करते हुए यहां आ गया था। कमरे में दाख़िल होते और मामूली हुस्सार को (प्रिंस अन्द्रेई को इस तरह के लोग फूटी आंखों नहीं सुहाते थे) लड़ाई का क़िस्सा सुनाते देखकर वह बोरीस की तरफ़ स्नेहपूर्वक मुस्कराया, आंखें सिकोड़कर रोस्तोव को देखते हुए उसने त्योरी चढ़ायी और ज़रा सिर झुकाकर धीरे-धीरे तथा थकान का सा भाव दिखाते हुए सोफ़े पर बैठ गया। उसे अटपटे लोगों के बीच आ जाना अच्छा नहीं लगा। रोस्तोव ने इस चीज़ को भांप लिया और उसे बुरा लगा। लेकिन इससे उसे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता था, उसके लिये वह पराया आदमी था। हां, बोरीस की ओर देखने पर उसने महसूस किया कि मानो उसे भी मामूली हुस्सार के कारण शर्म आ रही थी। प्रिंस अन्द्रेई के अप्रिय, व्यंग्यात्मक अन्दाज़ के बावजूद, उस तिर-स्कार भावना के बावजूद, जो मोर्चे पर लड़नेवाले सैनिक की दृष्टि से रोस्तोव के मन में सभी स्टॉफ़-एडजुटेंटों के लिये थी और स्पष्टतः

आगन्तुक भी उन्हीं में से एक था, उसे झेंप अनुभव हुई, उसके चेहरे पर लाली दौड़ गयी और वह चुप रहा। बोरीस ने प्रिंस अन्द्रेई से पूछा कि मुख्य सैनिक कार्यालय के क्या समाचार हैं और अगर यह बताने की मनाही नहीं है तो हमारी सेना की योजनाओं के बारे में क्या कुछ सुनने में आया है।

"सम्भवत: हम लोग आगे बढ़ेंगे," शायद पराये लोगों के सामने इससे अधिक और कुछ न कहना चाहते हुए बोल्कोन्स्की ने जवाब दिया।

बेर्ग ने इस अवसर से लाभ उठाते हुए विशेष आदरपूर्वक यह पूछा कि, जैसा कि सुनने में आया था, क्या कम्पनी-कमांडरों को खाने-पीने, पहनने और चारे के लिये दिया जानेवाला भत्ता दुगना हो जायेगा या नहीं? प्रिंस अन्द्रेई ने मुस्कराकर इसका यह जवाब दिया कि वह इतने महत्त्वपूर्ण राजकीय मामलों के बारे में कुछ भी नहीं कह सकता और बेर्ग यह जवाब सुनकर खिलखिलाकर हंस पड़ा।

"जहां तक आपके मामले का सम्बन्ध है," प्रिंस अन्द्रेई ने फिर से बोरीस को सम्बोधित किया, "तो उसकी हम फिर कभी चर्चा करेंगे," और उसने रोस्तोव की तरफ़ देखा। "आप निरीक्षण के बाद मेरे पास आ जाइयेगा और हमारे लिये जो कुछ भी करना सम्भव होगा, हम वह सब करेंगे।"

कमरे में इधर-उधर नज़र दौड़ाने के बाद वह रोस्तोव से मुख़ातिब हुआ, जिसकी बच्चों जैसी अदम्य झेंप अब गुस्से में बदल गयी थी और जिसकी तरफ़ ध्यान देने की उसने तकलीफ़ गवारा नहीं की थी। उसने पूछा:

"लगता है कि आप शेनग्राबेन की लड़ाई का ज़िक्र कर रहे थे? आप वहां थे?"

"हां, **मैं** वहां था," रोस्तोव ने ग़ुस्से से जवाब दिया मानो इस तरह वह प्रधान सेनापति के एडजुटेंट का अपमान करना चाहता हो।

हुस्सार का यह क्रोधपूर्ण रवैया बोल्कोन्स्की से छिपा न रहा और उसे यह दिलचस्प प्रतीत हुआ। वह तिरस्कार से ज़रा मुस्कराया।

"हां! अब बहुत-से क़िस्से हैं इस लड़ाई के बारे में।"

"हां, क़िस्से!" रोस्तोव ने अचानक ग़ुस्से में आकर पागलों की तरह धधकती आंखों से कभी बोरीस तो कभी बोल्कोन्स्की की तरफ़ देखते हुए ऊंची आवाज़ में कहा। "हां, क़िस्से तो बहुत हैं, लेकिन हमारे

क़िस्से उन लोगों के क़िस्से हैं जिन्होंने दुश्मन की गोलियों का सामना किया, हमारे क़िस्से वज़न रखते हैं। ये मुख्य सैनिक कार्यालय के उन सूरमाओं के क़िस्से नहीं हैं जिन्हें कुछ किये-कराये बिना ही पुरस्कार मिल जाते हैं।"

"और आप यह मानते हैं कि मैं भी उनमें से एक हूं?" प्रिंस अन्द्रेई ने शान्ति और विशेष मधुरता से मुस्कराते हुए पूछा।

रोस्तोव की आत्मा में क्रोध तथा साथ ही इस व्यक्ति की ऐसी शान्ति के लिये आदर का भाव घुल-मिल गया।

"मैं आपकी चर्चा नहीं कर रहा हूं," उसने उत्तर दिया, "मैं आपको जानता नहीं हूं और साफ़ कहता हूं कि जानना भी नहीं चाहता। मैं तो आम तौर पर स्टॉफ़-अफ़सरों की बात कर रहा हूं।"

"और मैं आपसे यह कहना चाहूंगा," अपनी आवाज़ में शान्तिपूर्ण दृढ़ता का अन्दाज़ लाते हुए प्रिंस अन्द्रेई ने उसे टोका। "आप मेरा अपमान करना चाहते हैं और मैं आपके साथ सहमत होने को तैयार हूं कि यदि आपमें पर्याप्त आत्म-सम्मान नहीं तो ऐसा करना बहुत आसान होगा। लेकिन आपको मानना होगा कि इसके लिये बहुत ही बुरा समय और स्थान चुना गया है। कुछ ही दिनों में हम सबको कहीं बड़े और गम्भीर द्वन्द्व में भाग लेना होगा। इसके अलावा, बोरीस द्रुबेत्स्कोई, जो आपको अपना पुराना मित्र बताते हैं, इस बात के लिये ज़रा भी दोषी नहीं कि दुर्भाग्य से आपको मेरी सूरत अच्छी नहीं लगी। ख़ैर," उसने उठते हुए कहा, "आप मेरा कुलनाम और यह जानते हैं कि मुझसे कहां भेंट हो सकती है, लेकिन यह याद रखिये," उसने इतना और कह दिया, "कि मैं न तो अपने को तथा न आपको ही किसी तरह से अपमानित मानता हूं और आपसे उम्र में बड़ा होने के नाते आपको यह सलाह देता हूं कि इस मामले को यहीं रफ़ा-दफ़ा कर दीजिये। तो शुक्रवार को सेना के निरीक्षण के बाद मैं आपकी प्रतीक्षा करूंगा, द्रुबेत्स्कोई। नमस्ते," प्रिंस अन्द्रेई ने अपनी बात समाप्त की और दोनों की ओर सिर झुकाकर बाहर चला गया।

प्रिंस बोल्कोन्स्की के चले जाने पर ही रोस्तोव को यह सूझा कि उसे उसको क्या जवाब देना चाहिये था। उसे इस कारण और भी ज़्यादा झल्लाहट हुई कि वह उससे अपनी यह बात कहना भूल गया। उसने उसी क्षण अपना घोड़ा लाने का आदेश दिया और बोरीस के

साथ रुखाई से विदा लेकर रवाना हो गया। अगले दिन वह मुख्य सैनिक कार्यालय में जाये और सेनापति के इस अकड़बाज़ एडजुटेंट को द्वन्द्व की चुनौती दे या मामले को यहीं रफ़ा-दफ़ा कर दे? – यही प्रश्न उसे रास्ते भर परेशान करता रहा। कभी तो वह ग़ुस्से से यह सोचता कि इस छोटे-से, कमज़ोर और घमंडी आदमी को अपनी पिस्तौल के सामने सहमा हुआ देखकर उसे कितनी ख़ुशी होती तथा कभी वह हैरानी से यह महसूस करता कि जितने भी लोगों को वह जानता था, उन सभी में इस घृणित एडजुटेंट को ही सबसे अधिक अपना मित्र बनाना चाहता था।

८

रोस्तोव और बोरीस की भेंट के अगले दिन आस्ट्रिया और रूस की सेनाओं का निरीक्षण होनेवाला था। इन सेनाओं में रूस से अभी-अभी आनेवाली और वे सेनायें भी शामिल थीं जो कुतूज़ोव के साथ युद्ध-अभियान से लौटी थीं। दोनों सम्राट, युवराज के साथ रूसी सम्राट और बड़े ड्यूक के साथ आस्ट्रिया के सम्राट, अस्सी हज़ार की इस संयुक्त सेना का निरीक्षण करनेवाले थे।

बहुत ही साफ़-सुथरी और सजी-धजी सेनायें सुबह से ही हिलने-डुलने तथा दुर्ग के सामने बहुत बड़े मैदान में क़तारों में खड़ी होने लगीं। कहीं भण्डे लहराती सेनाओं के हज़ारों क़दम और संगीनें हिलती-डुलतीं, अफ़सरों के आदेश पर रुकतीं, मुड़तीं और दूसरी वर्दियां पहने अपने जैसे ही प्यादा सैनिकों के गिर्द चक्कर काटकर कुछ फ़ासले पर जा खड़ी होतीं। कहीं सजी-धजी नीली, लाल और हरी वर्दियां पहने मुश्की, लाखी और भूरे घोड़ों पर सवार घुड़सैनिक, जिनके आगे-आगे सुनहरी कढ़ाईवाली वर्दियां पहने बैंडवाले होते, अपने घोड़ों की लयबद्ध टापों और ज़ीनों की भनक पैदा करते बढ़ते दिखायी देते। कहीं तोप-गाड़ियों पर हिलती-डुलती और तांबे की भनभनाहट-सी उत्पन्न करती अच्छी तरह से साफ़ की गयी चमकती-दमकती तथा पलीते की गंधवाली तोपें प्यादा और घुड़सेना के बीच रेंगती-सी नज़र आतीं और अपनी

नियत जगहों पर जाकर रुक जातीं। न केवल जनरल ही परेड की अपनी पूरी वर्दी पहने, अपनी पतली और मोटी कमरों को अधिकतम सीधा किये, कालरों से भिंची लाल-लाल गर्दनों पर रूमाल बांधे और सभी तमग़े-पदक लगाये, न केवल पोमेड से बालों को चमकाये और ख़ूब बने-ठने अफ़सर ही, बल्कि अच्छी तरह दाढ़ी बनाये, चमकते चेहरेवाला हर सैनिक, जिसने अपने हथियारों को रगड़-रगड़कर साफ़ किया था और हर घोड़ा भी जिसे ऐसे निखारा गया था कि उसका बदन मख़मल जैसा लगता था और उसके अयाल के तर किये गये बाल गर्दन पर चिपके हुए थे, सभी यह अनुभव कर रहे थे कि कोई बहुत बड़ा, महत्त्वपूर्ण और गम्भीर कार्य किया जा रहा है। इस जन-सागर में अपने को एक बालूकण महसूस करता हुआ हर जनरल और हर सैनिक अपनी तुच्छता के प्रति सजग था, मगर साथ ही इस विराट समष्टि की चेतना से वह अपने को शक्तिशाली भी अनुभव करता था।

तड़के से ही बड़ी दौड़-धूप और तैयारी शुरू हो गयी थी तथा दस बजे तक सभी कुछ ऐसे व्यवस्थित हो गया था, जैसे होना चाहिये था। बहुत बड़े मैदान में सैनिकों की क़तारें खड़ी हो गयी थीं। पूरी सेना को तीन भागों में बांटा गया था। सबसे आगे घुड़सेना थी, उसके पीछे तोपख़ाना और उसके पीछे प्यादा फ़ौज।

सेना के हर भाग के बीच मानो एक गली-सी थी। इस सेना के तीन प्रभागों को एक-दूसरे को स्पष्ट रूप से अलग किया गया था – युद्ध में भाग ले चुकी कुतूज़ोव की सेना (जिसमें पाव्लोग्राद की रेजिमेंट दायें बाज़ू सबसे आगे खड़ी थी), रूस से अभी-अभी आनेवाली गार्ड और दूसरी रेजिमेंटें तथा आस्ट्रिया की सेनायें। किन्तु सभी एक ही क्रम, एक ही कमान के अन्तर्गत और एक ही ढंग से खड़ी थीं।

पत्तों को सरसरानेवाली हवा की भांति उत्तेजनापूर्ण फुसफुसाहट सुनायी दी: "वे आ रहे हैं! आ रहे हैं!" सहमी-सहमी आवाज़ें सुनायी दीं और पूरी सेना में अन्तिम तैयारियों की लहर-सी दौड़ गयी।

ओल्म्यूत्स की ओर से घुड़सवारों का एक दल आता दिखायी दिया। यद्यपि इस दिन हवा बन्द थी, तथापि इसी वक़्त सेना के ऊपर हवा का हल्का-सा झोंका आया, वातदर्शक ज़रा हिला-डुला और खुले झण्डे अपने डंडों पर कुछ फड़फड़ाये। ऐसे प्रतीत हुआ मानो स्वयं सेना ने थोड़ा हिल-डुलकर सम्राटों के निकट आने के सम्बन्ध में अपनी प्रसन्नता

प्रकट की है। एक आवाज़ सुनायी दी: "सावधान!" इसके बाद सुबह के वक़्त बांग देनेवाले मुर्ग़ों की भांति परेड मैदान के विभिन्न भागों में ऐसी ही आवाज़ें गूंजीं। इसके बाद सभी कुछ शान्त हो गया।

गहरी ख़ामोशी में सिर्फ़ घोड़ों की टापें ही सुनायी दे रही थीं। ये दोनों सम्राटों के अमले के घोड़ों की टापों की आवाज़ थी। दोनों सम्राट सेना के पार्श्व के निकट अपने घोड़े बढ़ा लाये और पहली घुड़सेना की रेजिमेंट के बिगुल-वादक स्वागत-धुन बजाने लगे। ऐसे प्रतीत हुआ कि बिगुल-वादक यह धुन नहीं बजा रहे थे, बल्कि ख़ुद सेना ही सम्राट के निकट आने से ख़ुश होती हुई स्वतःसफूर्त ढंग से ऐसे संगीत में अपनी ख़ुशी ज़ाहिर करने लगी थी। इस तुरही-नाद में एक जवान और स्नेहपूर्ण आवाज़ स्पष्ट रूप से सुनायी दी। यह आवाज़ सम्राट अलेक्सान्द्र की थी। सम्राट ने अभिवादन के कुछ शब्द कहे और रेजिमेंट कानों के पर्दे फाड़ते हुए इतने ज़ोर से, इतना दीर्घ और उल्लासपूर्ण "हुर्रा" चिल्लायी कि ख़ुद सैनिक ही अपनी संख्या और शक्ति से, जो उनमें निहित थी, स्तम्भित रह गये।

कुतूज़ोव की सेना की पहली क़तारों में खड़ा हुआ रोस्तोव (सम्राट सबसे पहले इसी सेना की ओर आये थे), वही कुछ अनुभव कर रहा था जो इस सेना के हर व्यक्ति की भावना थी। यह भावना थी आत्म-विस्मृति की, अपार शक्ति की गर्वीली चेतना और उस व्यक्ति के प्रति अत्यधिक श्रद्धा की भावना जो इस समारोह का केन्द्र-बिन्दु था।

वह अनुभव कर रहा था कि इस व्यक्ति के एक शब्द कहते ही लोगों की यह इतनी बड़ी भीड़ (और वह इसका छोटा-सा कण था) आग तथा पानी में कूद सकती है, कोई भी अपराध कर सकती है, मौत के मुंह में जा सकती है या वीरता के महानतम कार्य कर सकती है और इसलिये इस व्यक्ति के निकट आने पर, जो यह शब्द कह सकता था, वह सिहरे बिना और उसका दिल धड़के बिना नहीं रह सकता था।

"हुर्रा! हुर्रा! हुर्रा!" सभी ओर से यह गूंज सुनायी दे रही थी, एक के बाद एक रेजिमेंट स्वागत-धुन के साथ सम्राट का स्वागत करती, उसके बाद "हुर्रा!" गूंजता, धुन सुनायी देती और फिर "हुर्रा!" और "हुर्रा!" गूंजता जो अधिकाधिक ज़ोरदार होते हुए कान बहरे करनेवाले शोर में घुल-मिल जाता।

सम्राट के निकट आने के पहले मौन साधे और बुत बनी-सी हर

रेजिमेंट निष्प्राण शरीर जैसी लगती। किन्तु सम्राट के नज़दीक आते ही वह सजीव हो उठती और ज़ोर से हवा में गूंजता हुआ उसका हुर्रा उस रेजिमेंट के शोर के साथ घुल-मिल जाता जिसके पास से सम्राट आगे जा चुके होते। कानों के पर्दे फाड़नेवाले इस शोर में और मानो बुत बन गये सैनिकों के वर्गाकार समूहों के बीच बड़ी लापरवाही से, अव्यवस्थित और सबसे बड़ी बात तो यह कि उन्मुक्त ढंग से अमले के सैकड़ों घुड़सवार बढ़ रहे थे और उनके आगे-आगे थे दो व्यक्ति यानी दोनों सम्राट। इन्हीं दोनों पर तो सैनिकों की इस भारी भीड़ का संयत और आत्म-विभोर ध्यान संकेन्द्रित था।

गार्ड-घुड़सेना की वर्दी पहने और तिकोणी टोपी के नुकीले सिरे को सामने की ओर किये हुए सुन्दर, जवान सम्राट अलेक्सान्द्र अपने आकर्षक चेहरे और खनकती धीमी आवाज़ से हर किसी का मन मोह रहे थे।

रोस्तोव बिगुल-वादकों के पास ही खड़ा था, अपनी तेज़ नज़र से उसने उन्हें दूर से ही पहचान लिया था और वह बहुत ध्यान से उन्हें निकट आते देख रहा था। सम्राट जब बीस क़दम के फ़ासले पर रह गये और निकोलाई रोस्तोव ने उनके सुन्दर, जवान और खिले हुए चेहरे को, उसकी छोटी से छोटी तफ़सील को बहुत ही स्पष्ट रूप से देख लिया तो उसे ऐसी कोमलता और उल्लास-भावना की अनुभूति हुई जैसी उसने पहले कभी महसूस नहीं की थी। सम्राट की हर अदा, उनकी हर गति-विधि उसे अद्भुत प्रतीत हुई।

पाव्लोग्राद की रेजिमेंट के सामने अपने घोड़े को रोककर सम्राट ने आस्ट्रिया के सम्राट से फ़्रांसीसी में कुछ कहा और मुस्करा दिये।

इस मुस्कान को देखकर रोस्तोव अनजाने ही ख़ुद भी मुस्कराने लगा और अपने सम्राट के लिये उसके मन में और भी अधिक स्नेह उमड़ पड़ा। उसने चाहा कि वह किसी तरह सम्राट के प्रति अपने इस प्यार को व्यक्त करे। वह जानता था कि ऐसा करना सम्भव नहीं और इसलिये उसका मन हुआ कि रोये। सम्राट ने रेजिमेंट-कमांडर को अपने पास बुलाया और उससे कुछ शब्द कहे।

"हे भगवान! सम्राट अगर मुझसे बात करते तो मेरी क्या हालत होती!" रोस्तोव सोच रहा था। "मेरी तो ख़ुशी से जान ही निकल जाती।"

सम्राट ने अफ़सरों को भी सम्बोधित किया :
"महानुभावो, आप सबके प्रति (रोस्तोव को हर शब्द स्वर्ग से आता प्रतीत हुआ), हार्दिक आभार प्रकट करता हूं।"

रोस्तोव अगर अब अपने सम्राट के लिये प्राण न्योछावर कर सकता तो अपने को कितना सौभाग्यशाली मानता!

"आपने सेंट जार्ज का पदक प्राप्त किया है और आप अपने को उसके योग्य सिद्ध कीजिये!"

"काश, सम्राट के लिये प्राण न्योछावर किये जा सकें, प्राण न्योछावर किये जा सकें!" रोस्तोव सोच रहा था।

सम्राट ने कुछ और भी कहा जो रोस्तोव सुन नहीं पाया तथा सैनिक अपने फेफड़ों का पूरा ज़ोर लगाकर "हुर्र-रा!" चिल्ला उठे।

रोस्तोव भी ज़ीन पर आगे की ओर झुककर अपनी पूरी ताक़त से चिल्लाया। वह सम्राट के प्रति किसी तरह अपना पूरा उल्लास प्रकट कर सके, इसके लिये वह अपनी इस चिल्लाहट से अपने को शारीरिक हानि तक पहुंचाने को तैयार था।

सम्राट हुस्सारों के सामने कुछ सेकण्ड तक घोड़ा रोके रहे मानो किसी दुविधा में हों।

"सम्राट भला कैसे दुविधा में हो सकते हैं?" रोस्तोव ने सोचा और बाद में उसे उनके द्वारा की जानेवाली अन्य सभी बातों की भांति यह दुविधा भी अद्भुत और मनमोहक लगी।

सम्राट की दुविधा कोई एक क्षण ही बनी रही। उस समय के फ़ैशन के मुताबिक़ नुकीले सिरेवाले उनके बूट ने उस अंग्रेज़ी घोड़ी के पेट को छुआ जिसपर वह सवार थे, सफ़ेद दस्ताना पहने उनके हाथ ने लगाम खींची और वह क्रमहीन ढंग से हिलते-डुलते एडजुटेंटों की भीड़ से घिरे हुए आगे बढ़ चले। वह दूसरी रेजिमेंटों के सामने ठहरते हुए आगे ही आगे बढ़ते गये और आख़िर रोस्तोव को सम्राटों को घेरे हुए अमले के बीच से उनकी टोपी की केवल सफ़ेद कलगी ही दिखायी देती रह गयी।

अमले के महानुभावों में रोस्तोव ने अलस और उन्मुक्त ढंग से घोड़े पर सवार बोल्कोन्स्की को भी देखा। रोस्तोव को उसके साथ हुआ अपना पिछले दिन का झगड़ा याद हो आया और उसके सामने यह सवाल फिर से उभरा – वह उसे चुनौती दे या न दे। "ज़ाहिर है

कि ऐसा करने में कोई तुक नहीं," रोस्तोव ने अब सोचा... "ऐसे क्षण में क्या इसके बारे में सोचना और इसकी चर्चा करना भी ठीक होगा? प्यार, उल्लास और आत्म-बलिदान के ऐसे क्षण में हमारे झगड़ों और हमारे अपमानों का महत्त्व ही क्या हो सकता है?! मैं अब सबको प्यार, सबको क्षमा करता हूं," रोस्तोव सोच रहा था।

सभी रेजिमेंटों का निरीक्षण समाप्त होने पर सेनायें समारोही परेड करती हुई सम्राट के सामने से गुज़रने लगीं और रोस्तोव कुछ ही समय पहले देनीसोव से ख़रीदे गये बेदुईन घोड़े पर अपने स्कवाड्रन के अन्त में यानी एकदम अकेला ही सम्राट के सामने से गुज़रा।

सम्राट के सामने पहुंचने से पहले रोस्तोव ने, जो बहुत बढ़िया घुड़सवार था, अपने बेदुईन को दो बार एड़ लगायी और उसे उस शानदार दुलकी चाल की स्थिति में ले आया जिस चाल से वह उत्तेजित होने पर दौड़ता था। फेन उगलती थूथन को छाती से सटाकर और पूंछ को लहराता, भूमि को छुए बिना बड़े भव्य ढंग से क़दम ऊपर उठाता और उन्हें बदलता तथा उड़ता-सा बेदुईन भी मानो सम्राट की नज़र को अपने ऊपर केन्द्रित-सा अनुभव करता हुआ बड़ी शान से गुज़रा।

टांगों को पीछे की ओर फैलाकर, पेट को भीतर की तरफ़ सिकोड़कर तथा अपने को घोड़े का अभिन्न अंग-सा अनुभव करता रोस्तोव त्योरी चढ़ाये, मगर खिले चेहरे से, शैतान की तरह, जैसा कि देनीसोव कहा करता था, सम्राट के सामने से आगे निकल गया।

"शाबाश, पाव्लोग्राद की रेजिमेंटवालो!" सम्राट ने कहा।

"हे भगवान! अगर सम्राट मुझे इस वक़्त आग में कूदने का हुक्म दे देते तो मुझे कितनी ख़ुशी होती!" रोस्तोव सोच रहा था।

सेना-निरीक्षण समाप्त होने पर रूस से कुछ ही समय पहले आये तथा कुतूज़ोव की सेना के अफ़सर अपने-अपने दल बनाकर पदकों-पुरस्कारों, आस्ट्रिया की सेनाओं और उनकी वर्दियों, मोर्चे और बोनापार्ट की तथा यह चर्चा करने लगे कि अब उसका कैसा बुरा हाल होगा, ख़ास तौर पर उस हालत में जब जनरल एस्सेन की सेना भी आ जायेगी और प्रशा हमारे पक्ष में हो जायेगा।

किन्तु इन सभी दलों में सबसे ज़्यादा तो सम्राट अलेक्सान्द्र का ज़िक्र किया गया, उनके हर शब्द और हर गति-विधि का उल्लेख तथा

भूरि-भूरि प्रशंसा की गयी।

सब सिर्फ़ एक ही चीज़ चाहते थे कि सम्राट के निर्देशन में जल्दी से जल्दी दुश्मन से लोहा लेने जायें। निरीक्षण के बाद रोस्तोव और अधिकांश अन्य फ़ौजी अफ़सर भी यही सोचते थे कि यदि स्वयं सम्राट उनकी कमान सम्भाल लें तो वे हर किसी के छक्के छुड़ा दें।

निरीक्षण के बाद सभी अपनी विजय के बारे में उससे कहीं अधिक आश्वस्त थे, जितना कि दो लड़ाइयां जीतने के बाद हो सकते थे।

६

सेना-निरीक्षण के अगले दिन बोरीस सबसे बढ़िया वर्दी पहनकर और अपने साथी बेर्ग से सफलता की शुभ कामना लेकर बोल्कोन्स्की से मिलने के लिये ओल्म्यूत्स गया। वह बोल्कोन्स्की के मैत्रीभाव से लाभ उठाते हुए अपने लिये अच्छी से अच्छी जगह, ख़ास तौर पर किसी महत्त्वपूर्ण व्यक्ति के एडजुटेंट की जगह हासिल कर लेना चाहता था जो उसे सेना में विशेष रूप से आकर्षक प्रतीत होती थी। "रोस्तोव के लिये, जिसके पिता एक ही बार में दस हज़ार रूबल भेज देते हैं, यह कहना बहुत आसान है कि वह किसी के आगे नाक रगड़ने और किसी का अर्दली बनने को तैयार नहीं। लेकिन मुझे तो, जिसके पास अपने दिमाग़ के सिवा और कुछ भी नहीं, अपना कैरियर बनाना चाहिये, अच्छे मौक़ों को हाथ से न जाने देकर उनसे फ़ायदा उठाना चाहिये।"

ओल्म्यूत्स में प्रिंस अन्द्रेई उस दिन उसे नहीं मिला। किन्तु ओल्म्यूत्स को देखकर, जहां मुख्य सैनिक कार्यालय था, राजनयिक थे, जहां अपने अमलों, दरबारियों और घनिष्ठ लोगों के साथ दोनों सम्राट ठहरे हुए थे, इस ऊंची सोसाइटी का अंग बनने की उसकी चाह और भी बलवती हो गयी।

बोरीस किसी को भी नहीं जानता था और उसकी गार्ड की बांकी वर्दी के बावजूद उसे ऐसे प्रतीत हुआ कि कलगियों, रिबनों और पदकों-तमग़ों की लौ देते तथा शानदार बग्घियों में सड़कों पर आते-जाते दरबारी और सेवापदाधिकारी, गार्ड-सेना के उस जैसे अफ़सर से इतने

अधिक ऊंचे हैं कि वे उसके अस्तित्व को न केवल मानने की इच्छा ही नहीं रखते थे, बल्कि ऐसा कर ही नहीं सकते थे। प्रधान सेनापति कुतूज़ोव के सैनिक निवास-स्थान पर, जहां उसने बोल्कोन्स्की के बारे में पूछताछ की, सेनापति के सभी एडजुटेंटों और यहां तक कि अर्दलियों ने भी उसकी तरफ़ ऐसे देखा मानो उसे यह जताना चाहते हों कि उसके जैसे ढेरों अफ़सर यहां झक मारते फिरते रहते हैं और उन सभी के कारण उनके नाक में दम आ चुका है। इस चीज़ के बावजूद, या इसके फलस्वरूप अगले दिन यानी पन्द्रह तारीख़ को दोपहर के भोजन के बाद बोरीस फिर से ओल्म्यूत्स गया और कुतूज़ोव के निवास-स्थान पर जाकर उसने यह पूछा कि बोल्कोन्स्की वहां है या नहीं। प्रिंस अन्द्रेई बोल्कोन्स्की घर पर ही था। बोरीस को एक बड़े हॉल की तरफ़ भेज दिया गया जहां पहले बॉल-नृत्य का आयोजन किया जाता होगा, मगर अब पांच पलंग बिछे थे, भांति-भांति का फ़र्नीचर, मेज़ें-कुर्सियां और क्लावीकॉर्ड बाजा रखा था। एक एडजुटेंट, जो दरवाज़े के सबसे अधिक निकट था, ईरानी ढंग का ड्रेसिंग-गाउन पहने मेज़ के सामने बैठा कुछ लिख रहा था। दूसरा एडजुटेंट – लाल चेहरेवाला, मोटा नेस्वीत्स्की – सिर के नीचे हाथ बांधे हुए पलंग पर लेटा था और अपने पास बैठे एक अफ़सर के साथ हंस रहा था। तीसरा एडजुटेंट क्लावीकॉर्ड पर वियना का वाल्ज़ बजा रहा था और चौथा क्लावीकॉर्ड पर झुका हुआ इसी धुन को गुनगुना रहा था। बोल्कोन्स्की कमरे में नहीं था। बोरीस को देखकर इन महानुभावों में से किसी ने भी उसमें कोई दिलचस्पी ज़ाहिर नहीं की। वह एडजुटेंट जो कुछ लिख रहा था और जिससे बोरीस ने बोल्कोन्स्की के बारे में पूछा, झल्लाकर उसकी तरफ़ मुड़ा, उसने उसे यह बताया कि बोल्कोन्स्की ड्यूटी पर है और अगर वह उससे मिलना चाहता है तो स्वागत-कक्ष में चला जाये। बोरीस ने उसे धन्यवाद दिया और स्वागत-कक्ष की ओर बढ़ चला। स्वागत-कक्ष में उसे कोई दसेक अफ़सर और जनरल नज़र आये।

बोरीस जब स्वागत-कक्ष में पहुंचा तो प्रिंस अन्द्रेई उपेक्षापूर्वक आंखें सिकोड़े हुए (उस शिष्टतापूर्ण थकान के अन्दाज़ में जो ज़ाहिर करती है कि अगर यह मेरी ड्यूटी न होती तो मैं पल भर भी तुम्हारे साथ बात न करता) बहुत-से पदक-तमग़े लगाये एक बूढ़े रूसी जनरल की बात सुन रहा था जो एकदम तना और लगभग पंजों के बल खड़ा

हुआ अपने सुर्ख़ चेहरे पर साधारण सैनिक के ख़ुशामदी भाव के साथ प्रिंस अन्द्रेई को कुछ बता रहा था।

"अच्छी बात है, कृपया थोड़ा इन्तज़ार कीजिये," उसने जनरल से उस फ़्रांसीसी लहजेवाली रूसी भाषा में कहा जिसका वह तब उपयोग करता था, जब किसी का तिरस्कार करना चाहता था और बोरीस को देखकर जनरल की तरफ़ और अधिक ध्यान दिये बिना (जनरल यह मिन्नत करते हुए कि वह उसकी थोड़ी और बात सुन ले, उसके पीछे-पीछे दौड़ा) उसने सिर झुकाकर उसका अभिवादन किया और ख़ुशी से मुस्कराता हुआ उसकी तरफ़ बढ़ा।

इस क्षण बोरीस उस चीज़ को बिल्कुल साफ़ तौर पर समझ गया जिसका उसे पहले ही आभास हो चुका था – यानी यह कि सेना में उस अधीनता और अनुशासन के अतिरिक्त, जो नियामावली में दर्ज थे और जिसे रेजिमेंटवाले तथा वह भी जानता था, एक अन्य, अधिक महत्त्वपूर्ण अधीनता वह थी जो इस सुर्ख़ चेहरेवाले तने हुए जनरल को आदरपूर्वक प्रतीक्षा करने को विवश कर रही थी, जबकि कप्तान, प्रिंस अन्द्रेई बड़े मज़े से लेफ़्टिनेंट द्रुबेत्स्कोई से बातचीत कर रहा था। पहले किसी भी समय की तुलना में बोरीस ने भविष्य में नियामावली में दर्ज अधीनता के अनुसार नहीं, बल्कि इस अलिखित अधीनता के अनुसार काम करने का निर्णय किया। इस समय उसने अनुभव कर लिया कि केवल इस कारण कि प्रिंस अन्द्रेई के पास उसकी सिफ़ारिश की गयी थी, वह आन की आन में जनरल से भी ऊंचा हो गया था जो दूसरी परिस्थितियों में, मोर्चे पर, उसे, गार्ड-सेना के लेफ़्टिनेंट को नाकों चने चबवा सकता था। प्रिंस अन्द्रेई ने उसके पास आकर उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया।

"बहुत अफ़सोस की बात है कि कल मैं आपको यहां नहीं मिला। मैंने जर्मनों के साथ पूरा दिन बिताया। वैरोटेर के साथ सेना की व्यूह-रचनाओं की जांच करने गया था। जर्मन तो जैसे ही किसी चीज़ के सलीक़े-तरीक़े के फेर में पड़ते हैं तो फिर उसका कहीं अन्त ही नज़र नहीं आता!"

बोरीस मुस्कराया मानो वह उस सर्वविदित चीज़ को समझता था जिसकी ओर प्रिंस अन्द्रेई संकेत कर रहा था। किन्तु वैरोटेर कुलनाम और व्यूह-रचना शब्द को भी उसने पहली बार सुना था।

"तो, मेरे प्यारे, आप एडजुटेंट ही बनना चाहते हैं? पिछले इस समय में मैं आपके बारे में सोचता रहा हूं।"

"मेरा ख़्याल था," अनजाने ही किसी कारण लज्जारुण होते हुए बोरीस ने कहा, "कि प्रधान सेनापति से इसके बारे में अनुरोध करूं। उनके पास मेरे बारे में प्रिंस कुरागिन का पत्र पहुंच चुका है। मैं केवल इसलिये यह अनुरोध करना चाहता था," उसने मानो अपनी सफ़ाई पेश की, "क्योंकि मुझे ऐसा लगता है कि गार्ड-सेना मोर्चे पर नहीं जायेगी।"

"अच्छी बात है! अच्छी बात है! हम सभी चीज़ों पर विचार कर लेंगे," प्रिंस अन्द्रेई ने कहा, "सिर्फ़ इस महानुभाव के बारे में सूचित कर लेने दीजिये और इसके बाद मैं पूरी तरह से आपकी सेवा में हाज़िर हूं।"

प्रिंस अन्द्रेई जब इस सुर्ख़ चेहरेवाले जनरल के बारे में सूचित करने गया तो यह जनरल, जो सम्भवतः अलिखित अधीनता-सम्बन्धी बोरीस की धारणा के लाभों से सहमत नहीं था, इस गुस्ताख़ लेफ़्टिनेंट को, जिसने एडजुटेंट से अपनी पूरी बात कहने में बाधा डाल दी थी, ग़ुस्से से ऐसे एकटक देखने लगा कि बोरीस को परेशानी होने लगी। उसने मुंह फेर लिया और बड़ी अधीरता से प्रिंस अन्द्रेई के प्रधान सेनापति के कमरे से लौटने की राह देखने लगा।

"तो, मेरे प्यारे, मैं आपके बारे में सोचता रहा हूं," प्रिंस अन्द्रेई ने क्लावीकॉर्डवाले बड़े हॉल में जाने पर कहा। "प्रधान सेनापति के पास आपका जाना व्यर्थ होगा," प्रिंस अन्द्रेई कहता गया। "वह आपके साथ बहुत ही प्यार-मुहब्बत से पेश आयेंगे, आपको अपने साथ भोजन करने को आमन्त्रित करेंगे ("उस अलिखित अधीनता के अनुसार नौकरी करने की दृष्टि से तो यह कुछ बुरा नहीं होगा," बोरीस ने सोचा), मगर इसके आगे और कुछ भी हासिल नहीं होगा। हम एडजुटेंटों और स्टॉफ़-अफ़सरों की तो जल्द ही बटालियन बन जायेगी। देखिये, हम ऐसा करेंगे – एडजुटेंट-जनरल और बहुत ही भला आदमी, प्रिंस दोलगोरूकोव मेरा अच्छा दोस्त है। बेशक आपको यह मालूम नहीं होगा, लेकिन हक़ीक़त यही है कि अब कुतूज़ोव, उनके स्टॉफ़ और हम सब का कोई महत्त्व नहीं है। अब तो सम्राट पर ही सारा ध्यान संकेन्द्रित है। सो हम दोलगोरूकोव के पास चलते हैं, मुझे तो वैसे भी

उसके पास जाना है और मैं उससे आपकी चर्चा भी कर चुका हूं। तो वहां चलने पर यह पता चलेगा कि वह आपको अपने अधीन ही कोई जगह दे सकता है या नहीं या फिर यह कि वह आपके लिये कहीं और तथा किसी दूसरी बढ़िया जगह की व्यवस्था कर दे।"

प्रिंस अन्द्रेई हमेशा ही उस समय बड़ा उत्साह दिखाता था, जब उसे किसी जवान आदमी की सरपरस्ती करनी और उसे आगे बढ़ाने में मदद देनी होती थी। दूसरे की सहायता करने की आड़ में बोल्कोन्स्की समाज के उस क्षेत्र के साथ निकटता बनाये रहता था जो ऐसी सफलता सम्भव बनाता था और उसे अपनी ओर खींचता था। वह बड़ी ख़ुशी से बोरीस की मदद करने को तैयार हो गया और उसके साथ प्रिंस दोल्गो-रूकोव के यहां चल दिया।

ये दोनों जब ओल्म्यूत्स के उस महल में पहुंचे, जहां दोनों सम्राट और उनके निकटवर्ती लोग ठहरे हुए थे, तो शाम ढले काफ़ी देर हो चुकी थी।

इसी दिन सैन्य-परिषद की बैठक हुई थी जिसमें होफ़क्रीग्सराथ के सभी सदस्यों और दोनों सम्राटों ने भाग लिया था। इस बैठक में बुज़ुर्गों – कुतूज़ोव और प्रिंस श्वारत्सेनबेर्ग – के मत के प्रतिकूल यह निर्णय किया गया था कि फ़ौरन धावा बोला जाये और बोनापार्ट के विरुद्ध निर्णायक लड़ाई लड़ी जाये। बोरीस को साथ लिये हुए प्रिंस अन्द्रेई जब प्रिंस दोल्गोरूकोव को ढूंढ़ने के लिये महल में गया तो बैठक ख़त्म ही हुई थी। मुख्य कार्यालय के सभी लोग अभी तक आज की बैठक के सम्मोहन में, जिसमें जवानों की जीत हुई थी, बंधे-से नज़र आ रहे थे। जो लोग इस मामले में देर करने के पक्षपाती थे और हमला शुरू करने के विचार को स्थगित करके कुछ इन्तज़ार करने की सलाह देते थे, उनकी आवाज़ों को ऐसे मतैक्य से दबा दिया गया था और उनके तर्कों को आक्रमण के लाभों के ऐसे अकाट्य तथ्यों से रद्द कर दिया गया था कि सैन्य-परिषद में उनके विचार-विनिमय का विषय यानी भावी लड़ाई और उसमें निश्चित विजय भविष्य की नहीं, अतीत की बात प्रतीत होती थी। सारी परिस्थितियां हमारे अनुकूल थीं। किसी भी सन्देह के बिना हमारी विराट सेनायें, जो नेपोलियन की सेनाओं से श्रेष्ठ थीं, एक ही जगह पर जमा थीं। ये सेनायें दोनों सम्राटों की उपस्थिति से बहुत उत्साहित थीं और रण-क्षेत्र में कूदने को बेक़रार

थीं। रण-स्थल, जहां लड़ाई लड़ी जानेवाली थी, उसकी छोटी से छोटी तफ़सीलें भी सेना-संचालक, आस्ट्रियाई जनरल वैरोटेर को मालूम थीं (यह भी एक सुखद संयोग था कि आस्ट्रियाई सेनाओं ने पिछले वर्ष इसी मैदान में युद्धाभ्यास किया था जहां अब फ़्रांसीसियों से मोर्चा लिया जानेवाला था)। यहां का हर छोटे से छोटा ब्योरा भी ज्ञात था और उन्हें नक़्शे में दिखाया गया था तथा बोनापार्ट अपनी दुर्बलता अनुभव करते हुए हाथ पर हाथ धरे बैठा था।

दोल्गोरूकोव, जो आक्रमण करने का ज़ोरदार समर्थक था, बहुत थका-थका, अत्यधिक क्लान्त, किन्तु अपनी जीत के कारण खिला-खिला तथा गर्व की भावना अनुभव करता हुआ इसी समय सैन्य-परिषद की बैठक से लौटा था। प्रिंस अन्द्रेई ने बोरीस से, जिसकी वह सरपरस्ती कर रहा था, उसका परिचय करवाया। प्रिंस दोल्गोरूकोव ने बड़ी शिष्टता और तपाक से बोरीस से हाथ मिलाया, मगर उससे कुछ कहा नहीं। सम्भवतः वह उन विचारों को, जो इस समय उसके दिल-दिमाग़ पर छाये हुए थे, व्यक्त किये बिना नहीं रह सकता था और इसलिये उसने प्रिंस अन्द्रेई को फ़्रांसीसी में सम्बोधित किया।

"ओह, मेरे प्यारे, कैसा ज़बर्दस्त मोर्चा मारा है हमने! बस, भगवान से अब यही प्रार्थना है कि इसके बाद रण-क्षेत्र में भी हमें ऐसी ही शानदार जीत हासिल हो। लेकिन, मेरे प्यारे," वह ज़रा रुक-रुककर और उत्साह से कहता गया, "आस्ट्रियावालों और ख़ास तौर पर वैरोटेर के सामने मुझे अपने अपराध को स्वीकार करना ही होगा। कैसी यथातथ्यता है और हर तफ़सील को कैसे ध्यान में रखा गया है, कितना बढ़िया ज्ञान है उसे इस सारे क्षेत्र का, कैसे सभी ऊंच-नीच, सभी ब्योरों का पूर्वानुमान लगाया गया है! सच कहता हूं, मेरे प्यारे, हमारे लिये इस वक़्त जितनी अनुकूल परिस्थितियां हैं, उनसे बेहतर की हम कल्पना तक नहीं कर सकते। आस्ट्रियायी यथातथ्यता और रूसी वीरता का मेल – इससे अधिक हम और क्या चाह सकते हैं?"

"तो आक्रमण करने का पक्का निर्णय किया जा चुका है?" बोल्कोन्स्की ने पूछा।

"और आप जानते हैं, मेरे प्यारे, मुझे लगता है कि बोनापार्ट यक़ीनी तौर पर अपने होश-हवास खो बैठा है। आज हमारे सम्राट के नाम उसका एक पत्र आया है।" दोल्गोरूकोव अर्थपूर्ण ढंग से मुस्कराया।

"सच ! तो क्या लिखा है उसने ?" बोल्कोन्स्की ने जानना चाहा।
"वह लिख ही क्या सकता है? यही बेसिर-पैर की बातें और उसका एकमात्र उद्देश्य यह है कि उसे कुछ वक़्त और मिल जाये। मेरी बात को पत्थर की लकीर मानिये कि अब वह पूरी तरह से हमारी मुट्ठी में है! मगर सबसे मज़ेदार बात तो यह है," वह अचानक ख़ुश-मिज़ाजी से हंसकर कहता गया, "कि हम लोग बहुत देर तक यही नहीं तय कर पाये कि उसके पत्र का उत्तर देने के लिये उसे सम्बोधित कैसे किया जाये? मुझे लगा कि अगर कांसुल* नहीं, तो, स्पष्ट है, सम्राट भी नहीं और इसलिये इस सम्बोधन को जनरल बोनापार्ट होना चाहिये।"

"लेकिन उसे सम्राट न मानना और उसे जनरल बोनापार्ट कहना, इन दोनों चीज़ों में बड़ा अन्तर है," बोल्कोन्स्की ने मत प्रकट किया।

"यही तो बात है," दोल्गोरूकोव ने हंसते, और बोल्कोन्स्की को टोकते हुए जल्दी से कहा। "आप बिलीबिन को तो जानते ही हैं, बहुत ही समझदार आदमी है वह। उसने यह सुझाव दिया कि बोनापार्ट को 'अपहारक और मानवजाति का शत्रु' कहकर सम्बोधित किया जाये।"

दोल्गोरूकोव खिलखिलाकर हंस पड़ा।

"इससे अधिक कुछ नहीं ?" बोल्कोन्स्की ने टिप्पणी की।

"लेकिन आख़िर बिलीबिन ने ही उसके लिये उचित सम्बोधन ढूंढ़ लिया। बड़ा हाज़िरजवाब और बहुत अक़्लमन्द आदमी है वह..."

"क्या सम्बोधन सुझाया उसने ?"

"फ़्रांसीसी सरकार के अध्यक्ष के नाम," प्रिंस दोल्गोरूकोव ने गम्भीरता और बड़ी प्रसन्नता से बताया। "बढ़िया है न ?"

"हां, लेकिन यह उसे बिल्कुल अच्छा नहीं लगेगा," बोल्कोन्स्की ने राय ज़ाहिर की।

"ओह, बिल्कुल अच्छा नहीं लगेगा! मेरा भाई उसे जानता है – वह उसके यहां, आज के उस सम्राट के यहां पेरिस में कई बार खाना खा चुका है। उसका कहना है कि उसने बोनापार्ट से अधिक मंजा हुआ और चालाक कूटनीतिज्ञ नहीं देखा – उसमें फ़्रांसीसी चातुरी और इतालवी

---

* नवम्बर १७९९ में राज्य का तख़्ता उलटने के बाद नेपोलियन फ़्रांसीसी गणतन्त्र का पहला कांसुल बना था। – सं०

नाटक करने की क्षमता का बढ़िया मेल हुआ है। आपने काउंट मार्कोव और बोनापार्ट के बीच हुए क़िस्से सुने हैं? सिर्फ़ काउंट मार्कोव ही उसके बराबर की चोट साबित हुआ। आप रूमालवाला क़िस्सा जानते हैं? ग़ज़ब का क़िस्सा है वह!"

और बातूनी दोल्गोरूकोव कभी बोरीस तथा कभी प्रिंस अन्द्रेई की ओर देखते हुए यह क़िस्सा सुनाने लगा कि कैसे बोनापार्ट ने हमारे राजदूत मार्कोव की परीक्षा लेने के लिये जान-बूझकर अपना रूमाल गिरा दिया और रुककर इस आशा से मार्कोव की ओर देखने लगा कि वह उसे उठाकर उसे देता है या नहीं। लेकिन मार्कोव ने इसी वक़्त अपना रूमाल भी बोनापार्ट के रूमाल के पास गिरा दिया और बोनापार्ट के रूमाल को वहीं पड़ा छोड़कर अपना रूमाल उठा लिया।

"बहुत ख़ूब!" बोल्कोन्स्की ने कहा। "तो प्रिंस, मैं आपके पास इस नौजवान के लिये अनुरोध करने आया हूं। बात यह है..."

मगर प्रिंस अन्द्रेई के वाक्य पूरा करने के पहले ही एक एडजुटेंट कमरे में आया और उसने दोल्गोरूकोव से कहा कि सम्राट उसे बुला रहे हैं।

"ओह, कितने अफ़सोस की बात है!" दोल्गोरूकोव ने झटपट उठते और प्रिंस अन्द्रेई तथा बोरीस से हाथ मिलाते हुए कहा। "आप जानते ही हैं कि मुझसे जो कुछ भी हो सकता है, मुझे आपके और इस प्यारे नौजवान के लिये वह सभी कुछ करके बड़ी खुशी होगी।" उसने खुशमिज़ाजी, निश्छलता और उत्साहपूर्ण लापरवाही से एक बार फिर बोरीस से हाथ मिलाया। "मगर आप देख ही रहे हैं... किसी और दिन!"

सत्ता-शिखरों की निकटता का विचार, जो बोरीस इस क्षण अनुभव कर रहा था, उसके मन को उद्वेलित किये हुए था। उसे इस बात की चेतना थी कि यहां वह उन स्प्रिंगों के बहुत निकट है जो विराट जन-समूहों की गति-विधियों का संचालन करते हैं और अपनी रेजिमेंट में वह अपने को जिनका एक छोटा-सा, विनम्र और तुच्छ अंश अनुभव करता है। प्रिंस दोल्गोरूकोव के पीछे-पीछे ये दोनों भी दालान में आये और उन्हें अपने सामने से (सम्राट के उसी कमरे से बाहर आनेवाला जिसमें दोल्गोरूकोव गया था) असैनिक पोशाक में नाटा-सा, बहुत ही बुद्धिमान चेहरेवाला व्यक्ति आता दिखायी दिया। उसका आगे

की ओर बढ़ा हुआ जबड़ा उसके चेहरे को कुरूप बनाने के बजाय उसे विशेष सजीवता और सूझ-बूझ का भाव प्रदान करता था। इस नाटे-से व्यक्ति ने एक सुपरिचित की तरह सिर झुकाकर दोल्गोरूकोव का अभिवादन किया और सीधे प्रिंस अन्द्रेई की तरफ़ बढ़ते हुए उसके चेहरे पर अपनी निष्ठुर दृष्टि जमा दी। वह यह आशा कर रहा था कि प्रिंस अन्द्रेई या तो उसका अभिवादन करेगा या उसके रास्ते से हट जायेगा। मगर प्रिंस अन्द्रेई ने दोनों में से एक भी बात नहीं की। उसके चेहरे पर गुस्से का भाव झलक उठा और यह जवान आदमी मुंह फेरकर दालान के एक ओर को हट गया और आगे निकल गया।

"यह कौन था?" बोरीस ने पूछा।

"यह एक बहुत ही विलक्षण, किन्तु उन लोगों में से है जो मुझे बिल्कुल अच्छे नहीं लगते। यह विदेश-मन्त्री प्रिंस अदाम चार्तोरीज्स्की था।"

"ऐसे लोग ही," बोल्कोन्स्की ने, जब ये दोनों महल से बाहर आये, आह भरकर कहा, जिसे वह दबा नहीं पाया, "ऐसे लोग ही तो राष्ट्रों के भाग्य-निर्णायक हैं।"

अगले दिन सेनायें आगे बढ़ चलीं और बोरीस आउस्टेरलिट्ज़ की लड़ाई तक न तो बोल्कोन्स्की और न दोल्गोरूकोव से ही मिल सका और फ़िलहाल इज़्माइलोव्स्की रेजिमेंट में ही रहा।

१०

१६ तारीख को पौ फटते ही देनीसोव का स्कवाड्रन, जिसमें निकोलाई रोस्तोव शामिल था और जो प्रिंस बग्रातिओन की सेना का भाग था, अपने पड़ाव से सीधे लड़ाई के मैदान की ओर रवाना हो गया और दूसरे सैन्य-समूहों के पीछे-पीछे एक किलोमीटर से कुछ अधिक दूर जाने के बाद उसे बड़ी सड़क पर रोक दिया गया। रोस्तोव ने कज़्ज़ाकों, हुस्सारों के पहले और दूसरे स्कवाड्रन, तोपख़ाने के साथ प्यादा बटालियनों तथा एडजुटेंटों के साथ जनरल बग्रातिओन और जनरल दोल्गोरूकोव को अपने निकट से गुज़रते देखा। वह सारा भय,

जिसे उसने लड़ाई शुरू होने के पहले की तरह अब फिर अनुभव किया था, वह मानसिक संघर्ष, जिसकी मदद से उसने इस भय पर विजय पायी थी, उसके ये सपने कि कैसे वह एक असली हुस्सार की तरह इस लड़ाई में अपने जौहर दिखायेगा – यह सब कुछ व्यर्थ ही रहा। इस स्कवाड्रन को रिज़र्व में रख लिया गया और निकोलाई रोस्तोव ने ऊबते तथा उदास होते हुए यह दिन बिताया। सुबह के आठ बजने के फ़ौरन बाद उसने अपने से कुछ ही दूर गोले-गोलियां चलने की आवाज़ें और "हुर्रे" सुने, वापस लाये गये घायल (जिनकी संख्या बहुत नहीं थी) देखे और आख़िर यह देखा कि कैसे कोई सौ कज़्ज़ाकों से घिरे फ़्रांसीसी घुड़सवारों के एक पूरे दल को बन्दी बनाकर लाया गया। शायद लड़ाई ख़त्म हो गयी थी, शायद कोई बड़ी लड़ाई नहीं हुई थी, मगर कामयाबी हमारे हाथ रही थी। लड़ाई के मैदान से लौटनेवाले सैनिक और अफ़सर शानदार जीत, वीशाऊ शहर पर क़ब्ज़े और फ़्रांसी-सियों के पूरे स्कवाड्रन के बन्दी बनाये जाने के क़िस्से सुनाते थे। रात के वक़्त ज़ोर का पाला पड़ने के बाद दिन बहुत ही सुहावना और धूप-नहाया था तथा पतझर के इस दिन की मधुर चमक विजय के सुखद समाचार के अनुरूप थी, जिसकी केवल उसमें भाग लेनेवालों के वर्णनों से ही नहीं, बल्कि रोस्तोव के पास से इधर-उधर आने-जानेवाले सैनिकों, अफ़सरों, जनरलों और एडजुटेंटों के खिले हुए चेहरों से भी अनुभूति होती थी। निकोलाई रोस्तोव को इस कारण और भी ज़्यादा अफ़सोस हो रहा था कि व्यर्थ ही उसने लड़ाई से पहले अनुभव होनेवाले भय की यातना सही और फिर निठल्ले बैठकर ही इतना बढ़िया दिन गंवाया।

"रोस्तोव, आओ, ग़म ग़लत करने के लिये पियें।" 'र' का सही उच्चारण न कर पानेवाले देनीसोव ने सड़क-किनारे बैठकर एक बोतल और साथ में कलेवा अपने सामने रखकर उसे आवाज़ दी।

देनीसोव के इस "शराबख़ाने" के गिर्द खाने-पीने और बातें करने-वाले अफ़सरों का घेरा-सा बन गया।

"वे एक और को लिये आ रहे हैं!" एक अफ़सर ने फ़्रांसीसी बन्दी घुड़सवार की ओर संकेत करते हुए कहा जिसे दो कज़्ज़ाक पैदल लिये आ रहे थे।

इनमें से एक कज़्ज़ाक उस बढ़िया और बड़े फ़्रांसीसी घोड़े को

लगाम से पकड़े ला रहा था जिसे उन्होंने बन्दी से छीना था।

"घोड़ा बेच दो!" देनीसोव ने पुकारकर कज़्ज़ाक से कहा।

"चाहते हैं तो ख़रीद लीजिये, हुज़ूर..."

अफ़सर उठे और उन्होंने कज़्ज़ाकों और बन्दी फ़्रांसीसी को घेर लिया। अलसाशियायी फ़्रांसीसी घुड़सैनिक बिल्कुल नौजवान था और जर्मन उच्चारण से फ़्रांसीसी बोलता था। वह उत्तेजना से हांफ रहा था, उसका चेहरा सुर्ख़ था और फ़्रांसीसी भाषा सुनते ही कभी एक तो कभी दूसरे रूसी अफ़सर को सम्बोधित करते हुए बोलने लगा। उसने कहा कि उसे कभी बन्दी न बनाया जा सकता और अगर ऐसा हुआ है तो इसके लिये वह नहीं, बल्कि कॉरपोरल दोषी है जिसने घोड़े के ओहार लाने के लिये उसे भेजा था, यद्यपि उसने उसे बताया था कि वहां रूसी हैं। और हर शब्द के बाद वह यह भी कहता जाता था कि "मेरे घोड़े को कोई हानि नहीं पहुंचाइये" और उसे प्यार से सहलाता था। साफ़ ज़ाहिर था कि वह इस बात को अच्छी तरह से समझ नहीं रहा था कि किस जगह पर है। कभी तो वह अपने को बन्दी बनाये जाने के लिये क्षमा मांगता तो कभी अपने को ऊंचे अफ़सरों के सामने समझते हुए अपने सैनिक अनुशासन तथा सैनिक सेवा के उत्साह पर ज़ोर देता। वह हमारे चंडावल में हमारे लिये एकदम परायी फ़्रांसीसी सेनाओं के वातावरण की पूरी ताज़गी ले आया।

कज़्ज़ाकों ने सोने के बीस रूबलों में घोड़ा बेच दिया और रोस्तोव ने, जो घर से पैसे आ जाने के फलस्वरूप अफ़सरों में सबसे ज़्यादा अमीर था, उसे ख़रीद लिया।

"मेरे घोड़े को कोई हानि नहीं पहुंचाइये," अलसाशियायी फ़्रांसीसी ने ख़ुशमिज़ाजी से रोस्तोव से उस समय कहा, जब घोड़ा उसे दिया गया।

रोस्तोव ने मुस्कराते हुए घुड़सैनिक को तसल्ली दी और उसे कुछ पैसे भी दिये।

"हैलो, हैलो!" कज़्ज़ाक ने बन्दी का हाथ छूते हुए कहा ताकि वह आगे बढ़े।

"सम्राट! सम्राट!" अचानक हुस्सारों के बीच यह शब्द सुनायी दिया।

सभी उतावली और दौड़-धूप करने लगे तथा रोस्तोव को अपने

पीछे सड़क पर कुछ घुड़सवार, जिनकी टोपियों पर सफ़ेद कलगियां लगी थीं, बढ़े आते दिखायी दिये। आन की आन में सब अपनी जगहों पर जाकर इन्तज़ार करने लगे।

रोस्तोव को न तो इस बात की चेतना रही और न उसने यह अनुभव ही किया कि कैसे वह भागकर अपनी जगह तक पहुंचा और घोड़े पर सवार हो गया। क्षण भर में ही इस बात का मलाल जाता रहा कि वह आज की लड़ाई में हिस्सा नहीं ले सका, और उन लोगों के बीच ही होने के कारण, जिन्हें वह हर दिन देखता था, उसका बिगड़ा हुआ मूड भी ठीक हो गया। एक पल में ही उसके मन से अपने बारे में हर विचार लुप्त हो गया। वह तो सम्राट की निकटता से अनुभव होनेवाली सौभाग्य-भावना से पूरी तरह अभिभूत था। वह महसूस कर रहा था कि यह निकटता ही उसकी आज की सारी क्षति की पूर्त्ति थी। वह वैसे ही ख़ुश था जैसे कोई प्रेमी प्रेयसी से मिलने के चिर-प्रतीक्षित क्षण के निकट आने पर ख़ुश होता है। मुड़कर देखने का साहस न कर पाते और मुड़कर देखे बिना ही वह उल्लासपूर्ण अन्तर्ज्ञान से **उनका** निकट आते जाना अनुभव कर रहा था। और वह निकट आते जा रहे सवारों के दल के घोड़ों की टापों की आवाज़ से नहीं, बल्कि इसलिये ऐसा महसूस कर रहा था कि ज्यों-ज्यों यह जलूस अधिकाधिक नज़दीक आता जा रहा था, त्यों-त्यों उसके चारों ओर सभी कुछ अधिक उज्ज्वल, हर्षमय, अर्थपूर्ण तथा समारोही होता जाता था। सम्राट रूपी यह सूरज, जैसा कि रोस्तोव को प्रतीत होता था, अपने सभी ओर सुखद और भव्य प्रकाश फैलाता हुआ ज़्यादा से ज़्यादा नज़दीक आता जाता था, और लीजिये वह अपने को उसकी किरणों से घिरा हुआ अनुभव करने लगा है, वह उनकी आवाज़ सुन रहा है – स्नेहपूर्ण, शान्त, अद्भुत और साथ ही साधारण आवाज़। जैसा कि रोस्तोव की भावना के अनुसार होना चाहिये था, गहरी ख़ामोशी छा गयी और इस ख़ामोशी में सम्राट की आवाज सुनायी दी।

"पाव्लोग्राद की रेजिमेंट के हुस्सार?" सम्राट ने फ़्रांसीसी में पूछा।

"रिज़र्व, हुज़ूर!" किसी ने जवाब दिया और यह आवाज़ फ़्रांसीसी में यह पूछनेवाली – "पाव्लोग्राद की रेजिमेंट के हुस्सार?" – देव-तुल्य आवाज़ की तुलना में कितनी साधारण और मानवीय आवाज़ थी।

अपने घोड़े को रोस्तोव के निकट लाकर सम्राट ने उसे रोक लिया। सम्राट अलेक्सान्द्र का चेहरा तीन दिन पहले हुए निरीक्षण के समय की तुलना में कहीं अधिक सुन्दर था। उसपर ऐसी ख़ुशी और जवानी, ऐसी भोली-भाली जवानी की चमक थी कि यह चौदह वर्षीय लड़के के उत्साह की याद दिलाती थी, फिर भी यह प्रतापी सम्राट का चेहरा था। स्कवाड्रन पर सरसरी नज़र डालते हुए सम्राट की आंखें रोस्तोव की आंखों से मिलीं और दो सेकण्ड तक वहीं टिकी रहीं। रोस्तोव के दिल की इस वक़्त क्या हालत थी, सम्राट यह समझे या नहीं (रोस्तोव को लगा कि वह समझ गये हैं), मगर उन्होंने दो सेकण्ड तक अपनी नीली आंखों से, जिनसे प्यारी-प्यारी और सुखद प्रकाश-किरणें छन रही थीं, रोस्तोव के चेहरे को ध्यान से देखा। इसके बाद उन्होंने अचानक भौंह चढ़ायी, अपने घोड़े को ज़ोर से बायीं एड़ लगायी और उसे सरपट दौड़ाते हुए आगे चले गये।

जवान सम्राट लड़ाई के वक़्त वहां उपस्थित रहने की अपनी चाह को किसी प्रकार भी न दबा सके और दरबारियों के विरोध-अनुरोध के बावजूद दिन के बारह बजे निजी रक्षा-दल से अलग होकर अपने घोड़े को मोर्चे की ओर सरपट दौड़ा ले चले। हुस्सारों के पास पहुंचने से पहले ही कई एडजुटेंट उनसे रास्ते में मिले जिन्होंने उन्हें लड़ाई में जीत हासिल होने की ख़ुशख़बरी दी।

इस लड़ाई को, जिसमें सिर्फ़ इतना ही हुआ था कि फ़्रांसीसियों के एक स्कवाड्रन को बन्दी बना लिया गया था, फ़्रांसीसियों पर शानदार जीत के रूप में पेश किया गया था, और इसलिये सम्राट तथा पूरी सेना, ख़ास तौर पर जब तक कि लड़ाई के मैदान से बारूद का धुआं नहीं हटा था, यह विश्वास करते थे कि फ़्रांसीसियों को हरा दिया गया है और वे मजबूरन पीछे हट रहे हैं। सम्राट के आगे चले जाने के कुछ मिनट बाद पाव्लोग्राद की रेजिमेंट को आगे बढ़ने का हुक्म मिला। छोटे-से जर्मन क़स्बे, वीशाऊ में ही रोस्तोव ने सम्राट को फिर से देखा। नगर-चौक में, जहां सम्राट के आने के पहले ख़ूब गोलियां चली थीं, कुछ घायल और मरे हुए लोग पड़े थे जिन्हें अभी तक ले जाया नहीं गया था। सैनिक और असैनिक अमले से घिरे हुए सम्राट निरीक्षण के समय से भिन्न एक अंग्रेज़ी लाखी घोड़े पर सवार थे और एक तरफ़ ज़रा झुककर बड़े सुन्दर अन्दाज़ में सोने की कमानीवाली दूरबीन आंखों

से सटाये हुए मुंह के बल पड़े और ख़ून से लथपथ, नंगे सिरवाले एक सैनिक को देख रहे थे। घायल सैनिक इतना गन्दा, बदसूरत और घिनौना था कि उसका सम्राट के नज़दीक होना रोस्तोव को बुरी तरह से खल रहा था। रोस्तोव ने देखा कि सम्राट के कुछ झुके हुए कंधे कैसे सिहरे मानो उन्हें झुरझुरी महसूस हुई हो, कैसे उनका बायां पांव बेचैनी से घोड़े की बग़ल में जल्दी-जल्दी एड़ मारने लगा और कैसे अच्छी तरह से सधा हुआ घोड़ा उदासीनता से इधर-उधर देखता हुआ जहां का तहां खड़ा रहा। एडजुटेंट घोड़े से नीचे उतरकर घायल सैनिक की बग़लों में हाथ डालकर उसे उसी समय लाये गये स्ट्रेचर पर लिटाने लगे। सैनिक कराह उठा।

"धीरे, धीरे, क्या धीरे-धीरे ऐसा नहीं किया जा सकता?" सम्भवतः मरणासन्न सैनिक से भी अधिक यातना अनुभव करते हुए सम्राट कह उठे और घोड़े को आगे बढ़ा ले गये।

रोस्तोव ने देखा कि कैसे सम्राट की आंखें छलछला आयी थीं और कैसे उन्होंने वहां से जाते हुए चार्तोरीज्स्की से फ़्रांसीसी में यह कहा था:

"कितनी भयानक, कितनी भयानक चीज़ है यह युद्ध!"

हरावल की हमारी सेनायें वीशाऊ से आगे, शत्रु-सेनाओं के सामने खड़ी थीं जो दिन भर के दौरान हल्की-सी झड़प होने पर भी पीछे हटती जाती थीं। हरावल के प्रति सम्राट की ओर से आभार प्रकट किया गया, पुरस्कार देने के वचन दिये गये और सैनिकों को हर दिन की तुलना में दुगुनी वोद्का दी गयी। पिछली रात के मुक़ाबले में आज और भी ज़्यादा ज़ोर से पड़ाव-अलाव जल रहे थे और सैनिकों के गाने गूंज रहे थे। इस रात को देनीसोव अपने मेजर बनाये जाने का समारोह मना रहा था और इस जशन के अन्त में रोस्तोव ने, जो काफ़ी पी चुका था, सम्राट के स्वास्थ्य के लिये जाम पीने का प्रस्ताव किया। "सम्राट-शासक के लिये नहीं, जैसा कि औपचारिक दावतों में कहा जाता है," वह बोला, "बल्कि ऐसे सम्राट के लिये जो दयालु, मनमोहक और महान व्यक्ति हैं। हम उनके स्वास्थ्य और फ़्रांसीसियों पर अपनी यक़ीनी जीत के लिये पीते हैं!"

"अगर हम पहले भी ख़ूब डटकर लड़े," उसने कहा, "और हमने फ़्रांसीसियों को नाकों चने चबवा दिये, जैसा कि शेनग्राबेन में

हुआ, तो अब, जब सम्राट ख़ुद हमारे साथ हैं, तो उनका क्या हाल होगा? हम सभी, हम सभी ख़ुशी से सम्राट के लिये अपने प्राण न्योछावर कर देंगे। मैं ठीक कह रहा हूं न, महानुभावो? हो सकता है कि मैं ठीक नहीं कह रहा हूं, मैंने बहुत ज़्यादा पी ली है। लेकिन मैं ऐसा महसूस करता हूं और आप भी। तो आइये, पियें सम्राट अलेक्सान्द्र प्रथम की सेहत का जाम! हुर्रा!"

"हुर्रा!" अफ़सरों की उत्साहपूर्ण आवाज़ें गूंज उठीं।

और बूढ़ा कप्तान कीर्स्तेन भी बड़े उत्साह तथा बीस वर्षीय रोस्तोव की भांति ही सच्चे मन से हुर्रा चिल्लाया।

अफ़सरों ने जब शराब पीकर अपने गिलास तोड़ दिये तो कीर्स्तेन ने नये गिलास भरे और सिर्फ़ एक क़मीज़ तथा बिरजिस पहने और गिलास हाथ में लिये हुए सैनिकों के अलावों के पास गया। अपनी लम्बी-लम्बी सफ़ेद मूंछों और क़मीज़ के खुले बटनों के पीछे से सफ़ेद बालों की झलक देते हुए तथा हाथ को ऊपर की ओर उठाकर वह एक भव्य मुद्रा में अलाव के प्रकाश में रुक गया।

"जवानो, सम्राट की सेहत और शत्रुओं पर विजय के लिये, हुर्रा!" उसने बूढ़े हुस्सार की अपनी ज़ोरदार, भारी आवाज़ में चिल्लाकर कहा।

हुस्सार उसके गिर्द जमा हो गये और वे मिलकर ऊंची आवाज़ में हुर्रा चिल्लाये।

रात को बहुत देर से, जब सभी चले गये, तो देनीसोव ने अपने छोटे-से हाथ से अपने प्रेमपात्र रोस्तोव का कंधा थपथपाया और कहा:

"यहां, मोर्चे पर अगर तुम्हें प्यार करने को कोई और नहीं मिला तो तुम ज़ार को ही प्यार करने लगे।"

"देनीसोव, तुम इस बात का मज़ाक़ नहीं उड़ाओ," रोस्तोव चिल्ला उठा, "यह इतनी उच्च, इतनी उदात्त भावना है, इतनी..."

"बिल्कुल ठीक, बिल्कुल ठीक है, मेरे दोस्त। मैं भी ऐसा ही अनुभव करता हूं, तुम्हारी इस भावना का अनुमोदन करता हूं..."

"नहीं, तुम नहीं समझते हो!"

और रोस्तोव उठकर यह कल्पना करते हुए अलावों के बीच की जगह पर टहलने लगा कि जीवन की रक्षा किये बिना (इसकी कल्पना करने का तो वह साहस ही नहीं कर सकता था) मर जाना, सम्राट

की आंखों के सामने मर जाना कितना बड़ा सौभाग्य होता। वह सचमुच ही ज़ार को, रूसी सैनिक-शक्ति की कीर्ति और भावी विजय की आशा को प्यार करता था। आउस्टेरलिट्ज़ की लड़ाई के पहले के स्मरणीय दिनों में केवल रोस्तोव ही ऐसा अनुभव नहीं करता था – रूसी सेना के दस में से लगभग नौ व्यक्ति अपने ज़ार और रूसी सैन्य-शक्ति की कीर्ति को प्यार करते थे, यद्यपि वे रोस्तोव जितने उल्लासपूर्ण नहीं थे।

११

अगले दिन सम्राट वीशाऊ में ही रहे। उनके निजी डाक्टर विल्ये को कई बार उनके पास बुलाया गया। मुख्य सैनिक कार्यालय और उसके आस-पास की सेनाओं में यह ख़बर फैली हुई थी कि सम्राट की तबीयत अच्छी नहीं है। उनके निकटवर्ती लोगों का कहना था कि उन्होंने कुछ भी खाया-पिया नहीं और पिछली रात को ढंग से सोये भी नहीं। इस अस्वस्थता का कारण यह बताया जाता था कि संवेदनशील सम्राट के दिल पर घायलों और मृतकों को देखने से बहुत बुरा असर पड़ा था।

१७ तारीख़ की उषावेला में हमारी अग्रिम सैनिक-चौकियों से एक फ़्रांसीसी अफ़सर को भेजा गया जो विरामसन्धि का ध्वज हाथ में लिये था और सम्राट से मिलना चाहता था। इस अफ़सर का नाम सावारी था। सम्राट की उसी समय आंख लगी थी और इसलिये सावारी को इन्तज़ार करना पड़ा। दोपहर को उसे सम्राट के पास जाने दिया गया और एक घण्टे बाद वह प्रिंस दोल्गोरूकोव को साथ लिये हुए फ़्रांसीसी सेना की अग्रिम चौकियों की ओर वापस रवाना हो गया।

सुनने में आया कि सावारी शांति और सम्राट अलेक्सान्द्र तथा नेपोलियन के बीच भेंट का प्रस्ताव लेकर आया था। सारी रूसी सेना के लिये यह ख़ुशी और गर्व की बात थी कि व्यक्तिगत भेंट से इन्कार कर दिया गया था और सम्राट के बजाय वीशाऊ की लड़ाई के विजेता प्रिंस दोल्गोरूकोव को नेपोलियन से बातचीत करने के लिये भेज दिया

गया था, अगर आशा के विपरीत बातचीत का उद्देश्य वास्तव में ही शान्ति की चाह हो।

शाम होते-होते दोल्गोरूकोव लौट आया, सीधा सम्राट के पास गया और देर तक अकेला ही उनके साथ रहा।

१८ और १९ तारीख़ को हमारी सेनायें दो दिन तक और आगे बढ़ती गयीं और शत्रु की अग्रिम सेनायें मामूली-सी झड़पों के बाद पीछे हट गयीं। १९ तारीख़ की दोपहर से सेना के उच्च क्षेत्रों में बहुत दौड़-धूप और उत्तेजनापूर्ण गति-विधि शुरू हो गयी जो अगले दिन, २० नवम्बर की सुबह तक जारी रही जब आउस्टेरलिट्ज़ की स्मरणीय लड़ाई लड़ी गयी।

१९ तारीख़ की दोपहर तक सारी गति-विधियां, उत्तेजनापूर्ण बातचीत और दौड़-धूप तथा एडजुटेंटों का इधर-उधर आना-जाना दोनों सम्राटों के मुख्य सैनिक कार्यालयों तक ही सीमित रहा। दोपहर के बाद कुतूज़ोव और अन्य सेना-संचालकों के मुख्य सैनिक कार्यालयों में यही दौड़-धूप होने लगी। शाम होते तक एडजुटेंटों के माध्यम से सेना के हर कोने तथा हर भाग तक यह उत्तेजना पहुंच गयी। १९ तारीख़ की रात को मित्र राष्ट्रों की अस्सी हज़ार सेनायें शोर मचाती हुई जागीं और कोई ग्यारह किलोमीटर लम्बे, विराट समूह के रूप में आगे बढ़ चलीं।

सम्राटों के मुख्य सैनिक कार्यालय में सुबह के समय संकेन्द्रित तथा बाद में सभी ओर फैल जानेवाली उत्तेजना किसी घण्टाघर की बड़ी घड़ी के केन्द्रीय चक्र की पहली हरकत के समान थी। घड़ी का पहला चक्र धीरे से चलता है, फिर दूसरा और तीसरा और इसके बाद सभी चक्र, उत्तोलक, दन्त-चक्र अधिकाधिक तेज़ी से चलने लगते हैं, घण्टे बजने लगते हैं, मूर्त्तियां बाहर आने लगती हैं और हरकत का परिणाम दिखाती हुई सुइयां लयबद्ध ढंग से घूमने लगती हैं।

घड़ी की यन्त्र-रचना के समान फ़ौजी मशीन के एक बार चालू हो जाने पर वह भी अन्तिम परिणाम तक पहुंचती है और उसी प्रकार से वे भाग गतिहीन रहते हैं जिन्हें हरकत में नहीं लाया गया है। दन्तों से चिपटते हुए चक्र अपनी धुरियों पर शोर मचाते हैं, जल्दी से घूमती हुई घिरनियां घर्र-घर्र करती हैं, मगर पास का चक्र ऐसे शान्त और निश्चल रहता है मानो वह सैकड़ों वर्षों तक ऐसे ही गतिहीन खड़ा

रहने को तैयार हो। किन्तु ऐसा क्षण आता है जब उत्तोलक पर ज़ोर पड़ता है और यह निश्चल चक्र भी सामान्य गति का अनुकरण तथा चीं-चर्र करता हुआ चलने लगता है और एक ही क्रिया का अंग बन जाता है जिसका परिणाम और लक्ष्य उसकी समझ के बाहर होता है।

जैसे घड़ी के असंख्य चक्रों और घिरनियों की जटिल गति-विधियों का परिणाम केवल समय बतानेवाली सुइयों का धीरे-धीरे और एक बंधी लय में हिलना-डुलना होता है, वैसे ही इन एक लाख साठ हज़ार रूसियों और फ़्रांसीसियों की जटिल मानवीय गति-विधियों – इन लोगों के सारे भावावेशों, इच्छाओं, पश्चातापों, अपमानों, व्यथा-वेदनाओं, गर्व, भय और उल्लास के विस्फोटों का परिणाम आउस्टेरलिट्ज़ की लड़ाई, तथाकथित तीन सम्राटों की लड़ाई में होनेवाली पराजय यानी मानव इतिहास के डायल पर विश्वव्यापी ऐतिहासिक सुइयों की धीमी-धीमी हरकत थी।

प्रिंस अन्द्रेई बोल्कोन्स्की इस दिन ड्यूटी पर था और उसके लिये प्रधान सेनापति के निकट बने रहना ज़रूरी था।

शाम के छः बजे कुतूज़ोव सम्राटों के मुख्य सैनिक कार्यालय में गये और कुछ देर तक सम्राट के साथ रहने के बाद बड़े मार्शल काउंट तोलस्तोय से मिलने चले गये।

बोल्कोन्स्की ने इस मौक़े का फ़ायदा उठाया और वह अगले दिन होनेवाली लड़ाई के बारे में कुछ विस्तार से जानने के लिये दोल्गोरूकोव के पास पहुंच गया। प्रिंस बोल्कोन्स्की यह अनुभव कर रहा था कि कुतूज़ोव किसी कारण खिन्न और उखड़े-उखड़े हैं, कि सम्राटों के मुख्य सैनिक कार्यालय के लोग उनसे नाख़ुश हैं और वे कुतूज़ोव के प्रति ऐसे लोगों का अन्दाज़ अपनाये हुए हैं जो कोई ऐसी बात जानते हैं जिससे दूसरे अनभिज्ञ हैं। इसलिये बोल्कोन्स्की ने दोल्गोरूकोव से बात करनी चाही।

"आइये, आइये, मेरे प्यारे," बिलीबिन के साथ चाय पी रहे दोल्गोरूकोव ने बोल्कोन्स्की से कहा। "तो कल जशन होगा। आपके बड़े मियां कैसे हैं? बुरे मूड में हैं?"

"मैं यह तो नहीं कहूंगा कि बुरे मूड में हैं, लेकिन मुझे लगता है – वह यह चाहते हैं कि उनकी बात ध्यान से सुन ली जाये।"

"युद्ध-परिषद की बैठक में उनकी बात सुनी गयी थी और तब

भी सुनी जायेगी जब वह कोई काम की बात करेंगे। किन्तु अब, जब नेपोलियन सबसे अधिक तो निर्णायक लड़ाई से डरता है, इस मामले में देर और किसी चीज़ की प्रतीक्षा करना सम्भव नहीं।"

"अरे हां, आप तो उससे मिल आये हैं न?" प्रिंस अन्द्रेई ने कहा। "तो कैसा लगा आपको बोनापार्ट? कैसा प्रभाव डाला उसने आपके मन पर?"

"हां, मिल आया हूं और मुझे इस बात का यक़ीन हो गया है कि वह निर्णायक लड़ाई से इतना अधिक डरता है कि कुछ पूछिये नहीं," दोल्गोरूकोव ने अपनी बात दोहरायी। सम्भवतः वह नेपोलियन के साथ हुई अपनी भेंट के इस सामान्य निष्कर्ष को बहुत अधिक महत्त्व देता था। "अगर वह इस लड़ाई से डरता न होता तो किसलिये उसने यह भेंट करनी चाही होती, किसलिये वह बातचीत करता और सबसे मुख्य बात तो यह है, कि किसलिये पीछे हटता, जबकि पीछे हटना उसके लड़ाई लड़ने के ढंग के बिल्कुल विपरीत है? मेरी बात का विश्वास कीजिये, वह डरता है, निर्णायक लड़ाई से डरता है, अब उसका बुरा वक़्त आ गया है। मेरी इस बात को पत्थर की लकीर मानिये।"

"लेकिन यह बताइये कि वह ख़ुद कैसा लगता है?" प्रिंस अन्द्रेई ने फिर से पूछा।

"भूरा फ़्रॉक-कोट पहननेवाला वह ऐसा आदमी है जो इस चीज़ के लिये बहुत इच्छुक है कि उसे 'महामहिम' कहकर सम्बोधित किया जाये। किन्तु उसे इस बात का ज़रूर दुख हुआ होगा कि वह मुझसे ऐसी कोई उपाधि नहीं पा सका। इस तरह का आदमी है वह और इससे ज़्यादा मैं कुछ नहीं कह सकता उसके बारे में," दोल्गोरूकोव ने मुस्कराते हुए बिलीबिन की तरफ़ देखकर कहा।

"बुज़ुर्ग कुतूज़ोव का बहुत आदर करने के बावजूद," वह कहता गया, "हम सब ख़ासे बेवक़ूफ़ साबित होंगे अगर किसी चीज़ का इन्तज़ार करते हुए उसे अपने हाथ से निकल जाने या अपनी आंखों में धूल झोंकने देंगे, जबकि वह पूरी तरह हमारी मुट्ठी में है। नहीं, हमें सुवोरोव और उनके इस नियम को नहीं भूलना चाहिये कि अपने पर हमला नहीं करने दो, बल्कि ख़ुद हमला करो। विश्वास कीजिये कि युद्ध में जवान लोगों का जोश ढीले-ढाले बूढ़ों के सारे तजरबे के मुक़ाबले में ज़्यादा सही रास्ता दिखाता है।"

"लेकिन हम किस जगह उसपर आक्रमण करेंगे? मैं आज अग्रिम चौकियों पर गया था और यह निर्णय नहीं कर पाया कि उसकी मुख्य सैनिक शक्ति कहां संकेन्द्रित है," प्रिंस अन्द्रेई ने कहा।

वह दोल्गोरूकोव को हमले की अपने द्वारा तैयार की गयी योजना बताना चाहता था।

"ओह, इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ेगा," दोल्गोरूकोव ने झटपट उठते और मेज़ पर नक़्शा फैलाते हुए कहा। "सभी सम्भावनाओं को ध्यान में रखा गया है – अगर वह ब्रून्न में है..."

और प्रिंस दोल्गोरूकोव ने जल्दी-जल्दी तथा अस्पष्ट रूप से वैरोटेर की पार्श्व से आगे बढ़ने की योजना बतायी।

प्रिंस अन्द्रेई आपत्ति करने और अपनी योजना बताने लगा जो वैरोटेर की योजना की भांति अच्छी हो सकती थी, मगर इसकी यही एक कमज़ोरी थी कि वैरोटेर की योजना स्वीकार की जा चुकी थी। प्रिंस अन्द्रेई ने जैसे ही वैरोटेर की योजना की त्रुटियां और अपनी योजना की ख़ूबियां स्पष्ट करनी शुरू कीं, प्रिंस दोल्गोरूकोव ने उसकी बात पर कान देना बन्द कर दिया और खोया-खोया-सा नक़्शे को नहीं, बल्कि प्रिंस अन्द्रेई के चेहरे को ताकने लगा।

"ख़ैर, आज कुतूज़ोव के यहां युद्ध-परिषद की बैठक होनेवाली है – आप यह सब कुछ वहां बता सकते हैं," दोल्गोरूकोव ने कहा।

"मैं ऐसा ही करूंगा," प्रिंस अन्द्रेई ने नक़्शे के पास से हटते हुए जवाब दिया।

"महानुभावो, आप लोग किस चिन्ता के फेर में पड़े हुए हैं?" बिलीबिन ने कहा जो अब तक मुस्कराते हुए इन दोनों की बातें सुनता रहा था और सम्भवतः अब कोई मज़ाक़ करना चाहता था। "कल हार हो या जीत, मगर रूसी सेना की कीर्ति सुनिश्चित है। आपके कुतूज़ोव के अलावा हमारी सैनिक शक्ति का एक भी तो रूसी कमांडर नहीं है। सेना-संचालक हैं – श्रीमान जनरल विम्पफ़ेन, काउंट लांजेरोन, प्रिंस लीख़टेनश्टैन, प्रिंस गोगेनलोये और श्रीमान प्रश... प्रश आदि... जैसे कि सभी पोलिश नाम होते हैं।"

"बस, बस, और ज़हरीले तीर नहीं चलाइये," दोल्गोरूकोव ने कहा। "यह झूठ है, अब दो रूसी कमांडर भी हैं– मीलोरादोविच

और दोख़्तुरोव। काउंट अराकचेयेव भी तीसरे कमांडर हो सकते थे, मगर उनका दिल कमज़ोर है।"

"लगता है कि कुतूज़ोव काउंट तोलस्तोय के कमरे से बाहर आ गये हैं," प्रिंस अन्द्रेई ने कहा। "महानुभावो, सौभाग्य और सफलता की कामना करता हूं," इतना और कहकर तथा दोल्गोरूकोव एवं बिलीबिन से हाथ मिलाकर प्रिंस अन्द्रेई बाहर चला गया।

अपने यहां लौटने पर प्रिंस अन्द्रेई अपने नज़दीक ही गुमसुम बैठे हुए कुतूज़ोव से यह पूछे बिना न रह सका कि अगले दिन होनेवाली लड़ाई के बारे में उनका क्या ख़्याल है?

कुतूज़ोव ने अपने एडजुटेंट को कड़ाई से देखा और थोड़ी देर तक चुप रहने के बाद जवाब दिया:

"मेरे ख़याल में तो हमारी हार होगी। मैंने काउंट तोलस्तोय से भी यही कहा और अनुरोध किया है कि वह सम्राट से ऐसा कह दें। जानते हो, उसने मुझे क्या जवाब दिया? 'ओह, मेरे प्यारे जनरल, मैं तो चावलों तथा कटलेटों में व्यस्त हूं और फ़ौजी मामलों की चिन्ता आप ख़ुद करें।' हां... यह जवाब मिला मुझे!"

१२

रात के नौ बजने के बाद अपनी योजनायें लिये हुए वैरोटेर कुतूज़ोव के कार्यालय में आया, जहां युद्ध-परिषद की बैठक होनेवाली थी। सैन्य-दलों के सभी संचालकों को प्रधान सेनापति के यहां बुलाया गया था और प्रिंस बग्रातिओन को छोड़कर, जिसने आने से इन्कार कर दिया था, सभी सेना-संचालक नियत समय पर आ गये थे।

वैरोटेर, जिसे प्रस्तावित लड़ाई की सारी व्यवस्था करने का काम सौंपा गया था, अपनी सजीवता और उत्साह के कारण ऊंघते-ऊंघते तथा अप्रसन्न कुतूज़ोव की तुलना में, जो मन मारकर युद्ध-परिषद के अध्यक्ष और संचालक की भूमिका अदा कर रहे थे, बिल्कुल भिन्न दिखायी दे रहा था। वैरोटेर स्पष्टतः अपने को उस गति-विधि का अगुआ अनुभव कर रहा था जिसे रोकना सम्भव नहीं था। वह भारी

बोझ से लदी घोड़ा-गाड़ी में जूते और पहाड़ी से ताबड़तोड़ नीचे भागे जा रहे घोड़े के समान था। वह उस घोड़ा-गाड़ी को खींचे लिये जा रहा था या ख़ुद उसके द्वारा धकेला जा रहा था, उसे यह मालूम नहीं था। किन्तु वह पूरी तेज़ी से दौड़ा जा रहा था और उसके पास यह सोचने-समझने का वक़्त नहीं था कि उसकी इस गति-विधि का क्या परिणाम होगा। इस शाम को वैरोटेर दो बार दुश्मन की अगली चौकियों को देखने और दो बार रूसी और आस्ट्रियायी सम्राटों के सामने रिपोर्ट पेश करने तथा स्पष्टीकरण के लिये गया था और फिर अपने कार्यालय में जाकर उसने जर्मन सेनाओं की व्यूह-रचना के बारे में हिदायतें लिखवाई थीं। अब वह बेहद थका-टूटा हुआ कुतूज़ोव के कार्यालय में आया था।

वह सम्भवतः इतना अधिक आत्ममग्न था कि प्रधान सेनापति के प्रति आदर दिखाना भी भूल जाता था, कुतूज़ोव को टोक देता था, सहभाषी के चेहरे की तरफ़ देखे बिना जल्दी-जल्दी और अस्पष्टता से बात करता था, उससे पूछे जानेवाले प्रश्नों के उत्तर नहीं देता था। उसके कपड़ों पर कीचड़ के धब्बे लगे हुए थे, वह बहुत ही दयनीय, क्लान्त और खोया-खोया, मगर साथ ही आत्मविश्वास से ओत-प्रोत और गर्वीला-सा लग रहा था।

कुतूज़ोव ओस्ट्रालिट्ज़ के पास किसी कुलीन की छोटी-सी गढ़ी में ठहरे हुए थे। बड़े दीवानख़ाने में, जिसे प्रधान सेनापति का कार्यालय बना दिया गया था, स्वयं कुतूज़ोव, वैरोटेर और युद्ध-परिषद के सदस्य जमा थे। ये सभी चाय पी रहे थे। केवल प्रिंस बग्रातिओन का इन्त-ज़ार था ताकि परिषद की कार्रवाई शुरू की जाये। सात बजने के कुछ देर बाद बग्रातिओन का अर्दली यह सन्देश लेकर आया कि वह नहीं आ सकता। प्रिंस अन्द्रेई यह बताने के लिये प्रधान सेनापति के पास गया और कुतूज़ोव द्वारा उसे युद्ध-परिषद की बैठक में उपस्थित रहने की पहले से दी गयी अनुमति के आधार पर इसी कमरे में रुक गया।

"चूंकि प्रिंस बग्रातिओन नहीं आ रहे हैं, इसलिये हम परिषद की कार्रवाई शुरू कर सकते हैं," वैरोटेर ने झटपट अपनी जगह से उठते और उस मेज़ के पास जाते हुए कहा जिसपर ब्रून्न के इर्द-गिर्द के इलाक़े का बहुत बड़ा नक़्शा बिछा हुआ था।

अपनी वर्दी के बटन खोले हुए कुतूज़ोव, जिससे मानो उनकी मुक्त होनेवाली मोटी गर्दन कालर पर फैल गयी थी, बुढ़ापे के अनुरूप

थलथल हाथों को कोहनियों की टेक पर दायें-बायें रखे हुए ऊंची आराम-कुर्सी पर बैठे थे और लगभग सो रहे थे। वैरोटेर की आवाज़ सुनकर उन्होंने बड़ी मुश्किल से अपनी एकमात्र आंख खोली।

"हां, हां, कृपया शुरू कीजिये, पहले ही काफ़ी देर हो चुकी है," उन्होंने कहा, अनुमति देते हुए सिर हिलाया, उसे झुकाया और फिर से आंख मुंद ली।

युद्ध-परिषद के सदस्यों ने यदि शुरू में यह सोचा कि कुतूज़ोव सोने का ढोंग कर रहे हैं तो कुछ देर बाद पढ़ी जानेवाली सामग्री के समय उनकी नाक से निकलनेवाली ध्वनियों ने यह स्पष्ट कर दिया कि प्रधान सेनापति इस समय सेनाओं की व्यूह-रचना या किसी दूसरी चीज़ के बारे में अपनी तिरस्कार-भावना व्यक्त करने के बजाय कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण कार्य में मगन हैं – वह अदम्य मानवीय आवश्यकता यानी अपनी सोने की ज़रूरत पूरी कर रहे हैं। कुतूज़ोव सचमुच सो रहे थे। वैरोटेर ने ऐसे व्यक्ति के अन्दाज़ में जो अत्यधिक व्यस्त होने के कारण एक मिनट भी नष्ट न कर सकता हो, कुतूज़ोव की तरफ़ देखा और यह यक़ीन हो जाने पर कि वह सो रहे हैं एक काग़ज़ हाथ में लिया और भावी लड़ाई में सेनाओं की व्यूह-रचना के बारे में ऊंची तथा एकरस आवाज़ में एक शीर्षक के अन्तर्गत, जिसे पढ़ना भी वह नहीं भूला, पढ़कर सुनाने लगा। शीर्षक था :

"२० नवम्बर, १८०५ को कोबेलनिट्ज़ और सोकोलनिट्ज़ के पीछे शत्रु पर आक्रमण के लिये की जानेवाली सेना की व्यूह-रचना।"

सेना की व्यूह-रचना बहुत जटिल और अस्पष्ट थी। जर्मन भाषा में लिखा गया यह विवरण इस प्रकार था :

"चूंकि दुश्मन की फ़ौज का बायां पक्ष जंगलों से ढकी पहाड़ियों पर है और दायां पक्ष कोबेलनिट्ज़ तथा सोकोलनिट्ज़ के पीछेवाले पोखरों के साथ-साथ फैला हुआ है, जबकि दूसरी ओर, अपनी सेना के बायें पक्ष से हम उसके दायें पक्ष को घेर सकते हैं, इसलिये उसके दायें पक्ष पर हमला करना हमारे हक़ में होगा, ख़ास तौर पर अगर हम सोकोलनिट्ज़ और कोबेलनिट्ज़, इन दोनों गांवों पर क़ब्ज़ा कर लें, क्योंकि हम उसके पार्श्व-भाग पर आक्रमण कर सकते हैं और श्लापानिट्ज़ तथा बेलोविट्ज़ के तंग रास्तों से बचते हुए, जो शत्रु

के अग्रभाग को छिपाते हैं, श्लापानिट्ज़ और त्युरास्स्की जंगल के बीच-वाले मैदान में उसका पीछा कर सकते हैं। इसके लिये ज़रूरी होगा कि ... पहला लशकर बढ़े ... दूसरा लशकर बढ़े ... तीसरा लशकर बढ़े ...'' आदि, आदि – वैरोटेर पढ़ता गया। ऐसे लग रहा था कि जनरल बड़ी अनिच्छा से सेना की इस कठिन व्यूह-रचना को सुन रहे थे। दीवार के साथ कमर सटाये और जल रही मोमबत्ती पर नज़र टिकाये ऊंचे क़द का सुनहरे बालोंवाला जनरल बुक्सगेव्देन सुनता प्रतीत नहीं हो रहा था और यह तक नहीं चाहता था कि दूसरे ऐसा समझें कि वह सुन रहा है। वैरोटेर के बिल्कुल सामने अपनी मूंछों को ताव दिये और कंधों को उचकाये, पूरी तरह खुली सुन्दर आंखों को वैरोटेर के चेहरे पर जमाये, कोहनियों को बाहर की ओर निकाले तथा हाथों को घुटनों पर टिकाये लाल-लाल गालोंवाला मीलोरादोविच लड़ने-मरने को तैयार व्यक्ति जैसी मुद्रा में बैठा था। वैरोटेर के चेहरे को एकटक देखते हुए वह एकदम ख़ामोश था और उसके चेहरे से तभी अपनी नज़र हटाता था, जब आस्ट्रियायी सेनाध्यक्ष बोलना बन्द करता था। इस क्षण वह दूसरे जनरलों पर अर्थपूर्ण दृष्टि डालता था। किन्तु उसकी इस अर्थपूर्ण दृष्टि से यह तय करना असम्भव था कि वह सेना की व्यूह-रचना की इस योजना से सहमत है या असहमत, खुश है या नाख़ुश। काउंट लांजेरोन वैरोटेर के सबसे अधिक निकट बैठा था। दक्षिणी फ़्रांस के लोगों जैसे अपने चेहरे पर हल्की-सी मुस्कान के साथ, जो पठन के पूरे समय में बनी रही, वह लघुचित्रवाली सोने की नासदानी को उसके सिरों से जल्दी-जल्दी घुमा रही अपनी पतली-पतली उंग-लियों को देखता जा रहा था। एक बहुत ही लम्बे वाक्य के मध्य में उसने नासदानी घुमाने की यह प्रक्रिया बन्द की, सिर ऊपर उठाया और पतले-पतले होंठों के कोनों पर शिष्टतापूर्ण कटुता से वैरोटेर को टोका और कुछ कहना चाहा। किन्तु आस्ट्रियायी जनरल ने पढ़ना बन्द न करके झल्लाहट से नाक-भौंह सिकोड़ी और कोहनियों को ऐसे झटका मानो कह रहा हो – बाद में, बाद में आप अपने विचार प्रकट कीजियेगा, अभी तो नक़्शे पर नज़र डालने और सुनने की कृपा करें। लांजेरोन ने भौचक्का-सा होकर नज़र ऊपर उठायी, मानो स्पष्टीकरण पाने के लिये मीलोरादोविच की तरफ़ देखा, किन्तु उसकी कोई अर्थ न रखनेवाली अर्थपूर्ण दृष्टि से अपनी दृष्टि मिलने पर आंखों को नीचे

झुका लिया और फिर से नासदानी को घुमाने लगा।

"भूगोल का पाठ पढ़ाया जा रहा है," उसने मानो अपने आपसे कहा, किन्तु काफ़ी ज़ोर से ताकि दूसरे भी सुन सकें।

प्रजेबिशेव्स्की आदरपूर्वक, किन्तु गरिमापूर्ण शिष्टता से एक हाथ से अपना कान वैरोटेर की तरफ़ बढ़ाये हुए ऐसे ज़ाहिर कर रहा था कि बहुत ही ध्यान से सब कुछ सुन रहा है। वैरोटेर के बिल्कुल सामने नाटा-सा दोख़्तुरोव बहुत ही एकाग्रचित्त और विनम्र बना बैठा था, सामने बिछे हुए नक़्शे पर झुककर बड़ी ईमानदारी से सेना की व्यूह-रचना और अपने लिये अनजाने क्षेत्र का अध्ययन कर रहा था। उसने वैरोटेर से कई बार अच्छी तरह सुनायी न देनेवाले शब्द और गांवों के कठिन नाम दोहराने को कहा। वैरोटेर ने उसका यह अनुरोध पूरा कर दिया और दोख़्तुरोव ने इन्हें लिख लिया।

वैरोटेर ने जब एक घण्टे से ज़्यादा समय तक जारी रहनेवाली सेना की व्यूह-रचना की योजना को पढ़ना समाप्त किया तो लांजेरोन ने फिर से नासदानी को घुमाना बन्द कर दिया और वैरोटेर तथा विशेष रूप से अन्य किसी की ओर भी देखे बिना यह कहना शुरू किया कि ऐसी सेना की व्यूह-रचना को व्यावहारिक रूप देना कितना कठिन है जिसके अनुसार शत्रु की स्थिति को स्पष्ट माना जाता है, जबकि वास्तव में यह स्थिति अस्पष्ट हो सकती है, क्योंकि शत्रु लगातार गतिशील है। लांजेरोन की आपत्तियां तर्कसंगत थीं, किन्तु साफ़ दिखायी दे रहा था कि इन आपत्तियों का मुख्य लक्ष्य अत्यधिक आत्मविश्वास से मानो स्कूली छात्रों के सामने अपनी सेना की व्यूह-रचना की योजना पढ़नेवाले जनरल वैरोटेर को यह महसूस करवाने की इच्छा थी कि उसका निरे मूर्खों से नहीं, बल्कि ऐसे लोगों से वास्ता है जो उसे फ़ौजी मामलों के बारे में कुछ अक़्ल सिखा सकते हैं। जब वैरोटेर की एकरस आवाज़ बन्द हो गयी तो कुतूज़ोव ने उस चक्कीवाले की तरह आंखें खोल लीं जो नींद लानेवाली चक्की की आवाज़ के बन्द हो जाने पर जाग जाता है, उन्होंने लांजेरोन की बात सुनी और मानो अपने आपसे यह कहते हुए कि "आप लोग अभी तक इस बकवास के फेर में पड़े हुए हैं!" झटपट आंखें मूंद लीं और अपने सिर को पहले से भी अधिक नीचे झुका लिया।

सेना की व्यूह-रचना की योजना के रचयिता के रूप में वैरोटेर

के सैनिक गर्व पर अधिक से अधिक विषैला प्रहार करते हुए लांजेरोन ने यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि अपने पर हमला होने देने के बजाय बोनापार्ट ख़ुद बड़ी आसानी से हमला कर सकता है और उस हालत में उसकी सारी योजना ज्यों की त्यों धरी रह जायेगी। वैरोटेर ने दृढ़ और तिरस्कारपूर्ण मुस्कान से, जो उसने सम्भवत: हर प्रकार की आलोचना के लिये पहले से ही तैयार कर ली थी, सभी आपत्तियों का उत्तर दिया।

"अगर वह हमपर हमला करने में समर्थ होता तो उसने आज ही ऐसा कर दिया होता," वैरोटेर ने कहा।

"तो आपके मतानुसार यह माना जाये कि उसके पास काफ़ी शक्ति नहीं है?" लांजेरोन ने प्रश्न किया।

"उसके पास चालीस हज़ार सैनिक हों, मुझे तो यह विश्वास भी नहीं," वैरोटेर ने उस डाक्टर की मुस्कान के साथ जवाब दिया जिसे कोई गृहिणी यह बताये कि वह रोगी के इलाज के लिये कौन-सी दवाई इस्तेमाल करे।

"तब तो वह हमारे हमले का इन्तज़ार करते हुए अपनी मौत को बुलावा दे रहा है," लांजेरोन ने व्यंग्यपूर्वक हल्की मुस्कान के साथ तथा समर्थन के लिये फिर से अपने निकट बैठे मीलोरादोविच की ओर देखते हुए कहा।

किन्तु मीलोरादोविच इस क्षण जनरलों के विचार-विनिमय के विषय के बारे में सम्भवत: बहुत ही कम सोच रहा था।

"खैर, हटाइये," वह बोला, "कल लड़ाई के मैदान में सब कुछ देखा जायेगा।"

वैरोटेर फिर ऐसी व्यंग्यपूर्ण मुस्कान से मुस्करा दिया जो कह रही थी कि रूसी जनरलों की आपत्तियों से उसे हंसी आ रही है और उनके सामने उस चीज़ को सिद्ध करना अजीब-सा लग रहा है जिसका न केवल स्वयं उसे दृढ़ विश्वास है, बल्कि वह सम्राटों को भी विश्वास दिला चुका है।

"दुश्मन ने अलाव बुझा दिये हैं और उसके शिविर में लगातार शोर सुनायी दे रहा है," उसने कहा। "इसका क्या मतलब हो सकता है? या तो वह पीछे हट रहा है और इसी एकमात्र चीज से हमें डरना चाहिये या फिर वह अपनी जगह बदल रहा है (वह व्यंग्यपूर्वक

मुस्कराया)। अगर वह त्युरास में भी अपना मोर्चा बना लेगा तो हमें बहुत-से झंझट से मुक्त कर देगा और छोटी से छोटी तफ़सील तक हमारी सारी सैनिक व्यवस्था ज्यों की त्यों बनी रहेगी।"

"भला यह कैसे हो सकता है?" प्रिंस अन्द्रेई ने पूछा जो बहुत देर से अपने सन्देह व्यक्त करने के अवसर की राह देख रहा था।

कुतूज़ोव जाग गये, उन्होंने खरखरी आवाज़ में खांसकर गला साफ़ किया और जनरलों पर नज़र डाली।

"महानुभावो, कल की, बल्कि यह कहना चाहिये कि आज की (क्योंकि आधी रात से अधिक समय हो चुका है) सेना की व्यूह-रचना बदली नहीं जा सकती," उन्होंने कहा। "आप सबने उसे सुन लिया है और हम सभी अपना कर्त्तव्य पूरा करेंगे। मगर लड़ाई से पहले इससे अधिक महत्त्वपूर्ण और कुछ नहीं हो सकता..." (वह ज़रा रुके) "कि अच्छी तरह से सो लिया जाये।"

कुतूज़ोव ने ऐसे ज़ाहिर किया कि वह आरामकुर्सी से उठ रहे हैं। जनरल सिर झुकाकर बाहर चले गये। आधी रात से अधिक समय हो चुका था। प्रिंस अन्द्रेई बाहर आ गया।

प्रिंस अन्द्रेई को, जैसी कि उसने आशा की थी, युद्ध-परिषद की बैठक में अपना मत प्रकट करने का अवसर नहीं मिला और इससे उसके मन में अस्पष्टता तथा व्याकुलता बनी रह गयी। कौन सही था – दोल्गोरूकोव और वैरोटेर या अन्य लोगों के साथ कुतूज़ोव तथा लांजेरोन जिन्होंने आक्रमण की योजना का समर्थन नहीं किया था, वह यह नहीं जानता था। "लेकिन क्या कुतूज़ोव सीधे सम्राट के सामने ही अपने विचार प्रकट नहीं कर सकते थे? क्या इसे किसी दूसरे ढंग से नहीं किया जा सकता था? क्या राज-दरबार की औपचारिकता और व्यक्तिगत कारणों को ध्यान में रखते हुए हज़ारों लोगों और मेरी, **मेरी** ज़िन्दगी को ख़तरे में डालना उचित है?" वह सोच रहा था।

"हां, बहुत सम्भव है कि कल मेरी जान ले ली जाये।" उसने सोचा। और मौत का यह ख़्याल आते ही अचानक अनेक स्मृतियां, बहुत पुरानी और बहुत ही प्यारी स्मृतियां उसके मस्तिष्क में सजीव हो उठीं। उसे पिता जी और पत्नी से अपनी अन्तिम विदाई याद हो आयी। उसे पत्नी के प्रति अपने प्यार का प्रारम्भिक समय तथा यह

याद आया कि वह गर्भवती है – और उसे पत्नी तथा ख़ुद पर दया आ गयी और वह अत्यधिक मानसिक विह्वलता तथा भावुकता की ऐसी स्थिति में ही उस सैन्यकुटीर से बाहर आ गया, जहां नेस्वीत्स्की के साथ ठहरा हुआ था और कुटीर के सामने इधर-उधर टहलने लगा।

रात कुहासेवाली थी और कुहासे में से रहस्यपूर्ण ढंग से चांदनी छन रही थी। "हां, कल, कल!" वह सोच रहा था। "सम्भव है कि कल मेरे लिये सब कुछ ख़त्म हो जाये, इन सारी स्मृतियों का अस्तित्व ही न रहे, इनका मेरे लिये कोई अर्थ ही न रह जाये। सम्भव है कल – शायद कल ही, मुझे ऐसी पूर्वानुभूति हो रही है, आख़िर पहली बार मुझे वह जौहर दिखाने का अवसर मिलेगा जिसे मैं दिखा पाने में समर्थ हूं।" और उसकी कल्पना में अगले दिन की लड़ाई का दृश्य उभरा, उसमें हार हो गयी, वह एक ही जगह पर संकेन्द्रित हो गयी और उसने सभी सेना-संचालकों को बहुत परेशानी की हालत में देखा। और इसी समय तो वह सुखद क्षण, उसका वह तुलोन मानो आख़िर उसके सामने आता है जिसका उसे एक अरसे से इन्तज़ार था। वह दृढ़ता और स्पष्टता से कुतूज़ोव, वैरोटेर तथा सम्राटों के सम्मुख अपना मत प्रकट करता है। सभी उसके तर्कों की अकाट्यता से दंग रह जाते हैं, मगर कोई भी उसकी योजना को व्याव-हारिक रूप देने को तैयार नहीं होता। इसलिये वह एक रेजिमेंट, नहीं, एक डिवीज़न अपने साथ लेता है, सबसे यह वादा करने को कहता है कि कोई भी उसकी योजना में हस्तक्षेप नहीं करेगा, अपने डिवीज़न को निर्णायक लड़ाई के स्थल पर ले जाता है और अकेला ही जीत का डंका बजाने में सफल होता है। "किन्तु मृत्यु और यातना?" उसके अन्तर की दूसरी आवाज़ ने पूछा। मगर प्रिंस अन्द्रेई इस आवाज़ को कोई जवाब न देकर अपनी कामयाबी का सपना ही देखता जाता है। अगली लड़ाई की सेना की व्यूह-रचना वह अकेला ही करता है। यों तो वह कुतूज़ोव का एडजुटेंट है, किन्तु सभी कुछ अकेला ही करता है। अगली लड़ाई भी वह अकेला ही जीतता है। कुतूज़ोव को हटाकर उसे उनकी जगह पर नियुक्त कर दिया जाता है... "लेकिन इसके बाद?" उसके अन्तर की दूसरी आवाज़ ने फिर से पूछा। "अगर ऐसा होने के पहले ही तुम दस बार घायल नहीं हो जाओगे, मारे नहीं जाओगे या छले नहीं जाओगे, तो इसके बाद क्या होगा?" – "इसके बाद..."

प्रिंस अन्द्रेई अपने आपको जवाब देता है, "मुझे मालूम नहीं कि इसके बाद क्या होगा, मैं यह जानना नहीं चाहता और जान भी नहीं सकता। लेकिन अगर मैं यह चाहता हूं, यश-कीर्ति चाहता हूं, लोगों में ख्याति और उनका प्रेम-पात्र बनना चाहता हूं तो इसमें मेरा कोई दोष नहीं है। हां, मैं यह चाहता हूं, सिर्फ़ यही चाहता हूं, सिर्फ़ इसी के लिये जी रहा हूं। हां, केवल इसी के लिये! मैं कभी किसी से यह नहीं कहूंगा, मगर, हे मेरे भगवान! मैं कर ही क्या सकता हूं अगर मैं ख्याति और लोगों के प्यार के सिवा और कुछ भी नहीं चाहता। मृत्यु, घाव, परिवार की क्षति – मुझे किसी भी चीज़ का भय नहीं। अनेक व्यक्ति मुझे प्रिय हैं, अच्छे लगते हैं – पिता, बहन, पत्नी – ये मुझे सबसे अधिक प्यारे हैं – फिर भी, यह इतना बेहद भयानक और अस्वाभाविक प्रतीत होने के बावजूद, मैं इन सभी को ख्याति के एक क्षण, लोगों के दिलों पर अपनी विजय, अपने प्रति उन लोगों के प्यार के लिये न्योछावर कर दूंगा जिन्हें मैं जानता तक नहीं और कभी जानूंगा भी नहीं, इन लोगों के प्यार के लिये," उसने कुतूज़ोव के अहाते में लोगों की आवाज़ें सुनते हुए सोचा। कुतूज़ोव के अहाते में सोने के लिये तैयारियां कर रहे अर्दलियों की आवाज़ें सुनायी दे रही थीं। एक आवाज़, जो सम्भवतः कोचवान की थी, कुतूज़ोव के बूढ़े बावर्ची को, जिसे प्रिंस अन्द्रेई जानता था और जिसका नाम 'तीत' था, उसे चिढ़ाती हुई कह रही थी: "तीत, ओ तीत?"

"क्या है?" बूढ़े बावर्ची ने पूछा।

"जा, जाकर अनाज पीट।" मज़ाक़ करनेवाले ने कहा।

"छिः, तुम सब जहन्नुम में जाओ," अर्दलियों और नौकरों के ठहाके के बीच बूढ़े बावर्ची की आवाज़ सुनायी दी।

"फिर भी मैं इन सबके दिलों पर अपनी जीत को ही सबसे ज़्यादा चाहता और प्यार करता हूं, इस रहस्यपूर्ण शक्ति और ख्याति-कीर्ति को ही, जिसे मैं अपने सिर के ऊपर मंडराते इस कुहासे में अनुभव कर रहा हूं, सबसे अधिक मूल्यवान मानता हूं।"

१३

इसी रात को रोस्तोव घुड़सेना के अपने दस्ते के साथ बग्रातिओन की सेना की अग्रिम सैनिक चौकियों पर ड्यूटी बजा रहा था। उसके हुस्सार सैनिक जोड़ों में इन चौकियों के बीच बिखरे हुए थे। घोड़े पर सवार वह ख़ुद इन चौकियों के एक सिरे से दूसरे सिरे तक चक्कर लगा रहा था और लगातार हावी होनेवाली नींद पर क़ाबू पाने की कोशिश कर रहा था। उसके पीछे कुहासे में अस्पष्ट रूप से दिखायी देनेवाले हमारी सेना के जलते अलावों का बहुत बड़ा विस्तार और उसके सामने धुंध की चादर में लिपटा हुआ अन्धेरा था। कुहासे में लिपटी इस दूरी को रोस्तोव चाहे कितनी भी आंखें फाड़-फाड़कर क्यों न देखता था, उसे कुछ भी दिखायी नहीं देता था – कभी कुछ उजला हो जाता और कभी स्याह; कभी तो वहां, जहां दुश्मन को होना चाहिये था, मानो हल्की-सी रोशनियां चमक उठतीं और कभी उसे यह लगता कि यह तो केवल उसकी आंखों में ही कुछ चमक रहा है। उसकी आंखें मुंदती जाती थीं और उसकी कल्पना में कभी तो सम्राट, तो कभी देनीसोव का बिम्ब उभरता और कभी मास्को की यादें उसके दिमाग़ में घूमने लगतीं। वह फिर जल्दी से आंखें खोल लेता और बहुत नज़दीक ही उसे अपने उस घोड़े का सिर तथा कान दिखायी देते जिसपर वह सवार था। कभी-कभी उसे हुस्सारों की काली-काली आकृतियां भी दिखायी देतीं और ऐसा तब होता, जब उसका घोड़ा उनसे कोई छः क़दम के फ़ासले तक निकट चला जाता। मगर दूरी पर कुहासे में लिपटा हुआ वही अन्धेरा बना रहता। "आख़िर इसमें कौन-सी ऐसी अनहोनी बात है? बहुत सम्भव है," रोस्तोव सोच रहा था, "कि सम्राट से मेरी भेंट हो जाये, जैसे किसी अन्य अफ़सर को, वैसे ही वह मुझे भी कोई कार्यभार सौंप सकते हैं, यह कह सकते हैं: 'जाओ, जाकर मालूम करो कि वहां क्या है'। बहुत-से ऐसे क़िस्से सुनने को मिले हैं कि बिल्कुल संयोग से ही किसी अफ़सर से उनकी जान-पहचान हो गयी और उन्होंने उसे अपने निकट के लोगों में शामिल कर लिया। काश, वह मुझे अपने निकट कर लें! ओह, तब मैं कैसे उनकी रक्षा करता, कैसे मैं उन्हें सब कुछ सच-सच बताता, कैसे उनकी आंखों में धूल झोंकनेवालों का भंडाफोड़ करता!" और सम्राट

के प्रति अपने प्यार तथा अपनी निष्ठा को अधिक स्पष्ट रूप देने के लिये उसने सम्राट के शत्रु या ऐसे धोखेबाज़ जर्मन की कल्पना की जिसे वह न केवल बड़ी ख़ुशी से मौत के घाट उतारता, बल्कि जिसके मुंह पर सम्राट के सामने ही तमाचे भी लगाता। अचानक दूर से सुनायी देनेवाली एक चीख़ से वह जाग गया। वह सिहरा और उसने आंखें खोलीं।

"कहां हूं मैं? हां, अग्रिम चौकियों पर। हमारी पहचान के गुप्त शब्द हैं – बम, ओल्म्यूत्स। ओह, कितने अफ़सोस की बात है कि हमारा स्कवाड्रन कल रिज़र्व में रहेगा..." वह सोच रहा था। "मैं लड़ाई में भेजे जाने का अनुरोध करूंगा। सम्राट से भेंट होने की शायद यही एकमात्र सम्भावना हो सकती है। हां, अब जल्द ही मेरी ड्यूटी ख़त्म हो जायेगी। एक बार फिर चौकियों का चक्कर लगा आता हूं और लौटते ही जनरल के पास जाकर कल लड़ाई में भेजे जाने की प्रार्थना करूंगा।" वह ज़ीन पर ज़रा अच्छी तरह से बैठ गया और उसने घोड़े को एड़ लगायी ताकि एक और बार अपने हुस्सारों का निरीक्षण कर आये। उसे लगा कि पहले कुछ अधिक उजाला था। बायीं ओर कुछ-कुछ रोशन ढाल की झलक मिल रही थी और उसके सामने दीवार जैसा सीधा-सा काला टीला दिख रहा था। इस टीले पर एक सफ़ेद धब्बा था जिसे रोस्तोव किसी तरह भी समझ नहीं पा रहा था – यह हल्की चांदनी में चमकता हुआ वन-प्रांगण है या बची-बचायी बर्फ़ या सफ़ेद घर? उसे तो ऐसा भी लगा कि उस सफ़ेद धब्बे पर कुछ हिल-डुल रहा है। "बर्फ़ ही होना चाहिये इस धब्बे को – इस सफ़ेद धब्बे को," रोस्तोव सोच रहा था। "यह भी ख़ूब तमाशा..."

"हां नताशा, मेरी बहन, काली-काली आंखोंवाली। हां, ख़ूब तमाशा... बहन नताशा... (कितनी हैरान होगी वह उस वक़्त जब मैं उसे यह बताऊंगा कि मैंने सम्राट को देखा है!) नताशा... यह भी ख़ूब तमाशा..." – "हुज़ूर, घोड़े को जरा दायीं ओर कर लीजिये, इधर तो झाड़ियां हैं," उस हुस्सार ने कहा जिसके पास से अपने घोड़े पर ऊंघता हुआ रोस्तोव गुज़रा था। रोस्तोव ने घोड़े के अयालों तक झुक गये अपने सिर को ऊपर उठाया और घोड़े को हुस्सार के नज़दीक ही रोक लिया। जवानी और बचपन के दिनों जैसी गहरी नींद उसपर

बरबस हावी होती जा रही थी। "लेकिन, मैं, मैं क्या सोच रहा था? – मुझे उसे भूल नहीं जाना चाहिये। यही कि मैं सम्राट के साथ कैसे बात करूंगा? नहीं, यह नहीं – यह तो कल का मामला है। हां, हां! नताशा, तमाशा... कैसा तमाशा? हुस्सारों का। ओह, हुस्सार और मूंछें... मूंछोंवाला यह हुस्सार छायादार त्वेरस्काया सड़क पर जा रहा था, मैं उसके बारे में गूर्येव के घर के सामने खड़ा हुआ सोचता रहा था... बूढ़ा गूर्येव... ओह, बड़ा प्यारा आदमी है देनीसोव! हां, यह सब तो बकवास है। सबसे बड़ी चीज़ तो यह है कि अब सम्राट यहां हैं। कैसे उन्होंने मेरी तरफ़ देखा था और मुझसे कुछ कहना चाहा था, मगर उनकी ऐसा करने की हिम्मत नहीं हुई... नहीं, यह तो मेरी हिम्मत नहीं हुई। यह सब तो बकवास है और सबसे मुख्य बात तो यह है कि मैं जिस महत्त्वपूर्ण चीज़ के बारे में सोच रहा था, उसे न भूल जाऊं। हां, नताशा, न... ता... शा... त... मा... शा, हां, हां, हां। यह अच्छा है।" और फिर से उसका सिर घोड़े की गर्दन पर जा गिरा। अचानक उसे लगा कि उसपर गोली चलायी जा रही है। "यह क्या है? क्या है? क्या है?.. काट डालो! क्या है?.." रोस्तोव जागकर कह उठा। इसी क्षण, जब उसने आंखें खोलीं, रोस्तोव को वहां से, जहां दुश्मन था, देर तक गूंजती रहनेवाली हज़ारों ऊंची आवाज़ें सुनायी दीं। इन आवाज़ों को सुनकर उसके घोड़े तथा उसके पास खड़े हुस्सार के घोड़े ने कनौतियां बदलीं। जहां से आवाज़ें आ रही थीं, वहां एक रोशनी जली और बुझ गयी, उसके बाद दूसरी रोशनी जली और पहाड़ी पर अवस्थित फ़्रांसीसी सेना की पूरी रेखा के साथ बत्तियां जल उठीं और आवाज़ें अधिकाधिक ऊंची होती गयीं। रोस्तोव फ़्रांसीसी शब्द सुन रहा था, मगर उन्हें समझ नहीं पा रहा था। बहुत ही अधिक आवाज़ों का शोर था। सिर्फ़ अ-अ-अ-अ! और र-र-र-र! की ध्वनियां सुनायी दे रही थीं।

"यह शोर कैसा है? क्या ख़्याल है तुम्हारा?" रोस्तोव ने अपने निकट खड़े हुस्सार से पूछा। "यह तो शत्रु की तरफ़ से आ रहा है न?"

हुस्सार ने कोई जवाब नहीं दिया।

"क्या तुम्हें यह शोर सुनायी नहीं दे रहा?" काफ़ी देर तक जवाब का इन्तज़ार करने के बाद रोस्तोव ने फिर से पूछा।

"क्या कहा जा सकता है, हुज़ूर," हुस्सार ने अनिच्छा से उत्तर दिया।

"जिधर से शोर आ रहा है, उधर तो दुश्मन को ही होना चाहिये?" रोस्तोव ने फिर से पूछा।

"वह भी हो सकता है, वह नहीं भी हो सकता," हुस्सार ने कहा। "रात का वक़्त ठहरा! अरे, खड़ा रह!" उसने अपने नीचे हिलने-डुलनेवाले घोड़े को डांटा।

रोस्तोव का घोड़ा भी बेचैन हो रहा था, आवाज़ों को सुनते और रोशनियों की ओर देखते हुए जमी-ठिठुरी ज़मीन पर पांव पटक रहा था। आवाज़ें अधिकाधिक ऊंची होती गयीं और उन्होंने एक ऐसे गर्जन का रूप ले लिया जो कई हज़ार सैनिकों के शोर से ही सम्भव था। रोशनियों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही थी और अब कोई सन्देह नहीं रह गया था कि वे फ़्रांसीसी सेना-रेखा के साथ-साथ ही फैली हुई थीं। रोस्तोव को अब नींद नहीं आ रही थी। शत्रु-सेना की ख़ुशी और उल्लास भरी आवाज़ों ने उसे उत्तेजित कर दिया था। "सम्राट ज़िन्दाबाद, सम्राट ज़िन्दाबाद!" उसे अब यह साफ़ सुनायी दे रहा था।

"यह शोर तो दूर भी नहीं है, इन लोगों को तो नदी पार ही होना चाहिये," रोस्तोव ने अपने नज़दीक खड़े हुस्सार से कहा।

हुस्सार ने कोई जवाब दिये बिना गहरी सांस ली और झुंझलाहट से खांसा। हुस्सारों की तरफ़ से किसी के दुलकी चाल से घोड़ा दौड़ाते आ रहे सवार की आहट मिली और रात के कुहासे में से अचानक बहुत बड़े हाथी की तरह हुस्सार-सार्जेंट की आकृति उभरी।

"हुज़ूर, जनरल आ रहे हैं!" सार्जेंट ने रोस्तोव के पास आकर कहा।

रोस्तोव रोशनियों और आवाज़ों की दिशा में देखता हुआ सार्जेंट के साथ अग्रिम रेखा की ओर से आ रहे कुछ घुड़सवारों की तरफ़ अपने घोड़े को बढ़ा ले चला। उनमें से एक सफ़ेद घोड़े पर सवार था। एडजुटेंटों के साथ प्रिंस बग्रातिओन तथा प्रिंस दोल्गोरूकोव शत्रु-शिविर में रोशनियों और शोर-गुल की इस अजीब घटना की जांच-पड़ताल करने आये थे। रोस्तोव प्रिंस बग्रातिओन के पास गया, उसके सामने

उसने अपनी रिपोर्ट पेश की, एडजुटेंटों में शामिल हो गया और जनरलों की बातें सुनने लगा।

"विश्वास कीजिये," प्रिंस दोल्गोरूकोव प्रिंस बग्रातिओन से कह रहा था, "यह चालाकी के सिवा कुछ नहीं – वह पीछे हट गया है और हमें धोखा देने के लिये उसने अपने चण्डावल में रोशनियां जलाने और शोर मचाने का हुक्म दे दिया है।"

"शायद ही ऐसा हो," बग्रातिओन ने जवाब दिया, "शाम को मैंने उन्हें उस टीले पर देखा था। अगर वे पीछे हट गये होते तो वहां से भी चले गये होते। श्रीमान अफ़सर," बग्रातिओन ने रोस्तोव को सम्बोधित किया, "उनकी चौकियां अभी तक क़ायम हैं?"

"शाम तक तो क़ायम थीं, मगर अब कुछ नहीं कह सकता, हुज़ूर। अगर हुक्म हो तो मैं हुस्सारों के साथ जाकर अभी मालूम कर आता हूं," रोस्तोव ने कहा।

बग्रातिओन हिचकिचाया और जवाब में कुछ कहे बिना उसने कुहासे में रोस्तोव के चेहरे को बहुत ध्यान से देखने की कोशिश की।

"ठीक है, देख आइये," कुछ देर चुप रहकर उसने कहा।

"जो हुक्म।"

रोस्तोव ने अपने घोड़े को एड़ लगायी, सार्जेंट फ़ेदचेन्को तथा दो अन्य हुस्सारों को पुकारकर अपने साथ चलने का हुक्म दिया और पहाड़ी से नीचे उस दिशा में दुलकी चाल से घोड़े को बढ़ा ले चला जिधर से अभी तक शोर सुनायी दे रहा था। रोस्तोव को तीन हुस्सारों के साथ उस रहस्यपूर्ण और कुहासे से ढकी ख़तरनाक दूरी की तरफ़ अकेले जाना, जहां अभी तक और कोई नहीं गया था, भयावह और उत्तेजनापूर्ण भी लग रहा था। बग्रातिओन ने पहाड़ी से चिल्लाकर कहा कि वह नदी से आगे न जाये, मगर रोस्तोव ने ऐसे ज़ाहिर किया कि मानो उसके शब्द उसे सुनायी नहीं दिये और वह रुके बिना तथा झाड़ियों को, वृक्षों और खड्डों को मनुष्यों के रूप में गड़बड़ाता तथा लगातार अपनी भूल को महसूस करता हुआ आगे ही आगे बढ़ता चला गया। दुलकी चाल से घोड़े को दौड़ाता हुआ जब वह पहाड़ी से नीचे पहुंच गया तो वहां से उसे न तो अपने लोग और न दुश्मन की रोशनियां ही दिखायी देती थीं, किन्तु फ़्रांसीसियों की आवाज़ें अधिक ऊंची तथा अधिक स्पष्ट रूप से सुनायी दे

रही थीं। घाटी में उसे अपने सामने नदी जैसी कोई चीज़ दिखायी दी, मगर नज़दीक पहुंचने पर वह सड़क निकली। यहां वह इस दुविधा में पड़कर कि सड़क पर बढ़े या उसे लांघकर अंधेरे में लिपटे मैदान से पहाड़ी की तरफ़ जाये, घोड़े को रोके रहा। कुहासे में सफ़ेद चमकती सड़क के साथ-साथ जाना कम ख़तरनाक था, क्योंकि लोगों को अधिक आसानी से देखा जा सकता था। "मेरे पीछे आओ," उसने पुकारकर कहा और घोड़े को सरपट दौड़ाता हुआ पहाड़ी पर उस तरफ़ बढ़ने लगा जहां पिछले दिन फ़्रांसीसी चौकियां थीं।

"हुज़ूर, देखिये, वह सामने है!" पीछे से एक हुस्सार ने कहा।

और इससे पहले कि रोस्तोव कुहासे के अंधेरे में से अचानक प्रकट हो जानेवाली इस आकृति को देख पाता, कौंध हुई, बन्दूक़ चलने की आवाज़ सुनायी दी और गोली मानो कुछ भुनभुनाती-सी कुहासे में ऊंचाई पर सनसनायी, कहीं दूर चली गयी और उसकी सनसनाहट की आवाज़ बन्द हो गयी। दूसरी गोली नहीं चली, मगर बन्दूक़ का खटका दबने पर पलीते की चमक ज़रूर हुई। रोस्तोव ने घोड़ा मोड़ा और उसे सरपट दौड़ाता हुआ वापस ले चला। विभिन्न विरामों पर चार गोलियां और चलीं और कुहासे में कहीं उनकी भिन्न-भिन्न आवाज़ें सुनायी दीं। रोस्तोव ने घोड़े को धीमा किया जो गोलियां चलने पर ख़ुद उसकी तरह ही उत्तेजित हो गया था और उसे क़दम-क़दम बढ़ाने लगा। "और चलाओ, और चलाओ गोलियां!" उसकी आत्मा में कोई उल्लासपूर्ण आवाज़ कह रही थी। मगर और गोली नहीं चली।

केवल बग्रातिओन के निकट पहुंचने पर ही रोस्तोव घोड़े को सरपट दौड़ाने लगा और सलामी के रूप में टोपी के साथ हाथ सटाये हुए उसके सामने गया।

दोल्गोरूकोव अभी भी अपने इस मत की पुष्टि कर रहा था कि फ़्रांसीसी पीछे हट चुके हैं और सिर्फ़ हमारी आंखों में धूल झोंकने के लिये ही उन्होंने रोशनियां जला दी हैं।

"इससे क्या साबित होता है?" दोल्गोरूकोव उस समय कह रहा था, जब रोस्तोव उनके पास पहुंचा। "वे ख़ुद तो पीछे हट गये हैं और सिर्फ़ चौकियां छोड़ गये हैं।"

"इतना स्पष्ट है कि वे सभी तो अभी यहां से नहीं गये," बग्रातिओन

ने कहा। "कल सुबह तक इन्तज़ार करना होगा, कल सुबह सब कुछ मालूम हो जायेगा।"

"पहाड़ी पर दुश्मन की चौकियां अभी भी उसी जगह पर हैं, जहां कल थीं," रोस्तोव ने सलामी की मुद्रा में टोपी के साथ हाथ सटाये और अपनी इस मुहिम, ख़ास तौर पर गोलियों की आवाज़ों से मन में पैदा होनेवाली ख़ुशी की मुस्कान को छिपाने में असमर्थ रहते हुए आगे झुककर रिपोर्ट पेश की।

"ठीक है, ठीक है," बग्रातिओन ने कहा। "धन्यवाद, श्रीमान अफ़सर।"

"हुज़ूर, एक अनुरोध करने की अनुमति चाहता हूं," रोस्तोव कह उठा।

"क्या बात है?"

"कल हमारा स्कवाड्रन रिज़र्व में रहेगा। मैं आपसे प्रार्थना करता हूं कि मुझे पहले स्कवाड्रन में शामिल कर लिया जाये।"

"आपका क्या नाम है?"

"काउंट रोस्तोव।"

"ओह, अच्छी बात है। मेरे साथ ड्यूटी पर रहना।"

"इल्या अन्द्रेयेविच रोस्तोव के बेटे हो?" दोल्गोरूकोव ने पूछा।

किन्तु रोस्तोव ने इसका कोई जवाब नहीं दिया।

"तो हुज़ूर, मैं यह उम्मीद करूंगा।"

"मैं हुक्म जारी कर दूंगा।"

"हो सकता है कि कल कोई सन्देश देने के लिये मुझे सम्राट के पास भेज दिया जाये," रोस्तोव ने सोचा। "भला हो भगवान का!"

शत्रु-सेना में इसलिये शोर मच रहा था और रोशनियां हो रही थीं कि जिस वक़्त फ़ौजों के सामने नेपोलियन का सन्देश पढ़कर सुनाया जा रहा था, उसी समय वह स्वयं घोड़े पर सवार होकर अपने पड़ाव का चक्कर लगा रहा था। सम्राट को देखकर सैनिकों ने फूस की छोटी-छोटी पूलियां जला लीं और "सम्राट ज़िन्दाबाद!" चिल्लाते हुए उसके पीछे-पीछे दौड़ने लगे। नेपोलियन का सन्देश यह था:

"सैनिको! रूसी सेना उल्म के निकट नष्ट हुई आस्ट्रिया की सेना का बदला लेने के लिये आपके विरुद्ध बढ़ रही है। ये वही बटा-

लियनें हैं जिनके आपने होल्लाब्रून के नज़दीक दांत खट्टे किये थे और जिनका आप यहां तक लगातार पीछा करते रहे हैं। हम जिस जगह पर हैं, वह बहुत अच्छी है। जब तक वे दायीं ओर से मुझे घेरने के लिये बढ़ेंगे, ख़ुद अपना पार्श्व अरक्षित छोड़ देंगे। सैनिको! मैं ख़ुद आपकी बटालियनों का संचालन करूंगा। अगर आप अपनी सामान्य वीरता से शत्रु की क़तारों में गड़बड़ी और घबराहट पैदा कर देंगे तो मैं गोलाबारी की सीमा से दूर रहूंगा। लेकिन अगर हमारी विजय के बारे में ज़रा भी शक महसूस होगा तो आप अपने सम्राट को सबसे आगे-आगे शत्रु-प्रहार का सामना करते पायेंगे, क्योंकि उस दिन तो ख़ास तौर पर विजय के बारे में किसी तरह के सन्देह की गुंजाइश नहीं हो सकती, जब फ़्रांसीसी पैदल सेना के सम्मान का प्रश्न हो जो हमारे राष्ट्र-गौरव के लिये इतना आवश्यक है।

"घायलों को ले जाने का बहाना करते हुए अपनी पांतों में किसी प्रकार की अव्यवस्था न होने दें। आपमें से हर किसी को इसी भावना से ओत-प्रोत होना चाहिये कि हम हमारे राष्ट्र से इतनी अधिक घृणा करनेवाले इंगलैंड के इन भाड़े के टट्टुओं पर विजयी होंगे। इस विजय के साथ हमारा युद्ध-अभियान समाप्त हो जायेगा और हम अपने जाड़े के क्वार्टरों में लौट सकेंगे, जहां इस वक़्त फ़्रांस में तैयार हो रही नयी फ़्रांसीसी फ़ौजें हमारे साथ मिल जायेंगी और तब मैं जो शान्ति-सन्धि करूंगा, वह मेरी जनता, आपकी और मेरी प्रतिष्ठा के अनुरूप होगी।

नेपोलियन।"

१४

सुबह के पांच बजे अभी बिल्कुल अन्धेरा था। मध्य भाग, रिज़र्व और बग्रातिओन की दायें बाज़ू की सेनायें अभी तक हिली-डुली नहीं थीं, किन्तु बायें बाज़ू की प्यादा फ़ौज, रिसाला और तोपख़ाना, जिन्हें फ़्रांसीसियों के दायें बाज़ू पर सबसे पहले हमला करने के लिये ऊंचाई से नीचे उतरना था और सैनिक योजना के अनुसार इस बाज़ू की सेना को बोहेमिया के पहाड़ों में धकेल देना था, हिलने-डुलने और

अपनी सोने की जगहें छोड़ने लगे थे। सैनिक सभी फ़ालतू चीज़ें अलावों में फेंक रहे थे और अलावों के धुएं से आंखें जल रही थीं। ठण्ड थी, अन्धेरा था। अफ़सर जल्दी-जल्दी नाश्ता कर रहे थे, चाय पी रहे थे। सैनिक बिस्कुट-रस्क चबा रहे थे, पैरों को गर्माने के लिये उन्हें ज़मीन पर पटक रहे थे, अलावों के गिर्द घेरा बनाकर खड़े हो रहे थे और झोंपड़ों के काठ-कबाड़, कुर्सियां, मेज़ें, पहिये तथा टब यानी वह सभी कुछ आग में फेंक रहे थे जो फ़ालतू था या जिसे वे अपने साथ नहीं ले जा सकते थे। सेना-दलों के आस्ट्रियायी अगुआ रूसी सेनाओं के बीच आ-जा रहे थे और आक्रमण के अग्रदूतों की भूमिका निभा रहे थे। जैसे ही रेजिमेंट-कमांडर के पड़ाव के नज़दीक कोई आस्ट्रियायी अफ़सर नज़र आता, वैसे ही रेजिमेंट हरकत में आने लगती– सैनिक अलावों से भाग जाते, अपने पाइपों को बूटों के ऊपरी सिरों में तथा थैलों को घोड़ा-गाड़ियों में घुसेड़ देते, बन्दूक़ें हाथों में लेते और क़तारों में खड़े होने लगते। अफ़सर जाकेटों के बटन बन्द करते, तलवारें और थैले लटकाते और ऊंचे-ऊंचे आदेश देते हुए सैनिक-पांतों के गिर्द चक्कर लगाते। गाड़ीवान और अर्दली घोड़ा-गाड़ियों में घोड़े जोतते, उनमें सामान रखते और उसे बांधते। एडजुटेंट, बटालियन और रेजिमेंट-कमांडर घोड़ों पर सवार होते, अपने पर सलीब का निशान बनाते, पीछे रहनेवाले गाड़ीवानों को अन्तिम आदेश-अनुदेश देते, कार्यभार सौंपते और इसके बाद हज़ारों सैनिकों के बूटों की एकरस धप-धप की आवाज़ गूंजने लगती। फ़ौजियों के लशकर यह न जानते हुए कि वे किधर जा रहे हैं और सभी ओर से लोगों तथा धुएं से घिरे होने और कुहासे के घना हो जाने के कारण उस जगह को, जहां से जा रहे थे और उस जगह को भी न देख पाते हुए जिधर जा रहे थे, आगे बढ़ते जाते थे।

लशकर में चलता हुआ सैनिक उसी भांति अपनी रेजिमेंट से घिरा हुआ, सीमित तथा उसका अंग होता है जैसे जहाज़ी अपने जहाज़ का। फ़ौजी चाहे कितनी भी दूर क्यों न जाये, कैसे भी अजीब, अनजाने और ख़तरनाक विस्तारों को क्यों न लांघे, जहाज़ी की भांति, जो हमेशा अपने जहाज़ के वही डेक, मस्तूल और रस्से देखता है – फ़ौजी के लिये भी हमेशा और हर जगह वही साथी, वही सैनिक क़तारें, वही सार्जेंट मेजर, कम्पनी का वही कुत्ता और वही अफ़सर होते

हैं। सैनिक बहुत कम ही उन सब विस्तारों को जानना चाहता है जिनमें उसका पूरा सैनिक-जलयान होता है। किन्तु, भगवान ही जानता है कि कैसे और किस तरह, लड़ाई के दिन सेनाओं के नैतिक संसार में एक कठोर स्वर गूंजने लगता है जिसकी सभी को चेतना होती है और जो किसी निर्णायक तथा गम्भीर क्षण की निकटता का सूचक होता है। यह स्वर सैनिकों में वह जिज्ञासा पैदा करता है जिसे उनका स्वाभाविक लक्षण नहीं कहा जा सकता। लड़ाई के दिनों में सैनिक बड़ी उत्तेजना से अपनी रेजिमेंट की दिलचस्पियों के घेरे से बाहर निकलने की कोशिश करते हैं, हर चीज़ को बहुत ध्यान से देखते-सुनते हैं और बड़ी उत्सुकता से यह मालूम करना चाहते हैं कि उनके इर्द-गिर्द क्या हो रहा है।

कुहासा इतना घना हो गया कि पौ फटने के बावजूद दस क़दम की दूरी पर भी अपने सामने कुछ देख पाना सम्भव नहीं था। झाड़ियां बहुत बड़े-बड़े पेड़ लगती थीं, समतल धरती – खड्ड और ढाल। हर जगह और सभी ओर से दस क़दमों की दूरी पर अदृश्य शत्रु का सामना हो सकता था। किन्तु फ़ौजी लशकर बहुत देर तक पहाड़ियों से नीचे उतरते और ऊपर चढ़ते, बाग़-बगीचों के गिर्द चक्कर काटते हुए इसी धुंध में नयी और अनजानी जगह पर चलते रहे तथा कहीं भी उनकी दुश्मन से मुठभेड़ नहीं हुई। इसके विपरीत, सैनिकों को कभी आगे और कभी पीछे तथा सभी ओर से यह जानकारी मिली कि हमारे दूसरे फ़ौजी लशकर भी उसी दिशा में बढ़ते जा रहे हैं। हर सैनिक को यह जानकर मन ही मन ख़ुशी होती थी कि जिधर वह जा रहा है, उधर ही यानी अनजानी जगह की तरफ़ हमारे अनेकानेक अन्य फ़ौजी भी जा रहे हैं।

"अरे वाह, कूर्स्क रेजिमेंटवाले भी चले जा रहे हैं," कई सैनिकों ने कहा।

"ओह, कितनी बड़ी संख्या में हमारे सैनिक यहां जमा हैं! कल रात अलाव जलते देखे तो उनका कहीं अन्त ही नज़र नहीं आया। बिल्कुल मास्को-सा ही लगता है!"

बेशक लशकर का कोई भी अफ़सर सैनिकों के पास नहीं आया और उनसे बातचीत करके उसने उनकी हिम्मत नहीं बढ़ायी (जैसा कि हमने युद्ध-परिषद की बैठक में देखा था, अफ़सर अच्छे मूड में

नहीं थे, आक्रमण के निर्णय का समर्थन नहीं करते थे और इसलिये केवल आदेश पूरे कर रहे थे तथा सैनिकों को जोश में लाने के लिये यत्नशील नहीं थे), इसके बावजूद फ़ौजी हमेशा की भांति लड़ाई के मैदान में, ख़ास तौर पर हमला करने के लिये, बड़े उल्लासपूर्वक बढ़े जा रहे थे। किन्तु एक घण्टे तक घने कुहासे में बढ़ते जाने के बाद सेना के अधिकतर भाग को रुकना पड़ा और सैनिकों में अव्यवस्था तथा गड़बड़ी की भावना की अनुभूति होने लगी। ऐसी भावना कैसे एक सैनिक से दूसरे सैनिक तक पहुंच जाती है, इसका सही स्पष्टीकरण देना सम्भव नहीं, किन्तु इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं कि यह भावना बहुत ही सटीकता और तेज़ी से अपने आप तथा घाटी में बहनेवाली अदम्य जल-धारा की भांति सभी तक पहुंच जाती है। अगर रूसी सेनायें मित्र-राष्ट्र की सेनाओं के बिना अकेली ही होतीं तो गड़बड़ी की इस भावना को सामान्य विश्वास बनने में शायद अभी बहुत समय लग जाता, किन्तु अब तो बड़ी ख़ुशी और स्वाभाविक ढंग से इसे बुद्धू जर्मनों के मत्थे मढ़ दिया गया तथा सभी ने यह मान लिया कि सासेजें बनानेवाले जर्मन ही इस सारी अव्यवस्था के लिये ज़िम्मेदार हैं।

"रुक किसलिये गये? क्या किसी ने रास्ता रोक लिया? या फ़्रांसीसी सामने आ गये?"

"नहीं, ऐसा तो कुछ नहीं सुनने को मिला। वरना वे तो गोला-बारी शुरू कर देते।"

"हमसे उतावली करने को कहा गया, हमने ऐसा किया और अब बेमतलब मैदान में खड़े हैं। ये कमबख़्त जर्मन ही सारा गड़बड़-घुटाला कर रहे हैं। बड़े उल्लू हैं ये शैतान!"

"मैंने तो इन्हें ही आगे-आगे भेजा होता। अब तो शायद पीछे दुबके हुए हैं। अब खड़े रहो यहां भूखे-प्यासे।"

"क्या जल्दी ही आगे बढ़ सकेंगे? कहते हैं कि घुड़सेना ने रास्ता रोक लिया है," अफ़सर ने कहा।

"ओह, ये कमबख़्त जर्मन, अपनी धरती भीं नहीं जानते!" दूसरे ने कहा।

"कौन-सा डिवीज़न है यह?" घोड़े पर नज़दीक आनेवाले एडजुटेंट ने चिल्लाकर पूछा।

"अठारहवां।"

"तो आप लोग यहां किसलिये हैं? आपको कभी का आगे चले जाना चाहिये था, अब शाम तक आगे नहीं निकल पायेंगे। इसे कहते हैं बेहूदा इन्तज़ाम। ख़ुद ही नहीं जानते कि क्या कर रहे हैं," अफ़सर ने कहा और घोड़ा आगे बढ़ा ले गया।

इसके बाद एक जनरल आया और रूसी में नहीं, बल्कि किसी दूसरी भाषा में ग़ुस्से से कुछ चीख़ता-चिल्लाता हुआ दूर चला गया।

"जाने क्या गिट-पिट, गिट-पिट कर गया, कुछ पल्ले नहीं पड़ा," एक फ़ौजी ने घोड़े पर दूर जानेवाले जनरल की नक़ल उतारते हुए कहा। "मैंने इन कमीनों को गोली से उड़ा दिया होता!"

"हमें नौ बजे तक निश्चित जगह पर पहुंचने का हुक्म दिया गया था और हम आधा रास्ता भी तय नहीं कर पाये। ऐसे हैं इनके हुक्म!" सभी ओर से ऐसा दोहराया जा रहा था।

और सेनायें जिस जोश-ख़रोश से लड़ाई के मैदान की तरफ़ बढ़ने लगी थीं, वह बुरे इन्तज़ाम और जर्मनों के ख़िलाफ़ खीझ और क्रोध में बदलने लगा।

इस गड़बड़ी का कारण यह था कि आस्ट्रियायी घुड़सेना के बायें बाज़ू के बढ़ने के वक़्त बड़े अफ़सरों ने यह महसूस किया कि हमारा केन्द्रीय भाग दायें बाज़ू से दूर है और इसलिये सारी घुड़सेना को दायीं ओर जाने का हुक्म दे दिया गया। कई हज़ार घुड़सैनिक प्यादा पलटनों के सामने से गुज़रे और इस कारण पैदल सेनाओं को वहीं रुके रहना पड़ा।

सेनाओं के आगे एक आस्ट्रियायी पथ-प्रदर्शक और रूसी जनरल के बीच झगड़ा हो गया। रूसी जनरल यह मांग करते हुए चिल्ला रहा था कि घुड़सेनाओं को रोक दिया जाये, जबकि आस्ट्रियायी यह दलील पेश कर रहा था कि इसके लिये वह नहीं, ऊंचे अफ़सर दोषी थे। इसी बीच पैदल सेनायें ऊब अनुभव करती और निरुत्साह होती हुई जहां की तहां खड़ी रहीं। एक घण्टे की देरी के बाद सेनायें आख़िर बढ़ने और पहाड़ी से नीचे उतरने लगीं। पहाड़ी के ऊपर छंट जानेवाला कुहासा पहाड़ी के नीचे, जहां सेनायें उतर रही थीं, पहले की तरह ही घना था। सामने, घने कुहासे में, एक और फिर दूसरी गोली चली, शुरू में किसी क्रम के बिना, विभिन्न विरामों पर – ठां-ठां-ठां... ठांय, और इसके बाद वे सिलसिलेवार तथा कहीं ज़्यादा अक्सर चलने

लगीं। इस तरह छोटी-सी होल्डबाख़ नदी के तट पर लड़ाई शुरू हो गयी।

नदी-तट पर दुश्मन से मुलाक़ात होने की उम्मीद न करते और कुहासे में अचानक उसके सामने आ जाने, अपने बड़े अफ़सरों से प्रोत्साहन का एक भी शब्द न सुनने तथा सभी ओर व्याप्त इस भावना के कारण कि देर हो गयी है और मुख्यत: इसलिये कि घने कुहासे में सामने तथा इर्द-गिर्द कुछ भी नज़र नहीं आ रहा था, रूसी सैनिक मरे-मरे ढंग से तथा धीरे-धीरे दुश्मन पर गोलियां चलाते, थोड़ा आगे बढ़ते तथा अफ़सरों और एडजुटेंटों से, जो कुहासे तथा अपरिचित जगहों पर भटकते हुए अपने सेना-दलों को नहीं ढूंढ़ पा रहे थे, ठीक वक़्त पर कोई आदेश न मिलने की वजह से फिर रुक जाते। पहाड़ी से नीचे जानेवाले पहले, दूसरे और तीसरे लशकर के लिये इस तरह लड़ाई शुरू हुई। चौथा लशकर, कुतूज़ोव ख़ुद जिसके साथ थे, प्रात्ज़ेन पहाड़ी पर खड़ा था।

पहाड़ी के नीचे, जहां लड़ाई शुरू हो गयी थी, अभी तक घना कुहासा छाया था, ऊपर कुहरा छंट गया था, मगर सामने क्या हो रहा था, यह बिल्कुल नज़र नहीं आ रहा था। जैसा कि हमने मान रखा था, सारी शत्रु-सेनायें हमसे लगभग बारह किलोमीटर दूर थीं या वे कुहासे के इसी सागर में थीं – लगभग नौ बजने तक किसी को भी यह मालूम नहीं था।

सुबह के नौ बजे। पहाड़ी के नीचे मैदान में अभी तक कुहासे का घना सागर फैला था, किन्तु श्लापानित्ज़ गांव के पास उस ऊंचाई पर, जहां अपने मार्शलों से घिरा हुआ नेपोलियन खड़ा था, पूरी तरह उजाला था। उसके ऊपर बिल्कुल निर्मल, नीलाकाश था और सूरज का विराट गोला एक बहुत बड़े, ख़ाली, सुर्ख़ तिरेन्दे की भांति कुहासे के दूधिया सागर पर तैर रहा था। न केवल फ़्रांसीसी सेनायें, बल्कि अपने स्टॉफ़ के साथ ख़ुद नेपोलियन भी सोकोलनिट्ज़ और श्लापानिट्ज़ गांवों की छोटी-छोटी नदियों तथा घाटियों के उस पार नहीं था जहां हम अपनी मोर्चेबन्दी करके हमला करने का इरादा रखते थे। वह तो इस पार और हमारी सेनाओं के इतना अधिक निकट था कि दूरबीन के बिना ही हमारी प्यादा और घुड़सेनाओं को अलग-अलग देख तथा पहचान सकता था। नेपोलियन वही नीला फ़ौजी ओवरकोट पहने,

जिसे पहने हुए उसने इटली में लड़ाइयां लड़ी थीं, अपने मार्शलों से कुछ आगे छोटे-से अरबी घोड़े पर सवार था। वह मानो कुहासे के सागर में से उभर रहे उन दूरस्थ टीलों को चुपचाप देख रहा था जिनपर रूसी सेनायें चल रही थीं और घाटी में से आनेवाली गोलियों की आवाज़ों को सुन रहा था। अभी तक उसके दुबले-पतले चेहरे की एक भी मांसपेशी नहीं हिल रही थी और चमकती हुई निश्चल आंखें एक ही बिन्दु पर टिकी थीं। नेपोलियन के अनुमान सही सिद्ध हुए। रूसी सेनाओं का एक भाग पोखरों और झीलों की ओर घाटी में जा चुका था और उनका दूसरा भाग प्रात्ज़ेन की उस ऊंचाई से नीचे उतर रहा था जिसपर वह हमला करने का इरादा रखता था और जिसे सैनिक स्थिति की कुंजी मानता था। वह कुहासे में यह देख रहा था कि प्रात्ज़ेन गांव के निकट कैसे दो पहाड़ियों के बीच के खड्ड में अपनी संगीनों की लौ देती रूसी सेनायें एक ही दिशा में घाटियों की ओर बढ़ी जा रही थीं और एक के बाद एक उनके दल कुहासे के सागर में ग़ायब होते जाते थे। नेपोलियन द्वारा पिछली शाम को प्राप्त सूचनाओं, अग्रिम चौकियों से रात के वक़्त सुनायी देनेवाली पहियों और पांवों की आवाज़ों, रूसी सेनाओं की गड़बड़ गतिशीलता, इन सभी तथ्यों के आधार पर वह स्पष्ट रूप से यह समझ रहा था कि मित्र-राष्ट्र उसे अपने सामने काफ़ी दूर मान रहे हैं, कि प्रात्ज़ेन के नज़दीक से गुज़रते सेना-दल रूसी सेना के केन्द्र-बिन्दु हैं, कि यह केन्द्र-बिन्दु अब इतना कमज़ोर हो चुका है कि उसपर सफलता से आक्रमण किया जा सकता है। किन्तु उसने अभी भी लड़ाई शुरू नहीं की।

आज का दिन नेपोलियन के लिये पर्व का दिन था – इसी दिन उसकी ताजपोशी हुई थी। भोर होने के पहले वह कई घण्टों तक सोया रहा था और स्वस्थ, प्रसन्न, ताज़ादम तथा उस सुखद मन:स्थिति में घोड़े पर सवार होकर मैदान में आया था, जब हर चीज़ सम्भव लगती है और काम में कामयाबी हासिल की जा सकती है। वह एकदम निश्चल-सा कुहासे के पीछे से उभर रही ऊंचाइयों को देख रहा था और उसके कठोर चेहरे पर आत्मविश्वास तथा आत्मतुष्टि की ऐसी भावना की झलक थी जो प्रेम-दीवाने और सुखी छोकरे के चेहरे पर होती है। अपने घोड़ों पर सवार मार्शल उसके पीछे थे और किसी भी तरह उसका ध्यान दूसरी ओर करने का साहस नहीं कर पा रहे थे। नेपोलियन

कभी तो प्रात्ज़ेन की ऊंचाइयों, तो कभी कुहासे में से बाहर निकलते सूरज की तरफ़ देखता।

जब सूरज पूरी तरह कुहासे में से निकल आया और मैदान तथा कुहासा चमचमा उठे (वह मानो इसी का इन्तज़ार कर रहा था) तो नेपोलियन ने अपने सुन्दर, गोरे हाथ से दस्ताना उतारा, मार्शलों को उससे इशारा किया और लड़ाई शुरू करने का आदेश दे दिया। अपने एडजुटेंटों के साथ मार्शल विभिन्न दिशाओं में घोड़ों को सरपट दौड़ा ले चले और कुछ मिनट बाद फ़्रांसीसी सेना का मुख्य दल-बल तेज़ी से प्रात्ज़ेन की उन ऊंचाइयों की तरफ़ बढ़ चला जहां से अधिकाधिक संख्या में रूसी सेनायें बायीं ओर की घाटी में उतरती जा रही थीं।

१५

घोड़े पर सवार कुतूज़ोव आठ बजे प्रात्ज़ेन गांव के पास आये। वह मीलोरादोविच के चौथे लशकर, उसी लशकर के आगे-आगे थे जिसे नीचे जा चुके प्रजोबिशेव्स्की और लांजेरोन के लशकरों का स्थान लेना था। उन्होंने अगली रेजिमेंट के लोगों का अभिवादन किया और चलने का आदेश दिया और इस तरह यह स्पष्ट किया कि वह खुद इस लशकर की अगुआई करने का इरादा रखते हैं। प्रात्ज़ेन गांव के नज़दीक पहुंचकर वह रुक गये। प्रिंस अन्द्रेई, जो प्रधान सेनापति के अमले के बहुसंख्यक लोगों में से एक था, उनके पीछे खड़ा था। प्रिंस अन्द्रेई अपने को उत्तेजित, चिड़चिड़ा और साथ ही वैसा संयत-शान्त अनुभव कर रहा था जैसा कि कोई व्यक्ति चिर वांछित क्षण के आने पर अनुभव करता है। उसे पक्का यक़ीन था कि आज उसका तुलोन या अर्कोला पुल का दिन था। यह कैसे होगा, उसे मालूम नहीं था, लेकिन इस बात का पूरा विश्वास अवश्य था कि ऐसा होगा। इस स्थान और हमारी फ़ौजों की तैनाती के बारे में उसे उतनी ही जानकारी थी जितनी हमारी सेना के किसी भी व्यक्ति को हो सकती थी। अपनी रणनीतिक योजना को, जिसे व्यावहारिक रूप देने के बारे में अब स्पष्टतः सोचना तक व्यर्थ था, वह भूल चुका था। अब तो वैरोटेर की योजना

की तफ़सीलों को समझते हुए वह ऐसी सम्भव कठिन परिस्थितियों की कल्पना और ऐसे नये उपायों के बारे में सोच रहा था जिनकी उसकी कुशाग्र बुद्धि तथा दृढ़ संकल्प को ज़रूरत पड़ सकती थी।

नीचे, बायीं ओर कुहासे में लिपटी घाटी में अदृश्य सेनाओं के बीच गोलियां चलने की आवाज़ सुनायी दे रही थी। प्रिंस अन्द्रेई को ऐसा लग रहा था कि लड़ाई वहीं संकेन्द्रित होगी, वहीं कुछ बड़ी कठिनाइयां सामने आयेंगी और "वहीं तो," वह सोच रहा था, "मुझे ब्रिगेड या डिविज़न देकर भेजा जायेगा और वहीं तो मैं हाथ में झण्डा लिये हुए आगे बढ़ूंगा और जो कुछ भी मेरे सामने आयेगा, उसे तहस-नहस कर डालूंगा।"

प्रिंस अन्द्रेई बढ़ी जाती फ़ौजी बटालियनों के झण्डों को देखकर विह्वल हुए बिना नहीं रह पाता था। हर झण्डे को देखते हुए वह यही सोचता: "शायद इसी झण्डे को हाथ में लेकर मुझे सेना के आगे-आगे जाना होगा।"

रात के कुहासे ने ऊंचाइयों पर केवल हिमकण ही छोड़े थे जो अब शबनम की बूंदों में बदलते जा रहे थे, मगर घाटियों में अभी तक दूधिया-श्वेत सागर की तरह कुहरा फैला हुआ था। बायीं ओर की उस घाटी में कुछ भी नज़र नहीं आ रहा था जहां हमारी फ़ौजें गयी थीं और जहां से गोलियां चलने की आवाज़ें आ रही थीं। ऊंचाइयों के ऊपर काला, निर्मल आकाश था और दायीं ओर सूर्य का बृहदाकार गोला। सामने, बहुत दूर, कुहासे के सागर के उस तट पर वनों से ढके टीले दिखायी दे रहे थे, जहां दुश्मन की फ़ौजों को होना चाहिये था और कुछ नज़र भी आ रहा था। दायीं ओर सुमों तथा पहियों की आवाज़ गुंजाती और कभी-कभार संगीनों की चमक दिखाती गार्ड-घुड़सेना कुहासे के क्षेत्र में बढ़ रही थी। बायीं ओर, गांव के पीछे घुड़सैनिकों के ऐसे ही समूह आते और कुहासे के सागर में खो जाते। सामने और पीछे प्यादा पलटनें बढ़ रही थीं। गांव के छोर पर अपने घोड़े को रोके हुए प्रधान सेनापति फ़ौजों को अपने सामने से जाते देख रहे थे। इस सुबह को कुतूज़ोव क्लान्त और चिड़चिड़े-से प्रतीत हो रहे थे। उनके पास से गुज़रती हुई प्यादा फ़ौज किसी हुक्म के बिना रुक गयी। सम्भवतः इस कारण कि उसके रास्ते में कोई बाधा आ गयी थी।

"आख़िर तो इनसे यह कहिये कि वे बटालियनों के लशकर बनाकर गांव के गिर्द घूमकर आगे बढ़ें," कुतूज़ोव ने अपने पास आनेवाले जनरल से झल्लाकर कहा। "आप इतना भी क्यों नहीं समझते जनाब, मेरे हुज़ूर, कि जब हम दुश्मन के ख़िलाफ़ लड़ने जा रहे हैं तो गांव की इस तंग गली में से गुज़रना ठीक नहीं?"

"मैं तो गांव लांघने के बाद इन्हें बटालियनों में क्रमबद्ध करने की सोच रहा था, बड़े हुज़ूर," जनरल ने जवाब दिया।

कुतूज़ोव कटुता से हंस दिये।

"बहुत अच्छे लगेंगे आप दुश्मन के सामने अपनी सेनाओं को संगठित करते हुए, बहुत ही अच्छे लगेंगे।"

"दुश्मन तो अभी दूर है, बड़े हुज़ूर। सेना की व्यूह-रचना के अनुसार..."

"सेना की व्यूह-रचना के अनुसार," कुतूज़ोव ग़ुस्से से चिल्ला उठे, "यह किसने कहा है आपसे?.. आपसे जो कहा जा रहा है, वही कीजिये।"

"जो हुक्म, हुज़ूर!"

"मेरे प्यारे," नेस्वीत्स्की ने प्रिंस अंद्रेई से फुसफुसाकर कहा, "बड़े मियां तो आज बहुत बुरे मूड में हैं।"

सफ़ेद वर्दी और हरे फुंदनोंवाली फ़ौजी टोपी पहने एक आस्ट्रियायी अफ़सर घोड़ा दौड़ाता हुआ कुतूज़ोव के पास आया और उसने सम्राट की ओर से यह जानना चाहा कि चौथा लशकर चल पड़ा या नहीं?

कुतूज़ोव ने उसे कोई जवाब न देकर मुंह फेर लिया और ऐसे अचानक ही उनकी नज़र अपने पास खड़े प्रिंस अंद्रेई पर पड़ गयी। बोल्कोन्स्की को देखकर कुतूज़ोव ने अपने क्रोध और तिरस्कार के भाव को कुछ दबा लिया मानो यह मानते हुए कि जो कुछ हो रहा था, उसके लिये उनका एडजुटेंट दोषी नहीं था। आस्ट्रियायी एडजुटेंट को कोई जवाब दिये बिना उन्होंने बोल्कोन्स्की से कहा:

"मेरे प्यारे, जाकर देखिये कि तीसरा डिवीज़न गांव को लांघ गया या नहीं। उसे रोकने और मेरे हुक्म का इन्तज़ार करने को कहिये।"

प्रिंस अन्द्रेई ने अपना घोड़ा बढ़ाया ही था कि कुतूज़ोव ने उसे रोका।

"और यह भी पूछिये कि निशानेबाज़ों को तैनात किया या नहीं," उन्होंने इतना और कह दिया। "यह सब क्या हो रहा है, क्या हो रहा है!" कुतूज़ोव ने आस्ट्रियायी एडजुटेंट को कोई जवाब दिये बिना अपने आपसे कहा।

प्रिंस अन्द्रेई आदेश पूरा करने के लिये अपने घोड़े को सरपट दौड़ा ले चला।

आगे बढ़ी जा रही सभी बटालियनों को पीछे छोड़ते हुए प्रिंस अन्द्रेई ने तीसरे डिवीज़न को रोका और ख़ुद अपनी आंखों से यह देख लिया कि हमारे लशकर के आगे-आगे निशानेबाज़ नहीं थे। रेजिमेंट की अगुआई करता हुआ रेजिमेंट-कमांडर प्रधान सेनापति के इस आदेश से बहुत हैरान हुआ कि निशानेबाज़ों को जहां-तहां तैनात कर दिया जाये। रेजिमेंट-कमांडर तो यह विश्वास किये हुए था कि उसके आगे और सेनायें थीं तथा दुश्मन बारह किलोमीटर से कम फ़ासले पर नहीं हो सकता। वास्तव में ही सामने ढालू होते और घने कुहासे से ढके ख़ाली मैदान के सिवा कुछ भी दिखायी नहीं दे रहा था। प्रधान सेनापति की ओर से निशानेवाज़ों की तैनाती के बारे में भूल को सुधारने का आदेश देकर प्रिंस अन्द्रेई सरपट घोड़ा दौड़ाता हुआ वापस आ गया। कुतूज़ोव उसी जगह पर थे और बुढ़ापे के अनुरूप अपने भारी-भरकम शरीर को ज़ीन पर ढीला-ढाला छोड़े और आंखें मूंदे हुए बुझे-बुझे मन से जम्हाई ले रहे थे। फ़ौजें आगे नहीं बढ़ रही थीं, बन्दूक़ों के दस्तों को ज़मीन पर टिकाये हुए वहीं खड़ी थीं।

"ठीक किया, बिल्कुल ठीक किया," उन्होंने प्रिंस अन्द्रेई से कहा और जनरल को सम्बोधित किया जो हाथ में घड़ी लिये हुए यह कह रहा था कि अब आगे बढ़ना चाहिये, क्योंकि बायें बाज़ू के सभी लशकर नीचे जा चुके हैं।

"अभी बहुत वक़्त है, जनाब," कुतूज़ोव ने जम्हाई लेते-लेते कहा। "अभी बहुत वक़्त है!" उन्होंने दोहराया।

इसी वक़्त कुतूज़ोव के पीछे काफ़ी दूरी पर अभिनन्दन करती और ख़ुशी से चिल्लाती रेजिमेंटों की आवाज़ें सुनायी दीं और ये आवाज़ें आगे बढ़ रही रूसी सेनाओं की दूर तक फैली लम्बी शृंखला में तेज़ी से अधिकाधिक निकट आने लगीं। साफ़ ज़ाहिर था कि जिसका अभिवादन किया जा रहा था, वह तेज़ी से बढ़ता आ रहा था। जब उस रेजिमेंट

के सैनिक, जिसके आगे कुतूज़ोव खड़े थे, अभिवादन करते चिल्ला उठे, तो कुतूज़ोव अपने घोड़े को थोड़ा-सा एक तरफ़ हटा ले गये और माथे पर बल डालकर उन्होंने पीछे की तरफ़ देखा। प्रात्सेन से आनेवाली सड़क पर रंग-बिरंगी वर्दियां पहने घुड़सवारों का मानो एक स्कवाड्रन बढ़ा आ रहा था। इनमें से दो दूसरों से कुछ आगे अपने घोड़ों को बहुत तेज़ी से दौड़ाते आ रहे थे। इनमें से एक, जो काली वर्दी पहने था और टोपी में सफ़ेद कलगी लगाये था, अंग्रेज़ी लाखी घोड़े पर सवार था और सफ़ेद वर्दी पहने हुए दूसरा मुश्की घोड़े पर। अपने अमले के साथ ये दोनों सम्राट थे। कुतूज़ोव ने एक पुराने फ़ौजी अफ़सर के अन्दाज़ में अपने सामने खड़ी हुई सेनाओं को "सावधान" होने का आदेश दिया और सलामी देते हुए अपने घोड़े को सम्राट के नज़दीक ले गये। उनकी पूरी आकृति और अन्दाज़ अचानक बदल गया। उन्होंने किसी प्रकार का वाद-विवाद किये बिना हुक्म बजानेवाले मातहत की मुद्रा बना ली। आदर का दिखावा करते हुए, जिसने सम्राट अलेक्सान्द्र को स्पष्टतः अप्रिय ढंग से आश्चर्यचकित किया, कुतूज़ोव ने निकट जाकर सलामी दी।

सम्राट के जवान और खिले चेहरे पर यह अप्रिय प्रभाव निर्मल आकाश में कुहासे के अवशेषों की भांति उभरा और ग़ायब हो गया। कुछ तबीयत ख़राब रहने के कारण सम्राट आज ओल्म्यूत्स के मैदान की तुलना में, जहां बोल्कोन्स्की ने उन्हें विदेश में पहली बार देखा था, कुछ दुबले नज़र आ रहे थे। किन्तु उनकी भूरी आंखों में तेजस्विता और विनम्रता का वही मुग्धकारी झलक थी, पतले-पतले होंठों पर विभिन्न भाव-परिवर्तन की सम्भावना तथा उदात्तता और यौवन के भोलेपन का प्रमुख भाव व्याप्त था।

ओल्म्यूत्स के सेना-निरीक्षण के समय सम्राट अधिक तेजस्वी दिख रहे थे और यहां अधिक खिले-खिले तथा उत्साहपूर्ण। लगभग साढ़े तीन किलोमीटर तक सरपट घोड़ा दौड़ाने के कारण उनके चेहरे पर थोड़ी लाली आ गयी थी और घोड़े को रोकने के बाद उन्होंने लम्बी, गहरी सांस ली तथा अमले के अपने जैसे जवान और खिले हुए चेहरों पर नज़र डाली। बहुत बढ़िया नसल के अच्छी तरह से पाले-पोसे गये और ताज़ादम, किन्तु सरपट दौड़ने के कारण कुछ पसीने से भीगे घोड़ों पर क़ीमती पोशाकें पहने तथा ख़ुशमिज़ाज चार्तोरीज्स्की और

नोवोसील्त्सेव, प्रिंस बोल्कोन्स्की और स्त्रोगानोव तथा अन्य जवान लोग आपस में बातें करते और मुस्कराते हुए सम्राट के पीछे खड़े हो गये। लाल गालों और लम्बोतरे चेहरेवाले जवान सम्राट फ़्रांसिस अपने बहुत ही सुन्दर मुश्की घोड़े पर खूब तनकर बैठे थे तथा कुछ सोचते और धीरे-धीरे अपने इर्द-गिर्द देख रहे थे। उन्होंने सफ़ेद वर्दी पहने अपने एक एडजुटेंट को अपने पास बुलाया और उससे कुछ पूछा। "शायद उन्होंने यह कहा होगा कि किस वक़्त ये रवाना हुए होंगे," प्रिंस अन्द्रेई ने अपने पुराने परिचित, सम्राट फ़्रांसिस को देखकर तथा उनके साथ अपनी भेंट को याद करके मुस्कराते हुए (वह किसी प्रकार भी अपनी मुस्कान को दबा नहीं पाया था) सोचा। सम्राटों के अमले में गार्ड और दूसरी रेजिमेंटों के चुने हुए जवान अर्दली-अफ़सर शामिल थे। इनमें शाही सईस भी थे जो ज़ार के सुन्दर, अतिरिक्त घोड़ों को, जिनपर कढ़े हुए ओहार बिछे थे, सम्भाल रहे थे।

जैसे खिड़की के खुलने से बन्द कमरे में मैदान की ताज़ा हवा की अचानक अनुभूति होती है, वैसे ही सरपट घोड़े दौड़ाते हुए यहां आनेवाले इन बढ़िया जवान लोगों के आगमन से कुतूज़ोव के स्टॉफ़ के मुरझाये-मुरझाये लोगों में जवानी, उत्साह और सफलता का विश्वास आ गया।

"आप शुरू क्यों नहीं करते, मिख़ाईल इलारिओनोविच?" सम्राट अलेक्सान्द्र ने सम्राट फ़्रांसिस की ओर शिष्टता से देखते हुए कुतूज़ोव से फ़ौरन पूछा।

"मैं प्रतीक्षा कर रहा हूं, महाराज," कुतूज़ोव ने सादर आगे की ओर झुकते हुए जवाब दिया।

सम्राट ने अपना कान कुतूज़ोव की ओर झुकाया, जरा नाक-भौंह सिकोड़ी और ऐसे जाहिर किया मानो उन्होंने कुतूज़ोव का जवाब नहीं सुना।

"मैं प्रतीक्षा कर रहा हूं, महाराज," कुतूज़ोव ने दोहराया (प्रिंस अन्द्रेई ने देखा कि कुतूज़ोव ने जब "प्रतीक्षा" शब्द कहा तो उनका ऊपर का होंठ अस्वाभाविक ढंग से कांप उठा)। "महाराज, अभी तक सारे लशकर जमा नहीं हुए।"

सम्राट को सुनायी दे गया, मगर कुतूज़ोव का जवाब सम्भवतः उन्हें अच्छा नहीं लगा, उन्होंने झुके हुए कंधे झटके, अपने नज़दीक

खड़े नोवोसील्त्सेव की तरफ़ ऐसे देखा मानो इस नज़र से कुतूज़ोव की शिकायत कर रहे हों।

"आख़िर हम त्सारीत्सिन मैदान में तो नहीं हैं, मिख़ाईल इलारिओनोविच, जहां तभी परेड शुरू होती है, जब सभी रेजिमेंटें आ जाती हैं," सम्राट ने फिर से सम्राट फ़्रांसिस की आंखों में झांकते हुए कहा मानो उन्हें इस बात के लिये निमन्त्रित कर रहे हों कि अगर वह इस बातचीत में हिस्सा न लेना चाहते हों तो वह जो कह रहे थे कम से कम उसे सुनें तो सही। किन्तु सम्राट फ़्रांसिस इधर-उधर देखते रहे और उन्होंने सम्राट अलेक्सान्द्र की बात की तरफ़ ध्यान नहीं दिया।

"इसीलिये शुरू नहीं कर रहा हूं, महाराज," कुतूज़ोव ने ऊंची आवाज़ में कहा ताकि उनके सुन न पाने की सम्भावना ही न रहे और उनके चेहरे पर फिर से कुछ कम्पन हुआ। "इसीलिये शुरू नहीं कर रहा हूं, महाराज, कि हम न तो यहां परेड के लिये आये हैं और न त्सारीत्सिन मैदान में हैं," कुतूज़ोव ने साफ़-साफ़ और ख़ूब सुनाकर कह दिया।

सम्राट के अमले के लोगों ने फ़ौरन एक-दूसरे की तरफ़ देखा और सभी के चेहरों पर भर्त्सना तथा निन्दा का भाव झलक उठा। "कुतूज़ोव चाहे कितने ही बुज़ुर्ग क्यों न हों, उन्हें किसी हालत में भी ऐसे बात नहीं करनी चाहिये," सभी के चेहरे कह रहे थे।

सम्राट यह प्रतीक्षा करते हुए एकटक और बहुत ध्यान से कुतूज़ोव की आंखों में देखते रहे कि वह और कुछ कहते हैं या नहीं। किन्तु कुतूज़ोव भी सादर अपना सिर झुकाये हुए प्रतीक्षा करते प्रतीत हो रहे थे। यह ख़ामोशी लगभग एक मिनट तक बनी रही।

"वैसे अगर आप हुक्म देते हैं, महाराज," कुतूज़ोव ने सिर ऊपर उठाते और फिर से बुद्धू, तर्क-वितर्क न करने तथा केवल हुक्म बजानेवाले जनरल का पहले जैसा अन्दाज़ अपनाते हुए कहा।

उन्होंने अपने घोड़े को एड़ लगायी और लशकर के कमांडर मीलोरादोविच को अपने पास बुलाकर लशकर को आगे बढ़ने का आदेश देने के लिये कहा।

सेनायें फिर से चल पड़ीं और नोवगोरोद की रेजिमेंट की दो बटालियनें तथा अपशेरोन की रेजिमेंट की एक बटालियन सम्राट के सामने से आगे जाने लगीं।

जिस समय अपशेरोन की बटालियन आगे जा रही थी, फ़ौजी ओवर-कोट के बिना, केवल वर्दी पहने, अनेक पदक लगाये, बहुत बड़ी कलग़ी और नुकीले सिरोंवाली टोपी को बांकपन से सिर पर डाटे हुए लाल-लाल गालोंवाला मीलोरादोविच तेज़ी से आगे आया और बड़ी फुर्ती से सलूट मारकर उसने अपने घोड़े को सम्राट के सामने रोक दिया।

"भगवान तुम्हारी मदद करें, जनरल," सम्राट ने कहा।

"महाराज, हम वह सब करेंगे जो कुछ करना सम्भव है, महा-राज!" जनरल ने खुशमिज़ाजी से फ़्रांसीसी में जवाब दिया, फिर भी उसकी भद्दी फ़्रांसीसी भाषा के कारण ज़ार के अमले के महानुभाव व्यंग्यपूर्वक मुस्कराये बिना न रह सके।

मीलोरादोविच ने अपने घोड़े को तेज़ी से मोड़ा और उसे सम्राट के कुछ पीछे ले जाकर खड़ा कर दिया। ज़ार की उपस्थिति से उत्सा-हित अपशेरोन की बटालियन के सैनिक बड़ी दिलेरी से और ख़ूब क़दम मिलाकर सम्राटों तथा उनके अमले के लोगों के सामने से गुज़र रहे थे।

"जवानो!" मीलोरादोविच ने ऊंची, आत्मविश्वास से परिपूर्ण तथा प्रफुल्ल आवाज़ में चिल्लाकर इन सैनिकों को सम्बोधित किया। वह सम्भवतः गोलियों की ठांय-ठांय, लड़ाई की प्रत्याशा और सुवोरोव के समय के अपशेरोन की बटालियन के अपने इन साथी-सैनिकों को बड़ी दिलेरी से सम्राटों के सामने से गुज़रते हुए देखकर इस हद तक उत्तेजित हो गया था कि उसे सम्राट की उपस्थिति का भी ध्यान नहीं रहा था। "जवानो, तुम पहले गांव पर तो कब्ज़ा करने नहीं जा रहे हो!" उसने चिल्लाकर कहा।

"हम ख़ुशी से पूरा ज़ोर लगायेंगे!" सैनिकों ने ख़ूब ऊंची आवाज़ में जवाब दिया।

ज़ार का घोड़ा इस अप्रत्याशित शोर से चौंका। रूस में परेड के निरीक्षण के समय तथा आउस्टेरलिट्ज़ के मैदान में हुई परेड के वक़्त भी सम्राट इसी घोड़े पर सवार रहे थे और यही घोड़ा बड़े धीरज से सम्राट की बायीं एड़ के आघात सहते, रूस के परेड के मैदान की भांति यहां भी गोलियों की बौछारों की आवाज़ों से कनौतियां बदलते, इन बौछारों और सम्राट फ़्रांसिस के मुश्की घोड़े की निकटता, तथा उस सबके महत्त्व को न समझते हुए जो उसका सवार आज कह,

16–591

सोच और अनुभव कर रहा था, इस वक़्त भी उसे अपनी पीठ पर साधे था।

सम्राट ने अपने अमले के सबसे निकटवाले व्यक्ति की ओर मुस्कराते हुए मुंह किया और अपशेरोन की बटालियन के जवानों की तरफ़ संकेत करके कुछ कहा।

१६

अपने एडजुटेंटों के साथ कुतूज़ोव घोड़े को क़दम-क़दम चलाते हुए बन्दूक़चियों के पीछे-पीछे बढ़ चले।

आध किलोमीटर से कुछ अधिक फ़ासले तक लशकर के पीछे रहने के बाद उन्होंने एक उजाड़ और एकाकी मकान (यह सम्भवतः पहले भटियारख़ाना था) के पास अपना घोड़ा रोका। यहां दोराहा था। दोनों रास्ते पहाड़ी से नीचे जाते थे और दोनों पर सेनायें नीचे जा रही थीं।

कुहासा छंटने लगा था और कोई ढाई किलोमीटर दूर, सामने की ऊंचाइयों पर शत्रु-सेनाओं की धुंधली झलक मिलने लगी थी। नीचे, बायीं ओर गोलियां चलने की आवाज़ अधिक स्पष्ट रूप से सुनायी देने लगी थी। आस्ट्रियायी जनरल से बात करते हुए कुतूज़ोव रुक गये थे। इन दोनों से कुछ दूर अपना घोड़ा रोके हुए प्रिंस अन्द्रेई इनकी ओर देख रहा था और दूरबीन लेने की इच्छा अनुभव करते हुए वह एक एडजुटेंट की तरफ़ मुड़ा।

"देखिये, देखिये," इस एडजुटेंट ने दूर की सेनाओं की ओर नहीं, बल्कि पहाड़ी के नीचे अपने सामने देखते हुए कहा। "ये तो फ़्रांसीसी हैं!"

दोनों जनरल और एडजुटेंट दूरबीन को एक-दूसरे से छीनते हुए उसमें से नीचे देखने लगे। सभी के चेहरे एकाएक बदल गये और उनपर आतंक छा गया। यह माना जा रहा था कि फ़्रांसीसी हमसे कोई ढाई किलोमीटर दूर हैं, जबकि वे अप्रत्याशित ही हमारे सामने दिखायी दिये।

"ये दुश्मन हैं?.. नहीं। देखिये तो, वही हैं... हां, वही हैं... यह कैसे हो सकता है?" विभिन्न आवाज़ें सुनायी दीं।

प्रिंस अन्द्रेई ने दूरबीन के बिना ही नीचे, दायीं ओर उस जगह से जहां कुतूज़ोव थे, कोई पांच सौ क़दम दूर फ़्रांसीसियों के एक बहुत बड़े लशकर को अपशेरोन की बटालियन की तरफ़ बढ़ते देखा।

"तो अब निर्णायक क्षण आ गया! मेरे कुछ करने का वक़्त आ गया," प्रिंस अन्द्रेई ने सोचा और घोड़े को एड़ लगाकर कुतूज़ोव के पास गया।

"अपशेरोन की बटालियन को रोकना चाहिये, बड़े हुज़ूर," वह चिल्लाया।

किन्तु इसी क्षण सब कुछ धुएं के बादल में छिप गया, नज़दीक ही गोलियां चलने की आवाज़ सुनायी दी और प्रिंस अन्द्रेई से दो क़दम की दूरी पर ही कोई डरी हुई आवाज़ में भोलेपन से चिल्ला उठा: "भाइयो, अब तो खेल ख़त्म समझो!" और यह आवाज़ मानो एक आदेश था। इस आवाज़ को सुनते ही सभी पीछे दौड़ने लगे।

बिल्कुल चकराये-घबराये हुए सैनिक अधिकाधिक बढ़ती संख्या में उसी जगह की तरफ़ भाग रहे थे, जहां पांच मिनट पहले सेनायें सम्राटों के सामने से गुज़री थीं। न केवल इस भीड़ को रोकना ही असम्भव था, बल्कि ख़ुद को इसके रेले से बचाना भी सम्भव नहीं था। बोल्कोन्स्की ने केवल कुतूज़ोव के निकट रहने की कोशिश की और भौचक्का-सा इधर-उधर देखते हुए उस सब कुछ को समझ पाने में असमर्थ था जो उसके सामने हो रहा था। गुस्से से लाल-पीले और बिल्कुल पराये-से लगते नेस्वीत्स्की ने चिल्लाते हुए कुतूज़ोव से कहा कि अगर वह इसी क्षण यहां से नहीं चले जायेंगे तो अवश्य ही बन्दी बना लिये जायेंगे। कुतूज़ोव जहां के तहां खड़े थे और उन्होंने नेस्वीत्स्की को कोई जवाब दिये बिना रूमाल निकाला। उनके गाल से ख़ून बह रहा था। प्रिंस अन्द्रेई किसी तरह उनके पास पहुंचा।

"आप घायल हो गये?" उसने बड़ी मुश्किल से निचले जबड़े की कंपकंपी को वश में करते हुए पूछा।

"घाव यहां नहीं, वहां है!" कुतूज़ोव ने घायल गाल को रूमाल से दबाते और भागते फ़ौजियों की तरफ़ इशारा करते हुए कहा।

"इन्हें रोकिये!" कुतूज़ोव ने चीख़कर कहा और साथ ही सम्भ-

वतः यह महसूस करते हुए कि भागते सैनिकों को रोकना सम्भव नहीं, अपने घोड़े को एड़ लगायी और दायीं तरफ़ को चले गये।

फिर से भागते सैनिकों का एक और रेला आया और वह कुतूज़ोव को भी अपने साथ धकेल ले गया।

सेना इतनी बड़ी भीड़ के रूप में पीछे भाग रही थी कि एक बार उसकी लपेट में आ जाने पर उससे बाहर निकलना कठिन था। एक सैनिक चिल्ला उठा: "आगे बढ़, रुक क्यों गया?" दूसरे ने इसी वक़्त घूमकर हवा में गोली चलायी, किसी ने उस घोड़े पर ही चोट की जिसपर कुतूज़ोव सवार थे। बड़ी मुश्किल से सैनिकों की बाढ़ में से बायीं ओर को निकलने के बाद कुतूज़ोव अपने अमले के साथ, जिसकी संख्या आधी रह गयी थी, कहीं निकट ही दनदनाती तोपों की आवाज़ की ओर बढ़ गये। भगोड़ों की भीड़ से अपने को मुक्त करके तथा कुतूज़ोव के नज़दीक बने रहने की कोशिश करते हुए प्रिंस अन्द्रेई ने पहाड़ी की ढाल पर धुएं में यह देखा कि एक रूसी तोपख़ाना अभी भी तोपें चलाता जा रहा था, जबकि फ़्रांसीसी भागते हुए उसकी तरफ़ बढ़ रहे थे। ऊंचाई पर एक रूसी प्यादा पलटन खड़ी थी जो न तो तोप-ख़ाने की मदद के लिये आगे बढ़ रही थी और न ही भागनेवालों के साथ उसी दिशा में भाग रही थी। घोड़े पर सवार इस रेजिमेंट का जनरल रेजिमेंट से हटकर कुतूज़ोव के पास आया। कुतूज़ोव के अमले में केवल चार व्यक्ति बाक़ी रह गये थे, सभी के चेहरों पर हवाइयां उड़ रही थीं और सभी चुपचाप एक-दूसरे की तरफ़ देख रहे थे।

"इन कमीनों को रोकिये!" कुतूज़ोव ने भगोड़ों की तरफ़ इशारा करते और हांफते हुए रेजिमेंट-कमांडर से कहा। किन्तु इसी वक़्त मानो इन शब्दों के लिये दण्ड देते हुए परिन्दों के झुण्ड की भांति कुतूज़ोव और उनके अमले पर ढेरों गोलियां की बौछार हुई।

फ़्रांसीसी तोपख़ाने पर हमला कर रहे थे और कुतूज़ोव को देखकर उनपर गोलियां चलाने लगे। गोलियों की इस बौछार से रेजिमेंट-कमांडर अपनी टांग पकड़कर रह गया, कुछ सैनिक ढेर हो गये और झण्डा थामे हुए छोटे लेफ़्टिनेंट ने झण्डे को हाथों से छोड़ दिया। झण्डा लड़खड़ाया, गिरा और निकट खड़े सैनिकों की बन्दूक़ों के साथ अटका रह गया। सैनिक किसी आदेश के बिना ही गोलियां चलाने लगे।

"उ... फ़!" कुतूज़ोव हताशा से कराह उठे और उन्होंने मुड़कर

देखा। "बोल्कोन्स्की," वह बुढ़ापे की विवशता की चेतना से कांपती आवाज़ में फुसफुसाये। "बोल्कोन्स्की," वह हिम्मत हार रही बटालियन और शत्रु की ओर संकेत करते हुए फुसफुसाये, "यह क्या हो रहा है?"

किन्तु इसके पहले कि कुतूज़ोव अपने ये शब्द कह पाते, प्रिंस अन्द्रेई लज्जा और क्रोध के आंसू अनुभव करते हुए, जिनसे उसका गला रुंधा जा रहा था, अपने घोड़े से कूदकर झण्डे की तरफ़ भाग गया था।

"जवानो, आगे बढ़ो!" वह बालकों जैसी तीखी आवाज़ में चिल्लाया।

"तो आ गया मेरा क्षण!" प्रिंस अन्द्रेई ने झण्डे का डंडा हाथ में पकड़ते और सम्भवतः उसी पर चलायी जानेवाली गोलियों की सन-सनाहट सुनते हुए उल्लासपूर्वक सोचा। कुछ सैनिक ढेर हो गये।

"हुर्रा!" प्रिंस अन्द्रेई चिल्लाया और बड़ी मुश्किल से भारी झण्डे को हाथों में साधे तथा पूरे विश्वास के साथ आगे भाग चला कि पूरी बटालियन उसके पीछे-पीछे भागने लगेगी।

वास्तव में ही केवल कुछ क़दमों तक वह अकेला भागा। एक सैनिक उसके पीछे दौड़ा, फिर दूसरा और "हुर्रा" चिल्लाती हुई सारी बटा-लियन आगे दौड़ने लगी और उसके बराबर आ गयी। बटालियन के एक सार्जेंट ने भागकर बोझ के कारण प्रिंस अन्द्रेई के हाथों में डोलते हुए झण्डे को अपने हाथों में ले लिया, मगर वह उसी क्षण मारा गया। प्रिंस अन्द्रेई ने झण्डे को फिर से झपट लिया और डंडे से उसे घसीटते हुए बटालियन के साथ-साथ भाग चला। अपने सामने उसे हमारे तोपची दिखायी दिये जिनमें से कुछ अभी तक दुश्मन पर गोले बरसा रहे थे और कुछ तोपें छोड़कर उसकी तरफ़ भागे आ रहे थे। उसे फ़्रांसीसी प्यादा फ़ौजी भी नज़र आये जो तोप-गाड़ियों के घोड़ों को हथिया रहे थे और तोपों के मुंह मोड़ रहे थे। बटालियन के साथ प्रिंस अन्द्रेई अब तोपों से बीस क़दमों की दूरी पर था। उसे अपने ऊपर लगातार गोलियों की सनसनाहट सुनायी दे रही थी और उसके दायें-बायें आह-ओह करते हुए सैनिक गिर रहे थे। किन्तु प्रिंस अन्द्रेई उनकी तरफ़ नहीं देख रहा था, वह तो अपने सामने तोपख़ाने के पास जो कुछ हो रहा था, उसी पर नज़र टिकाये था। उसे लाल बालोंवाला एक तोपची बिल्कुल साफ़ दिखायी दे रहा था जिसकी फ़ौजी टोपी एक तरफ़ से

टूटी हुई थी। वह तोप की नाल साफ़ करनेवाले लम्बे डंडेवाले ब्रश को अपनी तरफ़, जबकि एक फ़्रांसीसी सैनिक उसे अपनी तरफ़ खींच रहा था। प्रिंस अन्द्रेई को इन दोनों के चकराये-चकराये और साथ ही क्रोधपूर्ण चेहरे स्पष्ट दिखायी दे रहे थे। ये दोनों सम्भवतः यह नहीं समझ पा रहे थे कि क्या हरकत कर रहे हैं।

"ये क्या कर रहे हैं?" प्रिंस अन्द्रेई ने इनकी तरफ़ देखते हुए सोचा। "यह लाल बालोंवाला तोपची भाग क्यों नहीं जाता, जबकि उसके पास बन्दूक़ भी नहीं है? फ़्रांसीसी उसका काम तमाम क्यों नहीं कर देता? तोपची बहुत दूर नहीं भाग पायेगा कि फ़्रांसीसी को अपनी बन्दूक़ का ध्यान आ जायेगा और वह उसके बदन में संगीन घुसेड़ देगा।"

वास्तव में ही एक अन्य फ़्रांसीसी अपनी बन्दूक़ ताने हुए तोप के ब्रश के लिये संघर्ष कर रहे इन दोनों व्यक्तियों की ओर भागता हुआ आया और वह सम्भवतः लाल बालोंवाले तोपची की क़िस्मत का फ़ैसला कर देगा, जो अभी तक यह नहीं समझ रहा था कि उसके साथ क्या बीतनेवाली है और जिसने विजेता की तरह अभी-अभी वह ब्रश छीन लिया था। किन्तु प्रिंस अन्द्रेई यह नहीं देख पाया कि इस मामले का क्या अन्त हुआ। उसे ऐसा लगा कि उसके निकटवाले किसी सैनिक ने ख़ूब ज़ोर से एक मज़बूत डंडा उसके सिर पर दे मारा है। दर्द तो बहुत नहीं हुआ, मगर ख़ास तौर पर बुरा तो यह लगा कि दर्द उसका ध्यान अपनी तरफ़ खींच रहा था और उसे वह नहीं देखने दे रहा था जो वह देख रहा था।

"यह क्या बात है? क्या मैं गिर रहा हूं? मेरी टांगें जवाब दे रही हैं," प्रिंस अन्द्रेई ने सोचा और चित नीचे गिर गया। उसने यह देखने की आशा से आंखें खोलीं कि तोपचियों के साथ फ़्रांसीसियों के संघर्ष का क्या अन्त हुआ, वह यह भी जानना चाहता था कि लाल बालोंवाला तोपची मारा गया या नहीं और तोपें फ़्रांसीसियों के क़ब्ज़े में चली गयीं या बच गयीं। किन्तु वह कुछ भी नहीं देख पाया। उसके ऊपर अब आकाश के सिवा, ऊंचे आकाश के सिवा और कुछ नहीं था। आकाश निर्मल नहीं था, लेकिन बेहद ऊंचा था और उसपर सलेटी-सलेटी बादल तैर रहे थे। "कितना शान्त, नीरव और गम्भीर है, उससे भिन्न जैसा कि भागते समय मैं था," प्रिंस अन्द्रेई ने सोचा,

"उससे बिल्कुल भिन्न, जैसे कि भागते, चिल्लाते और लड़ते समय हम थे, उससे बिल्कुल भिन्न, जैसे कि तोप साफ़ करने के ब्रश को एक-दूसरे से छीनते समय फ्रांसीसी सैनिक और रूसी तोपची क्रोधपूर्ण तथा डरे-सहमे लग रहे थे। – कितने भिन्न ढंग से तैर रहे हैं इस ऊंचे और असीम आकाश में बादल! यह कैसे हुआ कि मैंने इस ऊंचे आकाश को पहले कभी नहीं देखा और कितना सौभाग्यशाली हूं मैं कि आख़िर तो मैंने इसे देख लिया है! हां! इस ऊंचे आकाश के सिवा सब कुछ बेमानी है, सब धोखा है। इसके सिवा कुछ भी, कुछ भी तो नहीं। किन्तु वह भी नहीं, शांति और नीरवता के सिवा कुछ भी नहीं। शुक्र है भगवान का! .."

१७

मोर्चे के दायें बाज़ू पर, जिसकी कमान बग्रातिओन सम्भाले था, सुबह के नौ बजे तक लड़ाई शुरू नहीं हुई थी। लड़ाई शुरू करने की दोल्गोरूकोव की मांग से सहमत न होना चाहते हुए और अपने ऊपर से इस ज़िम्मेदारी को दूर करने की इच्छा से प्रिंस बग्रातिओन ने दोल्गोरूकोव को यह सुझाव दिया कि इसके बारे में प्रधान सेनापति की राय जानने के लिये किसी को उनके पास भेजना चाहिये। बग्रातिओन यह जानता था कि सेना के एक बाज़ू से दूसरे बाज़ू तक लगभग बारह किलोमीटर के फ़ासले में यदि सन्देशवाहक की हत्या नहीं कर दी जायेगी (जिसकी बड़ी सम्भावना थी) और अगर वह प्रधान सेनापति को ढूंढ़ भी लेगा (जो बहुत मुश्किल था) तो भी वह शाम होने से पहले नहीं लौट सकेगा।

बग्रातिओन ने अपनी बड़ी-बड़ी, भाव-शून्य और उनींदी आंखों से अपने अमले की तरफ़ देखा और उत्तेजना तथा आशा से अनजाने ही अत्यधिक विह्वल रोस्तोव का बालकों जैसा चेहरा ही सबसे पहले उसके सामने आ गया। उसने उसे ही भेज दिया।

"और हुज़ूर, अगर प्रधान सेनापति से पहले ही सम्राट से मेरी भेंट हो जाये तो?" फ़ौजी टोपी के साथ हाथ सटाकर सलूट मारते

हुए रोस्तोव ने पूछा।

"आप सम्राट से भी यह पूछ सकते हैं," बग्रातिओन से पहले ही दोल्गोरूकोव ने झटपट जवाब दे दिया।

पिछली रात को अग्रिम चौकियों की ड्यूटी से मुक्त होने के बाद रोस्तोव सुबह होने के पहले कुछ घण्टों तक सो लिया था, वह अपने को अत्यधिक ख़ुश, साहस और संकल्प से ओत-प्रोत, स्फूर्ति से उमगता, अपने सुख-सौभाग्य के बारे में विश्वास से परिपूर्ण तथा ऐसे मूड में था जिसमें सब कुछ बहुत आसान, सुखद और सम्भव लगता है।

इस सुबह को उसकी सभी इच्छायें पूरी हो गयी थीं – निर्णायक लड़ाई लड़ी जा रही थी, वह उसमें हिस्सा ले रहा था, इतना ही नहीं, वह एक सबसे बहादुर जनरल के अमले में शामिल था, इसके अलावा वह कुतूज़ोव के पास, शायद ख़ुद सम्राट के पास सन्देश लेकर जा रहा था। सुबह सुहावनी थी, घोड़ा बढ़िया था। उसका मन बहुत ख़ुश था, खिला हुआ था। अनुदेश लेकर उसने घोड़े को सरपट दौड़ाना शुरू किया। शुरू में वह बग्रातिओन की सेना के साथ-साथ, जो अभी तक लड़ाई में शामिल नहीं हुई थी और जहां की तहां खड़ी थी, आगे बढ़ा ; इसके बाद उसने उवारोव की घुड़सेना की ओर अपना घोड़ा बढ़ाया। इस सेना को उसने हिलते-डुलते और लड़ाई में शामिल होने के लिये तैयार होते पाया। उवारोव की घुड़सेना से आगे बढ़ने पर उसे अपने सामने तोपों की धांय-धांय और गोलियों की ठांय-ठांय साफ़ सुनायी देने लगी। गोलियां चलने की आवाज़ अधिकाधिक ऊंची होती जा रही थी।

सुबह की ताज़ा हवा में अब पहले की तरह छोटे-बड़े विरामों के बाद दो-तीन गोलियां और उनके बाद तोप के एक-दो गोले चलने की आवाज़ें नहीं आ रही थीं। इसके विपरीत, प्रात्ज़ेन के पहले, पहाड़ी की ढालों पर अब गोलियों की बौछारों और उनके बीच तोपों की गरज इतनी अधिक अक्सर सुनायी देती थी कि कभी-कभी कई तोपों की एकसाथ होनेवाले गर्जन को अलग करना असम्भव हो जाता था और वे एक सामान्य गूंज में एकाकार हो जाती थीं।

रोस्तोव यह भी देख सकता था कि कैसे बन्दूक़ों का धुआं एक-दूसरे का पीछा करते हुए पहाड़ी से नीचे जाता था और कैसे तोपों का धुआं बादल-सा बनता हुआ एक-दूसरे के साथ घुल-मिल जाता था।

धुएं के बीच संगीनों की चमक से पैदल सेनाओं के बड़े समूह और हरे-हरे बक्सों के साथ तोपख़ाने की संकरी क़तारें भी बढ़ती नज़र आ रही थीं।

रोस्तोव ने यह देखने के लिये एक टीले पर क्षण भर को अपना घोड़ा रोका कि वहां क्या हो रहा है। किन्तु उसने अपनी नज़र पर चाहे कितना ही ज़ोर क्यों न डाला, वहां जो कुछ हो रहा था, वह उसे बिल्कुल नहीं समझ पाया, उसके पल्ले कुछ नहीं पड़ा – वहां धुएं में कुछ लोग हिल-डुल रहे थे, आगे और पीछे से कुछ सेना-पांतें आ-जा रही थीं, मगर किसलिये? वे लोग कौन हैं? किधर जा रहे हैं? – यह समझना सम्भव नहीं था। यह दृश्य और ये आवाज़ें उसके दिल में किसी प्रकार की घबराहट या दहशत पैदा करने के बजाय उत्साह और दृढ़ता पैदा कर रही थीं।

"और, और ज़ोर से!" उसने मन ही मन इन आवाज़ों को सम्बोधित करके कहा और फिर से अपने घोड़े को सरपट दौड़ाते हुए उस क्षेत्र में आगे ही आगे बढ़ने लगा जहां फ़ौजें लड़ाई लड़ रही थीं।

"वहां क्या होगा, मैं नहीं जानता, लेकिन सब अच्छा ही होगा!" रोस्तोव सोच रहा था।

कुछ आस्ट्रियायी सेनाओं के पास से गुज़रने के बाद रोस्तोव ने देखा कि उसके आगे के भागवाली सेना (यह गार्ड-सेना थी) लड़ाई में शामिल भी हो चुकी है।

"यह तो और भी अच्छी बात है। मैं इसे नज़दीक से लड़ते देख सकूंगा," उसने सोचा।

वह लगभग मोर्चे की अग्रिम सीमा के साथ-साथ अपने घोड़े को आगे बढ़ाता जा रहा था। कुछ घुड़सवार उसकी दिशा में सरपट घोड़े दौड़ाते आ रहे थे। ये हमारे उलान* घुड़सवार थे जो हमला करने के बाद अव्यवस्थित ढंग से लौट रहे थे। रोस्तोव इनके पास से गुज़रा, अनचाहे ही ख़ून से लथपथ एक घुड़सवार की तरफ़ उसका ध्यान चला गया, मगर वह अपने घोड़े को सरपट आगे दौड़ा ले गया।

"मुझे इससे कोई मतलब नहीं!" उसने सोचा। इन घुड़सवारों

---

* ज़ार-परिवार के किसी सदस्य के संरक्षणवाली विशेषाधिकार प्राप्त हल्की घुड़सेना। – सं०

के बाद वह कुछ सौ क़दम ही आगे गया था कि उसे अपने बायीं ओर से पूरे मैदान में फैले, चमकती सफ़ेद वर्दियां पहने और मुश्की घोड़ों को दुलकी चाल से दौड़ाते ढेरों घुड़सवार अपनी ओर आते दिखायी दिये। रोस्तोव ने इन घुड़सवारों के रास्ते से हट जाने के लिये अपने घोड़े को पूरे ज़ोर से दौड़ाना शुरू किया। अगर ये घुड़सवार इसी रफ़्तार से बढ़ते रहते तो वह इनके रास्ते से हट भी गया होता, किन्तु वे लगातार अपने घोड़ों को तेज़ करते जा रहे थे और इस तरह कुछ घोड़े तो सरपट भी दौड़ने लगे थे। रोस्तोव को घोड़ों की टापें और शस्त्रों की खनक अधिकाधिक निकट आती महसूस हुई और घोड़े, लोगों की आकृतियां, यहां तक कि चेहरे भी उसके लिये अधिक स्पष्ट होते जा रहे थे। यह हमारी भारी घुड़सेना थी जो अपनी तरफ़ बढ़ रही फ़्रांसीसी घुड़सेना पर हमला करने जा रही थी।

इस सेना के घुड़सवार अपने घोड़ों को सरपट दौड़ा रहे थे, मगर फिर भी उन्हें पूरी छूट नहीं दे रहे थे। रोस्तोव को अब उनके चेहरे नज़र आ रहे थे और उसे उनके अफ़सर का यह आदेश भी सुनायी दिया: "पूरी रफ़्तार से!" और इसके साथ ही अफ़सर ने बढ़िया नसल के अपने घोड़े को पूरे ज़ोर से सरपट दौड़ाना शुरू किया। रोस्तोव ने इस आशंका से कि कहीं वह इन घुड़सवारों द्वारा कुचल न दिया जाये या फ़्रांसीसियों पर किये जानेवाले हमले की लपेट में न आ जाये, अपने घोड़े को मोर्चे के साथ-साथ पूरी ताक़त से दौड़ाना शुरू किया। फिर भी वह उनके रास्ते की सीमा से निकल नहीं पाया।

भारी घुड़सेना के सिरेवाले, लम्बे-तड़ंगे, चेचकरू घुड़सवार ने रोस्तोव को अपने सामने देखकर, जिसके साथ उसका टकरा जाना लाज़िमी था, ग़ुस्से से भृकुटि चढ़ायी। इस घुड़सवार ने रोस्तोव और उसके बेदुईन घोड़े को अवश्य ही नीचे गिरा दिया होता (रोस्तोव ने इन भीमकाय लोगों और घोड़ों की तुलना में अपने को बहुत ही छोटा और दुर्बल अनुभव किया), अगर उसके दिमाग़ में इस घुड़सवार के घोड़े की आंखों के सामने अपना चाबुक सटकारने का ख़्याल न आ जाता। भारी-भरकम मुश्की घोड़ा कनौतियां बदलकर एक तरफ़ हटा। किन्तु चेचकरू घुड़सवार ने ज़ोर से उसकी बग़ल में अपनी बड़ी-बड़ी एड़ें मारीं और घोड़ा अपनी पूंछ लहराकर तथा गर्दन को आगे की ओर

फैलाकर पहले से भी ज़्यादा तेज़ी के साथ दौड़ने लगा। घुड़सैनिक रोस्तोव के पास से गुज़रे ही थे कि उसे उनका ज़ोरदार "हुर्रा" सुनायी दिया। उसने मुड़कर देखा तो पाया कि उनकी अगली क़तारें किन्हीं पराये, लाल स्कन्धिकायें लगाये, सम्भवतः फ़्रांसीसी घुड़सवारों के साथ गड्डमड्ड हो गयी हैं। इसके बाद कुछ भी देख पाना सम्भव नहीं था, क्योंकि इसी क्षण कहीं से तोपें गोले उगलने लगीं और सब कुछ धुएं के बादल में लुप्त हो गया।

घुड़सैनिक जैसे ही उसके पास से गुज़रकर धुएं में लुप्त हुए, रोस्तोव क्षण भर को इस दुविधा में पड़ गया कि वह अपने घोड़े को उनके पीछे दौड़ाये या उधर जाये, जिधर उसे जाना था। हमारे घुड़-सैनिकों का यही वह शानदार हमला था जिससे फ़्रांसीसी भी दंग रह गये थे। बाद में यह सुनकर रोस्तोव का दिल दहल गया था कि इतनी बड़ी संख्या में ये जो सुन्दर, धनी, जवान अफ़सर और केडेट हज़ारों रूबलों के अपने घोड़ों को सरपट दौड़ाते हुए उसके पास से गुज़रे थे, हमले के बाद केवल अठारह ही ज़िन्दा लौटे थे।

"क्या ज़रूरत है मुझे इनसे ईर्ष्या करने की! मेरा भी वक़्त आयेगा और, हो सकता है, कि मेरी तो अभी सम्राट से भेंट हो जाये!" रोस्तोव ने सोचा और अपने घोड़े को सरपट आगे दौड़ा ले चला।

प्यादा गार्ड-सेना के क़रीब पहुंचने पर उसने महसूस किया कि उनके बीच तथा उसके पास से गोले गुज़र रहे हैं। उसने इस कारण तो इस चीज़ को इतना अधिक महसूस नहीं किया कि गोलों की आवाज़ सुनायी दे रही थी जितना इसलिये कि सैनिकों के चेहरों पर परेशानी थी और अफ़सरों के चेहरों पर अस्वाभाविक सैनिक उत्तेजना।

प्यादा गार्ड-रेजिमेंटों की एक क़तार के पीछे से जाते हुए उसने किसी को अपना नाम लेकर पुकारते सुना।

"रोस्तोव!"

"कौन है?" बोरीस को न पहचानते हुए उसने जवाब दिया।

"सुनो, हम लोग तो सबसे आगेवाली क़तार में थे! हमारी रेजिमेंट ने हमले में हिस्सा लिया!" बोरीस ने उसी ख़ुशी भरी मुस्कान के साथ कहा जो लड़ाई में पहली बार भाग लेनेवाले जवान लोगों के चेहरों पर होती है।

रोस्तोव ने घोड़ा रोका।

"अच्छा!" उसने कहा। "तो कैसा हाल रहा?"

"मार भगाया!" बोरीस ने बातूनी होते हुए रंग में आकर कहा। "तुम कल्पना कर सकते हो?"

और बोरीस यह बताने लगा कि कैसे अपनी जगह पर खड़ी गार्ड-सेना ने अपने सामने फ़ौजें देखकर उन्हें आस्ट्रियायी फ़ौजें समझा और इन फ़ौजों द्वारा अचानक चलाये जानेवाले तोप-गोलों से ही इसे यह पता चला कि वह दुश्मन के बिल्कुल सामने है तथा इसे अप्रत्याशित ही लड़ाई में कूदना पड़ा। बोरीस की बात अन्त तक सुने बिना ही रोस्तोव ने घोड़ा बढ़ा दिया।

"तुम कहां जा रहे हो?" बोरीस ने पूछा।

"सन्देश लेकर बड़े हुज़ूर के पास।"

"वह सामने हैं।" बोरीस ने जवाब दिया जिसे "बड़े हुज़ूर" की जगह "बड़े ड्यूक" सुनायी दिया था।

और उसने बड़े ड्यूक की तरफ़ इशारा किया जो शिरस्त्राण और गार्ड-घुड़सेना की जाकेट पहने, अपने कंधे उचकाये और भौंहें चढ़ाये हुए इनसे कोई एक सौ क़दम के फ़ासले पर खड़ा था और सफ़ेद वर्दी-वाले आस्ट्रियायी अफ़सर को डांट-डपट रहा था जिसके चेहरे का रंग उड़ा हुआ था।

"यह तो बड़े ड्यूक हैं, लेकिन मुझे तो प्रधान सेनापति या सम्राट के पास जाना है," रोस्तोव ने कहा और अपने घोड़े को आगे बढ़ाना चाहा।

"काउंट, काउंट!" बोरीस की तरह ही बेहद ख़ुश बेर्ग दूसरी ओर से भागता और चिल्लाता हुआ आया। "काउंट, मेरा दायां हाथ घायल हो गया," (उसने रूमाल से बंधी और रक्त सनी कलाई दिखाते हुए कहा) "फिर भी मैं मोर्चे पर डटा रहा। काउंट, अब मैं बायें हाथ में तलवार सम्भालता हूं – हमारे बेर्गों के परिवार में सभी सूरमा थे।"

बेर्ग ने कुछ और भी कहा, मगर रोस्तोव उसकी पूरी बात सुने बिना ही आगे चला गया।

गार्ड-रेजिमेंटों और फिर ख़ाली मैदान को पीछे छोड़ने के बाद रोस्तोव इस विचार से कि फिर कहीं मोर्चे की अग्रिम सीमा पर न जा निकले, जैसा कि घुड़सैनिकों के हमले के समय हुआ था, वह उस

जगह के गिर्द बहुत बड़ा चक्कर लगाकर, जहां से बन्दूक़ें और तोपें चलने की सबसे ज़्यादा ऊंची आवाज़ आ रही थी, रिज़र्व सेनाओं के साथ-साथ आगे बढ़ चला। अचानक उसे अपने सामने और हमारी सेनाओं के पीछे ऐसी जगह पर, जहां उसने शत्रु के होने की किसी तरह भी आशा नहीं की थी, कहीं नज़दीक ही गोलियां चलती सुनायी दीं।

"यह क्या क़िस्सा हो सकता है?" रोस्तोव ने सोचा। "हमारी सेनाओं के पिछवाड़े में शत्रु? ऐसा नहीं हो सकता," रोस्तोव ने सोचा और सहसा स्वयं अपने लिये तथा पूरी लड़ाई के नतीजे के बारे में उसके मन पर दहशत छा गयी। "लेकिन यह बेशक कुछ भी क्यों न हो," उसने अपने आपसे कहा, "अब इसके गिर्द चक्कर काटकर जाने में कोई तुक नहीं। मुझे प्रधान सेनापति को यहीं ढूंढ़ना चाहिये और अगर सब कुछ ख़त्म हो गया है तो मुझे भी बाक़ी सब के साथ यहीं मर जाना चाहिये।"

रोस्तोव के मन में पैदा होनेवाली दुर्भाग्य की पूर्वभावना उसके प्रात्ज़ेन गांव के आगे के क्षेत्र में अधिकाधिक बढ़ते जाने पर, जहां तरह-तरह की सेनाओं की भीड़ थी, ज़्यादा से ज़्यादा पुष्ट होती चली गयी।

"यह क्या है? यह क्या हो रहा है? किसपर गोलियां चलायी जा रही हैं? कौन गोलियां चला रहा है?" रोस्तोव बौखलाये हुए तथा अपने क़रीब से भागे जाते रूसी तथा आस्ट्रियायी सैनिकों से पूछता रहा।

"शैतान ही जाने! सभी मारे गये! जहन्नुम में चला गया सब कुछ!" भागे जाते और रोस्तोव की भांति ही यह न समझ पाते हुए कि यहां क्या हो रहा है, ढेरों-ढेर सैनिकों ने उसे रूसी, जर्मन और चेकोस्लोवाक भाषा में जवाब दिये।

"इन जर्मनों को गोली मारनी चाहिये!" एक चिल्लाया।

"इनपर, इन ग़द्दारों पर शैतान की मार!"

"बेड़ा ग़र्क़ हो इन रूसियों का!.." कोई जर्मन बड़बड़ाया।

सड़क पर कुछ घायल चले जा रहे थे। गाली-गलौज, चीख़-चिल्लाहट और आहें-कराहें एक सामान्य कोलाहल बनती जा रही थीं। गोलियां चलने की आवाज़ कम होती जा रही थी और रोस्तोव को

बाद में यह पता चला कि रूसी और आस्ट्रियायी सैनिक एक-दूसरे पर गोलियां चला रहे थे।

"हे भगवान! यह क्या बकवास है?" रोस्तोव सोच रहा था। "और यह सब यहां हो रहा है जहां किसी भी क्षण सम्राट इन्हें ऐसा करते देख सकते हैं!.. लेकिन नहीं, निश्चय ही ये तो कुछ ही कमीने लोग हैं। यह सब ठीक हो जायेगा, यह असली चीज़ नहीं है, ऐसा नहीं हो सकता," वह सोच रहा था। "हां, पर मुझे जल्दी से जल्दी इनके पास से आगे निकल जाना चाहिये!"

हमारी पराजय हो जाने और हमारी सेनाओं के मैदान छोड़कर भागने का ख़्याल रोस्तोव के दिमाग़ में नहीं आ सकता था। बेशक उसने फ़्रांसीसी तोपों और फ़ौजों को वहीं, उसी प्रात्ज़ेन पहाड़ी पर देखा था, जहां उससे प्रधान सेनापति को खोजने के लिये कहा गया था, फिर भी इस बात पर विश्वास नहीं कर सकता था, विश्वास करना नहीं चाहता था।

१८

रोस्तोव को प्रात्ज़ेन गांव के आस-पास कुतूज़ोव और सम्राट को ढूंढ़ने के लिये कहा गया था। किन्तु यहां न केवल ये दोनों, बल्कि कोई भी बड़ा सेना-संचालक नहीं था। यहां तो तरह-तरह की अव्यवस्थित सेना की भीड़ ही थी। वह जल्दी से जल्दी इस भीड़ के पास से आगे निकल जाने के लिये अपने थके हुए घोड़े को दौड़ाता चला गया। किन्तु वह जितना अधिक आगे जाता था, सैनिकों की भीड़ अधिकाधिक बुरी हालत में नज़र आती थी। वह जिस बड़ी सड़क पर पहुंच गया था, वहां सभी तरह की घोड़ा-गाड़ियों और बग्घियों की भरमार थी, सभी तरह की रूसी और आस्ट्रियायी सेनाओं के घायल-अघायल सैनिकों का जमघट था। इस सबका भारी शोर हो रहा था और यह सभी कुछ प्रात्ज़ेन की पहाड़ी पर तैनात फ़्रांसीसी तोपख़ाने के गोले दाग़ने की मनहूस आवाज़ के साथ बुरी तरह से गड्डमड्ड हो जाता था।

"सम्राट कहां हैं? कुतूज़ोव कहां हैं?" रोस्तोव जिसे भी रोक

पाता, उसी से यह पूछता, मगर उसे किसी से भी जवाब नहीं मिला।

आख़िर उसने एक सैनिक को कालर से पकड़कर उसे जवाब देने के लिये मजबूर किया।

"अरे, भाई! वे सब तो बहुत पहले ही आगे भाग गये हैं!" सैनिक ने न जाने किस कारण हंसते और अपना कालर छुड़वाते हुए रोस्तोव को जवाब दिया।

इस फ़ौजी को छोड़कर, जो सम्भवत: नशे में था, रोस्तोव ने किसी महत्त्वपूर्ण व्यक्ति के अर्दली या सईस का घोड़ा रोका और उससे पूछ-ताछ करने लगा। इस व्यक्ति ने रोस्तोव को बताया कि एक घण्टा पहले बग्घी को तूफ़ान की तरह दौड़ाते हुए सम्राट को इसी सड़क पर से ले जाया गया था और वह बहुत बुरी तरह से घायल हो गये।

"यह नहीं हो सकता," रोस्तोव ने कहा, "ज़रूर कोई दूसरा होगा।"

"मैंने अपनी आंखों से देखा है," अर्दली ने आत्मविश्वासपूर्ण व्यंग्यात्मक मुस्कान के साथ जवाब दिया। "सम्राट को पहचानने में मुझसे भूल नहीं हो सकती – पीटर्सबर्ग में कितनी ही बार तो देख चुका हूं उन्हें। सम्राट के चेहरे का रंग एकदम उड़ा हुआ था। उनकी बग्घी के चारों घोड़े ऐसे धड़धड़ाते हुए पास से गुज़रे कि कुछ न पूछिये। मुझे तो शाही घोड़ों और उनके कोचवान इल्या इवानोविच को अब तक जान ही जाना चाहिये। इल्या तो सम्राट की बग्घी के सिवा किसी दूसरी बग्घी पर कोचवानी ही नहीं करता।"

रोस्तोव ने इसके घोड़े की लगाम छोड़ दी और आगे बढ़ना चाहा। इसी समय उसके पास से गुजर रहे एक घायल अफ़सर ने उससे पूछा:

"किसे ढूंढ़ रहे हैं आप? प्रधान सेनापति को? वह तो मारे गये, छाती में गोला लगा, हमारी रेजिमेंट के सामने ही ऐसा हुआ था।"

"मारे नहीं गये, घायल हो गये," दूसरे अफ़सर ने उसकी भूल सुधारी।

"कौन? कुतूज़ोव?" रोस्तोव ने जानना चाहा।

"कुतूज़ोव नहीं, क्या नाम है उनका – ख़ैर, इससे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता, बहुत कम लोग ही ज़िन्दा बचे हैं। आप उधर, उस गांव की तरफ़ चले जाइये, सभी बड़े सेना-संचालक वहां जमा हैं," इस अफ़सर

ने गोस्तियेरादक गांव की ओर संकेत किया और आगे बढ़ गया।

रोस्तोव यह न जानते हुए कि अब वह किसलिये और किसके पास जाये, अपने घोड़े को क़दम-क़दम चला रहा था। सम्राट घायल हो गये, लड़ाई में हार हो गयी। अब इस बात पर विश्वास न करना सम्भव नहीं था। रोस्तोव को जिधर जाने को कहा गया था, वह उधर ही जा रहा था और वहां दूरी पर उसे मीनार और गिरजाघर नज़र आ रहा था। अब उसके जल्दी करने में क्या तुक है? अगर सम्राट या कुतूज़ोव ज़िन्दा और घायल भी न हों तो भी वह अब उनसे क्या पूछ सकता है?

"हुज़ूर, इस रास्ते से जाइये, उस रास्ते पर तो आप मारे जायेंगे," एक फ़ौजी ने चिल्लाकर कहा। "उस रास्ते पर मारे जायेंगे!"

"अरे, क्या कह रहे हो तुम?" दूसरा सैनिक बोला। "वहां, कहां जायेंगे? यहां से नज़दीक है।"

रोस्तोव असमंजस में पड़ गया और फिर उसी रास्ते पर बढ़ चला जहां, यह कहा गया था, कि वह मारा जायेगा।

"अब किसी चीज़ से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ेगा! अगर सम्राट ही घायल हो गये तो मैं किसलिये अपनी जान की फ़िक्र करूं?" वह सोच रहा था। वह उस मैदान में पहुंच गया था जहां प्रात्ज़ेन गांव से भागनेवाले अधिकतर लोग मारे गये थे। फ़्रांसीसियों ने अभी तक इस मैदान पर क़ब्ज़ा नहीं किया था और रूसी, जो ज़िन्दा या ज़ख़्मी थे, यहां से कभी के जा चुके थे। हर हेक्टर में फ़सल की टालों की भांति दस-पन्द्रह घायलों या मुर्दों के ढेर लगे थे। दो-दो, तीन-तीन घायल साथ-साथ रेंग रहे थे और उनकी दिल को परेशान करनेवाली चीख़ें और आहें-कराहें सुनायी दे रही थीं जो रोस्तोव को कभी-कभी ढोंगपूर्ण भी प्रतीत होती थीं। रोस्तोव अपने घोड़े को दुलकी चाल से दौड़ाने लगा, ताकि यातना सहते इन सभी लोगों को न देखे। उसे दहशत महसूस होने लगी। उसे अपनी ज़िन्दगी का नहीं, बल्कि इस बात का डर था कि अपने भीतर वह उस साहस को नहीं बटोर पायेगा जिसकी उसे ज़रूरत थी और जिसे, जैसा कि वह जानता था, इन क़िस्मत के मारों को देखकर बनाये नहीं रख पायेगा।

फ़्रांसीसियों ने जहां-तहां पड़े मुर्दों और घायलोंवाले इस मैदान पर गोलाबारी बन्द कर दी थी, क्योंकि वहां निशाना बनाने के लिये

कोई व्यक्ति बाक़ी नहीं रह गया था। अब घोड़े पर सवार एक एडजुटेंट को देखकर उन्होंने अपनी एक तोप का मुंह उसकी ओर किया और कुछ गोले बरसाये। इन सनसनाते गोलों की भयानक आवाज़ों और इर्द-गिर्द पड़े मृतकों के कारण रोस्तोव ने अपने मन में संत्रास और साथ ही अपने प्रति दुख की मिली-जुली भावना अनुभव की। उसे अपनी मां का अन्तिम पत्र याद हो आया। "अगर वह मुझे यहां, इस मैदान में और मेरी ओर लक्षित तोप को देखतीं तो क्या अनुभव करतीं," वह सोच रहा था।

लड़ाई के मैदान से गोस्तियेरादक गांव में लौट रही रूसी फ़ौजों में अव्यवस्था तो थी, मगर बहुत ज़्यादा नहीं। फ़्रांसीसियों के गोले यहां तक नहीं पहुंचते थे और गोलियों की आवाज़ें कहीं दूर प्रतीत होती थीं। यहां सभी स्पष्ट रूप से यह देख और कह भी रहे थे कि लड़ाई में हमारी हार हो चुकी है। रोस्तोव ने जितने भी लोगों से पूछा, उनमें से कोई भी यह नहीं बता सका कि सम्राट या कुतूज़ोव कहां हैं। कुछ का कहना था कि सम्राट के घायल होने की ख़बर सही थी, जबकि दूसरे इसका खण्डन करते हुए सभी जगह फैली इस झूठी अफ़वाह का यह स्पष्टीकरण देते थे कि वास्तव में सम्राट की बग्घी में ग्रैंड मार्शल, काउंट तोलस्तोय युद्ध-क्षेत्र से लौटा था जहां वह सम्राट के अमले के अन्य लोगों के साथ गया था। वहां से लौटते समय वह बेहद डरा हुआ था तथा उसका चेहरा पीला-ज़र्द था। किसी फ़ौजी अफ़सर ने रोस्तोव को बताया कि गांव के पीछे बायीं ओर उसने कुछ बड़े सेना-संचालकों को देखा है और रोस्तोव यह आशा न करते हुए कि कोई उसे वहां मिलेगा, केवल ईमानदारी से अपना कर्त्तव्य पूरा करने के लिये ही अपना घोड़ा उधर बढ़ा ले चला। कोई साढ़े तीन कि-लोमीटर तक जाने और अन्तिम रूसी सेना को पीछे छोड़ने पर उसने साग-सब्ज़ियों के एक बगीचे के पास, जिसके चारों ओर खाई थी, दो घुड़सवारों को खाई के सामने खड़े देखा। उनमें से एक, जिसके टोप पर सफ़ेद कलगी लगी थी, रोस्तोव को किसी कारण परिचित प्रतीत हुआ। दूसरा अपरिचित व्यक्ति बढ़िया लाखी घोड़े (रोस्तोव को यह घोड़ा जाना-पहचाना लगा) पर सवार व्यक्ति अपने घोड़े को खाई के पास बढ़ा ले गया, उसने उसे एड़ लगायी, लगामें ढीली छोड़ीं और बड़ी आसानी से बगीचे की खाई को लांघ गया। घोड़े

के पिछले सुमों से केवल कुछ मिट्टी ही खाई के सिरे से खाई में गिर गयी। तेज़ी से घोड़ा मोड़कर वह उसे फिर से खाई के पार ले गया और उसने बहुत आदरपूर्वक सफ़ेद कलगीवाले घुड़सवार को सम्बोधित किया। सम्भवतः उसने उससे भी ऐसा ही करने का सुझाव दिया था। कलगीवाले घुड़सवार ने, जिसकी आकृति रोस्तोव को पहचानी-सी लगी और जो न जाने क्यों, बरबस उसका ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर रही थी, सिर और हाथ हिलाकर इन्कार किया। उसके हाथ हिलाने के इस ढंग से रोस्तोव ने फ़ौरन अपने उस आराध्य सम्राट को पहचान लिया जिसके लिये वह शोकग्रस्त हुआ था।

"लेकिन यह तो सम्राट नहीं हो सकते, इस सुनसान मैदान में सर्वथा एकाकी," रोस्तोव ने सोचा। इसी क्षण सम्राट अलेक्सान्द्र ने अपना सिर दूसरी ओर किया और रोस्तोव ने अपने स्मृति-पट पर इतनी सजीवता से अंकित हो गये प्यारे नाक-नक़्शे को देखा। सम्राट का चेहरा पीला था, उनके गाल धंस गये थे और आंखों के नीचे घेरे पड़ गये थे, किन्तु इससे उनके नाक-नक़्शे की सुन्दरता और कोमलता में वृद्धि हो गयी थी। इस बात का विश्वास हो जाने पर कि सम्राट के घायल होने का समाचार सही नहीं था, रोस्तोव को बहुत ख़ुशी हुई। उसे इस बात की भी प्रसन्नता थी कि उसने उन्हें देखा। उसे मालूम था कि वह सम्राट से बात कर सकता था, इतना ही नहीं, उसे उनसे बात करनी और वह कहना चाहिये था जिसे कहने का दोल्गोरूकोव ने उसे आदेश दिया था।

किन्तु जिस प्रकार कोई प्रेम-दीवाना तरुण मनवांछित क्षण आने और अपने दिल की रानी के साथ एकाकी होने पर कांपने लगता है और उसके हाथ-पांव फूल जाते हैं, उन सपनों को मुंह पर लाने की हिम्मत नहीं कर पाता जो रातों को मन में संजोता रहा था, कोई सहारा या बात को टालने अथवा वहां से खिसक जाने का अवसर ढूंढ़ता है, उसी प्रकार रोस्तोव अब वह प्राप्त कर लेने पर जो दुनिया में सबसे अधिक चाहता था, यह नहीं समझ पा रहा था कि कैसे सम्राट के पास जाये। उसके दिमाग़ में तरह-तरह के हज़ारों ऐसे ख़्याल आ रहे थे कि क्यों उसके लिये ऐसा करना अच्छा, उचित और सम्भव नहीं है।

"ऐसा क्यों है! लगता है कि मानो ऐसे अवसर से लाभ उठाकर

मुझे खुशी होगी, जब वह अकेले और दुख में डूबे हुए हैं। लेकिन दुख के इस क्षण में उन्हें अपरिचित चेहरा अप्रिय और परेशान करनेवाला प्रतीत हो सकता है। इसके अलावा मैं अब उनसे कह ही क्या सकता हूं, जब उन्हें देखने भर से मेरा दिल बैठा जाता है और गला सूखा जाता है?" उन असंख्य भाषणों में से, जो सम्राट को सम्बोधित करते हुए उसने अपनी कल्पना में तैयार किये थे, अब एक भी उसके मस्तिष्क में नहीं आ रहा था। उनमें से अधिकतर भाषण दूसरी ही परिस्थितियों के लिये थे, उनमें से अधिकांश विजय और सफलता के क्षणों में, मुख्यतः घातक घावों के कारण मृत्यु-शय्या पर पड़े हुए उस समय ही कहे जानेवाले थे, जब सम्राट उसकी वीरता के लिये उसे धन्यवाद देते और वह अन्तिम सांसें लेते हुए सम्राट के प्रति अपने उस प्यार को अभिव्यक्ति देता जिसे उसने व्यावहारिक रूप से प्रमाणित कर दिया था।

"इसके अलावा मैं सेना के दायें बाजू के बारे में सम्राट से अनुदेश देने की भी क्या चर्चा करूंगा, जब दिन के चार बजने पर अब लड़ाई हारी भी जा चुकी है? नहीं, मुझे हरगिज़ उनके पास नहीं जाना चाहिये, उनके ख़्यालों में ख़लल नहीं डालना चाहिये। वह मुझे ग़ुस्से की नज़र से देखें या मेरे बारे में कोई बुरी राय बनायें, इससे तो मर जाना कहीं बेहतर होगा," रोस्तोव ने तय किया और दुखी तथा भारी मन से अभी तक असमंजस की पहले जैसी स्थिति में खड़े सम्राट की ओर लगातार देखते हुए अपने घोड़े को आगे बढ़ा ले चला।

इसी समय, जब रोस्तोव यह सब सोच-विचार रहा था और दुखी मन से सम्राट के पास से दूर जा रहा था, कप्तान वॉन टोल संयोग से अपने घोड़े पर यहीं आ गया। सम्राट को देखकर वह सीधा उनके पास गया, उसने अपने को उनकी सेवा में पेश किया और पैदल खाई पार करने में उनकी सहायता की। सम्राट अपने को अस्वस्थ अनुभव करते हुए और विश्राम की इच्छा से सेब के पेड़ के नीचे बैठ गये और वॉन टोल उनके पास खड़ा हो गया। रोस्तोव ने ईर्ष्या और पश्चाताप अनुभव करते हुए दूर से देखा कि कैसे वॉन टोल बड़े जोश से देर तक सम्राट से कुछ कहता रहा और कैसे सम्राट ने सम्भवतः रोते हुए एक हाथ से अपनी आंखों को छिपा लिया और दूसरे हाथ से टोल का हाथ दबाया।

"उसकी जगह पर मैं भी हो सकता था!" रोस्तोव ने मन ही मन सोचा और सम्राट के भाग्य के बारे में बड़ी मुश्किल से अपने आंसुओं को रोकते हुए बिल्कुल हताश-सा होकर तथा यह न जानते हुए कि अब वह किधर और किसलिये जा रहा है, आगे चल दिया।

उसकी हताशा इस कारण और भी अधिक थी कि वह यह अनुभव कर रहा था कि उसकी कमज़ोरी ही इस दुख का कारण है।

वह ऐसा कर सकता था... केवल ऐसा कर ही नहीं सकता था, बल्कि उसे सम्राट के पास जाना ही चाहिये था। यही तो सम्राट के प्रति निष्ठा प्रकट करने की एकमात्र सम्भावना थी। और उसने उसका फ़ायदा नहीं उठाया... "यह क्या किया मैंने?" वह सोच रहा था। उसने अपना घोड़ा मोड़ा तथा उसे उसी जगह पर दौड़ा ले गया जहां सम्राट को देखा था। किन्तु खाई के उस पार अब कोई नहीं था। केवल घोड़ा-गाड़ियां और बग्घियां ही चली जा रही थीं। एक गाड़ीवान से उसे पता चला कि कुतूज़ोव का मुख्य सैनिक कार्यालय निकट, उस गांव में ही है जिधर घोड़ा-गाड़ियां जा रही थीं। रोस्तोव इन्हीं के पीछे अपना घोड़ा बढ़ाने लगा।

उसके आगे कुतूज़ोव का सईस घोड़ों पर ओहार डाले हुए उन्हें ले जा रहा था। सईस के पीछे एक घोड़ा-गाड़ी थी और घोड़ा-गाड़ी के पीछे नुकीली टोपी तथा समूर का छोटा कोट पहने और टेढ़ी-मेढ़ी टांगोंवाला एक बूढ़ा भूदास चल रहा था।

"तीत, अरे, ओ तीत!" सईस ने कहा।

"क्या है?" बूढ़े ने बेख़्याली से पूछा।

"तीत! जाकर अनाज पीट।"

"छि, उल्लू कहीं का!" बुड्ढे ने ग़ुस्से से थूककर कहा। कुछ मिनट तक ये लोग चुपचाप चलते रहे और फिर से यही मज़ाक़ दोहराया गया।

शाम के पांच बजने के बहुत पहले ही सभी जगहों पर हमारी सेनायें लड़ाई हार चुकी थीं। सौ से अधिक तोपें फ़्रांसीसियों के क़ब्ज़े में आ गयी थीं।

प्रजेबिशेव्स्की ने अपनी सेना के साथ हथियार डाल दिये थे। दूसरे सेना-दल लगभग अपने आधे सैनिक गंवाकर बड़े अव्यवस्थित ढंग

से भीड़ के रूप में वापस लौट रहे थे।

लांजेरोन और दोख़्तुरोव की सेनाओं के बचे-बचाये सैनिक औगेस्त गांव के पास पोखरों के नज़दीक बांधों और तटों पर घिचपिच हो रहे थे।

पांच बजने के बाद औगेस्त गांव के बांध के नज़दीक केवल फ़्रांसीसियों के गोलों की ही ज़ोरदार धांय-धांय सुनायी दे रही थी जिन्होंने प्रात्ज़ेन पहाड़ी की ढाल पर अपनी अनेक तोपें तैनात कर दी थीं और वे हमारी पीछे हटती सेनाओं पर गोले बरसा रही थीं।

चण्डावल में दोख़्तुरोव और दूसरे सेना-संचालक अपनी बटालियनों को एकत्रित करके हमारी सेनाओं का पीछा कर रही फ़्रांसीसी घुड़सेना की गोलियां का जवाब देते जा रहे थे। झुटपुटा होने लगा था। औगेस्त गांव के संकरे बांध पर, जहां फुंदनेवाली टोपी पहने पनचक्की का बूढ़ा मालिक मछलियां पकड़ने के लिये पानी में बंसी डालकर बरसों तक बड़े इतमीनान से बैठा रहा करता था, जबकि उसका पोता अपनी आस्तीनें ऊपर चढ़ाकर तथा जलपात्र में हाथ डालकर छटपटाती रुपहली मछलियों को छूता रहता था, इसी बांध पर, जहां झबरीली टोपियां तथा नीली जाकेटें पहने मोराविया जाति के लोग अनेक सालों तक शान्तिपूर्ण ढंग से दो घोड़ोंवाली गाड़ियों में गेहूं लादकर लाते रहे थे और पिसे आटे से सनी अपनी सफ़ेद हो गयी गाड़ियों को वापस लेकर जाते रहे थे – इसी संकरे बांध पर अब घोड़ा-गाड़ियों तथा तोपों के बीच, घोड़ों के नीचे और पहियों के बीच मौत के भय से विकृत चेहरोंवाले लोग रेल-पेल कर रहे थे, एक-दूसरे को कुचलते थे, मरते थे, लाशों को रौंदते और एक-दूसरे की हत्या करते हुए केवल इसीलिये आगे बढ़ते थे कि कुछ क़दम तक जाने के बाद ख़ुद भी ठीक इसी तरह से मौत के मुंह में चले जायें।

हर दस सेकण्ड में हवा को चीरता हुआ तोप-गोला या कोई दूसरा गोला इस घनी भीड़ के बीच गिरता, किसी की जान लेता और मरनेवाले के पास खड़े लोगों को उसके लहू से लथपथ कर देता। दोलोख़ोव, जिसका हाथ घायल था और जो अपने दसेक सैनिकों के साथ (वह अफ़सर बन चुका था) पैदल चल रहा था तथा घोड़े पर सवार रेजिमेंट-कमांडर ही इस रेजिमेंट में ज़िन्दा बचनेवाले लोग थे। भीड़ के रेले के दबाव से ये बांध के नज़दीक पहुंच गये थे, सभी ओर से भीड़ के बीच भिंचे हुए रुक गये थे क्योंकि आगे घोड़ा-गाड़ी का एक घोड़ा गिरकर

मर गया था और लोग उसे घसीटकर रास्ते से हटा रहे थे। एक गोले ने दोलोख़ोव और उसके सैनिकों के पीछे तथा दूसरे ने उनके आगे किसी की जान ले ली और दोलोख़ोव पर उसके ख़ून के छींटे पड़ गये। भीड़ ने बुरी तरह घबराकर आगे बढ़ने की कोशिश की, और अधिक सिमट-सिकुड़ गयी, कुछ क़दम आगे बढ़ी और फिर रुक गयी।

"अगर मैं यह सौ क़दम आगे बढ़ गया तो सम्भवतः बच जाऊंगा और अगर दो मिनट तक यहीं रुका रहा तो सम्भवतः मारा जाऊंगा," हर कोई ऐसा ही सोच रहा था।

भीड़ के बीच में खड़ा दोलोख़ोव पूरा ज़ोर लगाकर बांध के सिरे की तरफ़ बढ़ा, उसने दो सैनिकों को गिरा दिया और पोखर पर जमी हुई फिसलती बर्फ़ पर भाग गया।

"इधर आ जाओ!" वह अपने नीचे चटकती बर्फ़ पर कूदते हुए चिल्लाया, "इधर आ जाओ!" उसने चिल्लाकर तोप ले जा रहे तोपचियों से कहा। "बर्फ़ पक्की है!.."

बर्फ़ उसका बोझ सहन कर रही थी, किन्तु धसक और चटक रही थी और यह स्पष्ट था कि तोप तथा लोगों की भीड़ की बात तो दूर, अकेले उसी के नीचे वह जल्द ही टूट जायेगी। लोग उसे देख तथा तट के निकट सट रहे थे, मगर अभी तक बर्फ़ पर बढ़ने की हिम्मत नहीं कर पा रहे थे। बांध के प्रवेश-मार्ग के पास घोड़े पर सवार रेजिमेंट-कमांडर ने हाथ ऊपर उठाया और दोलोख़ोव से कुछ कहने के लिये मुंह खोला। अचानक एक गोला इतनी कम ऊंचाई पर भीड़ के ऊपर सनसनाया कि सभी लोग झुक गये। गीली जगह पर गोले के छपाक से गिरने की आवाज़ हुई और जनरल घोड़े से ख़ून के डबरे में जा गिरा। जनरल को उठाने की बात तो दूर, किसी ने उसकी तरफ़ देखा तक नहीं।

"बढ़ो बर्फ़ पर! चलो बर्फ़ पर! चलो! मुड़ो! क्या बहरे हो गये! बढ़ो!" जनरल को लगनेवाले गोले के बाद अचानक बेशुमार लोगों की आवाज़ें सुनायी दीं, जो ख़ुद यह नहीं जानते थे कि क्यों और किसलिये चीख़-चिल्ला रहे हैं।

बांध पर पहुंच गयी पीछे की एक तोप-गाड़ी बर्फ़ की ओर मुड़ गयी। बांध से सैनिकों की भीड़ जमे हुए पोखर की तरफ़ दौड़ने लगी। आगे के सैनिकों में से एक के पैरों तले बर्फ़ चटक गयी और उसका

एक पांव पानी में चला गया। उसने अपने को सम्भालने की कोशिश की, मगर कमर तक पानी में पहुंच गया। उसके पासवाले सैनिक असमंजस में पड़ गये, तोप-गाड़ीवाले ने अपने घोड़े को रोका, किन्तु पीछे से अभी तक आवाज़ें सुनायी दे रही थीं: "बढ़ो बर्फ़ पर, रुक क्यों गये? चलो! चलो!" और भीड़ में भय की चीख़ें सुनायी दीं। तोप-गाड़ी को घेरे हुए सैनिक घोड़ों के ऊपर अपनी बन्दूक़ें लहरा और उन्हें पीट रहे थे, ताकि वे मुड़ें और आगे बढ़ें। घोड़े बर्फ़ पर बढ़ चले। प्यादा सैनिकों का बोझ सहन करनेवाली बर्फ़ एक बड़े खण्ड के रूप में टूट गयी और बर्फ़ पर खड़े चालीस व्यक्ति एक-दूसरे को डुबोते हुए कुछ आगे तथा कुछ पीछे की ओर लपके।

तोपों के गोले लयबद्ध ढंग से सनसनाते चले आ रहे थे और बर्फ़ पर, पानी में तथा अधिकतर तो बांध, पोखरों और तट पर जमा भीड़ के बीच गिरते थे।

१६

प्रिंस अन्द्रेई बोल्कोन्स्की प्रात्ज़ेन पहाड़ी पर उसी जगह पड़ा हुआ था, जहां वह झण्डे का डंडा हाथों में लिये हुए गिरा था। उसका ख़ून बह रहा था और ख़ुद भी यह न जानते हुए वह धीमे-धीमे, दयनीय ढंग से और बालक की तरह कराह रहा था।

शाम होते-होते उसने कराहना बन्द कर दिया और एकदम शान्त हो गया। उसे मालूम नहीं था कि उसकी यह बेहोशी कितनी देर तक बनी रही। अचानक उसने अपने को फिर से ज़िन्दा और यह महसूस किया कि बहुत तेज़ और जानलेवा सिर के दर्द से उसका बहुत बुरा हाल हो रहा है।

"वह ऊंचा आकाश कहां है जिससे मैं आज तक अपरिचित था और जिसे मैंने आज ही देखा था?" उसके दिमाग़ में सबसे पहले यही ख़्याल आया। "और मैं इस पीड़ा से भी अनजान था," उसने सोचा। "हां, अब तक मुझे कुछ भी, कुछ भी मालूम नहीं था। लेकिन मैं हूं कहां?"

उसे कुछ भनक मिली, वह कान लगाकर सुनने लगा और उसे नज़दीक आते घोड़ों की टापें और फ़्रांसीसी में बातें करते हुए लोगों की आवाज़ें सुनायी दीं। उसने आंखें खोलीं। उसके ऊपर फिर से ऊंचा आकाश था जिसमें तैरते हुए बादल और भी अधिक ऊंचाई पर चले गये थे तथा उनके बीच असीम नीलिमा की झलक मिल रही थी। प्रिंस अन्द्रेई ने अपना सिर नहीं घुमाया और उन्हें नहीं देखा जो घोड़ों की टापों और बातचीत की आवाज़ों के अनुसार उसके क़रीब ही आकर रुक गये थे।

नेपोलियन और उसके दो एडजुटेंट ही घोड़ों पर उसके नज़दीक आये थे। रणक्षेत्र का चक्कर लगाते हुए नेपोलियन ने औगेस्त बांध पर गोलाबारी को और ज़्यादा तेज़ करने का आदेश दिया और अब वह रणक्षेत्र में पड़े घायलों और मृतकों का निरीक्षण कर रहा था।

"बहादुर लोग हैं!" नेपोलियन ने एक मृत रूसी ग्रेनेडियर को देखते हुए कहा जो औंधे मुंह पड़ा था, जिसका मुंह ज़मीन में धंसा हुआ था, गुद्दी काली हो गयी थी और आगे को फैला निर्जीव हाथ अकड़कर रह गया था।

"बड़े हुज़ूर, तोप के गोले ख़त्म हो गये हैं!" औगेस्त गांव पर गोलाबारी करनेवाले तोपख़ाने से इसी समय लौटे एडजुटेंट ने सूचना दी।

"रिजर्व से लाने को कह दीजिये," नेपोलियन ने जवाब दिया और कुछ क़दमों तक घोड़ा बढ़ाने के बाद प्रिंस अन्द्रेई के पास रुका जो झण्डे के डंडे के निकट (झण्डा तो विजय-पुरस्कार के रूप में फ़्रांसीसी ले जा चुके थे) चित पड़ा था।

"यह है शानदार मौत," नेपोलियन ने बोल्कोन्स्की को देखते हुए कहा।

प्रिंस अन्द्रेई यह समझ गया कि उक्त शब्द उसके बारे में कहे गये हैं और उन्हें नेपोलियन ने कहा है। उसने इन शब्दों के कहनेवाले को "बड़े हुज़ूर" कहते सुना था। किन्तु मक्खी की भनभनाहट की तरह ही उसे ये शब्द सुनायी दिये थे। प्रिंस अन्द्रेई ने इन शब्दों में न केवल कोई दिलचस्पी ही नहीं ली, बल्कि इनकी तरफ़ कोई ध्यान भी नहीं दिया और इन्हें फ़ौरन भूल गया। दर्द से उसका सिर फटा जा रहा था। वह अनुभव कर रहा था कि उसका रक्त बहता जा रहा

है और उसे बहुत दूर, बहुत ऊंचा तथा शाश्वत आकाश दिखायी दे रहा था। उसे मालूम था कि यह उसका हीरो नेपोलियन था, किन्तु इस समय उसकी आत्मा और ऊंचे तथा असीम आकाश के बीच, जिसपर बादल दौड़ रहे थे, जो कुछ हो रहा था, उसकी तुलना में उसे नेपोलियन बहुत ही छोटा और तुच्छ व्यक्ति प्रतीत हुआ। इस क्षण उसके लिये यह सर्वथा महत्त्वहीन था कि कौन उसके पास आकर खड़ा होता है और उसके बारे में क्या कहता है। उसे तो केवल इस बात की ख़ुशी थी कि लोग उसके पास खड़े थे और वह सिर्फ़ इतना ही चाहता था कि वे उसकी मदद करें और उसे उसकी ज़िन्दगी लौटा दें जो उसे इतनी सुन्दर लग रही थी क्योंकि अब वह उसे दूसरे ही ढंग से समझने लगा था। उसने थोड़ा हिलने-डुलने और मुंह से किसी तरह की ध्वनि निकालने के लिये अपनी सारी शक्ति बटोरी। उसने धीरे से टांग हिलायी और ऐसे क्षीण तथा कारुणिक ढंग से कराहा कि उसे अपने पर तरस आ गया।

"अरे! यह तो ज़िन्दा है," नेपोलियन ने कहा। "इस नौजवान को मरहम-पट्टी की चौकी पर भिजवा दीजिये!"

इतना कहकर नेपोलियन मार्शल लान्न की तरफ़ अपना घोड़ा बढ़ा ले चला जो अपनी टोपी उतारे, मुस्कराते और विजय की बधाई देते हुए सम्राट की ओर आ रहा था।

इसके बाद प्रिंस अन्द्रेई को किसी बात की सुध न रही। स्ट्रेचर पर लिटाये जाने, ले जाते समय झटके लगने और मरहम-पट्टी की चौकी पर घावों के छुए जाने के कारण होनेवाले भयानक दर्द से वह बेहोश हो गया। दिन ढलने के वक़्त उसे तभी होश आया जब अन्य घायल, बन्दी रूसी अफ़सरों के साथ उसे भी अस्पताल भेजा गया। अस्पताल ले जाये जाने के समय उसने अपने को कुछ स्वस्थ अनुभव किया और वह इधर-उधर देख तथा बातचीत भी कर सकता था।

होश आने पर उसे सबसे पहले बन्दी-दल के साथ जानेवाले फ़्रांसीसी अफ़सर के शब्द सुनायी दिये जो जल्दी-जल्दी यह कह रहा था:

"हमें यहां रुकना चाहिये। सम्राट अभी यहां से गुज़रेंगे, उन्हें इन बन्दी महानुभावों को देखकर प्रसन्नता होगी।"

"आज तो इतने अधिक बन्दी हैं, लगभग पूरी रूसी सेना ही – कि सम्भवतः इन्हें देख-देखकर सम्राट का मन ऊब गया होगा," दूसरे

अफ़सर ने राय ज़ाहिर की।

"फिर भी! कहते हैं कि यह तो सम्राट अलेक्सान्द्र की पूरी गार्ड-घुड़सेना का कमांडर था," पहले फ़्रांसीसी अफ़सर ने रूसी गार्ड-घुड़सेना की सफ़ेद वर्दी पहने घायल रूसी अफ़सर की तरफ़ इशारा करते हुए कहा।

बोल्कोन्स्की ने प्रिंस रेपनिन को पहचान लिया जिसके साथ पीटर्सबर्ग की ऊंची सोसाइटी में उसकी मुलाक़ात हो चुकी थी। उसकी बग़ल में उन्नीस साल का एक छोकरा खड़ा था। वह भी गार्ड-घुड़सेना का घायल अफ़सर था।

बोनापार्ट अपने घोड़े को सरपट दौड़ाता हुआ आया और उसे इनके पास रोका।

"इनमें कौन सबसे बड़ा अफ़सर है?" उसने बन्दियों को देखकर पूछा।

जवाब में कर्नल, प्रिंस रेपनिन का नाम बताया गया।

"आप सम्राट अलेक्सान्द्र की गार्ड-घुड़सेना के रेजिमेंट-कमांडर हैं?" नेपोलियन ने प्रश्न किया।

"मैं स्कवाड्रन-कमांडर था," रेपनिन ने उत्तर दिया।

"आपकी रेजिमेंट ने बड़ी ईमानदारी से अपना कर्त्तव्य पूरा किया," नेपोलियन ने कहा।

"महान सेनापति की प्रशंसा सैनिक के लिये सबसे बड़ा पुरस्कार है," रेपनिन ने जवाब दिया।

"मैं ख़ुशी से आपको यह पुरस्कार देता हूं," नेपोलियन ने कहा। "आपकी बग़ल में यह नौजवान कौन है?"

प्रिंस रेपनिन ने बताया कि वह लेफ़्टिनेंट सुख़तेलेन है।

उसे ग़ौर से देखकर नेपोलियन ने मुस्कराते हुए कह उठा:

"हमसे लोहा लेने के लिये अभी यह बहुत जवान है।"

"जवानी बहादुर होने में बाधा नहीं डालती," सुख़तेलेन ने रुंधती आवाज़ में उत्तर दिया।

"बहुत बढ़िया जवाब है," नेपोलियन ने कहा, "नौजवान, तुम बहुत उन्नति करोगे!"

युद्ध-बन्दियों की प्रदर्शन-सूची पूरी करने के लिये सम्राट के सामने पेश किया गया प्रिंस अन्द्रेई बोल्कोन्स्की उसका ध्यान आकर्षित किये

बिना नहीं रह सकता था। नेपोलियन को सम्भवतः यह याद हो आया कि उसने उसे युद्ध-क्षेत्र में देखा था और उसे सम्बोधित करते हुए उसने उसी "नौजवान" सम्बोधन का उपयोग किया जो बोल्कोन्स्की को पहली बार देखने पर उसके स्मृति-पट पर अंकित हो गया था।

"और आप नौजवान?" उसने प्रिंस अन्द्रेई को सम्बोधित किया। "आपकी तबीयत कैसी है, मेरे सूरमा?"

इस चीज़ के बावजूद कि पांच मिनट पहले प्रिंस अन्द्रेई ने अपने को स्ट्रेचर पर उठाकर ले जानेवाले सैनिकों से कुछ शब्द कहे थे, अब नेपोलियन पर अपनी नज़र टिकाये हुए वह ख़ामोश था... इस क्षण उस ऊंचे, न्यायपूर्ण और दयालु आकाश की तुलना में, जिसे उसने देख और समझ लिया था, उसे नेपोलियन की ये सभी दिलचस्पियां, यह ओछा घमण्ड और विजय की ख़ुशी से फूला न समाता हुआ अपना हीरो भी इतना तुच्छ प्रतीत हुआ कि वह उसे कोई जवाब न दे पाया।

वास्तव में ही उस कठोर और उच्च विचार-शृंखला की तुलना में, जिसने रक्त-स्राव के कारण उसके शक्ति-क्षय, पीड़ा-यातना और मृत्यु की निकटता की चेतना के फलस्वरूप उसके मन में जन्म लिया था, उसे सब कुछ व्यर्थ और तुच्छ लग रहा था। नेपोलियन को एकटक देखते हुए प्रिंस अन्द्रेई महानता की निस्सारता, जीवन की निस्सारता, जिसके महत्त्व को कोई नहीं समझ पाया था और इससे भी अधिक मृत्यु की निस्सारता के बारे में सोच रहा था जिसका अर्थ समझने और स्पष्ट करने में सभी जीवित असमर्थ थे।

उत्तर की व्यर्थ प्रतीक्षा करने के बाद सम्राट ने मुंह फेर लिया और घोड़े को आगे बढ़ाते हुए एक अफ़सर से कहा:

"इन महानुभावों की अच्छी तरह से देख-भाल की जाये और इन्हें मेरे पड़ाव में ले जाया जाये। मेरे डाक्टर लार्रे से इनके घावों की चिकित्सा करने को कह दीजिये। फिर मिलेंगे, प्रिंस रेपनिन," और वह घोड़े को सरपट दौड़ाता हुआ आगे चला गया।

नेपोलियन के चेहरे पर प्रसन्नता और आत्म-तुष्टि की चमक दिखायी दे रही थी।

प्रिंस अन्द्रेई को उठाकर ले जानेवाले सैनिकों ने उसके गले से वह स्वर्ण देव-प्रतिमा उतार ली थी जो प्रिंसेस मरीया ने भाई के गले

में पहनायी थी। बन्दियों के साथ सम्राट का ऐसा स्नेहपूर्ण व्यवहार देखकर उन्होंने झटपट उसे लौटा दिया।

प्रिंस अन्द्रेई यह नहीं देख पाया कि किसने और कैसे यह देव-प्रतिमा उसे पहना दी, किन्तु वर्दी के ऊपर उसकी छाती पर अचानक सोने की पतली ज़ंजीर में यह देव-प्रतिमा फिर से प्रकट हो गयी।

"कितना अच्छा होता," प्रिंस अन्द्रेई ने इस देव-प्रतिमा की ओर देखते हुए सोचा जिसे अत्यधिक भाव-विभोर होकर तथा श्रद्धापूर्वक उसकी बहन ने उसके गले में पहनाया था, "कितना अच्छा होता, अगर सभी कुछ इतना स्पष्ट और सीधा-सादा होता जितना वह प्रिंसेस मरीया को लगता है। यह जानना कितना अच्छा होता कि इस जीवन में हम कहां सहायता पाने की आशा करें और इसके बाद, क़ब्र के पीछे हम किस चीज़ की उम्मीद कर सकते हैं! यदि मैं इस समय यह कह सकता – हे भगवान, मुझपर दया करो!.. तो मैंने कितनी प्रसन्नता और शान्ति अनुभव की होती। किन्तु किसे कहूं मैं यह? उस अस्पष्ट और अबोधगम्य शक्ति से जिसे मैं न केवल सम्बोधित ही नहीं कर सकता, बल्कि शब्दों में व्यक्त करने में भी असमर्थ हूं – जो सर्व-शक्तिमान है या कुछ भी नहीं," – वह अपने आपसे कह रहा था, "या फिर उस भगवान से कहूं जो प्रिंसेस मरीया ने इस तावीज़ में सी दिया है? जो कुछ मेरे लिये बोधगम्य है, उसकी निस्सारता और जो कुछ अबोधगम्य, किन्तु सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है, उसकी महिमा-गरिमा के अतिरिक्त कुछ भी सत्य नहीं है!"

स्ट्रेचर ले जानेवाले आगे चल दिये। हर झटके-धचके से प्रिंस अन्द्रेई को असह्य पीड़ा होती थी, उसका बुख़ार तेज़ हो गया और वह सरसाम की हालत में बहकने लगा। लड़ाई के पहले की रात को पिता, पत्नी, बहन और भावी बेटे के बारे में अनुभूत स्नेह-प्यार, तुच्छ नेपोलियन और इन सबके ऊपर ऊंचा आकाश – बुख़ार और सरसाम की हालत में उसे मुख्यतः इन्हीं बातों के सपने आते रहे।

लीसिये गोरि के अपने घर पर शान्त और सुखी जीवन भी उसकी कल्पना में उभरा। वह इस सुख से आनन्दित भी हो रहा था, जब अचानक भावनाहीन, संकीर्ण और दूसरों के दुख से सुखी होने का दृष्टिकोण रखनेवाला छोटा-सा नेपोलियन उसके सामने आ गया और शंकायें तथा यातनायें आरम्भ हो गयीं तथा केवल आकाश ने ही शान्ति

की आशा बंधवायी। सुबह होते-होते ये सारे सपने गड्डमड्ड होकर विस्मृति तथा बेहोशी के गड़बड़-झाले और अन्धकार में बदल गये। नेपोलियन के डाक्टर लार्रे के मतानुसार ऐसी स्थिति में उसके स्वस्थ होने के बजाय मर जाने की कहीं अधिक सम्भावना थी।

"यह बड़ा चिड़चिड़ा और तुनकमिज़ाज आदमी है – यह स्वस्थ नहीं हो सकेगा," लार्रे ने कहा।

अन्य ऐसे घायलों के साथ, जिनके ज़िन्दा बचने की कोई आशा नहीं थी, प्रिंस अन्द्रेई को भी स्थानीय लोगों की देख-रेख में छोड़ दिया गया।

ИЗДАТЕЛЬСТВО • МИР •

श्री विक्रम पन्नू जी सैक्टर-14 रोहतक द्वारा इस किताब की मुल प्रति उपलब्ध करवाई गई ताकि सत्यनारायण हुड्डा इसकी पीडीएफ बना कर मुफ्त में सर्वसुलभ करवा सके

पाठकों से

रादुगा प्रकाशन इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिज़ाइन के बारे में आपके विचार जानकर अनुगृहीत होगा। हमें आशा है कि आपकी भाषा में प्रकाशित रूसी और सोवियत साहित्य से आपको हमारे देश की संस्कृति और इसके लोगों की जीवन-पद्धति को अधिक अच्छी तरह जानने-समझने में मदद मिलेगी।

हमारा पता है:
रादुगा प्रकाशन,
१७, ज़ूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत संघ।

वह प्रश्न, जो ... दिन भर प्येर को परेशान करता रहा था, अब उसे सर्वथा स्पष्ट और हल हो चुका-सा प्रतीत हुआ। वह अब इस युद्ध और अगले दिन होनेवाली लड़ाई का पूरा सार और महत्त्व समझ गया था। इस पूरे दिन में उसने जो कुछ देखा था, उसे सैनिकों के चेहरों पर जिन अर्थपूर्ण तथा कठोर भावनाओं की झलक मिली थी, वे अब एक नयी ही रोशनी में उसके सामने आलोकित हो उठीं। उसने देशभक्ति की उस छिपी आग को अनुभव कर लिया था जो उन सभी लोगों के दिलों में थी जिनसे उसकी भेंट हुई थी और जो उसे यह स्पष्ट करती थी कि किस कारण ये सब लोग बड़े इतमीनान से, यहां तक कि जिन्दादिली से मरने को तैयार हो रहे थे।

('युद्ध और शान्ति', खण्ड ३, पृ० 307)

"लेट जाओ!" जल्दी से ज़मीन पर लेटता हुआ एडजुटेंट चिल्लाया। प्रिंस अन्द्रेई दुविधा की स्थिति में खड़ा रहा। विस्फोटक गोला जुती ज़मीन और चरागाह की सीमा पर, नागदौने की झाड़ी के क़रीब उसके तथा ज़मीन पर लेटे एडजुटेंट के बीच धुआं उगलता हुआ लट्टू की तरह घूम रहा था।

"क्या वह मौत है?" प्रिंस अन्द्रेई ने घूमते हुए काले गोले से निकलते तथा बल खाते धुएं, घास और नागदौने की झाड़ी को सर्वथा नई, ईर्ष्या की दृष्टि से देखते हुए सोचा। "मैं मर नहीं सकता, मैं मरना नहीं चाहता, मैं जीवन को प्यार करता हूं, इस घास, धरती और हवा को प्यार करता हूं ..."

('युद्ध और शान्ति', खण्ड ३, पृ० 370)

रादुगा प्रकाशन · मास्को

"मेरी नजर में तो कोई भी ऐसा लेखक नहीं है जिसने युद्ध के बारे में तोलस्तोय से बेहतर लिखा हो।"

एर्नस्ट हेमेनगुए

"'युद्ध और शान्ति' युद्ध के सम्बन्ध में विश्व साहित्य की सबसे सशक्त रचना है।"

थामस मन

"तोलस्तोय – यह तो महान शिक्षा के प्रतीक हैं। अपने कृतित्व के माध्यम से वह हमें यह शिक्षा देते हैं कि सचाई के बल पर ही सौन्दर्य अपने निखरे और सजीव रूप में हमारे सामने आता है... अपने जीवन द्वारा वह निष्कपटता-निश्छलता, ध्येयनिष्ठा, दृढ़ता, शान्त और स्थिर वीरता की घोषणा करते हैं। वह सीख देते हैं कि हमें निश्छल और शक्तिशाली होना चाहिये।

"हां, हमें इसलिये शक्तिशाली होना चाहिये कि हम क्रूर न हों, इसलिये शक्तिशाली होना चाहिये कि न्यायप्रिय हों, कि दयालु हों, कि नर्मदिल हों, यहां तक कि मुस्कराने के लिये भी हमारा शक्तिशाली होना जरूरी है। चूंकि वह शक्तिशाली थे, इसीलिये हमेशा सत्यवादी थे! दुर्बलता सचाई का आह्वान नहीं कर सकती।"

अनातोल फ़्रांस

ISBN 5-05-001494-8
ISBN 5-05-002099-9